भावप्रकाश पूर्वखण्ड सटीक

जिसमें

वैद्यक विद्याके लक्षण, निरुक्ति, दक्ष अश्विनीकुमार चरक और धन्वंतरि आदिकी प्रकटता, सृष्टिका क्रम, सम्पूर्ण औषधों के क्षलण गुण, मांस, मछली, सम्पूर्ण अन्न, जल, दूध, दही, घी इत्यादि के गुण, पारा, रसकपूर, हरताल, मैनसिल और विषोंके शोधने की विधि इत्यादि अनेकों विषय वर्णित हैं ॥

जिसको

भाव मिश्रने ललित श्लोकों में रचना किया था

उसीको

भार्गव वंशावतंस मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई) ने अपने खर्च से आगरा पुर पीपलमंडी निवासि चौरासिया गौडवंशावतंस लखनऊ कैनिङ्गकालेज के संस्कृताध्यापक पण्डित कालीचरण जी से प्रत्यक्षर का भाषा टीका रचना कराया है ॥

पहलीवार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई) के छापखाने में छपी दिसम्बर सन् १८८६ ई०

हक़तसनीफ़ महफ़ूज़ है बहक़ नवलकिशोर प्रेस

इस मतलबमें जितने प्रकारकी वैद्यककी पुस्तकें छपीहैं उनमेंसे कुछ नीचे लिखी हैं जिस किसी अवलोकन करनेवालेकी कांक्षाहोवे छापेखानेके पुस्तकालयसे अपनी दरख्वास्त भेजके कहेमुजिब किताबोंको मँगाकर अवलोकन करसक्ते हैं ॥

सुश्रुतसंहिता भाषा

जिसमें वैद्यक विद्याकी विस्तारसे उत्पत्ति,शिष्योंको जमा और शिक्षादेनेकी विधि. शिष्यों के पढ़ानेकी विधि और ग्रन्थके सब अध्यायोंकी सूची, गुरुदेवजीका विद्यार्थी को अच्छी विधिसे पढ़ाना यह उचित धर्महै तिसका वर्णन, फोड़ाके चीरनेके पीछे वैद्यका रोगीकी रक्षा पढना, ऋतुचर्या अर्थात् जिस ऋतुमें जिस प्रकारसे उपाय करना चाहिये तिसका वर्णन,चीरने फाड़नेके हथियारों का वर्णन, चीरने फाड़नेके हथियारोंके भेद, और उनके ग्रहण करनेका उपाय और शस्त्रोंकी रक्षा का उपाय वर्णन, वैद्यका शिष्यको चीरना फारना सिखाना,शिष्यका गुरुदेवजीसे वैद्यकविद्यापढ़के राजाके यहां परीक्षा देकर राजाकी आज्ञासे शुद्धचित्तहोकर चिकित्सा करना,क्षारपाकविधि और अग्निकर्मविधिका वर्णन, जोंक, सींगी और तुम्बीलगाने की विधि, रक्तकीविधि और यत्नसे रक्षा दोषधातु मलके क्षय और वृद्धिके जानने का वर्णन,बालकके कान छेदने की विधि, फोड़ा आदिके चीरने का वर्णन,घावके लेपन और बन्धकी विधि,घाव वाले पुरुषको जिसप्रकार से रहना चाहिये तिसका वर्णन, पथ्यापथ्य वस्तुओं का वर्णन, घावके प्रश्न विषयके अध्यायका वर्णन. घावके स्थानोंका वर्णन क्षत और जख्म और व्याधिभेद का विषय,आठप्रकारके शस्त्र कर्मकरनेवाले अध्यायका व्याख्यान, अपक्वशल्यनाम फोड़े के जानने का लक्षण, शल्यनामक फोड़े के निकालने का वर्णन. विपरीतअविपरीत नामक घावके जाननेका वर्णन, वैद्यकोवैद्यके बुलानेके समय में और वैद्यको रोगी के यहां जानेमें शुभ अशुभ शकुन और रोगीके शुभ अशुभ स्वप्नों के द्वारा शुभ अशुभ फलका वर्णन, रोगीको अपनीही छाया जिसप्रकार की दिखलाई दे उसके शुभाशुभका फल,रोगीके स्वभाव के उलटा होजानेका फल,रोगीको जिसजिस लक्षणवाले रोगमार डालतेहैं उनका वर्णन, रोगानुत्क और शत्रुओं को जीतने की इच्छावाले राजाकी वैद्यको रक्षाकरनी योग्यहै वैद्यकर्म रोगी के आतुरको व ।ा, फोड़ोंके लेपइत्यादि औषधोंका वर्णन, वैद्यका औषधके योग्य भूमिकी परीक्षाकरना, औषधों के समूहों के गुणवर्णन, जो औषध वमन और जो जुलाब से रोगोंको हरनेवाली हैं उनका वर्णन, औषध और रसोंके गुणवीर्य और विपाक के जाननेका वर्णन, रसविशेषोंके जानने का वर्णन, वमनद्रव्यों और जुलाब की द्रव्योंका वर्णन, जलवर्ग, दूधवर्ग, दहीवर्ग, माठावर्ग, तैलवर्ग, शहदवर्ग, ईखवर्ग, मदिराकांजी और मूत्रवर्ग का वर्णन, अन्नपान विधिका वर्णन, वातव्याधि बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, प्रमेह, उदररोग, मूढगर्भ, विद्रधिरोग, विसर्प, नाड़ीरोग, स्तनरोग, ग्रंथि, अपची, अर्बुद, गलगंड, वृद्धि, आतशक, फीलपांव, छोटे २ रोग, शुक्रदोष, भग्नरोग, और मुख रोगों के निदान का वर्णन, सर्वभूत चिंता शारीर, शुक्रशोणित शुद्धि

भावप्रकाश सटीक की भूमिका ॥

इससंसारमें धर्म्म अर्थ काम मोक्ष यही चारों मनुष्य जन्मके मुख्य फलहैं और शरीरही इन चारोंका मुख्य साधनहै क्योंकि कहाहै कि (धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरंसाधनंयतः) इत्यादि इससे शरीरकी रक्षा करना और शरीरको स्वस्थ रखना मनुष्यमात्र का मुख्य कर्त्तव्य है क्योंकि जब मनुष्यका शरीर सावधान नहीं होताहै तब ऐहिक और पारलौकिक कोईभी कार्य्य नहीं सधता इसीसे हमारे प्राचीन महर्षियों ने चिकित्सा शास्त्रके अनेक ग्रन्थ बनाये और अनेक विद्वान् मनुष्योंने भी अपनी २ बुद्धिके अनुसार वैद्यक शास्त्रके अनेक ग्रन्थ बनाये यह बात सर्वसाधारण है कि एकमनुष्य की बुद्धि प्रायः एकही विषयमें बहुत तीव्र होती है इससे इन ग्रन्थों में किसीका निदान किसीकी चिकित्सा किसी का शारीरक किसी का सूत्रस्थान बहुत उत्तम समझाजाता है इसकारण जो मनुष्य वैद्यक शास्त्र के सीखने की इच्छा करे उसे इनसब ग्रन्थों के पढने की आवश्यकता होती है और जो मनुष्य सम्पूर्ण ग्रन्थोंको नहीं देखते हैं वह पूरालाभ नहीं उठासके परन्तु जिनको थोड़ा अवकाशहै और थोड़ाही श्रम करसके हैं वह बिचारे इन अनेक बहुत वृहत् ग्रन्थों को पढकर कैसे वैद्यक शास्त्रको भलीभांति जानसकें इसबातको विचारकर श्रीमान् भावमिश्रने सम्पूर्ण ऋषि प्रणीत वृहत् ग्रन्थोंसे जिसका जौनसाभाग अत्युत्तम और अति उपकारीथा वह लेकर भावप्रकाश नाम संग्रहका ग्रंथ बनाया इसग्रंथमें वैद्यककी उत्पत्तिसे लेकर सम्पूर्ण शारीरक, औषधियों के गुण दोष, रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न और वाजीकरण आदिक अनेक विषयों का विस्तार पूर्व्वक वर्णन है इसीसे इस देशमें इसग्रंथका बड़ामान होकर बड़ाही प्रचारहुआ अनेक गुणों से पूर्ण यह ग्रंथ रत्न संस्कृत वाणीमें है और आजकल समयके प्रभावसे अन्य लोगोंकी तौ कौनकहै प्रायः वैद्यलोगभी संस्कृत नहीं जानते इसकारणसे उन लोगोंको इतनी शक्तिभी नहीं होती है कि इस एकही ग्रंथको पढकर चिकित्सा शास्त्रके सम्पूर्ण विषयोंको अच्छे प्रकारसे जानसकें इससे विना जानेबूझे वहलोग अपने पेटके पालनेके लिये औषध तो करतेही हैं और रोगी भी रोगोंसे व्याकुलहोके लाचारी से उनके पास आराम होनेके लिये आतेहैं और वैद्यलोगभी उनके अच्छे होनेके लिये औषधदेते हैं परंतु प्रायः उसका फल इसके विपरीत होताहै इस दुर्दशाको देखकर परम कारुणिक धर्म्मधुरीण गुणग्राही भार्गव बंशावतंस मुन्शिनवलकिशोर सी-आई-ई-की आज्ञासे आगरा निवासि लखनऊ केनिंगकालेजके संस्कृत अध्यापक गौड़बंशावतंस चौरासिया पंडित कालीचरण शर्म्मा ने लखनऊ के निवासी वाजपेयि क्षमापतिजी की सहायतासे परम उपकारी भावप्रकाश नाम इस वैद्यक ग्रन्थका भाषानुवाद किया इसग्रंथकी भाषा करनेमें उक्त महाशयोंने बहुतसी छपीहुई तथा लिखीहुई भावप्रकाशकी पुस्तकोंको देखकरके और जिन ग्रन्थोंके प्रमाण इस ग्रन्थमें हैं उनमें से जहांतक मिलसके

उनकोभी इकट्ठाकरके और अनेक कोषोंकोभी एकत्रित करके इसके पाठ भेदोंके दूर करने में औषधियोंके भाषा नाम जाननेमें और मूल प्रतिके शुद्ध करनेमें बडा श्रम कियाहै अब कोई महानुभाव यह सन्देह न करें कि इसका भाषानुवाद तो बम्बई आदि नगरों में छपही चुकाथा फिर इस पिष्ट पेषणका क्या प्रयोजनहै यहश्रम इसलिये कियागया है कि अबतक जो कोई अनुवाद मुद्रित हुएहैं वह एकतो बहुमूल्य हैं और दूसरे उनकी भाषाभी सर्व साधारणको लाभदायी नहीं है इससे अत्यन्त मनोहर सरल और शुद्धभाषा में यह अनुवाद करके मूलसहित मुद्रित कराया है अब सम्पूर्ण गुणग्राही सज्जनोंसे यह प्रार्थनाहै कि इसवृहत् ग्रंथके अनुवाद करने में जहांकहीं जोकुछ बिगड़गयाहो उसे यह समझकर क्षमाकरें कि भूलना मनुष्योंका स्वाभाविक धर्म्म है ॥

इति ॥

भावप्रकाश सटीकपूर्वखण्डके प्रथमभागका सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ
मंगलाचरणआदि	१
आयुर्वेदका लक्षण	१
आयुर्वेद की निरुक्ति	१
दक्षप्रादुर्भाव	२
अश्विनीकुमार प्रा०	२
इन्द्रप्रा०	३
आत्रेय प्रा०	३
भारद्वाज प्रा०	५
चरक प्रा०	८
धन्वन्तरी प्रा०	९
सुश्रुत प्रा०	१०
ग्रन्थका आरम्भ	१२
सृष्टिक्रम	१३
प्रकृतिका स्वरूप वि०	१३
प्र० पुरुषोंका साधर्म्य	१४
उनका वैधर्म्य	१४
प्रकृतिके नाम	१५
गुण	१५
सत्वादियुक्त मनके गुण	१५
रजोगुणयुक्त मनके गुण	१५
तमोगुणयुक्त मनके गुण	१६
अहंकार अभिमान	१७
व्यापार लक्षण	१७
उसके तीनप्रकारके कारण	१७
उसमें इन्द्रियोंके विषय	१७
महाभूतोंके गुण	१८
प्रकृति सात	१९
विकार सोलह	२०
मनके योगमें गुणभेद	२०
गर्भोत्पत्ति क्रम	२१
रजस्वलाका लक्षण	२१
उसके नियम	२१
इनके न करनेमें दोष	२२
रजस्वलाका कृत्य	२२

विषय	पृष्ठ
पतिकृत्य उसगर्भाधान में	
निषिद्ध और विहितकाल	२३
और उनका फल	२३
तन्त्रान्तरोक्त	२३
युग्म और अयुग्म रात्रि	
का फल	२३
उसमें योग्य और अयोग्य	
पुरुष	२४
योग्य अयोग्य स्त्री	२४
गर्भके उत्पन्नहोनेका क्रम	२४
गर्भाशयका स्वरूप	२५
गर्भ चौवीसतत्व	२६
तन्त्रान्तर	२७
परिहारके अर्थ तत्काल	
गृहीत गर्भवालीकालक्षण	२७
उसीकाउत्तरकालीन लक्षण	२७
उसमें पुत्रगर्भवतीकालक्षण	२८
पेशी दीर्घ आकार	२८
उन नपुंसक आदियों का	
लक्षण	२८
औरभी गर्भका प्रकृतिलक्षण	२९
पुत्रोंके आहार आचारों की	
चेष्टा भेदकारण	३०
गर्भलक्षण	३०
वृद्ध वाग्भटका कथन	३२
शरीरकी उत्पत्ति समवायि	
कारणान्तर	३३
तन्त्रान्तर में दोष स्वरूप	३३
दोष शब्दकी निरुक्ति	३३
वायुका स्वरूप	३४
उन वायुके नाम	३४
उदानादिक के स्थान	३४
उनके कर्म	३५
पित्तका स्वरूप	३६

विषय	पृष्ठ
पित्तोंके नाम	३६
पाचकादि पित्तोंके स्थान	३६
उनके कर्म	३६
कफका स्वरूप	३९
कफोंके नाम	३९
क्लेदनादिकोंके स्थान	३९
उन २ स्थानोंमें गत कफ के	
कर्म्म	४०
धातुशब्दकी निरुक्ति	४१
धातुओंके कर्म्म	४१
रसशब्दकी निरुक्ति	४१
रसका स्वरूप	४१
रसके स्थान	४१
उसके कर्म्म	४१
रक्तका स्वरूप	४२
उसका स्थान	४२
मांसका स्वरूप	४२
उसके पेशी	४३
मांस पेशीयोंकी संख्या	४३
उनमें शाखागत	४३
कोष्ठगत	४३
गलेके ऊपरकी	४४
मांस पेशीयों के कर्म्म	४४
मेदस्वरूप	४५
उसका स्थान	४५
हड्डीका स्वरूप	४५
अस्थियों की संख्या	४५
शाखागत अस्थि	४५
पसलीआदिमें प्राप्त अस्थि	४६
गलेके ऊपरकी अस्थि	४६
अस्थियोंका प्रयोजन	४७
मज्जाका स्वरूप	४७
मज्जाका स्थान	४७
शुक्रकी उत्पत्ति	४७

विषय	पृष्ठ
आमाशय स्वरूप	४८
श्लेष्मस्वरूप	४८
ग्रहणीके लक्षण	४९
आहार के पाक विषय में	
विशेषता	५०
रस तीनप्रकार से विभागको	
प्राप्तहोता है	५१
ओजरूपका लक्षण	५५
शुक्रका स्वरूप	५८
जीवकी सर्वत्र स्थिति	५९
गर्भ को उत्पन्न करनेवाले	
शुक्रका लक्षण	५९
शुक्रका स्थान	५९
उसके निकलनेका मा०	६०
शुक्रके निकलनेका का०	६०
आर्तवका स्वरूप	६०
गर्भग्रहण योग्य आर्तव का	
लक्षण	६०
धातुवोंके अलगगुण	६१
धातुवों के मल	६१
उपधातु	६१
आशय	६१
कलाका स्वरूप	६२
वोसात	६२
मर्म्म	६२
शृंगाटक	६३
छातीके मर्म्म	६४
सन्धि दोप्रकारकी	७१
चेष्टावाली और स्थिर	७१
कोष्ठमें प्राप्त	७१
ग्रीवाके ऊपर प्राप्त	७१
शिरा	७२
स्नायुओंके वर्णन में प्रथम	
स्नायुका स्वरूप वर्णन	७४

विषय	पृष्ठ
हाथपैरोंकीस्नायुओंकावर्णन	७५
कोष्ठकी स्नायुओंका वर्णन	७७
धमनियोंका वर्णन	८५
उनमें ऊर्ध्वकी	८५
कंडरा	७७
उनमें हस्तपादगत	७७
कंडराओंकीविशेष उत्पत्ति	७७
रन्ध्र	७७
स्रोत	७८
जाल	७८
कूर्च्च	७८
रज्जु	७८
सीवन	७९
संघात	७९
सीमन्त	७९
त्वचा	७९
अवभासिनी	७९
लोम और लोमकूप	८०
गर्भका मासिक क्रम	८०
दौहृदका विशेष फल	८१
गर्भका प्रथम अंग	८२
गर्भका जीवनो पायान्तर	८४
गर्भवृद्धि का कारण और उपाय	८५
दृष्टिऔर रोमकूपोंकीअवृद्धि	८५
नख केशोंकी सदावृद्धि	८५
अचेतन अंग	८५
गर्भकावात मलमूत्र न होने में कारण	८५
गर्भवती कृत्य	८६
प्रसवमास	८६
सूतिका घरकी आकृ०	८७
आनकरीब बालकहोनेवाली का लक्षण	८७
उसका उपचार	८०
दाईका लक्षण	८०
दाईका कृत्य	८०
पीड़ा रहित के प्रवाहण से	

विषय	पृष्ठ
वेगोदय	८८
बालककीजन्मोत्तर क्रि०	८८
जच्चा के नियम	८८
उसकेनियमसमयकीअवधि	८८
दुग्धका लक्षण	८९
उसकी प्रवृत्ति	८९
उसके अल्पहोनेका हेतु	८९
उसके बढ़नेका कारण	८९
कलम धानका लक्षण	८९
दुग्धके बिगड़नेका कारण	९०
बिगड़ेहुये दुग्धका लक्षण	९०
उसकी शोधनविधि	९०
शुद्ध दुग्धका लक्षण	९१
धायका लक्षण	९१
निषिद्ध धायका लक्षण	९१
बालकके दुग्धपानकीविधि	९१
अन्यथा बिगाड़	९२
अभिमंत्रण	९२
माताके दूधनहोने में और धायके न मिलनेमें प्रकार	९२
बालकका अन्नप्राशन समय	९२
उसकी परिचर्य्यादि	९२
बालकको स्वभावसेहि	९३
उसके कवलादिका स०	९३
बालक आदिकी अ०	९३
प्रकृति लक्षण	९४
अनन्तरदेश	९८
आनूपदेश लक्षण	९८
जांगल लक्षण	९८
साधारणदेश लक्षण	९८
उनमें वाग्भटका मत	९९
दिनादिचर्य्या	९९
उसमेंस्वस्थका लक्षण	९९
दिनचर्य्या	९९
दातूनकी विधि	१००
सीलगरमजलकी कु०	१०१
और शीतलजलकी कु०	१०१
मुखकाधोना	१०१

विषय	पृष्ठ
कटुतैलादि नास	१०१
अंजन	१०१
बालोंका साफकरना	१०२
शीशेका देखना	१०२
कसरत	१०२
अभ्यंग	१०३
सुगन्धतैल	१०३
उबटनेके गुण	१०४
स्नानके गुण	१०४
बदनका पूंछना	१०५
वस्त्रधारण	१०५
चन्दन लगाने के गुण	१०५
पुष्पादिधारण	१०६
आभूषणका धारण	१०६
रत्नादि धारण	१०६
खड़ाऊंकापहरना	१०७
भोजनादिके गुण	१०७
रसादियोंके पाकका ज्ञान	१०८
भोजन पाच के गुण	१०८
भोजनके प्रथमल वण	१०६
अद्रकका भक्षण	१०६
दृष्टिदोषदूरहोने के वास्ते	
ब्रह्मा आदिका स्मरण	१०६
भोजनादि क्रम	१०६
मधुर अन्नका गुण	११०
गुरुचविध निवारण	११०
भोज्यका भोजन परि०	१११
शुष्कअन्नादियोंका विचार	१११
विषमाशनका लक्षण	११२
अकालमें भोजनकिये का दोषभुक्तमाचसेउत्पन्न हुये	११२
कफका इलाज	११५
ताम्बूल गुण	११६
भोजनकेअनन्तरकीक्रिया	११७
वायु के गुण	११८
दिनके शयनका गुण	११६
औरभी अन्न के संस्थापन कारण	११६

विषय	पृष्ठ
अन्नका उदरमेंअस्थितिहेतु	१२०
औरभी वक्तव्य	१२०
अजीर्णके कारण	१२०
अध्यशनका लक्षण	१२०
उसका इलाज	१२०
सायंकालके भोजनसे अजीर्ण होनेमें भोजनका उपाय	१२१
दिनमेंमैथुनका निषेध	१२१
चंक्रमण के गुण	१२१
पगड़ीधारणके गुण	१२१
पादत्राण धारणगुण	१२१
छत्रधारण गुण	१२१.
दण्डधारण गुण	१२२
पालकीकी सवारीके गुण	१२२
नावकी सवारी के गुण	१२२
हाथीकी सवारीके गुण	१२२
घोड़ेकी सवारीके गुण	१२२
धूपके गुण	१२२
वारिश के गुण	१२२
कुहरा के गुण	१२२
अग्निके गुण	१२२
धूमका गुण	१२२
आचार	१२२
रात्रिचर्य्या	१२४
व्यासोक्त पुंसवनान्तर ऋतुचर्य्या	१२६
सुश्रुतोक्त चयलक्षण	१३१
अंशूदकका लक्षण	१३२
रोगका लक्षण	१३३
कर्म्मजरोग	१३४
दोषजरोग	१३४
कर्म्म दोषज	१३४
साध्यअसाध्य याप्य	१३५
उपद्रवका लक्षण	१३६
अरिष्टका लक्षण	१३६
चिकित्साका लक्षण	१३६
चिकित्साकीविधि	१३६
रोगको न जानकर इलाज	

विषय	पृष्ठ
करनेमें दोष	१३७
रोगको जानकर औषधन जाननेमें दोष	१३७
रोग और औषध के ज्ञान में गुण	१३७
चिकित्साका फल	१३६
चिकित्सा के अंग	१३६
रोगीका लक्षण	१३६
चिकित्साकेयोग्य	१३६
चिकित्साके अयोग्य	१४०
दूतका लक्षण	१४०
उसकीयात्रामेंशकुनविचार	१४१
वैद्यका लक्षण	१४१
निषिद्धवैद्य,	१४१
वैद्यका कर्म्म	१४१
वेदभेदमें आयुभेद	१४३
आगन्तुकहेतु	१४३
आयुका विचार	१४३
दीर्घ आयुका लक्षण	१४३
अल्प आयुका लक्षण	१४४
चिकित्सा विधान फल	१४६
परिचारकका लक्षण	१४७
द्रव्य	१४७
औषधग्रहण परिभाषा	१४७
द्रव्योंकी परीक्षा	१४६
स्वभावसे हित	१५०
स्वभावसे अहित	१५१
संयोग विरुद्ध	१५१
औषध ग्रहणसंकेत	१५१
प्रतिनिधि	१५२
द्रव्यगतपंचपदार्थोंकेकर्म्म	१५४
मधुररसका गुण	१५४
अतियुक्तमधुर रसगुण	१५५
अम्लका गुण	१५५
अतियुक्त अम्लका गुण	१५५
लवणका गुण	१५५
अतियुक्त लवणका गुण	१५५
कटु गुण	१५६

विषय	पृष्ठ
अतियुक्त कटुरसका गुण	१५६
तिक्तरसका गुण	१५६
अतितिक्त रसका गुण	१५६
कषाय गुण	१५७
अतियुक्त कषायका गुण	१५७
गुण	१५८
लघुआदि गुणवालोंके गुण	१५८
आमपाक	१५६
वीर्य्य	१६३
विपाक	१६३
विपाकोंके गुण	१६४
प्रभाव	१६४
हड़के नाम लक्षण गुण	१६५
बहेड़े के नाम गुण	१६७
आँवलेके नाम गुण	१६८
चिफलाके नाम लक्षण गुण	१६८
सोंठके नाम गुण	१७८
अदरक के नाम गुण	१६६
पीपलके नाम गुण	१६६
मिरच के नाम गुण	१७०
चिकटु नाम गुण	१७०
पीपलामूल नाम गुण	१७०
चतुरूषणका लक्षण गुण	१७०
चव्यके गुण	१७०
गजपीपल के नाम गुण	१७१
चित्रक के नाम गुण	१७१
पंचकोलका लक्षण गुण	१७१
षडूषणका लक्षण गुण	१७१
अजवाइन के नाम गुण	१७१
अजमोद के नाम गुण	१७२
खुरासानीअजवाइनकेगुण	१७२
स्याह और सपेदजीरे के नाम गुण	१७२
धनियाँ के नाम गुण	१७३
सौंफ सोयाके नाम गुण	१७३
मेथी बनमेथी नाम गुण	१७३
चारदाना नाम गुण	१७४
हिंगुके नाम गुण	१७४

विषय	पृष्ठ
बचनाम गुण	१७४
खुरासानी बचनाम गुण	१७४
कुलिंजन नाम गुण	१७४
चोबचीनी गुण	१७५
दोनों होहबेरके नामगुण	१७५
वायविड़ंग के नाम गुण	१७५
तुम्बरूफलके नाम गुण	१७६
बंशलोचन के नाम गुण	१७६
समुद्रफेन	१७६
अष्टवर्गका लक्षणगुण	१७६
जीवक ऋषभक कीउत्पत्ति नाम लक्षण गुण	१७७
मेदा महामेदाकी उत्पत्ति लक्षण नाम गुण	१७७
काकोली क्षीरकाकोली की उत्पत्ति लक्षण गुण	१७७
ऋद्धिवृद्धि की उत्पत्ति लक्षण नाम गुण	१७८
इनकी प्रतिनिधि,	१७८
मुलहठी के नाम गुण	१८६
कम्बीला के नाम गुण	१७६
अमलतास के नाम गुण	१७६
कुटकी के नाम गुण	१७६
चिरायते के नाम गुण	१८०
इन्द्रयव के नाम गुण	१८०
मयनफलके नाम गुण	१८०
दोनोंरासना के नाम गुण	१८१
तेजवती के नाम गुण	१८१
मालकंगुनी के नाम गुण	१८२
कूटके नाम गुण	१८२
पोहकरमूलके नाम गुण	१८२
चोकके नाम गुण	१८२
काकड़ासींगी के नाम गुण	१८२
कायफल के नाम गुण	१८३
भारंगी के नाम गुण	१८३
पाषाणभेद के नाम गुण	१८३
धवके नाम गुण	१८३
मजीठ के नाम गुण	१८४

विषय	पृष्ठ
कुसुम्भ के नाम गुण	१८४
लाहोके नाम गुण	१८४
हलदी के नाम गुण	१८४
कपूरहलदी नाम गुण	१८५
बनहलदी नाम गुण	१८५
दारुहलदी नाम गुण	१८५
रसवत नाम गुण	१८५
बावचीनाम गुण	१८५
चकोड़नाम गुण	१८६
अतीसनाम गुण	१८६
लोधनाम गुण	१८६
लहसननाम गुण	१८७
पिआजनाम गुण	१८७
भिलावांनाम गुण	१८७
भांगनाम गुण	१८८
पोस्तनाम गुण	१८८
अफ़ीमनाम गुण	१८८
पोस्तदाना नाम गुण	१८६
सेंधवनाम गुण	१८६
सांभर नाम गुण	१८६
पांगानाम गुण	१८६
विड़लवण नाम गुण	१८६
सोंचलनाम गुण	१६०
चनाखार नाम गुण	१६०
जवाखार नाम गुण	१६०
सज्जीखार नाम गुण	१६०
सुहागा नाम गुण	१६१
क्षारद्वय क्षारत्रय क्षाराष्टक लक्षण	१६१
चूकनाम गुण	१६१
कपूरआदि वर्ग	१६२
कपूरके नाम गुण	१६२
चीनियांकपूर नाम गुण	१६२
कस्तूरी नाम गुण	१६२
मुसकदाना नाम गुण	१६३
गोरोचनाभेद नाम गुण	१६३
चन्दननाम गुण	१६३
पीतचन्दन नाम गुण	१६३

विषय	पृष्ठ
रक्तचन्दननाम गुण	१९३
पतंगनाम गुण	१९४
अगरनाम गुण	१९४
देवदारुनाम गुण	१९४
धूपनाम गुण	१९४
तगरनाम गुण	१९५
पद्मकाष्ठनाम गुण	१९५
गूगलनाम गुण	१९५
धूपनाम गुण	१९६
राल नाम गुण	१९६
सलईकी रालनाम गुण	१९७
शिलारस नाम गुण	१९७
जायफल नाम गुण	१९७
जावची नाम गुण	१९७
लवंग नाम गुण	१९८
इलायचीपूरबी नाम गुण	१९८
इलायची गुजराती नाम गुण	१९८
तजनाम गुण	१९८
दारचीनी नाम गुण	१९९
तेजपातनाम गुण	१९९
नागकेसर नाम गुण	१९९
त्रिजात और चतुरजातका लक्षण गुण	१९९
केसर नाम गुण	१९९
गोलोचन नाम गुण	२००
नखनखीगन्धद्रव्यनाम गुण	२००
मुगन्धबाला नाम गुण	२००
वीरणनाम गुण	२०१
खसनाम गुण	२०१
जटामांसी नाम गुण	२०१
बालछड़ नाम गुण	२०१
मोथानागरमोथानाम गुण	२०१
कचूर नाम गुण	२०२
मरोड़फली नाम गुण	२०२
गन्धपलाशी नाम गुण	२०२
प्रियंगु नाम गुण	२०२
रेनुका नाम गुण	२०३

विषय	पृष्ठ
भटोराके नाम गुण	२०३
थनेर नाम गुण	२०३
उसीकाभेदभटेउरनामगुण	२०३
तालीसपत्र नाम गुण	२०४
शीतलचीनी नाम गुण	२०४
गन्धकोकिला नाम गुण	२०४
पीलीखस नाम गुण	२०४
थलबालुक नाम गुण	२०४
जलमोथा नाम गुण	२०५
पिड़ितकशाक नाम गुण	२०५
चक्रवत् के नाम गुण	२०५
पत्राड़नाम गुण	२०६
थलकमल के नाम गुण	२०६
इति कर्पूरादि वर्गः	२०६
अथ गुडूच्यादि वर्गः	२०६
मिलोयउत्पत्तिनाम गुण	२०६
पाननाम गुण	२०७
बेलके नाम गुण	२०७
कुहो नाम गुण	२०७
पाटलाकाष्ठपाटला नाम गुण	२०८
अरनीनाम गुण	२०८
सोनापाठा नाम गुण	२०८
बृहत् पंचमूलकालक्षणगुण	२०८
सरिवन नाम गुण	२०८
पिठवन नाम गुण	२०८
बनभांटानाम गुण	२०९
दोनोंकटेली नाम गुण	२०९
सफेदकटेली नाम गुण	२१०
गोखरू नाम गुण	२१०
लघुपंचमूलका लक्षण गुण	२१०
दशमूलका लक्षण गुण	२११
जीवन्तो नाम गुण	२११
बनमूंग नाम गुण	२११
बनउड़दनाम गुण	२११
जीवनीयगणका लक्षणगुण	२११
सफेद और लाल अण्डी नाम गुण	२१२

विषय	पृष्ठ
सफेद लालआककी नाम गुण	२१२
सेहुंड़नाम गुण	२१३
सोंकाकाई नाम गुण	२१३
करिहारी नाम गुण	२१३
सफेदलालकनेर	२१४
धतूरेके नाम गुण	२१४
बांसेके नाम गुण	२१४
पित्तपापड़ा नाम गुण	१४२
नीमनाम गुण	२१५
बकाइन नाम गुण	२१५
जलनीम नाम गुण	२१५
दोनोंकचनार नाम गुण	२१६
दोनों सहिंजना नाम गुण	२१६
सफेद और नीलेफूलकी विष्णुक्रान्ता नाम गुण	२१६
मेउड़ी नाम गुण	२१७
कोरेआ नाम गुण	२१७
दोनों करंजना नाम गुण	२१७
डारकरंजना नाम गुण	२१७
सफेदलालुंजा नाम गुण	२१८
किवाचनाम गुण	२१८
रोहिणीनाम गुण	२१८
चीलके नाम गुण	२१९
टंकोरी के नाम गुण	२१९
बेतनाम गुण	२१९
जलवेत नाम गुण	२१९
समुन्दरफल नाम गुण	२१९
अंखोट नाम गुण	२१९
चारोंवरिआरा नाम गुण	२२०
लक्ष्मणानाम गुण	२२०
सोनावेल नाम गुण	२२०
कपास नाम गुण	२२१
बांसनाम गुण	२२१
नरकट नाम गुण	२२१
सरपत नाम गुण	२२१
मूञ्जनाम गुण	२२२
काशनाम गुण	२२२

विषय	पृष्ठ
गन्धपटेर नाम गुण	२२२
मेघोतृणनाम गुण	२२२
कुशनाम गुण	२२२
कतृणनाम गुण	२२३
भूतृण नाम गुण	२२३
दूबके नाम गुण	२२३
सफेददूब के नाम गुण	२२३
गांडर नाम गुण	२२३
विदारीकन्द नाम गुण	२२४
वाराहीकन्द नाम गुण	२२४
मूसली नाम गुण	२२४
दोनोंसतावरके नाम गुण	२२४
असगन्ध नाम गुण	२२५
पाठा नाम गुण	२२५
सफेद निसोत नाम गुण	२२५
कालानिसोत नाम गुण	२२५
दोनोंदन्ती नाम गुण	२२६
जमालगोटा नाम गुण	२२६
इन्द्रायण नाम गुण	२२६
नीलनाम गुण	२२७
सरफोंका नाम गुण	२२७
जवासा और धमासे के नाम गुण	२२७
मुंडीनाम गुण	२२७
दोनों ऊंगेके नाम गुण	२२८
तालमखाना नाम गुण	२२८
हारसिंगार नाम गुण	२२८
घीकुआर नाम गुण	२२९
दोनों पुनर्नवा नाम गुण	२२९
गन्धप्रसारणी नाम गुण	२२९
दोनों सारिवा नाम गुण	२३०
भांगरा नाम गुण	२३०
हुलोके नाम गुण	२३०
चाकमाना नाम गुण	२३०
मरोड़फली नाम गुण	२३१
किंवाच नाम गुण	२३१
कौवाठोढी नाम गुण	२३१

विषय	पृष्ठ
काकजंघा नाम गुण	२३१
नागपुष्पी के नाम गुण	२३२
मेढ़ासींगी नाम गुण	२३२
हंसपदी नाम गुण	२३२
सोमवल्ली नाम गुण	२३२
अमरबेल नाम गुण	२३२
पातालगरुड़ी नाम गुण	२३३
बन्दाल नाम गुण	२३३
वटपत्री नाम गुण	२३३
वटपत्री नाम गुण	२३३
मछेछी नाम गुण	२३४
मरहटी नाम गुण	२३४
शंखपुष्पी नाम गुण	२३४
अर्कपुष्पी नाम गुण	२३४
लजालू के नाम गुण	२३४
दूसरे लजालूके नाम गुण	२३५
दूधीके नाम गुण	२३५
भूमि आंवले के नाम गुण	२३५
ब्रह्मीके नाम गुण	२३५
गूमाके नाम गुण	२३६
हुर हुर नाम गुण	२३६
दोनों खेखसे नाम गुण	२३६
सोनैआ नाम गुण	२३७
जलपीपल नाम गुण	२३७
गोभी नाम गुण	२३७
नागदौन नाम गुण	२३७
बरबेल नाम गुण	२३८
नकछिकनी नाम गुण	२३८
ककरोन्दा नाम गुण	२३८
सुदर्शन नाम गुण	२३८
मूसाकानी नाम गुण	२३८
मोरशिखा नाम गुण	२३९
इतिगुडूच्यादि वर्गः ॥	२३९
अथ पुष्पवर्गः ॥	२३९
कमल के नाम गुण	२३९
पद्मनी नाम गुण	२३९
नवीनपत्रआदि नाम गुण	२४०

विषय	पृष्ठ
स्थलकमल नाम गुण	२४०
कुमुद नाम गुण	२४०
सेवार नाम गुण	२४१
सेवती नाम गुण	२४१
नेवारि नाम गुण	२४१
बर्सातीबेल के नाम गुण	२४१
दोनों चमेली नाम गुण	२४१
दोनों जुही नाम गुण	२४२
चम्पा नाम गुण	२४२
मौलसरी नाम गुण	२४२
बड़ीमौलसरी नाम गुण	२४२
कदम्ब नाम गुण	२४२
कुजानाम गुण	२४३
मालती नाम गुण	२४३
माधवी नाम गुण	२४३
दोनों केवड़े के नाम गुण	२४३
किंकिरात नाम गुण	२४३
कर्णिकार नाम गुण	२४४
अशोकपुष्प नाम गुण	२४४
बाणपुष्प नाम गुण	२४४
चारोकटसरैया के नाम	२४४
कुन्दनाम गुण	२४४
मुचकुन्दनाम गुण	२४५
तिलकपुष्प नाम गुण	२४५
दुपहरिया नाम गुण	२४५
जवापुष्प नाम गुण	२४५
सेन्दुरिआ नाम गुण	२४५
अगस्तिपुष्प नाम गुण	२४५
दोनों तुलसी नाम गुण	२४६
मरुआ नाम गुण	२४६
दवना नाम गुण	२४६
बाबरी नाम गुण	२४६
इति पुष्पादि वर्गः ॥	२४६
अथ वटआदि वर्गः ॥	२४७
वट के नाम गुण	२४७
पीपल के नाम गुण	२४७
पारसपीपल नाम गुण	२४७

विषय	पृष्ठ
वेलियापीपल नाम गुण	२४७
गूलर नाम गुण	२४८
कठियागूलर नाम गुण	२४८
पाकर नाम गुण	२४८
सिरिस नाम गुण	२४८
क्षीरवृक्ष पंचवल्कल का लक्षण गुण	२४९
सालनाम गुण	२४९
सालमेदनाम गुण	२४९
सलईनाम गुण	२४९
शीसमनाम गुण	२४९
अर्जुननाम गुण	२५०
विजयसार नाम गुण	२५०
खैरनाम गुण	२५०
सफेद खैरनाम गुण	२५०
दुर्गन्धखदिर नामगुण	२५१
रोहितक के नाम गुण	२५१
कीकर नाम गुण	२५१
रीठा नाम गुण	२५१
पितौजिआ नाम गुण	२५१
हिंगोट नाम गुण	२५१
जिंजिनी नाम गुण	२५२
तुन के नाम गुण	२५२
भोजपत्रनामगुण	२५२
पलाश नाम गुण	२५२
सेमल नाम गुण	२५३
मोचरस नाम गुण	२५३
कटियासेमल नाम गुण	२५३
धवनाम गुण	२५३
धामिन नाम गुण	२५३
करीरनाम गुण	२५४
पाखु नाम गुण	२५४
वरना नाम गुण	२५४
कटभी नाम गुण	२५४
घंटापाटला नाम गुण	२५४
जलसिरीस नाम गुण	२५५
शमी नाम गुण	२५५

विषय	पृष्ठ
छितवन नामगुण	२५५
तिनिस नाम गुण	२५५
भुईसहा नाम गुण	२५५
इति वटादि वर्गः ॥	२५५
अम्रआदि फलवर्गः ॥	२५६
आम के नाम गुण	२५६
अमवटका लक्षण गुण	२५७
आमर्क गुठली के गुण	२५७
नवीनपत्र के गुण	२५७
अम्बाड़ा नाम गुण	२५७
राजाम्र नाम गुण	२५७
कोशम्भनाम गुण	२५८
कटहल नाम गुण	२५८
बड़हल नाम गुण	२५८
केलानाम गुण	२५८
भुकुर नाम गुण	२५९
नारियल नाम गुण	२५९
तरबूज नाम गुण	२५९
खर्बूजा नाम गुण	२६०
खीरानाम गुण	२६०
सुपारी नाम गुण	२६०
ताड़नाम गुण	२६०
ताड़ीनाम गुण	२६१
बेलफल नाम गुण	२६१
कच्चेबेल के नाम गुण	२६१
कैथनाम गुण	२६१
नारंगी नाम गुण	२६१
निन्दुनाम गुण	२६२
कुचला नाम गुण	२६२
बड़जामन नाम गुण	२६२
छोटे और नदी के जामन नाम गुण	२६२
बेरनाम गुण	२६२
और बेरके लक्षण गुण	२६३
पानी आंवला नाम गुण	२६३
हरफारेवड़ी नाम गुण	२६३
दोनों करोन्दा नाम गुण	२६३

विषय	पृष्ठ
विरौंजी नाम गुण	२६४
खिरनी नाम गुण	२६४
कंटाई नाम गुण	२६४
कमलगट्टा नाम गुण	२६४
सिंघाड़ा नाम गुण	२६५
भेंटनाम गुण	२६५
दोनों महुवे के नाम गुण	२६५
फालसा नाम गुण	२६५
शहतूत नाम गुण	२६५
अनार नाम गुण	२६६
बहुवार नाम गुण	२६६
निर्मली नाम गुण	२६६
दाखनाम गुण	२६६
खजूरनाम गुण	२६७
छोहारा नाम गुण	२६७
पिंडखजूरी नाम गुण	२६७
बादाम नाम गुण	२६८
सेवनाम गुण	२६८
अमृतफल नाम गुण	२६८
पीलू नाम गुण	२६८
अखरोट नाम गुण	२६८
विजौरा नाम गुण	२६८
मधुककड़ी नाम गुण	२६६
दोनों जम्बीरी नाम गुण	२६६
नीम्बू नाम गुण	२६६
मीठा नीम्बू नाम गुण	२६६
कमरख नाम गुण	२७०
इमली नाम गुण	२७०
अमलवेत नाम गुण	२७०
विषामिल नाम गुण	२७०
चतुरम्ल पंचाम्ल का लक्षण गुण	२७१
परिभाषा	२७१
इति फलवर्गः ॥	२७१
धातुरादिका वर्गः ॥	२७१
धातुओं के लक्षण गुण	२७१
सोने की उत्पत्ति नाम लक्षण गुण	२७१
चांदीकी उत्पत्ति नाम लक्षण गुण	२७२
ताम्रकी उ० नाम ल० गुण	२७३
रांगनाम लक्षण गुण	२७४
यसदनाम लक्षण गुण	२७४
सीसे की उत्पत्ति नाम गुण लक्षण	२७४
लोहकीउ० नाम ल० गुण	२७५
सारलोहका लक्षण गुण	२७५
कान्तलोहकालक्षण गुण	२७५
मंडूर के लक्षण गुण	२७६
अथ उपधातु	२७६
सोनामाखी नाम गुण	२७६
रूपामाखी नाम गुण	२७७
लीलाथोथा नाम गुण	२७७
खपरिआ गुण	२७७
कासानाम गुण	२७७
दोनों पीतल के नाम गुण	२७८
सिन्दूर नाम गुण	२७८
शिलाजीत नाम गुण	२७८
पारे की उत्पत्ति लक्षण नाम गुण	२७६
उपरसोंके लक्षण गुण	२८०
शिंगरिफ नाम लक्षण गुण	२८०
गन्धक की उत्पत्ति नाम लक्षण गुण	२८१
अभ्रक की उत्पत्ति नाम लक्षण गुण	२८१
हरतालकेनाम लक्षण गुण	२८२
मैनसिल नाम गुण	२८३
सुरमे के नाम गुण	२८३
सोहागा नाम गुण	२८३
रेह नाम गुण	२८४
लोहचुम्बक नाम गुण	२८४
खड़ियानाम गुण	२८४
बालूनाम गुण	२८५
खपरिआ नाम गुण	२८५
कसीसनाम गुण	२८५
सोरठी नाम गुण	२८५
कांदीनाम गुण	२८५
पहाड़ी माटी उत्पत्ति लक्षण नाम गुण	२८६
रत्नकी निरुक्ति	२८६
रत्नोंका निरूपण	२८६
हीरेके नाम लक्षण गुण	२८७
हीरेके भस्मका गुण	२८७
पन्ने के नाम	२८८
माणिक के नाम	२८८
पुखराज के नाम	२८८
नीलम के नाम	२८८
गोमेद नाम	२८८
वैदूर्य्य नाम	२८८
मोती नाम गुण	२८८
मूंगे के नाम	२८८
रत्नोंके गुण	२८८
कौनसा रत्न किस ग्रहको हितहोता है	२८८
उपरत्नोंका निरूपण	२८८
विषके नाम लक्षण गुण	२८६
बचनाकका लक्षण गुण	२८६
हारिद्रकका लक्षण गुण	२८६
सौराष्ट्रिकका लक्षण गुण	२८६
सींगियाका लक्षण	२८६
कालकूटका लक्षण	२८६
हालाहलका लक्षण	२६०
ब्रह्मपुत्रका लक्षण	२६०
उपविषोंका निरूपण	२६१
इति धात्वादि वर्गः	२६१
अथ धान्यवर्गः	२६१
धान्यों के भेद	२६१
शालिधान्यका लक्षणगुण	२६१
धानों के नाम	२६१
उनके गुण	२६१
लालधान के गुण	२६२
ब्रीहीधान्य के लक्षणगुण	२६२
साठी के लक्षण गुण	२६३
साठी के नाम	२६३
उनके गुण	२६३
शूकधान्य	२६३
उनके नाम गुण	२६३
गेहूंके नाम गुण लक्षण	२६४
अथ शिम्बीधान्य	२६४
और उसके पर्याय	२६४
उनके गुण	२६४
मूंगके गुण	२६५
उड़द के गुण	२६५
लोबिया नाम गुण	२६५
पावयनाम गुण	२६६
मोठनाम गुण	२६६
मसूरनाम गुण	२६६
चनेके नाम गुण	२६७
मटर नाम गुण	२६७
खेसारी नाम गुण	२६७
कुलथी नाम गुण	२६७
तिलनाम गुण	२६७
अलसी नाम गुण	२६८
तोरी नाम गुण	२६८
दोनों सरसों के नाम गुण	२६८
दोनों राईके नाम गुण	२६८
अथ क्षुद्रधान्य	२६८
कंगुनी नाम गुण	२६६
चीना नाम गुण	२६६
सांवानाम गुण	२६६
कोदो नाम गुण	२६६
सरबीजनाम गुण	२६६
बांसबीज नाम गुण	२६६
कुसुम्भबीज नाम गुण	३००
देवधान नाम गुण	३००
तिनीनाम गुण	३००

विषय	पृष्ठ
पुनेरानाम गुण	३००
इनके नये पुरानेका गुणदोष	३००
इति धान्यवर्गः	३००
अथ शाकवर्गः ॥	३०१
शाकनिरूपण	३०१
शाकोंके गुण	३०१
दोनों बथुवोंके नाम गुण	३०१
पोईनामगुण	३०१
दोनों मरसेके नाम गुण	३०२
चवराई नाम गुण	३०२
जलचवराई नाम गुण	३०२
पलकी नाम गुण	३०२
नरिचानाम गुण	३०३
पटुआ नाम गुण	३०३
कलम्बीसाग नाम गुण	३०३
नोनिया नाम गुण	३०३
दोनों चूकके नाम गुण	३०३
चेवुना नाम गुण	३०४

विषय	पृष्ठ
हुरहुर नाम गुण	३०४
शिरि आरि नाम गुण	३०४
मुईपत्र नाम गुण	३०४
अजवाइन साग नाम गुण	३०५
चकवड़ नाम गुण	३०५
सेहुंड़ नाम गुण	३०५
पित्तपापड़ा नाम गुण	३०५
गिलोय पत्र नाम गुण	३०५
कसौन्दी नाम गुण	३०६
चनेकासाग नाम गुण	३०६
केराव नाम गुण	३०६
सुरसोंसाग नाम गुण	३०६
अथपुष्प शाक	३०६
अगस्ती फूलके गु०	३०६
केलेकेफूलका गुण	३०६
सहिंजनके फूलका गुण	३०७
सेमलके फूलका गुण	३०७
अथ फलशाक	३०७

विषय	पृष्ठ
दोनों पेठेके नाम गुण	३०७
लौकीनाम गुण	३०७
कड़वीलौकी नाम गुण	३०८
घियातोरई नाम गुण	३०८
तोरी नाम गुण	३०८
पटोल नाम गुण	३०९
कुन्दरू नाम गुण	३०९
सेमसेमा नाम गुण	३०९
सहिंजना नाम गुण	३१०
बैंगन छोटा बड़ा	३१०
सफ़ेद नाम गुण	३१०
टिंडा नाम गुण	३१०
खेखसा नाम गुण	३१०
करेरुआ नाम गुण	३११
कटलीफल नाम गुण	३११
नालीका साग नाम गुण	३११
अथकंद शाक	३११
सूरणके नाम गुण	३११

विषय	पृष्ठ
आलू नाम गुण	३११
कठिआ आलूके नाम गुण	३११
पिंडालू नाम गुण	३११
अरुई नाम गुण	३१२
दोनोंमूली नाम गुण	३१२
गाजर नाम गुण	३१२
कदली नाम गुण	३१२
मानकेचु नाम गुण	३१३
सुथनी नाम गुण	३१३
हस्तिकर्ण नाम गुण	३१३
केऊ नाम गुण	३१३
कसेरू नाम गुण	३१३
परमआदि कंदोंके नामगुण	३१४
खेदज शाक नाम गुण	३१४
इतिशाक वर्गः ॥	

भावप्रकाशके पूर्वखण्डका सूचीपत्र ॥

द्वितीयोभागः

अथ मांसवर्गः

विषय	पृष्ठ
उसमेंमांसकेनाम	३१५
जांगलकेलक्षणऔरगुण	३१५
ग्राम्यआठ जांगलजाति	३१५
आनूपका लक्षण गुण	३१५
जांगलों की गणना विशिष्ट गुण	३१६
बिलेशयोंकी गणना गुण	३१६
गुहाशयोंकी गणना गुण	३१६
पर्णमृगोंकी गणना गुण	३१६
विष्किरोंकी गणना गुण	३१७
प्रतुदोंकी गणना गुण	३१७

विषय	पृष्ठ
प्रसहोंकी गणना गुण	३१७
कूलेचरोंकी गणना गुण	३१८
प्लवोंकी गणना गुण	३१८
कोशस्थोंकी गणना गुण	३१८
पादियोंकी गणना गुण	३१८
मछलियोंके नाम गुण	३१९
जांगलादियों के नाम गुण	३१९
पक्षियोंके नाम गुण	३१९
उनविष्किरोंमें बटेर आ०	३२१
प्रतुदोंमें हरीत आदि	३२२
पक्षिअंड के गुण	३२३

विषय	पृष्ठ
ग्राम्योंमें छागका गुण	३२३
मेढ़े के गुण	३२३
टुम्बा के गुण	३२३
वर्दगाय	३२४
घोड़ेके नाम गुण	३२४
कूलेचरोंमेंभैंसका नामगु०	३२४
मंडूकनाम गुण	३२४
पादियोंमें कछुआ	३२४
ततकाल हतके मांसका नाम गुण	३२५
स्वयंमृतकेमांसकागुणदोष	३२५

विषय	पृष्ठ
बृद्धबाल के मांसका दोष गुण	३२५
विषादिसे मृतके मांसका दोष	३२५
मछलियोंमें रोहूके गुण	३२५
सिलन्धा गुण	३२६
भाकुर गुण	३२६
मोचिका गुण	३२६
सींगी गुण	३२६
हीलसा गुण	३२६
सौरी गुण	३२७

विषय	पृष्ठ
गर्गरा गुण	३२०
कवई गुण	३२०
वाम्बी गुण	३२०
दंडेरी गुण	३२०
अरंदगी गुण	३२०
पपता गुण	३२०
गरई गुण	३२०
मंगुरी गुण	३२०
टेंगरा गुण	३२७
सफ़रीपाठी गुण	३२८
छोटी मछलियोंके गुण	३२८
बहुतछोटीमछलियोंके गुण	३२८
मछलियों के अंडे के गुण	३२८
सूखी मछलियों के गुण	३२८
दग्धमत्स्य के गुण	३२८
कूपआदिके मछलियों का गुण	३२८
ऋतुविशेषमें मत्स्यविशेष गुण	३२९
अनन्तर कृतान्नवर्गः	३२९
उसमें अन्नकासाधनप्रकार	३२९
और सिद्धहुओंका गुण	३२९
परिभाषा	३२९
भात के नाम और साधन गुण	३२९
दाल के नाम गुण	३२९
खिचड़ी नाम गुण	३३०
खीरके नाम गुण	३३०
सेवई नाम गुण	३३१
मण्डा नाम गुण	३३१
लोई नाम गुण	३३१
दुन्नौरी नाम गुण	३३१
लपसी नाम गुण	३३१
रोटी नाम गुण	३३२
अंगाकडी गुण	३३२
जवरोटी	३३२
उड़दकी रोटी गुण	३३२
चनेकीरोटी गुण	३३३
पिट्ठीगुण	३३३
बेढ़ई गुण	३३३
पापड़ गुण	३३३
पूरी गुण	३३३
बड़ा नाम गुण	३३४
कांजीबड़ा नाम गुण	३३४
ऊरीबड़ा गुण	३३४
मूंगकी बड़ियां	३३५
उड़दकी बड़ियां	३३५
कोहडौरी गुण	३३५
मूंगवटी गुण	३३५
चारिकवच्छ गुण	३३५
कढ़ी नाम गुण	३३५
अद्रकवटिका	३३६
पकोड़ियां गुण	३३६
गरममसाला गुण	३३६
अनन्तर मांस प्रकार	३३६
सेहुड़ गुण	३३७
अखनी गुण	३३७
शोरुवा गुण	३३७
तलेहुये मांसका गुण	३३८
सीख गुण	३३८
मांसशृंगाट गुण	३३८
मांसरस गुण	३३८
शाकपाकविधि	३३९
मोठके गुण	३३९
सम्पावपराक गुण	३३९
कर्पूरनालि गुण	३४०
फेनी गुण	३४०
सोहाली गुण	३४०
सेवकालाडू गुण	३४०
मोतीलाडू गुण	३४१
झर्झरी गुण	३४१
सेवकेलड्डू गुण	३४१
दूधकूपिका गुण	३४१
जलेबी गुण	३४१
सिखरन गुण	३४२
सरवत गुण	३४२
पन्ना के गुण	३४३
इमलीका गुण	३४३
नींबूकापन्ना गुण	३४३
धनियांकापन्ना गुण	३४३
कांजीका गुण	३४३
जारी गुण	३४४
तक्र गुण	३४४
दुग्ध गुण	३४४
सत्तूके गुण	३४४
जवकेसत्तू का गुण	३४४
चनेके सत्तू का गुण	३४५
चांवलोंके सत्तू का गुण	३४५
बहुरी गुण	३४५
खीलोंका गुण	३४५
चिड़वा गुण	३४५
होला गुण	३४६
ऊंबी गुण	३४६
घुघुरी गुण	३४६
तिलकुट गुण	३४६
खल नाम गुण	३४७
चांवल गुण	३४८
इतिकृत अन्नवर्गः ॥	३४८
अथ वारिवर्गः ॥	३४८
पानी के नाम और गुण	३४८
उनके भेद	३४८
उनमेंधाराका लक्षण और गुण	३४८
अनन्तरधारा जलके भेद	३४८
उनमें गंगा और समुद्र के जलका गुण लक्षण	३४८
बेऋतु के जलका गुण	३४८
ओलोंके जलका ल० गुण	३४८
पालाका लक्षण गुण	३४९
बरफ़के पानीका ल० गुण	३४९
भूमि के जलका भेद	३४९
और उनके ल० गुण	३४९
नदी आदिके जलकालक्षण गुण	३५०
ओद् भिदका ल० गुण	३५०
झरने के जलकाल०गुण	३५१
सारस जल का ल० गुण	३५१
तालाबके ज० ल० गुण	३५१
बावड़ी के ज० ल० गुण	३५१
कुवें के पानी का ल० गुण	३५१
चौज्ज का ल० गुण	३५२
गढ़े के पानीका ल० गुण	३५२
चिकिर जल ल० गुण	३५२
केदार के ज० ल० गुण	३५२
वर्षा ज० के ल० गुण	३५२
अनन्तर हेमन्तादिकाल विरोध में विहित जल विशेष	३५३
जल ग्रहण का ल०	३५३
जल की पान विधि	३५४
शीतल जल पान का विषय	३५४
जलपानकीआवश्यकता	३५४
प्रशस्त जल	३५५
निन्दित जल	३५५
दुष्ट जल का निर्दोष करने का उपाय	३५५
पीयेहुयेजलकीपाकविधि	३५५
इति वारिवर्गः ॥	३५५
अथ दुग्धवर्गः ॥	३५६
दूधके नाम गुण	३५६
गायके दूधका गुण	३५६
वर्ण विशेष में गुण विशेष	३५६
बे बछड़े वाली गाय के दूध का गुण	३५७
बाखड़ीगायकेदूधकागुण	३५७
देश विशेषमें गुण विशेष	३५७

विषय	पृष्ठ
भोजन विशेष में गुण विशेष ॥	३५०
भैंसकेदूधका गु०	३५७
बकरीके दूधका गु०	३५७
मृगआदिके दूध०गु०	३५७
भेड़ीदूधगु०	३५८
घोड़ीके दूध कागु०	३५८
ऊंटनीके दूध का गु०	३५८
हथिनीके दूधकागु०	३५८
स्त्रीदुग्ध गु०	३५८
धारोष्णदुग्धकागु०	३५८
पीयूषकिलाटक्षीर शाकतक्रपिण्डमोरट इनकाल०गु०	३५९
मलाईके गु०	३५९
मीठे दूधकागु०	३५९
सबेरेकेदुग्ध का गु०	३६०
दुधसेवनसमयवि शेष और गु०	३६०
बिलोयेहुये दूधकागुण	३६०
गायकेदूध का गु०	३६०
निन्दित दुग्ध गु०	३६१
इतिदुग्धगु०	३६१
अनन्तरदहीकागु०	३६१
दधिभेद	३६१
मन्द आदि दधिके ल०गु० ॥	३६१
गायके दहीका गुण	३६२
दोषविशेष और रोग विशेष मेंतक्रविशेष	३६२
भैंसके दहीकागुण	३६२
बकरीकेदहीकागुण	३६२
पकायेहुये दूधके दहीका गुण	३६२
बेमलाईके दूधके दहीका गुण	३६२
निचोड़े दहीका गुण	३६२

विषय	पृष्ठ
शर्करा आदि मिलेहुयेदही कागुण ॥	३६३
रातमें दधि भोजननि- षेध ॥	३६३
अनन्तर ऋतुविशेषसे विधि निषेध	३६३
सरमस्तुकाल० गुण	३६३
इति दधिवर्गः	३६४
अथतक्रवर्गः	३६४
तक्र सेवन के निमित्त तक्र बिधया	३६५
गौ आदि के तक्र का गु०	३६६
इति तक्रवर्गः	३६६
अथ माखन वर्गः	३६६
माखन के ना०गु०	३६६
भैंसके माखनका गु०	३६६
दूधके माखन का गु०	३६६
ताजेमाखन का गु०	३६६
बासी माखन कागु०	३६६
इति माखन वर्गः	३६७
अथ घृतवर्गः	३६७
उस्में [illegible]के ना० गु०	३६७
गायके घृतका गु०	३६७
भैंसके घृतका गु०	३६७
बकरीके घृतका गु०	३६८
ऊंटनी के घृतका गु०	३६८
भेड़के घृतका गु०	३६८
स्त्री घृतगुण	३६८
घोड़ी के घृतका गु०	३६८
दूधके घृतका गुण	३६८
हथिनी के घृतका गुण	३६८
पुराने घृतकागु०	३६९
नवीन घृतका गुण	३६९
जिस्में घृतन देनाचाहिये उस का बिषय	३६९
इति घृतवर्गः	३६९
अथ मूत्रवर्गः	३६९

विषय	पृष्ठ
गोमूत्र गुण	३६९
मानुषमूत्रगुण	३७०
इति मूत्र वर्गः	३७०
अथ तैल वर्गः	३७०
तैलकास्वरूप निरूपण	३७०
तिल तेल गुण	३७०
सरसों राई तेलगुण	३७१
तोरी तेल गुण	३७१
अलसी तेल गुण	३७२
कुसुंभ तेल गुण	३७२
पोस्त के तेलका गुण	३७२
अंडी तेल गुण	३७२
रालतेल गुण	३७२
सर्ब तेल गुण	३७३
इति तैलवर्गः	३७३
अथ सन्धान वर्गः	३७३
उनमें कांजीका ल० गु०	३७३
तुषादक का ल० गुण	३७३
सौवीरका ल० गुण	३७३
आरनालका ल० गुण	३७४
धान्याम्ल का ल०गुण	३७४
शिंडा की का ल० गुण	३७४
शुक्त का ल० गुण	३७४
सन्धान काल० गुण	३७४
मद्यका ना० ल० गुण	३७४
अरिष्टका ना० ल० गुण	३७५
सुरापानका ल० गुण	३७५
बारुणीका ल० गुण	३७५
दोनोंसीधु काल०गुण	३७५
आसव काल० गुण	३७६
नव पुराण मद्य गुण	३७६
मद्योंके गन्ध दूरहोने काउपाय	३७७
इतिसन्धानवर्गः	३७७
अथ मधुवर्गः	३७७
मधुके ना० गुण	३७७
मधुके भेद	३७७

विषय	पृष्ठ
उनके ल० गुण	३७७
माक्षिक का गुण	३७७
भ्रामर काल० गुण	३७८
क्षौद्र काल० गुण	३७८
पौत्तिक का ल०गुण	३७८
छात्रका ल० गुण	३७८
आर्घ्यकाल० गुण	३७९
औद्दालकाल० गुण	३७९
दाल काल० गुण	३७९
नवपुराण मधु गुण	३७९
शीतल मधुका गुणाधिक्य और उष्ण का निषेध	३७९
मोम गुण	३८०
इतिमधु वर्गः	३८०
अथ ईख वर्गः	३८०
ईख के ना० गुण	३८०
ईखके भेद	३८०
श्वेत पौंडा आदिके गुण	३८०
ईखके रसके पदार्थ का गुण	३८१
राबकालक्षणगुण	३८१
खांड़काल० गुण	३८३
गुड़का ल० गुण	३८३
पुराने गुड़का ल० गुण	३८३
नयेगुड़का ल० गुण	३८३
चीनीका ल० गुण	३८४
गुड़शक्करका गुण	३८४
मधुखंड का गुण	३८४
इति ईखका गुण	३८४
अथ अनेकार्थ नामवर्गः	३८४
उनमेंदो अर्थ वालेनाम	३८४
तीन अर्थ वाले नाम	३८६
बहुत अर्थ वाले नाम	३८८
अथ मान परिभाषा	३८९
मागध मान	३८९
कालिंगमान	३९०
इति मान परि भाषा	३९१
औषधियों का विधान	३९१

विषय	पृष्ठ
स्वरसविधि	३९१
तण्डुल जलविधि	३९२
हिम विधि	३९२
मन्थविधि	३९२
फांट विधि	३९२
कल्क विधि,	३९२
चूर्ण विधि	३९२
भावना विधि	३९३
पुटपाकविधि	३९३
उष्णोदक विधि	३९३
क्षीरपाक विधि	३९४
क्वाथ विधि	३९४
काढ़ेकीमानमात्रा	३९४
तन्त्रान्तरोक्त	३९५
अवलेह विधि	३९५
वटका विधि	३९५
घृततैलकोविधि	३९६
व्यवहारमात्रा	३९७
पुनर्विशेष	३९७
सन्धान विधि	३९७
आसवअरिष्टकाल०	३९८
सामान्यसे अरिष्टविधि	३९८
अथ धातुवोंको शोधन मारण विधि	३९९
उस्मेंमारणयोग्यसुवर्ण	३९९
अशुद्धसुवर्णका दोष	३९९
सुवर्णकीमारणविधि	३९९
उस्मेंदूसराप्रकार	४००
सुवर्णभस्मकागु०	४००
तन्त्रभेदमेंपुट प्रकार	४०१
महापुट	४०१
तन्त्रभेदमें यन्त्रप्रकार	४०२
वालुका यन्त्र	४०२
दोलायन्त्र	४०२
स्वेदन यन्त्र	४०२
विद्याधर यन्त्र	४०२
भूधरयन्त्र	४०३

विषय	पृष्ठ
डमरूयन्त्र	४०३
मारणयोग्यरूप्य	४०३
उस्में अयोग्य	४०३
शोधन विधि	४०३
अशुद्ध चांदीका दोष	४०३
उस्में दूसरा प्रकार	४०३
चांदीके भस्मकागु०	४०४
मारण योग्य ताम्र	४०४
अयोग्यताम्रम्	४०४
शोधनविधि	४०४
ताम्रकी मारण विधि	४०४
तांबेकी भस्मकागु०	४०५
रांगकास्वरूप निरूपण	४०५
अशुद्ध उस्कादोष	४०६
रांगकी मारण विधि	४०६
रांगके भस्मकागुण	४०६
सीसेका शोधन	४०७
सीसेकीमारण विधि	४०७
नागभस्मका गु०	४०७
अशुद्धलोहका दोष	४०७
लोहेकी मारणविधि	४०८
लोहभस्मका गु०	४०९
उपधातुवोंकेमारण	४०९
प्रकार	४०९
अशुद्धसोनामाखीकादोष	४०९
मारणविधि	४१०
रूपामाखीकाशोधन	४१०
मारणविधि	४१०
उनकेविशेषगु०	४१०
लोलेथोथेका शोधन	४१०
शुद्धका गुण	४१०
मारणविधि	४११
सिन्दूरकाशोधन	४११
अयगुण	४११
शिलाजीतशोधन	४११
शोधन योग्य	४११
दूसराप्रकार	४१२

विषय	पृष्ठ
हारीतका कहाहुवा प्रकार	४१२
शुद्धशिलाजीतकागु०	४१३
पारेकी शोधनविधि	४१३
मूर्च्छनं	४१४
ऊर्ध्वपातन	४१४
अधःपातन	४१४
मुख्यदोषहरशोधन विधि	४१५
सर्वदोषहरसेचिप्र शोधन विधि	४१५
पारेकीमारणविधि	४१५
दूसराप्रकार	४१६
रसकपूरकीविधि	४१७
सिन्दूर रस	४१७
मूर्च्छितपारेकीविधि	४१८
उपरसोंकीशोधनवि०	४१८
उस्मेंहिंगुलकोशोधन विधि	४१८
शुद्ध हिंगुल के गु०	४१८
हिंगुलसे पारा निकालनेकोविधि ॥	४१८
अशुद्धगन्धककादोष	४१८
शोधनविधि	४१९
शुद्धगन्धककेगुण	४१९
अशुद्धअभ्रककादोष	४१९
उस्कीशोधन विधि	४१९
उस्कामारण	४१९
धान्याभ्रककी बिधि	४२०
अभ्रकभस्मकेगुण	४२०
अशुद्धहरतालकादोष	४२०
उसकीमारणविधि	४२०
शुद्धहरतालभस्मके गुण	४२१
अशुद्धमैनसिलकेदोष	४२१
उस्कोशोधनविधि	४२१
खपरियाकीशोधनविधि	४२२

विषय	पृष्ठ
उस्कागुण	४२२
सब उपरसोंकीसाधारण शोधनविधि	४२२
उस्मेंविशेष	४२२
शुद्धउपरसोंकेअलग गुण	४२२
रत्नोंकीशोधनमारणविधि	४२३
हीरेकेदोष	४२३
हीरेकीशोधनविधि	४२३
हीरेकीमारणविधि	४२३
भस्मकरनेकीदूसरीविधि	४२३
हीरेकेभस्मकागुण	४२३
वाकीरत्नोंकीशोधनमारण विधि ॥	४२३
विषोंकीशोधनविधि	४२४
बच्छनाभका लक्षण	४२४
विषकीशोधन विधि	४२४
विषके गुण	४२४
उपविषोंके लक्षण	४२४
गुणवालेद्रव्योंकीअवधि	४२४
घृततैलमें विशेष	४२५
स्नेहपान विधि	४२६
पंचकर्म्म	४२८
वमन विधि	४२८
विरेचन विधि	४३१
स्नेहवस्ति विधि	४३४
अष्टादशदिवसमें अधिक वस्ति	४३६
निरूहवस्तिविधि	४३६
उत्तरवस्ति विधि	४४२
फलवर्त्ति विधि	४४३
नासलेनेकी विधि	४४४
विरेचन नास	४४५
बृंहणनास	४४६
धूम्रपान नास	४४६
गरारोकवल और मंजन विधि	३५१

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
उस्में उनके भेद	४५१	अंजन विधि	४६५	तन्त्रान्तरादिमें नेत्र		स्वस्थकाल०	४८०
गरारा	४५१	लेखनीवटी	४६६	परीक्षा	४७२	दोषधातुमलोंकीवृद्धिका	
कवल	४५१	चन्द्रोदयावर्त्तिलेखनी	४६७	जिह्वापरीक्षा	४७२	निदान	४८२
गंजन	४५२	रोपणीवर्त्ति	४६७	मूत्रपरीक्षा	४७२	बहुतबढ़े हुयेउनके	
स्वेदविधि	४५२	स्नेहनीवर्त्ति	४६७	नाड़ीपरीक्षा	४७३	लक्षण	४८२
तापस्वेद	४५३	रसक्रियालेखनी	४६७	रोगज्ञानलक्षणादिहेतुका		अतिवृद्धदोषमलोंका	
उष्मस्वेद	४५३	रोपणीरस क्रिया	४६७	लक्षण	४७४	कर्षण	४८३
उपनाह स्वेद	४५४	स्नेहनीरसक्रिया	४६८	उस्मेंहेतुव्याधियोंके		दोषधातुमलके क्षयका	
द्रव्यस्वेद	४५५	लेखनीचूर्ण	४६८	ज्ञानार्थ संप्राप्तिकाल०	४७४	कारण	४८३
पक्षान्तर	४५६	रोपणचूर्ण	४६८	उस्केऔपाधिकभेद	४७४	क्षीण उनकेल०	४८३
मूर्ध्वतेल विधि	४५६	स्नेहनचूर्ण	४६८	संप्राप्तिव्याधिकेज्ञनार्थ		ओजक्षयकानिदान	४८४
कर्णविधि	४५६	प्रत्यञ्जन विधि	४६८	हेतु	४७५	क्षीणओजवालेका	
लेपविधि	४५७	दृष्टिप्रसादनीशलाका	४६६	लक्षणकालक्षण	४७६	लक्षण	४८४
आलेप	४५७	औषधसेवनकाल०	४६६	उपशमका लक्षण	४७६	उदरसंकोच	४८४
रक्तस्राव विधि	४५८	प्रथमकाल	४६६	वातकाउपशम	४७६	क्षीणदोषधातुमलोंका	
प्रसादनकर्म्म	४६१	द्वितीयकाल	४६६	पित्तकाउपशम	४७७	वर्धन	४८५
कल्पविधि	४६२	तृतीयकाल	४७०	कफकाउपशम	४७७	क्षीणहोनेमेंकारण	४८५
सेकविधि	४६२	चतुर्थकाल	४७०	पित्तकेप्रकोपका कारण	४७८	सुश्रुतमतमेंबलल	
आश्चोतन विधि	४६२	पंचमकाल	४७०	विदाही लक्षण	४७६	क्षण	४८७
पिंडीविधि	४६३	निरन्नऔषधकागुण	४७०	कफ़प्रकोपकाकारण	४७६	बलक्षयनिदान	४८७
विडालक विधि	४६३	सान्नऔषधकागुण	४७०	रोगकेहेतुरोगका		बलक्षयका लक्ष०	४८७
तर्पण विधि	४६३	चरकोक्त [illegible]धलक्षण		वैचित्य	४८०	बलवृद्धिनिदान	४८७
पुटपाक विधि	४६४	विधि	४७१	क्षीणदोष धातुमलों		बलाबललक्षण	४८७
तिक्तकद्रव्य	४६५	चिकित्सार्थरोगीकीपरीक्षा	४७१	कीचिकित्सा	४८०	इति	४८७

भावप्रकाश पूर्वखण्ड भाषाटीकासहित ॥

गजमुखममरप्रवरंसिद्धिकरंविघ्नहर्तारम् ।
गुरुमवगमनयनप्रदमिष्टकरीमिष्टदेवताम्बन्दे ॥ १ ॥

स्फुरन्नूतनद्योतवाह्लीकरागैः ककुप्कामिनीवक्त्रपद्मानिलिम्यन् । महानन्दमन्दारपुष्पायितश्रीःसमुद्यन्विवस्वान्रुजंवोनिहन्तु १ चौरासियागोकुलचन्द्रसूरिसूनुःसकालीचरणाभिधानः । तत्तत्क्रिया काण्डविकाशसिद्ध्यैभावप्रकाशंविवरीवरीति २ जागर्तुसौजन्यसुधासमुद्रप्रवाहनिर्णिक्तरात्मवृत्तिः । क्षमापतिर्येनविदाव्यधायिभावप्रकाशस्फुरणेप्रयासः ॥ ३ ॥

सब देवताओं में श्रेष्ठ अणिमादि अष्ट सिद्धियों के देनेवाले तथा विघ्नों के हरनेवाले श्रीगणेश और ज्ञानरूप नेत्रोंकेदेनेवाले गुरु तथा बांछित फलोंकेदेनेवाले इष्टदेवताको नमस्कार करताहूं॥१ ॥

आयुर्वेदागमनंक्रमेणयेनाभवद्भूमौ ।
प्रथमंलिखामितमहंनानातंत्राणिसंदृश्य ॥ २ ॥

आयुर्वेद अर्थात् वैद्यकशास्त्रका जिसभांति पृथ्वी में आगमन हुआ उसको मैं अनेक शास्त्रों को देखकर प्रथम लिखताहूं ॥ २ ॥

आयुर्वेदस्यलक्षणमाह ॥

आयुर्हिताहितं व्याधेर्निदानं शमनं तथा ।
विद्यतेयत्रविद्वद्भिःसआयुर्वेदउच्यते ॥ ३ ॥

आयुर्वेदकालक्षणकहतेहैं ॥ जिसमें जीवन के हिताहित अर्थात् बढ़ाने घटानेवाली बस्तु तथा रोगों का निदान अर्थात् प्रथमोत्पत्ति का कारण और रोगों के नाश का उपाय कहाहो वह पण्डितों करके आयुर्वेद कहाजाता है ॥ ३ ॥

आयुर्वेदस्यनिरुक्तिमाह ॥

अनेन पुरुषोयस्मादायुर्विन्दति वेत्ति च ।
तस्मान्मुनिवरैरेष आयुर्वेदइति स्मृतः ॥ ४ ॥

शरीरजीवयोर्योगोजीवनम् तेनावच्छिन्नःकालआयुः, आयुर्वेदद्वारापुष्पाण्यनापुष्पाणिच द्रव्यगुणकर्म्माणिज्ञात्वा तेषांसेवनत्यागाभ्यामारोग्येणायुर्विन्दति,तेनैवहेतुनापरस्याप्यायुर्वेत्तिच ॥

जिसकेद्वारा पुरुष आयुको पाता और जानताभी है उसे मुनियों ने आयुर्वेद कहाहै, शरीर और जीव इन दोनों का योग जीवनहै और उससे घिराहुआ काल आयु कहाताहै, इस आयुके हिताहित द्रव्य गुण कर्मों को आयुर्वेदके द्वारा जानकर उनके सेवन तथा त्याग से अर्थात् हितके सेवन और अहित के त्यागसे पुरुष आरोग्य पूर्वक उत्तम आयुको पाताहै, और ऐसेही दूसरों की भी आयुको जानता है ॥ ४ ॥

आयुर्वेदप्रादुर्भावक्रममाह, तत्रादौब्रह्मणःप्रादुर्भावः ॥

विधातार्थर्वसर्वस्वमायुर्वेदंप्रकाशयन् ।
स्वनाम्नासंहितांचक्रेलक्षश्लोकमयीमृजुम् ॥ ५ ॥

अब आयुर्वेद की उत्पत्तिका क्रम कहते हैं तिसमें प्रथम ब्रह्माकी उत्पत्ति ॥ ब्रह्मा जी अथर्ववेदके सारार्थरूप आयुर्वेदको प्रकटकरतेहुये अपने नामसे एकलक्षश्लोकोंकी सरलसंहिता बनातेभये॥५॥

ततःप्रजापतिंदक्षंदक्षंसकलकर्म्मसु ।
विधिर्धीनीरधिंसांगमायुर्वेदमुपादिशत् ॥ ६ ॥

तदनन्तर ब्रह्मा जी वही सांग आयुर्वेद सब कामों में चतुर बुद्धिकेसागर दक्ष प्रजापति को पढ़ाते भये ॥ ६ ॥

अथदक्षप्रादुर्भावः ॥

अथदक्षःक्रियादक्षःस्वर्वैद्योवेदमायुषः ।
वेदयामास विद्वांसौ सूर्य्यांशौ सुरसत्तमौ ॥ ७ ॥

अथदक्षसे आयुर्वेदकी उत्पत्ति ॥ तदनन्तर क्रियामें चतुर दक्षजी सूर्य्यकेपुत्र देवों के वैद्य विद्वान् अश्विनीकुमारों को आयुर्वेद पढ़ाते भये ॥ ७ ॥

अथाश्विनीकुमारप्रादुर्भावः ॥

दक्षादधीत्यदस्रौविसन्ततनुतःसंहितांस्वीयाम् ।
सकलचिकित्सकलोकप्रतिपत्तिविवृद्धयेधन्याम् ॥ ८ ॥

अथ अश्विनीकुमारों से आयुर्वेदकी उत्पत्ति ॥ तदनन्तर दक्षसे पढ़कर सम्पूर्ण वैद्योंकी चतुरता बढ़ानेके लिये अश्विनीकुमार अपनी उत्तम संहिता बनाते भये ॥ ८ ॥

स्वयम्भुवःशिरश्छिन्नंभैरवेणरुषाथतत् ।
•अश्विभ्यांसंहितंतस्मात्तौयातौयज्ञभागिनौ ॥ ९ ॥

यही अश्विनीकुमार क्रोधसे भैरवके काटेहुये ब्रह्माके शिरको जबसे जोड़तेभये तबसे यज्ञमेंभाग पानेलगे ॥ ९ ॥

देवासुररणे देवादैत्यैर्यैःसक्षताःकृताः ।
अक्षतास्तेकृताःसद्योदस्राभ्यामद्भुतंमहत् ॥ १० ॥

और यह उनका अति अद्भुत कर्म्महुआ जो कि उन्होंने देवासुर संग्राममें घायलहुये देवताओं को अच्छा किया ॥ १० ॥

वज्रिणोऽभूद्भुजस्तम्भःसदस्राभ्यांचिकित्सितः ।
सोमान्निपतितश्चन्द्रस्ताभ्यामेवसुखीकृतः ॥ ११ ॥

और इन्हीं अश्विनीकुमारोंने इन्द्रके जकड़ेहुये हाथको सुधारा औ किसीसमय चन्द्रमा अमृतसे रहित हुआथा उसे भी इन्होंनेही सुखी किया ॥ ११ ॥

विशीर्णदशनाःपूष्णोनेत्रेनष्टेभगस्य च ।
शशिनोराजयक्ष्माभूदश्विभ्यान्तेचिकित्सिताः ॥ १२ ॥

और किसी समय दक्षके यज्ञमें पूषा नाम देवताके टूटेहुये दांत व भग नाम देवताके फूटेहुयेनेत्र तथा चन्द्रमाके जो राजयक्ष्मा रोग हुआथा यह सब भी इन्हीं अश्विनीकुमारों करके अच्छे किये गये ॥ १२ ॥

भार्गवश्च्यवनःकामीवृद्धःसन्विकृतिंगतः ।
वीर्य्यवर्णस्वरोपेतःकृतोऽश्विभ्यांपुनर्युवा ॥ १३ ॥

और भृगुवंशी च्यवन वृद्धहोनेके कारण कुरूपताको प्राप्त होगयेथे उन्हें भी कामीजान इन्हीं अश्विनी कुमारोंने फिर स्वरवर्ण पराक्रम युक्त तरुण बनाया ॥ १३ ॥

एतैश्चान्यैश्चबहुभिःकर्म्मभिर्भिषजांवरौ ।
बभूवतुर्भृशंपूज्याविन्द्रादीनांदिवौकसाम् ॥ १४ ॥

इन सब कर्म्मोंसे तथा अन्य भी बहुतसे कर्म्मोंकरके ये दोनों वैद्योंमें श्रेष्ठ तथा इन्द्रादि देवताओंके अतिशय पूज्य होतेभये ॥ १४ ॥

अथेन्द्रप्रादुर्भावः ॥

संदृश्यदस्रयोरिन्द्रःकर्म्माण्येतानियत्नवान् ।
आयुर्वेदंनिरुद्वेगंतौययाचेशचीपतिः ॥ १५ ॥

अथ इन्द्रसे आयुर्वेदकी उत्पत्ति ॥ अश्विनी कुमारोंके ऐसे अद्भुत कर्म्मोंको देखकर उद्योगी इंद्र ने यत्नपूर्वक उनसे इस चमत्कारी आयुर्वेदको मांगा ॥ १५ ॥

नासत्यौसत्यसन्धेनशक्रेणकिलयाचितौ ।
आयुर्वेदंयथाधीतंददतुःशतमन्यवे ॥ १६ ॥

तबइन्द्रसे प्रार्थना कियेहुये अश्विनीकुमारोंने जैसापढ़ाथा वैसाही आयुर्वेद इन्द्रको पढ़ाया॥ १६॥

नासत्याभ्यामधीत्यैषआयुर्वेदंशतक्रतुः ।
अध्यापयामासबहूनात्रेयप्रमुखान्मुनीन् ॥ १७ ॥

तदनन्तर अश्विनीकुमारोंसे पढ़कर इन्द्रने वहीआयुर्वेद आत्रेयादि बहुतसे मुनियोंकोपढ़ाया॥ १७॥

अथात्रेयप्रादुर्भावः ॥

एकदाजगदालोक्यगदाकुलमितस्ततः ।
चिन्तयामासभगवानात्रेयोमुनिपुंगवः ॥ १८ ॥

एक समय मुनिश्रेष्ठ भगवान् आत्रेय जी सब जगत्को रोगग्रस्त देखकर चिन्ता करतेभये॥ १८॥

किङ्करोमिक्वगच्छामिकथंलोकानिरामयाः ।
भवन्तिसामयानेतान्नशक्नोमिनिरीक्षितुम् ॥ १९ ॥

कि क्या करूं कहां जाऊं ये लोग कैसे नीरोग हों मैं इन रोगी लोगोंको देख नहीं सक्ताहूं ॥१९॥

दयालुरहमत्यर्थंस्वभावोदुरतिक्रमः ।
एतेषांदुःखतोदुःखंममापिहृदयेऽधिकम् ॥ २० ॥

क्योंकि मैं अत्यन्त दयालु स्वभाववाला हूं और स्वभाव बदल नहीं सक्ता इस कारण इन रोगी लोगोंके दुःखसे मेरेहृदयमें अधिक दुःख होरहा है ॥ २० ॥

आयुर्वेदंपठिष्यामिनैरुज्यायशरीरिणाम् ।
इतिनिश्चित्यगतवानात्रेयस्त्रिदशालयम् ॥ २१॥

इसी हेतु प्राणियों के नीरोग होनेके लिये मैं अवश्य आयुर्वेद पढ़ूंगा ऐसा निश्चय करके आत्रेय जी स्वर्ग को गये ॥ २१ ॥

तत्रमन्दिरमिन्द्रस्यगत्वाशक्रंददर्शसः ।
सिंहासनसमासीनं स्तूयमानंसुरर्षिभिः ॥ २२ ॥
भासयन्तंदिशोभासा भास्करप्रतिमंत्विषा ॥
आयुर्वेदमहाचार्य्यैशिरोधार्य्यैदिवौकसाम् ॥ २३ ॥

और वहां इन्द्रके मन्दिरमें जाकर सूर्य्य के समान अपनी कांतिसे दिशाओं को प्रकाशित करते हुये सुरर्षियों करके स्तूयमान आयुर्वेद के महानाचार्य देवताओं के पूज्य इन्द्रको सिंहासनपर बैठे हुये देखा ॥ २२ । २३ ॥

शक्रस्तुतंनिरीक्ष्यैवत्यक्तसिंहासनोययौ।
तदग्रेपूजयामासभृशंभूरितपःकृशम् ॥ २४ ॥
कुशलंपरिपप्रच्छतथागमनकारणम् ।
समुनिर्वक्तुमारेभेनिजागमनकारणम् ॥ २५ ॥

तदनन्तर इन्द्रने भी तपस्यासे अति दुर्बल आतेहुये आत्रेयजीको देख सिंहासनसे उठ आगे जाकर कुशल पूर्वक आगमनका कारण पूँछ उनका पूजन किया तब आत्रेयमुनि भी अपने आगमनका कारण कहनेलगे ॥ २४ । २५ ॥

देवराजनराजासिदिवएवयतोभवान् ।
विधात्राविहितोयत्नात्त्रिलोकीलोकपालकः ॥ २६ ॥

कि हे देवराज आप केवल स्वर्गहीके राजा नहीं हैं किन्तु ब्रह्माजीने आपको त्रिलोकीका रक्षक बनाया है ॥ २६ ॥

व्याधिभिर्व्यथितालोकाःशोकाकुलितचेतसः ।
भूतलेसन्तिसन्तापंतेषांहन्तुंकृपांकुरु ॥ २७ ॥

इसकारण आपसे हमारी यह प्रार्थनाहै कि पृथ्वी में जो लोग रोगोंसे व्यथित होकर शोक से आकुल चित्तवाले होरहेहैं उनके सन्तापको दूर करनेके लिये कृपाकीजिये ॥ २७ ॥

आयुर्वेदोपदेशंमेकुरुकारुण्यतोनृणाम् ।
तथेत्युक्त्वासहस्राक्षोऽध्यापयामासतंमुनिम् ॥ २८ ॥

और हमें आयुर्वेदका उपदेश कीजिये यह सुन दयालु इन्द्र तथास्तु कहकर उन आत्रेय मुनीश्वर को आयुर्वेद पढ़ाते भये ॥ २८ ॥

मुनीन्द्रइन्द्रतःसांगमायुर्वेदमधीत्यसः ।
अभिनन्द्यतमाशीर्भिराजगामपुनर्महीम् ॥ २९ ॥

इसप्रकार इन्द्रसे सांग आयुर्वेद पढ़कर तथा अपने आशिषों से इन्द्रको प्रसन्नकर मुनि श्रेष्ठ आत्रेयजी फिर पृथ्वी को आये ॥ २९ ॥

अथात्रेयोमुनिश्रेष्ठोभगवान्करुणाकरः ।
स्वनाम्नासंहितांचक्रेनरचक्रानुकम्पया ॥ ३० ॥
ततोऽग्निवेशंभेडञ्चजातूकर्णम्पराशरम् ।
क्षीरपाणिंचहारीतमायुर्वेदमपाठयत् ॥ ३१ ॥

तदनन्तर मुनियोंमें श्रेष्ठ आत्रेयजी मनुष्योंके ऊपर दयायुक्तहो आत्रेयनामं संहिताबनातेभये ३०॥ और उसे अग्निवेश भेड़ जातूकर्ण पराशर क्षरिपाणि और हारीत इनसबशिष्योंको पढ़ातेभये ३१॥

तन्त्रस्यकर्ताप्रथममग्निवेशोभवत्पुरा ।
ततोभेडादयश्चक्रुःस्वंस्वंतन्त्रंकृतानि च ॥ ३२ ॥
श्रावयामासुरात्रेयंमुनिवृन्देनवन्दितम् ।
श्रुत्वा च तानितन्त्राणिहृष्टोभूदत्रिनन्दनः ॥ ३३ ॥

इन शिष्योंमेंसे प्रथम अग्निवेश तन्त्रके कर्ता हुये तदनन्तर भेडादि आचार्य्यों ने भी अपने २ तन्त्रबनाये और अपने २ बनाये हुये तन्त्र मुनिश्रेष्ठ आत्रेय जी को सुनाये उन तन्त्रों को सुनकर आत्रेय जी बहुत प्रसन्न हुये ॥ ३२ । ३३ ॥

यथावत्सूत्रितंतस्मात्प्रहृष्टामुनयोऽभवन् ।
दिविदेवर्षयोदेवाःश्रुत्वासाध्वितितेऽब्रुवन् ॥ ३४ ॥

और वे तन्त्र बहुत अच्छे बनेथे इसकारण वहांपर सुननेवाले अन्यमुनि लोग तथा स्वर्गके देवर्षि समेत देवता लोग भी प्रसन्न होकर साधु साधु कहते भये ॥ ३४ ॥

अथभरद्वाजप्रादुर्भावः ॥

एकदाहिमवत्पार्श्वेदेवादागत्यसंगताः ।
मुनयोबहवस्तेषांनामभिःकथयाम्यहम् ॥ ३५ ॥

भरद्वाजोमुनिवरःप्रथमंसमुपागतः ।
ततोङ्गिरास्ततोगर्गोमरीचिर्भृगुभार्गवौ ३६ ॥
पुलस्त्योगस्तिरसितोवशिष्ठःसपराशरः ।
हारीतोगौतमःसांख्योमैत्रेयश्च्यवनोऽपिच ॥ ३७ ॥
जमदग्निश्चगार्ग्यश्चकाश्यपःकश्यपोऽपिच ।
नारदोवामदेवश्चमार्कण्डेयःकपिञ्जलः ॥ ३८ ॥
शांडिल्यःसहकौण्डिन्यःशाकुनेयश्चशौनकः ।
आश्वलायनसांकृत्यौविश्वामित्रःपरीक्षितः ॥३९॥
देवलोगालवोधौम्यःकाम्यकात्यायनावुभौ ।
काङ्कायनोवैजपायःकुशिकोबादरायणः ॥ ४० ॥
हिरण्याक्षश्चलौगाक्षिःशरलोमाचगोभिलः ।
वैखानसोबालखिल्यास्तथैवान्येमहर्षयः ॥ ४१ ॥
ब्रह्मज्ञानस्यनिधयोयमस्यनियमस्यच ।
तपसस्तेजसादीप्ताह्रूयमानाइवाग्नयः ४२ ॥

अथ भरद्वाज से आयुर्वेद की उत्पत्ति ॥ एक समय हिमालय के समीप दैवयोग से भरद्वाज, अंगिरा, गर्ग, मरीचि, भृगु, भार्गव, पुलस्त्य, अगस्ति, असित, वशिष्ठ, पराशर, हारीत, गौतम, सांख्य मैत्रेय, च्यवन, जमदग्नि, गार्ग्य, काश्यप, कश्यप, नारद, बामदेव, मार्कण्डेय, कपिञ्जल, शाण्डिल्य, कौण्डिन्य, शाकुनेय, शौनक, आश्वलायन, सांकृत्य, बिश्वामित्र, परीक्षित, देवल, गालव, धौम्य काम्य, कात्यायन, कांकायन, वैजपाय, कुशिक, बादरायण, हिरण्याक्ष, लौगाक्षि, शरलोमा, गोभिल वैखानस, गण, बालखिल्यगण, ये सब तथा ऐसेही ब्रह्मज्ञान और यमनियम के खानि तपके तेजसे प्रज्वलित अग्निके समान प्रकाशमान अन्य महर्षि लोग भी आकर इकट्ठे हुये ॥ ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२ ॥

सोपविष्टास्तुतेतत्रसर्वेचक्रुःकथामिमाम्
धर्म्मार्थकाममोक्षाणांमूलमुक्तंकलेवरम् ॥ ४३ ॥

और वहां बैठकर यहकहते भयेकि धर्म अर्थ काम मोक्ष इनचारोंकामूल शरीरही कहागयाहै४३ ॥

तपःस्वाध्यायधर्म्माणांब्रह्मचर्य्यव्रतायुषाम् ।
हर्तारःप्रसृतारोगायत्रतत्रचसर्वतः ॥ ४४ ॥
रोगाःकार्श्यकराबलक्षयकरादेहस्यचेष्टाहरा
दृष्टाइन्द्रियशक्तिसंक्षयकराःसर्वाङ्गपीडाकराः ।
धर्म्मार्थाऽखिलकाममुक्तिषुमहाविघ्नस्वरूपाबलात्
प्राणानाशुहरन्तिसन्तियदितेक्षेमंकुतःप्राणिनाम् ॥ ४५ ॥

परन्तु तप,वेद पाठादि, धर्म्म,ब्रह्मचर्य्यादिव्रत, आयु, इनके हरनेवाले और शरीर को बलचेष्टा रहित तथा कृशकरनेवाले और इन्द्रियोंकी शक्ति के नाशक सर्वांगमें पीड़ाकरनेवाले धर्मादि चतुर्वर्ग में विघ्न स्वरूपहोकर प्राणोंके हरनेवाले रोग यदि पृथ्वी में फैले हुये हैं तो प्राणियों को सुख कहां से हो सक्ता है ॥ ४४ । ४५ ॥

तत्तेषांप्रशमायकश्चनविधिःश्चिन्त्योभवद्भिर्बुधैः
योग्यैरित्यभिधायसंसदिभरद्वाजंमुनिंतेऽब्रुवन् ।
त्वंयोग्योभगवन्सहस्रनयनंयाचस्वलब्धंक्रमात्
आयुर्वेदमधीत्ययंगदभयान्मुक्ताभवामोवयम् ॥ ४६ ॥

इस कारण उनरोगों की शान्ति का कोई उपाय आप लोगोंको विचारना चाहिये क्योंकि आप लोग सर्वथा योग्य हैं ऐसा सभा में कहकर सब मुनीश्वर भरद्वाज मुनि से बोले कि हे भगवन् आप हम सबों में श्रेष्ठहैं इस हेतु आपही इन्द्रसे उस आयुर्वेद को मांगिये जिसे हम लोग क्रम से पढ़कर रोगों के भयसे छूट जावें ॥ ४६ ॥

इत्थंसमुनिभिर्योग्यैःप्रार्थितोविनयान्वितैः ।
भरद्वाजोमुनिश्रेष्ठोजगामत्रिदशालयम् ॥ ४७ ॥

इस प्रकार विनययुक्त उन सब मुनीश्वरों करके प्रार्थना किये हुये मुनि श्रेष्ठ भरद्वाज जी स्वर्ग को जातेभये ॥ ४७ ॥

तत्रेन्द्रभवनंगत्वासुरर्षिगणमध्यगम् ।
दृष्टवान्वृत्रहन्तारंदीप्यमानमिवानलम् ॥ ४८ ॥

और वहां इन्द्रके भवनमें जाकर देव ऋषिगणके मध्य बैठेहुये अग्निके समान प्रकाशमान इन्द्र को देखते भये ॥ ४८ ॥

दृष्ट्वैवसमुनिंप्राहभगवान्मघवामुदा ।
धर्मज्ञ,स्वागतन्तेऽथमुनिंतंसमपूजयत् ॥ ४९ ॥

और भगवान्इन्द्रने भी मुनिको देख हर्ष पूर्वक (आपका आगमन शुभहुआहै) यहकहकर उनका पूजन किया ॥ ४९ ॥

सोऽभिगम्यजयाशीर्भिरभिनन्द्यसुरेश्वरम् ।
ऋषीणांवचनंसम्यक्श्रावयन्मुनिसत्तमः ॥ ५० ॥

तदनन्तर भरद्वाज मुनि भी इन्द्रसे मिल उन्हें अपने आशीर्वादोंसे प्रसन्नकर ऋषियोंके वचनों को सुनातेहुये बोले ॥ ५० ॥

व्याधयोहिसमुत्पन्नाःसर्वप्राणिभयंकराः ।
तेषांप्रशमनोपायंयथावद्वक्तुमर्हसि ॥ ५१ ॥

कि हे इन्द्र सब प्राणियोंको भय देनेवाली बहुतसी व्याधियां उत्पन्नहुईहैं उनकी शान्तिका कोई यथार्थ उपाय कहो ॥ ५७ ॥

तमुवाचमुनिंसांगमायुर्वेदंशतक्रतुः ।
जीवेद्वर्षसहस्राणिदेहीनीरुङ्निशम्ययम् ॥ ५२ ॥

ऐसे वचन सुन इन्द्रजी भरद्वाजमुनिसे उस सांग आयुर्वेदको कहतेभये जिसको सुनकर प्राणी नीरोग होकर हजार वर्षतक जीता रहताहै ॥ ५२ ॥

सोऽनंतपारस्त्रिस्कन्धमायुर्वेदंमहामुनिः ।
यथावदचिरात्सर्ब्बुबुधेतन्मनाःशुचिः ॥५३॥

और महामुनि भरद्वाजजी एकाग्रचित्त होकर उस अपार तीन काण्डवाले आयुर्वेदको थोडेही कालमें यथार्थ जानतेभये ॥ ५३ ॥

तेनायुःसुचिरंलेभेभरद्वाजोनिरामयम् ।
अन्यानपिमुनींश्चक्रेनिरुजःसुचिरायुषः ॥ ५४ ॥

जिससे आप नीरोगतापूर्वक दीर्घायुहोकर अन्यमुनियोंकोभी रोगरहित दीर्घायु करतेभये ॥५४॥

तत्तन्त्रजनितज्ञानचक्षुषाऋषयोऽखिलाः ।
गुणान्द्रव्याणिकर्म्माणिदृष्ट्वातद्विधिमाश्रिताः ॥ ५५ ॥
आरोग्यंलेभिरेदीर्घमायुश्चसुखसंयुतम् ।
आयुर्वेदोक्तविधिनाऽन्येऽपिस्युर्मुनयोयथा ॥ ५६ ॥

तदनंतर भरद्वाजजीने वह शास्त्र बनाया जिससे उत्पन्न ज्ञानरूप नेत्रके द्वारा सम्पूर्ण ऋषिलोग भी गुण द्रव्य कर्मोंको देख तथा उस शास्त्रमें कहीहुई विधिका आश्रय करके उस प्रकार आरोग्य और सुखयुक्त दीर्घायुको पातेभये जैसे कि आगे आयुर्वेदमें कही हुई विधिसे प्राचीन मुनिलोग नीरोगता पूर्वक सुखयुक्त दीर्घायु वाले होगयेहैं ॥ ५५ । ५६ ॥

अथचरकप्रादुर्भावः ॥

यदामत्स्यावतारेणहरिणावेदउद्धृतः ।
तदाशेषश्चतत्रैववेदसांगमवाप्तवान् ॥ ५७॥
अथर्वान्तर्गतंसम्यगायुर्वेदञ्चलब्धवान् ।
एकदासमहीवृत्तंद्रष्टुंचरइवागतः ॥ ५८ ॥

अथ चरक से आयुर्वेद की उत्पत्ति जब मत्स्यावतार धरकर विष्णु ने वेद का उद्धार किया तब वहांहीं शेष जी ने मत्स्यभगवान् से अंगों सहित सम्पूर्ण वेद पढा उसीमें से अथर्वण वेद के अन्तर्गत आयुर्वेद को पाया और एकसमय वही शेष जी पृथ्वीका वृत्तान्त जाननेके लिये (चर) अर्थात् जासूसके समान हो इस लोक को आये ॥ ५७ । ५८ ॥

तत्रलोकान्गदैर्ग्रस्तान्व्यथयापरिपीडितान् ।
स्थलेषुबहुषुव्यग्रान्म्रियमाणांश्चदृष्टवान् ॥ ५९ ॥

और यहां पर बहुत से स्थलों में रोगग्रस्त व्यथासे पीड़ित विकल तथा बहुत से मरते हुये मनुष्यों को देखा ॥ ५९ ॥

तान्दृष्ट्वातिदयायुक्तस्तेषांदुःखेनदुःखितः।
अनन्तश्चिन्तयामासरोगोपशमकारणम् ॥६०॥

अतिदयायुक्त शेषजी उनके दुःखसे दुःखीहोकर रोगोंकी शान्तिके उपायका विचार करतेभये॥६०॥

संचिन्त्यसस्वयंतत्रमुनेःपुत्रोबभूवह।
प्रसिद्धस्यविशुद्धस्यवेदवेदांगवेदिनः ॥ ६१ ॥

ऐसा विचारकर आपही वेदवेदांगकेजाननेवाले शुद्ध तथा विख्यात किसीमुनिकेपुत्र होतेभये॥६१॥

यतश्चरइवायातोनज्ञातःकेनचिद्यतः।
तस्माच्चरकनाम्नासौविख्यातःक्षितिमण्डले ॥ ६२ ॥

जो वह चरके समानहोकर आयेथे और उनको किसीने नहीं जाना इस कारण चरक नामसे पृथ्वीमें विख्यात हुए ॥ ६२ ॥

सभातिचरकाचार्य्योवेदाचार्य्योयथादिवि।
सहस्रवदनस्यांशोयेनध्वंसोरुजांकृतः ॥ ६३ ॥
आत्रेयस्यमुनेःशिष्याअग्निवेशादयोऽभवन्।
मुनयोबहवस्तैश्चकृतंतन्त्रंस्वकंस्वकम् ॥ ६४ ॥
तेषांतंत्राणिसंस्कृत्यसमाहृत्यविपश्चिता।
चरकेनात्मनोनाम्नाग्रन्थोऽयंचरकःकृतः ॥ ६५ ॥

यह वही साक्षात् शेषजीका अंश भगवान् चरकाचार्य्य बृहस्पति के समान प्रसिद्धहैं जिन्होंने रोगों का नाश किया और पूर्वोक्त आत्रेय मुनिके शिष्य अग्निवेशादि मुनियोंके बनाये हुए शास्त्रोंको शुद्धता पूर्वक इकट्ठा करके चरक नाम ग्रन्थ बनाया ॥ ६३। ६४। ६५ ॥

अथ धन्वन्तरिप्रादुर्भावः ॥

एकदादेवराजस्यदृष्टिर्निपतिताभुवि।
तत्रतेननराद्दृष्ट्वाव्याधिभिर्भृशपीडिताः ॥ ६६ ॥
तान्दृष्ट्वाहृदयंतस्यदययापरिपीडितम्।
दयार्द्रहृदयःशक्रोधन्वन्तरिमुवाचह ॥ ६७ ॥

अथ धन्वन्तरिसे आयुर्वेदकी उत्पत्ति, एकसमय इन्द्रकी दृष्टि पृथ्वीपरपड़ी तबदेखा कि मनुष्य व्याधियोंसे पीड़ित होरहेहैं इसप्रकार उन्हें देख इन्द्रका हृदय दयासे पीड़ित हुआ तब दयार्द्रहोकर इन्द्र धन्वन्तरिसे बोले ॥ ६६। ६७ ॥

धन्वन्तरेसुरश्रेष्ठभगवन्किञ्चिदुच्यते।
योग्योभवसिभूतानामुपकारपरोभव ॥ ६८ ॥

कि हे सुरश्रेष्ठ भगवन् धन्वन्तरि मैं आपसे कुछ कहताहूं वह यहहै कि आप समर्थ हैं इसकारण प्राणियोंके उपकारमें तत्पर हूजिये ॥ ६८ ॥

उपकारायलोकानांकेनकिन्नकृतंपुरा ।
त्रैलोक्याधिपतिर्विष्णुरभून्मत्स्यादिरूपवान् ॥ ६९ ॥

क्योंकि लोगोंके उपकारके लिये किसने क्या नहीं किया पूर्वकालमें त्रैलोक्यके स्वामी विष्णु मत्स्यादि रूपवाले हुये ॥ ६९ ॥

तस्मात्त्वंपृथिवींयाहिकाशीमध्येनृपोभव ।
प्रतीकारायरोगाणामायुर्वेदंप्रकाशय ॥ ७० ॥

इसकारण तुम पृथ्वीको जाओ और वहां काशीके राजाहोकर रोगोंके हटानेके लिये आयुर्वेदका प्रकाश करो ॥ ७० ॥

इत्युक्त्वासुरशार्दूलःसर्वभूतहितेप्सया ।
समस्तमायुषोवेदंधन्वन्तरिमुपादिशत् ॥ ७१ ॥

यह कहकर सुरश्रेष्ठइन्द्र सब प्राणियों के हितकी इच्छासे सम्पूर्ण आयुर्वेद धन्वन्तरि को पढ़ाते भये ॥ ७१ ॥

अधीत्यचायुषोवेदमिन्द्राद्धन्वंतरिःपुरा ।
आगत्यपृथिवींकाश्यांजातोबाहुजवेश्मनि ॥ ७२ ॥

इस प्रकार धन्वन्तरि पूर्वकालमें इन्द्रसे आयुर्वेद पढ़ पृथ्वीमें आकर काशीके राजा बाहुज के घरमें उत्पन्न हुये ॥ ७२ ॥

नाम्नातुसोऽभवत्ख्यातोदिवोदासइतिक्षितौ ।
बालएवविरक्तोऽभूच्चचारसुमहत्तपः ॥ ७३ ॥

जो पृथ्वीमें दिवोदास इसनामसे प्रसिद्धहुये वह बालकही विरक्तहोकर अति उग्रतप करते भये॥७३॥

यत्नेनमहताब्रह्मातंकाश्यामकरोन्नृपम् ।
ततोधन्वंतरिर्लोकैःकाशीराजोभिधीयते ॥ ७४ ॥

जब बहुतयत्न करके ब्रह्माजी उनको काशीका राजा बनातेभये तबसे वही धन्वंतरि लोगों करके काशीराज कहेजाने लगे ॥ ७४ ॥

हितायदेहिनांस्वीयासंहिताविहितामुना ।
अयंविद्यार्थिनोलोकान्संहितांतामपाठयत् ॥ ७५ ॥

वही काशीराज धन्वन्तरिजी सब प्राणियोंके हितके लिये अपनी संहिता बनाकर विद्यार्थी लोगों को पढ़ाते भये ॥ ७५ ॥

अथसुश्रुतप्रादुर्भावः ॥

अथज्ञानदृशाविश्वामित्रप्रभृतयोऽविदन् ।
अयंधन्वंतरिःकाश्यांकाशिराजोऽयमुच्यते ॥ ७६ ॥

अथ सुश्रुतसे आयुर्वेद की उत्पत्ति ॥ तदनन्तर विश्वामित्रादि ऋषियोंने ज्ञान दृष्टिसे जाना कि यह धन्वन्तरिहीहैं जो लोगों करके काशीराज कहे जाते हैं ॥ ७६ ॥

विश्वामित्रोमुनिस्तेषुपुत्रंसुश्रुतमुक्तवान् ।
वत्सवाराणसींगच्छत्वंविश्वेश्वरवल्लभाम् ॥ ७७ ॥

तबतो उन मुनियोंमें से विश्वामित्रजी अपने पुत्र सुश्रुतसे कहतेभये कि हेपुत्र तुम विश्वेश्वर की प्रिय काशीको जाओ ॥ ७७ ॥

तत्रनाम्नादिवोदासः काशीराजोस्तिबाहुजः ।
सहिधन्वन्तरिःसाक्षादायुर्वेदविदांवरः ॥ ७८ ॥

और वहां जो सुबाहुके पुत्र दिवोदास नामसे प्रसिद्ध काशीराज हैं वह आयुर्वेदके जाननेवालोंमें श्रेष्ठ साक्षात् धन्वन्तरिही हैं ॥ ७८ ॥

आयुर्वेदंततोऽधीष्व लोकोपकृतिहेतवे ।
सर्वप्राणिदयातीर्थ मुपकारोमहामखः ॥ ७९ ॥

इसकारण लोगोंके उपकारके लिये उन्हींसे आयुर्वेदको पढ़ो क्योंकि सब प्राणियोंपर दया करना यही तीर्थ और उपकार महायज्ञ गिनाजाता है ॥ ७९ ॥

पितुर्वचनमाकर्ण्य सुश्रुतःकाशिकांगतः ।
तेनसार्द्धंसमध्येतुं मुनिसूनुशतंययौ ॥ ८० ॥

ऐसे पिताके वचन सुन सुश्रुतजी काशीको गये और उनके साथ पढ़ने के लिये सैकड़ों मुनि पुत्रभी जाते भये ॥ ८० ॥

अथधन्वन्तरिंसर्ववानप्रस्थाश्रमेस्थितम् ।
भगवन्तंसुरश्रेष्ठंमुनिभिर्बहुभिःस्तुतम् ॥ ८१ ॥
काशिराजंदिवोदासंतेपश्यन्विनयान्विताः ।
स्वागतञ्चइतिप्राहदिवोदासोयशोधनः ॥ ८२ ॥
कुशलंपरिपप्रच्छतथागमनकारणम् ।
ततस्तेसुश्रुतद्वाराकथयामासुरुत्तरम् ॥ ८३ ॥

तदनन्तर वहां जाकर उन विनय युक्त मुनिपुत्रोंने वानप्रस्थाश्रम में स्थित देवताओंमें श्रेष्ठ मुनियों करके स्तुति किये हुये काशिराज दिवो दास नामसे प्रसिद्ध भगवान् धन्वन्तरि जीको देखा और वे भी इन्हें देख कुशल पूर्वक शुभागमन पूंछ आगमन का कारण पूंछते भये तब वे मुनि पुत्र भी सुश्रुत जीके द्वारा यह उत्तर देते भये ॥ ८१। ८२। ८३ ॥

भगवन्मानवान्दृष्ट्वाव्याधिभिःपरिपीड़ितान् ।
क्रन्दतोम्रियमाणांश्चजातास्माकंहृदिव्यथा ॥ ८४ ॥

कि हे भगवन् व्याधियों से पीड़ित रोते तथा मरते हुये मनुष्यों को देखकर हमलोगों के हृदयमें बड़ीही व्यथा उत्पन्न हुईहै ॥ ८४ ॥

आमयानांशमोपायंविज्ञातुंवयमागताः ।
आयुर्वेदंभवानस्मानध्यापयतुयत्नतः ॥ ८५ ॥

इसकारण हमलोग आपके पास उन रोगोंकी शान्ति का उपाय जाननेके लिये आयेहैं आप यत्न पूर्वक हमलोगों को आयुर्वेद पढ़ाइये ॥ ८५ ॥

अंगीकृत्यवचस्तेषां नृपतिस्तानुपादिशत् ।
व्याख्यातंतेनतेयत्नाज्जगृहुर्मुनयोमुदा ॥ ८६ ॥

तब उन मुनि पुत्रोंके वचनोंको स्वीकारकर काशिराज,उनको पढ़ातेभये और वेभी उनके उस पढ़ायेहुये पाठको आनन्दपूर्वक अच्छीतरह ग्रहण करते भये ॥ ८६ ॥

काशिराजंजयाशीर्भिरभिनन्द्यमुदान्विताः ।
सुश्रुताद्याःसुसिद्धार्था जग्मुर्गेहंस्वकंस्वकम् ॥ ८७ ॥

तदनन्तर जयाशीर्वादोंसे काशीराजको प्रसन्न कर तथा अपने प्रयोजनको सिद्ध करके हर्षपूर्वक वे सुश्रुतादि मुनि पुत्र अपने २ घरोंको जातेभये ॥ ८७ ॥

प्रथमंसुश्रुतस्तेषु स्वतन्त्रंकृतवान्स्फुटम् ।
सुश्रुतस्यसखायोऽपि पृथक्तन्त्राणितेनिरे ॥ ८८ ॥

उनमें से सुश्रुतजी पहिले अपना तन्त्रबनातेभये तदनन्तर उनके मित्रोंने भी अपने२तन्त्रबनाये॥८८॥

सुश्रुतेनकृतंतंत्रं सुश्रुतंबहुभिर्यतः ।
तस्मात्तत्सुश्रुतंनाम्ना विख्यातंक्षितिमण्डले ॥ ८९ ॥

उन तन्त्रोंमेंसे सुश्रुतजीके बनायेहुये तन्त्रको बहुतोंने सुना इसकारण वह पृथ्वीमें सुश्रुत नाम से विख्यात हुआ ॥ ८९ ॥

इत्यायुर्वेदप्रवक्तॄणां प्रादुर्भावः ॥

आयुर्वेदाब्धिमध्यादतिमतिमुनयोयोगरत्नानियत्नात्
लब्ध्वास्वेस्वेनिबन्धेदधुरखिलजनव्याधिविध्वंसनाय ।
तत्तद्ग्रन्थाद्गृहीतैःसुवचनमणिभिर्भावमिश्रश्चिकित्सा-
शास्त्रेजाड्यान्धकारंप्रशमयितुमिमंसंविधत्तेप्रकाशम् ॥ १ ॥

अति बुद्धिमान् मुनियोंने सब प्राणियोंके रोग नाश होनेके लिये आयुर्वेद रूप समुद्रके मध्य से यत्न पूर्वक जिन२ औषधियोंके योगरूप रत्नोंको लेकर अपने २ ग्रन्थोंमें स्थापन किया उन २ ग्रन्थों से ग्रहण कियेहुये उन्हीं वचनरूप मणियों करके वैद्यकशास्त्रमें अज्ञानरूपी अंधकार दूरकरनेके लिये भावमिश्रजी इसग्रन्थरूपी प्रकाशको करते हैं ॥ १ ॥

श्रीपतिपदप्रसादादाशीर्भिर्भूमिदेवानाम् ।
भावप्रकाशनाम्नाग्रन्थोयंपठ्यतांसर्वैः ॥ २ ॥

लक्ष्मीपतिके चरणोंके प्रसाद तथा ब्राह्मणोंके आशीर्वादसे यह भावप्रकाश नाम ग्रन्थ सबलोगों करके पढ़नेके योग्य होवे ॥ २ ॥

एतस्यनिबन्धस्यफलंचिकित्साचिकित्साचपुरुषस्य
पुरुषस्तुचतुर्विंशतितत्त्वजीवात्मसमवायस्तस्मात्

चतुर्विंशतितत्त्वानांजीवात्मनश्च स्वरूपनिरूपणायसृष्टिक्रममाह ॥ ३ ॥

चिकित्सा अर्थात् व्याधि दूरकरना इस ग्रन्थका मुख्य प्रयोजन है और चिकित्सा पुरुषकी होती है वह पुरुष महदादि चौबीस तत्त्व व जीवात्मा इन सबोंका समुदाय है इस कारण उन चौबीस तत्त्वोंका तथा जीवात्माका स्वरूप कहने के लिये पहिले सृष्टिका क्रम कहते हैं ॥ ३ ॥

आत्माज्योतिश्चिदानन्दरूपोनित्यश्चनिस्पृहः ।
निर्गुणःप्रकृतेर्योगात्सगुणःकुरुतेजगत्॥सगुणइच्छादियुक्तः ॥ ४ ॥

अथआत्मा ॥ यथार्थमें आत्मा प्रकाश चैतन्य आनन्दरूप नित्य इच्छा व गुणरहित है परन्तु वही प्रकृतिके योगसे सगुण अर्थात् इच्छादियुक्त होकर जगत्को करताहै ॥ ४ ॥

सत्त्वंरजस्तमश्चेतिगुणास्तेप्रकृतेःसमाः ।
साजड़ापिजगत्कर्त्रीपरमात्मचिदव्ययात् ॥
सतःसाधोर्भावःसत्त्वंप्रकाशकंज्ञानसुखहेतुःरजो
रागात्मकंदुःखहेतुः ताम्यतिग्लानिंप्राप्नोतिअ
नेनेतितमःआवरकंमोहहेतुः तेगुणाः समाःप्रकृ
तिरित्यर्थःतथासतिन्यूनाधिकगुणाःविकृतिः ५ ॥

सत्त्वरज और तम यह प्रकृतिके समगुणहैं जड़भी वह प्रकृति चैतन्य अविनाशी परमात्मा के आभाससे संसारकी उत्पन्न करने वालीहै ॥

सत्त्व- साधुकाभाव- प्रकाशक, ज्ञान और सुखका कारणहै- रज अनुरागमय और दुःखका कारण है जिस्से ग्लानिको प्राप्तहो वहतम बुद्धिका आच्छादनकरने वाला और मोहका कारणहै समयह गुण प्रकृति कहलाती हैं और ऐसा होनेसे न्यून और अधिक गुण विकृति कहलाते हैं ॥ ५ ॥

अथ सुश्रुतमुपदिशन् धन्वन्तरिः प्रकृतेः स्वरूप बिशेषणमाह ॥

सर्वभूतानांकारणमकारणं सत्त्वरजस्तमोलक्षणमष्ट
रूपमाखिलस्य जगतस्सम्भवहेतुरव्यक्तं नामेति ॥
अस्यायमर्थः । अव्यक्तंनव्यज्यतेऽस्मिन्निति अव्यक्तं
मूलप्रकृत्यपरपर्य्यायंतत् सर्वभूतानां कारणंसमवा
यिकारणम् । अकारणं नविद्यतेकारणंयस्यतत् ।
सत्त्वरजस्तमोलक्षणंसमसत्त्वरजस्तमः स्वरूपं । अष्ट
रूपंअव्यक्तं महानहङ्कारः पञ्चतन्मात्राणीत्यष्टौरू
पाणियस्यतत् यतइन्द्रियाणांमहाभूतानांचकारण
तयामहदादयोऽपिसप्तप्रकृतयःएवमखिलस्यजगतः
संभवहेतुरव्यक्तमित्युपसंहारः ॥ ६ ॥

अब सुश्रुतको उपदेश करते हुए धन्वन्तरि जी प्रकृतिका स्वरूप विशेष कहते हैं ॥
सम्पूर्ण भूतोंका कारण अकारण अर्थात् स्वयंकारण से रहित सत्त्वरज और तमोगुणरूपी आठ

रूपवाला सम्पूर्ण संसारकी उत्पत्तिका कारण अव्यक्त है इसका यह तात्पर्य्य है कि अव्यक्त नहीं प्रकट होनेवाला, यह मूलप्रकृति का दूसरानाम है,सम्पूर्ण भूतोंका कारणहै अर्थात् द्रव्योंका संबंध-रूपी समवायि कारणहै अकारण अर्थात् जिसका कारण नहो सत्त्वरज स्तमोलक्षण अर्थात् समता को प्राप्तहैं सत्त्वरज और तम जिसमें ऐसा अष्टरूप अर्थात् अव्यक्त महत्तत्त्व अहङ्कार और पञ्च तन्मात्रा यह आठों हैं रूप जिसके जिस कारणसे इन्द्रिय और महाभूतोंके कारण होने से महत्त-त्त्वादिक भी सात प्रकृति कहलाते हैं इसी प्रकार सम्पूर्ण संसारकी उत्पत्तिका कारण अव्यक्त है यह सारांश है ॥ ६ ॥

प्रकृतिपुरुषयोःसाधर्म्यमाह ॥

उभावप्यनादीउभावप्यनन्तौउभावप्यलिंगावुभावपिनित्यावुभावप्यपरावुभा वपिसर्वगतौ इति उभावप्य नित्यौलयंक्वचिदपिनयातः उभावप्यपरौनविद्यते परोऽपरोयाभ्यांतावपरौ ॥ ७ ॥

अब प्रकृति और पुरुषका साधर्म्य कहतेहैं ॥

दोनों अनादि दोनों अनन्त दोनों लक्षण रहित दोनों नित्य दोनों अपर और दोनों सर्वव्यापक हैं दोनों नित्यहैं अर्थात् कहीं कभी नाशको नहीं प्राप्तहोते हैं-दोनों अपर हैं अर्थात् जिनसे परे दूसरा नहीं है ७ ॥

अथ तयोर्वैधर्म्यमाह ॥

एकातुप्रकृतिरचेतना त्रिगुणा वीजधर्मिणी प्रसवधर्मिणय मध्यस्थधर्मिणी चेति अचेतनाजड़ा त्रिगुणातुल्यगुणत्रयात्मिका बीजधर्मिणी सर्वेषां महदादीनां विकाराणां बीजत्वेना वस्थितप्रसवधर्मिणी पुरुषेणाक्रान्ता क्षोभंप्राप्य साम्यमतिक्रम्य महद हङ्कारादिक्रमेणजगतः प्रसवित्रीअमध्यस्थ धर्म्मिणीसुखदुःखभोगभोगिनीनतुसुख दुःखभोगादुदासीनापुरुषस्तुचेतनावान् निर्गुणोऽप्रसवधर्माबीजधर्मा मध्यस्थधर्म्मा चेतिनिर्गुणः अविद्यामानसत्त्वादिगुणः अवीजधर्मामहाप्रलयेमहदादीनांविकाराणांप्रकृ तावितस्मिन्ननवस्थानात् मध्यस्थधर्मीसुखदुःखेच्छाद्वेषादिभ्यउदासीनः ८ ॥

अब उन दोनोंके विपरीत धर्म कहते हैं प्रकृति तो एक अचेतना त्रिगुणा बीजधर्म्म वाली प्रसवधर्मवाली और अमध्यस्थ धर्म्मवालीहै अचेतन अर्थात् जड त्रिगुणा अर्थात् समसत्त्वादि तीनों गुण मय बीजधर्मवाली अर्थात् सम्पूर्ण महत्तत्त्वादि विकारोंके बीजरूपसे स्थित होनेवाली प्रसव धर्मवाली अर्थात् पुरुषसे आक्रान्त हुई क्षोभको प्राप्त होकर समताको छोड़ महत्तत्त्व और अहङ्का-रादिकोंके क्रमसे संसारकी उत्पत्ति करनेवाली और अमध्यस्थ धर्म्मवाली अर्थात् सुख और दुःखों की भोगनेवाली नकि सुख दुःखके भोगसे उदासीन-और पुरुष तो चैतन्य निर्गुण अप्रसव धर्म्म वाला-अबीज धर्मवाला और मध्यस्थ धर्मवाला है-निर्गुण अर्थात् सत्त्वादि गुणोंसे रहित-अप्रसव धर्म्मवाला अर्थात् संसारके उत्पन्न करनेकी शक्तिसे रहित-अबीज धर्म्मवाला अर्थात् महाप्रलय में महत्तत्त्वादिक विकारोंका अपने में नहीं स्थित रखनेवाला-मध्यस्थ धर्म्मवाला सुख दुःख इच्छा द्वेष आदिसे उदासीन ॥ ८ ॥

प्रकृतेर्नामान्याह ।

प्रधानंप्रकृतिःशक्तिर्नित्याचाविकृतिस्तथा ।
एतानितस्यानामानि पुरुषंयासमाश्रिता ॥ ९ ॥

प्रकृतिकेनाम ॥

प्रधान-प्रकृति-शक्ति-नित्या और अविकृति यह पुरुषके आश्रयसे रहनेवाली प्रकृतिके नामहैं १०॥

प्रकृतेर्गुणानाह

सत्त्वंरजस्तमस्त्रीणि विज्ञेयाःप्रकृतेर्गुणाः ॥
तैश्चयुक्तस्यचित्तस्य कथयाम्यखिलानगुणान् ॥ १० ॥

अब प्रकृतिके गुण कहते हैं ॥

सत्त्वरज तम यह तीन प्रकृतिके गुण जानने चाहिये और इनसे मिलेहुये चित्तके सम्पूर्ण गुण अब कहते हैं ॥१०॥

अथसत्त्वयुक्तस्यमनसोगुणान्नाह ॥

आस्तिक्यंप्रविभज्यभोजनमनुत्तापश्चतथ्यंवचो-
मेधाबुद्धिधृतिक्षमाश्चकरुणाज्ञानंचनिर्दम्भता ।
कर्मानिन्दितमस्पृहंचविनयोधर्मस्सदैवादरा-
देतेसत्त्वगुणान्वितस्यमनसोगीतागुणाज्ञानिभिः ॥

आस्तिधर्ममोक्षपरलोकादिकमितिबुद्ध्या चरतीत्यास्तिकस्तस्यभाव आस्तिक्यं । अनुत्तापःअक्रोधःधृतिः भूतप्रेतस्मरक्रोधलोभाद्यावेशरहित्यं ज्ञानमात्मज्ञानं निर्दम्भ ताकपटाभावः कर्मअनिन्दितंअस्पृहं निष्कामं च ॥ ११ ॥

अबसत्त्वगुणयुक्तमनकेगुणकहतेहैं ॥

आस्तिक्य- अच्छे प्रकार बिभाग करके भोजन अनुत्ताप- सत्यवचन- मेधा- बुद्धि- धृति क्षमा- करुणा ज्ञान निर्दम्भता- अनन्दित और अस्पृहकर्म- विनय- आदर पूर्वक सदैवधर्म करना यह सत्व गुणसे युक्तमनके गुणज्ञानियोंने कहे हैं आस्तिक्य (धर्म्म मोक्षऔर पर लोकादिक हैं इस बुद्धि से जो कर्म्म करता है वह आस्तिकहै और उसके धर्म्म को आस्तिक्य कहते हैं-) अनुत्ताप (क्रोधन- होना) मेधा- (धारणा शक्तिवाली बुद्धि) धृति (भूतप्रेत काम क्रोध और लोभादिकों के आवेशसे रहित होना) ज्ञान (आत्माका ज्ञान) निर्दम्भता (कपट रहित होना) अनिन्दित और अस्पृह कर्म्म (निन्दा और इच्छासे रहित कर्म्म) ११ ॥

रजोगुणयुक्त मनसो लक्षणम् ॥

क्रोधस्ताड़नशीलताचबहुलं दुःखंसुखेच्छाधिका
दम्भःकामुकताप्यलीकवचनं चाधीरताऽहंकृतिः ।
ऐश्वर्य्यादभिमानितातिशयिता नंदोऽधिकश्चाटनं
प्रख्याताहिरजोगुणेनसहितस्यैतेगुणाश्चेतसः ॥
अलीकवचनं मिथ्याकथनं अटनंपृथ्वीपरिभ्रमणं ॥ १२ ॥

रजोगुणसे युक्त मनके लक्षण ।

क्रोध मारपीट का स्वभाव-बहुत दुःख-सुखकी बहुत इच्छा कपट-संभोग करनेकी इच्छा अलीक वचन- धैर्य्यका न होना-अहंकार-ऐश्वर्य्यसे अभिमान होना-बहुत आनन्द होना-और बहुत घूमना यह रजोगुणसे युक्तचित्तके गुण प्रसिद्ध हैं अलीकवचन (मिथ्या बोलना) अटन (पृथ्वी पर घूमना) ॥ १२ ॥

अथ तमोयुक्त मनसो लक्षणं ।

नास्तिक्यंसुविषण्णतातिशयितालस्यं च दुष्टामतिः
प्रीतिर्निंदितकर्म्मशर्मणिसदा निद्रालुताऽहर्निशम् ।
अज्ञानं किलसर्वतोपि सततं क्रोधांधता मूढ़ता
प्रख्याताहितमोगुणेनसहितस्यैतेगुणाश्चेतसः ॥
तत्रप्रभूतसत्त्वस्तु सात्त्विकः पुरुषः स्मृतः ।
राजसस्तामसश्चैव त्रिविधस्तेनमानवः ॥ १३ ॥

अब तमोगुण युक्त मनके लक्षण कहते हैं ।

नास्तिकता-बहुत दुःखित होना बहुत आलस्य होना दुष्टबुद्धि बुरेकार्य्य और आनन्दमें प्रीति रात्रिदिन सोना--सब ओरसे अज्ञान,-सदैव क्रोधसे अन्धा होना--और मूर्खता यह तमोगुण से युक्त मनके गुण प्रसिद्धहैं--इनमें अधिक सत्त्व गुणवाला पुरुष सात्विक--अधिक रजोगुणवाला राजस और अधिक तमोगुणवाला तामस कहाताहै--इस रीतिसे तीनप्रकार के पुरुष होते हैं ॥ १३ ॥

ततोभवन्महत्तत्त्वंबुद्धितत्त्वापराभिधम् । त्रिगुणंसत्त्वबहुलंनिर्म्मलंस्फटिकोपमम् ॥ चिच्छायाप्राप्तचैतन्यंतदिच्छामयमीरितम् । ततःप्रकृतेस्त्रिगुणंत्रयोगुणायत्रततत्तच्चस त्त्वबहुलं अत्रायमभिप्रायः यथा निश्चलेह्रदादौबहुद्रव्यपातात्तदीयंजलंवर्द्धते तथा चि द्रूपपुरुषेणाक्रमणात्तुल्यगुणत्रयात्मिकायाः प्रकृतेर्ज्ञानहेतुप्रकाशः सत्त्वगुणोवृद्धःप्रवृद्ध सत्त्वतः प्रकृतेस्सत्त्वबहुलंबुद्धितत्त्वमभवत् ॥ १४ ॥

उस प्रकृतिसे महत्तत्त्व उत्पन्न हुआ जिसका कि दूसरानाम बुद्धितत्त्वहै और वह त्रिगुण अधिक सत्त्व गुणवाला स्फटिक के समान निर्म्मल चैतन्यकी छाया से प्राप्तहुये चैतन्यवाला इच्छामय कहागयाहै--त्रिगुण अर्थात् तीनों गुणहैं जिस में और वह अधिक सत्त्वगुणवालाहै यहां यह अभिप्रायहै कि जैसे निश्चल तडागादिकों में बहुत वस्तुओं के गेरने से उसकाजल बढ़ताहै उसी प्रकार चैतन्यरूप पुरुषके द्वारा व्याप्त होने से समान तीनों गुणवाली प्रकृति के ज्ञानका कारण प्रकाशरूप सत्त्वगुण बढ़ता है और बढ़ेहुये सत्त्वगुणवाली प्रकृति से अधिक सत्त्वगुणवाला महत्तत्त्व उत्पन्न होताहै॥ १४ ॥

महतस्त्रिगुणाज्जातोऽहङ्कारस्त्रिगुणान्वितः । सात्त्विकोराजसश्चापितामसश्चेतिस त्रिधा ॥ महतःबुद्धितत्त्वात्त्रिगुणात्त्रयोगुणा यत्र ततः ननुमहत्तत्त्वंत्रिगुणमुक्तमेतत्किमर्थंमहतस्त्रिगुणादितिविशेषणंसत्यं त्रिगुणादितिपुनर्विशेषणादुक्तं सत्त्वबहुलमितिविशेषणमत्रनानुवर्त्तते तेनाऽङ्कारोत्पादकं महत्तत्त्वंत्रिगुणमपिरजोबहुलंबोद्धव्यम् अहङ्कारस्यरजोगुणान्वितस्यमनोधर्म्मत्वात् अहङ्कारोभिमानव्यापारलक्षणः ॥ १५ ॥

त्रिगुण महत्से उत्पन्न हुआ अहंकार तीनों गुणोंसे युक्तहै और इसीकारण से वह तीन प्रकार काहै सात्त्वक राजस और तामस महत् अर्थात् बुद्धितत्त्वसे त्रिगुणसे अर्थात् तीनोंगुण वाले से अब यह सन्देह होताहै कि महत्तत्त्व तो तीनोंगुण वाला कहाही गयाहै फिर त्रिगुण यह विशेषण क्यों दिया, ठीकहै त्रिगुण इस विशेषणके फिर देनेसे यह प्रकट होताहै कि सत्त्वबहुल अर्थात् अधिक सत्त्वगुणवाला यह विशेषण यहां नहीं लियाजाता इससे यह जानना चाहिये कि अहंकारका उत्पन्न करनेवाला महत्तत्त्व तीनों गुण से युक्त होने परभी अधिक रजोगुण वालाहै क्योंकि रजोगुण से युक्तही अहंकार मनका धर्म्महै और अहंकार अभिमानरूपी व्यापारके लक्षणवालाहै १५॥

अहङ्कारस्त्रिविधस्तानाहसात्त्विक इत्यादि तस्य त्रिविधस्य कार्य्य माह॥

जातानिसात्त्विकात्तस्मादिन्द्रियाणिसराजसात् । तानिश्रोत्रंत्वचोनेत्रंरसनानासिकातथा॥ वाग्घस्तचरणोपस्थंगुदान्येकादशंमनः । पञ्चबुद्धीन्द्रियाण्याहुःप्राक्तनानीतराणि च॥ कर्मेन्द्रियाणिपञ्चैवकथयन्तिविपश्चितः । बुद्धीन्द्रियाणिबुद्धेराश्रयत्वात्कर्म्मेन्द्रियाणिकर्माश्रयत्वात् सात्त्विकाऽहंकारजातत्वादिन्द्रियाणिप्रकाशलक्षणानि सत्त्वस्यप्रकाशकत्वात् मनोबुद्धीन्द्रियंविज्ञैःकर्मेन्द्रियमपिस्मृतम्॥मनोऽधिष्ठितमेवेदमिन्द्रियंयत्प्रवर्त्तते॥ १६॥

अहङ्कार तीनप्रकारकाहै यह तौ सात्त्विक इत्यादि श्लोक से कहागया
अब तीनप्रकारवाले अहङ्कार के कार्य्य कहे जातेहैं॥

उस रजोगुण युक्त सात्त्विक अहङ्कार से इन्द्रियां उत्पन्न हुईं वह यह हैं कान-त्वचा-नेत्र-जिह्वा नासिका-वाणी-हाथ-पैर-लिङ्ग-गुदा और ग्यारहवांमन--पंडित लोग पहली पांचको बुद्धीन्द्रिय कहते हैं और पिछली बाणी आदि पांचको कर्मेन्द्रिय वर्णन करतेहैं-बुद्धिके आश्रय होनेसे बुद्धीन्द्रिय-और कर्मके आश्रय होने से कर्मेन्द्रिय कहलाती हैं सतोगुणकेप्रकाशक होने से सात्त्विक अहङ्कार से उत्पन्न हुईं इन्द्रियां प्रकाश लक्षणवाली होतीहैं बुद्धिमान् लोग मनको बुद्धीन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय भी कहते हैं क्योंकि इन्द्रियां मनके संयोगही से अपने २ कर्म में प्रवृत्त होतीहैं॥ १६॥

तत्रेन्द्रियाणां विषयानाह॥

शब्दस्पर्शरूपंच रसोगन्धोह्यनुक्रमात् । बुद्धीन्द्रियाणांविषयाः समाख्यातामहर्षिभिः॥ वाच्यंग्राह्यं च गंतव्यमानन्दंत्याज्यमेवच । कर्मेंद्रियाणांविषया ज्ञातव्याविषया ह्रदः॥ ह्रदःमनसः॥ तामसादप्यहंकारा त्तन्मात्राणिसराजसात् । पञ्चाल्पसत्त्वसम्बन्धात्तल्लिंगानि भवन्तिहि॥ शब्द तन्मात्रकं-स्पर्श तन्मात्रकं-रूपतन्मात्रकं-रसतन्मात्रकं-गंधतन्मात्रक मिति॥ १७॥

अब इन्द्रियोंके विषय कहते हैं॥

महर्षियोंने क्रम पूर्वक शब्दस्पर्श रूप रस और गंध यह बुद्धीन्द्रियोंके विषय कहे हैं-बोलना ग्रहण करना गमन करना आनन्द करना और मलका त्याग यह कर्मेंद्रियोंके विषय जानने चाहिये और यही सम्पूर्ण शब्दादि विषय ह्रदयकेभी जानने चाहिये ह्रदयके अर्थात् मनके-रजोगुण युक्त

थोडे सतोगुण वाले तामस अहंकारसे उनके लक्षणोंसे युक्त पांच तन्मात्रा उत्पन्न होती हैं वह यह हैं कि शब्दतन्मात्रा स्पर्शतन्मात्रा रूपतन्मात्रा रसतन्मात्रा और गंधतन्मात्रा ॥ १७ ॥

तानितुतल्लिंगानिमोहादिलिंगानितान्यद्भुतस्वभावानिबाह्येन्द्रीग्राह्याणि सासामात्राय स्मिंस्तत्तन्मात्रकं। तन्मात्रेभ्यो वियद्वायुवह्निवारिवसुन्धरा। एतानिपञ्चजायन्तेमहाभूतानितत्क्रमात् ॥ एकोत्तरपरिवृद्ध्यावियदादयोजायन्तइत्यर्थः तद्यथाशब्दतन्मात्राच्छब्दगुणंवियज्जायते शब्दतन्मात्रसहितात्स्पर्शतन्मात्राच्छब्दस्पर्शगुणोवायुर्ज्जायते शब्दतन्मात्रस्पर्शतन्मात्रसहिताद्रूपतन्मात्राच्छब्दस्पर्शरूपगुणोवह्निर्ज्जायते शब्दतन्मात्रस्पर्शतन्मात्ररूपतन्मात्रसहिताद्रसतन्मात्राच्छब्दस्पर्शरूपरसगुणंवारिजायते शब्दतन्मात्रस्पर्शतन्मात्ररूपतन्मात्ररसतन्मात्रसहितात् गन्धतन्मात्राच्छब्दस्पर्शरूप रसगन्धगुणावसुन्धराजायते ॥ १८ ॥

और वह तल्लिंगानि अर्थात् मोहादिकों के चिह्नों से युक्त विलक्षण स्वभाववाली बाह्येन्द्री अर्थात् नेत्रादिकोंसे ग्रहण करनेके योग्यहैं वह वह मात्रा जिसमें हैं वह तन्मात्रक हैं तन्मात्राओं से आकाशवायु अग्नि जल पृथ्वी यह पांच महाभूत क्रमसे उत्पन्न होतेहैं एक एकके उत्तरोत्तर बढ़ने से आकाशादिक उत्पन्न होतेहैं वह जैसे शब्द तन्मात्रासे शब्दगुण वाला आकाश उत्पन्न होता है शब्दतन्मात्रायुक्त स्पर्श तन्मात्रा से शब्द स्पर्शगुणवाला वायु उत्पन्न होताहै शब्द तन्मात्रा स्पर्श तन्मात्रायुक्त रूपतन्मात्रा से शब्दस्पर्शरूप गुणवाला अग्नि उत्पन्न होताहै शब्दतन्मात्रा स्पर्श तन्मात्रा रूपतन्मात्रा युक्त रसतन्मात्रासे शब्द स्पर्शरूपरस गुण वाला जल उत्पन्न होता है शब्द तन्मात्रा स्पर्शतन्मात्रा रूपतन्मात्रा रसतन्मात्रा युक्त गन्धतन्मात्रासे शब्द स्पर्शरूप रसगन्ध गुण वाली पृथ्वी उत्पन्नहोती है ॥ १८ ॥

अथ महाभूतानां गुणानाह ॥

शब्दश्रोत्रेन्द्रियंवापिच्छिद्राणिचविविक्तता।
वियतःकथिताएते गुणागुणविचारिभिः ॥

विविक्तताशरीराणांभावानांशिरास्नाय्वस्थिपेशी-प्रभृतीनांजातिव्यक्तिभ्यांमिथःपृथक्त्वम् ॥ १९ ॥

अथमहाभूतोंके गुणकहतेहैं ॥

शब्द-कर्णोन्द्री-छिद्र और विविक्तता यह गुणज्ञ लोगोंने आकाशके गुणकहे हैं विविक्तता अर्थात् शरीरों के शिरा (छोटीनसे) स्नायु मोटीनसें) हड्डी पेशी (मांसकी थैली) आदिक भावोंकी जाति और व्यक्तिसे परस्पर अलग होना (जैसेछोटीनस और बडीनसका अलग होना जातिका अलग होनाहै और बडी२ या छोटी२ नसोंका अलग होना व्यक्तिका पृथक् पनाहै) ॥ १९ ॥

स्पर्शःत्वगिन्द्रियञ्चापिलघुतास्यन्दनंतनोः।
चेष्टाःसर्वशरीरस्यवायोरेतेगुणाःस्मृताः ॥ २० ॥

स्पर्श-त्वचा इन्द्री-शरीरका हलकापन-हिलना झुलना और सम्पूर्ण शरीर की चेष्टा यह वायुके गुण कहे हैं ॥२० ॥

रूपंनेत्रेन्द्रियंपाकःसन्तापस्तीक्ष्णतातथा ।
वर्णोभ्राजिष्णुतामर्शःशौर्य्यंवह्नेर्गुणाअमी ॥

रूपंलावण्यंपाकःउदराग्निनाहारपाकःसन्तापश्चौष्ण्यंतीक्ष्णताआशुकारितावर्णो गौरादिःभ्राजिष्णुतादीप्तिःअमर्षःक्रोधः ॥२१ ॥

रूप-नेत्रेन्द्री पाक-सन्ताप तीक्ष्णता वर्ण भ्राजिष्णुता अमर्ष शूरता यह अग्निके गुणहैं रूप (लावण्य) पाक (उदरकी अग्निसे भोजनका परिपाक) संताप (उष्णता) तीक्ष्णता (शीघ्रता) वर्ण (श्वेतरक्तादि) भ्राजिष्णुता (दीप्ति) अमर्ष (क्रोध) २१ ॥

रसोरसेंद्रियंशैत्यं स्नेहश्चगुरुतातथा ।
सर्वद्रवसमूहश्च शुक्रंवारिगुणास्मृताः ॥ २२ ॥

रस रसनेन्द्री (जिह्वा) शीतता-स्नेह (चिकनापन) गुरता (भारीपन) सम्पूर्ण बहनेवाली बस्तु और वीर्य्य यह जलके गुण कहेहैं ॥ २२ ॥

गन्धोघ्राणेंद्रियंचापि काठिन्यंगौरवंतथा ।
वसुंधरागुणाएते गदितागुणवेदिभिः ॥ २३ ॥

गन्ध-घ्राणेन्द्री (नासिका) कठिनता और भारीपन यह गुणज्ञ पुरुषोंने पृथ्वीके गुणकहे हैं॥२३॥

शब्दःस्पर्शश्चरूपंच रसोगंधश्चतत्क्रमात् ।
तन्मात्राणांविशेषास्युः स्थूलभावमुपागताः ॥

तत्क्रमात् शब्दतन्मात्रादिक्रमात् विशेषाः अनुभवयोग्यैस्सुखदुःखमोहरूपैर्धर्मैर्विशिष्यंत इति विशेषाः अत्रकर्मणि घञ् प्रत्ययः तन्मात्राणि त्वविशेषाणि यतस्तान्यनुभवयोग्यैस्सुखादिभिर्विशेष्टुंन शक्यन्ते सूक्ष्मत्वात् ॥ २४ ॥

शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध यह क्रमसे स्थूलता को प्राप्तहोकर तन्मात्राओंके विशेषहैं तत्क्रमात् अर्थात् शब्द तन्मात्रादिकोंके क्रमसे--अनुभवके योग्य सुख दुःख और मोहरूपी धर्म्मोंसे जो भेदको प्राप्तहों वह विशेषहैं यहाँ (विशेषशब्दमें) कर्म में घञ्प्रत्ययहै और तन्मात्रा विशेष नहीं हैं क्योंकि वह सूक्ष्मताके कारणसे अनुभव के योग्य सुखादिकों से भिन्न नहीं कीजासक्ती हैं ॥ २४ ॥

प्रकृतेःकारणायोगान्मताप्रकृतिरेवसा ।
महत्तत्त्वादयस्सप्तशक्तेर्विकृतयःस्मृताः ॥

प्रकृतिरेवकारणमेवनतुकस्य चित्कार्य्यमित्यर्थःमहत्तत्त्वादयस्सप्तमहानहङ्कारःपञ्च तन्मात्राणीति—शक्तेःप्रकृतेर्विकृतयःकार्य्याणि ॥ २५ ॥

प्रकृतिका कारण न होनेसे वह कारणंही है अर्थात् किसी का कार्य्य नहीं है सातों महत्तत्त्वादिक प्रकृतिके कार्य्य कहेगये हैं प्रकृतिरेव-अर्थात् कारणही है किसीका कार्य्य नहीं है सात महत्तत्त्वादिक अर्थात् महत्तत्त्व अहङ्कार और पंचतन्मात्रा शक्तेः (प्रकृतिके) विकृतयः (कार्य्य) ॥ २५ ॥

इन्द्रियाणांचभूतानांकारणत्वान्महर्षिभिः ।
महत्तत्त्वादयस्सप्तप्रोक्ताःप्रकृतयोपिच ॥

तथासति प्रकृतिर्महानहङ्कारः पंचतन्मात्राणिचेत्यष्टौप्रकृतयः ॥ २६ ॥

महर्षियोंने सातमहत्तत्त्वादिकों को इन्द्री और भूतोंके कारण होनेसे प्रकृति भी कहाहै ऐसा होने से प्रकृति महत्तत्त्व अहङ्कार और पंचतन्मात्रा यह आठ प्रकृतिहैं ॥ २६ ॥

दशेन्द्रियाणिचित्तंचमहाभूतानिपंचच । एतानिसृष्टिंजानद्भिर्विकाराःषोडशस्मृ ताः ॥२७॥ विकाराःकार्याणिएवंचतुर्विंशतिभिस्तत्त्वसिद्धेवपुर्गृहे । जीवात्मानियतेर्निघ्नो वसतिस्वान्तदूतवान् ॥ अत्रशब्दादीनांवियदादिमहाभूतगुणानांधर्मिभ्योभिन्नतयाप्र थक्त्वंनिरस्यमुक्तानान्तत्त्वानामुपसंहारमाहचतुर्विंशतिभिरितिनिचप्रकृतयोष्टौ विका राःषोडशेति-महत्तत्त्वादीनिप्रकृत्यादीनां भावाः नियतेश्शुभाशुभकर्म्मणः-निघ्नआयत्तः स्वान्तदूतवान्मनोदूतियुक्तः सदेहीकथ्यतेपापपुण्यदुःखसुखादिभिर्व्याप्तोबद्धश्चमनसा कृत्रिमैर्कर्मबन्धनैःसजीवात्मातस्यदेहिनः शरीरजीवात्मनोःसंयोगकारकणमनसासंयोगे चयेगुणाउत्पद्यन्तेतानाह ॥२८ ॥

सृष्टिके जाननेवालों ने दशइन्द्री चित्तपंच महाभूत यह सोलह विकारकहे हैं विकाराः (कार्य्य) इसप्रकार चौबीस तत्त्वों से शरीररूपी गृहके बनजानेपर शुभ और अशुभकर्म्मों के वशीभूत जी-वात्मा मनरूपी दूतकेसाथ रहताहै यहाँ आकाशादि महाभूतों के गुण शब्दादिकों का आकाशादिकों से भिन्नता न होनेके कारण भेदको हटातेहुए चतुर्विंशतिभिः इत्यादि श्लोकसे कहेभये तत्त्वोंका उपसंहार अर्थात् निचोडकहते हैं और वह आठप्रकृति और सोलह विकार मिलकर चौबीसहैं—मह-त्तत्त्वादिक अर्थात् प्रकृत्यादिकों के भाग नियतेः अर्थात् शुभा शुभकर्म्मों के-निघ्न अर्थात् आधीन-स्वान्त दूतवान अर्थात् मनरूपी दूत युक्त वह देही कहलाताहै-पापपुण्य और सुख दुःखादिकों से व्याप्त और मनके द्वारा कृत्रिम कर्म्म के बन्धनों से बंधाहुआ वह जीवात्माहै-उसदेही के शरीर और जीवात्मा के संयोग करानेवाले मनसे संयोगहोने पर जो जो गुण उत्पन्नहोतेहैं उनको कहते हैं ॥ २७।२८ ॥

इच्छाद्वेषसुखानिदुःखविषयज्ञानंप्रयत्नोमनःसंकल्पश्चविचारणास्मृतिरथोबुद्धिःकला विज्ञाता । प्राणस्योपरियापनंगुदवशाद्वायोरधःप्रेरणं नेत्रोन्मेषनिमेषकृत्यकर्णोत्साहाश्च जीवेगुणा ॥इच्छासुखहेतुरभिलाषः द्वेषोदुःखहेतुर्मनः प्रवृत्तिःसुखंप्रीतिः दुःखमप्रीतिः विषयज्ञानं शब्दादिज्ञानंप्रयत्नःकार्य्येतात्पर्य्यंमनः संशयात्मकंतस्यकर्मसंकल्पः विचार णा ऊहायोहाभ्यांवस्तुविमर्षः स्मृतिः पूर्व्वानुभूतस्यार्थस्यस्मरणंबुद्धिः निश्चयात्मिका कलाविज्ञता शिल्पशास्त्रादिबोधः प्राणस्यहृदयस्थितस्यवायोः उपर्य्यायनंमुखादिप्रति नयनं गुदवशाद्वायोरधःप्रेरणमपानस्याधः प्रेरणंनेत्रोन्मेषनिमेषौनेत्रयोरुन्मीलननिमी लनेकृत्यकर्णोत्साहः कार्य्यारम्भेसामर्थ्येनोत्साहः जीवेमनोयुक्तस्यजीवात्मनोमी इच्छा द्वयोगुणाः ॥ २९ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितेभावप्रकाशेसृष्टिप्रकरणं प्रथमंसमाप्तम् ॥ १ ॥

इच्छा द्वेष सुख दुःख विषयज्ञान प्रयत्न मन संकल्प विचारणा स्मृति बुद्धि कलाओं का जानना प्राणका ऊपरसे निकालना गुदासे वायुको नीचे निकालना नेत्रोंका बन्द करना और खोलना कार्य्य करनेमें उत्साह यह जीवके गुणहैं इच्छा (सुखके लिये अभिलाष) द्वेष (दुःखके लिये मन की प्रवृत्ति) सुख (प्रीति) दुःख (प्रीतिकान होना) विषय ज्ञानं (शब्दादि विषयोंका जानना) प्रयत्न (कार्य्यमें तत्पर होना) मन (यह पदार्थहै या नहीं इसप्रकारके सन्देह वाला)संकल्प(मानस कर्म)विचारणा (तर्क वितर्कसे वस्तुका निश्चय करना) स्मृति (पहिले अनुभव कीहुई वस्तुका स्मरण करना) बुद्धि (निश्चयरूप) कला विज्ञता (शिल्प आदि शास्त्रोंका जानना) प्राणस्योपरि यापनं (हृदयमें स्थित वायुका मुखादिकोंमें लेजाना) गुदवशाद्वायोरधःप्रेरणं (अपान वायुका गुदाके द्वारा नीचेसे निकालना) नेत्रोन्मेषनिमेषौ (नेत्रोंका बन्द करना और खोलना) कृत्यकर्णोत्साहः (कार्य्यके प्रारम्भमें सामर्थ्यके अनुसार उत्साह) जीवमें मनके द्वारा युक्त जीवात्माके यह इच्छादिक गुणहैं २९ ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनय श्रीमन्मिश्रभाव विरचितस्य भावप्रकाशस्य भाषा टीकायां सृष्टिप्रकरणं प्रथमं समाप्तम् ॥

चिकित्सायांशरीरी ह्यधिकृतःसशरीरीयथोत्पद्यते तद्बोधयितुंगर्भोत्पत्तिक्रममाह॥ गर्भोत्पत्ति भूमिस्तुरजस्वलास्त्री । (ततोरजस्वलास्वरूपमाह)॥ १ ॥द्वादशाद्वत्सरादू र्ध्वमापञ्चाशत्समाःस्त्रियः । मासि मासिभगद्वारा प्रकृत्यैवार्त्तवंस्रवेत् ॥ आर्त्तवस्रावदिव सादृतुःषोड़शरात्रयः । गर्भग्रहणयोग्यस्तुसएव समयःस्मृतः ॥ २ ॥

वैद्यकशास्त्रमें शरीर धारीही मुख्य किया गयाहै इसकारण से वह शरीर धारी जिस प्रकार उत्पन्न होताहै उसे प्रकट करनेको गर्भोत्पत्ति के क्रमको कहतेहैं और गर्भोत्पतिका स्थान रजस्वला स्त्रीहै इस्से (रजस्वला का स्वरूपकहतेहैं)१बारह वर्ष से ऊपर पचास वर्षतक स्त्रियोंका स्वभावही से महीने २ में योनिके द्वारा रुधिर बाहर निकलताहै रुधिर निकलने के दिन से १६ रात्रि ऋतु कहलातीहैं और वही समय गर्भ धारण करने के योग्य कहा गयाहै ॥ २॥

सर्व्वासामेवचतुर्वर्णस्त्रीणांसर्ववादि सम्मतः । पूर्व्वोक्तःसमयःग्रंथान्तरेतुविशेषः ॥ तद्यथा स्नानदिवसादूर्ध्वंद्वादशरात्रावधिब्राह्मण्याः दशरात्रावधि क्षत्रियायाः अष्टरात्रावधि वैश्यायाःषड्रात्रावधि शूद्रायाःगर्भधारणे शक्तिः ॥ ३ ॥

सम्पूर्ण चारों वर्णोंकी स्त्रियोंका पहले कहा गया समय सम्पूर्ण वादियोंने मानाहै परन्तु अन्य ग्रन्थोंमे विशेषताहै जैसे कि स्नानके दिनसे बारह रात्रितक ब्राह्मणीकी दश रात्रितक क्षत्रियाणी की आठ रात्रितक वैश्याकी और छः रात्रितक शूद्राकी गर्भ धारण करनेमें शक्तिहै ॥ ३ ॥

अथ रजस्वलाया नियमानाह ॥

आर्त्तवस्रावदिवसादहिंसा ब्रह्मचारिणी । शयीतदर्भशय्यायांपश्येदपिपतिन्नच ॥ करेशरावेपर्णे वाहविष्यंञ्चयहमाहरेत् । अश्रुपातंनखच्छेदमभ्यङ्गमनुलेपनम् ॥ नेत्रयो

रञ्जनंस्नानं दिवास्वापंप्रधावनम् । अत्युच्चशब्दश्रवणं हसनंबहुभाषणम् ॥ आयासं भूमिखननंप्रवातञ्चविवर्ज्जयेत् ॥ ४ ॥

अथ रजस्वलाके नियम कहतेहैं ॥

रजस्वला स्त्री ऋतुकालके प्रथम दिनसे हिंसा रहित ब्रह्मचर्य्य युक्त कुशकी शय्यापर सोवे और पति को भीनदेखे हाथ में सकोरेमें अथवा पत्तलमें तीनदिन तक हविष्यान्न भोजनकरे अश्रुपात नखोंका काटना-तेललगाना- चन्दनादि सुगन्धित बस्तु धारण करना- नेत्रों में अंजन लगाना- स्नान करना- दिनका सोना दौड़ना बहुत ऊंचे शब्द का सुनना- हंसना- बहुत बोलना- परिश्रमकरना पृथ्वीकाखोदना- हवाखाना इनसब बातोंको छोड़दे ॥ ४ ॥

अथैतस्या नियम करणेदोषानाह ॥

अज्ञानाद्वाप्रमादाद्वा लोभाद्वादैवतश्चवा । साचेत्कुर्य्यान्निषिद्धानि गर्भोदोषांस्त दाप्नुयात् ॥ एतस्याश्रोदनाद्गर्भोभवेद्विकृतलोचनः । नखच्छेदेन कुनखीकुष्ठीत्वभ्यङ्गतो भवेत् ॥ अनुलेपात्तथास्नानाद्दुःखशीलोऽञ्जनादन्धक् । स्वापशीलोदिवास्वापाच्चञ्चलः स्यात्प्रधावनात् ॥ अत्युच्चशब्दश्रवणाद्बधिरःखलुजायते । तालुदन्तौष्ठजिह्वासुश्यावो हसनतोभवेत् ॥ प्रलापी भूरिकथनादुन्मत्तस्तुपरिश्रमात् । स्खलतेभूमिखननादुन्मत्तो वात सेवनात् ॥ ५ ॥

इन नियमोंके न करने में दोषकहते हैं ॥

अज्ञानसे असावधानी से लोभ से अथवा दैवयोग से जो रजस्वला स्त्री निषिद्ध कार्य्योंको करे तो गर्भ दोषोंको प्राप्त होताहै जो रजस्वला स्त्रीरोवे तो गर्भके नेत्र विकारको प्राप्तहोते हैं-नखों के काटनेसे बिगडे नखोंवाला गर्भ होता है और तैल लगानेसे गर्भ कुष्टी होताहै-चन्दनादिकों के लगाने से और स्नानसे गर्भ दुःखी होताहै-अंजनलगानेसे गर्भ अन्धाहोताहै दिनके सोनेसे गर्भबहुत सोनेवाला होताहै दौड़ने से चंचलहोताहै-बहुत ऊंचे शब्दके सुनने से बहरा होताहै-हसने से गर्भका तालु दांत ओष्ठ-और जिह्वामें श्यामता होती है-बहुत बोलने से गर्भ बकवादी होताहै परिश्रमकरने से मतवाला होताहै पृथ्वी के खोदने से गिरताहै हवाखाने से उन्मत्त होताहै ॥ ५ ॥

अथरजस्वला कृत्यमाह ॥

पूर्व्वंपश्येदृतुस्नातायादृशं नरमंगना । तादृशंजनयेत् पुत्रंततःपश्येत्पतिंप्रियम् ॥ प्रियमितिभर्त्तर्य्यनासन्ने पुत्रादिकमपि पश्येत्चतुर्थदिवसेऽपिरजोनिवृत्तौस्त्री पतिना संगच्छेत्ननुरजोऽनुवृत्तौ । यत आह ॥ प्रवहत्सलिले क्षिप्तंद्रव्यंगच्छत्यधोयथा ॥ तथा बहतिरक्तेतु क्षिप्तंवीर्य्यमधोव्रजेत् ॥ ६ ॥

अथरजस्वलाकी कृत्यकहते हैं ॥

ऋतुकाल में स्नानकरनेवाली स्त्री जैसे पुरुषको देखती है वैसेही पुत्रको उत्पन्न करती है इस कारणसे पहले अपने पतिको अथवा किसी प्रिय पुरुषको देखे-प्रिय शब्द से यह तात्पार्य्य है कि पतिके उपस्थित न होनेपर पुत्रादिकोंको भी देखे-ऋतुकालके चौथे दिनभी जो रुधिर निवृत्त होगया होतो

स्त्रीपतिके संगभोगकरे और जो न निवृत्तहुआ हो तो न करे क्योंकि कहाहै कि जैसे बहतेहुए पानी में डालीहुई वस्तु नीचेको चलीजाती है वैसेही वीर्य्यभी बहतेहुए रुधिर में डालाहुआ नीचे को चलाजाताहै ॥ ६ ॥

अथ भर्तृकृत्यमाह ॥

तत्रगर्भाधानेनिषिद्धं विहितंचकालंतयोः फलञ्चाह । आयुःक्षयभयाद्भर्त्ताप्रथमेदि वसेस्त्रियम् ॥ द्वितीयेऽपिदिनेरत्यैत्यजेदृतुमतींतथा ॥ तत्रयश्चाहितोगर्भोजायमनो न जीवति । आहितोयस्तृतीयेऽह्निस्वल्पायु र्विकलाङ्गकः ॥ अतश्चतुर्थीषष्ठीस्यादष्टमी दशमीतथा । द्वादशीवापियारात्रिस्तस्यन्तांविधिनाभजेत् ॥ विधना गर्भाधानोक्तवि धिना अत्रोत्तरोत्तरं विद्यादायुरारोग्यमेवच (तत्रान्तरे)प्रजासौभाग्यमैश्वर्य्यंबलञ्चा भिगमात् फलम् ॥ ७ ॥

अथ पतिके कृत्यकहते हैं ॥

उस गर्भाधान में निषेध कियेहुये और विधान कियेहुए दोनों समयोंका फलकहते हैं-पतिको उचितहै कि प्रथम तथा द्वितीय दिनमें भी ऋतुवती स्त्रीसे संभोगनकरे क्योंकि आयुका क्षयहोताहै-उनपहले और दूसरे दिनों में रहाहुआ गर्भ उत्पन्न होकर नहीं जीताहै और तीसरेदिन का रहाहुआ गर्भथोड़ी उमरवाला और शिथिल अंग युक्तहोताहै इसकारणसे चौथी छठी आठवीं दशवीं तथा बारहवीं रात्रिमें विधिपूर्वक उसका सेवनकरे अर्थात् संभोगकरे विधिपूर्वक अर्थात् गर्भाधान में कहीहुई विधिसे- इन रात्रियोंमें उत्तरोत्तर अवस्था और आरोग्यकी वृद्धि होती है दूसरे तन्त्रमें ऐसा कहाहै कि संभोग करने से सन्तान सौभाग्य बल और ऐश्वर्य्य प्राप्तहोताहै ॥ ७ ॥

मनोभवागारमुखेऽबलानांतिस्रोभवन्तिप्रमदाजनानाम् । समीरणाचन्द्रमुखीचगौरी विशेषमासामुपवर्णयामि ॥ प्रधानभूतामदनातपत्रेसमीरणानामविशेषनाडी । तस्या मुखेयत्पतितंतुवीर्य्यं तन्निष्फलंस्यादितिचंद्रमौलिः ॥ याचापराचान्द्रमसीचनाड़ी कं दर्पगेहे भवतिप्रधाना । सासुंदरीयोषितमेवसूतेसाध्याभवेदल्परतोत्सवेषु ॥ गौरीति नाड़ीयदुपस्थगर्भेप्रधानभूता भवतिस्वभावात् । पुत्रं प्रसूते बहुधांगनासा कष्टोपभोग्यांसुरतोपविष्टा ॥ ८ ॥

स्त्रियोंकी योनिके मुखमें तीन नाड़ियांहोताहैं समीरणाचन्द्रमुखी और गौरी अब इनकी विशेषता का वर्णन करतेहैं योनिमें समीरणा नाम विशेष नाड़ी प्रधानहै उसके मुखमें पड़ाहुआ वीर्य्य व्यर्थ होताहै अर्थात् गर्भको नहीं उत्पन्न करताहै यह चन्द्रमौलिका मतहै और जो दूसरी चन्द्रमुखी नाड़ी योनिमें प्रधानहै वह कन्याहीको उत्पन्न करतीहै और थोड़ेसे संभोगमें साध्य होतीहै अर्थात् गर्भ धारण करतीहै और गर्भमें स्वभावहीसे प्रधानभूत जो गौरी नाड़ीहै वह सुरतिमें प्राप्त कष्टसे भोग्य करने के योग्य बहुधा पुत्रही उत्पन्न करतीहै ८ ॥

अथ युग्मायुग्मरात्रीणां फलमाह ॥

युग्मासुपुत्राजायंतेस्त्रियोऽयुग्मासुरात्रिषु । तत्रदम्पत्योः सम्भोगेयादृक् पुमान्युक्त स्तादृगुच्यते ॥ स्नातश्चन्दनलिप्तांगःसुगन्धसुमनोऽर्चितः ॥ भुक्तवृष्यःसुवसनःसुवेशः

समलंकृतः ॥ ताम्बूलवदनस्तस्या मनुरक्तोऽधिकः स्मरः । पुत्रार्थी पुरुषोनारीमुपेयाच्छयने शुभे ॥ ९ ॥

अथ समऔर विषम रात्रियों का फल वर्णन करतेहैं ॥

सम रात्रियोंमें पुत्र और विषम रात्रियोंमें कन्या उत्पन्न होती है तहां स्त्री और पुरुषके संभोग में जैसा पुरुष होना चाहिये उसे कहते हैं-स्नान कियाहुआ--चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओंको धारण कियेहुआ सुगन्धित पुष्पोंसे युक्त कामके बढ़ानेवाले दुग्धादि पदार्थोंको खायेहुआ अच्छे वस्त्र सुन्दर वेष और श्रेष्ट आभूषणधारी मुखमें तांबूल खायेहुआ उस स्त्रीमें अधिक प्रेम करनेवाला कामदेव के अधिक वेगवाला पुत्रार्थी पुरुष उत्तम शय्यापर स्त्रीसे संभोग करे ॥ ९ ॥

अथ तत्राऽयोग्यं पुरुषमाह ॥

अत्याशितोऽधृतिःक्षुद्वान् सव्यथांगःपिपासितः ॥ बालोवृद्धोऽन्यवेगार्त्तस्त्यजेद्रोगी च मैथुनम् ॥१०॥ (तत्रस्त्री यादृशी योग्या तादृश्युच्यते।) पुरुषस्य गुणैर्युक्ता विहिता न्यूनभोजना ॥ नारीऋतुमती पुंसां सागच्छेत्तु सुतार्थिनी ॥ ११ ॥

इसमें अयोग्य पुरुषका कहते हैं ॥

बहुत भोजन कियाहुआ-धैर्य्य रहित क्षुधासे व्याकुल शरीर में पीडा युक्त-तृषित-बालक-वृद्धि मल मूत्रादिके वेगोंसे व्याकुल और रोगी पुरुष मैथुन न करे १० (अब योग्यस्त्रीका वर्णन करते हैं) पहले कहेहुये पुरुषके गुणों से युक्त योग्य और स्वल्प भोजन करनेवाली ऋतुमती पुत्रकी चाहने वाली स्त्री पुरुषसे संगम करे ॥ ११ ॥

अथ तत्राऽयोग्यां स्त्रियमाह ॥

रजस्वलाव्याधिमतीविशेषाद्योनिरोगिणी । वयोऽधिकाचनिष्कामामलिनागर्भिणी तथा ॥ एतासांसङ्गमात्पुंसांवैगुण्यानिभवन्तिहि । तत्ररजस्वलादिनत्रयंयावदृतौनिषिद्धायतउक्तम् ॥ प्रथमेऽहनिचाण्डालीद्वितीयेब्रह्मघातिनी।तृतीयेरजकीपुंसांयथावर्ज्यातथाऽङ्गना ॥ व्याधिमतीचवर्ज्यातत्रस्त्रीणांव्याधयः । प्रदरादयउक्तानिषिद्धातत्रापिविशेषाद्योनिरोगिणी ॥ १२ ॥

अब अयोग्यस्त्रीको कहतेहैं ॥

रजस्वला—रोगवाली--और विशेष करके योनिके रोगवाली- अधिक अवस्थावाली कामके वेगसे रहित मैली और गर्भिणी ऐसी स्त्रियोंके संग भोगकरनें से पुरुषके रोगउत्पन्न होतेहैं इन में रजस्वला ऋतु काल से तीनदिनतक निषिद्धहै क्योंकि ऐसा कहा हुआहै कि पहिले दिन चांडाली दूसरेदिन ब्रह्म घातनी और तीसरेदिन धोबिनके समान रजस्वला स्त्रियोंका त्याग पुरुषों को उचितहै- रोगवाली स्त्री त्याग करने के योग्यहै अर्थात् प्रदरादिक रोगवाली स्त्रियां निषिद्धहैं इसमें भी बिशेष करके योनि रोगवाली बर्जितहैं १२ ॥

अथ गर्भावतरणक्रममाह ॥

कामान्मिथुनसंयोगेशुद्धशोणितशुक्रजः । गर्भःसंजायतेनार्य्याःसजातोबालउच्यते ॥ गर्भःशुद्धःअशुद्धस्तुगर्भोऽशुद्धःशुक्रशोणितयोरपिदम्पत्योर्भवतियतआह । दम्पत्योः

कुष्ठबाहुल्याद्दुष्टशोणितशुक्रयोः ॥ यदपत्यन्तयोर्जातंज्ञेयंतदपिकुष्ठितामिति। कुष्ठंसंजातंयस्यतत्कुष्ठितम्,अत्रतारकादित्वादितच्प्रत्ययः ॥ यत्तुवातादिदुष्टरेतसःप्रजोत्पादनेनसमर्थाःइतिसुश्रुतः । तत्रशुद्धप्रजोत्पादनेनसमर्थाइतिबोद्धव्यम् ॥ रोगादिनाशुद्धास्तुप्रजांवातादिदुष्टशुक्राः। अपिजनयान्तिजन्मांधबधिरपंग्वादिसम्भवात् ॥१३॥ ऋतौस्त्रीपुंसयोर्योगेमकरध्वजवेगतः । पुंसःसर्व्वशरीरस्थःरेतोद्रावयतेऽथतत् ॥ वायुर्मेहनमार्गेणपातयत्यङ्गनाभगे । तत्संश्रुत्यव्यात्तमुखंयातिगर्भाश्रयंप्रति ॥ तत्रशुक्रवदायातेनार्त्तवेनयुतंभवेत् ॥ १४ ॥

अब गर्भकी उत्पत्तिका क्रमकहतेहैं ॥

कामसे दोनोंके संयोगमें शुद्ध रुधिर और वीर्य्यकेद्वारा स्त्रीके गर्भस्थिति होतीहै वहीउत्पन्नहोकर बालक कहाताहै- गर्भ शुद्ध होताहै परन्तु बिगड़ेहुये रुधिर और वीर्य्यवाले स्त्री पुरुषों का अशुद्ध होताहै क्योंकि कहाहै कि कुष्ठकी अधिकतासे जिनका रुधिर बीर्य्य बिगड़ाहुआहै उन स्त्रीपुरुषों की सन्तानभी कुष्ठित होताहै कुष्ठ जिसकेहो वह कुष्ठित कहलाताहै इस कुष्ठित शब्दमें तारकादित्वसे इतच्प्रत्ययहोताहै जोकि बातादिकों से बिगड़े हुए वीर्य्यवाले प्रजाके उत्पन्न करनेमें नहीं समर्थ होतेहैं ऐसा सुश्रुतने कहाहै वहां शुद्ध सन्तान नहीं उत्पन्न करसक्तेहैं ऐसा समझना चाहिये क्योंकि रोगादिकोंसे शुद्ध और बातादिकोंसे बिगड़े हुए वीर्यवालेभी प्रजाको उत्पन्न करतेहैं परन्तु जन्महीसे अन्धे- बहिरे- लंगड़े आदि उत्पन्नहोने का संभवहै १३ ऋतुकालमें कामदेवके बेगसे स्त्री और पुरुषके संयोगहोनेहर पुरुषके सम्पूर्ण शरीरमें स्थित बीर्य्य पिघलताहै इसके उपरान्त बायु उस वीर्य्यको लिंग के मार्ग द्वारा स्त्रीकी योनिमें गेरताहै वह वीर्य्य बहकर फैलेहुए मुखवाले गर्भाशयमें प्राप्त होताहै उस गर्भाशयमें बीर्य्यके समान आये हुये रज(हैज्ञ) से मिलताहै ॥ १४ ॥

गर्भाशयस्य स्वरूपमाह ॥

शङ्खनाभ्याकृतिर्योनिस्त्र्यावर्त्तासाचकीर्तिता । तस्यास्तृतीयेत्वावर्तेगर्भशय्याप्रतिष्ठिता ॥ यथारोहितमत्स्यस्यमुखंभवतिरूपतः । तत्संस्थानांतथारूपांगर्भशय्यांविदुर्बुधाः ॥ अयमर्थः । गर्भशय्यामुखंरोहितमत्स्येवभवतियथाचरोहित मत्स्यस्यस्थितिर्जलेभवतितथापित्ताशयपक्काशयमध्येगर्भशय्यायाः स्थितिर्भवतिरूपमापितस्येवभवतियथारोहितस्य मुखंस्वल्यमाशयस्तुमहानित्यर्थः ॥ १५ ॥

अबगर्भाशय का स्वरूप कहतेहैं ॥

शंखकी नाभिके समान आकारवाली योनिमें तीनचक्र कहेगयेहैं इसके तीसरे चक्रमें गर्भकी शय्या स्थितहै- पंडितलोग रोहू मछली के मुखके रूपके समान स्थिति और रूप वाली गर्भ शय्या कहतेहैं इसका यह तात्पर्य्य है कि गर्भ शय्याका मुख रोहूमछलीके समान होताहै और जैसे जल में रोहू मछलीकी स्थितिहै उसी प्रकार पित्ताशय और पक्काशयके बीचमें गर्भ शय्याकी स्थितिहै और उस का रूपभी उसीके समान होताहै जैसे रोहू मछलीका मुख छोटा और भीतरकी ओर बडा होता है उसीप्रकार गर्भ शय्याभी होती है ॥ १५ ॥

शुक्रार्त्तवसमाश्लेषोयदैवखलुजायते । जीवस्तदैवविशतियुक्तशुक्रार्त्तवान्तरम् ॥ सूर्य्यांशोःसूर्य्यमणितोह्युभयस्माद्युताद्यथा । वह्निःसञ्जायतेजीवस्तथाशुक्रार्त्तवाद्युतात् ॥ अत्मानादिरनन्तश्चाऽव्यक्तोवक्तुंनशक्यते । चिदानन्दैकरूपोऽयंमनसापिनगम्यते ॥ एवंभूतोऽपिजगतोभाविनीबलवत्तया । अविद्यास्वीकृतेकर्म्मबशोगर्भेविशत्यसौ ॥ (गर्भेचतुर्विंशतितत्त्वमयम्) सएववेत्तारसनोद्रष्टाघ्रातास्पृशत्यसौ । श्रोतावक्ताच कर्ताचगन्तोरन्तोत्सृजत्यपि॥१६॥दिनेव्यतीतेनियतंसंकुचत्यम्बुजंयथा । ऋतौव्यतीते नार्य्यास्तुयोनिःसंम्रियतेयथा ॥ ऋतौरजोदर्शनात् । षोड़शनिशात्मकेकाले ॥ १७ ॥

जिससमय वीर्य्य और रजका संयोग होताहै उसीसमय मिलेहुये वीर्य्य और रजमें जीव प्रवेश करता है-सूर्य्यकी किरण और सूर्य्य कान्तिमणि इन दोनों के मिलनेसे जैसे अग्नि उत्पन्न होती है उसीप्रकार वीर्य्य और रजके मिलने से जीव उत्पन्न होताहै यह आत्मा अनादि अनन्त अव्यक्त वाणीसे परे आनन्दरूप मनसे भी जाना नहीं जासक्ताहै ऐसा होनेपरभी संसारके होनहारकी प्रबलतासे कर्म्मके वशीभूत होकर अविद्याके द्वारा ग्रहण कियेहुए गर्भमें यह प्रवेश करता है-गर्भ में अर्थात् चौबीस तत्त्वोंसे बनेहुये गर्भमें-वही आत्मा जानता है स्वाद लेताहै देखता है सूंघता है स्पर्श करता है सुनता है बोलता है करताहै चलताहै रमण करताहै और त्यागभी करताहै १६ जैसे दिन के व्यतीत होनेपर कमल सिकुर जाताहै उसीप्रकार ऋतुकाल के व्यतीत होजानेपर स्त्रीकी योनि सिकुड़ जाती है-ऋतुकालमें अर्थात् ऋतुकालके प्रथम दिनसे सोलह रात्रि पर्यंत ॥ १७ ॥

बीजेऽन्तर्वायुनाभिन्नेद्वौजीवौकुक्षिमागतौ । यमावित्यभिधीयेतेधर्म्मेतरपुरःसरौ धर्म्मस्तादितरोऽधर्म्मस्तौपुरःसरौययोःतेनयमौधर्म्माधर्म्माभ्यांभवतइत्यर्थः ॥ १८ ॥ आधिक्येरेतसःपुत्रःकन्यास्यादार्त्तवेऽधिके । नपुंसकंतयोःसाम्येयथेच्छापरमेश्वरी ॥ नन्वेवंसतिकथंपुत्रोत्पत्तिःसदैवार्त्तवस्यैवबाहुल्यात् । यतउक्तम् ॥ आर्त्तवंचतुरंजलि प्रमाणंशुक्रंप्रसृतिमात्रामिति ॥ १९ ॥

भीतरकी बायुसे वीर्य्यके छिन्न भिन्न होजाने से धर्म्म और अधर्म्महै आगे जिनके ऐसे दो जीव कुक्षिमें प्राप्तहोकर यम कहलाते हैं धर्म्म और उससे दूसरा अधर्म्म यह दोनों हैं आगे जिन के वह धर्म्मोतर पुरस्सरौ कहलातेहैं इससे यम (जुड़िया) धर्म और अधर्मके द्वाराहोतेहैं यहतात्पर्य है १८॥ वीर्य्यकी अधिकतासे पुत्र उत्पन्न होताहै और रजकी अधिकता से कन्या उत्पन्न होती है और रज तथा वीर्य्यकी समता से नपुंसक उत्पन्न होताहै आगे ईश्वरकी इच्छा-अब यहांपर यह शंका होतीहै कि ऐसा होनेपर सदैव रजकी अधिकता से पुत्रकी उत्पत्ति कैसे होसक्तीहै क्योंकि कहाभीहै कि रजका प्रमाण चार अंजलीहै और वीर्य्य का प्रमाण एक चुल्लू अर्थात् रजका अष्टमांस वीर्य्य होताहै ॥ १९ ॥

वाग्भट्टेऽप्युक्तमात्रेयादिभिः ॥

मज्जामेदोवसामूत्रपित्तश्लेष्मशकृत्प्रसृक्। रसोजलंचदेहेऽस्मिंस्त्वेकैकाञ्जालिवर्द्धितम् ॥ पृथक्चप्रसृतंप्रोक्तमोजोमस्तिष्करेतसाम् । द्वावञ्जलीतुदुग्धस्यचत्वारो रजस

स्तुते ॥ समधातोरिदंमानं विद्यात्वृद्धिक्षयावतः । इति॥ नैवं,यतोगर्भाशयस्थमेवशु क्रमार्त्तवंचगर्भोत्पत्तिहेतुः शुक्रंकदाचिदत्यन्तहर्षवशाद्दुग्धादिशुक्रलत्वद्रव्यसेवनात् शुक्रबाहुल्यात्गर्भाशयेबहुस्रवतिकदाचिद्दैमनस्यादिना शुक्राल्पत्वात्स्वल्पामिति एवमा र्त्तवमपीतिनदोषः (सुश्रुतःपुनराह ॥) वैलक्षण्याच्छरीराणामस्थायित्वात्तथैवच । दोषधातुमलानांतुपरिमाणं न विद्यते ॥ वैलक्षण्यातदीर्घह्रस्वकृशादिभेदेनसादृश्या भावात् अस्थायित्वात् वयो ऽहर्निशर्त्तुभुक्तेष्वेकमात्रानवस्थानात् एवंतामभिसंगम्य पुनर्मासाद्भजेद्सौमासादूर्ध्वमितिशेषः । अर्वाक्गमनेनगर्भद्वारविघट्टनात् गर्भच्यु तिप्रसंगःस्यात्केचित्तु,पुनः पुष्पदर्शनेनगर्भालाभनिश्चयेमासादूर्ध्वंगच्छेत्तलब्धगर्भ नेवगच्छेदितिवदन्ति ॥ २० ॥

वाग्भट्टमें आत्रेयादिकोंने भी कहाहै कि मज्जा-मेद-चरबी-मूत्र-पित्त-श्लेष्मा-विष्ठा-रुधिर-रस-और जल यह पदार्थ इस देहमें एक २ अंजली के प्रमाणसे अधिक हैं और कहागया है कि ओज (पराक्रम) मस्तिष्क (भेजा) और वीर्य्य एक २ चुल्लू हैं और दूध दो अंजली रज चार अंजली यह समधातुवाले का प्रमाणहै इस्से अधिकता और न्यूनतामें वृद्धि और क्षयजाननी चाहिये ऐसा नहीं क्योंकि गर्भाशयमें स्थितही वीर्य्य और रजगर्भकी उत्पत्तिका कारण है कदाचित् अत्यन्त प्रस न्नताके कारण अथवा वीर्य्यके बढ़ानेवाले दुग्धादि पदार्थों के सेवनके कारण वीर्य्य की वृद्धि से गर्भाशयमें बहुत वीर्य्य गिरताहै और कदाचित् दुःखादिकके कारण वीर्य्यकी न्यूनतासे थोडावीर्य्य गिरताहै ऐसेही रजभी न्यूनाधिक होताहै इस प्रकार से कोई दोष नहींहै फिर सुश्रुतभी कहते हैं कि शरीरोंकी विलक्षणता और अस्था यित्व दोष से धातु और मल इनका प्रमाण नहीं है विलक्ष णता अर्थात् दीर्घ ह्रस्व और दुर्बल आदि भेदोंसे सदृशता का न होना अस्थायित्व अर्थात् अवस्था का दिन रात्रि ऋतु और भोजनमें एक प्रकार स्थितन रहना इस प्रकार उससे संभोगकरके फिर महीने के उपरान्त संभोगकरै क्योंकि जो महीनेके भीतर गमनकरेतो गर्भद्वार के रगड़ने से गर्भपात होनेका भयहै कोई तो फिर ऋतु धर्मके होनेसे गर्भके न होनेका निश्चयहोजानेपर महीनेके उपरा न्त संगम करे और जो गर्भ होवेतो नकरे ऐसा कहतेहैं ॥ २० ॥

तत्रपरिहार्य्यपरिहारार्थंसद्योगृहीतगर्भायालक्षणमाह ॥

शुक्रश्रोणिततयोर्योनेरस्रावोऽर्थश्रमोद्भवः ॥ सक्थिसादः पिपासाचग्लानिः स्फुर्त्ति र्भगेभवेत् ॥ २१ ॥

त्याग करनेके योग्य पदार्थोंका त्याग करनेके लिये उसी समय गर्भके धारण करनेवाली स्त्रीका लक्षण कहते हैं ॥

वीर्य्य और रुधिरका योनिसे न बहना कार्य्यमें परिश्रम होना-जंघामें पीडा-तृषाका लगना-ग्लानि और योनिका फड़कना यह लक्षण शीघ्र गर्भ धारण करनेवाली स्त्रीके होते हैं ॥ २१ ॥

अथतस्याएवोत्तरकालीनंलक्षणमाह ॥

स्तनयोर्मुखकाष्ण्यंस्याद्रोमराज्युद्गमस्तथा ॥ अक्षिपक्ष्माणिचाप्यस्याः संमील्यन्ते विशेषतः ॥ छर्दयेत्पथ्यभुक्चापिगन्धाद्विजतेशुभात्प्रसेकःसदनंचैवगर्भिण्यालिंग

मुच्यते ॥ २२ ॥ (तत्रपुत्रगर्भवत्यालक्षणम्) पुत्रगर्भयुतायास्तुनार्य्यामासिद्वितीयके। गर्भोगर्भाशयेलक्ष्यःपिण्डाकारोऽपरंशृणुपिण्डोवर्त्तुलाकृतिः मासिद्वितीयकइत्यस्यगर्भः पिण्डाकारोलक्ष्यः इत्यनेनैवान्वयो नत्वग्निमम्लोकेऽपि ॥ दक्षिणाक्षिमहत्त्वंस्यात्प्राक् क्षीरंदक्षिणेस्तने । दक्षिणोरुःसुपुष्टःस्यात्प्रसन्नमुखवर्णता ॥ पुन्नामधेयद्रव्येषुस्वप्ने ष्वपिमनोरथः । आम्रादिफलमाप्नोतिस्वप्नेषुकमलादिच ॥ २३ ॥

अब उसीके पीछे होनेवाले लक्षण कहते हैं ॥

स्तनोंके मुखकी श्यामता-रोमांचहोना विशेष करके नेत्रोंका बन्दहोना-पथ्य भोजनकाभी वमन होना-उत्तम गन्धिसे क्लेशहोना-पसीना आना पीड़ाहोना यह गर्भिणी स्त्रीके लक्षण कहेगये हैं ।.२२॥

अब पुत्र गर्भवाली स्त्रीके लक्षण कहते हैं ॥

पुत्र गर्भवाली स्त्रीके गर्भाशयमें दूसरेमहीने पिंडके समान आकारवाला गर्भ लक्षित होताहै और दूसरे लक्षण आगे कहतेहैं पिण्ड अर्थात् गोल आकारवाला दूसरेमहीने इसका संबंध पिण्डाकार हीके साथमेंहै न कि आगेवाले श्लोकसे दक्षिण नेत्र बड़ाहो और दक्षिणही स्तनमें प्रथम दूध उत्पन्न हो दक्षिण जंघाभारीहो मुखका वर्णउत्तमहो स्वप्नमें भी पुरुषवाची पदार्थों की इच्छाहो और स्वप्नमें आम्रादिक फल और कमल आदिक पुष्प प्राप्तहों इनलक्षणोंवाली स्त्रीके गर्भमें पुत्रजानना ॥ २३ ॥

अथ कन्यागर्भ वत्या लक्षणमाह ॥

कन्यागर्भवतीगर्भेपेशीमासिद्वितीयके। पुत्रीगर्भस्यलिंगानिविपरीतानिचेक्षते ॥ पे शीदीर्घाकृतिः ॥ २४ ॥ नपुंसकंयदागर्भेभवेद्गर्भोऽर्बुदाकृतिः ॥ उन्नतेभवतःपार्श्वेपुरस्ता दुदरंमहत् ॥ अर्बुदंवर्त्तुलंफलार्द्धतुल्यम् ॥ २५ ॥(नपुंसकविशेषमाह)आसेकश्चसुग न्धी च कुम्भीकश्चेर्ष्यकस्तथा। अमीसशुक्राबोद्धव्याअशुक्रःषण्ढसंज्ञकः ॥ २६ ॥

अबकन्या गर्भवाली स्त्रीके लक्षण कहतेहैं ॥

कन्या गर्भवाली स्त्रीके गर्भमें दूसरे महीने पेशीहोती है और पुत्र गर्भवाली स्त्रीसे उलटे लक्षण होतेहैं पेशी (दीर्घाकार) ॥ २४(नपुंसकगर्भवालीके लक्षण)जो गर्भमें नपुंसकहो तो गर्भका आकार अर्बुदके समानहोताहै कोखें ऊंचीहोती हैं और पेट आगे को बडा होताहै अर्बुद (किसीगोलपदार्थ का आधा) ॥ २५ ॥ (अबनपुंसकोंके प्रकारकहते हैं) आसेक्य- सुगन्धी कुंभीक और ईर्षक यह चारों वीर्य्य सहित नपुंसक कहे जातेहैं और जिसके वीर्य्य न हो वह षण्ढ कहलाताहै ॥ २६ ॥

अथैतेषांलक्षणमाह ॥

पित्रोस्तुस्वल्पवीर्यत्वादासेक्यःपुरुषोभवेत् ।सशुक्रंप्राश्यलभतेध्वजोन्नतिमसंशयं॥ पित्रोर्मातापित्रोः स्वल्पवीर्यत्वात् स्वल्प शुक्रार्त्तवत्वात् आसेक्यनामा मुखयोनीति ना मान्तरः स शुक्रं प्राश्येति सपुरुषोऽन्य पुरुषेण स्वमुखे मैथुनं कारयित्वातस्य शुक्रं प्रास्यमेहनोत्थानं लभते इत्यर्थः ॥ यःपूतियोनौजायेत सहिसौगन्धिकोभवेत् । सयानि शेफसौगन्ध माघ्रायलभतेबलम् ॥ सौगन्धिकः सौगन्धिकनामा नासायोनीति नामा- न्तरंबलं मैथुने शक्तिं ॥ २७॥

अब इनके लक्षण कहतेहैं ॥

माता पिताके रज और वीर्य्यके थोड़े होनेसे पुरुष आसेक्यनाम नपुंसक कहलाता है और वह वीर्य्यको खाकर निस्सन्देह लिंग की उन्नाति अर्थात् भोगकरनेकी सामर्थ्य को प्राप्त होताहै वीर्य्य को खाकर (वहनपुंसक पुरुष अन्य पुरुषसे अपने मुखमें मैथुनकराकर वीर्य्य को चखकर भोगकरनेकी सामर्थ्य को प्राप्तहोताहै) और इस नपुंसक का दूसरा नाम मुख योनिभी है जो दुर्गन्धित योनि में उत्पन्न होताहै वह सुगन्धी नपुंसक कहलाताहै और वह योनि तथा दूसरे के लिङ्गको सूंघकर मैथुन करने की सामर्थ्य को प्राप्तहोताहै इस नपुंसकका दूसरा नामनासायोनि भीहै ॥ २७ ॥

स्वेगुदेऽब्रह्मचर्य्यायः स्त्रीषुपुंवत् प्रवर्त्तते ॥ सकुम्भीक इतिज्ञेयो गुद योनिस्तु स स्मृतः ॥ अब्रह्मचर्य्यात् ब्रह्मचर्य्यम् मैथुनं अब्रह्मचर्य्यं मैथुनं यत्स्यात् ॥ २८ ॥

जो पुरुष अपनी गुदामें मैथुनकरानेसे स्त्रियों से संभोग करनेकी सामर्थ्यको प्राप्तहोताहै वहकुंभीक कहलाताहै और इसका दूसरा नाम गुद योनिभी है ॥ २८ ॥

दृष्ट्वाऽन्यवायमन्येषां व्यवायेयः प्रवर्त्तते ॥ ईर्ष्यकः सतु विज्ञेयो दृष्टियोनिस्तुसस्मृतः २९योभार्य्यायामृतौमोहादंगनेवप्रवर्त्तते । तत्रस्त्रीचेष्टिताकारो जायतेषण्ढसंज्ञकः ॥ स्त्रीचेष्टिताकारः स्त्र्याकारःश्मश्रुरहितः । स्त्रीचेष्टितः समेहनोऽपि पुरुषशक्तिरहितः ॥ किन्तु स्त्रीवदधो भूतःस्वेगुदे पुरुषान्तरेण मैथुनं ३० ॥

जो पुरुष दूसरेके मैथुनको देखकर मैथुनमें प्रवृत्त होताहै वह ईर्षक कहलाताहै इसका दूसरानाम दृष्टि योनिभी है २९ जो पुरुष ऋतुकालमें अज्ञानतासे स्त्रीके समान नीचे लेटकर स्त्रीको ऊपर करके स्त्रीसे संभोगकरताहै उस के जो पुत्र उत्पन्नहोताहै वह स्त्रीके समान चेष्टा और आकार वाला अर्थात् दाढ़ी आदिसे रहित और लिङ्ग के होनेपरभी पुरुषार्थ से रहित षण्ढ नामवाला होताहै और यह षण्ढ पुरुष स्त्रीके समान नीचे लेटकर अपनी गुदामें अन्य पुरुष से मैथुन करताहै ॥ ३० ॥

ऋतौऋतौपुरुषवत् प्रवर्त्तेतांगनायदि । तत्रकन्यायदिभवेत् साभवेन्नरचेष्टिता ॥ पुरुषवत् स्त्रियमारुह्यसा तस्यायोनौ स्वयोनि घर्षणं करोति ॥ ३१ ॥

ऋतुकालमें जो स्त्री पुरुषके समान आप ऊपर होकर पुरुषसे मैथुनकरे उससे जो कन्या उत्पन्नहोगी वह पुरुषके समान चेष्टावाली होगी वह कन्या पुरुषके समान स्त्रीके ऊपर चढ़कर उसकी योनि में अपनी योनिको रगड़ती है ॥ ३१ ॥ ।

अपराअपि गर्भ प्रकृतीराह ॥

यदानार्य्यावुपेयातां वृषस्यन्त्यौ कथञ्चन । मुञ्चन्त्यौशुक्रमन्योन्यमनस्थिस्तत्र जायते ॥ अनस्थिः अत्रेषदर्थे नञ् तेनाल्प कोमलास्थिरित्यर्थः ॥ ऋतुस्नातातुयानारी स्वप्नेमैथुनमाचरेत् । आर्त्तवंवायुरादाय कुक्षौगर्भंकरोतिहि ॥ मासिमासिप्रवर्द्धेत स गर्भोगर्भलक्षणः । कललंजायतेतस्य वर्जितंपैतृकैर्गुणैः ॥ गर्भलक्षणः प्रकृतगर्भलक्षणः । पैतृकैर्गुणैः केशश्मश्रु लोम नख दन्त शिरास्नायु धमनीरेतः प्रभृतिभिः ॥ ३२ ॥

और भी गर्भकी प्रकृति कहतेहैं ॥

जब कामसे अत्यन्त पीड़ितदो स्त्री परस्पर संभोग करें तब परस्पर किसी प्रकार वीर्य्य छोड़ती हैं

उससे जो सन्तान उत्पन्न होतीहै वह अल्प और कोमल हड्डी वाली होतीहै ऋतुकालमें स्नानकरने वाली जो स्त्री स्वप्न में मैथुन करे उसकी कुक्षिमें वायु रुधिरको लेकर गर्भ उत्पन्न करतीहै और गर्भ के समान लक्षण वाला वह गर्भ पिताके गुणों (केशदाढ़ीरोमनखदन्त नाड़ीआदिकों) से रहित कललनाम उत्पन्न होताहै ॥ ३२ ॥

सर्पवृश्चिक कूष्माण्डाकृतयो विकृताश्चये । गर्भास्तेयोषितस्ताश्च ज्ञेयाःपापकृतोभृशम् ३३ गर्भोवातप्रकोपेन दोहदेचापमानिते । भवेत्कुब्जःकुणिःपंगुर्मूकोमिन मिनएवच ॥ ३४ ॥

सर्प वृश्चिक कूष्मांड आदिकोंके आकार वाले विकार युक्त जो गर्भ होतेहैं वह गर्भ अत्यंत पाप करनेवाली स्त्रियों के वायु के कोपसे और गर्भिणीस्त्री की इच्छाके न पूरेहोनेसे कुबड़ा कुणि लंगड़ा गूंगा और मिनामिनो आदि उत्पन्नहोतेहैं ॥

पुत्राणा माहाराचार चेष्टा भेदस्य हेतुमाह ॥

आहाराचारचेष्टाभिर्य्यादृशीभिःसमन्वितौ । स्त्रीपुंसौसमुपेयातां तयोःपुत्रोऽपितादृशः ॥ समुपेयातां संयोगं गच्छेताम् ॥ ३५ ॥

पुत्रों के आहार आचार और चेष्टाओंके भेदका कारण कहते हैं ॥

स्त्री और पुरुष जिस प्रकारके आहार आचार और चेष्टाओंसे युक्त होकर सँभोग करतेहैं उनका पुत्रभी वैसाही उत्पन्न होताहै ॥ ३५ ॥

अथ गर्भलक्षणमाह ॥

गर्भाशयगतंशुक्र मार्त्तवंजीवसंज्ञकः । प्रकृतिःसविकाराच तत्सर्व्वंगर्भसंज्ञकम् ॥ कालेनवर्द्धितोगर्भो यद्यंगोपांगसंयुतः । भवेत्तदासमुनिभिः शरीरीतिनिगद्यते ॥ अंगोपांगसंयुक्तः व्यक्तांगोपांगः ॥ ३६ ॥

गर्भके लक्षण लिखते हैं ॥

गर्भाशयमें प्राप्त हुए वीर्य्य और रजको जीव कहतेहैं यह आठ प्रकृति और सोलह विकार सब मिलकर गर्भ कहलाते हैं समय पाकर बढ़ेहुए गर्भके जब अंग और उपांग प्रकट होतेहैं तब मुनि लोग उसको शरीरी कहतेहैं ॥ ३६ ॥

तस्यत्वंगान्युपांगानि ज्ञात्वासुश्रुतशास्त्रतः । मस्तकादभिधीयन्ते शिष्या शृणुतयत्नतः ॥ आद्यमंगंशिरःप्रोक्तं तदुपांगानिकुन्तलाः । तस्यान्तर्मस्तुलुंगंच ललाटंभ्रूयुगन्तथा ॥ नेत्रद्वयंतयोरन्तर्वर्त्ततेतेद्वेकनीनिके । दृष्टिद्वयंकृष्णगोलौ श्वेतभागौचवर्त्मनी ॥ पक्ष्माण्यपांगाशंखौच कर्णौतच्छष्कुलीद्वयम् । पालिद्वयंकपोलौच नासिकाचप्रकीर्त्तिता ॥ ओष्ठाधरौचसृक्किण्यौ मुखंतालुहनुद्वयम् । दन्ताश्चदन्तवेष्टश्च रसनाचिबुकंगलः ॥ द्वितीयमंगंग्रीवातु यथामूर्द्धाविधार्यते । तृतीयंबाहुयुगलं तदुपांगान्यथब्रुवे ॥ तत्रोपरिमतौस्कन्धौ प्रगण्डौभवतस्त्वधः । कफोनियुतंतदधः प्रकोष्ठयुगलन्तथा ॥ मणिबन्धौतलेहस्तौ तयोश्चांगुलयोदश । नखाश्चदशतेस्थाप्या दशच्छेद्याःप्रकीर्तिताः॥

चतुर्थमंगंवक्षस्तु तदुपांगान्यथब्रुवे। स्तनौपुंसस्तथानार्य्या विशेषउभयोरयम् ॥ यौव नागमनेनार्याः पीवरौभवतःस्तनौ। गर्भवत्याःप्रसूतायास्तावेवक्षीरपूरितौ ॥ हृदयंपु ण्डरीकेण सदृशंस्यादधोमुखम्। जाग्रतस्तद्विकसति स्वपतस्तुनिमीलति ॥ आशय स्तत्तुजीवस्य चेतनास्थानमुत्तमम्। अतस्तस्मिंस्तमोव्याप्ते प्राणिनःप्रस्वपन्तिहि ॥ चेतनास्थान मुत्तम मिति अयमभिप्रायः ॥ चेतनानामधिष्ठानं मनोदेहश्चसेन्द्रियः। केशलोमनखाग्रंच मलंद्रव्यगुणैर्विना ॥ इत्युक्तवता चरकेण सकलं शरीरं चेतनास्था न मुक्तं। तदपेक्षयाहृदयं विशेषतश्चेतना स्थानमिति ॥ कक्षयोर्वक्षसः सन्धी जत्रुणी समुदाहृते। कक्षेउभेसमाख्याते तयोःस्यातांचवङ्क्षणौ ॥ उदरंपञ्चपञ्चांगं षष्ठंपार्श्व द्वयंमतम्। सप्तष्ठवंशंपृष्ठंतु समस्तंसप्तमंस्मृतम्॥ उपांगानि च कथ्यन्ते तानि जानीहि यत्नतः। श्लेष्मिताज्जायतेश्लीहावामतोहृदयादधः ॥ रक्तवाहिशिराणांसमूलंख्यातोमह र्षिभिः। हृदयाद्वामतोऽधश्चफुप्फुसोरक्तफेनजः ॥ अधोदक्षिणतश्चापिहृदयात्यकृतः स्थितिः।नत्तुरञ्जकपित्तस्यस्थानंशोणितजंमतम् ॥ अधस्तुदक्षिणेभागेहृदयात्क्लोमतिष्ठ ति॥जलवाहिशिरामूलंतृष्णाच्छादनकृन्मतम्॥क्लोमतिलकमएतत्तुवातरक्तजम् ॥ ३७॥

उसके अंग और उपांगोंको सुश्रुतजीके शास्त्रसे जानकर मस्तकसे लेकर सम्पूर्ण कहेजाते हैं हे शिष्य लोगो तुम यत्न पूर्वक सुनो पहला अंग शिर है और उसके उपांग केशहैं और उसके भीतर भेजा ललाट दोनों भृकुटी दोनों नेत्र और उन दोनोंके बीचमें दो तारे दो दृष्टि दो काले गोलक और उनके श्रोत्रभाग पलकें और नेत्रोंके कोने माथेकी दोनों शंख नाम हड्डियां कान कानोंके छिद्र और नोंकें गाल नाक ऊपर नीचेके ओष्ठ ओष्ठोंके किनारे मुख तालु दोनों जावडे दांत मसूड़े जिह्वा ठोढ़ी गला दूसरा अंग ग्रीवाहै जिससे कि शिर धारण किया जाताहै तीसरा अंग दोनों भुजा और उनके उपांगोंको कहतेहैं इसमें ऊपर दो कन्धे उसके नीचे दो भुज दंड उसके नीचे कुहनी से युक्त दो पहुंचे उसके नीचे मणिबन्ध उसके नीचे हस्ततल और हस्त और उनकी दशों उंगलियां दश नख रखनेके योग्य और उनके दश अंश काटनेके योग्य कहेगये हैं चौथा अंग छाती और उसके उ पांगोंको कहतेहैं स्तन स्त्री और पुरुषके स्तनोंकी विशेषता यहहै कि युवावस्थाके आनेपर स्त्री के स्तन स्थूल होजातेहैं फिर गर्भवती स्त्रीके सन्तान उत्पन्न होनेपर वही स्तन दुग्धसे भरजातेहैं और पुरुष के वैसे नहीं होते हृदय कमलके समान अधोमुख होताहै वह जागतेहुए पुरुष का प्रफुल्लित होता है और सोवतेहुए का बन्द होजाता है और यही हृदयजीव की चेतनाका उत्तम स्थानहै इसी का रणसे उसके तमोगुणसे व्याप्त होनेपर प्राणी सोते हैं हृदय चेतनाका उत्तम स्थानहै इसका यह अभिप्राय है कि मन इन्द्रियों समेत शरीर बाल रोम नखोंके अग्रभाग और मल यह द्रव्य गुणोंकी सहायताके विनाही चेतनाका स्थानहै इस प्रकार कहनेवाले चरक मुनिने सम्पूर्ण शरीरही को चेतनाका स्थान कहाहै और उन सबकी अपेक्षा हृदय अधिक चेतनाका स्थानहै कांख और छाती की सन्धिको जत्रु कहतेहैं दो कांखें और वंक्षण (जंघाओंकी सन्धि) यह उपांगहै पांचवां अंग उदर है और छठा अंग दोनों पसलियां हैं और पीठके बांस समेत सब पीठ सातवां अंग कहावेहै अब उस के उपांगोंको कहतेहैं बाईं ओर हृदयके नीचे रुधिरसे उत्पन्नहुई प्लीहाहै जिसको तिल्ली कहते हैं

महर्षि लोग उसे रक्तबाहिनी नाडियोंका मूल कहतेहैं हृदयके बाईं ओर और नीचे फुप्फुस है वह रुधिरके फेनोंसे उत्पन्न होताहै हृदयके दक्षिण ओर नीचेको यकृत् अर्थात् वह रुधिरसे उत्पन्नहुआ रंजक नाम पित्तका स्थानहै हृदयके दक्षिण भागसे नीचे क्लोम अर्थात् मांस पिंड विशेषहै वह जल बाहिनी नाड़ियोंका मूल तृषा का रोकने वाला वातरक्तसे उत्पन्न होताहै ॥ ३७ ॥

अथवृद्धवाग्भटः ॥

रक्तादनिलसंयुक्तात्कालीयकसमुद्भवइति । मेदःशोणितयोःसाराद्वृष्कयोर्युगलंभवेत् ॥ तौतुपुष्टिकरौप्रोक्तौजठरस्थस्य मेदसः । उक्ताःसार्द्धास्त्रयोव्यामाःपुंसामन्त्राणि सूरिभिः ॥ अर्द्धव्यासेनहीनानियोषितोऽन्त्राणिनिर्द्दिशेत् । उन्दुकश्चकटीचापित्रिकं वस्तिश्चवंक्षणौ ॥ कण्डराणांप्ररोहःस्यात्स्थानंतद्वीर्य्यमूत्रयोः । सएवगर्भस्याधानंकुर्य्याद्गर्भाशयेस्त्रियाः ॥ शंखनाभ्याकृतिर्य्योनिस्त्र्यावर्त्तासाचकीर्तिता । तस्यास्तृतीयेत्वावर्त्तेगर्भशय्याप्रतिष्ठिता ॥ ३८ ॥

वृद्धवाग्भट्ट कहतेहैं ॥

वायु संयुक्त रुधिरसे कालीयक उत्पन्न होताहै मेद और रुधिरके सारांशसे दो वृक्क उत्पन्न होते हैं उन दोनोंसे उदरमें रहनेवाला मेद पुष्ट होताहै पंडितोंने पुरुषोंकी आंतें साढ़े तीन व्याम दोनों भुजाओंकी लम्बाई) कहीहैं और स्त्रियोंकी आंतें तीन व्यामकी होती हैं उन्दुक कटि त्रिक (पीठके बांस के नीचेकी तीन हड्डी वस्ति (मूत्राशय) वंक्षण कण्डरोंका मूल यह वीर्य्य और मूत्रके स्थान हैं और वही स्त्रियोंके गर्भाशयमें गर्भकी स्थिति करताहै शंखकी नाभि के समान आकारवाली योनि कही गईहै और उसमें तीनचक्र होतेहैं उसके तीसरे चक्र में गर्भ की शय्याहै ॥ ३८ ॥

वृषणौभवतःसारात्कफासृग्भ्यांचमेदसाम् । वीर्य्यवाहिशिराधारौतौमतौपौरुषावहौ ॥ गुदस्यमानंसर्वस्यसार्द्धंस्याच्चतुरंगुलम् ॥ तत्रस्युर्व्वलयस्तिस्रःशंखावर्त्तनिभास्तुताः ॥ प्रवाहिनीभवेत्पूर्वासार्द्धांगुलमितामता । उत्सर्जनीतुतदधःसासार्द्धांगुलसम्मिता ॥ तस्याधःसञ्चरणीस्यादेकांगुलसमामता । अर्द्धांगुलप्रमाणंतुबुधैर्गुदमुखंस्मृतम् ॥ मलोत्सर्गस्यमार्गोऽयंपायुर्देहेविनिर्मितः ॥ ३९ ॥

अंडकोश-मेद कफ और रुधिरके सारांशसे उत्पन्न होतेहैं और वह वीर्य्य बाहिनी नसोंके आधार और पुरुषार्थके धारण करने वाले कहेगयेहैं- संपूर्ण गुदाका प्रमाण साढ़े चार अंगुल है और उसमें शंखके चक्रोंके समान तीन बलि अर्थात् चक्रहैं उनमें से डेढ़ अंगुल के प्रमाण वाली पहली बलि का नाम प्रवाहिनीहै दूसरी बलिका प्रमाण डेढ़ अंगुल और नाम उत्सर्जनीहै उसके नीचे संचारिणी नामवाली वलिका प्रमाण एक अंगुलहै और पंडितों ने गुदाके मुखका प्रमाण आधे अंगुलका कहाहै यह गुदा शरीरमें मलके निकलनेका मार्गबनायागयाहै ॥ ३९ ॥

पुंसःप्रोथौस्मृतौयौतुतौनिसम्बौचयोषितः । तयोष्ककुन्दरेस्यातांसक्थिनीत्वंगमष्टमम् ॥ तदुपाङ्गानिचत्रूमोजानुनीपिण्डिकाद्वयम् ॥ जङ्घेद्वेघुण्टिकेपार्ष्णीतलेचप्रपदेतथा ॥ पादावंगुलयस्तत्रदशतासांनखादश ॥ ४० ॥

जो पुरुषोंके प्रोथकहेगयेहैं वही स्त्रियोंके नितम्बहैं उनके दो ककुन्दर (चूतड़ोंके ऊपरदोगढ़े) हैं जांघ आठवां अंगहै उनके उपांग कहते हैं घुटने- पिंडली- टकने गट्टे एड़ी- तलुए पैरोंके अग्रभाग पैर दशों उंगली और उनके दशोंनख ॥ ४० ॥

अथेदंशरीरमपरेणापियेनयेनसमवायिकारणेनोत्पद्यतेतानिसर्वाण्याह ॥

अथदोषाःप्रवक्ष्यन्तेधातवस्तदनन्तरम् । आहारादेर्गतिस्तस्यपरिणामश्चवक्ष्यते॥ आर्त्तवंचाथधातूनांमलास्तदुपधातवः । आशयाश्चकलाश्चापिमर्माण्यथचसन्धयः ॥ शिराश्चस्नायवश्चापिधमन्यःकण्डरास्तथा । रन्ध्राणिभूरिस्रोतांसिजालैःकूर्च्चाश्चरज्जवः ॥ सेवन्यश्चाथसंघाताःसीमन्ताश्चतथात्वचः । लोमानिलोमकूपाश्चदेहएतन्मयोमतः॥ ४१ ॥

जिन २ सामवायि कारणों से यह शरीर उत्पन्न होताहै वह सब बर्णन किये जातेहैं दोष-धातु-आहारादिकों की गति और परिणाम- रजधातुओं के मल- उनके उपधातु- आशय कला मर्म्म सन्धि शिरा स्नायु धमनी कण्डराछिद्र बहुतसे सोते जालकूर्च रज्जु सेवनी संघात सीमन्त त्वचा रोम और रोमकूप इन सबसे समवाय अर्थात् संयोग को शरीर कहतेहैं ॥ ४१ ॥

तत्रदोषस्वरूपमाहवाग्भटः ॥

वायुःपित्तंकफश्चेतित्रयोदोषाःसमासतः । विकृताऽविकृतादेहंघ्नन्तितेवर्द्धयन्तिच ॥ तेव्यापिनोऽपिहन्नाभ्योरधोमध्योर्ध्वसंश्रयाः । वयोऽहोरात्रिभुक्तानामन्तमध्यादिगाःक्रमात् ॥ ४२ ॥

इनमेंसे दोषोंके स्वरूप को वाग्भट जी कहतेहैं ॥

वायु-पित्त और कफ यह संक्षेपसे तीनदोष कहेगयेहैं यह विकारको प्राप्त होकर शरीरको नष्टकरते हैं और बिकार रहित होकर शरीर को पुष्ट करतेहैं यह व्यापक होनेपरभी क्रमसे हृदय और नाभिके नीचे बीचमें और ऊपर स्थितहैं और अवस्था दिनरात्रि- भोजन इनके अन्तमध्य और आदिमें क्रम से स्थित रहतेहैं ॥ ४२ ॥

दोषशब्दस्यनिरुक्तिमाह ॥

धातवश्चमलाश्चापिदुष्यन्त्येभिर्य्यतस्ततः । वातपित्तकफाएतेत्रयोदोषाइतिस्मृताः ॥ दोषाइत्यत्रदुषवैकृत्येइतिदुषधातोः । दुष्यन्त्येभिरितिवाक्ये ॥ अकर्त्तरिचकारकेसंज्ञायामित्यनेनसूत्रेणकरणेऽर्थेघञ्प्रत्ययः।तेधातवोऽपिविद्वद्भिर्गादितादेहधारणात्॥ (यतआहसुश्रुतः) विसर्गादानविक्षेपैःसोमसूर्यानिलायथा । धारयन्तिजगद्देहंकफपित्तानिलास्तथेति ॥ अत्रयथासंख्येनान्वयोबोद्धव्यः । विसर्गादानंवातस्यैव ॥ विक्षेपःशीतोष्णादीनांविविधप्रकारेणप्रेरणम्। मलाश्चेतरसादीनांमलिनीकरणान्मताः॥४३ ॥

दोषशब्दकी निरुक्तिकहते हैं ॥

जोकि धातु और मल इनसे दोषको प्राप्त होतेहैं इस कारणसे यह बात पित्त कफ तीनों दोष कहे जातेहैं दोष इस शब्दमें(दुष वैकृत्ये)इस धातुसे (अकर्त्तरिचकारके संज्ञायां)इस सूत्रके द्वारा करण

अर्थमेंघञ् प्रत्यय होताहै- विद्वानोंने देहके धारण करने से इन बातादिकों को धातु भी कहा है जैसाकि सुश्रुत जी कहतेहैं कि जैसे चन्द्रमा सूर्य्य और वायु देनेसे ग्रहण करने से और विक्षेप अर्थात् शीत उष्णादिकों के अनेक प्रकार धारण करने से जगत्को धारण करतेहैं उसी प्रकार कफ पित्त और वायु शरीर को धारण करतेहैं और यह रसादिकोंके मलिन करनेसे मलभी कहलातेहैं॥४३॥

तत्रवीर्योःस्वरूपमाह ॥

दोषधातुमलादीनांनेताशीघ्रःसमीरणः। रजोगुणमयःसूक्ष्मोरूक्षःशीतोलघुश्चलः॥
नेतास्थानान्तरंप्रापयिता । शीघ्रःआशुकारी ॥ ४४ ॥

वायुका स्वरूप कहतेहैं ॥

दोष· धातु और मलादिकों का स्थानांतरमें लेजाने वाला शीघ्रता करने वाला रजोगुणमय सूक्ष्म रूखा शीतल-हलका और चलने वाला बायुहोताहै ॥ ४४ ॥

अन्यच्च, उत्साहोच्छ्वासनिःश्वासचेष्टावेगप्रवर्त्तनैः । सम्यक्गत्याचधातूनामिन्द्रियाणाञ्चपाटवैः॥ अनुगृह्णात्यविकृतोहृदयेन्द्रियचित्तधृक्। रजोगुणमयःसूक्ष्मःशीतोरूक्षोलघुश्चलः ॥ खरोमृदुर्योगवाहीसंयोगादुभयार्थकृत्। दाहकृत्तेजसायुक्तोशीतकृत्सोमसंश्रयात् ॥ विभागकरणद्वायुः प्रधानंदोषसंग्रहे। पक्वाशयकटीसक्थिस्रोतोस्थिस्पर्शनेन्द्रियम् ॥स्थानंवातस्यतत्रापिपक्वाधानंविशेषतः । एकोवायुःपित्तवन्नामस्थानकर्म्मभेदैःपञ्चविधः ॥ ४५ ॥

अन्यग्रन्थोंमें कहेहुये वायुके लक्षण ॥

बिकार रहित बायु हृदयइन्द्री और चित्तको धारण करताहुआ उत्साह स्वासलेना स्वासका छोड़ना चेष्टा मूत्रादि वेगोंकी प्रकृति- रुधिर आदि धातुओं की अच्छे प्रकार गति और इन्द्रियोंकी समर्थतासे शरीरको धारण करताहै यह वायु रजोगुणमय शूक्ष्म शीतल- रूखी- हलकी-चलनेवाली तीक्ष्ण· कोमल- योगवाही अर्थात् जिसके साथ मिले उसके गुणोंकी बढ़ानेवाली संयोगसे दोनों प्रयोजनोंकी करनेवाली जैसे तेजसे मिली हुई दाहकी करनेवाली और चन्द्रमासे मिलीहुई शीतलताकी करनेवालीहै और विभागकरने से बायु सम्पूर्ण दोषोंमें प्रधानहै पक्वाशय- कटि- जंघा- सोते हड्डी-त्वचायह सम्पूर्ण बायुके स्थान हैं इनमें से पक्वाशय प्रधान स्थानहै एक बायु पित्त के समान नाम स्थान और कर्म्म के भेदों से पांच प्रकार की है ॥ ४५ ॥

तेषांवायूनां नामान्याह ॥

उदानस्तदनुप्राणःसमानोऽपानएवच।व्यानश्चैतानिनामानिवायोःस्थानप्रभेदतः॥ ४६॥

अब बायुके नाम कहते हैं ॥

उदान- प्राण- समान- अपान- और व्यान यह बायुके नाम स्थान भेदसे होते हैं ॥ ४६ ॥

अथोदानादीनां स्थानान्याह ॥

कण्ठेहृदितथाधस्तात्कोष्ठवह्नेर्म्मलाशये।सकलेऽपिशरीरेऽसौक्रमेणक्वनोवसेत् ॥४७॥

अब उदानादिकके स्थान कहतेहैं ॥

कंठमें उदान हृदयमें प्राण जठराग्निके नीचे समान मलाशयमें अपान सम्पूर्ण शरीरमें व्यान इसक्रमसे यह वायु रहतीहै ॥ ४७ ॥

अथतेषां कर्म्माण्याह ॥

उद्गानोनामयस्तूर्ध्वमुपैतिपवनोत्तमः । तेनभाषितगीतादिप्रवृत्तिः कुपितस्तुसः ॥ ऊर्ध्वजत्रुगतानूरोगान्विदधातिविशेषतः । योवायुःप्राणनामासौमुखंगच्छतिदेहधृक् ॥ सोऽन्नंप्रवेशयत्यन्तः प्राणांश्चाप्यवलम्बते । प्रायशःकुरुतेदुष्टोहिक्काश्वासादिकान्गदान् ॥ ४८ ॥

अब उनके कार्य्य लिखतेहैं ॥

पवनोंमें उत्तम उदान नाम वायु जो ऊपरको जाताहै उस्से भाषण और गीतादिकों में प्रवृत्ति होतीहै और वह कुपित होकर छाती और बगलकी सन्धियोंके ऊपरके रोगोंको अधिकतासे करतीहै शरीरका धारण करनेवाली मुख में जानेवाली प्राण नाम वायु अन्नको भीतर लेजातीहै और प्राणों को भी रखतीहै और कुपित हुई वह वायु हिचकी और खांसी आदि रोगोंको करतीहै ॥ ४८ ॥

आमपक्वाशयचरःसमानोवह्निसंगतः । सोऽन्नंपचतितज्जांश्चविशेषान्विविनक्ति हि ॥ तज्जानीत्यादि । अन्नगतानूरसमलमूत्रादीन्पृथक्करोतीत्यर्थः ॥ सदुष्टोवह्निमान्द्यातिसारगुल्मान्करोतिहि । पक्वाशयालयोऽपानःकालेवर्षातिचाप्ययम् ॥ समीरणःशकृन्मूत्रशुक्रगर्भार्तवान्यधः । क्रुद्धस्तुकुरुतेरोगान्घोरान्वस्तिगुदाश्रयान् ॥ शुक्रदोषप्रमेहांश्चव्यानापानप्रकोपजान् ॥ ४९ ॥ कृत्स्नदेहचरोव्यानोरससंवाहनोद्यतः । स्वेदाऽसृक्स्रावकश्चापिपञ्चधाचेष्टयत्यपि ॥ गत्युत्क्षेपणोत्क्षेपानिमेषोन्मेषणादिका । प्रायःसर्व्वाःक्रियास्तस्मिन्प्रतिबद्धाःशरीरिणाम् ॥ प्रस्यन्दनञ्चोद्वहनंपूरणञ्चविरेचनम् । धारणञ्चेतिपञ्चैताश्चेष्टःप्रोक्तानभस्वतः ॥ क्रुद्धःसकुरुतेरोगान्प्रायशःसर्वदेहगान् । युगपत्कुपिताएतेदेहंभिन्द्युरसंशयम् ॥ देहंभिन्नंकुर्य्युर्म्मारयेयुरित्यर्थः ॥ ५० ॥

आमाशय और पक्वाशयमें बिचरनेवाली समान नाम वायु अग्निसें मिलकर अन्नको पकाती है और अन्नसे उत्पन्न हुए मलमूत्रादिकोंको अलग २ करती है और कुपित होकर यह वायु मन्दाग्नि अतीसार और गुल्म आदि रोगोंको करतीहै गुल्म (वायु गोला) पक्वाशयमें रहनेवाली अपान नाम वायु उचित समयमें मलमूत्र वीर्य्य गर्भ और रज इनको नीचेकी ओर खेंचतीहै और कुपित होकर वह वायु मूत्राशय और गुदाके रोग वीर्य्यके दोष प्रमेह व्यान तथा अपान वायुके कोप से उत्पन्नहोने वाले बडेभारी रोगोंको उत्पन्न करतीहै ४९ सम्पूर्ण देह में रहनेवाली व्यान नाम वायु रसोंको ले जानेवाला स्वेद और रुधिरकी बहानेवाली चलना ऊपर होना नीचे होना नेत्रों का बन्द करना और खोलना इन पांच चेष्टाओंकी करनेवाली है मनुष्योंकी प्रायः सम्पूर्ण क्रिया उसीके आधीन हैं चलना ऊपर लेजाना पूर्ण करना निकालना और धारण करना यह वायुकी पांच चेष्टा कहीगई हैं और कुपित होकर व्यान वायु प्रायः सम्पूर्ण शरीरके रोगोंको उत्पन्न करती है और जो पहले कही हुई पांचों वायु एक संगही कोपको प्राप्त होय तो निस्सन्देह शरीरको नष्ट करती है ॥ ५० ॥

अथपित्तस्य स्वरूपमाह ॥

पित्तमुष्णंद्रवंपीतंनीलंसत्त्वगुणोत्तरम् । सरंकटुलघुस्निग्धंतीक्ष्णमम्लन्तुपाकतः॥ पीतन्निरामम् । नीलंसामम् ॥ एकंपित्तंवातवन्नामस्थानकर्म्मभेदैःपञ्चविधम् ॥ ५१ ॥

अब पित्तके स्वरूपको कहते हैं ॥

पित्त उष्ण पिघलनेवाला पीत (आमसे रहित पित्त पीला होताहै) नील (आमसे मिलाहुआ नीला होताहै) अधिक सतोगुण वाला दस्तावर कडुआ हलका चिकना तीक्ष्ण और पाकमें खट्टा होताहै एक भी पित्त बायुके समान नाम स्थान और क्रियाओंके भेदसे पांचप्रकारका है ५१ ॥

तेषांपित्तानां नामान्याह ॥

पाचकंरञ्जकश्चापिसाधकालोचकेतथा। भ्राजकञ्चेतिपित्तस्यनामानिस्थानभेदतः॥५२॥

अब पित्तोंकेनाम कहतेहैं ॥

पाचक रंजक साधक आलोचक और भ्राजक यह स्थान भेद से पित्तके पांच नामहैं ॥ ५२ ॥

अथपाचकादीनां स्थानान्याह ॥

अग्न्याशयेयकृत्प्लीहोहृदयेलोचनद्वयेत्वचिसर्व्वशरीरेषुपित्तंनिवसतिक्रमात्॥५३॥

अब इनके स्थान कहतेहैं ॥

अग्न्याशयमें पाचक यकृत् और पिलहीमें रंजक हृदयमें साधक दोनों नेत्रोंमें आलोचक त्वचा में भ्राजक इसक्रमसे पित्त सम्पूर्ण शरीरमें रहताहै ॥ ५३ ॥

अथतेषां कर्माण्याह ॥

पाचकंपचतेभुक्तंशेषाग्निबलवर्द्धनम् । रसमूत्रपुरीषाणिविवेचयति नित्यशः ॥ पाचकंपित्तमामपक्वाशयमध्यस्थंषड्विधमाहारंभोज्यंभक्ष्यंचर्व्यलेह्यंचूष्यंपेयंपचतिदोषरसमूत्रपुरीषाणि पृथक्करोतिच॥ तदग्न्याशयस्थमेवस्वशक्त्यारसरञ्जनहृदयस्थकफतमोपनोदनरूपग्रहणप्रभा प्रकाशनाभ्यङ्गलेपादिपाचनाद्यग्निकर्म्मणां विशेषाणांपित्तस्थानानामनुग्रहंकरोति ॥ शेषाण्यपिपित्तस्थानानियकृत्प्लीहादीनि भागेनगत्वातत्रतत्ररसं रञ्जनादिकर्म्मभिरुपकरोतीत्यर्थः । कथम्भूतंपाचकंपित्तशेषाग्निबलवर्द्धनम् ॥ शेषा अग्नयपृथिव्यादिमहाभूतगणाः (यतउक्तंचरकेण ।) भौमाप्याग्नेयवायव्याः पञ्चोष्माणःसनाभसा इति ॥ ऊष्माणःअग्नयः । (यतउक्तंवाग्भटे ।) दोषधातुमलादीनामूष्मेत्यात्रेयशासनमिति ॥ दोषधातुमलादीनामूष्मैवाग्निरित्यर्थः । रसादिधातुगताःसप्ततेषांबलवर्द्धनम् ॥ यथागृहेस्थापितानि रत्नानिखद्योत्तवद्दूरभास्वराणि तान्यपिदीपज्योतिषादूरप्रकाशकानि भवन्ति । तथाअग्न्याशयस्थपाचकाग्नितेजसा सर्वे अग्नयो बलवन्तोभवन्ति ॥ (तथा च वाग्भटः ।) अन्नस्यपक्तासर्वेषांपक्तृणामधिकोमतः ॥ तन्मूलास्तेपितद्वृद्धिक्षयवृद्धिक्षयात्मकाइति । ननुपित्तादन्योऽग्निराहोस्वित्पित्तमेवाग्निरितिसन्देहः ॥ उच्यते॥पित्तस्योष्णादिगुणद्वाराहारपाचनरञ्जनदर्शनादिकर्म्मणश्च

नखलु पित्तव्यतिरेकेणान्योऽग्निः । तस्मादग्निरूपस्यैव पित्तस्य स्थानभेदात्पाचक रञ्जक साधकालोचकभ्राजकसंज्ञाः ॥ (तथाच वाग्भटः) पाचकंतिलमानंस्या त् काठिन्यान्नास्यदोषता । अनुगृह्णात्यविकृतं पित्तंपाकोष्मदर्शनैः ॥ क्षुत्तृट्रुचिप्रभा मेधा धीशौर्य्यतनुमार्दवैः । पित्तंपञ्चात्मकंतच्च पक्वामाशयमध्यगम् ॥ पञ्चभूतात्मक त्वेऽपि यत्तैजसगुणोदयम् । त्यक्तद्रवत्वंपाकादि कर्म्मणानलशब्दितम् ॥ पचत्यन्नंविभ जते सारकिट्टौपृथक्कृतथा । तत्रस्थमेवपित्तानां शेषाणामप्यनुग्रहम् ॥ करोतिबलदानेन पाचकंनामतत्स्मृतम् । ननुयदि पित्ताग्न्योरभेदस्तदा कथं घृतं पित्तस्य शमकमग्नेर्दी पकामिति । तथामत्स्याः पित्तं कुर्वन्ति न च तेऽग्निदीप्तिकरा इति । तथा पित्ताधिक्या त्तीक्ष्णोऽग्निरित्यपि । कथंस्यात् । तथा समदोषः समाग्निश्चेत्यपि वक्तुं न युज्यते । तथा द्रवं स्निग्धमधोगञ्च पित्तं वह्निरतोऽन्यथेति ॥ अत्रोच्यते । पित्तमग्नेः संतता धिष्ठानम् ॥ (तथाचोक्तं तंत्रान्तरे) अग्निर्भिन्नगुणैर्युक्तः पित्तंभिन्नगुणैस्तथा । द्रवं स्निग्धमधोगंच पित्तंवह्निरतोऽन्यथा ॥ तस्मात्तेजोमयंपित्तंपित्तोष्मायः सशक्तिमान् । ससञ्चरतिकुक्षिस्थः सर्वतोधमनीमुखैः ॥ सकायाग्निःसकायोष्मा सपक्तासचजीवन म् । अनन्यगतिरित्येवं देहेकायाग्निरुच्यते ॥ (अन्यच्च) वामपार्श्वाश्रितंनाभेः कि ञ्चित्सोमस्यमण्डलम् । तन्मध्येमण्डलंसौर्य्यं तन्मध्येऽग्निर्व्यवस्थितः ॥ जरायुमात्र प्रच्छन्नः काचकोशस्थदीपवत् ॥ (तथाच मधुकोषे) द्रवतेजःसमुदायात्मकस्यापि पित्तस्यतेजो भागोऽग्निरिति । तेन पित्तमप्यग्नि वन्मन्यते । अतितापितायोगोलकव त् । परमार्थतस्तु अग्निः पित्ताद्भिन्न एवेति सिद्धांतः ॥ (अतएवाह रसप्रदीपे) जाठ रोभगवानग्नि रीश्वरोऽन्नस्य पाचकः । सौक्ष्माद्रसानाऽददानो विवक्तुंनैवशक्यते ॥ ना भिमध्येशरीरस्य विशेषात्सोममण्डलम् । सोममण्डलमध्यस्थं विद्यात्सूर्य्यस्यमण्डल म् ॥ प्रदीपवत्तत्रनृणां स्थितोमध्येहुताशनः । सूर्य्योदिवियथातिष्ठं स्तेजोयुक्तैर्गभस्ति भिः ॥ विशोषातिसर्वाणि पल्वलानिसरांसिच । तद्वच्छरीरिणांभुक्तं ज्वलनोनाभिमाश्रि तः ॥ मयूखैःपचतेक्षिप्र ञानाव्यञ्जनसंस्कृतम् । स्थूलकायेषुसत्त्वेषु यवमात्रःप्रमाणतः । ह्रस्वकायेषुसत्त्वेषुतिलमात्रःप्रमाणतः।कृमिकीटपतंगेषुबालमात्रोऽवतिष्ठतइति॥ ५४॥

अब उनके कार्य्य कहतेहैं ॥

पाचक पित्त खायेहुये पदार्थको परिपाक करताहै शेष अग्नि (महाभूताग्नि और धात्वाग्नि) के बलको बढ़ाताहै और रसमूत्र तथामलको अलग२ करताहै यहपाचक नाम पित्त आमाशय और पक्वाशयमें स्थित भोज्य भक्ष्य चर्व्य लेह्य चूष्य और पेय इन छःप्रकारोंके भोजनोंको पकाताहै और रसमलमूत्र तथा दोषोंको अलग२करता है अग्न्याशयमें रहनेवाला वह पित्त अपनी शक्तिसे रसका रंगना - हृदयमें स्थित कफ और तमो गुणको हटाना - रूपको ग्रहण करना प्रभाका प्रकाश करना शरीरके चन्दनादि लेपोंका परिपाक करना आदिक अग्निके कर्मोंके द्वारा विशेष २ पित्तके स्थानों

की सहायता करताहैं अर्थात् शेष यकृत् पिलही आदि पित्तके स्थानोंको प्राप्तहोकर उन २ स्थानोंमें रसका रंगना आदिककर्मोंसे उपकार करताहै और शेष अर्थात् महाभूताग्नि और धात्वग्निके बल को बढ़ाताहै क्योंकि चरक मुनिने कहाहै किपृथ्वी संबंधी - जलसंबंधी अग्निसंबंधी वायुसंबंधी और आकाश संबंधी यह पांचऊष्मा अर्थात् अग्निहैं जिस कारणसे वाग्भटमेंकहा गयाहै कि दोष धातु और मलादिकों की ऊष्माही अग्निहै यह आत्रेय मुनिका मतहै और पाचक पित्त रसादि सप्त धातुओं में प्राप्त अग्नियोंके बलका बढ़ाने वालाहै - जैसे घरमें रक्खे हुए रत्न जुगनूके समान दूरसे चमकतेहैं और वहभी दीपककी ज्योतिसे दूरतक प्रकाश करने वाले होते हैं उसी प्रकार अग्न्याशयमें स्थित पाचक नाम अग्निके तेजसे संपूर्ण अग्नि बलवान्होतेहैं - अन्नका परिपाक करने वाला पाचक नाम अग्नि संपूर्ण अग्नियोंमें अधिक समझा गयाहै क्योंकि उन सबका वही आधारहै और उसीकी वृद्धि और क्षयसे संपूर्ण अग्नि वृद्धि और क्षय वाले होतेहैं अब यह सन्देह उत्पन्न होताहै कि पित्तसे अलग अग्नि कोई दूसरा पदार्थहै अथवा पित्तही अग्निहै पित्तके उष्णादि गुणोंसे आहारका परिपाक - रसका रंगना और दर्शन आदि कर्मोंके द्वारा निश्चय होताहै कि पित्तके सिवाय दूसरा अग्नि नहींहै इस कारणसे अग्नि रूप पित्तकेही स्थानभेदसे पाचक - रंजक - साधक - आलोचक और भ्राजकनामहैं और ऐसाही वाग्भट ने कहाहै कि पाचक पित्त तिलके प्रमाणहै और कठिनताके कारणसे इसको दोष पना नहींहै- विकारसे राहित पाचक पित्तपरिपाक ऊष्मा और दर्शन इनके द्वारा उपकारकरताहैं क्षुधा-तृषा रुचि प्रभा मेधा बुद्धि शूरता और शरीर की कोमलता इनसे उपकार करने वाला पक्वाशय और आमाशय में रहनेवाला वही पित्तपांचप्रचारका है पंच महाभूतात्मक होने परभी जो अधिक तैजसगुणवाला है पिघलने से रहित परिपाक आदि कर्म्मोंसे अग्नि कहलाने वाला अन्नका परिपाक करनेवाला मल और सारांशका अलग २ करने वाला जो पित्त आमाशय और पक्वाशय में स्थित भी शेष पित्तों को बलके देने से उपकार करताहै वह पाचक नाम पित्त है अब यह संदेह उत्पन्न होताहै कि जो पित्त और अग्निमें भेदनहीं है तो घी पित्त का शान्तकरने वाला और अग्नि का प्रज्वलित करनेवाला कैसे होसकाहै और मछली पित्तको उत्पन्न करती हैं परन्तु अग्निको नहीं उत्पन्न करतीं यह भी कैसे होसकाहै और पित्त की अधिकतासे अग्नि तीक्ष्ण होतीहै यह कैसे और कफ वात और पित्तकी समता होने से समाग्नि होतीहै यहभी नहीं कह सकेहैं और पित्त पिघलने वाला - चिकना और नीचे जाने वाला होताहै परन्तु अग्नि इसके बिपरीतहै - इसके उत्तरमें यह कहा जाताहै कि पित्त अग्निके निरन्तर रहनेका स्थानहै और ऐसाही ग्रन्थातर में कहाभीहै कि अग्निके और गुणहैं और पित्तके और गुणहैं पिघलनेवाला-, चिकना और नीचे जाने वाला पित्तहै परन्तु अग्नि इससे बिपरीतहै इस कारणसे पित्ततेजसरूपहै और पित्तकीजो ऊष्माहै वह शक्तिवाली है और वह कोषमें स्थित होकर नाड़ियोंके मुखोंसे सम्पूण शरीरमें फैलती है और वह शरीरकी अग्निहै शरीरकी ऊष्माहै परिपाक करनेवाली और जीवनरूपहै एक गतिवाली है इसप्रकार शरीरमें शरीरकी अग्नि कहीगईहै और भी कहागयाहै कि नाभिके बाम कुक्षिमें रहने वाला छोटासा चन्द्रमाका मंडलहै उसके बीचमें सूर्य्यका मंडलहै उसमें काचके पात्रमें स्थितदीपकके समान केवल जरायुसे ढकीहुई अग्निवर्त्तमान है और ऐसाही मधुकोषमें भी कहाहै कि द्रव और तेजके समुदाय रूपवाले पित्तकाते जो भाग अग्निहै इस कारणसे अत्यन्त तपाये हुए लोहेके गोलेके समान पित्तभी अग्निके तुल्य मानाजाता है परन्तु ठीक २ तो पित्तसे अग्निभिन्न है यही

सिद्धान्तहै इसीसे रसप्रदीपमेंभी कहाहै कि उदरमें रहनेवाला अन्नका परिपाक करनेवाला भगवान् ईश्वर अग्नि सूक्ष्मतासे रसोंको लेताहुआ विभाग नहीं कियाजा सक्ताहै शरीरकी नाभिमें चन्द्र मंडल उसके बीचमें सूर्य्यका मंडलहै और उसमें दीपकके समान मनुष्योंकी जठराग्नि स्थित है जिस प्रकार आकाशमें रहनेवाले सूर्य्य अपनी तेजयुक्त किरणोंसे सम्पूर्ण तड़ागादिकोंको सुखातेहैं उसीप्रकार नाभिमें रहनेवाला अग्नि अपनी किरणोंसे मनुष्योंके अनेक प्रकारके व्यंजन युक्त भोजनको शीघ्र पचाताहै वह अग्नि स्थूल शरीरवाले जीवोंमें जो बराबर छोटे शरीर वाले जीवों में तिल बराबर और कीडे पतंगे आदिकोंमें बाल बराबर रहताहै ॥ ५४ ॥

पुनः प्रकृतमनुसरति ।

रञ्जकंनामयत्पित्तं तद्रसंशोणितंनयेत् । यत्तुसाधकसंज्ञं तत्कुर्य्याद्बुद्धिंधृतिंस्मृतिम् ॥ धृतिंमेधांयदालोचक संज्ञंतद्रूपग्रहणकारणम् । भ्राजकंकांतिकारीस्याल्लेपाभ्यंगादिपाचकम् ॥ ५५ ॥

अब फिर प्रकृत विषय (असली विषय) कहाजाताहै ॥

रंजक नाम पित्त रसको रुधिर बनाताहै साधक नाम पित्त बुद्धि मेधा और स्मृतिको उत्पन्नकरताहै जिस पित्त के द्वारारूप का ग्रहण कियाजाताहै उसका नाम आलोचकहै और भ्राजक नाम पित्त शरीरकी शोभाका करनेवाला तथा लेप और शरीरमें लगाये हुए तैलादिकोंका परिपाक करने वालाहै ॥ ५५ ॥

अथ श्लेष्मस्वरूप माह ।

श्लेष्माश्वेतोगुरुःस्निग्धः पिच्छिलःशीतलस्तथा । तमोगुणाऽधिकःस्वादु र्विदग्धो लवणोभवेत् ५६ एकःश्लेष्मा वातपित्तावि वनामस्थान कर्म्मभेदैःपञ्चविधः ॥ ५७ ॥

अब श्लेष्माका स्वरूप कहतेहैं ॥

श्वेत भारी चिकना फिसलनेवाला शीतल अधिक तमोगुण वाला मधुर और विकार युक्तहोकर लवण रसवाला श्लेष्मा होताहै ५६ एक भी श्लेष्मा बायु और पित्तके समान नाम स्थान और कार्य्यके भेदों से पांच प्रकारका है ॥ ५७ ॥

अथ श्लेष्मणांनामान्याह ।

कफस्यैतानिनामानि क्लेदनश्चावलम्बनः । रसनःस्नेहनश्चापि श्लेष्मणःस्थान भेदतः ॥ ५८ ॥

अब श्लेष्मा के नाम कहतेहैं ॥

क्लेदन- अवलम्बन रसन स्नेहन और श्लेष्मण यहपांच नाम श्लेष्माके स्थानभेदसेहोतेहैं॥५८॥

अथ क्लेदनादीनां स्थानान्याह ।

आमाशयेऽथहृदये कण्ठेशिरसिसंधिषु। स्थानेष्वेषुमनुष्याणां श्लेष्मातिष्ठत्यनुक्रमात्॥५९॥दोषाणां सकलशरीर व्यापिनामपि पञ्च पञ्च स्थानानीति बाहुल्याभिप्रायेणो

क्तानि ॥ (तथाच वाग्भटः) इति प्रायेण दोषाणां स्थानान्येकी कृतात्मनाम् । व्यापि नामपिजानीयात् कर्माणिचपृथक्पृथक् (इति) चरकश्च । तेव्यापिनोऽपि हृन्नाभ्योर धेमध्योर्द्धसंश्रया इति ॥ ६० ॥

अब उनके स्थान कहते हैं ॥

आमाशय में क्लेदन हृदयमें अवलम्बन कण्ठमें रसन शिरमें स्नेहन और संधियोंमें श्लेष्मण नाम श्लेष्मा रहताहै ५९ सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होनेवाले भी वात पित्त और कफोंके पांच २ स्थान अधिकताके अभिप्रायसे कहेगयेहैं और यही वाग्भटने भी कहाहै कि इस प्रकार सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होनेबाले भी विकार रहित बायु पित्त और कफोंके विशेष स्थान और अलग २ कार्य्य जानने चाहिये चरकने भी कहाहै कि सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होनेवाले भी यह वातादिक हृदय और नाभिके अधोभाग मध्य और ऊर्ध्व भागमें रहतेहैं ॥ ६० ॥

अथ तत्तत्स्थानगतस्य श्लेष्मणःकर्म्माण्याह ॥

क्लेदनःक्लेदयत्यन्न मात्मशक्त्यापराण्यपि । अनुगृह्णातिचश्लेष्मस्था नान्युदक कर्म्मणा ॥ अयमर्थः क्लेदनोऽन्नं क्लेदयतितेन संहतमन्नं भेदं प्राप्नोति । अपराण्यपि श्लेष्मस्थानानि हृदयादीनि ॥ मार्गेणगत्वा तत्रतत्र हृदया व लम्बन संधारण रसग्रह णसमस्तेन्द्रिय तर्पणसंधिसंश्लेषणाद्युदककर्मभिरनुगृह्णाति उपकरोति ॥ ६१ ॥

अब उन २ स्थानोंमें रहनेवाले श्लेष्माके कार्य्य कहतेहैं ॥

क्लेदन नाम श्लेष्मा अन्नको गीला करताहै और अपनी शक्तिसे श्लेष्माके दूसरे स्थानोंको भी जलकेकर्मके द्वारा सहायता करताहै इसका यहतात्पर्य्यहै कि क्लेदननाम श्लेष्मा अन्नको गीलाकरताहै इस्से इकट्ठा हुआ अन्न भिन्न २ होजाताहै श्लेष्माके हृदयादि दूसरे स्थानोंमें भी जाकर उन २ स्थानोंमें हृदयका अवलम्बन करना शिर और भुजाओंकी सन्धिको धारणकरना रसका ग्रहणकरना सम्पूर्ण इन्द्रियोंको तृप्त करना सन्धियोंको जोड़ना इत्यादि जलकर्मोंसे उपकार करताहै ॥ ६१ ॥

तथाचरसयुक्तात्म वीर्येणहृदयस्थावलम्बनम् । त्रिकसंधारणंचापि विदधात्यवल म्बनः ॥ (त्रिकंशिरोबाहुद्वयसन्धिः) ॥ ६२ ॥

हृदयमें रहनेवाला अबलम्बन नाम श्लेष्मा हृदयका अवलम्बन और शिर तथा दोनों भुजाओं की सन्धिको धारण करताहै ॥ ६२ ॥

उभावपिततःसौम्यौ तिष्ठतश्चान्तिकेयतः । रसान्वितौहिजानीतो रसनारसनौसमौ ॥ (रसनारसनेंद्रियं रसनःकण्ठस्थकफः) ॥ ६३ ॥

इस युक्त जिह्वा और कंठमें स्थित रसन नाम श्लेष्मा यह दोनोंही चन्द्रगुण युक्त निकट रहनेवाले समान जानने चाहिये ॥ ६३ ॥

स्नेहनःस्नेहदानेन समस्तेन्द्रियतर्पणः । श्लेष्मणःसर्वसन्धीनां संश्लेषंविदधात्यसौ ॥ ६४ ॥

स्नेहन नाम श्लेष्मा स्नेहके देनेसे सम्पूर्ण इन्द्रियोंको तृप्त करताहै और श्लेष्मा नामश्लेष्मा सम्पूर्ण संधियोंको जोड़ताहै ॥ ६४ ॥

अथ धातुशब्दस्यनिरुक्तिमाह ॥

एतेसप्तस्वयंस्थित्वादेहन्दधतियन्नृणाम् । रसासृङ्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणिधातवः ॥ धातवइतिधाधातोस्तुप्रत्ययः ॥ ६५ ॥

अब धातु शब्दकी निरुक्ति कहतेहैं ॥

इस रुधिर मांस मेद हड्डी मज्जा वीर्य्य यह सातों आपस्थित होकर मनुष्यों के शरीरको धारण करतेहैं इसी से धातु कहलातेहैं धातुशब्दमें धा धातुसे तु प्रत्ययहै ॥ ६५ ॥

अथधातूनांकर्म्माण्याह ॥

प्रीणनंजीवनंलेपःस्नेहोधारणपूरणे । गर्भोत्पादश्चकर्माणिधातूनांकथितानिहि॥६६॥

अबधातुओंके कार्य्यकहतेहैं ॥

प्रीति उत्पन्न करना. जीवका धारण करना- लेपकरना- चिकनाकरना- धारण करना- पूर्ण करना- गर्भ उत्पन्न करना यह धातुओं के कार्य्य हैं ॥ ६६ ॥

तत्ररसशब्दस्यनिरुक्तिमाह ॥

यद्यथारसधातुर्यस्ततोऽभवदपांरसः । सद्रवंसकलंदेहंरसतीतिरसःस्मृतः ॥ ६७॥

अबरसशब्दकी निरुक्तिकहते हैं ॥

गत्यर्थक रसधातुसे रसशब्द बनाहै इस कारण से संपूर्ण शरीरमें फैलनें वाला यह रसकह लाताहै और यह जलसे उत्पन्न हुआ है ॥ ६७ ॥

अथरसस्यस्वरूपमाह ॥

सम्यक्पक्वस्यभुक्तस्यसारोनिर्गदितोरसः । सतुद्रवःसितःशीतःस्वादुःस्निग्धश्चलो भवेत् ॥ सारोयथागुड़मधूकपुष्पबुब्बूलत्वग्वदरीमूलादिभवःसारोमदिरा ॥ ६८ ॥

अबरसका स्वरूप कहते हैं ॥

अच्छे प्रकारसे परिपाक हुए भोजन का सारांश रसकह लाता है और वह वहने वाला श्वेत शीतल मधुर- चिकना और चंचल होता है- सार शब्दका यह आशय हैकि जैसे गुडम हुएके फूल- बबूलकी छाल- बेरकी जड आदिकों से उत्पन्न हुआ सारांश मदिरा कहलाता है उसी प्रकार अच्छी रीतिसे परिपक्व अन्नका सारांश रसकहाता है ॥ ६८ ॥

अथरसस्यस्थानमाह ॥

सर्व्वदेहचरस्यापिरसस्यहृदयंस्थलम् । समानमरुतापूर्व्वंयदयंहृदयेधृतः ॥ ६९॥

अबरसका स्थानकहतेहैं ॥

क्योंकि समान वायुके द्वारा यह पहले हृदयमें स्थापनकिया गया है इसकारण से संपूर्ण शरीरमें घूमनें वालेभी रसका स्थान हृदय है ॥ ६९ ॥

अथरसस्यकर्म्माण्याह ॥

आरुह्यधमनीर्गत्वाधातून्सर्वानयंरसः । पुष्णातितदनुस्वीयैर्व्याप्नोतिचतनुंगुणैः ॥ गुणैःशीतस्निग्धपोषकत्वगुणैः ॥ मन्दवह्निविदग्धस्तुकटुर्वाम्लोभवेद्रसः । सकुर्य्याद्बहुलान्रोगान्विषकृत्यंकरोत्यपि ॥ ७० ॥

अबरसके कार्य्य कहते हैं ॥

यह रस चढ़कर नाड़ियोंमें प्राप्त होकर संपूर्ण धातु ओंको पुष्ट करता है इसके उपरान्त अपने शीत- चिकनाई और पुष्ट करना इन गुणोंसे शरीरको व्याप्त करता है मन्दाग्निसे विकार युक्तहुआ रसकटुआ अथवा खट्टा होताहै वहरस बहुतसे रोग और विषके कार्य्यको भी करता है ॥ ७० ॥

अथरक्तस्यस्वरूपमाह ॥

यदारसोयकृत्यातितत्ररञ्जकपित्ततः । रागंपाकंचसंप्राप्यसभवेद्रक्तसंज्ञकः ॥ रक्तंसर्वशरीरस्थंजीवस्याधारमुत्तमम् । स्निग्धंगुरुचलंस्वादुविदग्धंपित्तवद्भवेत् ॥ (जीवस्याधारमुत्तमामिति) यतआह । जीवोवसतिसर्वस्मिन्देहेतत्रविशेषतः ॥ वीर्येरक्तेमले यस्मिन्क्षीणेयातिक्षयंक्षणादिति ॥ वीर्येरक्तेमलेचशरीरारंभकेवाग्भटोक्तपरिमाणमिते शुद्धेजीवोवसतिनतुदुष्टेप्रदुष्टेरक्तस्रावणोपदेशस्यवैयर्थ्यप्रसंगात्पित्तवद्भवेत् । अम्लं भवेदित्यर्थः ॥ ७१ ॥

अबरुधिरकास्वरूप कहतेहैं ॥

जबरस यकृत्में प्राप्त होताहै तो वहां रंजक नाम पित्तसे रंग और परिपाकको प्राप्त होकर रुधिर नामको प्राप्त होता है- रुधिर संपूर्ण शरीरमें रहने वाला जीवका उत्तम आधार- चिकना- भारी चंचल और मधुर होताहै परन्तु बिकारको प्राप्तहुआ रुधिर पित्तके समान खट्टाहोता है- जीवका उत्तम आधार रुधिरहै ऐसा कहागयाहै संपूर्ण शरीरमें जीवरहताहै परन्तु शरीरके आरंभ करने वाले शुद्ध वाग्भटमें कहेहुए प्रमाणयुक्त वीर्य्य रुधिर और मलमें विशेष तासे रहताहै क्योंकि इनके क्षीण होनेसे क्षणभरमें क्षयको प्राप्तहोता है नकि दोषको प्राप्त और बढ़ेहुए रुधिरादिकों में जीवरहता है और जो ऐसा नहो तो रुधिर मोक्षण (फस्त) का उपदेश व्यर्थ हो जाय ॥ ७१ ॥

अथरक्तस्यस्थानमाह ॥

यकृत्प्लीहाचरक्तस्यमुख्यस्थानन्तयोः स्थितम् । अन्यत्रसंस्थितवतांरक्तानांपोषकं भवेत् ॥ ७२ ॥

अबरुधिरका स्थानकहते हैं ॥

यकृत् और प्लीहा रुधिर का मुख्य स्थानहैं उनमें स्थित रुधिर अन्य स्थान में रहने वाले रुधिर को पुष्टकरता है ॥ ७२ ॥

अथमांसस्यस्वरूपमाह ॥

शोणितंस्वाग्निनापक्वंवायुनाचघनीकृतम् । तदेवमासंजानीयात्तस्यभेदानिब्रुवे ॥ शोणितसंज्ञांलभते ॥ एवमग्रेरसस्यैवमांसादिव्यपदेशः ॥ ७३ ॥

अब मांसका स्वरूप कहतेहैं ॥

अपनी अग्निसे पकाहुआ और बायुसे गाढ़ा कियागया रुधिर मांस कहलाताहै अब उसके भेदोंको भी कहतेहैं - रुधिरके स्थानमें जानेसे रसभी रुधिर कहलाताहै इसी प्रकार आगेभी रसही मांसादिक नामोंको प्राप्त होताहै ॥ ७३ ॥

अथमांसस्यपेशीमाह ॥

यथार्थमूष्मणायुक्तोवायुःस्रोतांसिदारयेत् । अनुप्रविश्यपिशितंपेशी र्विभजतेतथा ॥ यथार्थंयथाप्रयोजनम् ॥ ७४ ॥

अब मांसकी पेशी कहतेहैं ॥

ऊष्मासे युक्त बायु सोतोंको फाडता हुआ मांसमेंप्रबेश करके प्रयोजनके अनुसार पेशियों (मांस-पिण्डों)का बिभाग करताहै ॥ ७४ ॥

मांसपेशीनांसंख्यामाह ॥

मांसपेश्यःसमाख्यातानृणांपञ्चशतानिहि । तासांशतानिचत्वारिशाखासुकथितान्यथा ॥ काष्ठेषडुत्तराषष्टिःकथितामुनिपुंगवैः । ग्रीवायाऊर्ध्वगास्तास्तुचतुस्त्रिंशत्प्रकीर्त्तिताः ॥ ७५ ॥

अब पेशियोंकी संख्या कहतेहैं ॥

मनुष्योंके ५०० मांसकी पेशी होतीहैं बडे २ मुनियोंने ४०० मांसकी पेशी शाखाओंमें(हाथपैरोंमें) रहतीहैं कोष्टमें ६६ और ग्रीवाके ऊपर ३४ रहतीहैं ऐसा कहाहै ॥ ७५ ॥

ताःशाखागताः प्राह ॥

एकैकस्यान्तुपादांगुल्यांतिस्रस्तिस्रस्ताःपञ्चदश १५ पादाग्रेदश १० पादोपरिकूचसन्निविष्टादश १० गुल्फतलयोर्दश १० गुल्फजानुनोरन्तरेविंशतिः २० जानुनिपञ्च ५ ऊरौविंशतिः २० वंक्षणेदश १० एवमेकस्मिन्सक्थिनिशतंभवंति एतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्यातौ ॥ ७६ ॥

अब शाखाओंमें रहनेवाली मांस पेशियोंका वर्णन करते हैं ॥

पैरकी एक २ उंगलीमें तीन२ पेशी होतीहैं इस प्रकार पांचों उँगलियों में १५ हुई पैरके ऊपर १० और पैरके ऊपर कूर्चसे मिली हुई १० गट्टोंकी नीचे १० गट्टे और घुटनोंके बीचमें २० घुटनोंमें ५ जंघामें २०जंघा की सन्धि में १० इसप्रकार पञ्जे से लेकर जंघातक पुरे पैरमें १०० होतीहैं इसी रीतिसे दूसरी जंघा और दोनों भुजा जाननी चाहिये ॥ ७६ ॥

अथकोष्ठगताःप्राह ॥

गुदेतिस्रः ३ शेफस्यैका १ सेवन्यामेका १ वृषणयोर्द्वे २ स्फिजोःपञ्च ५ पञ्च ५ वस्तिमूर्द्धनिद्वे २ उदरेपञ्च ५ नाभ्यामेका १ पृष्ठोर्ध्वसन्निविष्टाउभयतःपञ्च ५ पञ्चदीर्घा ५ पार्श्वयोःषट् ६ वक्षसिदश १० अक्षकांसौप्रतिसमन्तात्सप्त ७ अक्षकोअंसुआइतिलोकेअंसौस्कन्धौ १ हृदिद्वे २ यकृति २ प्लीहिद्वे २ नासायांद्वे २ नेत्रयोर्द्वे २ गण्डयोश्चतस्रः ४ तुण्डकेद्वे २ ॥ ७७ ॥

अब कोष्ठमें रहने वाली पेशियोंका वर्णनकरतेहैं ॥

गुदामें तीन ३ लिंगमें १ लिंगके नीचे सीवनमें १ अंड कोशोंमें २ दोनों नितम्बोंमें पांच२ मूत्राशयके ऊपर २ उदरमें ५ नाभिमें १ पीठके ऊपर दोनों तरफ फैला हुई ५ और ५ लंबी पसलियों

में ६ हृदयमें १० हसली और कन्धोंके आस पास ७ छातीमें २ यकृत्में २ पिलहीमें २ तुंडक (के पासकी नली) में २ इस प्रकारसे ६६ हैं ॥ ७७ ॥

अथग्रीवोर्ध्वगाःप्राह ॥

ग्रीवायाञ्चतस्रः ४ हन्वोरष्टौ ८ कण्ठमणौएकाघण्टिकायामितियावत् । गलेएका १ तालुनिद्वे २ जिह्वायामेका १ ओष्ठयोर्द्वे २ नासायांद्वे२नेत्रयोर्द्वे२ गण्डयोश्चतस्रः४ कर्णयोर्द्वे २ ललाटेचतस्रः४ । शिरस्येका १ एवंमांसपेश्यःपञ्चशतानिभवन्ति ॥ ७८ ॥

अब ग्रीवाके ऊपर रहने वाली पेशियोंका वर्णन करते हैं ॥

ग्रीवामें ४ दोनों जावड़ोंमें ८ गांठीमें १ गलेमें १ तालुमें २ जिह्वामें १ दोनों ओष्ठोंमें २ नासिकामें २ नेत्रोंके ऊपर २ कपोलोंमें ४ कानोंमें २ माथेमें ४ शिरमें १ इस प्रकारसे चौंतीस हुई इस रीतिसे सब मिलकर ५०० मांसकी पेशीहोतीहैं ॥ ७८ ॥

स्त्रीणामपिभवन्त्येताःकिन्तुविंशतिरुत्तराः । गर्भाशयेगर्भमार्गेयोनौचस्तनयोरपि ॥ एताःपञ्चशतानिमांसपेश्यः ॥ अधिकाविंशतिर्यथा । गर्भाशयेतिस्रः ३ गर्भच्छिद्र संस्थिताशुक्रार्त्तवप्रवेशिन्यस्तिस्रः ३ योनावभ्यन्तरतोमुखाश्रितेप्रश्रितेद्वे २ योनावेव वहिर्निर्गते स्रोतःपार्श्वद्वयस्थितेवर्त्तुलेयोनिकर्णिकेतियावत् । द्वे२स्तनयोःपञ्च ५ पञ्च ५ यौवनेतासांवृद्धिर्भवति ॥ ७९ ॥

स्त्रियोंकेभी यही ५०० पेशीहोतीहैं परन्तु गर्भाशय गर्भ मार्ग योनि और स्तनोंमें २०अधिकहोतीहैं वह बीस अधिक ऐसे होतीहैं कि गर्भाशयमें ३ गर्भके छिद्रमें स्थित बीर्य्य और रजकी प्रवेश कराने वाली ३ योनिके भीतर मुखकी ओर फैली हुई २ योनिके बाहरकी ओर छिद्र दोनों पार्श्वों में स्थित गोल योनि कर्णिकानामसे २ और दोनों स्तनोंमें पांच २ और युवावस्थामें इनकी वृद्धि होतीहै ॥७९॥

पुंसांपेश्यःपुरस्त्वाद्याःप्रोक्तामेहनमुष्कजाः । स्त्रीणामावृत्यतिष्ठन्तिफलमन्तर्गताहि ताः ॥ अस्यायमर्थः । पुंसांमेहनमुष्कयोश्चयास्तिस्रोमांसपेश्यः ॥ पूर्वमुक्तास्ताःस्त्रीणांमेहनमुष्काभावात्फलंगर्भशमार्थंआवृत्यतिष्ठन्ति (गयदासस्त्वाह) स्त्रीणांमांसपेश्यस्त्रिभिर्हीनानिपञ्चशतानि । (तथाचभोजः) पञ्चपेशीशतान्येवस्त्रीवर्ज्जंविद्धि भूमिप । अतश्चतिस्रोहीयन्तेस्त्रीणांशेफसिमुष्कयोः ॥ ८० ॥

पुरुषोंके लिंग और अंडकोशोंमें जो मांसकी पेशी पहले कहीगई हैं वह स्त्रियों के गर्भा शयको आच्छादन करके रहती हैं इसका यह अर्थ होंकि जोतीन मांसकी पेशी पुरुषों के लिंग और अंडकोशोंमेंपहले कहीगई हैं वह स्त्रियोंके लिंग और अंडकोशोंके नहोने से गर्भको आच्छादन करके रहती हैं (गयदासकहते हैं)कि स्त्रियोंकेमांसपेशी तीनकम पांचसौहोतीहैं और वैसाही (भोजने भी कहाहै) कि पांच सौ पेशी स्त्रियोंको छोड़कर जाननी चाहिये स्त्रियोंके लिंग और अंडकोशों के नहोनेसे तीन कमहोती हैं ॥ ८० ॥

अथमांसपेशीनांकर्माण्याह ॥

शिरास्नाय्वस्थिपर्वाणि सन्धयश्चशरीरिणाम् । पेशीभिःसंवृतान्येव बलवन्तिभवन्तिहि ॥ ८१ ॥

अबमांसकीपेशियोंके कार्य्य कहतेहैं ॥

मनुष्योंकी शिरा- स्नायु- हड्डी- गांठे-और सन्धि यह पेशियोंसे लिपटी हुईही बलवान होती हैं॥८१॥

अथमेदसःस्वरूपमाह ॥

यन्मांसंस्वाग्निनापक्वंतन्मेदइतिकथ्यते।तदतीवगुरुस्निग्धंबलकार्य्यतिवृंहणम्॥ ८२॥

अबमेदकास्वरूपकहते हैं ॥

अपनी अग्निसे पकाहुआ मांस मेदकहलाताहै और वह बहुत भारी- चिकना- बलकारी और अत्यन्त शरीरकी वृद्धि करने वालाहोता है॥ ८२ ॥

अथमेदसःस्थानमाह ॥

मेदोहिसर्व्वभूतानामुदरेष्वस्थिसंस्थितम्।अतएवोदरेवृद्धिःप्रायोमेदस्विनोभवेत्॥८३॥

अबमेदकास्थानकहते हैं ॥

सब प्राणियोंके उदरमें हड्डियोंसे मिलाहुआ मेद रहताहै इसीसे मेदवालों के उदरमें बहुधा वृद्धि होती है ॥ ८३ ॥

अथास्थनःस्वरूपमाह ॥

मेदोयत्स्वाग्निनापक्वंवायुनाचातिशोषितम्। तदस्थिसंज्ञांलभतेससारःसर्वविग्रहे॥ अभ्यन्तरगतैःसारैर्य्यथातिष्ठन्तिभूरुहाः । अस्थिसारैस्तथादेहाधृयंतेदेहिनोध्रुवम्॥त स्माच्चिरविनष्टेषुत्वाङ्मांसेषुशरीरिणाम्।अस्थीनिनविनश्यन्तिसाराएतानिसर्वथा॥८४॥

अबहड्डियोंका स्वरूपकहते हैं ॥

अपनी अग्नि से पकाहुआ जो मेद वह बायुसे अत्यन्त सुखाया हुआ हड्डी कहलाताहै और वही संपूर्ण शरीर में सारांश है- जिस प्रकार वृक्षभीतर रहने वाले सारांश से स्थित रहतेहैं उसी प्रकार प्राणियोंके शरीर हड्डी रूपी सारांश से धारण किये जातेहैं इस कारण से त्वचा और मांसादिकों के नष्ट होजाने परभी हड्डी नष्ट नहीं होती हैं इसीसे यह सब प्रकारसे सारांश हैं ॥ ८४ ॥

अथास्थनांसंख्यामाह ॥

शल्यतंत्रेऽस्थिखण्डानांशतंत्रयमुदाहृतम्। तान्येवात्रनिगद्यंतेतेषांस्थानानियानिच ॥ सविंशतिशतंत्वस्थनांशाखासुकथितंबुधैः । पार्श्वयोःश्रोणिफलकेवक्षःपृष्ठोदरेषुच ॥ जानीयाद्विषगेतेषुशतंसप्तदशोत्तरम् । ग्रीवायामूर्ध्वगांविद्यादस्थनांषष्टित्रिसंयुतम् ॥८५॥

अबहड्डियों की संख्या कहतेहैं ॥

शल्यतंत्रमें तीनसौ हड्डियों के खण्डकहे गयेहैं वही यहांभी कहेजातेहैं और उनके स्थान भी कहे जातेहैं- पंडितोंने शाखा अर्थात् हाथपैरों में १२० पसलियोंमें-नितम्बोंमें-छातीमें-पीठमें और उदर में ११७ ग्रीवामें ऊपरकी तरफ ६३ हड्डियां कही हैं ॥ ८५॥

तानिशाखागतान्याह ॥

एकैकस्यांपादांगुल्यांत्रीणित्रीणितानिपंचदश १५ पादतलेपञ्चास्थिशलाकास्तदा धारभूतमेकमस्थि १ एवंषट् ६ कूर्च्चेद्वे २ गुल्फेद्वे २ पार्ष्णावेकम् १ जंघयोर्द्वे २

जानुन्येकम् १ ऊरावेकंएवंत्रिंशदेकस्मिन्नूसक्थिनिभवन्ति । एतेनेतरसक्थ्यबाहूचट्या ख्यातौ ॥ ८६ ॥

अब शाखाओंमें रहनेवाली हड्डियां कहते हैं ॥

पैर की एक२उंगली में तीन२हड्डियां इस प्रकार पन्द्रह हुई पैरके तलुए में पांच हड्डियोंकी शला का और उनके आधार भूतएक हड्डी इस प्रकार छः हुई कूर्च (गाई) में दो गट्टोंमें दो एड़ीमें एक- पिंडलीमें दो घुटने में एक- जंघामें एक- इस प्रकार पैरसे लेकर जंघातक तीस ३० हुई इसीरीति से दूसरी जंघा और दोनों बाहुभी जाननी चाहिये ॥ ८६ ॥

अथपार्श्वादिगतान्याह ॥

पार्श्वयोःषट्त्रिंशत् ३६ शिश्नेभगेचएकम् १ नितम्बयोरेकैकम् २ त्रिकेएकम् १ वक्षस्यष्टौ ८ एष्टत्रिंशत् ३० अक्षकसंज्ञेद्वे २ ॥ ८७ ॥

अबपार्श्वादिकों में स्थितहोने वाली हड्डियों का वर्णन करतेहैं ॥

दोनों पसलियों में ७२ लिङ्ग और योनि में एक २नितम्बों में एक२ रीढ़के नीचे त्रिकमें १ छाती में आठ पीठमें ३० हसलीमें २ ॥ ८७ ॥

अथग्रीवोर्ध्वगतान्याह ॥

ग्रीवायांनव ६ कण्ठनाड्यांचत्वारि ४ हन्वोरेकैकम् २ दन्ताःद्वात्रिंशत् ३२ नासा यांत्रीणि ३ तालुन्येकं १ गण्डयोरेकैकं २ कर्णयोरेकैकम् २ भ्रुवोरेकैकम् २ शिर सिषट् ६ ॥ ८८ ॥

अबग्रीवाके ऊपर रहने वाली हड्डियोंको कहतेहैं ॥

ग्रीवामें ६ कण्टनाड़ीमें ४ जाबड़ोंमें एक२ और ३२ दांत नासिका में ३ तालुमें १ गालों में एक२ कानोंमें एक २ भृकुटियोंमें एक २ शिरमें ६ ॥८८॥

एतान्यस्थीनिपञ्चविधानिभवंति ॥ तानियथा ॥

तरुणानिकपालानिरुचकानिभवन्तिहि । वलयानीतितानिस्युर्नलकानिचकानिचित् ॥ अक्षिकोशश्रुतिघ्राणग्रीवासुतरुणानिच । शिरःशंखकपोलेषुतालुवंसंप्रोथजानुनि ॥ कपालानिभवन्त्येषुदन्तेषुरुचिकानिच । पाण्योःपार्श्वयुगेपृष्ठेवक्षेजठरपादयोः ॥ जानुनितम्बांसगण्डतालुशंखशिरःसुकपालानि । दशनस्तुरुचकाःशिरःशंखकपोलेषु तालुवंशपोथकादिषु ॥ एतानिबलयानिस्युर्नलकानिभुजेऽधुना । हस्तपादांगुलितलेकूर्चेचमणिबन्धके ॥ बाहुजंघाद्वयेचापिजानीयान्नालकानितु ॥ ८९ ॥

यह हड्डियां पांचप्रकारकी होती हैं उन्हें कहतेहैं ॥

तरुण कपाल रुचक वलय और नलक ये पांचप्रकार की होती हैं नेत्र कर्ण-नासिका और ग्रीवा इनमें तरुण नामहड्डियां होतीहैं मस्तक शंख (माथेकी हड्डी) गाल तालु कन्धे नितम्ब और घुटनों में कपालनाम हड्डियां रहती हैं और दांतोंमें रुचक नाम हड्डियांहोतीहैं हाथों में पसलियोंमें पीठमें छातीमें उदरमें पैरोंमें वलय नामहड्डियां होती हैं हाथपैरकी उंगलियों और तलुओंमें कूर्चमें पहुंचेमें दोनों बाहु और जंघाओं में नलक नाम हड्डियां होतीहैं ॥ ८९ ॥

अथास्थनांप्रयोजनमाह ॥

मांसान्यन्त्राणिबद्धानिशिराभिःस्नायुभिस्तथा । अस्थीन्यालम्बनंकृत्वानशीर्य्यन्ति पतंतिच ॥ ९० ॥

अब हड्डियोंका प्रयोजन कहते हैं ॥

स्नायु और शिराओंसेबँधेहुये मांस और आंतें हड्डियोंका अवलम्बनकरकेनक्षीणहोतेहैं नगिरतेहैं॥९०॥

अथमज्जास्वरूपमाह ॥

अस्थिवत्स्वाग्निनापक्वंतस्यसारोभवेद्घनः । यःस्वेदवत्पृथग्भूतःसमज्जेत्यभिधीयते ॥ ९१ ॥

अबमज्जाकास्वरूप कहतेहैं ॥

अपनी अग्निसे पकीहुई हड्डीका जो सारांश है वह गाढ़ाहुआ स्वेद के समान अलगहुआ मज्जा कहलाताहै ॥ ९१ ॥

अथमज्जास्थानमाह ॥

स्थूलास्थिषुविशेषेणमज्जात्वभ्यन्तरेस्थितः ॥ ९२ ॥ अथशुक्रस्योत्पत्तिमाह ॥ रसाद्रक्तंततोमांसंमांसान्मेदःप्रजायते । मेदसोऽस्थिततोमज्जामज्ज्ञः शुक्रस्यसम्भवः ॥ शुक्रस्येतिवचनेनशुक्रसम्भवमुक्तम् । ननुमासेनरसःशुक्रोभवतिस्त्रीणांचार्तवंभवतीति ॥ सुश्रुतस्यैववचनेनरसादेवशुक्रस्योत्पत्तिरुच्यते । तदेतत्कथंसङ्गच्छते॥९३॥

अबमज्जा का स्थान कहतेहैं ॥

मज्जा बड़ी हड्डियोंमें विशेषकरके रहतीहै ॥ ९२ ॥ अबवीर्य्य की उत्पत्ति कहते हैं ॥ रस से रुधिर रुधिरसे मांस मांस से मेद मेद से हड्डी हड्डीसेमज्जा और मज्जासे वीर्य्य उत्पन्न होताहै अब यह सन्देह उत्पन्न होताहै किरस महीने भरमें वीर्य्य और स्त्रियोंका रजहोजाताहै इससुश्रुत के वचनसे रसहीके द्वारा वीर्य्य की उत्पत्ति कहीजातीहै तो यह कथन (मज्जासे बीर्यका उत्पन्नहोना) कैसे ठीकहोसक्ताहै ॥ ९३ ॥

इदमेवसन्देहंदूरीकर्त्तुमाहारादेर्गतिंपरिणामंचाह ॥

यात्यामाशयमाहारःपूर्वंप्राणानिलेरितः । माधुर्य्यफेनभावंचषड्रसोऽपिलभेतसः ॥ आहारइत्यत्रआह्रियतेइत्याहारः।अकर्त्तरिचकारकेसंज्ञायामितिसूत्रेणकर्म्मणिघञ्॥९४॥

इसी सन्देह के दूर करनेके लिये आहारादिकी गति और परिणामकहाजाताहै ॥

आहार पहले प्राण वायुसे प्रेरणा किया गया आमाशयमें प्राप्तहोताहै और छओंरससे युक्त भी आहार मधुरता और फेनके भावको प्राप्तहोता है (जोलेजायाजाय उसको आहार कहते हैं) आहार शब्दमें (अकर्त्तरि च संज्ञायां) इससूत्रसे कर्म्ममें घञ्प्रत्ययहोता है ॥ ९४ ॥

सचषड्विधःतथाच ॥

आहार्य्यषड्विधं भोज्यंभक्ष्यंचर्व्यन्तथैवच । लेह्यंचोष्यंतथापेयंतदुदाहरणानितु ॥ भोज्यमोदनसूपादिभक्ष्यंमोदकमण्डकम् । चर्व्यंचिपिटधान्यादिरसालादितुलेह्यते ॥ चोष्यमाम्रफलेक्ष्वादिपीयतेपानकंपयः ॥ ९५ ॥

वहआहार छः प्रकार काहै ॥

आहार छः प्रकारका इसक्रमसे है कि भोज्य- भक्ष्यचर्व्य- लेह्य- चोष्य- पेय- और इनके उदाहरण यहहैं जैसेकि भोज्य दालचावल आदि- भक्ष्य -मोदकादि- चव्य चिडवे आदि- लेह्य शिखरन आदि- चोष्य आम्रादि- पेय-पना और दूधआदि ॥ ९५ ॥

आमाशयमाह चरकः ॥

नाभिस्तनान्तरेजन्तोराहुरामाशयंबुधाइति ॥ ९६ ॥ अत्र विशेष माह । नाभेर्वितस्तिमात्रंचकण्ठेदेशात्षडंगुलम् । उरसस्तद्विजानीयाच्छ्लेष्मेतुहृदयंमतम् ॥ उरोरक्ताशयस्तस्मादधःश्लेष्माशयःस्मृतः ॥ आमाशयस्तुतदधस्तदधो दहनाशयइति॥ प्राणानिलेरितइतिहृदयाधिष्ठानेनप्राणनाम्नावायुनामुखंगतेनान्तःप्रवेशितः॥९७॥

अबचरक मुनिकाकहाहुआआमाशयका वर्णन करते हैं ॥

पंडितलोग जीवोंके नाभि और स्तनोंके बीचमें आमाशयको कहतेहैं९६ (अबइसमें विशेषता कहते हैं) नाभिसे बिलस्त भरऊ पर और कण्ठसे छः अंगुलनीचेउर कहलाता है और वाकी हृदयजान नाचाहिये और उरही रक्ताशय कहलाताहै उसके नीचे श्लेष्माशय है- श्लेष्माशयके नीचे आमाशय है और आमाशयके नीचे दहनाशयहै ॥ ९७ ॥

तथाचसुश्रुतः ॥

योवायुःप्राणनामासोमुखंगच्छतिदेहधृक् । सोऽन्नंप्रवेशत्यन्तःप्राणांश्चाप्यवलम्बते क्लेदननामाकफःक्लेदयतिक्लेदनात्संहतंभिनत्तिच (उक्तंचसुश्रुते) क्लेदनःक्लेदयत्यन्नंसंहतंचभिनत्त्यतइति ॥ ९८ ॥

और सुश्रुतजी कहते हैंकि शरीरका धारण करने वाला प्राणनाम वायुजो मुखमें जाताहै वह अन्नको भीतरले जाताहै और प्राणोंका भी अवलंबन करता है- क्लेदन नाम कफअन्नको गीलाकरता है और इकट्ठे हुऐ अन्नको भिन्न २ भी करताहै और सुश्रुतने कहाभीहै कि क्लेदननाम कफअन्नको गीलाकरताहै और इकट्ठे हुये अन्नको पृथक् २ भी करता है ॥ ९८ ॥

सआहारःषड्रसोऽप्यामाशयेमाधुर्य्यंलभते । आमाशयस्थस्य मधुरस्य कफस्य योगात् ॥ ९९ ॥

आमाशयमें स्थितमधुर कफके योगसे वह आहार छः रसवाला भी आमाशयमें मधुरताको प्राप्त होता है ॥ ९९ ॥

उक्तञ्चश्लेष्म स्वरूपम् ॥

श्लेष्माश्वेतोगुरुःस्निग्धःपिच्छिलःशीतलस्तथा ।तमोगुणाधिकःस्वादुर्विदग्धोलवणोभवेदिति ॥ फेणभावञ्चलभतेजठरानलतेजसा ॥ १०० ॥

और श्लेष्माका स्वरूप कहा गया हैकि श्लेष्माश्वेत वर्णभारी चिकना फिसलाहट वाला शीतल अधिक तमोगुण वाला और मधुर होताहै परन्तु विकार युक्त श्लेष्मा लवण के स्वादु होताहै और उदरकी अग्निको तेजसे फेनके भावको प्राप्तहोताहै ॥ १०० ॥

यतआह वाग्भटः ॥

सन्धुक्षितःसमानेनपचत्यामाशयस्थितम् । औदर्य्योऽग्निर्यथाबाह्यःस्थालीस्थंतोय । तण्डुलमिति ॥ १०१ ॥

जैसाकि वाग्भटने कहाहै कि जैसे लौकिक अग्नि बटुएमें स्थितजल संयुक्त चावलोंको पकातीहै उसी प्रकार समान वायुसे तेजकिया हुआ उदरकी अग्नि आमाशयमें स्थित अन्नको पकातीहै ॥ १०१॥

अथसएवाहारःप्राणवायुनाप्रेरितस्ततः किञ्चित् स्खलितःपाचकाख्यपित्तोष्मणा यत्पक्वोऽम्लरसोभवति ॥ १०२ ॥

इसके उपरान्त (आमाशयके जानेके पीछे) वही आहार प्राण वायुसे प्रेरणा किया हुआ और उस्से कुछ गिराहुआ पाचकनाम पित्तकी ऊष्मासे पकाहुआ खट्टा होजाताहै ॥ १०२ ॥

उक्तंच अथपाचकपित्तेनविदग्धंचाम्लतांव्रजेत् । पाचकपित्तेनपाचकपित्तस्योष्मणा १०३ ततः सएवाहारोना भिमण्डलाधिष्ठानेनसमाननाम्नाबायुनाप्रेरितोग्रहणीमभिनीयते ॥ १०४ ॥

और जैसा कहागयाहै कि पाचक नाम पित्तकी अग्नि से पकाहुआ आहार खट्टाहोजाताहै १०३ इसके उपरान्त नाभिमंडल में रहनेवाला समान नाम बायु उसी आहारको प्रेरणा करके ग्रहणी नामनाडीमें लेजाताहै ॥ १०४ ॥

ग्रहणीलक्षणमाह ॥

षष्ठीपित्तधरानामयाकलापरिकीर्त्तिता । आमपक्वाशथांतस्यांग्रहणीसाऽभिधीयते ॥ पित्तधरापाचकाख्यैपित्तंयदग्न्याधिष्ठानंतद्धारयतितत्रग्रहण्यामामाशयपक्वाशय मध्य वर्त्तिपाचकाख्यपित्ताधिष्ठानेनाग्निनाहारः पच्यतेसकटूष्मभवति । तथा च ग्रहण्यां पच्यतेकोष्ठे वह्निनाजायते कटुरिति अयमर्थः आहारोग्रहण्यां कोष्ठवह्निना ग्रहणी स्थितपाचकपित्तेन वह्निना पच्यतेपच्यमानः सग्रहणी स्थितस्यकटुरसस्य योगात् कटुभर्वति ॥ १०५ ॥

अबग्रहणीका लक्षण कहतेहैं ॥

पित्तधरा नाम जो छठी कलाकैही गई है वही आमाशय और पक्वाशयके बीचमें ग्रहणी कहलाती है पित्तधराकला- अग्निके स्थान रूप पाचकनाम पित्तको धारण करतीहै आहार जोहेसो आमाशय और पक्वाशयके बीचमें रहने वाला जो पाचक नाम पित्त उसमें रहनेवाली अग्नि से पकाया गया कडुआहोजाताहै- जैसा कहागयाहै कि कोष्ठकी अग्नि से ग्रहणी में पकाया हुआ अन्नकडुआ होताहै इसका यहअर्थ है कि ग्रहणीमें स्थितपाचक नाम पित्तकी अग्निसे पकाहुआ आहार ग्रहणी में स्थित रहने वाले कटुरसयुक्त पित्तके योगसे कडुआ होजाताहै ॥ १०५ ॥

एतदाहारपाकेविशेषमाह ॥

शरीरंपाञ्चभौतिकम् । तत्रपञ्चसुभूतेषुपञ्चाग्नयस्तिष्ठन्ति ॥ उक्तंचरकेनभौमाप्याग्नेयवायव्याःपञ्चोष्माणःसनाभसाः । पञ्चाहारगुणान्स्वान्स्वान्पार्थिवादीन्पचन्त्यनु ॥

अत्रोष्मपदेनाग्निरुच्यते ॥ आहारोऽपिपाञ्चभौतिकः तत्रपाचकपित्तस्थेनाग्निनोक्ते जितेनशरीरवर्त्तिनाभूभागाग्निनाहारवर्त्तिभूभागःपच्यते । पक्वोभूभागःस्वकायानूगुणा नाभिबर्द्धयति एवंजलादिभागाअपिपच्यन्ते ॥ १०६ ॥

इस आहारके पाक विषयमें विशेषता कहतेहैं ॥

शरीरपांच भौतिकहै उनपांचमहाभूतोंमें पांचअग्निहैं और चरकनेभीकहाहै कि पृथ्वीसम्बन्धीजल संबन्धी अग्निसंबंधी वायुसंबंधी और आकाशसंबंधी यह पांचअग्निहैं यहअग्नियां आहारकेपृथ्वीसंबंधी आदिक अपने २ पांचों गुणोंको परिपाक करती हैं आहारभी पांच भौतिक होतेहैं उनमें से पाचक पित्तमें स्थित अग्निके द्वारा तेजकी गई शरीरमें रहनेवाली पृथ्वी भागकी अग्निसे भोजनमें रहने वाला पृथ्वी काभाग परिपाकको प्राप्तहोताहै और पकाहुआ पृथ्वी का भाग अपने गुणोंको बढ़ाता है इसी प्रकार जलादिकों के भी भाग परिपाक को प्राप्त होते हैं ॥ १०६ ॥

तथा च सुश्रुते ॥

पञ्चभूतात्मकेदेहेआहारःपाञ्चभौतिकः । विपक्वःपञ्चधासम्यग्गुणान्स्वानभिवर्द्धये दिति ॥ गुणशब्देनात्रगुणिनःपृथिव्यादयउच्यन्ते ।तेनगुणान्शरीरवर्त्तिनःपार्थिवादीन् भागानभिवर्द्धयेदित्यर्थः ॥ एवमहोरात्रेणपक्वआहारोमिष्टःपटुश्चमधुरोभवति । अम्ल स्त्वम्लोभवत्ति कटुतिक्तः कषायश्चकटुर्भवति उक्तञ्च, मिष्टः पटुश्चमधुरमम्लोऽम्लं पच्यतेरसः।कटुतिक्तकषायाणांविपाकोजायतेकटुरिति ॥ १०७ ॥

वैसाही सुश्रुतमें कहाहै कि पंचभूतात्मक शरीरमें पंचभूतात्मक आहार परिपाकको प्राप्तहुआ पांच प्रकारसे शरीरमें स्थित अपने २ पृथिव्यादि भागों को बढ़ाताहै इस प्रकार रात्रि दिनमें परिपाक हुआ मधुर लवण युक्त आहार मीठा होजाताहै खट्टा आहार खट्टाही होजाताहै और कडुआ तीता तथा कषैला यह सब कटु होजातेहैं और कहाहै कि मधुर और लवण रस बिपाकमें मधुर होते हैं । खट्टारस बिपाकमेंभी खट्टा होताहै कडुआ तिक्त तथा कषैला यह सब विपाकमें कटु होजातेहैं ॥ १०७ ॥

एवंविपक्वस्याहारस्यसारोनिगदितोरसः।शेषोग्रहणीस्थोमलद्रवःमलद्रवस्यजलभागः शिराभिर्वस्तिंनीतोमूत्रंभवति । उक्तञ्च । आहारस्यरसःसारःसारहीनोमलद्रवः।शिराभि स्तज्जलंनीतंवस्तिंमूत्रत्वमाप्नुयात् ॥ शेषंकिट्टञ्चयत्तस्यतत्पुरीषंनिगद्यते । समानवायु नानीतन्तत्तिष्ठतिमलाशये ॥ तत्रमलाशयेनापानवायुनाप्रेरितंमूत्रंमेढ्रभगमार्गेण।पुरीषं गुदमार्गेणशरीराद्बाह्यिर्याति।उक्तञ्चमूत्रञ्चोपस्थमार्गेणपुरीषंगुदमार्गतः । अपानवा युनाक्षिप्तंबहिर्यातिशरीरतः ॥ उपस्थःशिश्नो भगञ्च ॥ १०८ ॥

इस प्रकार परिपाकको प्राप्त हुआ आहारका सारांश रस कहलाताहै और शेष ग्रहणी में स्थित द्रवरूपपिघला हुआ मल होताहै ॥ द्रवरूप मलका जल भाग नाड़ियोंसे मूत्राशयमें पहुंचा हुआ मूत्र होताहै और कहाहैकि आहारका सारांश रसहै और सारांशसे रहित द्रवरूप मल होताहै और उसका जल नाड़ियोंके द्वारा मूत्राशयमें गयाहुआ मूत्र कहा जाताहै औरउस मलका फोक बिष्ठा कहलाताहै वह समान बायुके द्वारा जाकर मलाशयमें रहताहै उस मलाशयमें अपान वायुके द्वारा प्रेरणाकिया हुआ मूत्र लिंग और योनिके द्वारा और पुरीष गुदाके द्वारा शरीरसे बाहर जाताहै और कहाहै कि

अपान बायुके द्वारा फेंका हुआ मूत्र लिंग और योनिके मार्गसे और पुरीष गुदाके मार्ग से शरीरके बाहर जाताहै ॥ १०८ ॥

रसस्तु समानवायुना प्रेरितो धमनीमार्गेण शरीरारम्भकस्य रसस्य स्थानं हृदयं गत्वा तेनसह मिश्रितो भवति । उक्तञ्च । रसस्तु हृदयं याति समानमरुतेरितः ॥ स तुव्यानेन विक्षिप्तः सर्वान् धातून् विवर्द्धयेत् ॥ केदारेषुयथाकुल्याः पुष्णन्तिविविधौषधीः । तथाकलेवरधातून् सर्वान्वर्द्धयतेरसः ॥ १०९ ॥

और रस समान बायुके द्वारा प्रेरणा किया गया नाडियों के मार्ग से शरीरके आरंभ करनेवाले रसके स्थानरूप हृदयमें जाकर उसके साथ मिलताहै और कहाहै कि समान बायुके द्वारा प्रेरणा किया हुआ रस हृदय में जाताहै और वह रस व्यानवायुके द्वारा फेंका हुआ संपूर्ण धातुओं को बढ़ाताहै जैसे खेतों में छोटी२ नदियां अनेक प्रकारकी औषधियोंको पुष्ट करती हैं उसीप्रकार शरीर में रस सम्पूर्ण धातुओं को बढ़ाताहै ॥ १०९ ॥

रसस्तु तत्रतत्र त्रिधा विभज्यते उक्तञ्चचरके ॥

स्थूलः सूक्ष्मस्तन्मलश्च तत्र तत्र त्रिधारसः ॥ स्वंस्थूलोंशःपरंसूक्ष्मस्तन्मलोयाति तन्मलम् ॥ अयमर्थः।स्थूलोंऽशः स्वंयाति यथास्थितस्तिष्ठति सूक्ष्मस्त्वं शःपरं द्वितीयं धातुं यातितन्मलः रसादिमलःतन्मलं शरीरारम्भकं तत्तद्धातुमलं यातीत्यर्थः॥ ११०॥

रस इन२ स्थानों में तीनप्रकारसे विभागको प्राप्त होताहै और चरकमें कहाहै ॥

स्थूल- सूक्ष्म और उसकामल यह तीन प्रकारसे रसकाविभाग होताहै-स्थूल अंश अपनेही स्वरूपमें रहताहै सूक्ष्म अंश दूसरे धातुमें प्राप्त होताहै और उन रसादिकों के मल अपने२ मलमें प्राप्त होतेहैं इसका यह अर्थ है कि स्थूल अंश तो यथा स्थित रहताहै और सूक्ष्म अंश दूसरे रुधिरादि धातुओं में प्राप्त होताहै और उन रसादिकों का मलशरीरके आरंभकरने वाले उन२ धातुओं के मल में प्राप्त होताहै॥ ११० ॥

यथालौकिकाग्नि नेक्षुरसः पच्यते तथा शरीरारम्भकस्य रसस्याग्निनाहाररसः पच्यते पच्यमानः स पञ्चाहोरात्रात् सार्द्धदण्ड मेकञ्च यावत् प्राक्तन रसधातावेव तिष्ठति ॥ १११ ॥

जिस प्रकार लौकिक अग्निसे ऊखका रस पकताहै उसी प्रकार शरीरके आरंभ करने वाले रसकी अग्निसे आहारका रस परिपाकको प्राप्त होताहै और वह पका हुआरस पांच दिन पांच रात्रि और डेढ़ घडी तक प्राक्तन रस धातु (शरीरके आरंभ करने वाले रस) में रहताहै ॥ १११ ॥

(उक्तंच सुश्रुते) सखलुरसः त्रीणित्रीणि कला सहस्राणि पञ्चदश कला एकैकस्मिन्धातावुपतिष्ठते । अत्रकलानां विंशतिः मुहूर्तः सचदण्डद्वयात्मकः । तथाच भोजः । धातोरसादौमज्जांते प्रत्येकंक्रमतोरसः । अहोरात्रात्स्वयंपञ्च सार्द्धदण्डंचतिष्ठति ॥ प्रत्येकमेकै कस्मिन्नित्यर्थः । ततो यथापच्यमानादि क्षुरसान्मलो निर्गच्छति । तथा पच्यमानादाहार रसान्मलो निर्गच्छति सः कफः ॥ ११२ ॥

और सश्रुतमें कहाहै कि वह रसतीन हजार कला और पन्द्रहकला पर्य्यन्त एक एक धातु में रहताहै यहां बीस कलाका एक मुहूर्त्त और मूहूर्त्त दोघड़ी का होताहै और ऐसाही भोजभी कहते हैं रस पांचदिन पांच रात्रि और डेढ़घड़ी पर्य्यन्त रससे लेकर मज्जा पर्य्यन्त एक एक धातु में रहता है तब जैसे पकेहुये ऊखके रससे मल निकलताहै उसीप्रकार पके हुये आहारके रस से मल निकलताहै और वह कफकहलाताहै ॥ ११२ ॥

उक्तंच सुश्रुते ॥

कफपित्तमलास्वेषु प्रस्वेदोनखरोमच । नेत्रविट्चक्षुषःस्नेहो धातूनांक्रमशोमलाः ॥ स्वेषुमलःकर्णादि श्रोतामलःसचकफःप्राणानिल प्रेरितो धमनीमार्गेण शरीरारम्भकं क्लेदनाख्यं कफं गत्वा पुष्णाति ॥ ११३ ॥

और सुश्रुतमें कहाहै कि कफ- पित्त और कर्णादि स्रोतोंको मलस्वेद-नख-रोम-नेत्रकामल और स्नेह यहक्रमसे धातु ओंके मलहैं और वहकफ और प्राण वायुके द्वाराप्रेरण कियागया नाड़ियोंके मार्गसे शरीरके आरंभ करनेवाले क्लेदन नाम कफके स्थानमें प्राप्तहोकर उसको पुष्टकरताहै॥११३॥

ततःसारभूतस्याहार रसस्य द्वौभागौ भवतःस्थूलःसूक्ष्मश्च तत्रसूक्ष्मोभागः शरीरारम्भकं रसं पोषयति सकलशरीराधिष्ठानेन व्यानवायुना प्रेरितो धमनीभिः सञ्चरन् पोषणस्नेहन जठरानलोष्म कृतसंताप निवारणादिभिर्गुणैः सकलशरीरं पुष्णाति ततः स्थूलोभागः प्राणवायुना प्रेरितो धमनीमार्गेण शरीरारम्भकस्य रक्तस्य स्थानं गत्वा यकृत् प्लीहरूपं गत्वातेन सह मिलितो भवति ॥ ११४ ॥

इसके उपरान्त आहारके सारांश रूप रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होते हैं उनमें से सूक्ष्म भाग शरीरके आरंभ करनें वाले रसको पुष्टकरताहै इसके उपरान्त संपूर्ण शरीरमें रहने वाले व्यान बायुसे प्रेरणा किया गया नाड़ियों में घूमता हुआ पुष्ट करना चिकना करना जठराग्निकी ऊष्मा से उत्पन्न हुए सन्तापका निवारण करना आदिक गुणोंसे संपूर्ण शरीरको पुष्ट करताहै इस के उपरान्त स्थूल भाग प्राणबायुके द्वारा प्रेरणा किया गया नाड़ियोंके मार्गसे शरीरके आरंभ करने वाले यकृत् और प्लीहा रूप रुधिरके स्थानमें जाकर उससे मिलताहै ॥ ११४ ॥

ततःप्राक्तनस्य रक्तस्याग्निना पुनः पच्यमानः पञ्चाहोरात्रात्सार्द्धदण्डञ्च यावत् प्राक्तनरक्तधातावेव तिष्ठति । ततो यथाग्निना पुनः पुनः पच्यमानादिक्षु विकारं वारं वारं मलं निर्गच्छति । तथा पुनः पुनः पच्यमानादाहार रसात् प्रतिवारं मलं निर्गच्छति । तत्र रक्ताग्निना पच्यमानान्मलं पित्तं निर्गच्छति । तच्च पित्तं समान वायुना प्रेरितं धमनीमार्गेण शरीरारम्भकं पाचकाख्यं गत्वा पुष्णाति । ततःसार भूतस्याहार रसस्य द्वौभागौ भवतः स्थूलः सूक्ष्मश्च तत्र सूक्ष्मोभागो रञ्जकाग्निना पित्तेन स रक्तीकृतः । शरीरारम्भकं रक्तं व्यान वायुना प्रेरितो धमनीभिः सञ्चरन् सकल शरीरगतानि रुधिराणि पुष्णाति । ततः स्थूलो भागः व्यान वायुना प्रेरितो धमनीभिः शिराभिश्च शरीरारम्भकानि मांसानि याति ॥ ११५ ॥

इसके उपरान्त प्राक्तन (पूर्वके) रुधिर की अग्निसे फिर परिपाकको प्राप्तहुआ पांच दिनरात्रि और डेढ घड़ी पर्य्यन्त प्राचीन रुधिरही में रहताहै इसके पीछे जैसे कि लौकिक अग्नि के द्वारा बारंबार पकाये हुए ऊखके रससे बारंबार मल निकलताहै उसी प्रकार बारंबार परिपाकको प्राप्तहुए आहार के रससे बारंबार मल निकलताहै वहां रुधिरकी अग्निसे पकेहुए रससे पित्तरूप मल निकलताहै और वह पित्त समान वायुसे प्रेरणा किया हुआ नाडियोंके मार्गसे शरीरके आरंभ करने वाले पाचक नाम पित्त को प्राप्तहोकर उसे पुष्ट करताहै इसके उपरान्त सारभूत आहारके रसके दोभाग होतेहैं एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म उनमेंसे सूक्ष्मभाग रंजकनाम पित्तसे रंगाहुआ शरीरके आरंभकरनेवाले रुधिर को पुष्टकरता हुआ व्यान वायुके द्वारा प्रेरणा कियागया नाड़ियों में घूमता हुआ संपूर्ण शरीरमें रहने वाले रुधिरको पुष्टकरताहै इसके उपरान्त स्थूलभाग व्यान वायुके द्वाराप्रेरणा कियाहुआ धमनी और शिराओंके द्वारा शरीरके आरंभ करने वाले मांसमें प्रवेश करताहै ॥ ११५ ॥

. ततो मांसाग्निना पुनः पच्यमानः पञ्चाहोरात्रात् सार्द्धं दण्डश्च यावन्मां सेष्वेव तिष्ठति। ततः पच्यमानात्तस्मान्मलं निर्गच्छति । तद्व्यान वायुना क्षिप्रं कर्णावागत्य कर्ण विड्भवति ॥ ११६ ॥

इसके अनन्तर मांसकी अग्निसे फिर परिपाकको प्राप्तहुआ पांच रात्रिदिन और डेढ़घड़ी पर्य्यन्त मांसहीमें रहताहै फिर पकेहुए उस मांससे मल निकलताहै और वह मल व्यान वायुके द्वारा शीघ्र कानोंमें आकर कानोंका मैलहोजाताहै ॥ ११६ ॥

ततःसार भूतस्य रसस्य द्वौभागौ भवतः। स्थूलः सूक्ष्मश्च ततःसूक्ष्मो भागो मांसानि पुष्णाति। ततः स्थूलो भागो व्यानवायुना प्रेरितो धमनीभिः शरीरारम्भकस्य मेदसः स्थान मुदरं याति ॥ ११७ ॥

फिर सारभूत रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभागहोतेहैं उनमेंसे स्थूलभाग मांसको पुष्टकरताहै फिर सूक्ष्म भाग व्यान वायुके द्वारा प्रेरणा किया गया नाडियोंके मार्गसे शरीरके आरंभकरनेवाले मेदके स्थान रूप उदरमें प्राप्त होताहै ॥ ११७ ॥

ततो मेदसोऽग्निना पुनः पच्यमानः पञ्चाहोरात्रात् सार्द्धदण्डंच यावन्मेदस्येव तिष्ठति। ततः पच्यमानात्तस्मान्मलो निर्गच्छति प्रस्वेदरूपः । स च शीतः स्रोतस्येव तिष्ठति शरीरोष्मणा तप्तश्चेत्तदा व्यान वायुना प्रेरितः शिरामार्गैः लोम कूपेभ्यो बहिर्याति ॥ जिह्वादंतकक्षामेढ्रादिमलश्च मेदो मलमित्येके ॥ ११८ ॥

इसके पीछे मेदकी अग्निसे फिरपरिपाक को प्राप्तहुआ पांच दिनरात्रि और डेढ़ घड़ी पर्य्यन्त मेदहीमें रहताहै फिर परिपाकको प्राप्तहोनेवाले उससे प्रस्वेदरूप मल निकलताहै और वह शीतल प्रस्वेद स्रोंतो मेंही रहताहै और जो शरीरकी ऊष्मासे तप्तहो तो व्यानवायुके द्वारा प्रेरणा कियागया शिरारूपी मार्गमें होताहुआ रोमकूपोंसे बाहर जाताहै और कोई आचार्य्य यह कहतेहैं कि जिह्वा दन्त बगल लिंग आदिकों का मल मेदकामलहै ॥ ११८ ॥

ततःसारभूतरसस्य द्वौभागौ भवतः स्थूलः सूक्ष्मश्च तत्र सूक्ष्मोभागः मेदः पुष्णा

ति उदरे तिष्ठन् व्यानवायुना प्रेरितो धमनीभिः शिराभिश्च शरीरारम्भकाण्यस्थीनि याति ॥ ११९ ॥

इसके उपरान्त सारभूत रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होतेहैं उनमेंसे स्थूलभागमेदको पुष्टकरताहै और उदर में रहताहुआ व्यान वायुके द्वारा प्रेरणा कियागया स्रोतरूपी मार्गोंसे जाकर सूक्ष्म हड्डियों में रहने वाले मेदको पुष्टकरताहै और सूक्ष्म भाग धमनी और शिराओं के द्वारा शरीरके आरंभकरने वाली हड्डियोंमें प्राप्तहोताहै ॥ ११९ ॥

ततोऽस्थ्यग्निना पुनः पच्यमानं पञ्चाहोरात्रात्सार्द्धदण्डञ्च यावदस्थिष्वेव तिष्ठति। ततः पच्यमानात् तस्मात् मलो निर्गच्छति। स च व्यानवायुना प्रेरितः शिराभिः मार्गेणागत्यांगुलिषु नखः स्तनौ लोमानि भवन्ति ॥ १२० ॥

फिर हड्डियोंकी अग्निसे परिपाकको प्राप्त हुआ पांच दिन रात्रि और डेढ़ घड़ीतक हड्डियों में रहताहै इसके उपरान्त उस पकेहुएसे मल निकलताहै और वह मल व्यान वायुके द्वारा प्रेरणाकिया गया नसोंके मार्गसे आकर अंगुलियोंमें नख और शरीरमें रोमहोताहै ॥ १२० ॥

ततःसार भूतस्य रसस्य द्वौभागौ भवतः स्थूलः सूक्ष्मश्च तत्र सूक्ष्मभागो अस्थिनि पुष्णाति ततःस्थूलभागो व्यानवायुना प्रेरितः स्रोतो मार्गै र्मज्जास्थानानि स्थूलास्थ्य भ्यन्तराणि याति ॥ १२१ ॥

तदनन्तर सारभूत रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होते हैं उनमें से स्थूलभाग हड्डियोंको पुष्ट करताहै और सूक्ष्म भाग व्यानवायुके द्वाराप्रेरणा कियागया स्रोतोंके मार्गसे मज्जाके स्थानरूप बड़ी हड्डियोंके भीतर जाताहै ॥ १२१ ॥

ततो मज्जाग्निना पुनः पच्यमानः पञ्चाहोरात्रात् सार्द्धदण्डश्च यावन्मज्जन्येव तिष्ठति ततः पच्यमानात्तस्मान्मलं निर्गच्छति । तच्च व्यानवायुना प्रेरितं शिरामार्गै र्नयनयोरागत्य नेत्रविट् चक्षुःस्नेहश्च भवति ॥ १२२ ॥

इसके अनन्तर मज्जाकी अग्निसे फिर परिपाक हुआ पांच दिन रात्रि और डेढ़ घड़ी पर्य्यन्त मज्जाहीमें रहताहै फिर उस परिपाकको प्राप्त होनेवाले से मल निकलता है और वह मल व्यान वायुकेद्वारा प्रेरणा कियागया नाड़ियोंके मार्गसे नेत्रोंमें आकर नेत्रोंकामल और स्नेह होताहै॥१२२॥

ततःसार भूतस्य रसस्य द्वौभागौ भवतः। स्थूलः सूक्ष्मश्च तत्र सूक्ष्मभागो मज्जानं पुष्णाति ततः स्थूलो भागो व्यानवायुना प्रेरितः धमनीभिः शिराभिश्च शुक्रस्य स्थानं सकलं शरीरंगत्वा शरीरारम्भकेण शुक्रेणसह मिश्रितो भवति ॥ १२३ ॥

इसके उपरान्त सार भूतरसके स्थूल और सूक्ष्म दो भाग होतेहैं उनमें से स्थूलभाग मज्जा को पुष्ट करताहै और सूक्ष्म भाग व्यानवायुके द्वारा प्रेरणा कियागया धमनी और शिराओंके मार्ग से वीर्य्यके स्थानरूप सम्पूर्ण शरीरमें जाकर शरीरके आरम्भ करने वाले वीर्य्यसे मिलजाताहै १२३ ॥

ततः शुक्राग्निना पुनः पच्यते पच्यमाने तस्मिन्मलं नास्ति। सहि सहस्रधाध्मात सुवर्णवत् ॥ १२४ ॥

इसके पीछे वीर्य्यकी अग्निसे फिर परिपाकको प्राप्तहोताहै और हजारबार तपायेहुए सुवर्ण के समान उस पकेहुए वीर्य्यमें मल नहींहोता॥ १२४॥

उक्तञ्च। स्वाग्निभिःपच्यमानेषु मलःषट्सुरसादिषु। षट्सुधातुषुजायन्ते मलानिमुनयोजगुः॥ यथासहस्रधाध्माते नमलंकिलकाञ्चने। तथारसेमुहुःपक्के नमलंशुक्रतांगते॥ १२५॥

अपनी २ अग्निसे परिपाकको प्राप्त हुए रसको आदि लेकर मज्जा पर्य्यन्त छः धातुओंमें मल होताहै जैसे कि हजारबार परिपाकको प्राप्त हुए सुवर्णमें मल नहीं होताहै उसीप्रकार बारंबार पके हुए वीर्य्यरूपको प्राप्तहुए रसमें मल नहींहोता॥ १२५॥

ततःसारभूतस्य रसस्य द्वौभागौ भवतः स्थूलः सूक्ष्मश्च। तत्र सूक्ष्मः स्नेहभागः ओजस्तस्य लक्षणमाह। ओजःसर्वशरीरस्थं स्निग्धंशीतंस्थिरंसितम्। सोमात्मकंशरीरस्य बलपुष्टिकरंमतम्॥ (बलंचेष्टा पाटवम्) तथाच। चेष्टासुपाटवंयत्तु बलंतदभिधीयते। यत्तुसुश्रुते रसादीनां शुक्रान्तानां धातूनां यत्परं तेजस्तत् खलुत्तदोजस्तदेवबलमिति तेजस्तेजद्रवः। अत्रायमभिप्रायः, यस्माद्रसादोजो भवति स रसः सर्वधातुस्थान गतत्वात्तत्तद्धातुवन्मन्यत इति सर्वधातूनां स्नेहमोजः। क्षीरे घृतमिव तदेव बलमिति॥ तत्कार्यकारणयोरभेदोपचारात्॥अभेद कथनञ्च चिकित्सैक्यार्थम्॥१२६॥

इसके अनन्तर सार भूतरसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होते हैं उनमेंसे स्थूलभाग शरीरके आरम्भ करनेवाले वीर्य्य में प्राप्तहोताहै और सूक्ष्म स्नेह भाग ओज कहलाताहै उसका लक्षणकहतेहैं सम्पूर्ण शरीरमें रहनेवाला ओजचिकना शीतल स्थिरश्वेत सोमात्मक और शरीरकोबल तथा पुष्टि देनेवाला कहागयाहै यहांबल शब्दका अर्थ चेष्टाओंमें समर्थहोना लियागयाहै और वैसाही कहाहै कि चेष्टाओं में समर्थ होनेको बल कहतेहैं और जो सुश्रुतमें कहाहै कि रसको आदि लेकर शुक्रपर्य्यन्त जो धातुओंका द्रवरूप तेज है उसको ओज कहतेहैं और वही बल कहलाताहै इसका यह अभिप्राय है कि जिस रससे ओज उत्पन्न होताहै वह रस सम्पूर्ण धातुओंमें जानेसे उन २ धातुओंके समान माना जाताहै इस कारणसे सम्पूर्ण धातुओंका स्नेह भाग ओजहै कार्य्य और कारणके अभेद मानलेने से दूधमें घृतके समान वह ओजही बल है और अभेदका कथन चिकित्साकी एकताके लियेहै॥ १२६॥

अन्यच्च। गुरुशीतंमृदुस्निग्धं सांद्रंस्वादुस्थिरंतथा। प्रसन्नंपिच्छिलंसूक्ष्म मोजोदशगुणंस्मृतम्॥ १२७॥

और भी कहागयाहै कि ओजमें दशगुणहैं भारी शीतल कोमल चिकना गाढा मधुर स्थिर निर्मल फिसलाहटवाला और सूक्ष्म॥ १२७॥

चरकेतु। अष्टबिन्दुप्रमाणं तदीषद्रक्तं सपीतकम्। अग्निसोमात्मकत्वेन द्विरूपंवर्णितन्तुतत्॥ १२८॥

और चरकमें तो ऐसा कहागया है कि ओज आठ बिन्दुओंके प्रमाण कुछ पीतवर्ण और कुछ रक्त वर्ण अग्नि सोमात्मकहोने से दोरूप वाला कहागयाहै॥ १२८॥

वाग्भटश्च ।ओजश्चतेजोधातूनां शुक्रान्तानांपरंस्मृतम् । हृदयस्थमपिव्यापि देह स्थितिनिबन्धनम् ॥ यस्यप्रवृद्धौदेहस्य तुष्टिपुष्टिबलोदयाः । यन्नाशेनियतोनाशो यस्मिं स्तिष्ठतिजीवनम् ॥ निष्पद्यन्तेयतोभावौ विविधादेहसंश्रयाः । उत्साहप्रतिभाधैर्य्य लावण्यसुकुमारताः ॥ १२९ ॥

और वाग्भट कहतेहैं कि वीर्य्य पर्य्यन्त सम्पूर्ण धातुओंका उत्कृष्टतेज ओज कहलाताहै वह हृदयमें स्थितभी व्यापकहोकर शरीर की स्थितिका कारणहै और जिसकी वृद्धिहोने से शरीर की तुष्टता पुष्टता और बलका उदयहोता है-जिसके नाशहोनेसे अवश्य मृत्युहोती है स्थित रहने से मनुष्यजीताहै और जिसके द्वारा देहमें स्थित अनेक प्रकारके पदार्थ उत्साह-प्रतिभा- धैर्य्य- लावण्य और सुकुमारता यह सब उत्पन्न होतेहैं- ॥ १२९ ॥

ततःस्थूलो भागोरसो मासेन पुंसां शुक्रंस्त्रीणान्त्वार्त्तवं शुक्रञ्च भवति । उक्तं च सुश्रुते । एवं मासेन रसः शुक्रो भवति । स्त्रीणांचेति चकारात् स्त्रीणामपि शुक्रं भवति । अतएवोक्तं सुश्रुते । योषितोऽपिस्रवत्येव शुक्रंपुंसःसमागमे । तत्रगर्भस्यकिंचित्तु करोतीतिनचिन्त्यते ॥ गर्भस्यशुद्धस्य विकृतस्यतु गर्भस्यकारणं तदपि भवति । (यतउक्तम्) यदानार्य्यावुपेयातां वृषस्यन्त्यौकथञ्चन । मुञ्चन्त्यौशुक्रमन्योऽन्य मनस्थिस्त त्रजायत इति ॥ एतेन स्त्रीणां सप्तमो धातुरार्त्तवं शुक्र मष्टममिति बोधितम् । आशयाधिक्यवत् ॥ १३० ॥

इसके उपरान्त रसका स्थूलभाग महीने भरमें पुरुषोंका वीर्य्य और स्त्रियोंका रज तथा वीर्य्य होताहै और सुश्रुतने भी कहाहै कि इस प्रकार मासभर में रसवीर्य्य होजाताहै स्त्रियों के भी वीर्य्य होताहै इसीसे सुश्रुत में कहाहै कि पुरुषके संगमें स्त्रियां भी वीर्य्य को छोडतीहैं परन्तु वहवीर्य्य गर्भका कुछभी उपकार नहीं करताहै अर्थात् इस बीर्य्यसे शुद्ध गर्भ नहीं होता परन्तु विकार युक्त गर्भका यह वीर्य्य भी कारणहोताहै क्योंकि कहागयाहै कि जब काम से अत्यन्तपीड़ित दो स्त्रियां परस्पर मैथुनकरतीहैं तो किसी प्रकार उनदोनोंका वीर्य्यपातहोताहै उस्से हड्डी रहित गर्भ उत्पन्न होताहै इस्से यह प्रकट किया गयाहै कि स्त्रियोंकी सातवीं धातु रज और आठवींवीर्य्यहै जैसे कि उनके एक आशयभी अधिकहै- ॥ १३० ॥

स्त्रीणांगर्भोपयोगि स्यादार्त्तवंसर्वसम्मतम् । तासामपिबलंवर्ण शुक्रंपुष्टिकरोतिहि॥ एवंरस एव केदार कुल्यान्यायेन सर्वान् धातून् पूरयन् मासेन नवदशाहोत्तरेण शुक्रमार्त्तवं भवतीति सिद्धान्तः । एवंसति रसाद्रक्तमिति संगतमेव ॥ १३१ ॥

स्त्रियोंका रज गर्भका उपयोगी होताहै यह सर्व सम्मतहै और उनकावीर्य्य तो बल- वर्ण तथा पुष्टताको करताहै-इस प्रकार रसही केदारकुल्या न्याय(नालियां खेतों में जाकर औषधियों को पुष्ट करती हैं इसकानाम केदारकुल्यान्यायहै)से सम्पूर्ण धातुओं को पूर्ण करताहुआ एक महीने और नौदिन में वीर्य्य और रज बनताहै यह सिद्धान्तहै ऐसा होने से रस से रुधिर उत्पन्नहोता है यह ठीकही है- ॥ १३१ ॥

तर्तामांसन्तनोरक्तोत्पत्तेरनन्तरंमांसंजायतेरसादेवेत्यर्थः । मांसान्मेदःप्रजायतइति ॥ मांसादनंतरं मेदः प्रजायते रसादेवेत्यर्थः । मेदसोऽस्थिजायतेरसादेवेत्यर्थः ॥ एवं ततोमज्जाऽग्रे शुद्धशुक्रं सम्भवतीत्यर्थः ॥ १३२ ॥

रुधिर उत्पन्नहोने के उपरान्त उस रसहीसे मांस उत्पन्न होता है फिर मांस रूपरससेमेद मे रूपरससे अस्थि और अस्थि रूपरस से मज्जा उत्पन्नहोताहै फिर शुद्ध वीर्य्य उत्पन्नहोताहै ॥१३२ ॥

रसःशरीरेत्रिधासञ्चरति । तथाचोक्तम्रसःशरीरेशब्दार्च्चिर्ज्जलसन्तानवत्त्रिधा ॥ सञ्चरत्यनुरूपोऽयंनित्यमेवहिदेहिनाम् । अस्यायमभिप्रायः । पुरुषास्तीक्ष्णाग्नयोमध्यमाग्नयोमन्दाग्नयश्चभवन्ति । तत्रतीक्ष्णाग्नीनांसरसःशब्दसन्तानवत्शीघ्रंसञ्चरति ॥ मध्यमाग्नीनामर्चिःसन्तानवन्मध्यवेगेनचरतिमन्दाग्नीनांजलसंतानवन्मन्दं चरति । तेनमासेनरसात्शुक्रंभवतीति ॥ यदुक्तम् । तन्मध्यवेगेनचरति ॥ मन्दाग्नीनांजलसंतानवन्मंदंचरतितेनमासेनरसः शुक्रंभवतीतियदुक्तंतन्मध्यमाग्नीनधिकृत्योक्तम् । दीप्ताग्नीनांतुरसःकिंचिन्न्यूनेनमासेनशुक्रंभवति ॥ मंदाग्नेःकिंचिदधिकेन मासेनेतिसिद्धांतः ॥ १३३ ॥

रस मनुष्योंके शरीरमें तीनप्रकारसे घूमताहै और ऐसा कहाभीहै कि रस मनुष्यों के शरीर में सदैव शब्द- अग्नि की ज्वाला और जलके प्रवाहकी समान तीन प्रकारसे घूमताहै इसका यह आशयहै कि पुरुष तीक्ष्णाग्नि मध्यमाग्नि और मन्दाग्निहोतेहैं उनमेंसे तीक्ष्णाग्नि वाले पुरुषों का रसशब्दके बेगके समानशीघ्र चलताहै मध्यम अग्नि वालोंका रस अग्निकी ज्वालाके समान मध्यम वेग से चलताहै और मन्दाग्नि वालोंका रस जलके प्रवाहके समान मन्द २ चलताहै इससे महीने भरमें रससे वीर्य्य होताहै यह जो कहागयाहै वह मध्यम वेगसेचलताहै-मन्दाग्नि वालोंका रस जल केप्रवाहके समान धीरे धीरे चलताहै इससे महीने में रसवीर्य्य होताहै यह जो कहागया वह मध्यम अग्नि वालोंको लेकर कहागयाहै और तीक्ष्ण अग्नि वालोंका रस तो कुछ कम महीने में वीर्य्य होजाताहै और मन्दाग्नि वालेका रस महीने से कुछ दिन अधिक में वीर्य्य होताहै ॥ १३३ ॥

तर्हिवाजीकरणानामौषधीनांकिंप्रयोजनमित्याह । वाजीकरिष्णयःऔषध्यः स्वप्रभावगुणोच्छ्रयात् ॥ विरेचयन्तिताःशुक्रंविरेकिद्रव्यवन्नृणाम् । वाजीकरिष्णयःयाभिरौषधीभिःपुरुषःशुक्राधिक्यात्स्त्रीषुवाजीवत्सामर्थ्यंप्राप्नोतिताःवाजीकरिष्णयःस्वप्रभावगुणोच्छ्रयात्ततत्रकाश्चिदौषध्यःस्वप्रभावाधिक्यात् ॥ काश्चित्स्वगुणाधिक्यात् । काश्चित्स्वप्रभावगुणाधिक्यात् ॥ तत्रमङ्कुलपादलेपविशिष्टकान्तास्पर्शादयःस्वप्रभावाधिक्यात् शुक्रंविरेचयंति ।घृतक्षीरादयःस्वगुणाधिक्यात् । स्निग्धत्वादाधिक्यात्माषादयः स्वप्रभावस्निग्धत्वादिगुणाधिक्यात् ॥ १३४ ॥

यदि ऐसाहै तो बाजी करण औषधियों का क्या प्रयोजन है इसलियेकहते हैं कि वाजी करण औषधि रेचक द्रव्यके समान मनुष्योंका वीर्य्य निकालती हैं जिन औषधियोंके द्वारा पुरुष वीर्य्य की अधिकतासे स्त्रियोंमें घोडेके समान सामर्थ्यको प्राप्तहोताहै वहवाजी करण कहलाती हैं उनमें

से कछ औषधि अपने प्रभावकी अधिकतासे कुछ अपने गुणकी अधिकतासे और कुछ अपने प्रभाव और गुणदोनोंकी अधिकतासे वीर्य्यको निकालती हैं जैसे कि संकल्प (विषयोंकाध्यान) पैरोंकालेप- उत्तम स्त्रियोंका आलिङ्गन आदिक अपने प्रभावकी अधिकतासे घृतदुग्धादिक अपने गुणकी अधिकतासे और चिकनेपन आदि गुणोंके द्वारा उर्द आदिक अपने प्रभाव तथा स्निग्धता (लसीलेपन) आदि गुणोंकी अधिकतासे वीर्य्यको निकालती हैं ॥ १३४ ॥

वाजीकरिणयइतिबहुवचनमाद्यर्थानुवर्त्तनम्। बल्यंबृंहणंजीवनीयगणादयःतद्वद्बोद्धव्याः ॥ विरेचयन्तिस्वप्रभावगुणाधिक्यात् । शीघ्रमेवंरसाद्युत्पादनपूर्वकंशुक्रंजनयित्वाप्रवर्त्तयन्ति ॥ यतआह । दुग्धंमाषाश्चभल्लातःफलमज्जामलानिच ॥ जनकानिनिगद्यंतेरेचनानिचरेतसः ॥ १३५ ॥

(वाजीकरिणयः) इस बहुवचनान्त पदसे आदिक अर्थका ग्रहण किया जाताहै इस्से बलकारक बृहण- जीवनीयगण आदिकभी इसी प्रकार जानने चाहिये वीर्य्य को निकालती हैं इसका यह तात्पर्य्य है कि शीघ्रही रसादिकोंकी उत्पत्ति पूर्व्वक वीर्य्यको उत्पन्न करके निकालती हैं जैसा कहा भी है कि दुग्ध-उर्द- भिलावाँ- मज्जा वाले बादाम आदिक फल और आमले यह वीर्य्यके उत्पन्न करने वाले और निकालने वालेभी कहेजाते हैं ॥ १३५ ॥

ननुबालानांकथंशुक्रंनदृश्यतइत्याह बालानांशुक्रमस्त्येवकिन्तुसौक्ष्म्यान्नदृश्यते । पुष्पाणांमकुलेगन्धोयथासन्नपिनाप्यते।तेषांतदेवतारुण्येपुष्टत्वाद्व्यक्तिमेतिहि । कुसुमानांप्रफुल्लानांगंधः प्रादुर्भवेद्यथा ॥ रोमराज्यादयःपुंसांनारीणामपियौवने । जायतेऽत्र चयोभेदोज्ञेयोव्याख्यानतःसच ॥ व्याख्यानंयथापुंसांरोमराजीश्मश्रुप्रभृतयः । नारीणांतुरोमराजीस्तनस्तन्यार्त्तवप्रभृतयः ॥ १३६ ॥

अबइससन्देहका उत्तरलिखते हैं कि बालकोंके वीर्य्य क्यों नहीं उत्पन्नहोताहै ॥

जैसे कि पुष्पोंकी कलीमें सुगन्ध होने परभी सुगन्धि नहीं मालूमहोतीहै उसीप्रकार बालकोंके वीर्य्य होता तो अवश्य है परन्तु सूक्ष्मताके कारणसे दिखाई नहीं देता और जैसे प्रफुल्लित पुष्पोंकी सुगन्धि प्रकट होतीहै उसी प्रकार युवावस्थामें पुष्टताके कारण वह वीर्य प्रकट होताहै-पुरुषोंके तथा स्त्रियोंके भी युवावस्था में रोमादिक उत्पन्न होतेहैं और इनमें जो भेदहै वह व्याख्यानसे जानना चाहिये जैसे कि पुरुषोंके रोम तथा डाढ़ी मूछ आदि होते हैं और स्त्रियोंके रोमस्तन दुग्ध और रजादिकहोते हैं ॥ १३६ ॥

ननु,अन्नरसोवृद्धस्यधातुवृद्धिंकथंनकरोतीत्याह । वार्द्धकेवर्द्धमानेनवायुनारसशोषणात् ॥ नतथाधातुवृद्धिःस्यात्ततस्तत्रानिलंजयेत् ॥ १३७॥

अबयहसन्देह कियाजासकताहै कि वृद्धोंके धातुओंकी वृद्धिक्यों नहीं होती इसका उत्तर कहते हैं ॥

वृद्धावस्थामें बढ़ा हुआ वायु आहारके रसको सुखा देताहै इसी से धातु की वृद्धि नहीं होती इसकारण उसअवस्था में वायुकी नाशक औषधीसेवनकरनी चाहिये ॥ १३७ ॥

अथशुक्रस्यस्वरूपमाह ॥

शुक्रंसौम्यंसितंस्निग्धंबलपुष्टिकरंस्मृतम्।गर्भबीजंवपुःसारोजीवस्याश्रयउत्तमः १३८

अब वीर्य्य का स्वरूप कहतेहैं ॥

वीर्य्य सोमात्मक श्वेतवर्ण-चिकना-बलपुष्टिका करनेवाला-गर्भकावीज-शरीर का सारांश और जीव का उत्तम स्थान कहागयाहै ॥ १३८ ॥

जीवस्याश्रयउत्तमइतिआह । जीवोवसतिसर्वस्मिन्देहेतत्रविशेषतः ॥ वीर्य्येरक्ते मलेयस्मिन्क्षीणेयातिक्षयंक्षणात् ॥ १३९ ॥

अबजीवकाउत्तमस्थानहै इसके विषयमें कहते हैं ॥

जीवसंपूर्ण शरीरमें रहताहै परन्तु वीर्य्य- रुधिर और मलमें विशेष करके रहताहै क्योंकि जिनके क्षीणहोनेसे जीव क्षणभरमें नाशको प्राप्त होताहै ॥ १३९ ॥

अथगर्भसञ्जननशुक्रस्यलक्षणमाह ॥

स्फटिकाभंद्रवंस्निग्धंमधुरंमधुगंधि चाशुक्रमिच्छंतिकेचित्तुतैलक्षौद्रनिभंचतत्॥१४०॥

अबगर्भकेउत्पन्नकरनेवालेवीर्य्यका लक्षण कहते हैं ॥

स्फटिकके समान निर्मल वर्णवाला द्रव- सचिक्कण मधुर सहतके समान गन्धवाला वीर्य्य शुद्ध होताहै और कोई ऐसा कहते हैं कि तेल अथवा सहतके समान वीर्य्य गर्भका उत्पन्न करने वाला होताहै ॥ १४० ॥

अथशुक्रस्यस्थानमाह ॥

यथापयसिसर्पिस्तुगूढ़श्चेक्षुरसोयथा । एवंहिसकलेकायेशुक्रंतिष्ठतिदेहिनाम् ॥ अत्रसार्पिर्दृष्टान्तोबहुशुक्रेऽल्पमथनेनसर्पिःशुक्रयोर्ल्लाभात् । इक्षुरसदृष्टान्तस्तुस्वल्पशुक्रे पुंसिअतिपीड़नेक्षुरसस्यशुक्रयोर्लाभात् ॥ १४१ ॥

अबवीर्य्यका स्थानकहतेहैं ॥

जैसे दूधमें घृत और ऊखमें रस छिपाहुआ रहताहै उसीप्रकार मनुष्योंके संपूर्ण शरीरमें वीर्य्य रहताहै यहां घृतकादृष्टान्त बहुत वीर्य्यवाले पुरुषके लिये दियागयाहै जैसे थोड़ेही मथनेसे घृतप्राप्त होताहै उसी प्रकार बहुत वीर्य्यवाले पुरुषके वीर्य्य शीघ्र निकलताहै और ऊखकादृष्टान्त थोड़े वीर्य्य वालेके लियेहै क्योंकि जैसे ऊखकारस बहुत दबाने से निकलताहै उसी प्रकार थोड़ेवीर्य्य वाले पुरुषके वीर्य्य देरमें निकलताहै ॥ १४१ ॥

अथशुक्रस्यक्षरणमार्गमाह ॥

द्व्यंगुलेदक्षिणेपार्श्वेवस्तिद्वारस्यचाप्यधः । मूत्रस्रोतपथेशुक्रंपुरुषस्यप्रवर्त्तते ॥ वृद्धवाग्भटोऽप्याह ॥ सप्तमीशुक्रधराद्व्यंगुलेदक्षिणेपार्श्वेवस्तिद्वारस्यचाप्यधोमूत्रमार्गमाश्रिता सकलशरीरव्यापिनीशुक्रंप्रवर्त्तयतीति ॥ सप्तमीकला ॥ १४२ ॥

अबवीर्य्यके निकलनेकामार्ग कहतेहैं ॥

वस्तिके द्वारको नीचे दाहिनी ओर दो अंगुलकी मूत्रनालीके मार्गसे पुरुषका वीर्य्य निकलताहै और वृद्धवाग्भटने भी कहाहै कि मूत्राशयके द्वारके नीचे दाहिनी ओर दोअंगुलपर मूत्रके मार्ग का आश्रयकरनेवाली संपूर्ण शरीरमें व्याप्तवीर्य के धारण करनेवाली सातवीं कला वीर्य्य को निकालतीहै ॥ १४२ ॥

अथशुक्रक्षरणकारणमाह ॥

कृत्स्नदेहस्थितंशुक्रंप्रसन्नमनसस्तथा । स्त्रीषुव्यायच्छतश्चापिहर्षात्तत्सम्प्रवर्त्तते ॥ स्त्रीषुव्यायच्छतःस्त्रीषुरतरूपंव्यायामंकुर्वतः । अन्यच्च ॥ शुक्रंकामेनकामिन्यादर्शनात् स्पर्शनादपि । शब्दसंश्रवणात्ध्यानात्संयोगाच्चप्रवर्त्तते ॥ १४३ ॥

अब वीर्य्य के निकलने का कारण कहतेहैं ॥

प्रसन्न मन और स्त्रियोंके साथ संभोगरूपी व्यायाम करनेवाले पुरुषके संपूर्ण शरीरमें रहनेवाला वीर्य्य हर्षसे निकलताहै औरभी कहागया है कि कामदेवसे पीड़ित होकर स्त्रीके देखनेसे आलिंगन करनेसे-शब्द सुननेसे-ध्यान करनेसे और संयोग से वीर्य्य निकलताहै ॥ १४३ ॥

अथार्त्तवस्यस्वरूपमाह ॥

स्त्रीणांरसएवमासेनार्त्तवंभवतीत्युक्तापुनराहशुक्रतएव । रसादेवरजःस्त्रीणांमासिमासिञ्यहंस्रवेत् ॥ तद्वर्षात्द्वादशादूर्ध्वंयातिपञ्चाशतःक्षयम् । मासेनोपचितंकालेधमनीभ्यस्तदार्त्तवम् ॥ ईषद्विवर्णंकृष्णञ्चवायुर्योनिमुखंनयेत् ॥ १४४ ॥

अबरजका स्वरूप कहतेहैं ॥

स्त्रियोंका रसहीमहीनेमें रज होजाताहै यह कहकर फिर कहतेहैं कि रज वीर्य्यसेही उत्पन्न होता है स्त्रियोंके रससेही उत्पन्न हुआरज प्रति मास तीन दिन तक बहताहै वह बारह वर्षसे प्रवृत्त होकर पचास वर्षमें नाशको प्राप्त होताहै और महीने भरमें इकट्ठे हुए कुछ विकृति वर्ण और कुछ कृष्ण वर्ण वाले उसरजको समयमें बायु नाडियोंके द्वारा योनिके मुखमें लाताहै ॥ १४४ ॥

गर्भग्रहणयोग्यस्यार्त्तवस्यलक्षणमाह ॥

शशासृक्प्रतिमंयच्चयद्वालाक्षारसोपमम् । तदार्त्तवंप्रशंसन्तियद्वासोनविरञ्जयेत् ॥ आर्त्तवस्यवर्णद्वयाभिधानम् । वातादिप्रकृतिभेदेनवर्णभेदात् ॥ यद्वासोनविरञ्जयेत् । यद्वासोलग्नंप्रक्षालितंतद्वासस्त्यजतिनतुविकृतरक्तंकुर्यात् । ऋतुस्त्रीणांरजोदर्शनात् षोडशनिशाः तत्रभवमार्त्तवंगृहीतगर्भाणां स्त्रीणांमार्त्तववहानांस्रोतसांगर्भेणावरोधादार्त्तवंनस्रवति ॥ किन्तुतदेवाधःप्रतिहतमूर्ध्वमागतमुपचीयमानमपराभवति । अपरातुश्रीवरइतिलोके ॥ शेषंचोर्ध्वतरमागतंपयोधरोयातितस्माद्गर्भस्थःपीवरपयोधराभवन्ति ॥ १४५ ॥

अब गर्भ ग्रहण करनेके योग्य रजका लक्षण कहतेहैं ॥

जो रज खरगोशके रुधिरके समान अथवा लाखके रसके समान और जो बस्त्रमें लगाहुआ धोने से छुटजाय वह रजगर्भ धारण करने के योग्य होताहै यहां रजके दो वर्ण इसलिये कहेगये हैं कि वातादि प्रकृतियोंके भेदसे वर्णोंका भी भेद होताहै स्त्रियोंके रजोदर्शनके प्रथम दिनसे सोलहरात्रि पर्य्यन्त ऋतु कहलातीहै उस ऋतुकालमें जो उत्पन्न होताहै (रुधिर उत्पन्न होताहै) वह आर्त्तव कहलाताहै गर्भवती स्त्रियोंकी रजके वहानेवाली नाड़ियोंका गर्भके द्वारा अवरोध होनेसे रज नहीं बहताहै किन्तु वही नीचेसे रुकाहुआ ऊपर आकर इकट्ठा होके जरायु (गर्भाशय) होजाताहै और

शेष अधिक ऊपर आया हुआ स्तनोंमें प्राप्त होताहै इसीसे गर्भिणीस्त्रीके स्तन बड़ेहोजातेहैं॥१४५॥

अथधातुष्वतिरिक्तान्गुणानाह ॥

अतिरिक्तागुणारक्तेवह्निर्मांसेतुपार्थिवाः । मेदस्यपांरसेचास्थिनपृथिव्यनिलतेजसाम् ॥ मज्ज्ञिशुक्रेचसोमस्यमूत्रेचशिखिनोगुणाः । भुवस्तथार्त्तवेत्वग्नेरसेक्षीरेतथाम्भसः ॥ १४६ ॥

अब धातुओं के पृथक् २ गुण कहतेहैं ॥

रुधिरमें२ अग्निके १ मांसमें २ पृथ्वीके १ मेदमें२जल२ और पृथ्वीके१हड्डीमें२पृथ्वी वायु और तेजके१मज्जा और वीर्य्य में२सोमके१मूत्रमें२अग्निके१रजमें२पृथ्वी और अग्निके १ और रसतथा दुग्ध में२ जलके १ गुण अधिकहैं ॥ १४६ ॥

अथधातूनांमलाः ॥

कफःपित्तंमलःखेषुप्रस्वेदोनखलोमच । नेत्रविट्चत्वचःस्नेहोधातूनांक्रमशोमलाः ॥ नेत्रजिह्वाकपोलानांजलञ्चरसजंमलमित्येके ॥ कर्णादिश्रोतःसुमलःरसनादन्तकक्षामेढ्रादिमलमपिमेदोमलमित्येके । नेत्रविट्त्वचांस्नेहश्चमज्जामलः शुक्रस्यमलमेवनास्ति सहस्रधाध्मातसुवर्णस्येव ॥ १४७ ॥

अब धातुओंके मल कहतेहैं ॥

कफ- पित्त- कानआदिक छिद्रोंका मैल-स्वेद नखरोम- नेत्रकामल और त्वचा का चिकनापन यह क्रमसे रसादि धातुओं के मलहैं- कोई आचार्य्य ऐसा कहतेहैं कि नेत्र जिह्वा और कपोलों का जल रसका मलहै और कोई यहभी कहतेहैं कि जिह्वा दांत बगल और लिंगादिकोंका मल भी मेदका मलहै नेत्रका मैल और त्वचाका चिकनापन मज्जाका मैलहै और हजार बार तपाये हुये सुवर्ण के समान वीर्य्य में मल नहीं होताहै ॥ १४७ ॥

अथोपधातवः ॥

वनितानांप्रसूतानांधमनीभ्यांस्तनौगतात् । रसादेवहिजायेतस्तन्यंस्तनयुगाशयम् ॥ शुद्धमांसस्ययःस्नेहःसावसापरिकीर्त्तिता । मेदसःस्रवमाणस्यस्नेहोवाकथितावसा ॥ शारङ्गधरेतु ॥ स्तन्यंरजोवसास्वेदोदन्ताःकेशास्तथैवच । ओजश्चसप्तधातूनां क्रमात्सप्तोपधातवः ॥ १४८ ॥

अब उपधातुओंका वर्णन करतेहैं ॥

प्रसूता स्त्रियोंके नाडियोंके द्वारा स्तनोंमें लाये गये रससे दोनों स्तनोंमें रहने वाला दुग्ध उत्पन्न होताहै और शुद्ध मांसका स्नेह वसा कहलाताहै अथवा बहते हुए मेदका स्नेह वसा कहलाताहै और शार्ङ्ग धरमेंतो ऐसा कहागयाहै कि स्तनोंसे उत्पन्न हुआ दूध रज वसा स्वेद दन्त केश और ओज यह सातों क्रमसे रसादि सातों धातुओंके उपधातुहैं ॥ १४८ ॥

अथाशयाः ॥

उरोरक्ताशयस्तस्मादधःश्लेष्माशयःस्मृतः। आमाशयस्तुतदधस्तल्लिंगंचरकोऽवदत् ॥ तद्यथा ॥ नाभिस्तनान्तरेजन्तोराहुरामाशयंबुधाइति । आमाशयादधःपक्वाशयादू

र्ध्वन्तुयाकला ॥ ग्रहणीनामकासैवकथितःपाचकाशयः । ऊर्ध्वमग्न्याशयोनाभेर्मध्यभा गेव्यवस्थिता ॥ तस्योपरिबिलंज्ञेयंतदधःपवनाशयः । पक्वाशयस्तुतदधःसएवतुमला शयः ॥ तदधःकथितोवस्तिःसहिमूत्राशयोमतः ॥ १४९ ॥

अबआशयों का वर्णनकरतेहैं ॥

छाती रक्ताशयहै उसके नीचे श्लेष्माशयहै उसके नीचे आमाशयहै और उसका लक्षण चरक मुनिने कहाहै प्राणियों के नाभि और स्तनों के बीचमें आमाशय कहागयाहै आमाशय के नीचे और पक्वाशयके ऊपर ग्रहणी नाम जो कला कही गईहै वही पाचकाशयहै नाभिके ऊपर वामभाग में अग्न्याशयहै उसके ऊपर बिल और नीचे पवनाशय उसके नीचे पक्वाशयहै वही मलाशय कहाताहै उसके नीचे वस्तिहै और उसीको मूत्राशय कहतेहैं ॥ १४९ ॥

आशयानुक्रमस्तुवाग्भटेनोक्तःसयथा ॥

कफाऽऽमपित्तवातानामाशयामलमूत्रयोः ।पुरुषेभ्योऽधिकाश्चान्येनारीणामाशयास्त्रयः॥ धरागर्भाशयःप्रोक्तःपित्तपक्वाशयान्तरे।स्तनौप्रवृद्धौतावेवबुधैस्तन्याशयौमतौ ॥१५०॥

अबवाग्भटके कहे हुए आशयोंके क्रम कहतेहैं ॥

कफ - आम - पित्त - वात - मल और मूत्र इनके आशय क्रमसे एक२ के नीचे स्थितहैं-स्त्रियों के पुरुषोंसे विशेष तीन आशय और होतेहैं वह यहहैं कि पित्ताशय और पक्वाशयके बीचमें धरा नाम गर्भाशयहै और बढ़े हुए दोनों स्तनोंको पण्डित लोग दो स्तन्याशय अर्थात् दुग्धाशय कहते हैं ॥१५०॥

अथकलास्वरूपमाह ॥

स्नायुभिश्चप्रतिच्छन्नान्सन्ततांश्चजरायुणा । श्लेष्मणावेष्टितांश्चापिकलाभागां स्तुतान्विदुः ॥ धात्वाशयान्तरेधातोर्यःक्केदस्त्वधितिष्ठति । देहोष्मणाभिपक्वश्चसाकले त्यभिधीयते ॥ १५१ ॥

अब कलाओंका स्वरूप कहते हैं ॥

स्नायुके द्वारा आच्छादित गर्भाशय से व्याप्त श्लेष्मासे वेष्टित शरीरके भाग कला कहलाते हैं - धात्वाशयके बीचमें देहकी ऊष्मासे पकाहुआ जो धातुका मल रहताहै वह कला कहा जाताहै१५१॥

ताःसप्त ॥ आद्यामांसधराप्रोक्ताद्वितीयारक्तधारिणी । मेदोधरातृतीयातुचतुर्थीश्लेष्मधारिणी ॥ पञ्चमीतुमलंधत्तेषष्ठीपित्तधरामता । रेतोधरासप्तमीस्यादितिसप्तकलाः स्मृताः ॥ १५२ ॥

वह कला सातहैं पहली मांसकी धारण करने वाली दूसरी रुधिरकी धारण करने वाली- तीसरी मेदकी धारण करनेवाली- चौथी श्लेष्माकी धारण करनेवाली पांचवीं मलकी धारण करने वाली छठी पित्तकी धारण करनेवाली और सातवीं बीजकी धारण करनेवाली कही गई है १५२ ॥

अथमर्म्माणि ॥

सन्निपातःशिरास्नायुः संधिमांसास्थिसम्भवः।मर्म्माणितेषुतिष्ठन्ति प्राणाःखलुविशेषतः ॥ सप्तोत्तरशतंसंति देहेमर्म्माणिदेहिनाम् । तान्येकादशमांसेस्यु रष्टावस्थिषु

सन्तिहि ॥ संधीनांविंशतिस्तानि स्नायूनांसप्तविंशतिः । चत्वारिंशत्तथैकञ्च शिरामर्म्माणितत्रतु ॥ द्वाविंशतिःसक्थियुगे तावत्येवभुजद्वये । द्वादशोरसिकुक्षौ च पृष्ठदेशेचतुर्दश ॥ ग्रीवायामूर्ध्वभागेतु सप्तत्रिंशच्चतानिहि।शरीरेतानिमर्म्माणि पञ्चधा चभवन्तितु ॥ (तान्याह) सद्यःप्राणहराणिस्युर्मर्म्माण्येकोनविंशतिः । मर्म्माण्येवत्रयस्त्रिंशत् स्युःकालांतरमारकाः ॥ चत्वारिंशच्चचत्वारि वैकल्यंजनयन्तिहि । मर्म्माष्टकंरुजाकारि विशल्यघ्नंत्रिकंमतम् ॥ १५३ ॥

अब मर्मोंका वर्णन करते हैं ॥

शिरा- स्नायु - सन्धि- मांस और अस्थि इनके एक स्थानपर मिलने को मर्म कहते हैं इन में विशेष करके प्राण रहताहै (अब उनकी संख्याकहते हैं) प्राणियोंके शरीर में एकसौ सात १०७ मर्म हैं वह मांसमें ११ हड्डियोंमें ८ सन्धियों में २० स्नायुमें २७ शिराओंमें ४१ इस क्रमसे १०७ हुये और यही १०७ मर्म सब देहमें इस क्रम से हैं कि दोनों जंघाओं में २२ दोनों भुजाओं में २२ हृदय और कोखमें १२ पीठमें १४ और ग्रीवाके ऊर्ध्व भागमें ३७ और शरीरमें यह मर्म पांच प्रकार से रहतेहैं शीघ्रही प्राणके नाशक १९ कालान्तरमें मारनेवाले ३३ बिकलता करनेवाले ४४ रोग के उत्पन्न करनेवाले ८ और विशल्यघ्न (कांटेआदि के निकालने से मारने वाले ३ हैं ॥ १५३ ॥

शृङ्गाटकान्यधिपतिः शंखौकण्ठशिरागुदम् । हृदयंवस्तिनाभौच सद्योघ्नन्तिहृता निचेत् ॥ १५४ ॥

अब शीघ्र प्राणके नाशकरने वाले मर्मोंका वर्णन करतेहैं ॥

शृंगाटक, अधिपति, शंख- कण्ठ, शिरा, गुदा, हृदय, वस्ति और नाभि इनमर्मों में चोट लगने से शीघ्र प्राणनिकल जातेहैं ॥ १५४ ॥

शृंगाटकानि ॥

घ्राणश्रोतोक्षि जिह्वा सन्तर्पकाणां शिरामुखानां शिरसो मध्ये संयोगस्थानन्तानि चत्वारि शिरामर्म्माणि चतुरंगुलप्रमाणानि हतानिघ्नन्ति सद्योमारकाणि भवंति॥१५५॥

शृंगाटक का वर्णन ॥

नासिका, कर्ण, नेत्र, जिह्वा, इनके तृप्तकरने वाली नाडियोंका शिरके मध्य में जो संयोग का स्थानहै उसमें चार अंगुलके प्रमाण चार नाडियोंके मर्मोंको शृंगाटक कहतेहैं वह शीघ्रप्राणके नाश करनेवाले होते हैं ॥ १५५ ॥

अधिपतिर्मस्तक स्याभ्यन्तरे सन्धिशिरसोः सन्निपातः उपरिष्टा द्रोमावर्त्तः सएकः संधि मर्म्मेद मर्द्धांगुलप्रमाणम् सद्योमारकं ॥ १५६ ॥

अधिपतिका वर्णन ॥

मस्तकके भीतर नाड़ियोंकी जो सन्धि जिसके ऊपर रोमावर्त्त होताहै वह आधे अंगुलका सन्धि मर्म अधिपति कहलाताहै इसमें चोटलगनेसे शीघ्रही प्राण निकलते हैं ॥ १५६ ॥

शङ्खोभ्रुवोरधोपरिकर्णललाटमध्ये तोद्यौ अस्थिमर्मणी सार्द्धांगुलेमारके ॥ १५७ ॥

शंखका वर्णन ॥

भृकुटियोंके अन्तके ऊपरकान और मस्तकके ऊपर डेढ़ अंगुलके दो अस्थिमर्महैं उनमें चोटलगने से शीघ्रही प्राण निकलते हैं ॥ १५७ ॥

कण्ठशिरा मातृकाः ग्रीवायामुभय पार्श्वयोश्च तस्रः शिरास्ता अष्टौशिरा मर्म्माणि चतुरंगुलानि सद्यो मारकाणि ॥ १५८ ॥

अब कण्ठका वर्णन करतेहैं ॥

ग्रीवाके दोनोंओर चार २ नाड़ियां कण्ठ शिरा या शिरामातृका कहलाती हैं चारअंगुलके प्रमाण यह आठशिरामर्महैं इनमें चोटलगनेसे शीघ्रही प्राणनिकलतेहैं ॥ १५८ ॥

गुदम्प्रसिद्धं । वातवर्चो निरसनं स्थूलान्त्र प्रतिबद्धं गुदंनाम ॥ एकम्मांसमर्म्म च तुरंगुलं सद्यो मारकम् ॥ १५९ ॥

गुदाके मर्मका वर्णन ॥

वायु और मलकी निकालनेवाली मोटीआंतोंसे बंधीहुई गुदा तो प्रसिद्धहै वह चारअंगुलके प्रमाण मांसका एकमर्म है इसमें चोटलगनेसे शीघ्रही प्राणनिकलतेहैं ॥ १५९ ॥

स्तनयोर्मध्यमधिष्ठायोरस्यामाशय द्वारं सत्त्वरजस्तमसा मधिष्ठानं हृदयं नाम शिरामर्म्म चतुरंगुलं सद्यो मारकम् ॥ १६० ॥

हृदयके मर्मका वर्णन ॥

दोनोंस्तनोंका मध्य आमाशयका द्वारसत्त्वरज और तमोगुणका स्थान हृदयहै वह चारअंगुलके प्रमाणका चोटलगनेसे शीघ्रही प्राणोंका नाशकरनेवाला शिराओंका एकमर्महै ॥ १६० ॥

वस्तिर्नाभिःपृष्ठकटी गुदवंक्षणशेफसाम् । मध्येवस्तितनुत्वक्च एकद्वारोह्यधोमुखः । स्नायुमर्म्मेदञ्चतुरंगुलं सद्यो मारकम् ॥ १६१ ॥

वस्तिके मर्मका वर्णन ॥

नाभि पीठ कटि गुदा बंक्षण और लिङ्ग इनके मध्यमें सूक्ष्म त्वचावाली एक द्वारवाली अधो मुख वस्ति नामहै यह चार अंगुलके प्रमाणका चोटलगनेसे शीघ्रही प्राणका नाशकरने वाला स्नायु का एकमर्म है ॥ १६१ ॥

नाभिः प्रसिद्धा पक्वामाशयोर्मध्ये शिरा प्रभवा नाभिर्नाम शिरा मर्म्मेदंचतुरंगुलं सद्यो मारकम् ॥ १६२ ॥ नाभिके मर्मका वर्णन ॥

पक्वाशय और आमाशयके मध्यमें शिराओंसे उत्पन्न नाभि नामसे प्रसिद्ध चार अंगुलके प्रमाण का चोटलगनेसे शीघ्रही प्राणका नाशकरनेवाला शिराओंका एकमर्महै ॥ १६२ ॥

वक्षोमर्म्माणिसीमन्ता स्तलाक्षिप्रेन्द्रवस्तयः । वृहत्यौपार्श्वयोःसंधी कटीकतरुणेच ये ॥ नितम्बाविति चैतानि कालांतरहराणितु ॥ १६३ ॥

अव कालान्तरमें मारनेवाले मर्मोंका बर्णन करतेहैं ॥

वक्षमर्म सीमन्त तल क्षिप्र इन्द्रवस्ति वृहती पार्श्व सन्धि कटीकतरुण नितंब यह कालान्तर में प्राणोंके नाशकरनेवाले मर्म हैं ॥ १६३ ॥

वक्षोमर्म्माणि ॥

स्तनमूलेस्तन रोहितापलापापस्तंभाः । उरसःस्तनमूलस्य नरोहिस्तन रोहिते॥१६४॥

अब वक्षमर्मोंके नाम कहतेहैं ॥

स्तनमूल,स्तनरोहित,अपलाप और अपस्तम्भ यह वक्षमर्म हैं ॥ १६४ ॥

स्तनयोरधरस्ताद्द्व्यंगुल मुभयतः स्तनमूले नाम शिरा मर्म्मणी द्व्यंगुले कफ पूर्ण कोष्ठ तया कास श्वासाभ्यांच कालांतर मारके ॥ १६५ ॥

स्तनमूलका वर्णन ॥

स्तनोंके नीचे दोनोंओर दोअंगुल प्रमाणवाले दो शिरामर्महैं वह चोटलगनेसे कफ से परिपूर्ण होनेके कारण कास और श्वासके द्वारा कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १६५ ॥

स्तनयोरुपरि उभयतः द्व्यंगुलं यावत् । स्तनरोहिते नाम द्वेमांस मर्म्मणी रक्तपूरित कोष्ठतया कालांतर मारकौ ॥ १६६ ॥

स्तनरोहितका वर्णन ॥

स्तनोंके ऊपर दोअंगुल पर्य्यन्त स्तनरोहित नामवाले दो मांसकेमर्म रुधिरसे पूर्ण होनेके कारण चोटलगनेसे कालान्तरमें प्राणोंको हरतेहैं ॥ १६६ ॥

अपलापी अंस कूटयोरधस्तात् पार्श्वयो रुपरि द्वौशिरा मर्म्मणी । अर्द्धांगुलेरक्तेन पूयतांगतेन कालांतर मारकौ ॥ १६७ ॥

अपलापीका वर्णन ॥

कन्धोंके नीचे और पसलियोंके ऊपर अर्द्धअंगुलके प्रमाण वाले दोशिराओंके मर्म चोटलगने से रुधिरके पीपहोजाने पर कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १६७ ॥

अपस्तम्भौ उरसः उभयोः नाड्योः वातवहे शिरा मर्म्मणी । अर्द्धांगुले वात पूर्ण कोष्ठ तया कास श्वासाभ्यांच कालांतर मारके ॥ १६८ ॥

अपस्तंभका वर्णन ॥

छातीके दोनों ओर नाडियों में वायुके ले चलने वाले अपस्तंभ नाम अर्द्धांगुल प्रमाण वाले दो शिराओंके मर्म हैं वह वायुके द्वारा भरेरहने के कारण चोटलगनेसे खांसी और श्वासकेद्वारा कालान्तरमें प्राणोंको हरतेहैं ॥ १६८ ॥

सीमन्ताः शिरसि पञ्च संधयः संधिमर्माणि चतुरंगुलानि । उन्माद भय चित्तविनाशैः कालांतर मारकाः ॥ १६९ ॥

सीमन्तमर्मका वर्णन ॥

शिरकी पांच सन्धियोंमें चार अंगुल प्रमाण वाले पांच संधियोंके मर्महैं वह चोट लगनेसे उन्माद भय और चित्तके बिगड़जाने के द्वाराकालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १६९ ॥

तलानि । मध्यांगुलि मनुक्रम्य हस्तस्य मध्यन्तलमेव मपरस्य हस्तस्य । पादयो श्चत्वारि तलानि मांस मर्माणि द्व्यंगुलानि रुजाभिः कालांतर मारकाणि ॥ १७० ॥

तलमर्मका वर्णन ॥

बीचकी उंगलीसे लेकर दोनों हाथ और दोनों पैरोंकेतलुओं में दो अंगुलके प्रमाण वाले तल नाम मांसके चार मर्म चोट लगनेसे रोगोंके द्वारा कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७० ॥

क्षिप्राणिअंगुष्ठांगुल्योर्मध्यंक्षिप्रम् । तच्चहस्तद्वयोर्द्वेतथापादयोःएवंचत्वारिस्नायुम र्माण्यर्द्धांगुलान्याक्षेपकेणकालांतरमारकाणि ॥ १७१ ॥

क्षिप्रमर्मका वर्णन ॥

अंगूठे और उसके पासकी तर्जनी नाम उंगलीके बीचको क्षिप्रकहतेहैं दोनों हाथ और पैरों के क्षिप्रोंमें आधेअंगुलके प्रमाण वाले स्नायुके चार मर्म चोट लगने से आक्षेप(रोगविशेष) कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७१ ॥

इन्द्रवस्तयःप्रकोष्ठयोर्मध्येद्वौजङ्घयोर्मध्येद्वौ । एवंचत्वारिमांसमर्माणिद्व्यंगुलानिशोणितक्षयेणकालान्तरमारकाः ॥ १७२ ॥

इन्द्रवस्तिमर्मका वर्णन ॥

दोनों पहुंचे और दोनों पिंडलियोंमें दो अंगुलके प्रमाण वाले मांसके चारमर्म चोट लगनेसे रुधिरके नाशके द्वारा कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७२ ॥

बृहत्यौ । स्तनमूलादुभयतःसपृष्ठवंशंयावत् । शिरामर्म्माणि । अर्द्धांगुलेशोणितानिप्रवृत्तेरुपद्रवैःकालान्तरमारके ॥ १७३ ॥

बृहतीमर्मका वर्णन ॥

स्तनोंके मूलसे दोनों ओर पीठकी रीढतक आधेअंगुलके प्रमाणवाले शिराओंके दोमर्म चोटलगनेसे रुधिर के बहुत निकलजाने के कारण कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७३ ॥

पार्श्वसंधीजघनपार्श्वयोःसंधीशिरामर्मणीअर्द्धांगुलौशोणितपूर्णकोष्ठतयाकालान्तर मारकौ ॥ १७४ ॥ पार्श्वसन्धिमर्मका वर्णन ॥

जंघा और पसलियोंकी सन्धिमें आधे अंगुलके प्रमाण वाले शिराओंके दोमर्म रुधिरसे भरे रहने के कारण चोट लगने से कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७४ ॥

कटीकतरुणेत्रिकसन्निधानेउभयतः श्रोणिकाण्डेलक्षीकृत्यास्थिस्थितेअस्थिमर्मणी अर्द्धांगुलेशोणितक्षयात्पाण्डुविवर्णरूपंकृत्वाकालान्तरमारके ॥ १७५ ॥

कटीकतरुणनाम मर्मोंकावर्णन ॥

त्रिक (रीढकेनीचेकीतीनहड्डी) के निकट दोनों ओर नितम्बोंमें हड्डियोंके बीच में रहने वाले आधे अंगुलके प्रमाण वाले कटीकत रुणनाम हड्डियों के दोमर्म चोट लगनेसे रुधिरके नाशहोने के कारण पांडु और विकार युक्त रूपको धारण करके कालान्तर में प्राणोंको हरतेहैं ॥ १७५ ॥

नितम्बौप्रसिद्धौद्वौउभयतःश्रोणीकाण्डयोरुपर्य्याशयाच्छादनौपार्श्वान्तरप्रतिबद्धौनितम्बौनामअस्थिमर्मणीअर्द्धांगुलावधःकायशोषेणदौर्बल्येनचकालान्तरमारकौ॥१७६॥

नितम्बमर्मका वर्णन ॥

नितम्ब प्रसिद्धहैं उनके दोनों ओर ऊपर आशयके आच्छादन करने वाले पसलियोंमें बंधेहुये

नितम्बनाम आधेअंगुलके प्रमाणवाले हड्डियों के दोमर्म चोटलगने से शरीरके सूखजाने के कारण उत्पन्न हुई दुर्बलता के द्वारा कालान्तर में प्राणों को हरतेहैं ॥ १७६ ॥

लोहिताक्षाणिजानूर्वीकूर्चाविटपकूर्परा । कुकुन्दरेकक्षधरेविधुरेसकृकाटिके ॥ अंशां शफलकापांगौनीलेमन्येफणेतथा ॥ १७७ ॥

व्याकुल करनेवाले मर्मोंका वर्णन ॥

लोहिताक्ष, आणि, जानु, ऊर्व्वी, कूर्च, विटप, कूर्पर, कुकुन्दर, कक्षधर, विधुर, कृकाटिक, अंश, अंशफलक, अपांग, नील, मन्य, हनु और आवर्त्त इन सम्पूर्ण मर्मोंमें चोटलगने से बिकलता उत्पन्नहोती है ॥ १७७ ॥

वैकल्यकरणान्याहुरावर्त्तौद्वौतथैवच । ऊर्व्वोरूर्ध्वमधोवंक्षणसन्धेलोहिताक्षंतच्चद्वे बाह्वोर्द्वेऊर्वोरेवन्तानिचत्वारिशिरामर्म्माण्यर्द्धांगुलानिवैकल्यकराणि ॥ तत्रशोणितक्षये नपक्षघातःसक्थिसादोवा ॥ १७८ ॥

लोहिताक्ष मर्मोंका वर्णन ॥

जंघाओं के ऊपर और वंक्षण सन्धिके नीचे तथा दोनों भुजाओं के मूल में लोहिताक्षनाम आधे अंगुल के प्रमाण वाले शिराओंके चार मर्म बिकलता के करनेवालेहैं इनमें चोटलगने से रुधिर के नाशहोने के कारण पक्षाघात अथवा जंघाओं में पीड़ाहोतीहै ॥ १७८ ॥

आणन्यः। जानुनःऊर्ध्वंउभयोःपार्श्वयोस्त्र्यंगुलाएकस्मिनूजानुनिद्वेअपरस्मिन्द्वेएवंच तस्रःस्नायुमर्माण्यर्द्धांगुलानिवैकल्यकराणितत्रशोथाभिवृद्धिःसक्थिस्तम्भश्च॥१७९॥

आणिनाम मर्मोंका वर्णन ॥

दोनों घुटनोंके तीन अंगुल ऊपर दोनों ओर आधे अंगुल के प्रमाण वाले स्नायुके आणिनामचार मर्म बिकलताके उत्पन्नकरने वाले हैं उनमें चोटके लगने से शोथकी वृद्धि और जंघाओंमें स्तंभ (जकड़ना) होताहै ॥ १७९ ॥

जानुजंघयोःसंधौसंधिमर्माणिद्वयंगुलेवैकल्यकरेतत्रखञ्जता ॥ १८० ॥

जानुमर्मका बर्णन ॥

पिंडली और जंघाओंकी सन्धिमें दो अंगुलके प्रमाण वाले जानुनाम सन्धियों के दोमर्म बिकलताके उत्पन्नकरनेवाले होतेहैं उनमें चोटलगने से मनुष्य लंगड़ाहोजाताहै ॥ १८० ॥

ऊरुव्योर्द्वेऊर्व्वोर्मध्येद्वेप्रगण्डयोःमध्येद्वेएवंचतस्रः शिरामर्माणिएकांगुल्याःवैकल्यक र्यस्तत्रशोणितक्षयात्सक्थिशोषः ॥ १८१ ॥

ऊर्विव नाममर्मोंका वर्णन ॥

जंघाओंमें दो और भुजदंडों में दो इसप्रकार शिराओंके एक अंगुल के प्रमाण वाले ऊर्विवनाम चार मर्म बिकलताके करने वाले होतेहैं इनमें चोटलगने से रुधिरके नाशके द्वारा जंघा और भुजा सूखजातीहैं ॥ १८१ ॥

कूर्चाःपादयो रंगुष्ठांगुल्योर्मध्येतयोरूर्ध्वमधश्चएवंचत्वारिस्नायुमर्म्माणिवैकल्यकरा णितत्रपादयोर्भ्रमणंवेपनेभवतः ॥ १८२ ॥

कूर्चममोंका बर्णन ॥

दोनों पैरों के अंगूठे और अंगूठे के पासकी उंगलीके बीच में नीचे और ऊपर स्नायुके चार मर्म बिकलताको करतेहैं उनमें चोटलगने से पैरों में भ्रमण और कम्प होताहै ॥ १८२ ॥

विटपेद्वेवंक्षणवृषणयोर्मध्येस्नायुमर्माणिएकांगुल्यवैकल्यकरेचतत्राल्पशुक्रताच १८३॥

विटपनाम मर्मोंका वर्णन ॥

वंक्षण और अंडकोशोंके बीचमें स्नायुके विटपनाम एक अंगुल प्रमाणवाले दोमर्म बिकलताकरने वाले होतेहैं उनमें चोटलगने से नपुंसकता और वीर्य्यकी स्वल्पता होतीहै ॥ १८३ ॥

कूर्परौकफोणिजौद्वौसंधिमर्मणीअर्द्धांगुलौवैकल्यकरौतत्रबाहुमध्येसङ्कोचः॥ १८४ ॥

कूर्पर मर्मोंका वर्णन ॥

कुहनियोंमें दो अंगुल के प्रमाण वाले कूर्परनाम सन्धियोंके दोमर्म बिकलता करनेवाले होते हैं उनमें चोटलगनेसे भुजा संकुचित होजाती हैं ॥ १८४ ॥

कुकुन्दरेपार्श्वजघनबहिर्भागेपृष्ठवंशस्योभयतोनातिनिम्नेकुकुन्दरेनाममर्म्मणी । तत्र स्पर्शाज्ञानमधःकाये । चेष्टोपघातश्च । मर्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रस्पर्शाज्ञानमधःकायस्यचेष्टोपघातश्च ॥ १८५ ॥

कुकुन्दर मर्मोंका वर्णन ॥

नितम्बों के गढ्ढों में आधे अंगुल के प्रमाण वाले सन्धि के दो मर्म बिकलता करनेवाले होते हैं उन में चोटलगने से नीचे के अंग में स्पर्शका ज्ञान नहीं होता और क्रियाओं के करनेकी शक्ति नहीं रहती ॥ १८५ ॥

कक्षधरे । वक्षःकक्षयोर्मध्येद्वेस्नायुमर्मणीएकांगुलेवैकल्यकरेतत्रपक्षाघातः॥ १८६ ॥

कक्ष धर मर्मोंका वर्णन ॥

छाती और बगलोंके बीचमें एक अंगुलके प्रमाण वाले स्नायुके दोमर्म बिकलता करने वाले होते हैं इनमें चोट लगनेसे पक्षाघात होताहै ॥ १८६ ॥

विधुरेकर्णपृष्ठतोऽधःसंश्रितेकिञ्चिन्निम्नाकारेद्वेस्नायुमर्म्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्र बाधिर्य्यम् ॥ १८७ ॥

विधुरनाम मर्मोंकावर्णन ॥

कानोंके पीछे नीचेकी ओर स्थित कुछ गहरे आधे अंगुलके प्रमाण वाले विधुर नाम स्नायु के दोमर्म होतेहैं इनमें चोट लगनेसे बधिरता होतीहै ॥ १८७ ॥

कृकाटिकेशिरोग्रीवयोरुभयतः । संधिद्वे । संधिमर्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेशिरष्कम्पः ॥ १८८ ॥ कृकाटिक मर्मोंका वर्णन ॥

शिर और ग्रीवाके दोनों ओर सन्धियोंके दोमर्म आधे अंगुलके प्रमाण वाले बिकलता करनेवाले होतेहैं उनमें चोट लगनेसे मस्तक कंपायमान होताहै ॥ १८८ ॥

अंसौस्कन्धौबाहुमूर्द्धग्रीवामध्येअंसपीठस्कन्धनिबन्धनावंसौनाम । स्नायुमर्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रबाहुस्तम्भः ॥ १८९ ॥

अंश नाम मर्मोंका वर्णन ॥

बाहु ग्रीवा और मस्तक इनके बीचमें अंशु नाम आधे अंगुलके प्रमाणवाले स्नायुके दोमर्म बिकलता करने वाले होतेहैं उनमें चोट लगनेसे भुजा जकड जातीहैं ॥१८९॥

अंसफलकेपृष्ठोपरिपृष्ठवंशमुभयतस्त्रिकसम्बद्धे ग्रीवायांअंसद्वयस्यचसंयोगोयत्रत त्त्रिकं । अस्थिमर्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रबाहोःशून्यताशोषश्च ॥ १९० ॥

अंश फलक नाम मर्मोंका वर्णन ॥

पीठके ऊपर रीढके दोनों ओर त्रिक (गर्दन और कन्धोंका जोड) से लगे हुए आधे अंगुलके प्रमाण वाले अंशफलक नाम हड्डियों के दोमर्म बिकलता करने वाले होते हैं उनमें चोट लगने से भुजा सुन्न होजातीहैं और सूख जातीहैं ॥ १९० ॥

अपांगौनेत्रयोरंतौशिरामर्मणीअर्द्धांगुलौवैकल्यकरौतत्रान्ध्यंदृष्ट्युपघातोवा॥ १९१॥

अपांगनाम मर्मों का वर्णन ॥

नेत्रों के अन्तमें अपांगनाम शिराओंके दोमर्म आधे अंगुल के प्रमाण वाले विकलता करनेवाले होतेहैं उनमें चोटलगनेसे मनुष्य अन्धा अथवा मन्ददृष्टि होजाताहै ॥ १९१ ॥

नीलेमन्येचकण्ठनाड़ीमुभयतश्चतस्रोधमन्यःद्वेनीलेद्वेमन्ये । तत्रएकामन्याएका नीला ॥ एकस्मिन्पार्श्वे मन्यानीलाः अपरस्मिन्पार्श्वेद्वेद्वेशिरामर्मणीद्व्यंगुलेवैकल्यकरे तत्रमूकताविकृतिस्वरताऽरसग्राहिता च ॥ १९२॥

नीला और मन्यानाम मर्मोंका वर्णन ॥

कंठकी नाड़ीके दोनोंओर चार नाड़ीहैं उनमें से दो नीला नाम और दो मन्या नाम हैं और एक२ ओर एक नीला और एक मन्यानाम नाड़ी है इसप्रकार दोनों ओर दो अंगुल के प्रमाणवाले दो २ शिराओं के मर्म विकलताकरनेवाले होते हैं उनमें चोट लगने से गूंगापन- स्वरभंग और मधुरादि रसोंकी अज्ञताहोती है ॥ १९२ ॥

फणेघ्राणमार्गमुभयतःमांसमर्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रगंधाज्ञानम् ॥ १९३ ॥

फणनाममर्मोंका वर्णन ॥

नासिका के दोनों ओर आधे अंगुलके प्रमाण वाले फणनाम शिराओंके दोमर्म बिकलता करने वाले होते हैं इनमें चोट लगनेसे गन्धका ज्ञान नहीं होता ॥ १९३ ॥

आवर्तौभ्रुवोरुपरिनिम्नयोःसंधिमर्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रांध्यंदृष्ट्युपघातः १९४ ॥

आवर्त्तनाममर्मोंका वर्णन ॥

भृकुटियोंके ऊपर कुछ खाली आधे अंगुल के प्रमाण वाले आवर्त्तनाम सन्धियों के दो मर्म बिकलता करने वाले होते हैं इनमें चोट लगने से अन्धता और दृष्टिकीमन्दता होती है ॥ १९४ ॥

गुल्फौद्वौमणिबंधौद्वौतथाकूर्च्चौशिरांसिच । रुजाकराणिजानीयाद्दृष्ट्वाचैतानिबुद्धिमान् ॥ १९५ ॥

रोगके उत्पन्न करनेवाले मर्मोंका वर्णन ॥

दो पैरके गट्टे दो कलाई और चार कूर्च के शिर बुद्धिमान् लोगों को रोगों के उत्पन्न करनेवाले यह आठ मर्म जाननेचाहिये ॥ १९५ ॥

गुल्फौघुण्टिकेसंधिमर्मणीद्व्यंगुलौरुजाकरौतत्ररुजापादस्तम्भःखञ्जताच॥१९६॥

गुल्फ नाम मर्मोंका वर्णन ॥

पैरों के घुटने में दो अंगुल के प्रमाण वाले सन्धिके गुल्फ नाम दोमर्म रोगके करनेवाले होते हैं उनमें चोट लगने से मनुष्य लंगड़ाहोजाताहै अथवा पैर जकड़जाते हैं ॥ १९६ ॥

मणिबंधौहस्तप्रकोष्ठसंधीसंधिमर्म्मणीद्व्यंगुलौरुजाकरौ । तत्रहस्तयोःक्रियाराहित्यं ॥ १९७ ॥ मणिबन्धमर्मोंका वर्णन ॥

पहुंचे और पंजेकी सन्धिमें दोअंगुलके प्रमाणवाले मणिबन्ध नाम सन्धियोंके दोमर्म रोग के करने वाले होतेहैं इनमें चोट लगनेसे हाथोंमें कामकरने की शक्ति नहीं रहती है ॥१९७॥

कूर्चशिरांसि । पादसंधेरधःउभयतःएकस्मिन्नपादेद्वेचद्वितीये ॥ एवंचत्वारिस्नायमर्म्माण्येकांगुलानिरुजाकराणितत्ररुजाशोफश्च ॥ १९८ ॥

कूर्चशिर मर्मोंका वर्णन ॥

दोनों पैरोंके चारोंगट्टोंके नीचे एक अंगुलके प्रमाण वाले कूर्चशिर नामचार स्नायुके मर्म पीड़ा करने वाले होतेहैं उनमें चोट लगने से पीड़ा और सूजन उत्पन्न होतीहै ॥ १९८॥

उत्क्षेपौस्थापनीचैवविशल्यघ्नत्रिकम्मतम् १९९ उतक्षेपौशंखयोरुपरिकेशायावत् । स्नायुमर्म्मणीअर्द्धांगुलेतयोर्विद्धयोःसशल्योजीवेत्पाकात्पततिशल्योवाउद्धृतशल्यस्तुम्रियेतअतएव विशल्यमुद्धृतंशल्यंहंतिविशल्यघ्नंमर्म्मस्थापनी । एकाभ्रुवोर्मध्येशिरामर्म्मेदमर्द्धांगुलंविशल्यघ्नम् ॥ २०० ॥

विशल्यघ्न मर्मों का वर्णन ॥

दोउत्क्षेप और एक स्थापिनी यह तीन मर्म बिशल्यघ्न कहलातेहैं १९९ (उत्क्षेप मर्मका वर्णन) मस्तक की दोनों हड्डियोंके ऊपर बालोंतक उत्क्षेप नाम आधे अंगुल के प्रमाण वाले दोस्नायु के मर्म होतेहैं इनमें कांटा आदि लगने से जो वह लगारहै अथवा पककर गिरपड़े तो मनुष्य जीतारहताहै और उसके निकाल लेने से मरजाताहै इसीसे विशल्यघ्न (जिसका कांटानिकालालिया जाय उसका मारनेवाला) नामहै भृकुटियोंके मध्यमें आधे अंगुल के प्रमाण वाला स्थापनी नाम शिरा का मर्म विशल्यघ्नहै ॥ २००॥

सप्तरात्रान्तरेहन्युःसद्यःप्राणहराणिहि । कालान्तरप्राणहरंपक्षेमासे च मारकम् ॥ सद्यःप्राणहरंचांतेविद्धंकालेनमारयेत् । कालान्तरेप्राणहरमन्तेविद्धन्तुदुःखदम् (अन्ते मर्म्मसमीपे) मर्म्माण्यधिष्ठायहियेविकारामूर्च्छन्तिकायेविविधानराणाम् । प्रायेणते कृच्छ्रतमाभवन्तिवैद्येनयत्नैरपिसाध्यमानाः ॥ २०१ ॥

शीघ्र प्राणों के हरने वाले मर्मों में चोटलगनेसे सात रात्रिके भीतर प्राण निकल जाते हैं और कालान्तरमें प्राणों के हरने वाले मर्म एकपक्ष अथवा एक मासमें प्राणों को हरते हैं शीघ्रप्राण हरने वाले मर्म समीप में चोटलगने से कालान्तरमें प्राणों को हरतेहैं और कालान्तर में प्राणहरने वाले मर्म पीड़ा उत्पन्न करतेहैं मनुष्यों के शरीरमें जो रोगमर्मों के ऊपर उत्पन्न होते हैं वह वैद्यों से यत्न पूर्वक चिकित्साकिये जानेपरभी अत्यन्त कष्ट साध्यहोते हैं ॥ २०१ ॥

अथसन्धयः ॥

तेद्विविधाश्चेष्टावन्तःस्थिराश्च ॥ शाखासुहन्व्योःकट्यांचचेष्टावन्तोभवन्तिहि । शषास्तुसन्धयःसर्वेस्थिरास्तज्ज्ञैरुदाहृताः ॥ कथितादेहिनांदेहेसन्धयोद्वेशतेदश । शाखासुतेऽष्टषष्टिश्चकोष्ठेत्वेकोनषष्टिका ॥ ग्रीवायामूर्ध्वदेशेतुत्रयशीतिस्तेप्रकीर्त्तिताः॥२०२॥

सन्धियोंका वर्णन ॥

सन्धि चेष्टा युक्त और निश्चल इन दोप्रकारों की होती हैं हाथ पैर जावड़े तथा कमरमें चेष्टा युक्त और शेष स्थिर होतीहैं मनुष्योंके शरीर में २१० सन्धियां कहीगई हैं हाथ पैरोंमें ६८ कोष्टमें ५९ और ग्रीवा तथाग्रीवा के ऊर्ध्व भाग में ८३ कही गई हैं ॥ २०२ ॥

प्रथमंपरिगण्यन्तेतेषुशाखागताइह । एकैकस्यांपादांगुल्यांत्रयस्त्रयोद्वावंगुष्ठेतेचतुर्दश ॥ गुल्फजानुवंक्षणेष्वेकैकमेवंसप्तदश एकस्मिन्नूसक्थिनिभवन्ति । एतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्यातौ ॥ एवमष्टषष्टिशाखासु ॥ २०३ ॥

उनमें से पहले हाथपैरोंकी सन्धियों का वर्णन किया जाताहै पैरकी एक२ उंगलीमें तीन२ अंगूठेमें २ गट्टे घुटने और वंक्षण में एक२ इस प्रकार एक जंघामें१७हुई इसी रीति से दूसरी जंघा और दोनों भुजाओंमें जाननी चाहिये इस क्रम से सब ६८ हुई ॥ २०३ ॥

अथकोष्ठगतानाह ॥

त्रयःकटीकपालेषुचतुर्विंशतिः पृष्ठवंशेतावन्तएवपार्श्वयो रष्टावुरसिएवमेकोनषष्टिः कोष्ठे ॥ २०४ ॥

कोष्ठकी सन्धियोंका वर्णन ॥

कमर में३ पीठकीरीढमें२४ दोनों पसलियों में२४ और छातीमें८ इस प्रकार ५९ हुई । २०४॥

अथग्रीवोर्ध्वगतानाह ॥

अष्टौग्रीवायांत्रयःकण्ठनाड़ीषुहृदयक्लोमफुप्फुसनिबद्धास्त्वष्टादश। द्वात्रिंशद्दन्तमूलेषु एकःकण्ठमणौनासायांचएकैकःक्षौद्रौ वर्त्ममण्डलगण्डकर्णशङ्खेषुद्वौहनुसन्धौद्वावुपरिष्टात् भ्रुवोःशङ्खयोश्चोपरिष्टात् पंचशीर्षकपालेष्वेकोमूर्द्धीतिकण्ठमणौघण्टिकेति त्रिसिद्धे ॥ २०५ ॥

ग्रीवाके ऊपरकी सन्धियोंका वर्णन ॥

ग्रीवामें ८ कण्ठ में ३ हृदय - क्लोम और फुप्फुस और फुप्फुससे बंधीहुई नाड़ियोंमें १८ दांतों के मूल में ३२ घांटी में १ नासिका में १ नेत्रों के ऊपर के चर्ममें २ कपोलों में २ कानों में २ कनपटी की हड्डियोंमें २ जावडों में २ भृकुटियोंके ऊपर २ कनपटी की हड्डियों के ऊपर २ मस्तक की हड्डियोंमें५ मस्तकमें १ इसप्रकार ८३ हुई ॥ २०५ ॥

एतेसन्धयोऽष्टविधाभवन्ति (तेयथा) कोरोदूखलसामुद्राःप्रतरस्तुन्नसेविनी । काकतुण्डमण्डलंचशङ्खावर्त्तोऽष्टसन्धयः ॥ कोरोगर्त्तः ॥ नलिकेत्यन्येउदूखलःप्रसिद्धःसमुद्रः सम्पुटःसमुद्रएवसामुद्रः अत्रस्वार्थेअण् । प्रतरन्त्यनेनेतिप्रतरोवेलकः तूनस्थेवतूनीर

स्य सेविनीस्तूनीस्तूनसेविनी ॥ काकतुण्डंकाकमुखं । मण्डलंप्रसिद्धंशङ्खस्यावर्तःशङ्खावर्त्तः ॥ एतेयथानामप्रकृतयःसन्धयोभवन्तीत्यर्थः । एषांमंगुलिमणिबन्धगुल्फजानुकूर्परेषु कोराःसन्धयः ॥ कक्षाबंक्षणदन्तेषूदूखलाःअंसपीठगुदाभगनितम्बेषुसामुद्गाः । ग्रीवापृष्ठबंशयोस्तुप्रतराःशिरःकटीकपालेषु तू न सेविन्यः । हन्व्योरुभयतःकाकतुण्डाख्याःकण्ठहृदयक्लोमनाडीषुमण्डलाख्याः ॥ शिरःश्रोत्रशृंगाटकेषुशंखावर्त्ताःअस्थ्नांतु सन्धयोह्येतेकेवलाःसमुदाहृताः । पेशीस्नायुशिराणान्तुसन्धिसंख्या न विद्यते ॥२०६॥

यह सन्धियां आठप्रकार की होती हैं ॥

कोर (गर्त्त और कोई नलिकाभी कहते हैं) उदूखल (उलूखल) सामुद्ग (संपुट) प्रतर (जिस्से कोई वस्तुजासके) तूणसे बिनी (तरकस) काकतुण्ड (काककी चोंच) मण्डल- शंखावर्त्त (शंखकाचक्र) यह सन्धियां नाम के अनुसार प्रकृति वाली होती हैं इनमें से उंगलीकलाई गट्टे घुटने और भुजदंडोंमें कोर - बगल वंक्षण और दांतोंमें उदूखल कन्धे, गुदा , योनि और नितम्बोंमें सामुद्ग ग्रीवा और रीढ़में प्रतर शिर, कटि और शिरकी हड्डीमें तूणसे विनी, जावड़ों में दोनों ओर काकतुण्ड, कण्ठ, हृदय, क्लोम और नाड़ियों में मंडल और शिर, कान तथा शृंगाटकों में शंखावर्तनाम सन्धियां होतीहैं यहसबसन्धियां, केवलहड्डियों की कहीगई हैं पेशी, स्नायु और शिराओंकी सन्धियों की संख्यानहींहै॥२०६॥

अथशिरामाह ॥

सन्धिबन्धनकारिण्योदोषधातुवहाःशिराः । नाभ्यांसर्वाणिबद्धास्ताःप्रतन्वन्तिसमंततः ॥ शरीरंसकलंचैतच्छिराभिःपोष्यतेसदा । प्रणालीभिरिवारामाःकुल्याभिःक्षेत्रधान्यवत् ॥ अत्रप्रणालीभिःकुल्याभिरिति दृष्टान्तद्वयंस्थूलसूक्ष्मशिराभेदात् ॥ २०७ ॥

शिराओंका वर्णन ॥

सधियोंको बांधने वाली और दोष तथा धातुओं को ले चलने वाली शिराहोती हैं वह सम्पूर्ण शिरानाभि में बंधीहुई सब ओर को फैलतीहैं जैसे नालियों से बगीचे और छोटीनदियों से खेत के धान्यपुष्टहोतेहैं उसी प्रकार यह सम्पूर्ण शरीर शिराओंसे सदैव पुष्टहोताहै यहां नाली और छोटी नदियोंके दो दृष्टान्त स्थूल और सूक्ष्म दोप्रकार की शिराओं के भेद प्रकट करनेके लियेहैं ॥ २०७॥

प्रसारणाकुंचनादिक्रियाभिःसततंतनौ । शिराएवोपकुर्वन्तिताःस्युस्सप्तशतानितु ॥ यथाद्रुमदलेसाक्षात्दृश्यन्तेप्रततोःशिराः । तथैवदेहिनोदेहेवर्त्तन्तेसकलेशिराः ॥ नाभिस्थाःप्राणिनांप्राणाःप्राणान्नाभिरुपाश्रिता । शिराभिरावृतानाभिश्चक्रनाभिरिवारकैः ॥ तद्यथा॥ तासांखलुमूलशिराचत्वारिंशत् । तासांदशवातवहाःदशपित्तवहाः दशश्लेष्मवहाः दशरक्तवहाः तासांखलुवातवहानांवातस्थानगतानांसपंचसप्ततिशतानिभवन्ति । तावन्त्यएवपित्तवहाःपित्तस्थानगताः ॥ श्लेष्मवहास्ताःश्लेष्मस्थानगताःरक्तवहायकृत्प्लीहगताःएवंशिरासप्तशतानिभवन्ति ॥ २०८ ॥

शिरा फैलाना और सकोडना आदि क्रियाओंसे शरीरका उपकार करतीहैं और वह संख्यामें७०० हैं जैसे कि वृक्षके पत्तेमें साक्षात् फैली हुई नसें दिखाई देती हैं उसीप्रकार मनुष्यके संपूर्ण शरीरमें शिरा रहतीहैं जीवोंकेप्राण नाभिमें स्थितहैं और वह प्राणोंकी आशय भूतनाभि शिराओंसे ऐसे घिरी हुई है जैसे कि पहियेकी नाह आरोंसे घिरीहुई होतीहै उनमेंसे मुख्य शिरा चालीस हैं दश बायुकी दश पित्तकी दश कफकी और दश रुधिरकी लेचलने वाली हैं बातके स्थानमें प्राप्त बातकी लेचलने वाली शिरा १७५ होती हैं इसी प्रकार पित्त के स्थानमें प्राप्त पित्तकी लेचलने वालीभी शिरा १७५ ही हैं श्लेष्माके स्थानमें प्राप्त श्लेष्माकीले चलने वालीभी १७५ हैं और यकृत् और प्लीह में प्राप्त रुधिर की लेचलने वालीभी १७५ ही हैं इस क्रमसे सब सातसौ ७०० हैं (२०८)

तत्रवातवहाःएकस्मिन्सक्थिनिपंचविंशतिएतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्यातौ। विशेषतःकोष्ठेचतुस्त्रिंशत्तासांश्रोण्यांगुदमेढ्राश्रिताअष्टौ ॥ द्वेद्वेपार्श्वयोः। षट्पृष्ठेदशवन्त्य एवोदरे ६ दशवक्षसि १० एकचत्वारिंशद्जत्रुणः ऊर्ध्वन्तासांचतुर्दश १४ ग्रीवायां ४ चतस्रः कर्णयोः ६ नव जिह्वायां ६ षट् नासिकायां ८ अष्टौ नेत्रयोः ॥ एवंवातवहानां सप्तच सप्ततिशतं भवन्ति । एवंविभागः पित्तवहानामपि विशेषस्तु पित्तवहानेत्रयोर्दश १० कर्णयोर्द्वे २ एवं रक्तवहाःश्लेष्मवहास्तु (षोड़श १६ ग्रीवायां कर्णयोर्द्वे २) एवं शिराणां सप्तशतानि व्याख्यातानि ॥ क्रियाणामप्रतीघात ममोहंबुद्धिकर्मणाम्। करोत्यन्यानगुणांश्चापि स्वाःशिराःपवनश्चरन् ॥ क्रियाणां प्रसारणा कुञ्चनादीनाम्। अमोहंबुद्धि कर्म्मणाम्। बुद्धीन्द्रियाणां मनसो बुद्धेश्च स्वेस्वे विषयज्ञानं करोतीत्यर्थः । अन्यान् गुणान् रसादि व्यापनद्वारा शरीर पोषणादीन् । यदातुकुपितो वायुःस्वाःशिराःप्रतिपद्यते। तदास्यविविधारोगा जायन्तेवातसम्भवाः ॥ २०९ ॥

बायुकी ले चलने वाली शिरा दोनों भुजा और दोनों जंघाओंमें पच्चीस २ होतीहैं कोष्ठमें बिशेष करके चौंतीस होतीहैं उनमेंसे नितम्ब गुदा और लिंगमें ८ दोनों पसलियोंमें दो २ पीठमें ६ उदर में ६ छातीमें १० इसप्रकार चौंतीस होतीहैं जत्रु (कन्धेकी सन्धि) के ऊपर ४१ उनमें से ग्रीवा में १४ कानोंमें ४ जिह्वामें ६ नासिकामें ६ नेत्रोंमें ८ इस प्रकार ४१ हुई इस रीतिसे वायुके ले चलनेवाली शिरा१७५होती हैं इसी प्रकारसे पित्तकी लेचलने वाली शिराओंकाभी बिभाग जानना चाहिये परन्तु विशेषता इतनी है किवे नेत्रों में १० और कानोंमें २ होती हैं इसी प्रकारसे रुधिरकी भी ले चलने वाली होतीहैं और श्लेष्माकी ले चलने वालीभी होतीहैं परन्तु ग्रीवामें १६ और कानोंमें दो होतीहैं इस क्रमसे सातसौ७००शिराओंका वर्णनहै अपनी शिराओंमें विचरताहुआ वायु फैलाना और सकोडना आदि क्रियाओं का नष्टनहोना बुद्धीन्द्रिय मन और बुद्धिका अपने २ विषयमें ज्ञान तथा रसादिकोंको व्याप्त करनेंसे शरीरके पुष्टता आदि अन्य २ गुणोंकोभी करती हैं परन्तु जब बिकार युक्त होकर वायु अपनी शिराओंमें प्राप्त होतीहै तब अनेक बातकेरोग उत्पन्नहोजातेहैं ॥ २०९ ॥

भ्राजिष्णुतामन्नरुचि मग्निदीप्तिमरोगताम् । करोत्यन्यानगुणांश्चापि पित्तमात्मा शिराश्चरन् ॥ अरोगतां पैत्तिकरोगानुत्पत्तिं करोति । अन्यान् गुणान् मेधाबुद्धि दर्शन

शक्त्यादीन् ॥ यदातुकुपितंपित्तं सेवतेस्ववहाःशिराः । तदास्यविविधारोगा जायन्ते पित्तसम्भवाः ॥ स्नेहमंगेषुसंधीनां स्थैर्य्यंबलमरोगताम् । करोत्यन्यान्गुणांश्चापि व लासःस्वाःशिराश्चरन् ॥ अरोगतां श्लैष्मिक रोगानुत्पत्तिं अन्यान् गुणान् बलपुष्ट्या दीन् ॥ यदातुकुपितःश्लेष्मा स्वाःशिराःप्रतिपद्यते । तदास्यविविधारोगा जायन्तेश्ले ष्मसम्भवाः ॥ २१० ॥

अपनी शिराओंमें विचरता हुआ पित्त कान्ति - अन्नमें रुचि - अग्निकी दीप्ति - पित्तके रोगोंका अभाव और मेधा - बुद्धि - दर्शन शक्ति आदि अन्य गुणोंकोभी करताहै परन्तु विकारको प्राप्त हुआ पित्त अपनी शिराओंमें विचरताहै तब अनेक पित्तके रोग उत्पन्नहोते हैं अपनी शिराओं में विचरता हुआ श्लेष्मा शरीरमें चिकनाई- सन्धियोंकी स्थिरता- बल- कफके रोगोंका अभाव और पुष्टता आदि अन्यगुणों को भी करताहै परन्तु विकार को प्राप्तहुआ श्लेष्मा जब अपनी शिराओं में प्राप्त होताहै तब अनेक श्लेष्माके रोग उत्पन्नहोतेहैं ॥ २१० ॥

धातूनांपूरणंवर्णस्पर्शज्ञानमसंशयम् । स्वशिरासुचरद्रक्तं कुर्य्याच्चान्यानगुणानपि ॥ (अन्यान् गुणान् बल पुष्ट्यादीन्) यदातुकुपितंरक्तं सेवतेस्ववहाःशिराः । तदास्यवि विधारोगा जायन्तेरक्तसम्भवाः ॥ २११ ॥

अपनी शिराओंमें चलता हुआ रुधिर धातुओं की पूर्णता- वर्ण- स्पर्शका ज्ञान और बल तथा पुष्टता आदि अन्यगुणों को भी करताहै परन्तु विकारको प्राप्तहुआ रुधिर जब अपनी शिराओं में प्राप्तहोताहै तब रुधिरके अनेक रोग उत्पन्नहोतेहैं ॥ २११ ॥

तत्रारुणावातवहाः पूर्य्यन्तेवायुनाशिराः । पित्तादुष्णाश्चनीलाश्च शीतागौर्य्यःस्थि राःकफात् ॥ असृग्धरास्तुतारक्ताः स्युश्चनात्युष्णशीतलाः ॥ २१२ ॥

जो शिरा वायु से पूर्णरहतीहैं उनका रक्त वर्णहोताहै पित्त से पूर्णहुई शिरा नीलवर्ण और उ- ष्ण कफसे पूर्ण हुई शीतल और गौरवर्ण और रुधिर धारण करनेवाली शिरा न बहुत उष्ण न शीतल रक्तवर्णहोतीहैं ॥ २१२ ॥

अथ स्नायुः तत्रस्नायोः स्वरूपमाह ॥

मेदसःस्नेहमादाय शिरास्नायुत्वमाप्नुयात् । शिराणांहिमृदुःपाकः स्नायूनान्तुततः खर : ॥ स्नायवोबन्धनानिस्यु र्देहमांसास्थिमेदसाम् । संधीनामपियत्तास्तु शिराभ्यः सु दृढ़ाःस्मृताः ॥ नौर्यथाफलकास्तीर्णा बंधनैर्बहुभिर्युता । नियुक्ताऽगाधसलिले भवेद्भार सहाभृशम् ॥ एवमेवशरीरेऽस्मिन् यावन्तःसंधयःस्मृताः । स्नायुभिर्बहुभिर्बद्धा स्तेन भारसहानराः ॥ (फलकैःकाष्ठपट्टैः आस्तीर्णाव्याप्ताः) शतानिनवजायन्ते शरीरेस्नाय वोनृणाम् । तासांविवरणंब्रूमः शिष्याःशृणुतयत्नतः ॥ शाखासुषट्शतानिस्युः कोष्ठेत्रिंश च्छतद्वयम् । ग्रीवायामूर्ध्वदेशेतु स्नायूनांसप्ततिःस्मृताः ॥ २१३ ॥

स्नायुओंके वर्णनमें प्रथम स्नायुका स्वरूपवर्णन करतेहैं ॥

शिरा मेदके स्नेहको लेकर स्नायु कहलातीहैं शिराओंका पाक मृदु और स्नायुका उनकी अपेक्षा

कटोर होताहै स्नायुके द्वाराशरीरके मांस अस्थि- मेद और संधियोंका बन्धनहोताहै इस कारण वह शिराओंकी अपेक्षादृढ होतीहैं जिस प्रकार काष्ठके टुकडोंसे व्याप्त बहुत बंधनों सेयुक्त नौका अथाह जल में छोडी गई बहुत भारकी सहनेवाली होजाती है इसी प्रकारइस शरीर में सम्पूर्ण सन्धियां स्नायुसे बंधी हुई हैं इसीसे मनुष्य भारके सहने वाले होतेहैं मनुष्य के शरीरमें नौसै ९०० स्नायु होती हैं उनका विवर्णकहते हैं हेलोगो तुम इसको श्रवणकरो हाथ पैरोंमें ६०० कोष्ठ में २३० और ग्रीवाके ऊपर ७० होती हैं ॥ २१३ ॥

तत्रशाखा गताःप्राह ॥

एकैकस्यां पादाङ्गुल्यां षट्षट्तास्त्रिंशत् । तावन्त्यएवतल कूर्चगुल्फेषु । तावन्त्य एव जंघायां दशजानुनि । चत्वारिंशदूरौ । दशवंक्षणे । एवंसार्द्ध शतमेकस्मिन् सक्थि नि भवन्ति । एतेनेतरसक्थि बाहूच व्याख्यातौ ॥ २१४ ॥

हाथ पैरोंकी स्नायुओंका वर्णन ॥

पैरकी एक२ उंगलीमें छः छः इस प्रकार सब तीसहुई तलुए, कूचे और टकनोंमें ३० पिंडली में ३० घुटने में १० जंघामें ४० बंक्षण में १०,इसप्रकार सब पैरसे जंघातक में १५० हुई इसी रीति से दूसरी जंघा और दोनों भुजाओंमें भी समझना चाहिये ॥ २१४ ॥

अथ कोष्ठागताःप्राह ॥

षष्ठिःकट्यां तावन्त्यएवपार्श्वयोः । अशीतिःपृष्ठे त्रिंशदुरसि२१५अथ ग्रीवोर्ध्वगताः प्राह ॥षट्त्रिंशद् ग्रीवायाम् । चतुस्त्रिंशन् मूर्ध्नि एवंस्नायूनांनवशतानिभवंति ॥ २१६ ॥

कोष्ठकी स्नायुओंका वर्णन ॥

कमरमें ६० दोनों पसलियोंमें ६० पीठमें ८० छातीमें३०हैं २१५ ग्रीवाके ऊपरकी स्नायुओंका वर्णन ॥ ग्रीवामें ३६ शिरमें ३४ इस प्रकार सब ९०० हुई ॥ २१६ ॥

अथ धमन्यः ॥

धमन्योनाभितोजाता श्चतुर्विंशतिसंख्यया । दशोर्ध्वगादशाऽधोगाःशेषास्तिर्य्यग्ग ताःस्मृताः ॥ २१७॥

धमनियोंका वर्णन ॥

नाभि से उत्पन्नहुई चौबीस २४ धमनी होतीहैं उनमें से दश ऊपरको जाने वाली दश नीचे की जाने वाली और बाकी तिरछी जानेवाली होती हैं ॥ २१७ ॥

तत्रोर्ध्वगाः । शब्दस्पर्शरूप रस गंध प्रश्वा सोच्छ्वासजृम्भितक्षुत् हसित कम्पित रुदित गीतादि विशेषानभि वहन्त्यः शरीरं धारयन्ति । प्रश्वासः अंतः प्रविष्टो वायुः । उच्छ्वासः ऊर्ध्वं गच्छद्वायुः । तास्तु हृदयंगतास्त्रिधा जायन्ते । तास्त्रिंशत्तासां मध्ये द्वे द्वे वात पित्त कफ शोणित रसान्वहतः । तादश अष्टाभिः शब्द रसरूप गंधान् गृह्णा ति पुरुषः ॥ द्वाभ्यां भाषते द्वाभ्यां घोषंकरोति द्वाभ्यां स्वपिति द्वाभ्यां जागर्त्ति द्वेचाक्षु वाहिन्यौ द्वेस्तन्यांस्त्रिया वहतः स्तन संश्रिते तेएवशुक्रं नरस्य स्तनाभ्या मभिवहतःएता

स्त्रिंशत् । एताभिरुदरपार्श्वपृष्ठोरुस्कन्धग्रीवाशिरोबाहवोधार्य्यन्तेचाल्यन्ते च॥२१८॥

उनमें ऊपर जाने वाली धमनी शब्द स्पर्शरूप रसगंध श्वासलेना और छोड़ना-जंभाई-क्षुधा हँसना कांपना रोना और गाना आदि कार्य्योंके द्वारा शरीर को धारण करतीहैं और वह हृदय में जाकर तीन प्रकार की होजाती हैं उनतीसमें से दो२ करके दश बात पित्त कफ रुधिर और रसको लेजाती हैं आठ से पुरुष शब्द रसरूप और गन्ध को ग्रहण करताहै दोसे भाषण करताहै दोसे शब्द करताहै दोसे सोताहै दोसे जागताहै और दोसे अश्रुबहाताहै और दोस्तनोंमें स्थितहोकर स्त्रीके दुग्धको धारण करती हैं और वेही मनुष्यके स्तनों से बीर्य्य को लेजाती हैं इस प्रकार तीसहुई इनके द्वारा उदर पसली पीठ छाती कन्धे ग्रीवा शिर और बाहु धारणकिये जाते हैं और हिलाये झुलायेजातेहैं॥२१८॥

अधोगतास्तु । वातमूत्रपुरीषशुक्रार्त्तवादीनधोवहंति । तास्तुपित्ताशयंगतास्त्रिधाजायंतेतास्त्रिंशत् ॥ तासाम्मध्येद्वेद्वेवातपित्तकफशोणितरसान्वहतः । तादृशद्वेअन्त्रबद्धेअंत्राश्रितेद्वेतोयवहेद्वेवस्तिगतेमूत्रवहेद्वेशुक्रस्यप्रादुर्भावायद्वेताद्विसर्गायतेएवनारीणामार्त्तवप्रादुर्भावायतेऽधिसृजतश्च ॥ द्वेस्थूलांत्रप्रतिबद्धेपुरीषंविसृजतः । अष्टावन्यास्तिर्य्यग्गताःस्वेदमर्पयंति ॥ एतास्त्रिंशतएताभिरधोनाभेःपक्वाशयकटीमूत्रपुरीषवस्तिगुदमेढ्रसक्थीनिधार्य्यन्तेचाल्यंतेच ॥ २१९ ॥

नीचे जानेवाली धमनी बात मूत्र विष्ठा बीर्य्य और रजादिकोंको नीचे लेजातीहैं और वह पित्ताशयमें गई हुई तीनप्रकार की होकर तीस होती हैं उनमेंसे दो२ करके दश बात पित्त कफ और रुधिर को लेजातीहैं आंतोंके आश्रित अन्नकी लेजाने वाली दो जलकी लेजानेवाली दो वस्ति में प्राप्त मूत्र की लेजाने वाली दो बीर्य्य के उत्पन्न होनेके लिये और उसके त्यागकरने के लिये दो २ और वही स्त्रियोंके रजके उत्पन्न करने और त्याग करने के लिये होती हैं और दोस्थूल आंतों से बंधीहुई मल को छोड़तीहैं और शेष आठ तिरछी गईहुई पसीने को छोड़तीहैं इस प्रकार तीसहुई यह नाभि के नीचे पक्वाशय कटि मूत्र विष्ठा वस्ति गुदा लिंग और सन्धि (पूरीटांग) को धारण करती हैं और चेष्टा युक्त करतीहैं ॥ २१९ ॥

तिर्य्यग्गतानांतुचतसृणामेकैकंशतधासहस्रधाचोत्तरोत्तरंविभज्यंते । तास्त्वसंख्येयास्ताभिरिदंशरीरंगवाक्षितांनिबद्धमाततंगवाक्षवत् निबद्धमायतंगवाक्षो वातायनंयथा गवाक्षेबहूनिछिद्राणिभवंतितथाअस्मिन्देहेयावत्शिराः व्याप्यतिष्ठंतीतिभावः निबद्धमायतंगवाक्षितम् । गवाक्षाकारांत्रनिकरयुक्तंकृतामित्यर्थः ॥ तासांमुखानिरोमलग्नानियैर्मुखैःस्वेदःस्रवतिरसञ्चाभिसंतर्पयंत्यंतर्बहिश्च । तैरेवाभ्यंगपरिषेकावगाहनालेपनवीर्य्याण्यत्वचिपक्वान्यन्तःप्रवेशयंति ॥ तैरेवस्पर्शशुभंअशुभंवागृह्णन्तियथास्वभावतः खानिसृणालेषुविसेषुच । धमनीनांतथाखानिरसोयैरभितश्चरेत् ॥ २२० ॥

तिरछी गईहुई चार धमनियों मेंसे एक२ सैकड़ों और हजारों प्रकारसे क्रम पूर्व्वक बिभाग को प्राप्त होती हैं इसीसे उनकी संख्या नहींहै और उनके द्वारा यह शरीर जाली के समान अनेक छिद्रों से युक्त है अर्थात् जैसे जाली में अनेक छिद्र होतेहैं उसीप्रकार इस शरीरमें जाल के समान शिरा व्याप्त

होकर स्थितहैं उनके मुख रोमोंमें लगे होतेहैं जिनमुखों से स्वेद वहताहै और भीतर तथा बाहर रस सींचा जाताहै उन्हीं से अभ्यंग(तैलमर्दन)स्नान सिंचन और आलेपन(चन्दनादिलगाना) के सारांश त्वचामें प्रविष्ट होतेहैं और इन्हींसे अच्छे बुरे स्पर्शका ग्रहण होताहै जैसे कमल दंडों में स्वभावही से छिद्र होते हैं उसी प्रकार नाड़ियों में भी छिद्र होतेहैं जिनसे रस सब ओरको घूमताहै ॥ २२० ॥

पञ्चाभिभूतास्त्वथपञ्चकृत्वःपञ्चेन्द्रियम्पञ्चसुभावयन्ति । पञ्चेन्द्रियं पञ्चसु भावयित्वापञ्चत्वमायान्तिविनाशकाले । धमन्यः कथंभूताः पञ्चाभिभूताःपञ्चभ्यः आकाशादिमहाभूतेभ्यः अभिसमंतात्भूताःउभयात्मकंमनश्चयस्यतंपञ्चेन्द्रियं जीवात्मानंपंचसुइंद्रियाधिष्ठानेषुश्रोत्रादिषुपंचकृत्वःपञ्चवारान् ॥ पर्य्यायेणत्वेकदैवभावयंतिप्रापयंतिपञ्चेद्रियंपञ्चानामिंद्रियाणांसमाहारःपञ्चेन्द्रियंश्रोत्रादितदुपलक्षितंकर्म्मेंद्रियम्मनश्च । पञ्चसुपृथिव्यादिषु ॥ बुद्धींद्रियविषयेषु । तदुपलक्षितेषु हस्तादिषु कर्मेन्द्रिय विषयेषु मंतव्येमनोविषयेचभावयित्वाप्राप्यसंयोज्येतियावत् ॥ विनाशकाले पञ्चत्वंआकाशादिभावंआयान्तिप्राप्नुवंतीत्यर्थः ॥ २२१ ॥

पांच आकाशादि महा भूतों से सब ओर व्याप्त धमनी पंचेन्द्रिय अर्थात् जीवात्माको श्रोत्र आदिक पांच इन्द्रियों में पांच बार प्राप्त करती हैं और पंचज्ञानेन्द्रिय पंचकर्मेन्द्रिय और मनको बुद्धीन्द्रियके पृथ्वी आदिक पांच विषय वा कर्मान्द्रियों के हस्तादि पांचबिषय और मनन करने के योग्य मनके विषयमें प्राप्तकरके विनाश काले में पंचत्व अर्थात् आकाशादि भावको प्राप्त होजातीहै ॥ २२१ ॥

अथकण्डराः ॥

महत्यःस्नायवःप्रोक्ताःकण्डरास्तास्तुषोडश । प्रसारणाकुञ्चनयोर्दृष्टतासांप्रयोजनम् ॥ चतस्रोहस्तयोस्तासांतावन्त्यःपादयोःस्मृताः । ग्रीवायामपितावंत्यस्तावंत्यःपृष्ठसंगताः ॥ तत्रपादहस्तगतानांकण्डराणांनखाःप्ररोहाःग्रीवानिबंधनानामधोभागगतानांप्ररोहोमेढ्रःपृष्ठनिबंधानांप्ररोहोनितम्बमूर्द्धोरुवक्षोऽक्षस्तनपिण्डाः ॥ २२२ ॥

कण्डराओंका वर्णन ॥

बड़ी स्नायु कंडरा कहलातीहैं वह सोलह होतीहैं और उनका प्रयोजन फैलाने और सकोडने में देखा जाताहै उनमेंसे दोनों हाथोंमें दोनों पैरोंमें ग्रीवामें और पीठमें चार २ होतीहैं उनमें से और पैर हाथोंमें रहने वाली कंडराओंसे नख उत्पन्न होतेहैं ग्रीवा में रहने वाली नीचेकी ओर गईहुई कंडराओं से लिंग उत्पन्न होताहै पीठमें रहने वाली कंडराओंसे नितम्ब मस्तक उर छाती -नेत्र और स्तन पिण्ड उत्पन्न होतेहैं ॥ २२२

अथरन्ध्राणि ॥

नेत्रश्रवणनासानांद्वेद्वेरंध्रेप्रकीर्त्तिते । मुखमेहनपायूनामेकैकंरंध्रमुच्यते ॥ दशमंमस्नकेप्रोक्तंरंध्राणीतिनृणांविदुः । स्त्रीणामन्यानिचत्रीणिस्तनयोगर्भवर्त्मनि ॥ २२३ ॥

रन्ध्रोंका वर्णन ॥

नेत्र श्रवण और नासिकामें दो २ रन्ध्र होतेहैं मुख लिंग तथा गुदामें एक२ रन्ध्र होताहै और एक

मस्तकमें होताहै इसप्रकार पुरुषोंके दश रन्ध्र होते हैं पर स्त्रियोंके तीन और होते हैं स्तनोंमें दो और गर्भाशयमें एक ॥ २२३ ॥

अथस्रोतांसि ॥

मनःप्राणान्नपानीयदोषधातूपधातवः ॥ धातूनाञ्चमलामूत्रंमलमित्यादयः स्तनौ ॥ सञ्चरन्तिहियैर्मार्गैस्तानिस्रोतांसिसञ्जगुः । बहूनितानिसंख्यायशक्यंतेनैव भाषितुम् ॥ २२४ ॥

स्रोतोंका वर्णन ॥

मन प्राण अन्न जल दोष (कफादि) धातु उपधातु धातुओं के मल मूत्र विष्ठाइत्यादिक शरीर में जिन मार्गोंसे घूमतेहैं वह स्रोतकहलाते हैं उनके बहुतहोनेके कारण संख्यानहींकीजासकी है॥२२४॥

अथजालानि ॥

निरंतररंध्रानिकरकलितानिसमाहितानिचजालानीवजालानि । जालानितुशिरास्नायुमांसास्थनामुद्भवंतिहि ॥ तानिचत्वारिचत्वारिसर्वान्येवचषोड़शः ॥ तानिमणिबंधगुदसंस्थितानि परस्पर निबद्धानिपरस्परसंश्लिष्टानिपरस्परगवाक्षितानिचेतियैर्गवाक्षितमिदंशरीरम् ॥ अयमर्थः । एकस्मिन्मणिबंधे ॥ एकञ्जालंशिरायाः । अपरंस्नायोस्तृतीयंमांसस्यचतुर्थमस्थनः एवञ्चत्वारिजालानिएतेनेतरमणिबंधौगुल्फौचव्याख्यातौ ॥ गवाक्षितंविरचितंनिरंतरजालाकाररंध्रनिकरपरिकल्पितमित्यर्थः ॥ २२५ ॥

जालोंका वर्णन ॥

जाल के समान निरन्तर अनेक छिद्रों से युक्त और परस्पर मिले हुये जालहोते हैं शिरा- स्नायु मांस और अस्थिसे चार चार जाल उत्पन्नहोते हैं इस प्रकार सब सोलह होते हैं और वह मणिबंध (कलाई) और गुल्फ (गट्टा) में स्थित परस्पर बंधे हुये मिले हुये और छिद्रमय होते हैं जिन से कि यह शरीर छिद्रमय होताहै इसका यह तात्पर्य्यहै कि एक मणिबंध में शिरा स्नायु- मांस और हड्डियोंका एक एक जालहोताहै इसीप्रकार दूसरे मणिबंध और दोनोंगुल्फोंमें भी होते हैं ॥ २२५॥

अथकूर्चाः ॥

कूर्चास्तुहस्तयोर्द्वौतुतावंतौपादयोरपि । ग्रीवायामेकएकस्तुमेढ्रेसर्व्वेऽपिषट्स्मृताः ॥ कूर्चाअपिशिरास्नायुमांसास्थिप्रभावाःस्मृताः ॥ २२६ ॥

कूर्चोंका वर्णन ॥

दोनों हाथोंमें दो दोनों पैरों में दो ग्रीवामें १ और लिङ्ग में एक इस प्रकार सब छः कूर्च होते हैं कूर्चभी शिरा स्नायु- मांस और हड्डियों से उत्पन्नहोतेहैं ॥ २२६ ॥

अथरज्जवः ॥

पृष्ठवंशस्योभयतःमहत्योमांसरज्जवः।चतस्रोमांसपेशीनांबंधनंतत्प्रयोजनम् ॥२२७ ॥

रज्जुओंका वर्णन ॥

रीढ़के दोनों ओर बड़ी २ मांसकी चार रज्जुहोती हैं उनसे मांसकी पेशीबंधी रहती हैं ॥ २२७ ॥

अथसेवन्यः ॥

सेवन्यःसप्ततासांतुभवेयुःपंचमस्तकेाएकाशेफसिजिह्वायामेकाविद्धेऽन्तताक्वचित् २२८॥

सीवनों का वर्णन ॥

सेवनी सात होतीहैं उनमें से मस्तक में ५ लिंग में १ और जिह्वा में १ होती है इनको कभी बिधने न दे ॥ २२८ ॥

अथसंघातः ॥

चतुर्दशास्थ्नांसंघाताःतेषान्त्रयोगुल्फजानुवंक्षणेषु । एतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्यातौ ॥ त्रिकंशिरसोरेकैकम् । अत्रतुत्रिकपदेनबाहूग्रीवास्थिसंघातउच्यते ॥ २२९ ॥

संघातों का वर्णन ॥

हड्डियोंके चौदह १४ संघातहोतेहैं उनमेंसे गुल्फ - घुटना - और बंक्षणमें एक २ होते हैं इसी प्रकार दूसरे पैर और दोनों हाथोंमें जानने चाहिये-त्रिक (बाहु और ग्रीवाकी हड्डियोंका समूह) और शिर में एक २ ॥ २२९ ॥

अथसीमंताः ॥

चतुर्दशैवसीमंताःकथितामुनिपुंगवैःसंघाताःक्षोभितायैस्तुसीमान्तास्ते प्रकीर्तिताः ॥ यैरस्थिभिः ॥ २३० ॥

सीमन्तोंका वर्णन ॥

मुनि गणोंने चौदह सीमन्त कहेहैं जिन अस्थियों के द्वारा संघात सिवे रहते हैं वह सीमन्त कहातेहैं ॥ २३० ॥

अथत्वचः ॥

क्षीरस्यपच्यमानस्ययथासन्तानिकाभवेत् । पच्यमानस्यशुक्रस्यरजसश्चतथात्वचः ॥ पूर्व्वावभासिनीतासांसिध्मस्थानंचसास्मृता ॥ २३१ ॥

त्वचाओं का वर्णन ॥

जैसे औटे हुए दूधपर मलाई पड़जाती हैं उसी प्रकार पकेहुए वीर्य्य और रजसे त्वचा उत्पन्न होती है उनमें से पहली अवभासिनीहै वह श्वेत कुष्ठ का स्थान कहीगई है ॥ २३१

अथावभासिनी ॥

भ्राजकेनपित्तेनावभासनात् । परिणाहेनविस्तारितस्यव्रीहेर्विंशतिभागेऽष्टादशभागःप्रमाणन्तस्याः ॥ व्रीहिरत्रयवः । सासिध्मपद्मकण्टकयोरधिष्ठाना ॥ द्वितीयालोहिताज्ञेया तिलकालकजन्मभूः । सा यव षोड़श भाग प्रमाणा तिलकालकन्यक्ष व्यंगा नामधिष्ठानम् । तृतीयातुभवेच्छ्वेता स्थानञ्चर्म्मदलस्यसा । सा यव द्वादशभाग प्रमाणा चर्म्मदला जगल्लिका मशकाना मधिष्ठानम् । ताम्राचतुर्थीविज्ञेया किलासश्वित्रभूमिका ॥ (यवाष्टभाग प्रमाणा) पञ्चमीवेदिनीनामा पञ्चभागाप्रमाणिका । विसर्पकुष्ठाधिष्ठानाज्ञेया षष्ठीतुलोहिता ॥ विख्यातारोहिणी षष्ठीग्रन्थिगण्डापचीस्थितिः । व्रीहिमात्रप्रमाणासाग्रन्थिगण्डापचीस्थितिः ॥ व्रीहिप्रमाणाग्रन्थ्यपचीगलमाण्डमालार्बुद

ऽलीपदानामधिष्ठानम् । स्थूलात्वक्सप्तमीख्याताविद्रध्यादेःस्थितिश्चसा ॥ साव्रीहिद्वय प्रमाणा । तदेवोक्तंशार्ङ्गधरेणस्थूलाव्रीहिद्विमात्रयेति सप्तापित्वचःसमुदिताविंशतितम भागोनषट्यवप्रमाणा ॥ षट्यवप्रमाणन्तुअंगुष्ठोदरतुल्यम् । यतउक्तम् । उदरेष्वंगुष्ठ प्रमाणंगाढमवविध्येदिति ॥ एतत्प्रमाणंमांसलेषुस्थूलेषुबोद्धव्यम् । नतुललाटसूक्ष्मां गुल्यादिषु ॥ २३२ ॥

अवभासिनीका वर्णन ॥

भ्राजक नाम पित्त के द्वारा प्रकाशित होने से अवभासिनी कहलातीहै उसका प्रमाण जौकी लंबाई के $\frac{१५}{३०}$ भागहै और वह श्वेतकुष्ठ और पद्मकंटक रोगका स्थानहै दूसरी जौके सोलहवें भाग की प्रमाण वाली होतीहै और वह तिलकालक न्यच्छ और व्यंगोंका स्थानहै तीसरी जौके बारहवें भागकी प्रमाणवाली श्वेताहै वह चर्मदल जगल्लिका और मस्सोंका स्थानहै चौथी जौके आठवें भागकी प्रमाण वाली ताम्राहै वह किलास और शित्र नामकुष्ठ का स्थानहै वेदिनीनाम पांचवीं जौके पांचवें भाग की प्रमाणवाली बिसर्प और कुष्ठका स्थानहै छठीरोहिणी नाम एक जौके प्रमाण वालीहै यह ग्रंथि अपची गलगंड गंडमाला अर्बुद और श्लीपदका स्थानहै सातवीं स्थूलाहै यह दो जौके प्रमाणवाली और विद्रधि आदि रोगोंका स्थानहै और शार्ङ्गधरने भी कहाहै कि स्थूल नामत्वचादो जौके प्रमाण वाली है यह कहीहुई सातोंत्वचा सबमिलकर बीसवें भाग रहित छःजौ के प्रमाणहैं इनका प्रमाण अंगूठे के मध्यभागके समानहै क्योंकि कहाहुआ है कि उदरमें अंगूठेके समान बेध करना चाहिये परन्तु यह प्रमाण स्थूल और मांसयुक्त स्थानोंहीमें जानना चाहिये क्योंकि ललाट और छोटी अंगुलियोंमें यह होही नहीं सक्ता ॥ २३२ ॥

अथलोमानिलोमकूपाश्च ॥

अस्थनांमलानिलोमानिअसंख्यानिभवन्तिहि । सन्तियावन्तिलोमानितावन्तोलोमकूपकाः ॥ अंगप्रत्यंगनिर्वृत्तिस्वभावादेवजायते । सन्निवेशश्चगात्राणांनात्रास्तेकारणान्तरम् ॥ निर्वृत्तिःसिद्धिःस्वभावात्तईश्वरात् । सन्निवेशोरचनाविशेषः ॥ अंगप्रत्यंग निर्वृत्तौयेभवंत्यगुणागुणाः । तेतेगर्भस्यविज्ञेयाधर्म्माधर्म्मनिमित्तजाः ॥ दंतानांपतनं जन्मपुनःपातेत्वसम्भवः । तलेष्वनुद्भवोलोम्नामेतत्सर्वंस्वभावतः ॥ २३३ ॥

रोम और रोमकूपोंका वर्णन ॥

रोम हड्डियोंके मलहैं वह असंख्य होतेहैं और जितने रोम होते हैं उतनेही रोमकूप होते हैं अंग और प्रत्यंगों की उत्पत्ति और शरीरकी रचना विशेषमें ईश्वरीय स्वभावही कारणहै और कोई कारण नहीं है- गर्भस्थ सन्तानकी उत्पत्ति के समय जो अंग और प्रत्यंगोंके दोष गुणहोते हैं उनमें धर्म और अधर्महीं कारण है- दांतोंका गिरकर फिर उत्पन्न होना और फिर गिरकर उत्पन्न न होना और तलुओंमें रोमोंका उत्पन्न न होना यहसब स्वभावही से होता है ॥ २३३ ॥

गर्भेमासिमासियद्भवति तदाह ॥

गर्भाशयेनिपतितेयादृक्शुक्रंतथात्तवम् । तादृगेवद्रवीभूतंप्रथमेमासितिष्ठति ॥ मरुत्पित्तकफैस्तत्स्थःपच्यमानोद्वितीयकेकललस्थमहाभूतंसमुदायोधनीभवेत् ॥ अन्नमरुत्

कफयोरपिपाकहेतुत्वेतयोरत्यूष्मणोऽनधिकरत्वात् । यतउक्तंचरके । भौमाप्याग्नेयवा यव्याःपंचोष्माणःसनाभसाः ॥ २३४ ॥

गर्भमेंजोमास २ मेंहोताहै उसका वर्णन ॥

गर्भाशयमें जिसप्रकार का वीर्य्य और रजगिरताहै प्रथम मासमें उसी प्रकार द्रवरूपरहताहै दूसरे मासमें गर्भाशयमें रहने वाले वातपित्त और कफकी ऊष्मा के द्वारा परिपाकको प्राप्तहोकर जरायुमें प्राप्तपंच महाभूतात्मक वीर्य्य और रज गाढ़ा होजाता है यहां परिपाकमें वायुऔर कफभी कारण हैं क्योंकि उनमेंभी ऊष्मारहती है क्योंकि चरकमें कहाहै कि पृथ्वी संबंधी जलसम्बन्धी अग्नि संबंधी-वायुसंबंधी और आकाश संबंधी पांच ऊष्मा होती हैं ॥ २३४ ॥

तृतीयेमासिशिरसोहस्तयोःपादयोस्तथा । पिण्डकाःपंचसिध्यंतिसूक्ष्माश्चावयवास्तनोः ॥ सर्व्वाण्यंगान्यपांगानिचतुर्थेस्युःस्फुटानिहि । हृदयेव्यक्तभावेनव्यजतेचेतनापिच ॥ तस्माच्चतुर्थगर्भस्तुनानावस्तूनिवांछति । ततोद्विहृदयायत्स्यान्नारीदौहृदिनी मता ॥ दौहृदावह्रियाकुब्जकुनिपण्डंचवामनम् । विकृताक्षमनक्षंवापुत्रंनारीप्रसूयते ॥ यतःस्त्रीदौहृदंप्राप्यवीर्य्यवन्तंचिरायुषम् । पुत्रंप्रसूयतेतस्मात्तस्मैवाञ्छितमर्प्पयेत् ॥ इंद्रियार्थास्तुतौपान्यान्भोक्तुमिच्छतिगर्भिणी । गर्भबाधाभयात्तासांभिषगाहृत्यदापयेत् । भोक्तुमुपभोक्तुमित्यर्थः ॥ साप्राप्तदौहृदापुत्रंजनयेतगुणान्वितम् । अलब्धदौहृदागर्भेल भेतात्मनिवामयम् ॥ येषुयेष्विंद्रियार्थेषुदौहृदेसावमानिता । प्रसूयतेसुतंसार्त्तिस्तस्मिंस्तस्मिंस्तदिंद्रिये ॥ सार्त्तिसव्यथाम् ॥ २३५ ॥

तृतीय मासमें मस्तक दोहाथ और दो पैरोंके सूक्ष्मअंग प्रत्यंग वाले पांच पिण्ड उत्पन्न होते हैं-चौथे मांसमें संपूर्ण अंग और प्रत्यंग प्रकाशित होते हैं और हृदयके उत्पन्न होनेसे चैतन्यताभी होतीहै इसी कारणसे चौथे मासमें गर्भनानाप्रकारकी वांछाकरता है इसीसे दो हृदय वाली स्त्री दौहृदिनी कहलाती है- दौहृद (गर्भिणी स्त्रीकाअभिलाष) के अनादरसे स्त्री कुबड़ा- पंगुला- लूला- बौना-विगड़ेनेत्र वाला अथवा अंधा पुत्र उत्पन्न करती है- गर्भिणी दौहृदको पाकर बलवान और बड़ी आयुवाली सन्तानको उत्पन्न करती है इसहेतुसे उसका अभिलाष पूराकरना चाहिये- गर्भिणी स्त्री जिस २ इन्द्री के विषयकी अभिलाषाकरे वह संपूर्ण गर्भकी बाधाके भयसे लाय २ करवैद्यकोदि लवाना उचितहै गर्भिणी दौहृदको पाकर गुणवान् पुत्र उत्पन्न करती है और दौहृदको न पाकर अपनेमें अथवा गर्भमें कुछभयको प्राप्तहोती है- गर्भिणी जिस २ इन्द्रीके विषय में अपमानको प्राप्त होती है उसी २ इन्द्री से पीड़ायुक्त पुत्रको उत्पन्न करती है ॥ २३५ ॥

दौहृदस्यविशेषफलमाह ॥

राजसंदर्शनेयस्यादौहृदंजायतेस्त्रियः । अर्थवंतंमहाभागंकुमारंसाप्रसूयते ॥ दुकूल पट्टकौशेयभूषणादिषुदौहृदात् । अलङ्कारैषिणंपुत्रंललितंसाप्रसूयते ॥ आश्रमेसंयतात्मानंधर्म्मशीलंप्रसूयते । देवताप्रतिमायंतुप्रसूतेपार्षदोपमम् ॥ आश्रमेतपस्विनामाश्रमेदौहृदात्पार्षदोपमम् प्रमथोपमम् ॥ दर्शनेव्यालजातीनांहिंसाशीलंप्रसूयते । रक्ता

क्षलोमशशूरंमहिषामिषदौहृदात् ॥ वाराहमींसेग्वह्नालुंशूरंसंजनयेत्सुतम् । मृगमांसे नुतच्छीलंविक्रांतंवनचारिणम् ॥ अत्रोऽनुक्तेषुयानारीदौहृदविदधातिहि । शरीराचार शीलैःसासमानंजनयिष्यति ॥ २३६ ॥

जो गर्भिणी को राजाके दर्शन की इच्छाहो तो धनवान् और महाभाग्यवान् पुत्र उत्पन्न होता है- रेशमी वस्त्र और भूषणादिकोंके अभिलाषसे मनोहर आभूषण की इच्छावालापुत्र उत्पन्न होता है- आश्रम की अभिलाषासे धर्मवान् और जितेन्द्रिय पुत्र उत्पन्नहोता है देवताओंकी प्रतिमाओं के अभिलाषासे प्रमथ (शिवजीकेपार्षद) के समान पुत्र उत्पन्नहोता है- सर्पादिकों के दर्शन की अभिलाष से हिंसक पुत्र उत्पन्न होताहै- भैंसेके मांस की इच्छासे शूरवीर रक्तनेत्र और रोमयुक्त सन्तान उत्पन्नहोती है- शूकर के मांसकी इच्छासे बहुतसोनेवाला और शूरवीर पुत्र उत्पन्न होताहै मृगके मांस की इच्छासे शीघ्र गामीपराक्रमी और बनमें घूमनेवाली सन्तान उत्पन्न होती है इनके सिवाय और मांसादिकोंके अभिलाष से उसीप्रकार के शरीर आचार और स्वभाववाली सन्तान उत्पन्नहोती है- ॥ २३६ ॥

पंचमेमानसंषष्ठेबुद्धिश्चातिप्रबुध्यते । सर्व्वाण्यंगानुपांगानिभृशंव्यक्तानिसप्तमे ॥ ओजोऽष्टमेसंचरतिमातापुत्रोमुहुःक्रमात् । तेनतौम्लानमुदितौस्यातांजातौनजीवति ॥ नजीवंत्यष्टमेजातस्तत्रौजोनस्थिरंयतः । तथानैर्ऋत्यभागत्वाद्दापयेतद्बलिंततः ॥ नैर्ऋत्यायभागश्चबालेषुरुद्रेणदत्तः । यत्उक्तंकुमारतंत्रे । अष्टमेमासिनैर्ऋत्यायमांसौदनं बलिंदापयेदिति ॥ २३७ ॥

पांचमें महीने में मनछठे में बुद्धि सातवे में संपूर्ण अंग और उपांग अत्यन्त प्रकाशित होते हैं और आठवें महीने में माता और पुत्रका ओजनामधातु एकका दूसरे में वारंवार घूमता रहता है इसीसे वह दोनों म्लान और प्रसन्न हुआ करते हैं इसकारण से अष्टम महीने में उत्पन्नहुई सन्तान नहींजीती क्योंकि ओजधातु स्थिर नहीं रहती- आठवें महीने में नैर्ऋत्य दिशाके देवता को बलि देना चाहिये क्योंकि वह उसके अंशका भागीहै और शिवजी ने भी बालकोंकी रक्षा के लिये उस को भाग दियाहै- कुमार तंत्रमें भी कहा है कि आठवें महीने में नैऋत्यके अधिष्ठाता को मांस और भातकी बलिदेनी चाहिये- ॥ २३७ ॥

नवमेदशमेमासिनारीबालंप्रसूयते । एकादशेद्वादशेवाततोऽन्यत्रविकारतः ॥ २३८ ॥

नवम- दशम एकादश अथवा द्वादश मासमें भी गर्भिणी पुत्रको उत्पन्न करती है और इससे आगे विकार से उत्पन्न हुआ जानो- ॥ २३८ ॥

गर्भेयदंगंप्रथमंभवतितदाह ॥

शिरोभवतिचांगस्यपूर्वमित्याहशौनकः । शिरस्येवोपजायंतेप्रधानानीन्द्रियाणिय त् ॥ हृदयंजायतेपूर्वंकृतवीर्य्योऽवदन्मुनिः । बुद्धेश्चमनसश्चापियतस्ततस्थानमीरित म् ॥ पाराशर्य्यइतिप्राहपूर्वंनाभिसमुद्भवः । प्राणीयत्रस्थितोदेहंवर्द्धयत्यूष्मसंयुतः ॥ पाणिपादंभवेत्पूर्वमार्कण्डेयमुनेर्मतम् । देहिनःसकलाश्चेष्टाःपाणिपादाश्रयायतः ॥ प्रथमं

जायतेकोष्ठंततःसर्व्वाङ्गसम्भवः । एतत्तुकथयामासगौतमोमुनिपुंगवः ॥ सर्व्वाण्यां गान्युपाङ्गानियुगपत्सम्भवंतिहि । सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यंतेमतंधन्वंतरेरिदम् ॥ आम स्यानुफलेभवंतियुगपत्मांसास्थिमज्जादयो लक्ष्यंतेनपृथक्पृथक्तनुतयापुष्टास्तए वस्फुटाः । एवंगर्भसमुद्भवेत्ववयवाःसर्वेभवंत्येकदा लक्ष्याःसूक्ष्मतयानतेप्रकटतामायां तिवृद्धिंगताः ॥ मज्जादयःइत्यादिशब्देनत्वक्केशरमज्जत्वगंकुरवृत्तानिगृह्यंते ॥२३९ ॥

शरीर में जो अंग पहले उत्पन्न होता है उसका वर्णन ॥

गर्भ में प्रथमशिर उत्पन्नहोताहै क्योंकि शिरसे ही प्रधान इन्द्री उत्पन्नहोतीहैं यह शौनकका मतहै प्रथम हृदय उत्पन्नहोता है क्योंकि वह बुद्धि और मनका स्थानहै यह कृतवीर्य्यमुनिका मतहै-प्रथम नाभि उत्पन्नहोतीहै क्योंकि उसमें स्थित ऊष्मायुक्त प्राण देहको बढ़ाते हैं यह व्यासजीका मत है - प्रथम हाथ और पैर उत्पन्न होते हैं क्योंकि देहीकी सब चेष्टाहाथ और पैरोंके आधीन है यह मार्कण्डेयमनिका मतहै- प्रथम कोष्ठ उत्पन्नहोता है इसके पीछे सब अंग उत्पन्नहोते हैं यह मुनियों में श्रेष्ठ गौतमजीका मत है- परन्तु यह सबठीक नहींहै कि संपूर्ण अंग और उपांग इकट्ठे उत्पन्न होते हैं परन्तु सूक्ष्मतासे मालूम नहीं पडते यह धन्वन्तरिजीका मतहै जैसे आमके छोटेसे छोटे बडेसूक्ष्म फल में गूदा- गुठली- और बिजली आदि इकट्ठेही उत्पन्नहोते हैं परन्तु अतिसूक्ष्मतासे अलग २ नहीं मालूम होते हैं और पुष्टहोनेपर वही प्रकटहोजाते हैं इसीप्रकार गर्भके उत्पन्नहोने के समय संपूर्ण अंग इकट्ठेही उत्पन्नहोते हैं परन्तु वह सूक्ष्मतासे मालूम नहीं पड़ते और बढ़नेपर प्रकट होजाते हैं- ॥ २३९ ॥

अथशरीरेपितृजमातृजरसजात्मजाभागाउच्यंते ॥

तत्रकेशाश्मश्रुचलोमानिनखादंताःशिरास्तथा । धमन्यःस्नायवःशुक्रमेतान्निपितृजा निहि ॥ मांसासृक्मज्जमेदांसियकृत्प्लीहांत्रनाभयः । हृदयंचगुदञ्चापिभवन्त्येतानि मातृतः ॥ शरीरोपचयोवर्णोबलंदेहस्थितिस्तथा । रसादेतानिजायंतेभिषजोमुनयोज गुः ॥ ज्ञानंविज्ञानमायुश्चसुखदुःखादिकंतथा । इंद्रियाणिचसर्व्वाणिभवंत्येतानिचात्म नः ॥ दुःखादिकमित्यादिशब्देननानायोनिजन्मादिकमुच्यते । आत्मनःआत्मसन्निकर्षात्नत्वात्मनोजायंतेआत्मनोनिर्विकारात्प्रकृतिभावानुपेतः ॥ २४० ॥

शरीरमें पितामाता रस और आत्मासे उत्पन्नहुए भागोंको कहतेहैं ॥

केश दाढी रोम नख दन्त शिरा धमनी स्नायु और वीर्य्य यह पिता से उत्पन्न होते हैं मांस रुधिर मज्जा मेद यकृत् प्लीहा आंत नाभि हृदय और गुदा यह सब माता से उत्पन्न होतेहैं शरीरकी वृद्धि वर्ण बल और देहकी स्थिति यह रससे उत्पन्न होतेहैं ऐसा वैद्य मुनियोंने कहाहै ज्ञान विज्ञान आयु संपूर्णइन्द्री सुख दुःख (नानायोनिजन्मादि) आदि यह सब आत्मा से उत्पन्न होते हैं अर्थात् आत्माके संयोगसे उत्पन्न होतेहैं क्योंकि आत्मानिर्विकार और प्रकृतिके भावों से रहितहै॥२४०॥

गर्भस्यकिंकिंविशिष्टोपकारकंतत्तदाह ॥

अग्नीसोमौमहीवायुर्नभःसत्त्वंरजस्तमः । पञ्चेन्द्रियाणिभूतात्मागर्भंसञ्जीवयंतिहि ॥

अग्निरत्रपाचकालोचकरञ्जकभ्राजकसाधकानामृतथापाञ्चभौतिकानां तथासप्तधातुगतानामग्नीनाम्।शक्तिरूपतयावस्थितोवाचोधिदेवत्वंप्राप्तोवोद्धव्यः॥ पाचकादिकर्म्मणाजीवयतिसोमश्चपञ्चात्मकश्लेष्मरसशुक्रादीनां सोमात्मकानांभावानांरसेन्द्रियस्य चशक्तिरूपतयावस्थितोमनसश्चाधिदैवत्वंप्राप्तोबोद्धव्यः।सचसौम्यधातोरोजःप्रभृतेः पोषणेनपवनपावकसंशुष्कभागस्यार्द्रताविधानेनजीवयतीतिशेषः महीचजलेनछिन्नस्यापिकठिनविधानेनवायुर्दोषधातुमलांगोपांगादीनां सञ्चारणेनोच्छ्वासनिःश्वासाभ्यांमनोरूपतयापरिणतंजीवात्मनः शरीरान्तरेजीवनग्रहणमोक्षणेहेतुरितितदपिजीवयतिपञ्चेंद्रियाणिश्रोत्रत्वङ्नेत्रजिह्वाघ्राणानिशब्दादिग्रहणकर्म्मणा॥ भूतात्माकर्म्मपुरुषःसचाशेषस्यैवराशेश्चैतन्यहेतुर्जीवयतीति॥ २४१॥

गर्भके विशेष उपकारियोंका वर्णन॥

अग्नि सोम पृथ्वी वायु आकाश सत्त्व रज तम पांचइन्द्री और भूतात्मा इनके द्वारा गर्भ जीताहै यहां पाचक आलोचक रंजक भ्राजक साधक नाम पित्तों की पंचमहा भूत संबंधी अग्नियों की और सातों धातुओं में प्राप्त अग्नियोंकी शक्तिरूपसे स्थित वाणीके अधिदेवत्वको प्राप्त अग्नि जाननी चाहिये और वह पाचक आदि कार्य्योंसे गर्भको जिलातीहै और सोम(जल)पांच श्लेष्मा रस और वीर्य्यादि संबंधी सोमात्मकभावों के और रसना इन्द्रीकी शक्तिरूपसे स्थित मनके अधिदेवत्वको प्राप्त जानना चाहिये वह सोम संबंधी ओजादिक धातुओं के पोषण से और वायु तथा अग्निके द्वारा सूखे हुए भागके आर्द्र करने से गर्भको जिलाताहै और पृथ्वी जलके द्वारा आर्द्रहुए भागको कठिन करने से गर्भको जिलातीहै और वायु दोष धातु मल अंग और उपांगादि के चलाने से और श्वास के भीतर लेने और छोडनेसे गर्भको जिलाती है और आकाश वायु तथा अग्निके द्वारा विदीर्ण हुए स्रोतोंको ऊपर नीचे और तिरछे अवकाश देने से गर्भ को जिलाताहै सत्त्व रज और तम मनरूपसे बदलकर जीवात्माके शरीरान्तरमें जीव के ग्रहण और त्याग में हेतु होने के कारण से गर्भ को जिलाते हैं और कान त्वचा नेत्र जिह्वा और नासिका यह पांचों इन्द्री शब्दादिकों के ग्रहण करने से गर्भ को जिलाती हैं जीवात्मा अर्थात् कर्म पुरुष संपूर्ण जगत्को चैतन्यकरके गर्भको जिलाताहै॥ २४१॥

अपरंगर्भस्यजीवनोपायमाह॥

गर्भस्यनाभिनाड्यातुनाड़ीरसवहास्त्रियाः। संलग्नातेनगर्भस्यवृद्धिर्भवतिनित्यशः॥ निःश्वासोच्छ्वाससंक्षोभस्वप्नांशानुसोऽधिगच्छति। मातुर्निश्वसितोच्छ्वाससंक्षोभः स्वप्नसम्भवात्॥ सङ्क्षोभःसञ्चलनंमातानिश्वासादिकायाश्चेष्टाःकरोतितास्तागर्भोऽपिकरोतीत्यर्थः॥ २४२॥

गर्भके जीनेका दूसरा उपाय॥

स्त्रीकी रसकी लेजाने वाली नाड़ी गर्भकी नाभिकी नाडीसे लगी होती है इस्से गर्भकी नित्य वृद्धि होतीहै माता के श्वास लेने और छोडने चलने और सोने से गर्भभी श्वासलेता और छोड़ताहै चलता और सोताहै अर्थात् जो२ चेष्टामाता करतीहै वह सब गर्भ भी करताहै॥ २४२॥

अथगर्भंवृद्धेर्हेतुमुपायमाह ॥

गर्भस्यनाभिमध्येतुज्योतिःस्थानंध्रुवंस्मृतम् । तदाधमतिवातश्चदेहस्तेनास्यवर्द्धते ॥ उष्णेनासहितश्चापिदारयत्यस्यमारुतः । ऊर्ध्वन्तिर्य्यगधस्ताच्चस्रोतांसितुयथा तथा ॥ यथादारयतिविस्तारयति । तथातथादेहीवर्द्धयतिइतिपूर्वेणान्वयः ॥२४३ ॥

गर्भकी वृद्धिके हेतुरूपउपाय को कहतेहैं ॥

गर्भकी नाभिके मध्यमें तेजका स्थान होताहै और बायु उसको धोंकती है इस्से उसका शरीर बढ़ताहै ऊष्मा सहित वायु ऊपर नीचे और तिरछे तथा स्रोतों को जैसे२विस्तारित करताहै वेसेही वैसे वह बढ़ताहै ॥ २४३ ॥

दृष्टिरोमकूपानामवृद्धिमाह ॥

दृष्टिश्चरोमकूपाक्षनवर्द्धन्तेकदाचनाध्रुवाण्येतानिमर्त्यानामितिधन्वंतरेर्मतम्॥२४४॥

दृष्टि और रोमकूपों के न बढ़नेका वर्णन ॥

दृष्टि और रोमकूपकभी नहीं बढ़तेहैं क्योंकि वह मनुष्यों के सदैव एक रूप से रहते हैं यह धन्वन्तरि जीका मतहै ॥ २४४ ॥

नखकेशानांसदावृद्धिमाह ॥

शरीरेक्षीयमाणेऽपिवर्द्धेतेद्वाविमौसदा । स्वभावंप्रकृतिंकृत्वानखकेशाविितिस्थितिः ॥ प्रकृतिंकृत्वाकारणंकृत्वास्थितिर्मर्य्यादा ॥ २४५ ॥

नख और केशोंकी सदैव वृद्धिका वर्णन ॥

शरीरके क्षीणहोनेपर भी यहनख और केशदोनों स्वभावके कारणसदैव बढ़तेहैं यह मर्य्यादाहै॥२४५॥

अचेतनान्यंगान्याह ॥

चेतनानामधिष्ठानंमनोदेहश्चसेन्द्रियः । केशलोमनखाग्रांतर्मलद्रव्यगुणैर्विना ॥ २४६॥

चेतना रहित अंगोंका वर्णन ॥

मन और इन्द्रियों करके सहित देह चेतनाका स्थान है और केश- रोम, नखाग्र, भीतरका मल द्रव्य और गुण अचेतनहैं ॥ २४६ ॥

गर्भस्य वातविण्मूत्रोत्सर्गा करणे कारणमाह ॥

वातालपत्वादयोगाच्च वायोःपक्वाशयस्यच । वातमूत्रपुरीषाणि गर्भस्थोनविमुञ्चति ॥ (अयोगात् । ईषद्योगात्) ॥ २४७ ॥

गर्भके वायु विष्ठा और मूत्र के त्यागनकरनेका वर्णन ॥

वायुकी अल्पता और पक्वाशयमें गये हुये वायुके अल्पयोग होने से गर्भमें स्थित जीव बायु मूत्र और बिष्ठाको नहीं करताहै ॥ २४७ ॥

गर्भारोदने कारणमाह ॥

जरायुणामुखेच्छन्नेकण्ठेचकफवेष्टिते।वायोर्मार्गनिरोधाच्च नगर्भस्थःप्ररोदिति॥२४८॥

गर्भके न रोनेका कारणं ॥

जरायुके द्वारा मुख के ढकेरहने कफके द्वारा कण्ठ के घिरेहोने और बायुके मार्गके न होने से गर्भ का जीव नहीं रोताहै ॥ २४८ ॥

अथ गर्भवती कृत्याकृत्यानि ॥

गुर्विणीप्रथमादह्नः प्रहृष्टाभूषिताशुचिः । भवेच्छुक्लाम्बरधरा गुरुविप्रार्च्चनेरता ॥ भोज्यन्तुमधुरप्रायं स्निग्धंहृद्यन्द्रवंलघु । संस्कृतंदीपनीयन्तु नित्यमेवोपयोजयेत् ॥ गुर्विणीनतुकुर्वीत व्यायाममपतर्पणम् । व्यवायञ्चनमेवेत नकुर्यादतितर्पणम् ॥ रात्रौजागरणंशोकं यानस्यारोहणंतथा । रक्तमोक्षंवेगरोधं नकुर्य्यादुत्कटासनम् ॥ दोषाभिघातेगर्भिण्या योयोभागःप्रपीड्यते । ससभागःशिशोस्तस्य गर्भस्थस्यप्रपीड्यते ॥ मलिनां विकृताकारां हीनांगीन्नस्पृशेत्स्त्रियम् । नजिघ्रेदपिदुर्गन्धं नपश्येन्नयनाप्रियम् ॥ वचांसिनापिशृणुयात्कर्णयोरप्रियाणिच । नात्रंपर्य्युषितंशुष्कं भुञ्जीतक्वथितंनच ॥ चैत्यश्मशानवृक्षांश्च भावांश्चाप्ययशस्करान् । बहिर्निष्क्रमणंक्रोधं शून्यागारञ्चवर्ज्जयेत् ॥ नोच्चैःब्रूयान्नतत्कुर्य्याद् येनगर्भोविनश्यति । तैलाभ्यंगोद्वर्तनञ्च नात्यर्थंकारयेदपि ॥ नामृद्वास्तरणंकुर्य्या न्नात्युच्चंशयनासनम् । एतांस्तुनियमान्सर्वान् यत्नात्कुर्व्वीतगुर्विणी ॥ २४९ ॥

गर्भवती की कृत्य और अकृत्य ॥

गर्भवती स्त्री पहले दिनसे प्रसन्न आभूषण युक्त, पवित्र, श्वेत बस्त्रोंकी धारण करनेवाली और गुरू तथा ब्राह्मण के पूजन में रतहोवे और नित्य मधुर सचिक्कण हृदयकी रुचियोग्यतर हलका संस्कारयुक्त और अग्निका बढ़ाने वाला भोजनकरे और गर्भवती स्त्री व्यायाम, लंघन, मैथुन बहुत भोजन, रात्रि में जागरण, शोक, सवारी पर चढ़ना फस्त लेना मूत्रादि बेगोंका रोकना और उकडू बैठना इन सब बातों को छोड़देवे दोष और चोटलगने से गर्भिणी स्त्रीका जो २ भागपीड़ित होताहै वह वह भागगर्भ में स्थितहोने वाले बालक का भी पीड़ितहोताहै गर्भिणी स्त्री मलिन बिकार युक्त चेष्टावाली और हीन अंगवाली किसी स्त्रीको न स्पर्श करे, दुर्गन्धिन सूंघे नेत्रोंके अप्रिय को न देखे कानोंके अप्रिय बचनोंको न सुने,बासी और सूखे और क्वाथ किये हुये अन्न को न खाय और चैत्य जिन वृक्षोंपर भूतादि रहतेहैं और श्मशान वृक्ष अपयश करनेवाले कार्य्य, बाहरजाना क्रोध और शून्यघरको त्यागकरदे और जोरसे नबोले ऐसा कोई काम न करे जिस्से गर्भनष्टहोवे और बहुत तेललगाना तथा उबटन न करावे- कठोर बिछोने तथा ऊंचीशय्यापर न सोवे गर्भिणी स्त्री इन नियमों को यत्नपूर्व्वक करे ॥ २४९ ॥

अथ प्रसवमासानाह ॥

नवमेदशमेमासिनारीगर्भंप्रसूयते । एकादशेद्वादशेवा ततोऽन्यत्रविकारतः ॥२५०॥

प्रसव मासोंका वर्णन ॥

स्त्री नवे दशमें ग्यारहवें अथवा बारहवें महीने में संतान को उत्पन्न करतीहै इस्से भिन्न बिकार युक्त जानना चाहिये ॥ २५० ॥

अथ सूतिकागृहाकृतिः ॥

अष्टहस्तायनञ्चारु चतुर्हस्तविशालकम्। प्राचीद्वारमुदग्द्वारं विदध्यात्सूतिकागृहम्॥ २५१ ॥

सूतिकागृहकी आकृतिका वर्णन ॥

आठहाथ लंबाचारहाथ चौड़ापूर्व अथवा उत्तरकी ओर द्वारवाला सुन्दर सूतिका गृहबनावे ॥२५१॥

आसन्नप्रसवायाः लक्षणमाह ॥

यातेहिशिथिलेकुक्षौ मुक्तेहृदयबन्धने। सशूलेजघनेनारी विज्ञेयाप्रसवोन्मुखा॥ आसन्नप्रसवायास्तु कटीपृष्ठस्तुसव्यथम्।भवेत्मुहुःप्रवृत्तिश्च मूत्रस्यचमलस्यच॥२५२॥

शीघ्रप्रसवहोनेवालीके लक्षण ॥

कोंखके शिथिल होजाने पर हृदयबंधनके छूटजाने पर और कटिके आगेकी ओर वेदना होनेपर स्त्री शीघ्र प्रसव उत्पन्न करने वाली जाननी चाहिये शीघ्रप्रसवहोने वाली स्त्री के कटि तथा पीठ में पीड़ा और मल और मूत्रकी बारंबार प्रवृत्ति होती है ॥ २५२ ॥

अथासन्नप्रसवाया उपचारः ॥

तैलेनाभ्यक्तगात्राणां संस्नातामुष्णवारिणा। यवागूम्पाययेत्कोष्णां मात्रयाघृतसयुताम्॥ कृतोपधानेमृदुभिर्विस्तीर्णेशयनेशनैः। आभुग्नसक्थिचोत्तानानारीतिष्ठेद्व्यथान्विता॥ (आभुग्नसक्थि आसङ्कोचितोरू) ॥ २५३ ॥

शीघ्रप्रसव न होनेवाली के उपचार ॥

शरीरमें तेल लगाकर गरमजलसे स्नानकर वाके शीघ्रप्रसवहोने वाली स्त्रीको कुछ उष्ण मात्रा के अनुसार घृतसंयुक्त यवागू (छःगुनेपानीमें पकेहुये चावल) पिलावेतकिआ और कोमल बिछौने से युक्त शयनपर घुटनोंको फैलाकर उतानी व्यथावाली स्त्री सोवे ॥ २५३ ॥

अथ जनयित्री ॥

चतस्रोऽशङ्कनीयाश्च स्नावनेकुशलाहिताः। वृद्धाःपरिचरेयुस्ताः सम्यक्छिन्ननखाः स्त्रियः॥ २५४ ॥

दाईयोंका वर्णन ॥

विश्वासित सन्तान उत्पन्न कराने में प्रवीण हितकी चाहने वाली वृद्ध अच्छे प्रकारसे कटे हुए नखवाली चार स्त्रियां सेवा करें ॥ २५४ ॥

अथ जनयित्रीकृत्यम्।

अपत्यमार्गंतैलेन समभ्यज्यसमन्ततः । एकातुतासुसुभगे प्रवाहस्वेतितांवदेत्॥ अव्यथामाप्रवाहिष्ठाः प्रवाहेथाव्यथायदि। प्रवाहेथाःशनैपूर्व्वं प्रगाढञ्चततःपरम्॥ ततोगाढतरेगर्भे योनिद्वारमुपागते। अपरासहितोगर्भो यावत्पतातिभूतले॥ २५५ ॥

दाइयों का काम ॥

गर्भके मार्गको तेलसे अच्छेप्रकार सब ओर चुपडकर एकदाई हे सुभगे प्रवाह करो ऐसा कहे- व्यथारहित स्त्री प्रवाहन (गर्भके निकालनेके लिये कांखकर बलकरना) नकरे और व्यथाहोय तो

करे प्रथम धीरे २ करे फिर जोरसे करे फिर गर्भको योनि के द्वारपर आजानेपर जबतक नाल सहित गर्भ पृथ्वीपर नहीं गिरे तबतक बहुत जोरसे प्रवाहन करे- ॥ २५५ ॥

व्यथारहितायाः प्रवाहणाद्दै गुण्यमाह ॥

मूकंवावधिरंकुब्जंश्वासकासक्षयान्वितम्।सूतेस्रस्ततनुंबालमकालेतुप्रवाहणात्॥२५६॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितेभावप्रकाशे
गर्भप्रकरणंद्वितीयम् ॥ २ ॥

व्यथारहित स्त्रीके प्रवाहन करने में दोष ॥

समय के विना प्रवाहन करने से गूंगा- बहिरा कुबड़ा- श्वास खांसी तथाक्षयसे युक्त शिथिल अंगवाला बालक उत्पन्नहोता है- ॥ २५६ ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्र भावविरचितभावप्रकाशस्य भाषानुवादे
गर्भप्रकरणं द्वितीयम्॥ २ ॥

अथ बालस्यंजन्मोत्तरविधिः ॥

अथबालेसमुत्पन्ने विदधीतविधिंततः। यथैवकुलवृद्धास्त्री व्यवहारपरम्परा ॥ १ ॥

बालक के जन्म होने के उपरान्त की विधि ॥

बालक के उत्पन्नहोने के उपरान्त कुलकी वृद्ध स्त्रियों के व्यवहार की परम्परा के अनुसार विधिकरे ॥ १ ॥

अथ प्रसूताया नियमानाह ॥

प्रसूताहितमाहारं विहारंचसमाचरेत्। व्यायामंमैथुनंक्रोधं शीतसेवांविवर्जयेत् ॥ मिथ्या चारात्सूतिकायायोव्याधिरुपजायते। सकृच्छ्रसाध्योऽसाध्योवाभवेत्तत्पथ्यमाचरेत्॥ २॥

प्रसूता स्त्रीके नियम ॥

प्रसूता स्त्री हित आहार और विहार करे और व्यायाम मैथुन- क्रोध- सर्दी खाना आदि न करे विरुद्ध आहार से उसको जो व्याधि उत्पन्न होती है वह कष्ट साध्य अथवा असाध्य होती है इस्से पथ्य करना चाहिये ॥ २ ॥

प्रसूतायानियमसमयाऽवधिमाह ॥

सर्वतःपरिशुद्धास्यात्स्निग्धपथ्याऽल्पभोजना । स्वेदाभ्यङ्गपरानित्यंभवेन्मासमतन्द्रिता ॥४ ॥ सर्वतःपरिशुद्धातुअवसृष्टदुष्टरुधिराअतन्द्रितासावधाना ॥ ३ ॥

प्रसूता स्त्रीके नियमों के समय की अवधि ॥

महीने भरतक विगड़े हुये रुधिर का त्यागकरे चिकना पथ्य वा थोड़ा भोजन करे प्रतिदिन स्वेद निकालने के लिये तैल मर्दन करे और सावधान रहै ॥ ३ ॥

प्रसूतासार्द्धमासान्तेदृष्टेवापुनरार्त्तवे । सूतिकानामहीनास्यादितिधन्वन्तरेर्मतम् ॥ व्यपद्रवांविशुद्धाञ्चविज्ञायवरवर्णिनीम्। ऊर्ध्वंचतुर्भ्योमासेभ्योनियमंपरिहारयेत् ॥ ४ ॥

प्रसूता स्त्री डेढ़ महीनेमें अथवा फिरऋतुके होनेतक सूतिकापने से रहित होजाती है यहधन्वन्तरिजी का मतहै उपद्रवोंसे रहित और शुद्ध शरीरवाली जानकर चारमहीने के उपरान्त प्रसूता स्त्री कोनियमोंका त्यागकरावे ॥ ४ ॥

अथस्तन्यस्वरूपमाह ॥

रसप्रसादोमधुरःपक्काहारनिमित्तजः । कृत्स्नाद्देहात्स्तनौप्राप्तःस्तन्यमित्यभिधीयते रसप्रसादोरसस्यसारः ॥ ५ ॥ दुग्धका स्वरूप ॥

रसका उत्तम भाग परिपाक को प्राप्तहुए आहार से उत्पन्नहुआ मधुरताको प्राप्त संपूर्ण देह से स्तनोंमें प्राप्तहुआ स्तन्य अर्थात् दुग्ध कहलाता है ॥ ५ ॥

स्तन्यस्यप्रवृत्तिमाह ॥

स्तन्यंत्रिरात्रात्स्त्रीणांवाचतूरात्रादनन्तरम् प्रवर्त्तयन्तिविवृत्ताधमन्योहृदयेस्थिताः ॥ ६॥

दुग्धका निकलना ॥

हृदयमें स्थितफैलीहुई धमनी तीन अथवा चार रात्रिके उपरान्त स्त्रियोंके दूधको निकालतीहैं ॥ ६॥

अथस्तन्यप्रवृत्तिमाह ॥

पयःपुत्रस्यसंस्पर्शाद्दर्शनात्स्पर्शनादपि । ग्रहणाद्प्युरोजस्यशुक्रवत्संप्रवर्त्तते ॥ स्नेहोनिरन्तरस्तस्यप्रवाहेहेतुरुच्यते ॥ ७ ॥

दुग्धकी प्रवृत्ति ॥

दूधपुत्रके स्पर्शकरने से देखने से स्मरण करने से और ग्रहण करने सेभी वीर्य्य के समान स्तनों से प्रवृत्तहोताहै इस्से निरन्तर स्नेहही दुग्धके प्रवाहमें कारण होताहै ॥ ७ ॥

अथस्तन्यस्याल्पतेहेतुमाह ॥

अवात्सल्याद्भयाच्छोकात्क्रोधाद्त्ययतर्पणात् । स्त्रीणांस्तन्यंभवेत्स्वल्पंगर्भान्तर विधारणात् ॥ ८ ॥ दुग्धकेथोड़ेहोनेका कारण ॥

स्नेहका न होना- भय शोक क्रोध लंघन और दूसरे गर्भके धारण करने से स्त्रियोंका दूध थोड़ा होजाता है ॥ ८ ॥

अथस्तन्यस्यंवृद्धिहेतुमाह ॥

शालिषष्ठीकगोधूमान्मांसक्षुद्रयवानपि। कालशाकमलाबूञ्चनारिकेरंकसेरुकम् ॥ शृङ्गाटकंवरींचापिविदारींकन्दमेवच । लशुनंदुग्धवृद्ध्यै स्त्रीसेवेतसुमनाभवेत् ॥ कमलस्यतण्डुलानांकल्कंयाक्षीरेपेषितम्पिवति । साभवतिभृशंतरुणीक्षीरभरेणैवतुङ्गकुचयुगला ॥ कलमोधान्यविशेषस्तस्यलक्षणमाह । कलमःकलिविख्यातोजायतेसद्दहद्वने । काश्मीर देशएवोक्तोमहातण्डुलसंज्ञकः ॥ विदारिकन्दस्यरसंपिवेत्स्तन्यस्यवृद्धये । तच्चूर्णंतस्य वृद्ध्यर्थंपिबेद्वाक्षीरसंयुतम् ॥ ९ ॥

दुग्धकीवृद्धिका कारण ॥

शालि- साठीके चावल- गेंहू- मांस- छोटी मछली- नारीकासाग- लौकी- नारियल- कसेरू- सिंघा-

ड़ा-सतावर- विदारी कन्द-लहसन- इनवस्तुओंको सती दूध बढ़ने के लिये प्रसन्नचित्तहोकर सवन करेजो स्त्री कलमके चावलोंको दूधके साथ पीसकर पीती है वहदूधके भारसे उन्नत दोनों स्तनवाली होती है कलम धान्य विशेषको कहतेहैं उसका यह लक्षणहै कि कलम कलिनामसे विख्यात बहुत जलमें उत्पन्न होताहै वही कश्मीर देशमें महातंडुल नामसे विख्यातहै- दूधके बढ़ने के लिय विदारी कन्दकारस अथवा दूधसमेत उसका चूर्ण पिये ॥ ९ ॥

अथस्तन्यस्यदुष्टहेतुमाह ॥

धात्र्यागुरुभिराहारैर्विहारैर्दोषलैस्तथा । देहेदोषाः प्रकुप्यंतितताःस्तन्यंप्रदुष्यति मिथ्याहारविहारिण्यादुष्टावातादयःस्त्रियाःदूषयंतिपयस्तेनशरीरेव्याधयःशिशोः ॥ १० ॥

दूधकेदुष्ट होनेकाकारण ॥

धायके गरिष्ठ और दोषयुक्त आहार विहारोंसे देहमें कोपको प्राप्तहुए दोष दूधको बिगाड़ते हैं- विरुद्ध आहार विहार करने वाली स्त्री के वात आदिक बिगड़कर दूधको बिगाड़ते हैं इस्से बालक के शरीरमें रोगउत्पन्न होते हैं ॥ १० ॥

अथदुष्टस्तन्यस्यलक्षणमाह ॥

कषायंसलिलप्लाविस्तन्यंमारुतदूषितम् । पित्तादम्लञ्चकटुकंराज्योऽम्भसितुपीतिका ॥ कफदुष्टंतुयत्तोयेनिमज्जतिचपिच्छिलम् । द्वंद्वजंतुद्विलिंगंस्यात्त्रिलिंगंसान्निपातिकम् ॥ ११ ॥

बिगड़ेहुए दूधके लक्षण ॥

वायुसे बिगड़ा हुआदूधकसैला और पानीमें तिरने वाला- पित्त से बिगड़ा हुआ खट्टाकडुआ औरपानीमें डालनेसे पीली रेखावाला और कफसे बिगड़ाहुआ दूध चिकना और पानीमें डालने से डूबनेवाला होताहै और दो दोषोंसे बिगडा हुआ दोनोंके लक्षणोंसे युक्त और तीनों दोषोंसे बिगड़ा हुआ तीनों लक्षणोंवाला होताहै ॥ ११ ॥

अथदुष्टस्तन्यस्यशोधनविधिमाह ॥

धात्रीक्षीरविशुद्ध्यर्थंमुद्गयूषरसाशिनी । भार्गीदारुवचापिष्ट्वापिवेत्सातिविषास्तथा ॥ पाठामूर्व्वाब्दभूनिम्बैर्दारुशुण्ठीकलिंगकैः । सारिवा मत्स्यपित्तास्थैः क्वाथःस्तन्यविशोधनः ॥ मत्स्यपित्ताकटुकी॥पटोलनिम्बासनदारुपाठा मूर्व्वागुडूचीकटुरोहिणीच । सनागरश्चक्वथितश्चतोयेधात्रीपिवेत्स्तन्यविशुद्धिहेतोः ॥ १२ ॥

बिगड़े हुए दूधके शोधनकी विधि ॥

धाय दूधके शुद्ध करने के लिये भारंगी- देवदारु- वच और अतीस को पीसकर पिये और मूंग का पानी अथवा मांसका रस पिये और पाठा (पाढ़र) चिनार- नागरमोथा- चिरायता- देवदारु सोंठ- इन्द्रजौ- सारिवा (अनन्तमूल) और कुटकी इन सबका क्वाथदूध का शुद्ध करने वाला होता है परवल- नींब- पीतशालि- देवदारु- पाढ़र- चिनार गिलोय- कुटकी और सोंठ इनके क्वाथ को धाय दूधके शुद्ध करने के निमित्त पिये ॥ १२ ॥

अथशुद्धस्यलक्षणमाह ॥

नीरेस्तन्यंयदेकीस्यादविवर्णमतन्तुमत्। पाण्डुरंतनुशीतञ्चतद्दुग्धंशुद्धमादिशेत्॥ १३ ॥

शुद्धदूधके लक्षण ॥

जो दूध पानी में छोड़ने से मिलजाय कहेहुए वातादिविकारों से रहितहो जिसमें रेखा न पड़तीहों श्वेत वर्ण पतला और शीतल हो वहदूध शुद्ध जानना चाहिये ॥ १३ ॥

धात्रीलक्षणमाह ॥

पीतायदिबालस्यविदध्यादुपमातरम् । सुविचार्य्यगुणान्दोषान्कुर्य्याद्धात्रींतदेदृशीम् ॥ सवर्णांमध्यवयसां सच्छीलांमुदितांसदा । शुद्धदुग्धाम्बहु क्षीरांसवत्सामति वत्सलाम् । स्वाधीनामल्पसन्तुष्टांकुलीनांसज्जनात्मजाम् ॥ कैतवेनापरित्यक्तां निज पुत्रदृशंशिशौ ॥१४ ॥

धाय के लक्षण ॥

जो बालक के दूध पिलाने के लिये धायरक्खे तो गुणदोषों को विचार करके इस प्रकार की रक्खे कि अपनी जातिकी, मध्य अवस्था वाली, अच्छेस्वभाववाली, सदैव प्रसन्न, शुद्ध और बहुत दूधवाली,सन्तान युक्त,बहुत प्रेम करनेवाली,अपने आधीन, थोड़ेमें सन्तोष करने वाली, कुलीन, सज्जन की कन्या,कपट रहित और बालक को अपने पुत्रके समान जानने वाली ऐसी स्त्रीको धाय बनावे ॥ १४ ॥

अथनिषिद्धांधात्रीमाह ॥

शोकाकुलाक्षुधार्त्ताच श्रान्ताव्याधिमतीसदा । अत्युच्चानितरांनीचास्थूलातीवभृशकृशा ॥ गर्भिणीजरिणीचापिलम्बोन्नतपयोधरा । अजीर्णभोजिनीचापि तथापथ्यविवर्जिता ॥ आसक्ताक्षुद्रकार्य्येतु दुःखार्त्ताचञ्चलापिच । एतासांस्तन्यपानेन शिशुर्भवतिसामयः ॥ १५ ॥

निषिद्ध धाय के लक्षण ॥

शोकसेव्याकुल, भूखी, थकीहुई, सदैवरोगिणी, बहुत बड़ी या बहुत छोटी, बहुत मोटी या दुबली, गर्भिणी, ज्वरयुक्त, लंबे और ऊंचे स्तनवाली, अजीर्ण में भोजन करनेवाली, पथ्य रहित, शुद्धकाम करनेवाली, दुःखित और चंचल ऐसी स्त्रियोंके दूधपीनेसे बालक रोगी होजाताहै ॥१५॥

अथबालस्यस्तन्यपानविधिः ॥

तत्रमाताप्रशस्तांगी चारुवस्त्रापुरोमुखी । उपविश्यासनेसम्यग्दक्षिणंस्तनमम्बुना ॥ प्रक्षाल्येषत्परिस्राव्य मन्त्राभ्यामभिमन्त्रितम् । उदङ्मुखंशिशुंक्रोड़ेशनैःसन्धार्य पाययेत् ॥ मातेत्युपलक्षणम् धात्रीच ॥ १६ ॥ ईषत्परिस्राव्य ॥

बालक के दूध पिलाने की विधि ॥

सुन्दर अंगवाली बालककी माता अथवा धाय सुन्दर बस्त्रोंको पहनकर पूर्वाभि मुख आसन पर

बैठकर दक्षिणस्तनको जल से धोकर कुछ दूध निचोड़कर और मंत्रोंसे अभि मंत्रित करके उत्तरकी ओरमुख वाले बालकको गोदी में धीरेसे लुटाकर दूध पिलावे ॥ १६ ॥

अन्यथावैगुण्यमाह । सुश्रुतः । अस्रावितंस्तनंबालः पिबन्स्तन्येनभूयसा । पूर्णश्रो त वमीकासश्वासै र्भवतिपीड़ितः ॥ १७ ॥

बिनानिचोड़े दूधपिलाने का दोषसुश्रुतजी लिखतेहैं ॥

बिनानिचोड़े हुए स्तनको पीने वाला बालक बहुत दूधसे गलेकी नाड़ीके पूर्ण होजाने के कारण छर्दि खांसी और श्वास से पीड़ित होताहै ॥ १७ ॥

अभिमंत्रणमाह ॥

क्षीरनीरनिधिस्तेतुस्तनवोक्षीरपूरकः । सदैवशुभगोबालो भवत्येषमहाबलः ॥ पयोऽमृतसमम्पीत्वाकुमारस्तेशुभानने । दीर्घमायुरवाप्नोतिदेवाःप्राप्यामृतंयथा ॥ मन्त्रो चपित्रान्येनब्राह्मणेनपठनीयो यावन्मन्त्रपाठस्तावन्मात्रा धात्र्यादक्षिणहस्तेनस्पर्शः कार्य्यः ॥ १८ ॥ अभिमंत्रण ॥

हे सुन्दर नेत्रवाली क्षीर समुद्र और जल समुद्र तुम्हारे स्तनोंको दूधसे पूर्ण करे यहबालक सदैव सुन्दर और महाबलवान्हो जैसे देवतालोग अमृतको पीकर अमरहुएहैं उसी प्रकार अमृत के समान तुम्हारे दूधको पीकर यह बालक दीर्घायुहोवे इनमंत्रोंको पिता या अन्य कोई ब्राह्मण पढ़े जब तक मंत्र पढ़ाजाय तबतक माता अथवा धाय दक्षिण हाथ से दक्षिणस्तनको पकड़ेरहे ॥ १८ ॥

अथजनन्याक्षीराभावेधात्र्याश्चालाभेत्रकारमाह ॥

क्षीरसात्मातयाक्षीरमाजङ्घ्यमथापिवा । दद्यादास्तन्यपर्य्याप्तेबालेभ्योवीक्ष्यमात्रया॥ क्षीरसात्म्यतयेतियतः शिशोः क्षीरमेवासात्म्यम्भवति नत्वन्नादिकम् । स्तन्यपर्य्याप्ते रितियावत्स्त्रियाःस्तन्यस्यसन्ततो भावेनप्राप्तिर्भवति ॥ अथयावत्स्तन्यपानस्य यो ग्यतालावदित्यर्थः ॥ १९ ॥

माताके दूध न होने में और धायके न मिलने में उपाय ॥

माता अथवा धायके दूध न मिलने पर जबतक स्त्री के दूधहो आवे अथवाजबतक दूधपीने के लायकहो तबतक बकरी अथवा गौका दूधही मात्राके अनुसार बालक को पिलावे क्योंकि बालक को दूधही सात्म्यहोताहै न कि अन्नादिक ॥ १९ ॥

अथबालस्यान्नप्राशनसमयः ॥

यथोक्तविधिनाबालंमासिषष्ठेऽष्टमेऽपिच । अन्नंसम्प्राशयेत्किञ्चित्ततस्तद्वर्द्धयन्क्रमात् ॥ २० ॥ बालक के अन्न प्राशनका समय ॥

छठे अथवा आठवें महीने में बालक को कुछ अन्न चटावे फिर क्रम२ से बढ़ावे ॥ २० ॥

अथबालस्य परिचर्य्याविधिः ॥

बालमङ्केसुखन्दद्यान्नचैनन्तर्ज्जयेत् क्वचित् । सहसाबोधयेन्नैवनायोग्यमुपवेशयेत् ॥ अयोग्यंउपवेशनासमर्थमाकृष्यस्थापयेत्क्रोड़ेनक्षिप्रंशयनेक्षिपेत् । रोदयेन्नक्वचित्कार्य्ये

विधिमावश्यकंविना ॥ आवश्यकोविधिः भेषजदानतैलाभ्यंगोद्वर्त्तनादिभिः तच्चित्तमनु वर्तेततंसदैवानुमोदयेत् ॥ निम्नोच्चस्थानतश्चापिरक्षेद्बालं प्रयत्नतः ॥ २१ ॥

बालक की परिचर्य्याकी बिधि ॥

बालकको सुख पूर्वक गोदी में रखकर सुखी करे और कभी ललकारे नहीं एकी एका नजगावे बैठनेकी सामर्थ्य बिना कभी न बैठावे खेंचकर गोदीमें न बैठावे जल्दीसे बिछौने पर न डालदे आवश्यकाबिधि (औषधिदेना तेललगाना आदि)के बिना कभी नरुलावे उसके चित्तके अनुकूल कामकरे सदैव उसको प्रसन्न रक्खे और नीचे ऊंचे स्थानसे बालककी यत्नपूर्व्वक रक्षाकरे ॥ २१ ॥

बालस्य स्वभावाद्धितान्याह ॥

अभ्यंगोद्वर्त्तनंस्नानंनेत्रयोरञ्जनन्तथा । वसनंमृदुयत्तच्चतथामृद्वनुलेपनम् ॥ जन्म प्रभृतिपथ्यानिबालस्यैतानिसर्व्वथा ॥ २२ ॥

बालककी स्वाभाविक हितकारी बस्तु ॥

तेल लगाना उबटन स्नान नेत्रोंमें अंजन कोमल वस्त्र और कोमललेप यहसब बालकको जन्म सेही लेकर हितकारीहैं ॥ २२ ॥

बालस्यकवलादेः समयमाह ॥

कवलःपञ्चमाद्वर्षादष्टमान्नस्यकर्मच । विरेकःषोड़शाद्वर्षाद्विंशतेश्चैवमैथुनम् २३ ॥

बालकको ग्रास आदि देनेका समय ॥

बालक को पांचवें बर्षसे ग्रास आठवें से हुलास सोलहवेंसे विरेचन और बीसवें वर्षसे मैथुन उचित है ॥ २३ ॥ बालादेरवधिमाह सुश्रुतः ॥

वयस्तुत्रिविधम्बाल्यं मध्यमंवार्द्धकन्तथा । ऊनषोड़शवर्षस्तु नरोबालोनिगद्यते ॥ त्रिविधःसोऽपिदुग्धाशी दुग्धान्नाशीतथान्नभुक् । दुग्धाशीवर्षपर्य्यन्तं दुग्धान्नाशीशरद्वयम् ॥ तदुत्तरंस्यादन्नाशी एवंबालस्त्रिधामतः ॥ २४ ॥

सुश्रुतकी कहीहुई बाल्यावस्था आदिकी अवधि ॥

तीनप्रकारकी अवस्था होतीहैं बाल्य मध्यम और वृद्धता सोलह वर्षसे कमका बालक कहावता है वह तीनप्रकारका होताहै दूध पीनेवाला दूध और अन्न खानेवाला और केबल अन्न खानेवाला एक बर्षतक दूध पीनेवाला दो वर्षतक दूध और अन्न खानेवाला इसके उपरांत सुन्दर अन्न खाने वाला यह तीनप्रकारके बालक होते हैं ॥ २४ ॥

मध्ये षोड़शसप्तत्योर्मध्यमःकथितोबुधैः । चतुर्द्धामध्यमवृद्धियुवापूर्णक्षयान्वितः ॥ भवेदाविंशतिंवृद्धिः युवाद्वात्रिंशतोमतः । चत्वारिंशत्समायावत्तिष्ठेद्वीर्य्यादिपूरितः ॥ ततः क्रमेणक्षीणःस्या द्यावद्भवतिसप्ततिः ॥ वीर्य्यादित्यादि शब्देन रसादि सर्व्वधात्विन्द्रिय बलोत्साहा उच्यन्ते । क्षीणःसर्व्वधात्विन्द्रियबलोत्साहैर्हीनः ॥ ततस्तुसप्ततेरूर्ध्वं क्षीण धातुरसादिकः । क्षीयमाणेन्द्रियबलः क्षीणरेतादिनेदिने ॥ बलोपलितखालित्ययुक्तः कर्मसुचाक्षमः । कासश्वासादिभिःक्लिष्टो वृद्धोभवतिमानवः ॥ २५ ॥

सोलह और सत्तर वर्षके बीचमें मध्यम कहलाताहै वह चारप्रकारका होताहै वृद्धि युवा पूर्ण और क्षययुक्त बीसवर्षतक वृद्धि होती है बत्तीस वर्षतक युवा रहताहै चालीस वर्षतक बीर्य्यादिकोंसे पूर्ण रहताहै फिर क्रमसे सम्पूर्ण धातु इन्द्री बल और उत्साहसे सत्तर वर्ष पर्य्यन्त क्षीण होताहै और सत्तर बर्षके उपरांत क्षीण हुए धातु और रसवाला क्षीण इन्द्री और बलवाला प्रति दिन क्षीण हुए बीर्य्यवाला झुर्री बालोंका पकना खालित्य (बांयटे आदि) से युक्त कार्य्यों में असमर्थ खांसी और श्वासादिकोंसे पीडित मनुष्य वृद्धकहलाताहै ॥ २५ ॥

बाल्येविवर्द्धतेश्लेष्मा. पित्तंस्यान्मध्यमेऽधिकम् । वार्द्धकेवर्द्धतेवायुर्विचार्य्यैं तदुपक्रमेत् ॥ उपक्रमेत् चिकित्सेत् तंत्रांतरेतु । बाल्यंवृद्धिश्छविर्मेधा त्वग्दृष्टिःशुक्रविक्रमौ ॥ बुद्धिःकर्मेन्द्रियञ्चेतो जीवितन्दशतोह्रसेत् ॥ २६ ॥

बाल्यावस्थामें श्लेष्मा बढ़ताहै मध्यममें पित्त अधिक होताहै और वृद्धावस्थामें बायु बढ़तीहै ऐसा बिचारकर चिकित्सा करे शास्त्रान्तरमें कहा हुआ है कि बाल्य वृद्धि छबि मेधा त्वचा दृष्टि बीर्य्य बल बुद्धि कर्मेन्द्री चित्त और जीव यह जन्मसे लेकर क्रमसे दश२ वर्ष में घटतेजातेहैं ॥ २६ ॥

अथ प्रकृतिलक्षणानि ।

सप्तप्रकृतयोनृणांवातात्पित्तात्कफात्तथा । संसर्गात्सान्निपाताच्च भवन्तिभिषजाम्मते ॥ शुक्रशोणितसंयोगो योदोषस्तूत्कटोभवेत् । प्रकृतिर्जायतेतेन तस्यालक्षणमुच्यते ॥ २७ ॥

प्रकृतियोंके लक्षण ॥

मनुष्योंकी सात प्रकृति होतीहैं बातसे पित्तसे कफसे तीनोंके अलग२संसर्गसे और तीनोंके मिलनेसे बीर्य्य और रजके संयोगके समय जौनसा दोष अधिक होताहै उसीसे प्रकृति होतीहै उसका लक्षण कहतेहैं ॥ २७ ॥

वाग्भटेत्वात्रेयादयः । शुक्रासृग्गर्भिणीभोज्य चेष्टागर्भाशयान्तरे । यःस्याद्दोषोऽधिकस्तेन प्रकृतिःसर्व्वथोदिता ॥ सोऽपिदोषः स्वभावावस्थितो नतुदुष्टः दुष्टेनतु शुक्रशोणितयोर्दुष्टाशुद्धगर्भसम्भवात् ॥ २८ ॥

वाग्भटमें आत्रेयादिकोंने कहाहै कि बीर्य्य और रजमें तथा गर्भिणीके आहार विहारके द्वारा गर्भाशयमें जिस दोषकी अधिकता होतीहै उसीके अनुसार सात प्रकारकी प्रकृति होती हैं वह दोष भी स्वाभाविक लियाजाताहै नकि विकार युक्त क्योंकि विकारको प्राप्तहुए से तो बिगड़े हुए बीर्य्य और रजसे गर्भका होनाही असंभवहै ॥ २८ ॥

जागरूकोऽल्पकेशश्च स्फुटितांघ्रिकरःकृशः । शीघ्रगोबहुवाग्रूक्षः स्वप्नेवियतिगच्छति ॥ एवंविधःसविज्ञेयो वातप्रकृतिकोनरः ॥ २९ ॥

बातप्रकृतिके लक्षण ॥

बहुत जागने वाला- थोडे बालवाला- फटेहुए हाथपैर वाला-दुर्बल शीघ्रगामी बहुत बोलने वाला रूखा और स्वप्नमें आकाशमें चलने वालामनुष्य वातप्रकृति वालाहोताहै ॥ २९ ॥

पित्तप्रकृतिकोलोको यादृशोऽथनिगद्यते । अकालपलितोगौरः क्रोधीस्वेदीचबुद्धिमान् ॥ बहुभुक्ताघनेत्रश्च स्वप्नेज्योतींषिपश्यति । एवंविधोभवेद्यस्तु पित्तप्रकृतिको नरः ॥ ३० ॥

पित्तप्रकृतिके लक्षण ॥

विना समयके श्वेतवाल वाला गौरवर्ण- क्रोधी बहुतपसीने वाला- बुद्धिमान्- बहुत भोजन करने वाला और स्वप्नमें तेजोंका देखने वालामनुष्य पित्तप्रकृति वाला होता है ॥ ३० ॥

श्यामकेशःक्षमीस्थूलो बहुवीर्य्योमहाबलः । स्वप्नेजलाशयालोकी श्लेष्मप्रकृतिको नरः॥दृश्यतेप्रकृतौयत्र रूपंदोषद्वयस्यतु।द्विसंसर्गेणजानीयात्सर्व्वलिंगैस्त्रिदोषजम्३१॥

कफप्रकृतिके लक्षण ॥

श्याम केशवाला-क्षमाकरने वाला स्थूल- बहुत वीर्य्य वाला- महावलवान् और स्वप्नमें जलाशयोंका देखने वाला मनुष्यकफ प्रकृति होताहै-जिस प्रकृतिमें दोदोषोंका रूपादिखाईदे वह संसर्ग-ज और जिसमें सबके चिह्न दिखाई देवेंवह त्रिदोषजजानना चाहिये ॥ ३१ ॥

वाग्भटेतु । विभुत्वादाशुकारित्वाद्बलित्वादल्पकोपनात्। स्वातन्त्र्याद्बहुरोगत्वाद्दोषाणांप्रबलोनलः ॥ ३२ ॥

बाग्भटमें तो ऐसा कहाहै कि सर्बव्यापक होना शीघ्रकारी होना बलवान्होना कोपकमकरना स्वतन्त्रता और बहुत रोगोंको उत्पन्नकरना इनगुणोंसे बायु सबदोषोंमें प्रबलहै ॥ ३२ ॥

प्रायस्तएव पवनाध्युषिता मनुष्याः दोषात्मकाः स्फुटितधूसर केशगात्राः ॥ शीत द्विषश्चलधृति स्मृतिबुद्धिचेष्टाः । सौहार्द्ददृष्टिगतयोऽतिबहुप्रलापाः ॥ अल्पपित्तकफ जीवितनिद्रासन्नशक्तबहुजर्ज्जरवाचः । नास्तिकाबहुभुजःसविलासा गीतहास्यमृगया केलिसुलोलाः ॥ मधुराम्लकटूष्ण सात्म्यकांक्षा कृशदीर्घाकृतयः सशब्दज्ञाना नदृढ़ा न जितेन्द्रिया नवीर्य्याः नच कान्तादयिताबहु प्रजावा ॥ अंगानि चैवंखरधूसराणि वृत्तान्य् चारूणि मृतोपमानि। उन्मीलितानीव भवन्तिसुप्ते शैलद्रुमान्ते गगनेप्रयाति॥ अधन्यामत्स राधमानास्तेनाः प्रोद्धत पिण्डिकाः ॥ स्वप्नेश्वृगालोष्ट्र गृध्राखु काकोलूका श्च वातिकाः ॥ ३३ ॥

बाग्भटमें कहेहुए बात प्रकृतिके लक्षण ॥

बात प्रकृति मनुष्य प्रायः दोषयुक्त होतेहैं फटे गात्रवाले धूसर केशवाले शीतसे द्वेष करनेवाले चंचल धैर्य्य स्मृति बुद्धि और चेष्टावाले मित्रतामें दुष्टता करनेवाले बहुत बोलनेवाले थोडे पित्त कफ जीवन और निद्रासे युक्त बहुत जर्जरबाणी वाले नास्तिक बहुत भोजन करनेवाले बिलास से युक्त गाने हंसने और शिकार खेलनेमें तत्पर मधुर अम्लकटु और उष्ण भोजनके अभ्यासमें रुचि रखने वाले दुर्बल और लम्बे आकार वाले शब्द सहित गमन करनेवाले दृढ़तासे रहित इन्द्रियों के नहीं जीतनेवाले हीन वीर्य्य स्त्रियोंके अप्रिय बहुत सन्तानोंसे रहित रूखे धूसर गोल सुन्दरता रहित और मृतकोंके समान नेत्रवाले सोनेमें खलेसे नेत्रवाले स्वप्नमें पर्व्वत वृक्ष तथा आकाशमें जाने

वाले यशरहित ईर्षायुक्त चोर और उठी हुई पिंडली वाले बात प्रकृति होतेहैं कुत्ता शृगाल ऊंटगृध्र मूसा काग और उलूक यहभी बात प्रकृति होतेहैं ॥ ३३ ॥

पित्तवह्निवह्निजश्चेत दस्मात् पित्तोद्रिक्तस्तीव्रतृष्णावुभुक्षुः ॥ गोरोष्णांगस्ताम्रह स्तांघ्रियुग्मः शूरोमानी पिंगकेशोऽल्परोमा ॥ दयितमाल्यविलेपन मण्डनः सुरचितः शुचिराश्रितवत्सलः । विभवसाहसबुद्धिबलान्वितो भवति भीष्मगतिःद्विषतामपि ॥ मेधावी प्रशिथिलित सन्धिबन्धमांसो । नारीणा मनभिमतोऽल्प शुक्रकामः ॥ आवास श्चलित तरंगनीरकेषु । भुंक्तेऽन्नं मधुरकषायतिक्त शीतम् ॥ धर्मद्वेषी स्वेदनः पूतिग न्धि भूर्य्युच्चार क्रोधपानाशनेर्ष्यः । सुप्तःपश्येत् कर्णिकारान् पलाशान् दिग्दाहोल्का वि द्युदर्कानलांश्च ॥ तनूनिपिंगानि चलानिचेषां तन्वल्प यक्ष्माणि हिमप्रियाणि । क्रोधेन मद्येनरवेश्च भासा रागं व्रजन्त्याशु विलोचनानि ॥ मध्यायुषोमध्यबलाःपण्डिताःक्लेश भीरवः । व्याघ्राखुकपिमार्जारऋक्षालूताश्चपैत्तिकाः ॥ ३४ ॥

पित्त प्रकृतिके लक्षण ॥

पित्त अग्नि स्वरूप और अग्निसे उत्पन्न हुआहै इस्से पित्त प्रकृतिवाला पुरुष तीव्र तृषा और क्षुधावाला गौर बर्ण उष्ण अंग लाल हाथ पैर और नेत्र वाला शूर अभिमानी पिंगलकेश और थोडे रोम वाला प्रिय पुष्पादिकोंकी माला और सुगन्धादि द्रव्योंके लेपोंसे आभूषित सत् चरित्र पवित्र आश्रितोंका प्रति पालक ऐश्वर्य्य साहस बुद्धि और बल करके युक्त शत्रुओंका भी भयमें रक्षाकरने वाला बुद्धिमान् शिथिल सन्धि बन्धन और मांस वाला स्त्रियोंको अप्रिय थोडे वीर्य्य और कामदेव वाला चंचल तरंगवाले जलमें वास करनेवाला मधुर कषैलातिक्त और शीतल भोजन करनेवाला धर्मद्वेषी बहुत पसीने वाला शरीरमें दुर्गन्धि युक्त मल क्रोध पान भोजन और ईर्षाकी अधिकतासे युक्त स्वप्नमें कनेर टेसूके फूल दिग्दाह उल्का बिजली सूर्य्य और अग्निका देखने वाला सूक्ष्म पिंगल वर्ण चंचल थोड़े पलकवाले शीतलताके चाहनेवाले क्रोध मद्य और सूर्य्यके तेजसे रक्तवर्णहोनेवाले नेत्रोंसे युक्त मध्यम अवस्था और बल वाले पंडित और क्लेशसे डरनेवाले होतेहैं व्याघ्ररीछ बन्दर बिल्ली यक्ष और भूत यह पित्त प्रकृतिहैं ॥ ३४ ॥

श्लेष्मासोमः श्लेष्मलस्तेन सौम्योगूढस्निग्ध श्लिष्टसन्ध्यास्थिमांसः । क्षुत्तृट्दुः ख क्लेशधर्मैरतप्तोवुद्ध्यायुक्तः सात्विकः सत्यसन्धः ॥ प्रियंगुदूर्वा शरकाण्ड दर्भगोरोच ना पद्मसुवर्ण वर्णः ॥ प्रलम्बबाहुः पृथुपीन वक्षाः महाललाटो घननील केशः ॥ मृदंगः समसुविभक्तः चारुदेहो वङ्कोजा रतिरसयुक्तसपुत्रभृत्यः ॥ धर्मात्मा वदति न निष्ठुरं चजातु प्रच्छन्नं वहतिदृढं चिरञ्च वैरम् ॥ समदद्विदेन्द्र तुल्यपीनो जलदाम्भोधिमृदंग शंखघोषः । स्मृतिमानभि योगवान्विनीतो नच बाल्येऽप्यति रोदनो न लोलः ॥ तिक्तंकषायंकटुकोष्णरूक्ष मल्पञ्चभुंक्तेबलवांस्तथापि ॥ रक्तान्तसुस्निग्धविशालदीर्घसु व्यक्तशुक्लासितपक्ष्मलाक्षः ॥ अल्पाहारः क्रोधपानाशनेहः प्रज्ञावित्तोदीर्घसूत्रीवदान्यः हृद्गम्भीरः स्थूलवक्षाः क्षमावान्निद्रा लुश्चालुब्धवृत्तःकृतज्ञः ॥ ऋजुविपाश्चित्सुभगः

सलज्जोभक्तो गुरूणांस्थिर सौहृदश्च ॥ स्वप्ने सपद्मान् सविहंगमाला न्तोयाशया न्पश्यतितोयदांश्च ॥ विष्णुरुद्रेन्द्रवरुणतार्क्ष्यहंसगजाधिपैः । श्लेष्मप्रकृतयस्तुल्या स्तथासिंहाश्चगोवृषैः ॥ ३५

श्लेष्म प्रकृतिके लक्षण ॥

श्लेष्मा सोम स्वरूप होताहै इसी से कफ प्रकृति मनुष्य सौम्य होताहै उसकी सन्धि और हड्डी दिखाई नहीं देतीहैं और मांस चिकना होताहै वह क्षुधा तृषा और मानसिक तथा बाह्य दुःखोंसे संतप्त नहीं होता बुद्धिमान् सात्त्विक और सत्य बोलनेवाला होताहै कांगनी दूब शर्करा कुश गोरोचन कमल और सुवर्णके समान वर्णवाला होताहै उसकी भुजा लम्बी छाती मोटी और चौड़ी बड़ाललाट और बाल नीले और घने होतेहैं उसका शरीर कोमलअंग सुडौल सुन्दरदेह और ओज मैथुन शक्ति रस वीर्य्य और पुत्र अधिक होतेहैं और भृत्यभी अधिक होतेहैं वह धर्मात्मा और कभी कठोरवचन नहीं कहताहै द्वेष को चित्तमें छिपाहुआ और दृढ रखताहै उसका गमन मतवाले हाथी के समान और स्वर मेघ समुद्र मृदंग तथा शंखके समान गंभीर होताहै वह स्मरण शक्ति और उद्योग युक्त होकर बहुत सुशील होताहै और बाल्य अवस्था में भी बहुत रोने वाला और चंचल नहीं होता है तिक्त कषैला कटु उष्ण रूखा और थोड़ा भोजन करनेपर भी बलवान् रहताहै उसके नेत्र भीतर कोनेकी ओर लाल चिकने बड़े और लम्बे श्वेत और कृष्ण भाग अच्छी रीतिसे प्रकाशित और मोटे पलक वाले होतेहैं आहार क्रोध तृषा बचन और ईर्षा यह स्वल्प होते हैं दूरदर्शी दीर्घसूत्री उदार गंभीर हृदय चौड़ी छाती क्षमायुक्त अधिक निद्रालु लोभरहित कृतज्ञ सीधा पंडित सुन्दर लज्जावान् गुरुभक्त और अचल प्रेमवाला होताहै और स्वप्नमें कमल और जलजीवों से युक्त तड़ागोंको तथा मेघों को देखताहै विष्णु रुद्र इन्द्र वरुण गरुड़ हंस ऐरावत सिंह गौ और बैल यह भी कफ प्रकृति होतेहैं ॥ ३५ ॥

ननुप्रकृतिहेतूनां मध्येयोऽधिकःसस्वव्याधीन्कथं नकरोतीत्याशङ्क्यामाह ॥ विषजा तोयथाकीटो नविषेनप्रबाध्यते । तद्वत्प्रकृतयोमर्त्यंशक्नुवन्तिनबाधितुम् ॥ एतौद्वौनञा वपीषदर्थेतेन विशेषेणविषजदाहादिना । ईषत्प्रबाध्यते नतुभृशं तथाचप्रकृतयःप्रकृति हेतवोदोषाःबाधितुं नशक्नुवन्तिकरचरणस्फुटित्वंस्वेदनिद्राधिक्यादिनाईषद्बाधितुंश क्नुवन्त्येव ॥ नतुज्वरादिभिः प्रकोपोवानभावोवाक्षमोवानोपजायते । प्रकृतीनां स्वभावेन जायतेतुगतायुषः ॥ ३६ ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचिते
भावप्रकाशेबालप्रकरणंतृतीयम् ॥ ३ ॥

यह सन्देह उत्पन्नहोसक्ताहै कि प्रकृतियोंके कारणोंमें से जो अधिक होताहै वह अपने २ रोगों को क्योंनहीं उत्पन्नकरताहै इसके उत्तरमें कहतेहैं कि जैसे बिष से उत्पन्नहुआ कीट बिषसे बहुत पीड़ित नहीं होताहै उसी प्रकार प्रकृति के कारण वातादिकभी मनुष्यको बहुत पीड़ित नहीं करते हैं अर्थात् हाथ पैरोंका फटना अधिक स्वेदहोना और निद्राकी अधिकता आदि से कुछ पीड़िततो

करतेहीहैं परन्तुज्वर आदि रोगोंसे अत्यन्त पीडित नहीं करतेहैं प्रकृतियोंकेद्वारा वातादिकोंका कोप नहीं होता प्रकृतियोंका भेद नहीं होता और क्षय नहीं होता और जो यह बातें होयँ तो मनुष्यको गत आयु जानना चाहिये ॥ ३६ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितभावप्रकाश
स्यभाषानुवादे बालप्रकरणं तृतीयम् ॥ ३ ॥

अथदेशाः ॥

भूमिदेशस्त्रिधानूपो जांगलोमिश्रलक्षणः । तत्रानूपलक्षणम् ॥ नदीपल्वलशैलाढ्यः फुल्लोत्पलकुलैर्युतः ॥ हंससारसकारण्डचक्रवाकादिसेवितः । शशवाराहमहिषरुरुरोहिकुलाकुलः ॥ प्रभूतद्रुमपुष्पाढ्यो नीलशस्यफलान्वितः । अनेकशालिकेदारकदलीक्षु विभूषितः ॥ अनूपदेशोज्ञातव्यो वातश्लेष्मामयार्त्तिमान् ॥ २ ॥

देशोंका वर्णन ॥

भूमिदेश तीनप्रकारकेहैं अनूप-जांगल और साधारण १(अनूपदेशका लक्षण) जिस देशमें नदी छोटे२ तड़ाग- पर्व्वत- प्रफुल्लित कमल, हंस, सारस, कारंड (बत्तक) चकवा चकवी आदि पक्षी- खरगोश, शूकर, भैंसभैंसा, रुरुमृग आदि पशु बहुत वृक्ष और पुष्प, नीलेधान फल अनेक प्रकार के चावलोंसे युक्त खेत, केला और ऊख यह सब शोभायमानहों वह अनूप देश जानना चाहिये और ऐसे देशमें वात और कफकीपीडा अधिकहोती है ॥ २ ॥

अथ जांगललक्षणम् ॥

आकाशशुभ्रउच्चश्चस्वल्पपानीयपादपः । शमीकरीरविल्वार्कपीलुकर्कन्धुसंकुलः ॥ हरिणैणर्क्षपृषत गोकर्णखरसंकुलः ॥ सुस्वादुफलवानूदेशोवातलोजांगलःस्मृतः ॥ ३ ॥

जांगलदेशके लक्षण ॥

जो देश आकाशके समान निर्मल तथा ऊंचाहो और जिसमें जलाशय और वृक्ष न्यूनहों, शमी, करील, बेल आक और बेर, यह सबवृक्ष बहुत उत्पन्नहों और जिसमें हरिण, एणनाममृग, रीछ पृषत (मृगविशेष) गोकर्ण (मृगभेद) और गर्दभ यह बहुतरहें वह देश अच्छे फलों से युक्त जांगल कहाताहै और देशवादी होतीहै ॥ ३ ॥

तन्त्रान्तरे । बहूदकनगोऽनूपःकफमारुतरोगवान् । जांगलोऽल्पाङ्गशाखीचपित्तासृङ्मारुतोत्तरः ॥ ४ ॥

शास्त्रान्तरमें तो बहुत जल और पर्वतोंसे युक्त देश अनूप कहलाताहै इसमें कफ और वायु के रोग बहुतहोतेहैं और थोड़े जल और वृक्षवाला जांगलदेशहै इसमें पित्त रुधिर और वायुकी अधिकता होतीहै ॥ ४ ॥

साधारणलक्षणम् ॥

संसृष्टलक्षणोयस्तुदेशःसाधारणोमतः । समास्साधारणेयस्माच्छीतवर्षोष्णमारुताः॥ समतातेनदोषाणां तस्मात्साधारणोवरः ॥ ५ ॥

साधारण देशके लक्षण ॥

जिसमें अनूप और जांगल इनदोनों देशोंके लक्षण मिलें वह साधारण देशहै और उसमें शीत बर्षा गर्मी तथा वायु समहोतेहैं दोषों के समहोने के कारण साधारण देश उत्तमहै ॥ ५ ॥

(सुश्रुतात्)उचितेवर्त्तमानस्या नास्तिदुर्देशजंभयम् । आहारस्वप्नचेष्टादौ तद्देशस्य कृतेसति (वृद्धवाग्भटः)यस्यदेशस्ययोजन्तुस्तज्जन्तस्यौषधंहितम् । देशादन्यत्र वसतस्तत्तुल्यगुणमौषधम् ॥ स्वेदेशेनिचितादोषा अन्यस्मिन्कोपमागताः । बलवन्तस्तथानस्युर्जलजा स्थानजास्तथा ॥ ६ ॥

जो उचितदेशमें रहकर आहार, स्वप्न और चेष्टादिकोंमें उसी देशके अनुकूल आचरणकरे उस को दुष्टदेशका भय नहीं होताहै यह सुश्रुतमें लिखाहै वृद्धवाग्भटमें कहाहै कि जिसका जिसदेशमें जन्म और बासहो उसको उसी देशकी औषधि उपकारीहै और उसदेशको त्यागकरके दूसरे देशमें रहनेवाले को जिसदेशमें रहताहो उसी की औषधि गुणकारीहै क्योंकि जलज अथवा स्थलजदेशमें इकट्ठे हुये दोष अन्य देशमें जाकर कुपित हुये विशेष बलवान् नहीं होसक्ते ॥ ६ ॥

अथदिनादिचर्य्या ॥

मानवोयेनविधिनास्वस्थस्तिष्ठतिसर्वदा । तमेवकारयेद्वैद्योयतःस्वास्थ्यंसदेप्सितम् दिनचर्य्यांनिशाचर्य्यां ऋतुचर्य्यांयथोदिताम् । आचरन्पुरुषःस्वस्थःसदातिष्ठति नान्यथा ॥ ७ ॥

दिनचर्य्या ॥

मनुष्य जिसप्रकार से सदैव प्रसन्नरहै बैद्यको उचितहै कि उसी रीति को करवावे क्योंकिप्रसन्न ता सदैव सब को प्रियहै कही हुई बिधि से दिनचर्य्या रात्रिचर्य्या और ऋतुचर्य्याको करताहुआ पुरुषस्वस्थ रहताहै अन्यथानहींरहता ॥ ७ ॥

तत्रस्वस्थस्यलक्षणमाह ॥

सुश्रुतःसमदोषः समाग्निश्चसमधातुमलक्रियः । प्रसन्नात्मेंद्रियमनाःस्वस्थ इत्यभिधीयते ॥ क्रियात्रकर्मतेनसमक्रियः । शरीरानुरूपकर्मा ॥ ८ ॥

स्वस्थका लक्षण ॥

बातादि दोष अग्निमल और रसादि धातुओंकी समताहो- शरीरके अनुसार कार्य्य में शक्तिहो आत्माइन्द्री और मन प्रसन्नहो तो स्वस्थ कहलाताहै ॥ ८ ॥

तत्रदिनचर्य्यामाह ॥

ब्राह्ममुहूर्तेबुद्ध्येत स्वस्थोरक्षार्थमायुषः । तत्रदुःखार्त्तशान्त्यर्थंस्मरंहिमधुसूदनम् ॥ दध्याज्यादर्शसिद्धार्थंविल्व गोरोचनास्रजाम् । दर्शनंस्पर्शनं कार्य्यंप्रबुद्धेनशुभावहम् ॥ स्वमाननंघृतेपश्येद्यदीच्छेच्चिरजीवितम् । आयुष्यमुषसिप्रोक्तंमलादीनांविसर्जनम् ॥ तदत्रकूजनाध्मानो दरगौरववारणम् । आदिशब्देनवात मूत्रादीनांग्रहणम् ॥ आटोप शूलौपरिकर्त्तिकाच संगःपुरीषस्यतथोर्ध्ववातः । पुरीषमास्यादथवानिरेति पुरीषवेगेऽभि

हतेनरस्य ॥ परिकर्त्तिका ।.गुदेपरिकर्त्तनवत्पीड़ा । पुरीषस्य संगोनिरोधः । ऊर्ध्ववातः उद्गाढ़ाहुल्यम् ॥ वातमूत्र पुरीषाणां संगोऽध्मानं क्लमोरुजा । जठरे वातजाश्चान्ये रोगाःस्यु र्वातनिग्रहात् ॥ वस्तिमेहनयोःशूलं मूत्रकृच्छ्रंशिरोरुजा । विनामोवङ्क्षणाना हः स्याल्लिङ्गंमूत्रनिग्रहे ॥ विनामःशरीरस्य नम्रतावङ्क्षणानाहः । वंक्षणस्याकर्षण व त्पीड़ा ॥ नवेगितोऽन्यकार्यः स्यान्न वेगानीरयेद्बलात । कामशोकभयक्रोधान् मनो वेगान्विधारयेत् ॥ गुदादि मल मार्गाणां शौचं कान्तिबलप्रदम् । पवित्रकरमारुयातं म लक्ष्मीकलिपापहृत् ॥ प्रक्षालनंमतंपाण्योः पादयोःशुद्धिकारणम् । मलश्रमहरंदृष्ट्यं च क्षुष्यंराजसापहम् ॥ ९ ॥

दिनचर्य्या ॥

स्वस्थ मनुष्य स्वस्थताकी रक्षाकेलिये ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर दुःखकी शांतिकेलिये मधुसूदनजी का स्मरण करे फिर दही घृत सरसों बेल- गोरोचन- इनका सुखदायी दर्शनतथास्पर्शकरे- और जो बड़ी आयुकी इच्छा करेतोघृत में अपने मुखको देखे- प्रातःकाल मल मूत्रादि का त्यागकरनाभी आयुका बढ़ाने वालाहै क्योंकि उससे उदरका गड़गड़ाना-अफरा औरभारीपन दूरहोताहै मलके वेग रोकनेसे मनुष्यके उदरमें गड़ २ शब्दपीड़ा गुदामें कैंचीसे काटने कीसी पीड़ा कब्ज बहुत डकारें और मुखसे मल निकलना यह सबबातें होतीहैं, वायुके रोकने से वायुमल मूत्रका निरोध उदर में अफरा ग्लानि पीड़ा और उदरमें वायुके अनेकरोग उत्पन्नहोते हैं,मूत्रका वेगरोकनेसे पेडू औरलिंगमें पीडा मूत्रकृच्छ्र शिरमें पीड़ा शरीरको नम्रता और वंक्षणमें खेंचने के समान पीडा होती है मलादिकों कावेग उपस्थित होने पर अन्यकार्य्य नकरे और बलकरके मलको निकाले नहीं परन्तुकाम शोकभय औरमनके बेगोंकोरोके गुदादि मलोंके मार्गका शौच कान्ति और बलकादेने वाला पवित्र आयुवर्द्धक और दुर्भाग्य तथा कलिके पापका नाशकरने वाला कहागयाहै, हाथ और पैरोंका धोना शुद्ध करनेवाला मल तथा श्रमका नाशक वीर्य्य बर्द्धक नेत्रोंको हितकारी और रजोगुण का नाश करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

दन्तकाष्ठ विधिः ।

भक्षयेद्दन्तपवनं द्वादशांगुलमायतम् । कनिष्ठिकाग्रवत्स्थूल मृज्वग्रन्थितथाऽव्रण म् ॥ एकैकंघर्षयेद्दन्तं मृदुनाकूर्चकेणतु । दन्तशोधनचूर्णेन दन्तमांसान्यबाधयन ॥ क्षौ द्रत्रिकटुकाक्तेन तैलसिन्धुभवेनवा । चूर्णेनतेजोवत्याश्च दन्तान्नित्यंविशोधयेत् ॥ तेजो वती तेजवल्कल इतिलोकेप्रसिद्धा । मधूकोमधुरेश्रेष्ठः करञ्जःकटुकेतथा ॥ निम्बस्स्या त्तिक्तकेश्रेष्ठः कषायेखदिरस्तथा । समयन्तुसमालोक्यदोषञ्चप्रकृतिंतथा ॥ यथोचितैर सैर्वीर्य्यैर्युक्तंद्रव्यंप्रयोजयेत् । तेनास्यमुखवैरस्यदन्ताजिह्वास्यजागदाः ॥ रुचिर्वैशद्यलघु तानभवन्तिभवन्तिच । अर्कैर्वीर्य्यैर्वटेदीप्तिः करञ्जेविजयोभवेत् ॥ क्षीरेचैवार्थस म्पत्ति र्वदर्य्यांमधुराशनम् । खदिरेमुखसौगन्ध्यं विल्वेतुविपुलंधनम् ॥ उदम्बरेतुवाक सिद्धि राम्रेत्वारोग्यमेवच । कदम्बंतुधृतिर्मेधा चम्पकेदृढ़वाकश्रुतिः ॥ शिरीषेकीर्त्ति

सौभाग्यमायुरारोग्यमेवच । अपामार्गेधृतिर्मेधाप्रज्ञाशक्तिस्तथाशने ॥ दाड़िम्यांसुन्दराकारः ककुभेकुटजेतथा । जातीतगरमन्दारे र्दुःस्वप्नञ्चविनश्यति ॥ गुञ्जिकातालहिन्तालं केतकश्चबृहद्वरः । खर्जूरंनारिकेरञ्च सप्तैतेतृणराजकाः ॥ तृणराजसमुत्पन्नं यःकुर्य्याद्दन्तधावनम् । नरश्चाण्डालयोनिःस्या द्यावद्गंगान्नपश्यति ॥ नखादद्गलतालवोष्ठ जिह्वादन्तगदेषुतत् । मुखस्यपाकेशोथेच श्वासकासवमीषुच ॥ दुर्बलोजीर्णभुक्तश्च हिक्कामूर्च्छामदान्वितः । शिरोरुजार्त्तस्तृषितःश्रान्तः पानक्लमान्वितः ॥ अर्दितः कर्णशूलीच नेत्ररोगीनवज्वरी । वर्ज्जयेद्दन्तकाष्ठन्तु हृदामययुतोऽपिच ॥ अजीर्णभुक्तः नर्जीर्णे भुक्तं यस्यसः । जिह्वानिर्लेखनंहैमं रजतंताम्रजंतथा ॥ पाटितंमृदुतत्काष्ठं मृदु पत्रमयंतथा । (तत्काष्ठंदन्तशोधन योग्यंकाष्ठम्) दशांगुलंमृदुस्निग्धं तेनजिह्वांलिखेत्सुखम् । तज्जिह्वामलवैरस्य दुर्गन्धजड़ताहरम् ॥ गंडूषमपिकुर्व्वीत शीतेनपयसा मुहुः । कफतृष्णामलहरं मुखांतःशुद्धिकारकम् ॥ सुखोष्णोदकगण्डूषः कफारुचिमलापहः । दन्तजाड्यहरश्चापि मुखलाघवकारकः ॥ विषमूर्च्छामदार्त्तानां शोषिणांरक्तपित्तिनाम् । कुपिताक्षिमलक्षीण रूक्षाणांसनशस्यते ॥ सुखोष्णोदक गण्डूषः । मुखप्रक्षालनंशीत पयसारक्तपित्तजित् ॥ मुखस्यपीड़िकाशोष नीलिकाव्यंगनाशनम् । कुर्य्याद्वापिकटूष्णेन पयसास्यविशोधनम् ॥ कफवातहरंस्निग्धं मुखशोषविनाशनम् । कटुतैलादिनस्यार्थे नित्याभ्यासेनयोजयेत् ॥ प्रातःश्लेष्मणिमध्याह्ने पित्तेसायंसमीरणे । सुगन्धवदनास्निग्ध निःस्वनाविमलेन्द्रियाः ॥ निर्वलीपलितव्यंगा भवेयुर्नस्यशीलिनः । सौवीरमञ्जनंनित्यं हितमक्ष्णोस्ततोभजेत् ॥ लोचनेभवतस्तेन मनोज्ञेसूक्ष्मदर्शने । सौवीरंश्वेत सुरमा इति लोके प्रसिद्धम् ॥ स्रोतोऽञ्जनंमतंश्रेष्ठं विशुद्धंसिन्धुसम्भवम् । दृष्टेःकण्डूमलहरं दाहक्लेदरुजापहम् ॥ अक्ष्णोरूपावहञ्चैव सहतेमारुतातपौ । नेत्ररोगानजायन्ते तस्मादञ्जनमाचरेत् ॥ श्रोतोऽञ्जनंकृष्णसुरमा इति लोके । विशुद्धंशोधनं विनापि सिंधु सम्भवम् । सिंधुनाम पर्वतः तत्रसम्भवम् ॥ रात्रौजागरितःश्रान्तः छर्दितोभुक्तवांस्तथा । ज्वरातुरःशिरःस्नातो नाक्ष्णोरञ्जनमाचरेत् ॥ १० ॥

दन्तधावनविधि ॥

बारह अंगुल लंबी कनिष्ठका (छगुनीउंगली) के समान मोटी कोमल ग्रन्थि दाग आदि से रहित दांतन करे- मंजन को लगाकर कोमल कूंचीसे दांतोंके मांसको पीड़ा न देताहुआ एक २ दांतरगड़े सहत और त्रिकुटा से अथवा सरसों के तेल और सेंधे नोनसे अथवा तजबल कलके चूर्ण से दांतोंको नित्य शुद्धकरे- मधुर काष्ठों में महुआ- कडुओंमें करंज- तिक्तों में नींब और कषैलों में खैर श्रेष्ठ है- समय दोष और प्रकृतिको देखकर यथायोग्य रस और वीर्य्य से युक्त काष्ठसे दंतधाव न करे इससे मनुष्यके मुखकी विरसता- दन्त जिह्वा और मुखके अन्यरोग नहीं होतेह और रुचि स्वच्छता और हलकापन होताहै आकसे वीर्य्य- वटसे दीप्ति- करंजसे विजय पकरिया से अर्थ सम्पत्ति- बेर से मधुर

भोजन खैरसे मुखकी सुगन्धि-बेलसे विपुलधन गूलर से बाक सिद्धि आमसे नीरोग्य कदंबसे धैर्य्य और मेधा-चंपासे दृढबुद्धि- शिरससे कीर्त्ति सौभाग्य आयु और आरोग्य- लटजीरे से धैर्य्य- मेधा बुद्धि और उत्तम कण्ठ- अनार अर्जुन और कुटज से सुन्दर आकार और जायफल तगर तथा मंदारकी दतौन से दुस्वप्नका नाशहोताहै चिरमिटी- ताल- हिंताल- केतकी- वृहत्तृण- खजूर और नारियल यह सात तृणराज कहलातेहैं इनकी दतौन करने सें मनुष्य जबतक गंगा जीके दर्शन न करे तबतक चांडाल रहता है गला- तालु- ओष्ठ- जिह्वा और दांतोंमें रोगवाला पकेहुए तथा सूजे मुखवाला श्वासकास और छर्दिके रोगसे युक्त दुर्बल- अजीर्ण युक्त हुचकी मूर्च्छा- तथा मदयुक्त शिरकी पीड़ा से व्याकुल- प्यासा- थका- मद्यपीने की ग्लानि से युक्त अर्दित रोगी कानमें शूलवाला नेत्र रोगी नवीन ज्वरवाला और हृदय के रोगसे युक्त मनुष्य दतौन न करे-सोना चांदी अथवा तांबे की या चिरेहुए कोमल दतौन के काष्टकी वा कोमल पत्तेकी दश उंगलकी लंबी और कोमल चिकनी जीभीसे जिह्वाको शुद्धकरे इस्से जिह्वा का मल बिरसता-दुर्गन्धि और जडताका नाशहोताहै शीतल जल से कफ तृषा औरमल के नाशक मुखके भीतर शुद्ध करनेवाले बारंबार कुल्लेकरे कुछ गरमजल के द्वारा कुल्ले करने से कफ अरुचि-मल तथा दांतोंकी जडता का नाश और मुखमें हलकापनहोताहै परन्तु विष मूर्च्छा मद राजयक्ष्मा रक्त पित्त नेत्ररोग कुपितमल क्षीणता और रूक्षता इनरोगोंसे युक्त मनुष्यको गरम जल से कुल्ले करना उचित नहींहै शीतल जल के द्वारा मुख धोनेसे रक्तपित्त मुखकी पिड़िका (फुंसी) खुशकी नीलिका और व्यंगका नाशहोताहै कुछ गरमजल के द्वारा मुखधोनेसे कफ बात और मुखकी खुशकी तथा चिकनाई का नाशहोताहै प्रतिदिन कडुए तेल आदि की नासका अभ्यासकरना चाहिये प्रातःकालश्लेष्मा मध्याह्नमें पित्त और सायंकाल में वायुकी शान्ति के लिये कडुए तेलकी नासलेनी चाहिये नासके अभ्यासी पुरुषके मुखमें सुगन्धि होतीहै स्वर उत्तम होताहै इन्द्रियां निर्मल होतीहैं झुर्रीबालोंका पकना और व्यंग यह नहीं होतेहैं नेत्रोंका हितकारी श्वेत सुरमानित्य लगावे इस्से नेत्र सुन्दर सूक्ष्म देखनेवाले होतेहैं सिन्धु नाम पर्व्वतसे उत्पन्न शुद्ध कालासुरमा श्रेष्ठ कहागयाहै इसके लगाने से नेत्रोंकी खुजली मल दाह क्लेद और रोगनाश होतेहैं और नेत्रसुन्दरहोतेहैं वायु धूपको सहतेहैं और नेत्रोंमें कोई रोग नहीं उत्पन्न होताहै इससे अंजन लगाना उचितहै ज्वर से पीडित और शिरसे स्नान किया हुआ रात्रि में जागाहुआ- थका- वमनकरनेवाला और भोजन कियाहुआ पुरुष नेत्रों में अंजन नहीं लगावे ॥ १० ॥

पञ्चरात्रान्नखश्मश्रुकेशरोमाणिकर्त्तयेत्। केशश्मश्रुनखादीनांकर्त्तनंसम्प्रसाधनम् ॥ पौष्टिकंधनमायुष्यंशौचकान्तिकरंपरम् । सम्प्रसाधनम् शोभाजनकम् ॥ उत्पाटयेत्तु लोमानिनासाया नकदाचन । तदुत्पाटनतोदृष्टिर्दौर्बल्यंत्वरयाभवेत् ॥ केशपाशंप्रकुर्व्वीत प्रसाधन्यातुसाधनम् । केशप्रसाधनंकेश्यंरजोजन्तुमलापहम् ॥ आदर्शालोकनंप्रोक्तं मांगल्यंकांतिकारकम्। पौष्टिकंबल्यमायुष्यंपापालक्ष्मीविनाशनम् ॥ लाघवंकर्मसामर्थ्यं विभक्तघनगात्रता । दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्चव्यायामादुपजायते ॥ व्यायामदृढ़गात्रस्य व्याधिर्नास्तिकदाचन । विरुद्धंवाविदग्धंवाभुक्तंशीघ्रंविपच्यते ॥ भवन्तिशीघ्रंनैतस्य देहेशैथिलतादयः । नचैनंसहसाक्रम्य जरासमधिरोहति ॥ नचास्तिसदृशन्तेनकि

ञ्चित्स्थौल्यापकर्षकम् ॥ ससदागुणमोधत्तबालिनांस्निग्धभोजिनाम् ॥ वसन्ते शीतिसमयेसुतरांसहितोमतः । अन्यदापिचकर्त्तव्योबलार्द्धेनतथाबलम् ॥ हृदय स्थोयदावायुर्वक्त्रंशीघ्रंप्रपद्यते । मुखञ्चशोषंलभतेतद्बलार्द्धस्यलक्षणम् ॥ किंवा ललाटेनासायांगात्रसन्धिषुकक्षयोः । यदासञ्जायतेस्वेदोबलार्द्धन्तुतदादिशेत् ॥ भुक्तवान्कृतसम्भोगः कासोश्वासःकृशःक्षयी । रक्तपित्तीक्षतीशोषीनतंकुर्य्यात्कदाच न ॥ अतिव्यायामतःकासोज्वरःछर्द्दिश्रमःक्लमः । तृष्णाक्षयःप्रतमकोरक्तपित्तञ्चजा यते ॥ अभ्यंगंकारयेन्नित्यंसर्वेष्वंगेषुपुष्टिदम् । शिरःश्रवणपादेषुतंविशेषेणशीलयेत् ॥ सार्षपंगन्धतैलञ्चयत्तैलंपुष्पवासितम् । अन्यद्रव्ययुतंतैलंनदुष्यतिकदाचन ॥ गन्ध तैलम् गन्धद्रव्याणाम् गुर्व्वादीनामग्नियोगेननिष्काशितःस्नेहः । अभ्यंगोवातकफ हृच्छ्रमशान्तिबलंसुखम् । निद्रावर्णमृदुत्वायुष्कुरुतेदेहपुष्टिकृत्॥ अभ्यंगःशीलितोमूर्ध्नि सकलेन्द्रियतर्पकः । दृष्टिपुष्टिकरोहन्तिशिरोभूमिगतान्गदान् ॥ केशानांबहुतांदार्ढ्ये मृदुतांदीयतांतथा । कृष्णतांकुरुतेकुर्य्याच्छिरसं पूर्णतामपि ॥ नकर्णरोगान्नमलंनच मन्याहनुग्रहः । नोच्चैःश्रुतिर्नवाधिर्य्यंस्यान्नित्यंकर्णपूरणात् ॥ रसाद्यैःपूरणंकर्णेभोजनात् प्राक्प्रशस्यते । तैलाद्यैःपूरणंकर्णेभास्करेऽस्तमुपागते ॥ पादाभ्यंगश्चतत्स्थैर्य्यंनिद्रा दृष्टिप्रसादकृत्। पादसुप्तिंश्रमस्तम्भसङ्कोचस्फुटनप्रणुत् ॥ ११ ॥

पांचदिनमें नख डाढ़ी, केश और रोमों को कटवावे इस्से शोभा पुष्टता धन आयु शौच और कान्ति होतीहै नासिका के रोम कभी न उखाड़े इस्से दृष्टि बड़ी शीघ्रन्यून होजातीहै कंघीसे केशों को बहावे इस्से केशों की उत्तमता और धूल जुआं तथा मलका नाशहोताहै दर्पणका देखना मंगल कान्ति पुष्टि, बल आयुका बढ़ाने वाला और पाप दुर्भाग्यका नाशकरने वाला कहा गयाहै व्याया-मसे हलकापन कायामें सामर्थ्य शरीरका सुडौलहोना दोषोंका नाश और जठराग्निकी वृद्धिहोती है व्यायामसे दृढशरीर वाले पुरुषको कोई रोग नहीं होताहै बिरुद्ध और कठोर भोजन भी शीघ्रपच जाताहै शरीरमें शिथिलताआदिक शीघ्र नहीं होती. एकाएकी वृद्धावस्था नहीं दबातीहै व्यायामके सदृशस्थूलताका नाशकरने वाला दूसरा कोई उपाय नहीं है बलवान्पुरुष और चिकने भोजन कर नेवालोंको व्यायाम सदैव गुण करताहै बसन्त और शीत समय में अत्यन्त हितकारी होताहैअन्य ऋतुओंमें भी अपने २ बलके अनुसार वलार्द्ध (हृदयमें स्थित बायुशीघ्र मुख में आने लगे मुख सूख ने लगे अथवा मस्तक, नासिका,शरीरकी सन्धि और बगलों में स्वेद आजाय वह बलार्द्ध कहाताहै) से करे भोजन तथा मैथुन कियाहुआ दुर्बल खांसी श्वास राजयक्ष्मा रक्तपित्त. क्षत और शोष रोग से युक्तपुरुष कदापि भी व्यायाम न करे बहुत व्यायाम करनेसे खांसी, ज्वर, छर्दि, श्रम ग्लानि तृषा. क्षय- प्रतमक और रक्त पित्त उत्पन्नहोताहै सम्पूर्ण अंगोंमें पुष्टिके लिये नित्य तैल मईनकरा वे परन्तु मस्तक कान और पैरों में विशेषकरावे सरसों का तेल अगरादि सुगन्धित बस्तुओं से अग्निके द्वारा निकालाहुआ तैल पुष्पोंसे बसाया हुआ तेल अथवा अन्य किसी हितकारी बस्तुओं से युक्त तेल कभी दोष नहीं करताहै- तेल लगाने से कफ- बायु, श्रमकानाश शान्ति, बल, सुख

निद्रा वर्ण कोमलता, आयु और शरीर की पुष्टताहोतीहै और शिरमें तेल लगानेसे सम्पूर्ण इन्द्रियोंकी तृप्ति दृष्टि पुष्टता, शिरकेरोगोंका नाश केशोंकी वृद्धि, दृढता, कोमलता दीर्घता श्यामता और शिरकी पुष्टता होतीहै प्रति दिन कानोंमें तेल छोड़ने से कानोंके रोग, मल, मन्या (गलेके के पीछेकी नस) कास्तंभ हनुग्रह बहुत जोरसे शब्दका सुनाई देना और बधिरता नहीं होती है कानमें रसादिकों को छोड़ना भोजन से पूर्व और तेलका छोड़ना सूर्य्यास्तके उपरान्त उचित है पैरोंमें तेल लगानेसे पैरोंकी स्थिरता निद्रा और दृष्टिकी प्रकाशता होती है पैरोंकासोजाना श्रमस्तंभ संकोच और फटना यह नहीं होतेहैं ॥ ११ ॥

व्यायामक्षुण्णवपुषंपद्भ्यांसंमर्दितंतथा । व्याधयोनोपसर्पन्तिवैनतेयमिवोरगाः ॥लोमकूपंशिराजालंधमनीभिःकलेवरे । तर्पयेद्बलमाधत्तेस्नेहयुक्तोऽवगाहने ॥ अद्भिःसंसिक्तमूलानांतरूणाम्पल्लवादयः । वर्द्धन्तेहितथानृणांस्नेहसंसिक्तधातवः ॥ १२ ॥

व्यायाम करने वाले और पैर मलवाने वाले पुरुषको रोग ऐसे नहीं प्राप्तहोते जैसे कि गरुड़को सर्पनहीं प्राप्तहोते हैं, शरीरमें तेललगा स्नान करके रोमकूप, शिराजाल और धमनियोंके द्वारा शरीरको पुष्टकरने से ऐसे बल बढ़ताहै जैसे कि जलसे सिंचे हुएमूल वाले वृक्षों के पल्लवादिक बढ़ते हैं उसी प्रकार स्नेहसे सिंचीहुई मनुष्योंकी धातुभी बढ़ती हैं ॥ १२ ॥

नवज्वरीअजीर्णीचनाभ्यक्तव्यःकथञ्चनातथाविरिक्तोवान्तश्चनिरूढ़ोयश्चमानवः । निरूढ़ःदत्तोनिरूहवास्तिश्चयस्मैसः । पूर्व्वयोःकृच्छ्रताव्याधेरसाध्यत्वमथापिवा । शेषाणांनत्विहप्रोक्तावह्निसादादयोगदाः ॥ पूर्व्वयोःतरुणज्वरिणोऽजीर्णिनोश्च ॥ १३ ॥

नवीनज्वर और अजीर्णवाला तेल नहीं लगावे क्योंकि इससे कृच्छ्र साध्य अथवा असाध्यहो जाताहै और विरेचन वाला, बमनकरने वाला और जिसको निरूह वस्तिदीगई हो ऐसा मनुष्य भी तेलनहीं लगावे क्योंकि इससे अग्नि मन्दता आदि रोग उत्पन्न होतेहैं ॥ १३ ॥

उद्वर्त्तनङ्कफहरंमेदोघ्नंशुक्रदम्परम् । बल्यंशोणितकृच्चापित्वक्प्रसादमृदुत्वकृत् ॥ मुखलेपात्दृढ़ंचक्षुःपीनोगण्डस्तथाननम् । कान्तमव्यंगपिडकंभवेत्कमलसन्निभम् ॥ दीपनंवृष्यमायुष्यंस्नानमोजोबलप्रदम् । कण्डूमलश्रम खेदतन्द्रातृड़दाहपाकनुत् ॥ वार्य्यैश्चसेकैःशीतार्द्यैरूष्मान्तर्यातिपीड़ितः । नरस्यस्नातमात्रस्यदीप्यतेतेनपावकः ॥ शीतेनपयसास्नातंरक्तपित्तप्रशांतिकृत् ॥ तदेवोष्णेनतोयेनबल्यंवातकफापहम् ॥ शिरःस्नानमचक्षुष्य मत्युष्णेनाम्बुनासदा॥वातश्लेष्मप्रकोपेतुहितन्तच्चप्रकीर्त्तितम् ॥ १४॥

उबटन कफ और मेदका नाशक वीर्य, बल, रुधिर, त्वचाकी कोमलता और उत्तमता का करने वाला होताहै, और मुखके लेपकरने से नेत्रदृढ़होते हैं कपोल मोटे और मुख सुन्दर व्यंगपिड़िका रहित कमलके समान होताहै स्नान, अग्नि दीपक, वीर्य, आयु, ओज और बलकाबढ़ाने वालाहोकर, खुजली, मल, कामस्वेद, तन्द्रा, तृषा, दाह और पापका नाशकरनेवाला होताहै, शीतल जलादिकोंके सिंचनसे बाहरकी ऊष्मा दबकर शरीरके भीतर जाती है इसी से केवलस्नानहीं मात्रके द्वारा मनुष्यकी जठराग्नि दीप्तहोती है, शीतल जलके स्नान करनेसे रक्त पित्तकी शांति होती है, उष्ण जल के द्वारास्नान करने से बलकी वृद्धि और वातकफका नाशहोताहै, बहुतगरम

जलके द्वारा शिरसे स्नानकरना नेत्रोंको अहितहै परन्तु वात पित्तके कोपमें हितकहागयाहै ॥ १४ ॥

अशीतेनाम्भसास्नानंपयःपानन्नवास्त्रियः । एतद्वोमानवाःपथ्यं स्निग्धमल्पञ्च भोजनम् ॥ १५ ॥

हेमनुष्य गण मन्दोष्ण जल से स्नान दुग्धपान नवीन स्त्री स्निग्धस्वल्प भोजन यह तुम्हारा पथ्यहै ॥ १५ ॥

हरिश्चंद्रस्यैतत् ॥

यःसदामलकैस्नानंकरोतिसविनिश्चितम् । वलीपलितनिर्मुक्तोजीवेद्वर्षशतन्नरः ॥ स्नानंज्वरेऽतिसारेचनेत्रकर्णानिलार्तिषु।आध्मानपीनसाजीर्णिभुक्तवत्सुचगर्हितम्॥ स्नानस्यानन्तरंसम्यग्वस्त्रेणांगस्यमार्ज्जनम्।कांन्तिप्रदंशरीरस्यकण्डूत्वग्दोषनाशनम् १७॥

हरिश्चन्द्रका कहाहुआ ॥

जो मनुष्य सदैव आमलोंका शरीरमें लेप करके स्नान करताहै वह झुर्री और बालोंके पकने से रहित सौ बर्ष तक जीता है स्नानकरना ज्वर अतीसार नेत्र कान और वायुकी पीड़ा, अफरा पीनस अजीर्ण इनरोगोंसे युक्त और भोजन किये हुये मनुष्यों को वर्जित है स्नानके उपरान्त अच्छे प्रकार बस्त्रसे शरीर का पोंछना कान्तिका देनेवाला शरीरकी खुजली और त्वचाके दोषोंका नाशकरने वालाहोताहै १७ ॥

कौशेयौर्णिकवस्त्रञ्चरक्तवस्त्रन्तथैवच । वातश्लेष्महरन्तत्तुशीतकालेविधारयेत् ॥ कौशेयंपट्टाम्बरम्टसरवस्त्रञ्चमेध्यंसुशीतम्पित्तघ्नंकषायंवस्त्रमुच्यते।तद्धारयेदुष्णकाले तत्रापिलघुशस्यते ॥ कषायङ्कोकमोहितिलोकेकषायरागरक्तंवाशुक्लन्तुशुभदंवस्त्रंशीता तपनिवारणम् । नचोष्णन्नचवाशीतन्तत्तुवर्षासुधारयेत् ॥ १८ ॥

रेशमी, ऊनी और रक्त बस्त्र बात और श्लेष्मा को दूर करेहैं उसको शीत कालमें धारणकरना चाहिये कषाय पवित्र शीतल वस्त्र पित्तका नाशकरने वालाहोताहै वह उष्ण कालमें धारणकरना चाहिये उसमेंभी हलका उत्तम है शुक्लबस्त्र कल्याण का देनेवाला शीत और आतपका दूर करने वाला न अति उष्ण न शीतलहोताहै उसको वर्षा में धारणकरे ॥ १८ ॥

यशस्यङ्काम्यमायुष्यंश्रीमदानंदवर्द्धनम् । त्वचंवशीकरंरुच्यंनवनिर्मलमम्बरम् ॥ काम्यंकामोद्दीपकम् । कदापिनजनैःसद्भिःधार्य्यम्मलिनमम्बरम् । तत्तुकण्डूकृमिकरग्लान्यलक्ष्मीकरम्परम् ॥ अलक्ष्मीअशोभादारिद्र्यञ्च ॥ १९ ॥

नवीन और निर्मलवस्त्र यशकारी कामका उद्दीपक आयु और लक्ष्मीका बढ़ानेवाला त्वचाका हित वश करनेबाला और रुचि उत्पन्न करनेवाला होताहै सज्जन पुरुषोंको मलिन वस्त्र कभी न धारण करना चाहिये क्योंकि वह खुजली कीड़े ग्लानि अशोभा और दरिद्रका करनेवाला होताहै ॥ १९॥

कुंकुमञ्चन्दनञ्चापि कृष्णागुरुचमिश्रितम् । उष्णंवातकफध्वंसि शीतकालेतदिष्यते ॥ चन्दनंघनसारेण वलंकेनचमिश्रितम् । सुगंधिपरमंशीतमुष्णकालेप्रशस्यते ॥ (घनसारः कर्पूरः, वालंह्रीवेरम्) चन्दनंघुसृणोपेतं मृगनाभिसमायुतम्। नचोष्णंनच

वाशीतं वर्षाकालेतादिष्यते ॥ (घुसृणंकुंकुमम् । मृगनाभिः कस्तूरी) अनुलेपस्तृषामू र्च्छा दुर्गन्धस्वेददाहजित् । सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्णं प्रीत्योजोबलवर्द्धनः ॥ सस्नानानर्ह लोकानामनुलेपोऽपिनोहितः ॥ २० ॥

केशर चन्दन और कालाअगर यह मिलेहुए उष्ण और वात कफके नाशकरनेवाले होतेहैं इनका लेप शीतकालमें करना चाहिये चन्दन कपूर सुगन्धवाला यहसब मिलेहुए सुगन्धित अत्यन्त शीतल होतेहैं इनका लेप शीतकाल में करना चाहिये चन्दन केशर और कस्तूरी यह मिलेहुए न शीतल न उष्ण होतेहैं इनका लेप बर्षा ऋतुमें करना चाहिये अनुलेप तृषा मूर्च्छा दुर्गन्धि स्वेद दाहका नाशक और सौभाग्य तेज त्वचा का वर्ण प्रीति ओज और बलका वर्द्धक होताहै जिन पुरुषोंको स्नान का निषेध है उनको लेपभी न करना चाहिये ॥ २० ॥

सुगंधिपुष्पपत्राणां धारणङ्कान्तिकारकम् । पापरक्षोग्रहहरं कामदंश्रीविवर्द्धनम् २१॥

सुगन्धित पुष्प और पत्रोंका धारण, कान्ति, काम लक्ष्मी का वर्द्धक और पाप राक्षस ग्रहइन्हों का नाशकहोता है, ॥ २१ ॥

भूषणैर्भूषयेदङ्गं यथायोग्यं विधानतः । शुचिसौभाग्यसन्तोषदायकं काञ्चनंस्मृतम्॥ग्रहदृष्टिहरम्पुष्टि करंदुःस्वप्ननाशनम् । पापदौर्भाग्यशमनं रत्नाभरणधारणम् ॥ माणिक्यन्तरणेःसुजात्यममलं मुक्ताफलम्शीतगो । र्मांहेयस्यचविद्रुमोनिगदितः सौम्यस्य गारुत्मकम् ॥ देवेज्यस्यचपुष्यरागमसुराचार्यस्यवज्रंशनेः । नीलन्निर्मलमन्ययोश्चगदिते गोमेदवैडूर्य्यके ॥ २२ ॥

विधिपूर्व्वक यथायोग्य आभूषणों से अंगोंको शोभित करे, सुवर्ण के आभूषण पवित्रता सौभाग्य और सन्तोषके देनेवाले होते हैं, रत्नोंके आभूषणोंका धारण ग्रहोंकी दृष्टि, दुस्स्वप्न, पाप और दौभाग्य का नाशक और पुष्टता करनेवाला होता है सूर्य्यका माणिक्य, चन्द्रमाका सुन्दरमोती, मंगल का मूंगा, वुधका पन्ना, शुक्रका हीरा- शनैश्चरकी नीलम, वृहस्पति का पुखराज राहुका गोमेद और केतुका वैडूर्य्य यह सबग्रहोंके जुदे २ रत्न हैं, ॥ २२ ॥

वासःशृंगाररत्नानांधारणम्प्रीतिवर्द्धनम् । रक्षोघ्नमर्थ्यमोजस्यं सौभाग्यकरमुत्तमम् ॥ २३ ॥

वस्त्र शृंगार और रत्नों का धारण प्रीति धन ओज और सौभाग्य का बढ़ानेवाला होकर राक्षसों का नाशक होताहै ॥ २३ ॥

सततंसिद्धमन्त्रस्य महौषध्यास्तथैवच।रोचनासर्षपादीनां मांगल्यानाञ्चधारणम्॥ आयुर्लक्ष्मीकरंरक्षोहरं मंगलदंशुभम् । हिंसाभयविध्वंसि वशीकरणकारणम् ॥ २४ ॥

सिद्ध मन्त्र- महौषधि- मंगलीकगोरोचन और सरसों आदि इनका धारण आयु- लक्ष्मी- सहित मंगल का देनेवाला और राक्षस तथा व्याघ्रादि हिंसकोंके भयका नाश करने वाला बशीकरण का कारण और शुभ होता है ॥ २४ ॥

ततोभोजनवेलायां कुर्य्यान्मांगल्यदर्शनम् । तस्यप्रदर्शनन्नित्यमायुर्धर्म्मविबर्द्धनम् ॥ लोकेऽस्मिन्मंगलान्यष्टौ ब्राह्मणोगौर्हुताशनः । पुष्पस्रक्सर्पिरादित्यआपोराजा तथाष्टमः ॥ २५ ॥

भोजन के समय मंगल पदार्थोंका दर्शनकरे उनके दर्शन से नित्य आयुऔर धर्म की वृद्धिहोतीहै- इसलोक में ब्राह्मण- गौ- अग्नि- पुष्पोंकी माला घृतसूर्य्य-जलऔर राजा यह आठ मंगलहैं-॥ २५॥

पादुकारोहणंकुर्य्यात् पूर्व्वंभोजनतःपरम् । पादरोगहरंवृष्यं चक्षुष्यञ्चायुषोहितम्॥ शरीरेजायतेनित्यं वाञ्छानृणाञ्चतुर्विधा । बुभुक्षाचपिपासाच सुषुप्साचरतस्पृहा । भोजनेच्छाबिघातात्स्या दंगमर्दोऽरुचिःश्रमः ॥ तंद्रालोचनदौर्व्वल्यं धातुदाहोबलक्षयः । बिघातेनपिपासाया शोषःकण्ठास्ययोर्भवेत् ॥ श्रवणस्यावरोधश्च रक्तशोषोहृदिव्यथा । निद्राविघाततोजृम्भा शिरोलोचनगौरवम् ॥ अंगमर्द्दस्तथातंद्रास्यादन्नापाकएवच २६॥

भोजन के पूर्व्व और पश्चात् खडाऊँओंपर चढ़े इस्से पैरके रोगोंका नाशवीर्य्य की वृद्धि और नेत्र तथा आयुका हितहोता है- मनुष्योंके शरीर में चारप्रकार की सदैव इच्छा होती है क्षुधा-तृषा, निद्रा और मैथुन की इच्छा इनमें भोजनकी इच्छाके रोकने से अंगमें हड़फूटन, अरुचि, काम तन्द्रा, नेत्रोंकी दुर्बलता धातुओंकी जीर्णता और बलकी हानिहोती है- प्यास के रोकने से गले और मुखका सूखना, कानोंका रुकना, रुधिरका सूखना और हृदय में पीड़ा होती है, निद्राके रोकने से जंभाई, शिर और नेत्रोंका भारीपन, हड़फूटन, तन्द्रा और अजीर्ण होता है, ॥ २६ ॥

बुभुक्षितोनयोऽश्नाति तस्याहारेन्धनक्षयात् । मंदोभवतिकायाग्नि र्यथाचाग्निर्निरिंधनः ॥ आहारं पचति शिखीदोषानाहार वर्ज्जितः । पचति दोषक्षयेच धातून् धातुक्षयेच प्राणान् ॥ २७ ॥

जो क्षुधातुर भोजनको नहीं करता है उसके आहार रूपी इन्धन के नाशसे इन्धन रहित अग्नि के समान जठराग्नि मन्दहोजाती है यह जठराग्नि पहले आहार को पचाती है आहार के नहोने पर दोषों को और दोषोंके नाशहोजाने पर धातुओंको और धातुओंके नाश होजाने पर प्राणोंको विनाश करती है, ॥ २७ ॥

आहारःप्रीणनःसद्योबलकृद्देहधारणः । स्मृत्यायुःशक्तिवर्णौजःसत्वशोभाविबर्द्धनः २८॥

आहार तृप्त करनेवालाशीघ्रबलकारी, शरीर को धारण करने वाला, स्मृति आयुशक्ति वर्ण ओज सत्व और शोभाका वढ़ाने वाला होता है, ॥ २८ ॥

यथोक्तगुणसम्पन्नं नरःसेवेतभोजनम् । विचार्य्यदोषकालादीन् कालयोरुभयोरपि॥ उभयोःकालयोःप्रातः सायञ्च । तथाचसायं प्रातर्मनुष्याणामशनं श्रुतिबोधितम्॥ नान्तराभोजनंकुर्य्यादग्निहोत्रसमोविधिः ।प्रातः,प्रथमयामादुपरिद्वितीययामादर्वाक् ॥ तथाच ॥ याममध्येनभोक्तव्यंयामयुग्मंनलंघयेत् । याममध्येरसोत्पत्तिर्य्यामयुग्माद् बलक्षयः ॥ अन्यच्चक्षुत्सम्भवति पथ्येषुरसदोषमन्येषुच । कालेवायदि वाकालेसोऽन्न कालउदाहृतः ॥ २९ ॥

यथोक्त गुणोंसे युक्त भोजन दोष और समयादि को विचारकर प्रातःकाल और सायंकाल करे बीचमें न करे क्योंकि यह विधि अग्निहोत्र के समान है प्रथम प्रहरके उपरान्त औ दूसरे प्रहरके पहले भोजन करे क्योंकि पहले पहर में रसकी उत्पत्ति होती है और दूसरे पहर के उपरान्त बल का नाश होजाताहै, कोई कहते हैं कि समय में अथवा असमय में रस दोष और मलके परिपाक होजाने पर जबक्षुधा उत्पन्नहो तब भोजन करे, ॥ २९ ॥

रसादीनां पाकज्ञानमाह ॥

उद्गारशुद्धिरुत्साहोवेगोत्सर्गोयथोदितःलघुताक्षुत्पिपासाचजीर्णाहारस्यलक्षणम् ३०॥

रसादिकोंके पाककालक्षण ॥

डकार की शुद्धि, उत्साह, यथा योग्य मलमूत्रादि वेगोंका त्याग, शरीर का हलकापन, क्षुधा और पिपासा काहोना यह परिपाक हुए भोजन के लक्षण हैं, ॥ ३० ॥

स्थानमाह ॥

आहारन्तुनरःकुर्य्यान्निर्हारमपिसर्वदा। उभाभ्यां लक्ष्म्युपेतः स्यात्प्रकाशेहीयतेश्रिया ॥ निर्हारो मलमूत्रोत्सर्गः। अन्यच्च । आहार निर्हार विहार योगाःसदैवसद्भिर्विजनेविधेयाः ॥ ३१ ॥

भोजन का स्थान ॥

मनुष्य भोजन और मल मूत्रादिका त्याग सदैव निर्जन स्थानमें करे इससे शरीर कीश्री बढ़तीहै और सबके आगे करने से श्रीका नाशहोताहै और कहाभीहै कि आहार-मलमूत्रका त्याग और विहार यह सज्जन लोगोंको सदैव निर्जन स्थानों में करने उचितहैं ॥ ३१ ॥

भोजनपात्रमाह ॥

दोषहद्दृष्टिदंपथ्यंहैमंभोजनभाजनम्। रौप्यंभवतिचाक्षुष्यंपित्तहत्कफबातकृत् ॥ कांस्यंबुद्धिप्रदंरुच्यंरक्तपित्त प्रसादनम्। पैत्तलंवातकृद्रूक्षमुष्णंकृमिकफप्रणुत् ॥ आयसेकाचपात्रेचभोजनंसिद्धिकारकम् ॥ शोथपाण्डुहरंवल्यं कामलापहमुत्तमम्॥शैलेयेमृण्मये पात्रेभोजनंश्रीनिवारणम् ॥ दारूद्भवेविशेषेणरुचिदंश्लेष्मकारितु। पात्रंपत्रमयंरुच्यं दीपनंविषपापनुत् ॥ जलपात्रन्तुताम्रस्यतदभावेमृदोहितम्। पवित्रंशीतलंपात्रंगाढ़ितं स्फटिकेनयत् ॥ काचेनरचितन्तद्वत्तथावैड़ूर्य्यसम्भवम् ॥ ३२ ॥

भोजनके पात्र ॥

सुवर्णका भोजनपात्र दोषोंका नाशक दृष्टि बर्द्धक और पथ्यहै, चांदीका पात्र नेत्रोंको हित पित्त नाशक और कफवातका करने वालाहै, कांसेका पात्र बुद्धिका उत्पन्नकरनेवाला रुचि कारक और रक्त पित्तको उत्पन्न करताहै- पीतलका पात्र बात करनेवाला रूखा उष्ण और कृमितथा कफ का नाशकहोताहै लोहे और काचका पात्र सिद्धिदायक वलकारक सूजन पांडु और कामला रोगकानाशक होताहै- पाषाण और मृत्तिका का पात्र श्री नाशक होताहै- काष्ठका पात्र बिशेष करके रुचि करने वाला और कफको उत्पन्न करताहै पत्तों का पात्र रुचि कारक जठराग्नि दीपक और बिषतथा पाप

कानाशक होताहै जल पान करने के लिये ताम्रका पात्र उचितहै उसके अभाव में मृत्तिकाका पात्र श्रेष्ठहै स्फटिक कांच और वैडूर्य्य से बनाहुआ पात्र पवित्र और शीतल होताहै ॥ ३२ ॥

भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रक भक्षणम् । अग्निसन्दीपनंरुच्यंजिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥ ननुलवणस्यपित्तजनकत्वादार्द्रकस्यकटुकत्वेन पित्तलत्वाद्बुभुक्षितस्यवृद्धपित्तस्यकथम्प्रथमं लवणार्द्रकमुचितम् । उच्यते । लवणंसैन्धवंज्ञेयंचन्दनंरक्तचन्दनमिति वचनाल्लवणमत्रसैन्धवम्ततत्त्रिदोषघ्नं ॥ यतआह । गुणग्रन्थे । सैन्धवंलवणंस्वादुदीपनम्पाचनंलघु ॥ स्निग्धंरुच्यंहितंवृष्यंसूक्ष्मनेत्र्यंत्रिदोषहृत् । आर्द्रकन्तुकटुकमपिनपित्तविरोधिमधुरपाकित्वात् । यतआह । तत्रैव ॥ आर्द्रिकाभेदिनीगुर्व्वीतीक्ष्णोष्णादीपनीचसा । कटुकामधुरापाकेसूक्ष्मावातकफापहा ॥ अथचान्यदपिलवणमार्द्रकञ्चनात्रपित्तविरोधिसंयोगस्वभावात् ॥ संयोगस्वभावे चैतादृशम् भोजनस्यपूर्व्वलवणार्द्रक भक्षणबोधकवचनमेवप्रमाणयति ॥ ३३ ॥

भोजन के पूर्व्व लवणयुक्त अदरकका भोजन सदैव पथ्यहै इस्से अग्निकी दीप्ति रुचि और जिह्वा तथा कण्ठकी शुद्धता होती है अब यह सन्देह उत्पन्न होताहै कि लवण पित्त कारक होताहै और अदरक भी कटुताके कारण पित्त कारकहै तो बढ़ेहुए पित्त वाले क्षुधित पुरुष को लवण युक्त अदरक का भोजन कैसे उचितहै इसका उत्तर यहहै कि लवण कहनेसे सैंधव लवण चन्दन कहने से रक्त-चन्दन इस वचन के द्वारा यहां सैंधव लवण लियाजाताहै और वह त्रिदोष नाशक है जैसा कि गुण ग्रंथ में कहा गयाहै सैंधव लवण मधुर रस दीपन- पाचक- हलका स्निग्ध रुचिकारक- वीर्य्य में शीतल वीर्य्य वर्द्धक सूक्ष्म नेत्रों का हितकारी और त्रिदोष नाशकहै और अदरक कटुरस होनेपर भी पित्त वर्द्धक नहीं है क्योंकि पाकमें मधुरहै जैसाकि द्रव्य गुण ग्रंथ में कहागयाहै कि अदरक मल भेदक भारी तीक्ष्ण वीर्य्यमें उष्ण दीपनी कटुरस पाकमें मधुर सूक्ष्म और वायु तथा कफ की नाश करने वाली होतीहै और भी कहाहुआहै कि संयोग के स्वभाव से लवण और अदरक पित्तकारक नहींहै और भोजन के पूर्व्व लवण और अदरक के भक्षण का बिधायक वचनही इसमें प्रमाणहै ॥ ३३ ॥

भोजनादौदृष्टिदोष विनाशाय ब्रह्मादीन् स्मरेत् । तद्यथा अन्नं ब्रह्मारसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वरः ॥ इतिसञ्चिन्त्यभुञ्जानं दृष्टिदोषोनबाधते । अञ्जनीगर्भसम्भूतं कुमारंब्रह्मचारिणम् ॥ दृष्टिदोषविनाशाय हनुमन्तंस्मराम्यहम् । अश्नीयात्तन्मना भूत्वापूर्वंतुमधुरंरसम् ॥ मध्येऽम्ललवणौपश्चात् कटुतिक्तकषायकान् । फलान्यादौ समश्नीया द्दाड़िमादीनिबुद्धिमान् ॥ विनामोचफलन्तद्वद्वर्ज्जनीयाचकर्कटी । मृणाल विशशालूककन्देक्षुप्रभृतीनपि । पूर्व्वमेवहिभोज्यानि नतुभुक्त्वाकदाचन ॥ मृणालं पद्मनालंविशम्भिशण्डकम्शालूककन्दप्रसिद्धम् । गुरुपिष्टमयंद्रव्यंतण्डुलान्पृथुकानपि ॥ नजातुभुक्तवान्खादेन्मात्रांखादेद्बुभुक्षितः ॥ घृतपूर्व्वंसमश्नीयात्कठिनंप्राक् ततोमृदु । अंतेपुनर्द्रवाशीतुबलात्रोगेणमुञ्चति ॥ मृणालविशसालूककंदेक्षुप्रभृतीनपि । पूर्व्वमेवहिभोज्यानिनतुभुक्त्वाकदाचन । अयमर्थः ॥ प्राक्घृतपूर्व्वंकठिनंसम

इनीयात् । यथाकाश्यादिवासिनः ॥ प्रथमंसव्यञ्जनां घृतपूर्व्वंरोटि काम्भुञ्जते । ततोम्रदुससूपादिमोदनम्भुञ्जंते ॥ अंतेपुनर्द्रवाशी । भोजनांतेदधितक्रदुग्धादिभुञ्जते ॥ ३४ ॥

भोजनके पूर्व दृष्टिके दोषकी शान्तिके लिये ब्रह्मादिकोंका स्मरणकरे ब्रह्माअन्न विष्णुरस महादेव जी भोजन करने वाले ऐसा बिचार कर भोजन करने वाले को दृष्टि का दोषबाधा नहीं करताहै और दृष्टि दोषकी शान्ति के लिये अंजनी के गर्भ से उत्पन्न कुमार ब्रह्मचारी हनुमान्जीको स्मरण करताहूं इस प्रकार विचारता हुआ प्रथम मधुर रस भोजन करे मध्यमें खट्टा और निमकीन पीछे कटुतिक्त और कषाय खाय बुद्धिमान् पुरुष प्रथम अनार आदिफलककडी और केलेको छोड़कर भोजन करे कमल की डंडी भिषंडक जड़ कन्द ईष आदिको भी प्रथमही भोजन करे और भोजनके पीछे कभीन करे और भारी पिट्ठीकी वस्तु चावल और चिड़वे को भी भोजनके उपरान्त कदापि न खाय और क्षुधा लगने परभी थोड़ाहीखाय भोजन के पहले घृत और कठिन द्रव्य खाय बीचमें कोमल और अन्तमें द्रवद्रव्य पानकरे इस प्रकार भोजन करनेसे बल और स्वस्थता होती है प्रथम घृतयुक्त कठिन द्रव्य खानेका यह तात्पर्य्यहै कि जैसे काशी आदिके वासी पुरुष प्रथम घृतयुक्त व्यंजन के द्वारा रोटी खातेहैं फिर कोमल दालभात खातेहैं और अन्तमें दहीमट्ठा और दूध आदिक पीतेहैं ॥ ३४ ॥

यद्यत्स्वादुतरंतत्तद्दद्यादुत्तरोत्तरम्॥भुक्त्वायत्प्रार्थ्यतेभूयस्तदुक्तंस्वादुभोजनम्३५॥

जो२ बस्तु अधिक स्वादुसे युक्त हो वह उत्तरोत्तर देनी चाहिये- भोजन करके जिसको फिर मांगे वहस्वादु अन्न कहलाता है- ॥ ३५ ॥

स्वाद्वन्नस्यगुणमाह ॥

सौमनस्यंबलम्पुष्टिमुत्साहंवृद्धिमायुषः । स्वादुसञ्जनयत्यन्नमस्वादुचविपर्य्ययम् ॥ अत्युष्णान्नंबलंहंतिशीतशुष्कञ्चदुर्ज्जरम् ॥ अतिक्लिन्नंग्लानिकरंयुक्तयुक्तंहिभोजनम् ॥ अतिद्रुताशिताहारेगुणान्दोषान्नविंदति । भोज्यंशीतमहृद्यञ्चस्याद्विलम्बितमश्नुतः ॥ ३६ ॥

स्वादु अन्नके गुण ॥

स्वादुयुक्त अन्न मनकी प्रफुल्लता-बल-पुष्टता-और आयुकी वृद्धि करता है और स्वादु रहितअन्न इससे विपरीत गुणकरता है अत्यन्त उष्णअन्न बलनाशक, अत्यन्त शीतल शुष्क अन्न दुर्जर कठिनता से पचनेवाला और अत्यन्त गलाहुआ अन्न ग्लानिकारक होता है इससे युक्ति पूवक भोजन करना चाहिये, बहुत शीघ्र भोजन करने से गुण और दोष नहीं मालूमहोते हैं, बहुतदेर में भोजन करने से भोजन शीतल और स्वादु रहित होजाता है ॥ ३६ ॥

गुरुत्रिविधन्तन्निवारयन्नाह ॥

मंदानलोनरोद्रव्यंमात्रागुरुविवर्ज्जयेत् । स्वभावतश्चगुरुयत्तथासंस्कारतोगुरुः॥ मात्रागुरुस्तुमुद्गादिःमाषादिःप्रकृतेर्गुरुः॥संस्कारगुरुपिष्टान्नंप्रोक्तमित्युपलक्षणम्॥३७॥

तीनप्रकार के भारी अन्न होते हैं इनका निवारण करते हैं ॥

मंदाग्नि पुरुष मात्रा स्वभाव और संस्कारसे भारी पदार्थोंको भोजन न करे मात्रागुरु, मूंग आदि

स्वभावसे गुरु उड़द आदि और संस्कार से गुरुपीठी आदि यह नमूनेके लिये कहागयाहै,॥ ३७॥

आहारःषड्विधश्चूष्यंपेयंलेह्यंतथैवच । भोज्यम्भक्ष्यन्तथाचव्यंगुरुविद्यात्यथोत्तरम्॥ (चूष्यमिक्षुदाड़िमादि) पेयम्पानकशर्करोदकादिलेह्यंरसालाकथितादिकथिता कढ़ीइतिलोके।भोज्यंभक्तसूपादि।भक्ष्यंलड्डुकंमण्डुकादिचर्व्यञ्चिपिटञ्चणकादि॥३८॥

आहार छः प्रकारका है॥

चूष्य, पेय, लेह्य, भोज्य, भक्ष्य और चर्व्य यह उत्तरोत्तर गुरु हैं,चूष्य ईख और अनार आदि, पेय पना और सर्वत आदि, लेह्य शिखरन और कढ़ी आदि, भोज्य दाल चावल आदि भक्ष्यलड्डू और मट्ठे ठौरआदि- चर्व्य चिड़वे चने आदि,॥ ३८॥

स्वभावगुरुसंस्कारगुरुणोःस्वभावलघुत्वात्भक्ष्यस्यभोजनपरिमाणमाह॥

गुरूणामर्द्धसौहित्यंलघूनांतृप्तिरिष्यते । अयमर्थःमाषपिष्टान्नादिभिरर्द्धसौहित्यंकर्त्तव्यंमुद्गादिभिः स्वभावादेवलघुभिर्मात्रयातृप्तिःकर्त्तव्येत्यर्थः॥ द्रवोद्रवोत्तरश्चापिनमात्रागुरुरिष्यते । द्रवःपेयादिद्रवोत्तरःतक्राद्यधिकओदनादिःमात्रातोऽधिकोऽपिमात्रागुरुर्नमंतव्यः॥ पेयस्यसर्व्वतोलघुत्वात्॥ ३९॥

स्वभाव गुरु, संस्कार गुरु और स्वभाव लघु, भक्ष्य के भोजन का प्रमाण कहते हैं॥

गुरुपदार्थों की आधी तृप्ति और लघुपदार्थोंकी पूरीतृप्ति करनी चाहिये इसका यह तात्पर्य्य है कि उड़द और पीठी आदिक आधीमात्रा से और स्वभाव से लघु मूंग आदि पूरीमात्रासे खानाचाहिये द्रव अर्थात्पेय पदार्थ और द्रवोत्तर अर्थात्मट्ठे आदिसे तरकिये हुए चावल आदि मात्रासे अधिक भी गुरु नहीं मानेजाते हैं क्योंकि पेय सबसे लघुहोता है,॥ ३९॥

उक्तञ्चसुश्रुतेन । पेयलेह्यादिभक्ष्याणांगुरुर्विद्यात्यथोत्तरमितिपेयम्पेयादि । लेह्यंरसालादि । आदिशब्दात्भोज्यमोदनसूपादि॥भक्ष्यम्मोदकादिः द्रव्याढ्यमपिशुष्कन्तुसम्यगेवोपपद्यते । विशुष्कमन्नमभ्यस्तंनपाकंसाधुगच्छति॥ अयमर्थःशुष्कमपिस्रोतोरोधकमपिद्रव्याढ्यंसम्यक्पाकंयाति । केवलस्यशुष्कान्नस्यदोषमाह॥ विशुष्कमन्नमित्यादि । (अपक्वंतत्किम्भवतीत्यपेक्षायामाह)पिण्डीकृतमसंक्लिन्नंविदाहमुपगच्छति पिण्डीकृतम् अष्ठीलावदुद्भूतम्॥ असंक्लिन्नंनसम्यगार्द्रं । विदाहमुपगच्छति विदग्धंभवतीत्यर्थः॥ ४०॥ और सुश्रुतने भीकहा है॥

कि पेय और लेह्य आदि भोजन उत्तरोत्तर गुरुहैं इस अधिक द्रवद्रव्यसे मिलाहुआ शुष्क अर्थात् स्रोतों का रोंकने वाला पदार्थ भी अच्छे प्रकार से परिपाकको प्राप्तहोता है और केवल शुष्कअन्न भोजन कियाहुआ अच्छे प्रकार से परिपाकको नहीं प्राप्त होता है क्योंकि वह आर्द्रताके नहोने से घुटने के समान पिण्डाकार होकर विदग्ध होजाता है,॥ ४०॥

शुष्कादीनां वैगुण्यमाह॥

शुष्कंविरुद्धंविष्टम्भि वह्निव्यापदकृद्भवेत् । शुष्कश्चिपिटकादि॥ विरुद्धंक्षीरमत्स्यादि । विष्टम्भि चणकमसुरादि वह्निमान्द्यं कुर्य्यात्॥ ४१॥

शुष्कादि अन्नोंके दोष ॥

शुष्क चिड़वे आदि विरुद्ध मिलेहुए दूध और मछली आदि विष्टंभी चने और मसूर आदि यह जठराग्नि को मन्दकर देते हैं, ॥ ४१ ॥

नभुक्त्वानरदैश्छित्त्वान निशायांनवावहन्। नजलान्तरितानद्भिःसक्तूनद्यान्नकेवलान्॥ पुनर्दानंपृथक्पानंसामिषम्पयसानिशि। दन्तच्छेदनमुष्णञ्चसप्तसक्तुषुवर्ज्जयेत्॥सुश्रुतः सक्तूनामाशुजीर्णेन मृदुतादवलेहिके ॥ ४२ ॥

भोजन के उपरान्त अथवा दांतों से काटकर या रात्रि को अथवा अधिक मात्रासे या जल पी२ कर अथवा केवल जलहीसे सत्तून खाय और केवल सत्तूहीन खाय, सत्तुओं में सातबातें छोड़दे वह यहहैं कि पुनर्दान (एकबारखाकर फिरदिये हुये सत्तू) अलगजलपीना- मांसके साथखाना- दूध में मिलाके खाना- रात्रिकोखाना- दांतोंसे काट २ करखाना (पिंडीबनाकरखाना) और उष्ण करके खाना सुश्रुतने कहाहै कि सत्तुओंका अवलेह लघुता के कारण शीघ्रही परिपाकको प्राप्तहोताहै४२॥

विषमाशनस्य लक्षणमाह ॥

यथाकालेतिमात्रंयत्तद्भवेद्विषमाशनम्। बहुस्तोकमकालेवाज्ञेयंतद्विषमाशनं॥४३ ॥

विषमभोजनकालक्षण ॥

समय पर अधिक मात्रासे भोजन करना अथवा असमय में अधिक या अल्पमात्रासे भोजन करना बिषम भोजन कहलाताहै ॥ ४३ ॥

बहुनाल्पस्यभक्षितस्यदोषमाह ॥

आलस्यगौरवाटोप शब्दांश्चकुरुतेऽधिकम् । हीनमात्रंतनोः कार्श्यंकरोतिचबलक्षयम्। अधिकं अन्नम् ॥ ४४ ॥

बहुत और थोडेभोजन के दोष ॥

अधिक अन्न भोजन करनेसे आलस्य- शरीरमें भारीपन, उदरमें अफरा और गड२ शब्द उत्पन्न होताहै अल्प अन्न भोजन करनेसे शरीरकी दुर्बलता और बलका नाशहोताहै ॥ ४४ ॥

अकालेभुक्तस्यदोषमाह ॥

अप्राप्तकालेभुञ्जानोह्यसमर्थःतनुर्नरः। तांस्तानव्याधीनवाप्नोतिमरणञ्चाधिगच्छति ॥ अप्राप्तकालः कालादतिप्राक्भुञ्जानःअसमर्थशरीरोभवति। तथासतितांस्तान् व्याधीन्शिरोव्यथाविसूचिकालसकविलम्बिकादीन्प्राप्नोति ॥ तेषामाधिक्ये मरणमपि प्राप्नोतीत्यर्थः। कालेऽतीतेऽइनतोजन्तोर्वायुनोपहतेऽनले ॥ कृच्छ्राद्विपच्यतेभुक्तंन स्याद्भोक्तुंपुनः स्पृहा ॥ ४५ ॥

अकाल में भोजन करनेके दोष ॥

भोजनके समयसे बहुत पहिले भोजन करनेसे शरीर असमर्थ होजाताहै इससे शिरकी पीडा बिशूचिका-अलसक और बिलम्बिका आदि रोग उत्पन्नहोते हैं, और इनरोगों की अधिकता से मरणभी होजाताहै और भोजनके समयसे उपरान्त भोजन करनेसे वायुके द्वारा जठराग्निकेनष्ट होजानेपर भोजन बहुत देर में पचताहै और फिर भोजन करने की इच्छा नहीं होतीहै ॥ ४५ ॥

कुक्षेर्भागद्वयंभोज्ये स्तृतीयेवारिपूरयेत् । वायोःसञ्चारणार्थाय चतुर्थमवशेषयेत् ॥ रसेनान्नस्यरसना प्रथमेनोपतर्पिता । नतथास्वादुमाप्नोति ततःशोध्याम्बुनान्तरा ॥ अत्यम्बुपानान्न विपच्यतेऽन्न मनम्बुपानाच्च सएव दोषः ॥ तस्मान्नरोवह्नि विवर्द्धनाय मुहुर्मुहुर्वारि पिवेदभूरि ॥ ४६ ॥

कोखके दोभाग भोजन से और तीसरा भाग जल से पूर्णकरे और चौथा भाग वायु के आने जाने को छोड़दे, भोजनके रस से पहिले तृप्तहुई जिह्वामें फिर दूसरा स्वादुनहीं प्राप्तहोता इस लिये बीच२ में जलपीकर जिह्वाका शोधन करना चाहिये बहुत जलपीने से और जल के नपीने से भी भोजन नहीं पचता इस कारण भोजन के समय अग्नि की वृद्धि के लिये मनुष्यको बारं बार थोड़ा२ जलपीना चाहिये ॥ ४६ ॥

भुक्तस्यादौजलम्पीतंकार्श्यमन्दाग्निदोषकृत् । मध्येऽग्निदीपनं श्रेष्ठमन्तेस्थौल्यकफप्रदम्॥अन्यच्चसमस्थूलकृशाभुक्तमध्यान्तःप्रथमाम्बुपा । इतिवाग्भटः।भुक्तंभोजनंतृषितस्तुनचाश्नीयात्क्षुधितोनपिवेज्जलम्।तृषितस्तुभवेद्गुल्मीक्षुधितस्तुजलोदरी॥४७॥

भोजन के आदिमें जलपीने से दुर्बलता और मंदाग्नि मध्यमें पीने से अग्निकी दीप्ति और अन्तमें जलपीने से स्थूलतातथा कफकी उत्पत्तिहोती है इससे मध्यमें जलपीना श्रेष्ठहै और वाग्भटमें भी कहाहै कि भोजन के मध्य में जलपीने से समता अन्तमें स्थूलता और आदि में कृशताहोतीहै प्यासा भोजन न करे भूखा जल न पिये क्योंकि प्यासमें भोजन करने से गुल्मरोग और भूख में जलपीने से जलोदरहोताहै ॥ ४७ ॥

ननुशिष्टा भोजनान्ते दुग्धं पिवन्ति तत्कथ मुचितं । यतस्त्रिधा विभक्तस्य भोजन कालस्य प्रथमो भागो वातस्य द्वितीयः पित्तस्य तृतीयः कफस्य अतएवाह । अश्नीयात् तन्मना भूत्वा पूर्व्वन्तु मधुरं रसम् ॥ मध्येऽम्लं लवणो पश्चात् कटुतिक्त कषायकान् । (अस्यायमभिप्रायः) भोजने पूर्व्वंभुक्तो मधुरो रसो बुभुक्षितस्य वात पित्तयोः शमको भवति भोजनमध्ये भुक्तावम्ल लवणो पित्ताशयेच वह्नि वृद्धिं कुरुतः । भोजनांत समये भुक्ताः कटुतिक्त कषायरसाः कफं शमयन्तीति । अथ भोजनावसान समयस्य कफ कालत्वात् तत्रकथं श्लेष्मजनकं दुग्धं पातु मुचितम्भवति । यत उक्तम् । दुग्धं स्वादुरसंस्निग्धंओजस्यधातुवर्द्धनम् । वातपित्तहरंवृष्यंश्लेष्मलंगुरुशीतलम् ॥ इतिउच्यते । विदाहीन्यन्नपानानियानिभुंक्तेहिमानवः ॥ तद्विदाहप्रशान्त्यर्थंभोजनांते पयःपिवेत् । (तथाचब्रह्मपुराणे) कुर्य्यात्क्षीरांतमाहारंनदध्यन्तंकदाचनेति । लवणाम्लकटूष्णानिविदाहीन्यतियानितु ॥ तद्दोषंहर्त्तुमाहारंमधुरेणसमापयेत् ॥ भोजनावसानसमयेदुग्धादिमधुरभोजनेनैववर्द्धितः कफोलवणाम्लकटुभोजनजनितपित्तस्यवृद्धिंविनाशयतिपित्तवृद्धिविनाशनेनकफस्यापिवृद्धिस्तुक्षीणाभवति । क्षीणाकफवृद्धिरग्निमान्द्यादीन्व्याधीनुत्पादयितुंनशक्नोति ॥ ननुशत्रोर्नाशनेनशत्रुहन्तुर्वृद्धिर्दृश्यतेनतुक्षीणतातत् कथंकफःक्षीणइति । उच्यते ॥ बलवच्छत्रुविनाशनेनशत्रुहन्तुःदृश्यते । तथाच ॥ नाश

नात् प्रत्यनीकस्य स्वयं वाक्षीयतेयथा ॥ वह्नि सन्तप्तलोहस्य तप्तता नाशयेज्जलम् ॥ ननुभोजना वसान समये भुक्ताः कटुतिक्त कषायाः रसाः कफं शमयिष्यन्ति वातस्य वृद्धिं विधास्यन्ति इति चेत् । तन्न कटुवादीनां क्षीणशक्ति कत्वात् । (तथाच) यदेकंनाशयेद्दोषं तन्नान्यंवर्द्धयेत्कुतः । नाशनेह्येकदोषस्य यतस्तत् क्षीणशक्तिक मिति ॥ वस्तुतो य एवरसः प्राचुर्य्येण भुक्तस्तस्यैव सर्वेरसावशा भवन्ति । (यतआह सुश्रुतः) जग्धाः सर्वेऽपिगच्छन्ति बलिनोवश्यतांरसाः । यथाप्रकुपितादोषा वशंयान्तिबलीयसः ॥ (बलिनः रसस्य बलीयसः दोषस्य) ॥ ४८ ॥

अब यह सन्देह होताहै कि शिष्ट लोग भोजनके अन्तमें दुग्धपीतेहैं यह कैसे उचितहै क्योंकि भोजन के समय के तीन भागहैं उनमेंसे पहिला वायुका दूसरापित्तका और तीसरा कफकाहै इसी से कहागयाहै कि भोजन के पहिले मधुर रस मध्य में अम्ल और लवण और पीछे कटुतिक्त और कषाय भोजनकरे इसका यह अभिप्रायहै कि भोजन के आदि में खायाहुआ मधुररस भूखे पुरुषके वात और पित्तको शान्तकरताहै भोजन के मध्य में खाये हुये अम्ल और लवण पित्ताशयमें अग्नि की वृद्धि करते हैं, और भोजन के अन्त में खायेहुए कटुतिक्त और कषायकफको शान्त करते हैं तो भोजन के अन्तका समय कफका है उस में कफके बढ़ाने वाले दूधका पीना कैसे उचित है क्योंकि कहाहुआ है कि दुग्ध, मधुर स्निग्ध- ओज और रसादि धातुओं का वर्द्धक वात पित्तनाशक वीर्य जनक कफकारक गुरु और शीतल होता है, इसका समाधान करते हैं कि मनुष्य जो संपूर्ण दाहकारी अन्न और पेय पदार्थका भोजन करते हैं उन के दाह की शान्ति के अर्थ भोजन के अन्त में दूधपीना उचितहै और ऐसाही ब्रह्मपुराणमें लिखाहै कि भोजन के अन्त में दूधपीना चाहिये और दधि उससमय कभी न खाय, लवण अम्ल, कटु, उष्ण और दाहकारी पदार्थों के दोष दूरकरने के लिये भोजन के अन्त में मधुर रसखाय भोजन के अन्त में दूधआदिक मधुर रस भोजन से बढ़ाहुआ कफलवण अम्ल और कटु भोजन से बढ़ेहुए पित्तको नाशकरता है फिर पित्तकी वृद्धिके नाशकरने से कफकी वृद्धि भी क्षीण होजाती है और उसके क्षीण होने से अग्निकी मन्दता आदि रोग नहीं उत्पन्न होसक्ते हैं अब यह कहा जासक्ता है कि शत्रुके मारने से उस मारने वाले की वृद्धि होतीहै नकि क्षीणता तो कफकैसे क्षीण होजाता है इसका उत्तर यह है कि बलवान् शत्रुके नाश करने से मारने वालेकी भी क्षीणता होती है इसी के दृष्टान्त में कहागयाहै कि जैसे अग्नि से तपे हुये लोहे की उष्णता के नाशकरने में जल स्वयं भी नष्टहोजाताहै इसी प्रकार शत्रुके नाशकरनेसे मारनेवाला आपभी क्षीणहोजाताहै यदि ऐसा कहाजाय कि खायेहुये कटुतिक्त और कषाय रस भोजन के अन्त में उत्पन्नहुये कफ को तो शान्त करेंगे परन्तु वायुकी वृद्धि करेंगे सो ऐसा नहीं होसक्ता क्योंकि कफ के नाशकरने से कटुआदिरसों की शक्ति क्षीणहोजायगी और ऐसाही कहाहै कि जिसवस्तु से एकदोषका नाशहोताहै उससे दूसरा दोष नहीं बढ़सक्ताहै क्योंकि एकदोषके नाशकरनेही से उसकी शक्ति क्षीणहोजाती है ठीक २ तो जौनसारस भोजन में बहुत खायाजाता है उसीके वशीभूत और रसभी होजातेहैं और सुश्रुतनेभी ऐसाही कहाहै कि जैसे कोप को प्राप्त हुये दोषोंमें से जो बलवान् होताहै उसी के सब वशहोते हैं इसी प्रकार खाये हुये रसों में से जो रसबलवान्होताहै उसी के वशीभूत और रस होजाते हैं॥ ४८ ॥

एवंभुक्त्वासमाचामे द्रूक्षग्रहणपूर्व्वकम्। भोजनेदन्तलग्नानि निर्हृत्याचमनेचरेत् ॥ दन्तांतरगतंचान्नं शोधनेनाहरेत्शनैः। कुर्य्यादनिर्हृतंतद्धि मुखस्यानिष्टगंधताम् ॥ दंत लग्नमनिर्हार्य्यं लेपमन्येतदंतवत्। नतत्रबहुशःकुर्य्यात् यत्नंनिर्हरणंप्रति ॥ ४९ ॥

इसप्रकार भोजनकर के किसी रूखी वस्तुसे हाथ धोवे भोजन के समय दान्तमें लगीहुई बस्तु को निकालकर आचमन करै औरदांतोंके भीतर प्रबिष्टहुये अन्नको खरकेसे धीरे २ निकाले क्याक उस के बिनानिकाले मु व में दुर्गन्ध उत्पन्न होती है और दांतों में जमे हुये लेपको दांतोंके समान जानकर उसके निकालने में बहुत यत्नकरै ॥ ४९ ॥

आचम्यजलयुक्ताभ्यां पाणिभ्यांचक्षुषीस्पृशेत्।भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वा चक्षुषोर्दीयते यदि ॥ अचिरेणैवतद्वारितिमिराणिव्यपोहति ॥ ५० ॥

हाथ धोकर जलसे युक्त हाथोंके द्वारा नेत्रोंका स्पर्शकरै क्योंकि वहजल शीघ्रही नेत्रोंके अन्धकार को दूर करताहै ॥ ५० ॥

भुक्ताचसंस्मरेन्नित्य मगस्त्यादीनुसुखावहान्। विष्णुरात्मातथाचान्नं परिणामश्चवै यथा ॥ सत्येनतेनमद्भुक्तं जीर्य्यत्वन्नमिदंतथा। अगस्तिरग्निर्बड़वानलश्च भुक्तंममान्नं ज्वलयत्वशेषम् ॥ सुखञ्चमेतत्परिणाम सम्भवं यच्छन्त्वरोगं ममचास्तुदेहम् ॥ अंगारकमगस्तिञ्च पावकंसूर्य्यमश्विनौ। पञ्चैतान्संस्मरेन्नित्यं भुक्तंतस्याशुजीर्य्यति ॥ इत्युच्चार्यस्वहस्तेन परिमार्ज्यतथोदरम्। अनायास प्रदायोनि कुर्य्यात्कर्म्माण्यतंद्रितः ॥ अतंद्रितः निरंतरं जाग्रत तिष्ठन्नतु स्वप्यात्। भुक्तमात्रस्यतु स्वप्नाद्वन्त्यग्निं कुपितःकफः इति वचनात्। जीर्णेऽन्नेबर्द्धतेवायु विदग्धेपित्तमेधते ॥ भुक्तमात्रेकफश्चापि क्रमोऽयंभोजनोपरि। विदग्धेकिंचित्पक्के किंचिदपक्के ॥ ५१ ॥

भोजनके उपरान्त करने के कार्य ॥

भोजन के उपरान्त सुखदेने बाले अगस्त्य आदिकों का स्मरण करै विष्णु आत्मा विष्णु अन्न और बिष्णुही परिपाकहै इसी सत्य से मेरा भोजन किया हुआ अन्न शीघ्र परिपाक को प्राप्त होवै अगस्ति और बडवानल अति मेरे भोजन किये हुए सम्पूर्ण अन्न को परिपाक करैं और उसके परिपाक से भए सुखको भीदैं और मेरे शरीरको नीरोगकरैं मंगल अगस्ति अग्नि सूर्य अश्विनी कुमार इन पांचोंके स्मरणकरने से भोजन शीघ्रपरिपाकको प्राप्तहोताहै यह कहकर उदरपर हाथ फेरै इसके उपरान्त परिश्रमरहित कार्योंको करै और उसी समय शयन न करै क्योंकि ऐसा कहागयाहै कि भोजन के उपरान्त सोने से जठराग्नि मन्दहोकर कफ उत्पन्नहोताहै भोजन के परिपाकहोजाने पर वायु बढ़तीहै कुछ परिपाकहोजाने पर पित्त बढ़ताहै और भोजन के उपरान्तही कफ बढ़ताहै ॥ ५१ ॥

भुक्तमात्रे सञ्जातस्य कफस्य प्रतीकारमाह ॥

धूमेनापोह्यहृद्यैर्वा कषायकटुतिक्तकैः। पूगकर्पूरकस्तूरी लवंगसुमनःफलैः ॥ फलैःकटुकषायैर्वा मुखवैशद्यकारिभिः। ताम्बूलपत्रसहितैः सुगंधैर्वाविचक्षणः ॥ धूमेन अगुर्वा

दि धूमेन । अपोह्य कफं दूरीकृत्य कषाय कटुतिक्तकैः फलैःकर्पूर कस्तूरी लवंगादिभिः ।
पूगैः क्रमुकैः सुमनः फलैः जातीफलैः एला हरीतक्यादि फलैः ॥ ५२ ॥

भोजनके उपरान्त बढ़ेहुये कफका प्रतीकार ॥

भोजनके उपरान्त अगर आदि के धूमसे कफको दूरकर के हृदय को हित वा कटु तिक्त कषाय रस युक्तफलोंको चबाकर मुखको निर्मल करै अथवा सुपारी कपूर कस्तूरी लवंग जायफल अथवा मुखके निर्मल करनेवाले कटुतिक्त और कषाय रसयुक्त फलसहित और सुगन्धितवस्तु युक्त ताम्बूल भक्षण करै ॥ ५२ ॥

रतीसुप्तोत्थितेस्नाते भुक्तेवांतेचसंगरे।सभायांविदुषांराज्ञां कुर्य्यात्ताम्बूलचर्वणम्॥५३॥

मैथुनके समयमें निद्रा के अन्तमें स्नान और भोजन के उपरान्त वमन के अन्तमें परिश्रम के उपरान्त तथा पण्डितों की और राजाओंकी सभामें ताम्बूल भक्षण करै ॥ ५३ ॥

ताम्बूलमुक्तंतीक्ष्णोष्ण रोचनंतुवरंसरम् । तिक्तंक्षारोषणंकाम रक्तपित्तकरंलघु ॥ वश्यंश्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यं मलवातश्रमापहम् । मुखवैशद्यसौगंध्य कांतिसौष्ठवकारकम् ॥ हनूदन्तमलध्वंसि जिह्वेंद्रियविशोधनम् । मुखप्रसेकशमनं गलामयविनाशनम् ॥ नवंत देवमधुरं कषायानुरसंगुरु । बलासजननंप्रायः पत्रशाकगुणंस्मृतम् ॥ वंगदेशोद्भवंपर्णं परंकटुरसंसरम् । पाचनंपित्तजनकं मुष्णंकफहरंस्मृतम् ॥ पर्णपुराणमकटु खल्लकंतनु पांडुरम् । विशेषादगुणवद्वेद्य मन्यद्धीनगुणंस्मृतम् ॥ (ताम्बूलगुणम्) ॥ ५४ ॥

ताम्बूलके गुण ॥

ताम्बूल तीक्ष्ण उष्णरुचिकारक कसैला- सारक, तिक्तक्षार कटु काम तथा रक्त पित्तका कर नेवाला लघुवशकरने वाला कफ मुखकी दुर्गन्धता मल वायु और श्रमका नाशक मुखकी स्वच्छता सुगंधकान्ति और सुन्दरता करनेवाला जबडे तथा दान्तों के मलका नाशक जिह्वा इन्द्रियकाशुद्ध करनेवाला और मुखकी लारकातथा गलेके रोगोंका नाशकरने वालाहोताहै- नवीन ताम्बूल कुछ कसैलामधुर गुरु कफ कारक और पत्रशाकके समानगुण वाला होताहै बंगदेशमें उत्पन्नहुआ ताम्बूल अत्यन्त कटुसारक पाचक पित्तवर्द्धक उष्ण और कफनाशक होताहै पुरानाताम्बूल कटु रसरहित लघु अत्यन्त कोमल पाण्डुवर्ण और अत्यन्त गुणकारी होताहै अन्यताम्बूल इसकी अपेक्षा गुणमें न्यूनहोतेहैं ॥ ५४ ॥

पूगंगुरुहिमंरूक्षंकषायंकफापित्तनुत् । मोहनंदीपनंरुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ॥ पूगं स्यादृढ़मध्यंयत्खिन्नंवापित्रिदोषनुत् । सरसंगुर्व्वभिष्यन्दितद्भृशंवह्निनाशनम् ॥ खदिरःकफपित्तघ्नश्चूर्णंवातबलासनुत् । संयोगतस्त्रिदोषघ्नंसौमनस्यंकरोतिच ॥ मुखवैशद्यसौगन्ध्यकान्तिसौष्ठवकारकम् । प्रभातेपूगमधिकं मध्याह्नेखदिरंतथा ॥ निशासुचूर्णमधिकं ताम्बूलंभक्षयेत्सदा । आयुरग्रेयशोमूलेलक्ष्मीमध्येऽव्यवस्थिता ॥ तस्मादग्रं तथामूलंमध्यं पर्णस्यवर्जयेत् । पर्णमूलेभवेद्व्याधिःपर्णाग्रेपापसम्भवः ॥ चूर्णंपूर्णंहरत्यायुः शिराबुद्धिविनाशिनी । आद्यंविषोपमंपीतं द्वितीयंभेदिदुर्जरम्॥तृतीयादनुपातव्यं

सुधातुल्यंरसायनम् । ताम्बूलंनातिसेवेत नविरिक्तोवुभुक्षितः ॥ देहदृक्केशदन्ताग्नि श्रोत्रवर्णबलक्षयः । शोषःपित्तानिलास्रंस्या दितिताम्बूलचर्वणात् ॥ ताम्बूलंनहितंदंत दुर्बलेक्षणरोगिणाम् । विषमूर्च्छामदार्त्तानां क्षयिणांरक्तपित्तिनाम् ॥ ५५ ॥

सुपारी गुड शीतल रूखी कसैली कफ और पित्त नाशक मदकारक अग्नि दीपक रुचि कारक और मुखको बिरसता की नाश करने वाली होती है मध्य में दृढ अथवा उबाली हुई सुपारी त्रिदोष को नाश करती है कच्ची सुपारी गुरु अभिष्यन्दी और जठराग्नि की अत्यन्त मंद करने वाली होती है खदिर, कफ और पित्तका नाश करनेवाला होताहै चूना वायु और कफ का नाश करनेवाला होताहै पान सुपारी कत्था चूना यह सब मिले हुए त्रिदोषों का नाश मन की प्रसन्नता मुख की निर्मलता तथा सुगन्धि कान्ति और सुन्दरता को करते हैं प्रातःकाल ताम्बूल भक्षण करने में सुपारी मध्यान्ह में खदिर और रात्रि में चूना आधिक होना चाहिये ताम्बूल के अग्रभाग में आयु मूल में यश और मध्यमें लक्ष्मी बास करती है इस कारण से ताम्बूल का अग्रभाग मध्य और मूल त्यागकर देना चाहिये ताम्बूल का मूल भक्षण करने से रोग उत्पन्नहोते हैं अग्रभाग भक्षण करने से पातक होताहै केवल ताम्बूल और चूनाखाने से आयु का नाश होता है और पान कीनस खाने से बुद्धि का नाश होता है सुपारी आदि से युक्त पान की पहली पीक बिष तुल्य दूसरी बारकी पीक भेदक और कठिनतासे पचनेवाली होती है इससे अमृत तुल्य गुण दायक और रसायन रूप पीक तीसरी बार से पीनी चाहिये बिरेचन लेनेवाला और क्षुधित पुरुष ताम्बूल को बहुत सेवन न करै ताम्बूल के बहुत खाने से शरीर दृष्टि केश दन्त अग्नि श्रवणेन्द्रिय वर्ण तथा बलका नाश होताहै और शोष पित्त तथा वायु की वृद्धि होती है दुर्बल दांतवालों को तथा नेत्ररोग विषमूर्च्छा मदात्ययक्षय और रक्त पित्तसे युक्त पुरुषोंको ताम्बूलहित नहीं है ॥ ५५ ॥

भुक्त्वाशतपदंगच्छेच्छनैस्तेनतुजायते । अंगसङ्घातशैथिल्यं ग्रीवाजानुकटीमुखम्॥ भुक्तोपविशतस्तंद्रा शयानस्यतुपुष्टता । आयुश्चंक्रममाणस्य मृत्युर्धावतिधावतः ॥ चंक्रममाणस्य पदशतंशनैर्गच्छतः श्वासानष्टौसमुत्तानस्तान्द्विःपार्श्वेतुदक्षिणे । ततस्त द्द्विगुणान्वामेपश्चात् स्वप्याद्यथासुखम् ॥ वामदिशायामनलोनाभेरूर्ध्वेऽस्तिजन्तू नाम् । तस्मात्तुवामपार्श्वेशयीतभुक्तप्रपाकार्थम् ॥ ५६ ॥

भोजनके उपरान्त धीरे२ सोपद (कदम) चले इस्से अंगोंकी सघनता तथा ग्रीवा घुटने कटि और मुखमें शिथिलता होती है अर्थात् यह सम्पूर्ण शिथिल होकर अच्छीतरहसे घुमाने के योग्य होजातेहैं भोजनके उपरान्त बैठनेवाले को तन्द्रा सोनेवाले को पुष्टता धीरे२ शतपद गमन करने वाले को आयु और दौड़ने वाले को मृत्युप्राप्त होतीहै उताने होकर आठ श्वास इसके द्विगुण दक्षिण करवट से और इस्के भी द्विगुण श्वास वाम पार्श्व से भोजन के उपरान्त शयन करने के समयमें ग्रहण करने चाहिये इसके उपरान्त जिस रीतिसे इच्छाहो उसरीति से शयनकरै मनुष्योंकी बाईं कोखमें नाभि केऊपर अग्नि के रहने का स्थानहै इस कारण से भोजन के परिपाक के लिये बाईंकरवट शयन करै ५६

त्रिदोषशमनीखट्वा तूलीवातकफापहा । भशय्यावृंहणीतृष्याकाष्ठपट्टीतुवातला ॥

अन्यःपुनराह भूशय्यावातलातीवरूक्षापित्तास्त्रनाशिनी । भूशय्याशयनंहृद्यंपुष्टिनिद्रा धृतिप्रदम् ॥ श्रमानिलहरंबृष्यंविपरीतमतोऽन्यथा ॥ ५७ ॥

खट्वा की शय्या त्रिदोषनाशक तोशक वाततथा कफकी नाश करने वाली होती है पृथ्वी पर सोनेसे शरीर की वृद्धि और पुष्टि होती है और तख्तपर सोने से वायुकी वृद्धि होती है- किसी दूसरेका यहमत है कि पृथ्वीपर सोनेसे वायुकी वृद्धि और कफ तथारक्त पित्तका नाशहोता है- उत्तम शय्यापरसोनेसे मनकी प्रसन्नता पुष्टता निद्रा तथा धारणा शक्तिकी वृद्धिहोती है श्रमतथा वायुका नाशहोता है और वीर्य बढ़ता है निकृष्ट शय्यापर सोने से इसके विपरीत गुण होते हैं- ॥ ५७॥

सम्बाहनंमांसरक्तत्वक्प्रसादकरंपरम् ॥ प्रीतिनिद्राकरंबृष्यंकफवातश्रमापहम् ५८

संबाहन (अंगमलवाना) मांस रुधिर और त्वचाका प्रसन्नकरने वाला प्रीति निद्रा तथा वीर्य का बढ़ाने वाला और कफवात तथा श्रमका नाश करनेवाला होता है, ॥ ५८ ॥

प्रवातरौक्ष्यवैवर्ण्यस्तम्भकृद्दाहपित्तनुत्॥स्वेदमूर्च्छापिपासाघ्नमप्रवातमतोऽन्यथा। सुखंप्रवातंसेवेतग्रीष्मेशरदिचान्तरा ॥ निर्वातमायुषेसेव्यमारोग्यायचसर्वदा । पूर्वोनिलोगुरुःसोष्णःस्निग्धःपित्तास्रदूषकः॥ विदाह्यीवातलःश्रांतिकफशोषवतांहितः। स्वादुःपटुरभिष्यन्दीत्वग्दोषार्शोविषकृमीन् ॥ सन्निपातंज्वरं श्वाससामवातञ्चकोपयेत् । (स्वादुर्भक्ष्यद्रव्येषुबाहुल्येनमधुररसजनकः), दक्षिणःपवनःस्वादुःपित्तरक्तहरोलघुः। वीर्य्येणशीतलोबल्यश्चक्षुष्योनतुवातलः ॥ पश्चिमःपवनस्तीक्ष्णःशोषणोबलहृल्लघुः। मेदःपित्तकफध्वंसी प्रभञ्जनविबर्हनः ॥ उत्तरोमारुतःशीतःस्निग्धोदोषप्रकोपकृत् । क्लेदनःप्रकृतिस्थानांबलदोमधुरोमृदुः ॥ दोषप्रकोपकृत् आतुराणाम् आग्नेयोदाहकृद्रूक्षोनैर्ऋतोनविदाहकृत् । वायव्यस्तुभवेत्तिक्तः ऐशानःकटुकःस्मृतः ॥ विष्मग्वायुरनायुष्यःप्राणिनांबहुरोगकृत् । अतस्तंनैवसेवेतसेवितःस्यान्नशर्म्मणे ॥ व्यजनस्यानिलो दाह स्वेदमूर्च्छाश्रमापहः ॥ तालवृन्तभवोवात स्त्रिदोषशमकोमतः ॥ वंशव्यजनजस्तूष्णोरक्तपित्तप्रकोपनः । चामरोवस्त्रसम्भूतोमायुरोवेत्रजस्तथा ॥ एतेदोषजिनावाताः स्निग्धाःहृद्याःसुपूजिताः ॥ ५९ ॥

अधिक वायु युक्तस्थान रुक्षता विवर्णता तथा स्तंभकारक और दाह पित्त स्वेद मूर्छा तथा पिपासा नाशक होता है और वायु रहित स्थान इससे विपरीत गुणवाला होता है, ग्रीष्मऋतुसे शरत्काल पर्यन्त थोडी २ सुख दायक वायुका सेवन करै, आयु और आरोग्य के निमित्त वायु रहित स्थानका सेवन करे, पूर्वदिशा की वायु गुरुउष्ण स्निग्ध पित्ततथा रुधिर की दूषक विदाही वादी थकेहुए तथा कफ रहित पुरुषोंको हितकारी स्वादु अर्थात् भोजन की वस्तुको मधुर करने वाली लवण रस युक्त अभिष्यन्दी और त्वचाके दोष बवासीर, विष, कृमि सन्निपात ज्वर, श्वास तथा आमबात उत्पन्न करने वाली होती है, दक्षिणदिशाकी वायु स्वादु रक्त पित्त नाशक लघुवीर्य में शीतल बलकारक और नेत्रोंको हितहोती है और बादी नहींहोती है, पश्चिम की वायुतीक्ष्ण सुखाने वाली बलनाशक लघुवादी और मेद कफ तथा पित्तकी नाश करने वाली होती है, उत्तर

दिशाकी वायु शीतल स्निग्ध रोगियों के दोषकी बढ़ाने वाली क्लेदन स्वस्थ पुरुषोंके बलकी बढ़ाने वाली मधुर और कोमल होती है, अग्नि कोणकी वायुदाह करने वाली और रुक्षहोती है, नैऋत कोण की बायु दाहकारक नहीं होती है, बायुकोणकी बायु तिक्तरस होती है- ईशान कोण की वायु कटुरस होती है. चौवाई वायु आयुको हानिकारक और प्राणियों के अनेक रोगों की करने वाली होती है इसकारणसे उसका सेवन नहीं करना चाहिये क्योंकि इससे दुःख होता है, पंखे की वायु दाह स्वेद मूर्च्छा और श्रमनाशक होती है, ताडके पंखे की बायु त्रिदोष नाशक होती है, बांसके पंखे की वायु उष्ण और रक्त पित्त करने वाला होतीहै, चामर वस्त्र मोर पंख और वेतके पंखे की वायु त्रिदोष की नाशकरनेवाली स्निग्ध और हृदयको हितकारी होतीहै और चामर आदि इनकी वायु सबसे श्रेष्ठ कहीगई है, ॥ ५६ ॥

दिवास्वापंनकुर्व्वीतयतोऽसौस्यात्कफावहः ॥ ग्रीष्मवर्ज्येषु कालेषु दिवास्वप्नोनिषिध्यते । उचितोहिदिवास्वप्नो नित्यंयेषांशरीरिणाम् ॥ वातादयःप्रकुप्यन्ति तेषामस्वपतांदिवा । व्यायामप्रमदाध्ववाहनरतान्क्लान्तानतीसारिणः शूलश्वासवतस्तृषापरिगतान्हिक्कामरुत्पीड़ितान् ॥ क्षीणान्क्षीणकफान्शिशून्मदहतान्वृद्धान्रसाजीर्णिनो । रात्रौजागरितान्नरान्निरशनान्कामंदिवास्वापयेत् ॥ दिवावायदिवारात्रौनिद्रासात्मीकृतानुयैः ॥ नतेषांस्वपतांदोषोजाग्रतांचोपजायते ॥ स्वपतांदिवा जाग्रतांरात्रौ भोजनानंतरं निद्रावातंहरतिपित्तहत । कफंकरोतिवपुषःपुष्टिसौख्यन्तनोतिहि ॥ शयनंपित्तनाशाय वातनाशायमर्दनम् । वमनंकफनाशायज्वरनाशाय लङ्घनम् ॥ आसीनंचूर्णितंयुक्तनाभिष्यन्दिनरूक्षणम् ॥ ६० ॥

दिनको न सोवे क्योंकि इससे कफ उत्पन्न होताहै परन्तु ग्रीष्मऋतु में दिनका सोना वर्जित नहींहै. और जिन मनुष्योंको सदैव दिनके सोनेका अभ्यासहै उनके दिनमें न सोनेसे वातादिकको प्रकरते हैं- व्यायाम मैथुन तथा मार्गचलने से व्याकुल अतीसार शूलश्वास तृषाहिचकी तथा वायुसे पीडित क्षीणअल्प कफवाले बालक मदसे पीडित वृद्ध अजीर्ण युक्त रात्रिमें जगेहुए और लंघन करने वाले पुरुषोंको दिनमें सोना उचितहै-जिन पुरुषोंने दिनमें सोनेका और रात्रिमें जागने का अभ्यासकर लियाहै उनको इससे कोई दोषनहीं होताहै- भोजनके अन्तमें सोनेसे वातपित्तका नाशक फकी वृद्धि और शरीरमें पुष्टता तथा सुख होताहै. पित्तके नाशके लिये शयनवायुके नाशके लिमित्त अंगमर्दन कफके नाशके लिये बमन और ज्वरके नाशके लिये लंघनकरना चाहिये- बैठकर अंगमर्दन करवाना अभिष्यन्दी और रूक्ष नहीं होताहै ॥ ६० ॥

अपरानप्युदरेऽन्नस्य संस्थापनहेतूनाह ॥

शब्दान्स्पर्शांश्चरूपाणिरसान्गन्धान्मनःप्रियान् । भुक्तवानपि सेवेतततोन्नंसाधु तिष्ठति ॥ उदरेइतिविशेषः ॥ ६१ ॥

उदरमेंअन्नस्थापन करनेके दूसरे कारण ॥

भोजनके उपरान्तमनके प्रियशब्द स्पर्श रूपरस और गन्धका सेवनकरै इससे अन्न उदरमें अच्छे प्रकार स्थित होजाता है ॥ ६१ ॥

अन्नस्योदरे ऽस्थितिहेतूनाह ॥

शब्दःस्पर्शस्तथारूपं रसोगन्धोजुगुप्सितः । भुक्तमप्रयतञ्चान्नमतिहास्यञ्चवामयेत्॥ अप्रयतमपवित्रम् ॥ ६२ ॥

अन्नके उदरमेंनठहरनेकेकारण ॥

भोजनके उपरान्त मनके अप्रिय शब्दस्पर्श रूपरस और गन्धके सेवनसे अपवित्र अन्नखाने से और बहुत हंसनेसे वमनहोजाताहै ॥ ६२ ॥

अन्यदपि वर्ज्जनीयमाह ॥

शयनंचासनञ्चाति नभजेन्नद्रवाधिकम् । नाग्न्यातपोनप्लवनंनयानंनापिवाहनम् ॥ प्लवनंबाहुभ्यांजलप्रतरणं यानंमार्गेचलनम्वाहनमश्वादि । व्यायामञ्च व्यवायञ्च धावनं यानमेवच ॥ युद्धंगीतञ्च पाठञ्चमुहूर्तंभुक्तवांस्त्यजेत् ॥ ६३ ॥

भोजनके उपरान्तत्यागकरनेके योग्यदूसरबातें ॥

भोजनके उपरान्त सोना बैठना अत्यन्त पतली बस्तुका पीना अग्नि धूप तैरना मार्ग में चलना घोड़े आदिकों पर चढ़ना व्यायाममैथुन दौडना युद्ध गान करना और पढ़ना यह सब मुहूर्त भर त्यागकरदे ॥ ६३ ॥

परिवर्जनार्थमजीर्णस्यहेतूनाह ॥

अत्यम्बुपानाद्विषमाशनाच्चसन्धारणात्स्वप्नविपर्य्ययाच्च ॥ कालेऽपिसात्म्यं लघुचा पिभुक्तमन्नंनपाकं भजतेनरस्य । ईर्ष्याभयक्रोधसमन्वितेनलुब्धेनरुग्दैन्यनिपीड़ितेन ॥ विद्वेषयुक्तेनचसेव्यमानमन्नं नसम्यक्परिपाकमेति ॥ सन्धारणात् । अधोवातमलमूत्रा दीनाम् ॥ ६४ ॥

त्यागकरदेनेके निमित्तअजीर्णके कारणोंका वर्णन ॥

बहुतजल पीना विषम भोजन करना मलमूत्रादि वेगोंकारोकना और दिनमें सोना इनकारणों से मनुष्यका समय अनुसार भीसात्म्य और लघुभोजन कियागया अन्न परिपाकको नहीं प्राप्तहोता है- ईर्ष्याभय क्रोध तथा लोभयुक्त रोगतथा दीनतासे पीड़ित और द्वेषयुक्त पुरुषका भोजन किया हुवा अन्न अच्छे प्रकारसे परिपाकको नहीं प्राप्तहोता है ॥ ६४ ॥

अध्यशन लक्षणमाह ॥

अजीर्णेभुज्यतेयत्तुतदध्यशनमुच्यतेतन्निवारयन्नाह । प्राग्भुक्ते चानलेमन्देद्विरह्नोन समाहरेत् ॥ अस्यायमर्थः प्रातर्भुक्तेऽजीर्णे सति । अहन्येवपुनर्नभुञ्जीतइत्यर्थः । रात्रौ पुनस्तथापिसति भुञ्जीतैव ॥ यतआहसुश्रुतएव । प्रातराशेत्वजीर्णेतुसायमाशेतुदु ष्यतीति ॥ पूर्वभुक्ते विदग्धेऽन्नेभुञ्जानोहन्तिपावकान् । अस्यत्वयमर्थः । पूर्वंभुक्तेरात्रि भुक्तेअन्नेविदग्धेकिञ्चिदपक्केप्रातर्भुञ्जानः पावकंहन्तीत्यर्थःयतआह सायमाशेत्वजी र्णेतुप्रातर्भुक्तंविषोपमामिति ॥ ६५ ॥

अध्यशनका लक्षण ॥

अजीर्णमें भोजन करनेको अध्यशन कहतेहैं (अबउसका निवारण करतेहैं)कि प्रातःकाल भोजन करनेसे जो अजीर्णहोय तो दिनको फिर न खाय और रात्रिमें भोजनकरनेसेकोई दोषनहींहै क्योंकि सुश्रुतने कहा हैकि प्रातःकाल किये हुये भोजन के परिपाक न होने पर सायंकाल को भोजन करै और रात्रि काकिया भोजन यदि अच्छी रीतिसे परिपाकको न प्राप्तहोय तो दूसरे दिन प्रातःकाल भोजनकरने से अग्नि नष्ट होजाती है क्योंकि कहा गयाहै कि रात्रिके कियेहुए भोजन के अजीर्ण होनेपर दूसरे दिन प्रातःकालको भोजन विष तुल्यहै ॥ ६५ ॥

सायमाशाजीर्णे भोजनोपायमाह ॥

भवेद्यदिप्रातरजीर्णशङ्का तदाभयांनागरसैन्धवाभ्याम् । विचूर्णितांशीतजलेनभुक्तां भुञ्जीतचान्नंमितमन्नकाले ॥ ६६ ॥

रात्रिकेभोजनसे हुए अजीर्णमें भोजनका उपाय ॥

यदि प्रातःकाल अजीर्णका सन्देह होयतो सोंठ सेंधानोन और हड़ इनके चूर्णको शीतलजलके साथ भक्षण करके भोजनके समयपर थोडासा भोजनकरै ॥ ६६ ॥

आयुःक्षयभयाद्दिद्वान्नाह्निसेवेतकामिनीम् । अवशोयदिसेवेततदाग्रीष्मवसन्तयोः ॥ अवशःअजितेन्द्रियः ॥ ६७ ॥

पंडित दिनमें स्त्रीसंसर्ग (मैथुन) न करै और यदि इन्द्रियके वशीभूत होकर करै तो केवल ग्रीष्म और बसन्त ऋतुमेंही करै ॥ ६७ ॥

आस्यावर्णकफस्थौल्यसौकुमार्य्यसुखप्रदाः । अध्वा वर्णकफस्थौल्यसौकुमार्य्यविनाशनः ॥ यत्तुचंक्रमणंनाति देहपाड़ाकरंभवेत् । तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥ ६८ ॥

बैठेरहने से कफस्थूलता सुकुमारता और सुखहोताहै मार्गमें चलने से कफ स्थूलता और सुकुमारताका नाशहोताहै- शरीरको विना बहुत पीड़ादिये धीरे २ चलनेसे आयु बल मेधा तथा अग्निकी वृद्धि और इन्द्रियों में चैतन्यता होती है ॥ ६८ ॥

उष्णीषंकान्तिकृत्केश्यं रजोवातकफापहम् । लघुतच्छस्यतेयस्माद गुरुपित्ताक्षिरोगकृत् ॥ ६९ ॥

पगड़ी कान्तिवर्द्धक केशोंको हितकारी धूलिवायु और कफकी नाशकर ने वाली होती है परन्तु हलकी पगड़ी धारण करनी चाहिये क्योंकि भारीपगडी पित्त और नेत्रके रोगोंको उत्पन्नकरतीहै॥६९॥

उपानद्धारणंनेत्र्यमायुष्यंपादरोगहृत्सुखप्रचारमोजस्यंवृष्यञ्चपरिकीर्त्तितम्॥पादाभ्यामनुपानद्भ्यांसदा चंक्रमणंनृणाम् । अनारोग्यमनायुष्यमिन्द्रियघ्नमदृष्टिदम् ॥७०॥

जूतोंके पहिरनेसे नेत्रोंको हित आयुकी वृद्धिपैरोंके रोगोंकानाश सुखकी प्राप्ति और ओज तथा वीर्यकी वृद्धि होतीहै ॥ ७० ॥

छत्रस्यधारणंवर्षातपवातरजोऽपहम्हिमघ्नंहितमक्ष्णोश्चमांगल्यमपिकीर्त्तितम् ॥७१॥

छत्रधारण वर्षा धूप धूलि तथा हिमकानाशक नेत्रोंको हित और मंगलकारी होताहै ॥ ७१ ॥

सत्वोत्साहबलस्थैर्य्य धैर्य्यतेजोविवर्द्धनम् । अवष्टम्भकरञ्चापि भयघ्नं दण्ड धारणम् ॥ ७२ ॥

दंडका धारण सत्व उत्साह बल स्थिरता शूरता तेजकीवृद्धि अवलम्ब देनेवाला और भयका नाशक होता है ॥ ७२ ॥

ऊर्ध्वाच्छादनसंयुक्ताशिविकासर्ववल्लभा । तस्यामारोहणंनृणांत्रिदोषशमकंमतम् ॥ वातश्लेष्ममदार्त्तीना महिताभ्रमकृत्तरिः । पित्तानिलकरोहस्ती लक्ष्म्यायुःपुष्टिवर्द्धनः ॥ घोटकारोहणंवातपित्ताग्निश्रमकृन्मतम् । मेदोवर्णकफघ्नञ्चहितंतद्बलिनांपरम् ॥ ७३ ॥

घटाटोप पालकी सबको प्रियहोतीहै और इसपर चढने से मनुष्यों के त्रिदोष नाशहोतेहैं वात श्लेष्मा के रोगोंसे व्याकुल मनुष्योंको नावका चढना हानि कारक होताहै और इससे भ्रमभी होताहै हाथीपर चढने से पित्त बायु लक्ष्मी आयु और पुष्टताकी वृद्धिहोतीहै घोडेपर चढना वातपित्त अग्नि और श्रम करनेवाला और मेदवर्ण तथा कफका नाशक होताहै और यह बलवान पुरुषोंको अत्यन्त हितहोताहै ॥ ७३ ॥

आतपस्वेदमूर्च्छास्र पित्तक्लमश्रमान् । दाहंविवर्णतांकुर्य्यादेतान्छायाव्यपोहति ॥ वृष्टिर्वृष्याहिमाबल्यानिद्रालस्यविधायिनी । भयावहामोहकरीकुहेतिःकफवातला ॥ कुहेतिःकुहेराइतिलोके अग्निवातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः । आमाभिष्यन्दिशमनोरक्तपित्तप्रकोपनः ॥ सद्यःश्लेष्मकरोधूमोनेत्रयोरहितोभृशम् । शिरोगौरवकृच्चापि वातपित्तञ्चकोपयेत् ॥ ७४ ॥

आतप (धूप) से स्वेद मूर्च्छा रक्त पित्तग्लानि श्रमदाह और विवर्णता उत्पन्नहोती है और छायासे इनसबका नाशहोताहै वृष्टिसे वीर्य्य शीतलता बल निद्रा और आलस्यहोताहै कोहरेसे भय मोह और कफ तथा बायु की वृद्धिहोतीहै अग्निसे वायु कफ स्तम्भशीत और कंपका नाशआम तथा अभिष्यन्दकी शान्ति और रक्त पित्तका कोप होताहै धूमसे शीघ्र कफ की उत्पत्ति नेत्रों को अत्यन्त अहित शिरमें भारीपन और वायु पित्तका कोप होताहै ॥ ७४ ॥

अथाचारः ॥

मैत्रींसद्भिःसमंकुर्य्यात् स्नेहंसत्सुतुसर्वथा । संसर्गंसाधुभिःकुर्यादसत्संगंपरित्यजेत् ॥ सत्सुसर्वथासज्जनेषुमनोवाक्कर्मभिः । सेवेतदेवभूदेववृद्धवैद्यनृपातिथीन् । विमुखान्नार्थिनःकुर्य्यान्नावमन्येतकानपि ॥ गुरूणांसन्निधौतिष्ठेत्सदैवविनयान्वितः । पादप्रसारणादीनितत्रनैवसमाचरेत् ॥ अपकारपरेऽपिस्यादुपकारपरःपुमान् । आत्मवत्सकलान् पश्येद्वैरिणोदूरतोवसेत् ॥ नकिञ्चिदात्मनःशत्रुन्नात्मानंकस्यचिद्रिपुम् । प्रकाशयेन्नापमानंनचनिस्नेहतांप्रभोः ॥ नात्मानमुदकेपश्येन्न नग्नःप्रविशेज्जलम् । तथानाज्ञातगाम्भीर्य्यं नहिंस्रप्राणिसेवितम् ॥ कालेहितंमितंसत्यं सम्बादिमधुरंवदेत् । भुञ्जीतमधुरप्रायं स्निग्धंकालेहितंमितम् ॥ नरात्रौदधिभुञ्जीत नचनिर्लवणंतथा ॥ नामुद्गसूप

न्ना क्षौद्रंनचाप्यघृतशर्करम्॥जनस्याशयमालक्ष्य योयथापरितुष्यति । तत्तथैवानुवर्त्तेत पराराधनपण्डितः ॥ नैकःसुखीनसर्वत्र विश्वस्तोनचशंकितः । नोद्यमेविरमेत्क्वापि हेतावीर्षेत्फलेनतु ॥ (हेतौफलहेतौ । उद्यमेफले धनादौ) वेगान्नधारयेज्जातु मनोवेगान्विधारयेत् । नपीड़येदिंद्रियाणि नचैतानतिलालयेत् ॥ वर्षातपादिषुच्छत्री दण्डीरात्रौभयेषुच । सोपानत्कस्तनुंरक्षेत् विचरेद्युगमात्रदृक् ॥ युग मात्रदृक् अग्रतो हस्त चतुष्टयमितां भूमिंपश्यन् । नदीन्तरेन्नबाहुभ्यान्नाग्निस्कन्धमभिव्रजेत् ॥ संदिग्धनावंवृक्षञ्च नारोहेद्दुष्टयानकम् । दुष्टयानं दुष्टगज घोटकादि ॥ ७५ ॥

आचारका वर्णन ॥

मित्रता सज्जनतथा असज्जनदोनोंके साथकरै परन्तु सज्जनोंके साथ मन वचन कर्मसे मित्रता करनी उचितहै साधुओंका संसर्ग करै और असत्संग छोडेदे देवता ब्राह्मण वृद्ध बैद्यराजा और अतिथियों की सेवा करै याचकोंको बिमुख और किसीका अनादर न करै गुरुओंके समीप सदैव बिनय पूर्वक रहना चाहिये और उनके निकट पैर फैलाना आदि उद्दण्डता न करै अपकार करनेवालेसे भी उपकार करै सबको अपने समानदेखै और शत्रुसे दूर रहै किसी को अपना शत्रु तथा अपने को किसी का शत्रु अपमान और स्वामी की अप्रीति (नाराजी) को प्रकट न करे जल में अपनी छायान देखे नग्नहोकर जलमें प्रवेश न करै और जिसकी गहराई न मालूम तथा जिसमें हिंसक जीवरहते हों ऐसे जलमें प्रवेश न करै, समय के अनुसार हितकारी थोडा सत्य संगत और मधुर भाषण करै, भोजनके समयमें प्रायः मधुर स्निग्ध हित और थोड़ा भोजन करै, रात्रि में दही न खाय और यदि खाय तो लवण मूंगकी दाल सहत घृत औरशर्करा मिलाकर खाय दूसरेके प्रसन्न करनेसे चतुरपुरुष लोगोंके आशय को जानकर जो जिससे प्रसन्न होताहो उसके साथ वैसाही बर्ताव करै, आपही अकेला सुखी न होवै सब लोगोंपर बिश्वास और सबपर सन्देह न करै, उद्यमसे कभी विरत न होय हेतुमें ईर्षाकरै परन्तु फलमें कदापि न करै अर्थात् किसी पुरुषको ऐश्वर्य्यवान् देखकर ऐश्वर्य्य में ईर्षा न करेपरन्तु जिन विद्यादि कारणोंसे ऐश्वर्य्यहुआहै उनमें यह ईर्षा करनीचाहिये कि वहीकाम मैंभी करूं जिस्से ऐश्वर्यवान् होजाऊं मलमूत्रादि वेगोंको न धारण करे और मनके वेगको रोंके इन्द्रियोंको न बहुतकष्टदे और अत्यन्त उनकालालनन करे बर्षा और गरमीकी ऋतुमें छत्र और रात्रि तथा भयके स्थानमें दंड धारणकरे जूतेसे चरणोंकी रक्षाकरे मार्गचलनेके समय चारहाथ आगेकी पृथ्वी देखकर चलेभुजाओंसे पैरकर नदीके पारनजाय जहां अग्नि लगीहो उस के सन्मुख न जाय, जिस नौकाके टूटनेका सन्देहहो उसपर वृक्षपर और दुष्ट हाथी घोडे आदि सवारियोंपरन चढ़े ॥७५॥

नासंवृतमुखंकुर्य्यात्सभायाञ्चविचक्षणः । कासंश्वासंतथोद्गारंजृम्भणंक्षवथुस्तथा ॥ नासिकांनविकुर्ष्णीयान्नासीतोत्कटुकःक्वचित् । नोर्ध्वजानुचिरंतिष्ठेन्नखेनलिखेद्भुवम् ॥ सम्मार्ज्जनीरसोनैव देहेदद्यात्कदाचन । ननखेनतृणंच्छिन्द्या न्नोच्छिष्टोब्राह्मणं स्पृशेत् ॥ नोपरक्तंनचोद्यन्तं नास्तंयातंदिवाकरम् । सर्वथानसमीक्ष्येत नजलेप्रतिबिम्बितम् ॥ नेक्ष्येतसततंसूक्ष्मं दीप्तामेध्याप्रियाणिच । पौरंदरंधनुर्नैव दर्शयेत्कमपिक्व

चित् ॥ नेच्छद्बलवतायुद्धं नभारंशिरसावहेत् । गात्रंनवादयेत्केशान् हस्तेनधुनुयान्न च ॥ नगच्छेत्पूज्ययोर्मध्ये दम्पत्योरन्तरेणच । रिपोरन्नंनभुञ्जीत गणिकान्नमपिक्वचित् ॥ प्रतिभूर्नभवेत्क्वापि नचसाक्षीवृथाभवेत् । (प्रतिभूः जामिनः) स्थागीन्नधारयेज्जातुघृतंदूरात्परित्यजेत् । (स्थागीथाती) विश्वासंनाचरेत् स्त्रीणांताः स्वतंत्राश्च नाचरत् । रक्षणीयाःसदायत्ना द्यौवनेतुविशेषतः ॥ नभिन्नेशयनेसुप्या न्नानेकविवरेऽपि च । नैकोदेवालयेनैव रात्रौतरुतलेऽपिच ॥ एवंदिनानिगमयेत् सदाचारपरःसदा । तोरात्रिप्रयुक्तानि कुर्य्यात्तकर्म्माणिमानवः ॥ इत्याचारंसमासेन भाषितंयःसमाचरेत् । सविन्दत्यायुरारोग्यं प्रीतिंधर्म्मंधनंयशः ॥ ७६ ॥

बुद्धिमान् पुरुष सभामें मुखको बिना बन्द किये खांसी श्वास डकार जंभाई और छींक यह न करै नाककोनकुरेदे उकडू न बैठे, बहुत देरतकघुटनेको ऊपर करके न बैठे नखोंसे पृथ्वी परन लिखै बुहारी और बुहारीकी धूलका स्पर्श न करे नखों से तिनके न तोड़े न काटे जूँठे मुखसे ब्राह्मण को न छुए ग्रहण के समय उदय और अस्तके समय सूर्य्य को कभी न देखे और जल में दिखाई देने वाले सूर्य्य के प्रति बिम्बको न देखे सूक्ष्म जलती हुई अपवित्र और अप्रिय वस्तुको लगातार न देखे किसी को इन्द्रका धनुष न दिखावे बलवान् शत्रुसे युद्ध न करे शिरपर बोझानले चले अंगोंको न बजावे हाथ से बालोंको न बहावे दोपूज्य पुरुष और स्त्री पुरुषोंके मध्यमें न जाय शत्रु और वेश्या के अन्नको कभी नखाय किसीकी जमानत न करे और व्यर्थ किसी का साक्षी भी नहो किसी की धरोहड़ न रक्खे जुआंको दूरसे छोड़दे स्त्रियोंका विश्वास न करे और उनको स्वतंत्र न करे स्त्रियोंकी सदैव रक्षाकरे और युवावस्था में विशेष करे स्त्री से पृथक् शय्यापर न सोवे बहुत पुरुषों से युक्त स्थानमें स्त्री को न रक्खे रात्रिके समय अकेला देवता के स्थानमें और वृक्ष के नीचे न जाय इसप्रकार सदा चार में प्रवृत्त होकर दिनोंको व्यतीत करे इस के उपरान्त रात्रिके योग्य कार्य्यों को करे इस संक्षेप से कहे हुए आचार को जो मनुष्य करताहै वह आयु आरोग्यधन यशधर्म और प्रीतिको प्राप्त होताहै ॥ ७६

अथ सन्ध्यायां निषिद्धानि कर्माण्याह ।

एतानिपञ्चकर्म्माणि सन्ध्यायांवर्ज्जयेद्बुधः । आहारंमैथुनंनिद्रां सम्पाठंगतिमध्वनि ॥ भोजनाज्जायतेव्याधि र्मैथुनाद्गर्भविकृतिम् । निद्रायाःनिःस्वनापाठा दायुर्हानिर्गतेर्भयम् ॥ ७७ ॥

संध्यामें निषिद्ध कर्म्म ॥

आहार मैथुन निन्द्रा पढ़ना मार्ग गमन यह पांच कार्य्य संध्याके समय पंडितोंको त्यागने योग्य हैं क्योंकि भोजन करने से व्याधि मैथुन से गर्भमें बिकार निद्रासे दरिद्रता पढ़ने से आयुकीहानि और गमन करनेसे भय उत्पन्न होताहै ॥ ७७ ॥

अथ रात्रिचर्य्यामाह ।

ज्योत्स्नाशीतास्मरानन्द प्रदातृट्पित्तदाहहृत् । ततोहीनगुणःकुर्य्या दवश्यायोऽनिलङ्कफम् ॥ ७८ ॥

रात्रिचर्य्या ॥

चांदनी शीतल कामोद्दीपक और पित्ततृषा तथा दाहकी नाशकरने वाली होती है- पाला इस्से गुणोंमें न्यून होताहै और वायुकफके दोषोंको बढ़ाता है ॥ ७८ ॥

तमोभयावहंमोहदिङ्मोहजनकम्भवेत् । पित्तहृत्कफहृत्कामवर्द्धनंक्लमकृच्चतत् ॥७९॥

अंधकारसे भय मोह दिग्भ्रमपित्ततथा कफकानाश कामकी वृद्धि और शरीरमेंग्लानि होतीहै ॥७९॥

रात्रौचभोजनंकुर्य्यात् प्रथमप्रहरान्तरे । किंचिदूनंसमश्नीयात् दुर्ज्जरन्तत्रवर्ज्जये त् ॥ शरीरेजायतेनित्यं देहिनःसुरतस्पृहा । अव्यवायान्मेहमेदोवृद्धिःशिथिलता तनोः॥ बालेतिगीयतेनारी यावद्वर्षाणिषोड़शः । ततस्तुतरुणीज्ञेया द्वात्रिंशद्वत्सरावधि ॥ तदू र्ध्वमधिरूढ़ास्यात् पञ्चाशद्वत्सरावधि । वृद्धातत्परतोज्ञेया सुरतोत्सवविवर्ज्जिता ॥ (अ धिरूढ़ा प्रौढ़ा) निदाघशरदोर्बाला हिताविषयिणांमता । तरुणीशीतसमये प्रौढ़ावर्षा वसन्तयोः ॥ ८० ॥

रात्रिके समय प्रथम पहरमेंही कुछ न्यून भोजन करे और कठिनतासे पचनेके योग्य भोजन न करे मनुष्यों के शरीर में नित्य मैथुन की इच्छा होतीहै इसके रोकने से प्रमेह मेद वृद्धि और शरीरकी शिथिलता होती है सोलह वर्ष की स्त्री बाला सोलह से बत्तीसतक तरुणी बत्तीस से पचास तक प्रौढ़ा और इसके उपरान्त वृद्धाकही जाती हैं यह वृद्धास्त्री मैथुन में वर्जितहै ग्रीष्म और शरत्काल में बालास्त्री शीतकालमें तरुणी और वर्षा तथा बसन्त ऋतुमें प्रौढ़ास्त्रीमैथुनके लिये श्रेष्ठहै ॥८०॥

नित्यम्बालासेव्यमाना नित्यम्बर्द्धयतेबलम् । तरुणीह्रासयेच्छक्तिं प्रौढ़ोद्भावयते जराम् ॥ ८१ ॥

बालास्त्री के नित्य सेवनकरने से बलकी वृद्धिहोतीहै तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे शक्तिकी हानिहोतीहै और प्रौढ़ा स्त्री के साथ मैथुनकरने से शरीर रोग ग्रस्तहोताहै ॥ ८१ ॥

सद्योमांसन्नवञ्चान्नं बालास्त्रीक्षीरभोजनम् । घृतमुष्णोदकेस्नानं सद्यःप्राणकरा णिषट् ॥ ८२ ॥

ताजा मांस नवीनअन्न बाला स्त्री घृत दुग्धका भोजन और गरम जल से स्नान इन छःबातों से शीघ्र बल उत्पन्नहोताहै ॥ ८२ ॥

पूतिमांसंस्त्रियोवृद्धा बालार्कस्तरुणोदधि । प्रभातेमैथुननिद्रा सद्यःप्राणहराणिषट्॥ प्राण शब्दोऽत्र बलवाचकः बालार्कः कन्यार्कः ॥ ८३ ॥

सड़ा मांस वृद्धा स्त्री कन्याके सूर्य्य ताजादही प्रातःकालमैथुन और निद्रा यह छः शीघ्र बलके नाशकरने वाले हैं ॥ ८३ ॥

वृद्धोऽपितरुणींगत्वा तरुणत्वमवाप्नुयात् । वयोऽधिकांस्त्रियंगत्वा तरुणःस्थविराय त ॥ आयुष्मन्तोमन्दजरा वपुर्वर्णबलान्विताः । स्थिरोपचितमांसाश्च भवन्तिस्त्रीषु संयताः ॥ ८४ ॥

वृद्धपुरुषभी तरुणी स्त्रीके साथ संगकरनेसे तरुण होजाताहै और अपनी अवस्थासे अधिक अवस्था वाली स्त्रीसे भोगकरने से तरुणभी वृद्ध होजाताहै- नियमपूर्व्वक स्त्रियोंके साथ गमन करने से आयुकी वृद्धि वृद्धावस्थाकी कमी पुष्टता- बर्णकी उत्तमता बल की वृद्धि और मांसकी स्थिरता होती है ॥ ८४ ॥

सेवेतकामतःकामं बलाद्वाजीकृतोहिमे । प्रकामन्तुनिषेवेत मैथुनंशिशिरागमे ॥ त्र्यहाद्वसंतशरदोः पक्षाद्वृष्टिनिदाघयोः । सुश्रुतस्तु त्रिभिस्त्रिभिरहो भिर्हिंसमेयात्प्रमदान्नरः ॥ सर्वेष्वृतुषुघर्मेषु पक्षात्पक्षाद्व्रजेद्बुधः । समेयात् संगच्छेत् घर्मेग्रीष्मे ॥ ८५ ॥

हे मन्तऋतुमें वाजीकरण औषधियोंका सेवन करके कामके वेग के अनुसार संभोगकरे-शिशिर ऋतुमें इच्छा के अनुसार मैथुन करना चाहिये- वसन्त और शरदृऋतु में तीन २ दिनका अन्तर देकर मैथुन करना चाहिये- बर्षा और ग्रीष्मऋतुमें पंद्रह २ दिन के उपरान्त मैथुन करना चाहिये सुश्रुतने तो कहाहै कि बुद्धिमान् पुरुषका सम्पूर्णऋतु ओंमें तीन २ दिनके अन्तरसे और ग्रीष्मऋतुमें पन्द्रह २ दिनके अन्तरसे मैथुन करना चाहिये ॥ ८५ ॥

शीतेरात्रौदिवाग्रीष्मे वसन्तेतुदिवानिशि । वर्षासुवारिदध्वाने शरत्सुस्वरसःस्मरः ८६॥

शीतऋतुमें रात्रिके समय ग्रीष्ममें दिनको बसन्त में दिन और रात्रि दोनों समयपर वर्षा में मेघोंके गरजनेपर और शरदऋतुमें अपनी इच्छाके अनुसार मैथुन कियाजाताहै ॥ ८६ ॥

उपेयात्पुरुषोनारीं सन्ध्ययोर्नचपर्व्वसु । गोसर्गेचार्द्धरात्रेच तथामध्यदिनेऽपिच ॥ विहारम्भार्य्ययाकुर्य्या द्देशेऽतिशयसंवृते । रम्येश्रव्यांगनागाने सुगन्धेसुखमारुते ॥ देशेगुरुजनासन्ने विकृतेऽतित्रपाकरे । श्रूयमाणेव्यथाहेतु वचनेनरमेतना ॥ ८७ ॥

सन्ध्याकालमें पर्वके दिनोंमे प्रातः कालमें आधीरात में और दोपहरमें पुरुषोंको मैथुन करना उचित नहीं है- बहुत गुप्तमनोहर सुन्दर स्त्रियोंके गानसे युक्त सुगन्धित और सुखदायक वायु वाले स्थानमें पुरुषों को स्त्रियोंसे सम्भोग करना उचितहै- खुलेहुए लज्जाके योग्य और जिसमें गुरुलोग निकटहों तथा दुःखदायीवचन सुनाई पडतेहों एसे स्थानमें संभोग करना उचित नहींहै ॥ ८७ ॥

स्नातश्चन्दनालिप्तांगः सुगंधःसुमनोऽन्वितः । भुक्तवृष्यःसुवसनः सुवेशःसमलंकृतः ॥ ताम्बूलवदनःपत्न्या मनुरक्तोधिकःस्मरः । पुत्रार्थीपुरुषोनारी मुपेयाच्छयने शुभे ॥ ८८ ॥

स्नान कियेहुए शरीरमें चन्दनको लगायेहुए सुगन्धित पुष्पोंको धारण कियेहुए वीर्यके बढ़ाने वाली बस्तुओंको खायेहुये अच्छे बस्त्रपहने हुये सुन्दर वेषधारण कियेहुए आभूषणों से युक्त ताम्बूल खायेहुए स्त्री में प्रेमयुक्त अधिक कामके वेगवाले और पुत्रकी अभिलाषाकरने वाले पुरुषको सुन्दर शय्यामें स्त्रीकेसाथ सम्भोग करना उचितहै ॥ ८८ ॥

अत्याशितोऽधृतिःक्षुद्वान् सव्यथांगःपिपासितः । बालोवृद्धोऽन्यवेगार्त्तः स्त्यजेद्रोगी चमैथुनम् ॥ रोगीमैथुन सम्वर्द्धनीय रोगयुक्तः ॥ ८९ ॥

बहुत भोजन कियाहुवा धैर्य रहित भूंखा प्यासा पीडायुक्त शरीर वाला बालक वृद्धमल मूत्रादि वेगयुक्त और रोगयुक्त (मैथुनकरनेसे जोरोगबढ़ताहो उससे युक्त) पुरुष मैथुन न करै ॥ ८९ ॥

भार्य्यांरूपगुणोपेतां तुल्यशीलांकुलोद्भवाम्। अतिकामोऽभिकामान्तु हृष्टोहृष्टामलं कृताम् ॥ सेवेतप्रमदांयुक्त्या वाजीकरणवृंहितः ॥ ९० ॥

अधिक कामके वेगवाला प्रसन्न और बाजी करण औषधियों से बढ़े वीर्यवाला पुरुष रूपतथा गुणोंसे युक्त अपने समान स्वभाववाली कुलीन कामके अधिक वेगसे युक्त प्रसन्न और आभूषणों से युक्त युवती स्त्रीके साथ विधिपूर्वक सम्भोग करै ॥ ९० ॥

रजस्वलामकामाञ्च मलिनामप्रियान्तथा। वर्णवृद्धांवयोवृद्धां तथाव्याधिप्रपीड़िताम् ॥ हीनांगींगर्भिणींद्वेष्यां योनिरोगसमन्विताम्। सगोत्रांगुरुपत्नीञ्च तथाप्रव्रजितामपि ॥ नाभिगच्छेत्पुमान्नारीं भूरिवैगुण्यशंकया ॥ ९१ ॥

रजस्वलाकामके वेगसेरहित मलिन अप्रिय वर्णतथा अवस्थामें वृद्धरोगसे व्याकुल गर्भिणी द्वेष युक्त योनिमें रोगवाली समानगोत्रवाली गुरुपत्नी और संन्यास युक्त इनसम्पूर्ण स्त्रियोंके साथ सम्भोगकरना अनुचितहै क्योंकि इससे बड़ी हानिकी शंकाहै ॥ ९१ ॥

रजस्वलांगतवतो नरस्यासंयतात्मनः। दृष्ट्यायुस्तेजसांहानि रधर्मश्चततोभवेत् ९२॥

इन्द्रियोंके वशीभूतहोकर रजस्वला स्त्रीके साथ गमन करने वाले पुरुषोंकी दृष्टि आयु तथा तेजकी हानि और अधर्मकी वृद्धि होती है ॥ ९२ ॥

लिंगिनींगुरुपत्नीञ्च सगोत्रामथपर्व्वसु। वृद्धाञ्चसन्ध्ययोश्चापि गच्छतोजीवन क्षयः ॥ (लिंगिनीं। प्रव्रजिताम्) गर्भिण्यांगर्भपीड़ास्या द्व्याधितायांबलक्षयः। हीनां गींमलिनांद्वेष्यां क्षामाम्बन्ध्यामसंवृते ॥ देशेऽभिगच्छतोरेतः क्षीणंग्लानंमनोभवेत्। गर्भिणी गर्भवास दिवसात् द्वितीयेमासि गर्भस्थितेर निश्चिते यथोक्त नक्षत्रादि लाभा भावे वा तृतीये मासिपुंसवने कृते नाभिगच्छेत् ॥ (यथापुंसवना नन्तरमाह व्यासः) ततस्त्यजेन्नदीतीरं देवखातोदकंतथा। भर्त्तुःशय्यांमृतापत्यां तथैवामिषभोजनम् ॥ अन्यच्च ॥ आमिषस्याशनंयत्ना त्प्रमदापरिवर्ज्जयेत्। देवारामनदीयानं प्रयोगंपुरुषस्यचेति ॥ ९३ ॥

संन्यासिनी- गुरुपत्नी- समानगोत्रवाली और वृद्धस्त्री के साथ भोगकरने से और पर्व दिनतथा संध्याकाल में भोगकरने से जीवका नाशहोताहै और गर्भिणी स्त्रीसे भोगकरनेसे गर्भ में बाधा होती है व्याधिसे पीड़ित स्त्रीसे भोगकरनेमें बलकी हानिहोतीहै-हीन अंगवाली मलिन द्वेषयुक्त-दुर्बल और बंध्याके साथ भोग करने से अथवा बेपर्दके स्थानमें भोगकरने से वीर्य्य की क्षीणता और मन की अप्रसन्नताहोतीहै यहां गर्भिणी स्त्रीसे यह तात्पर्य्यहै कि गर्भस्थिति के दिनसे दूसरे महीने में अथवा गर्भस्थिति के नहोने में यायथोक्त नक्षत्रादिकों के न मिलनेसे तीसरे महीने में पुंसवन कर्मके होजाने पर संभोग नहीं करना चाहिये और ऐसाही व्यासजीने भी कहाहै कि पुंसवन के पीछे स्त्री नदीका तट- देवताओं के कुंडोंका जल पति के साथ शयन- मृतवत्सास्त्रीका दर्शन और मांस भोजन त्यागकरदे और भी कहाहुआहै कि गर्भिणी स्त्री मांस भोजन- देवस्थान- बाग- नदी- यान पर चढ़ना- और मैथुन यत्न पूर्वकछोड़दे ॥ ९३ ॥

क्षुधितःक्षुब्धचित्तश्च मध्याह्नेतृषितोऽबलः । स्थितस्यहानिंशुक्रस्यवायोःकोपञ्च विन्दति ॥ व्याधितस्यरुजाप्लीहा मूर्च्छामृत्युश्चजायते । प्रत्यूषेचार्द्धरात्रेचवातपित्ते प्रकुप्यतः ॥ तिर्य्यग्योनावयोनौवादुष्टयोनौतथैवच । उपदंशास्तथावायोः कोपःशुक्र सुखक्षयः ॥ ९४ ॥

क्षुधित, घबराया हुआ- तृषायुक्त और दुर्बल मैथुनकरने से वीर्य्यकी हानि और वायु के कोप को प्राप्तहोताहै और मध्याह्न में भी मैथुनकरने से यही दोष उत्पन्नहोते हैं और व्याधियुक्त पुरुष मैथुन करने से प्लीहा मूर्च्छा आदि अनेक रोग और मृत्यु को भी प्राप्त होताहै प्रातःकाल अथवा अर्द्ध रात्रि में मैथुन करने से बात और पित्तका कोपहोताहै पशु आदि की योनि अयोनि (छोटी अवस्था के कारण भोगके अयोग्य) और दोष युक्त योनिमें मैथुन करने से आतशक बायुका कोप और वीर्य्य तथा सुखकी हानि होती है ॥ ९४ ॥

उच्चारितेमूत्रितेचरेतसश्चविधारणे । उत्तानेचभवेत् शीघ्रंशुक्राश्मर्य्यास्तुसम्भवः ॥ सर्वमेतत्त्यजेतस्माद्यतोलोकद्वयाऽहितम् । शुक्रस्तूपस्थितम्मोहान्नसन्धार्य्यकदाचन॥ स्नानंसशर्क्करंक्षीरंभक्ष्यमैक्षवसंस्कृतम्। पानंमांसरसःस्वप्नोसुरतान्तेहिताऽमी॥मूलका सज्वरश्वास काश्यपाण्डवामयक्षयाः । अतिव्यवायाज्जायन्तेरोगाश्चाक्षेपकादयः॥९५॥

मैथुन करनेके समय मलमूत्र और बीर्यके बेगको रोंकनेसे अथवा चित्त सोनेसे शीघ्रही शुक्राश्मरी (बीर्यकीपथरी) उत्पन्न होतीहै इसी कारणसे उचितहै कि इन दोनों लोकों की हानिकारक बातोंका त्यागकरदे और मोहसे गिरतेहुए बीर्य्य को कदापि न रोके स्नान शर्करा युक्त दुग्ध मिष्ट भोजन बायुका सेवन मांसका रस और निन्द्रा यह संपूर्ण भोगके अन्तमें अत्यन्त हितकारी है बहुत मैथुनकरने से शूल कास ज्वर श्वास दुर्बलता पांडु क्षय और आक्षेप आदि रोग उत्पन्न होते हैं ॥९५॥

रात्रौजागरणंरूक्षंकफदोषविषार्तिजित्। निद्रातुसेविताकालेधातुसाम्यमतन्द्रिताम्॥ पुष्टिवर्णबलोत्साहवह्निदीप्तिंकरोतिहि । योलेढ़िशयनसमयेमधुमिश्रंबीजपूरदलचूर्णम् । सतुलज्जाकरवातप्रसरनिरोधात्सुखंस्वपिति ॥ ९६ ॥

रात्रिमें जागनेसे शरीरकी रूक्षता होतीहै और कफके दोष तथा बिषकी पीड़ा शान्ति होतीहै समयके अनुसार शयन करने से धातुओंकी समता आलस्य कानाश शरीर कीपुष्टता-बल-वर्ण-उत्साह और जठराग्नि की दीप्ति होती है जो मनुष्य शयनके समय बिजौरे नींबू के पत्तेके चूर्णको सहत के साथ चाटताहै वह अपान बायुकी वृद्धि के रुकनेसे सुख पूर्वक सोताहै ॥ ९६ ॥

सवितुःसमुदयकालेप्रसृतीःसालिलस्यपिवेदष्टौ । रोगजरापरिमुक्तोजीवेद्वत्सरशतं साग्रम् ॥ अस्यजलपानस्योपक्रमकालेरात्रेश्चतुर्थप्रहरेप्रवेशः ॥ तथाचभोजः पिवति पर्य्युषितंजलमन्वहन्तामिरणीचरमेप्रहरेयदि । एतज्जलपानकालमर्य्यादासूर्य्योदयाति सन्निहितप्रातःकालः तथाचतन्त्रान्तरे अम्भसःप्रसृतीरष्टौरवावनुदितेपिवेत् । वातपि त्तकफान्जित्वाजीवेद्वर्षशतंसुखीइति ॥ सलिलस्यात्रपर्य्युषित ग्रहणंभोजवचनानुरो धात् । अर्शःशोथग्रहण्योज्वरजठरजराकुष्ठमेदोविकारः । मूत्राघातास्रपित्तश्रवणगल

शिरःश्रोणिशूलाक्षिरोगाः ॥ येचान्येवातपित्तक्षतजंकफकृता व्याधयःसन्तिजन्तोस्तां स्ताान्नभ्यासयोगादपहरतिपयःपीतमन्तेनिशायाः ॥ ९७॥

सूर्य्यके उदयके समयमें आठ चुल्लू जल पीनेसे संपूर्ण रोग और वृद्धावस्था से छूटकर एक सौवर्ष की आयुहोती है इस जल पीनेके प्रारम्भ का समय रात्रि के चौथे प्रहरका प्रवेश कहागयाहै और ऐसाही भोजनमें कहाहै रात्रिके चौथे प्रहरमें जो बासीजल पीताहै इत्यादि बचनके अनुसार सूर्योदय के कुछ पूर्वकाल में जल पीना उत्तमहै शास्त्रान्तरमें भी कहागयाहै कि सूर्योदय के पूर्व आठ चुल्लू जल पिये क्योंकि इससे बायु पित्त और कफ के दोषदूर होकर सुख पूर्वक सौवर्ष तक जीताहै यहां बासी जल का पीना भोजके वचनके अनुसार लिया गयाहै रात्रि के अन्तमें जल पीनेसे ब वासीर सूजन संग्रहणी ज्वर उदर रोग और वृद्धावस्था कुष्ठ मेदरोग मूत्राघात रक्तपित्त कान गला शिर तथा नितंबोंकी पीड़ा नेत्र रोग और मनुष्योंके बातपित्त कफ और घाव से उत्पन्न हुए संपूर्ण रोगनाश को प्राप्त होते हैं ॥ ९७ ॥

विगतघननिशीथेप्रातरुत्थायनित्यं । पिवतिखलुनरोयोघ्राणरन्ध्रेणवारि ॥ सभवतिमतिपूर्णश्चक्षुषातार्क्ष्यतुल्यो बलिपलितविहीनःसर्वरोगैर्विमुक्तः ॥ निशीथोऽत्रनिशान्धकारः पातव्यंनासयानीरं प्रसृतित्रयमात्रया।व्यंगंवलीपलितघ्नंपीनसंवैस्वर्यकाशशोथहरम् ॥ रजनीक्षयेम्बुनस्यंरसायनंदृष्टिसञ्जनम् ॥ स्नेहेपीतेक्षतेशुद्धावाध्मानेस्तिमितोदरे । हिक्कायांकफवातोत्थे व्याधौतद्वारिवारयेत् ॥ तद्वारिनासापेयम् ॥ ९८ ॥

रात्रिके अन्तमें अंधकारके दूर होजाने पर प्रातः काल उठकर जो मनुष्य नासिकाके छिद्र से जल पीताहै वह अधिक बुद्धि वाला और गरुड़के समान दृष्टिवाला होताहै झुर्री बालोंकी श्वेतता और संपूर्ण रोगों से छूटजाताहै नासिका के द्वारा जल पीनेकी मात्रा तीन चुल्लूहै रात्रिके अन्तमें नासिका के द्वारा जल पीने से व्यंग झुर्री बालों की श्वेतता पीनस स्वरभंग खांसी तथा सूजन यह सब नाश होतेहैं और यह रसायन और दृष्टि का अत्यन्त उपकारक है स्नेहपीने में क्षतरोग में बमन और बिरेचन करने में अफरा में पेटके भारीपने में हिचकी में और कफ बात से उत्पन्न हुए रोगों में नासिका से जल न पीवे ॥ ९८ ॥

अथर्त्तुचर्य्या ॥

चयकोपशमायस्मिन्दोषाणांसम्भवन्तिहि।ऋतुषट्कंतदाख्यातंरबेराशिषुसंक्रमात् ॥ ग्रीष्मोमेषवृषौप्रोक्तःप्रावृण्मिथुनकर्कटौ । सिंहकन्येस्मृतावर्षातुलावृश्चिकयोःशरत् ॥ धनुर्ग्राहीचहेमन्तोवसन्तःकुम्भमीनयोः । मेषवृषौरविणासंक्रान्तौ । एवंमिथुनकर्कटावित्यादि अन्येतु शिशिरःपुष्पसमयोग्रीष्मोवर्षाशराद्विमाः । माघादिमासयुग्मैःस्युर्ऋतवः षट्क्रमादमी ॥ गंगायादक्षिणेदेशे वृष्टेर्बहुलभावतःउभौमुनिभिराख्यातौप्रावृट्वर्षाभिधावृतू ॥ ९९ ॥

ऋतुचर्य्या ॥

बातादिक दोषोंका संचय कोप और शान्ति जिनमें होतेहैं वह छः ऋतु सूर्य्यके राशियोंमें बदलने से होती हैं मेष और वृषके सूर्य्य में ग्रीष्म मिथुन और कर्कके सूर्य्य में प्रावृट् सिंह और कन्याके सूर्य्य

में बर्षा तुला और वृश्चिकमें शरद धन और मकरमें हेमन्त और कुंभ और मीनके सूर्य्य में बसन्त ऋतुहोतीहै और किसी का मत यहहै कि माघको आदि लेकर दो २ महीने के क्रमसे शिशिर बसन्त ग्रीष्म वर्षा शरद और हेमन्त यह छःऋतु होतीहैं गंगाजीके दक्षिण देशमें वृष्टिके बहुतहोनेके कारण मुनि लोगोंने प्रावृट् और बर्षा दो ऋतु कहीहैं गंगा जीके उत्तरके देश में शीत के बहुत होने के कारण हेमंत और शिशिर नाम दो ऋतु कहीगई हैं ॥ ९९

उत्तरायणमाद्यैस्तैःपरैःस्याद्दक्षिणायनम्।आद्यमुष्णंबलहरंततोऽन्यद्बलदंहिमम् १००

पहली तीनऋतुओं में उत्तरायण और पिछली तीनऋतुओं में दक्षिणायन उत्तरायण उष्ण और बलका नाशक होता है और दक्षिणायन बलका देनेवाला और शीतल होता है, ॥ १०० ॥

हेमन्तःशीतलःस्निग्धःस्वादुर्जठरवन्हिकृत् । शिशिरःशीतलोऽतीवरूक्षोवाताग्नि बर्द्धनः ॥ हेमन्तःस्वादुःप्रायेणद्रव्येषुस्वादूरसजनकःएवमन्यत्रापिबोद्धव्यम् ॥ वसन्ता मधुरःस्निग्धःश्लेष्मवृद्धिकरश्चसः । ग्रीष्मोरूक्षोऽतिकटुकःपित्तकृत्कफनाशनः ॥ वर्षा शीताविदाहिन्यो वह्निमान्द्यानिलप्रदाः । शरदुष्णापित्तकर्त्रीनृणांमध्यबलावहा ॥ १०१॥

हेमन्तऋतु स्निग्ध-शीतल प्रायः संपूर्ण बस्तुओंमें मधुरताकी उत्पन्न करने वाली और जठराग्नि की दीप्ति करनेवाली होती है' शिशिर ऋतु शीतल अत्यन्त रूखीऔर वायुतथा अग्निकी बढ़ानेवाली होती है, बसन्त ऋतु प्रायःसंपूर्ण बस्तुओंमें मधुरता उत्पन्न करनेवाली स्निग्ध और कफवर्द्धकहोती है- ग्रीष्मऋतु रूखी प्रायः संपूर्ण बस्तुओंमें अत्यन्त कटुता उत्पन्न करनेवाली पित्तबर्द्धक और कफ-नाशक होती है, बर्षाऋतु शीतल विदाह (अन्नका कच्चा पक्का पकना) तथा मंदाग्नि करनेवाली और बायुबर्द्धक होती है शरद ऋतु उष्ण पित्तबर्द्धकऔरमनुष्योंको कुछबलदेनेवालीहोती है,॥१०१॥

त्रयप्रकोपोपशमा वायोर्ग्रीष्मादिषुत्रिषु । वर्षादिषुचपित्तस्यश्लेष्मणःशिशिरादिषु॥ चीयतेलघुरूक्षाभिरौषधीभिःसमीरणः । तद्विधस्तद्विधेदेहेकालस्योष्णान्नकुप्यति ॥ तुल्येऽपिकालेस्निग्धेतद्विधेरूक्षोलघुश्चतद्विधेरूक्षेलघौच । अद्भिरम्लविपाकाभिरौषधी भिश्चतादृशम् । पित्तंयातिचयंकोपंनतुकालस्यशैत्यतः ॥ तादृशम्अम्लविपाकम् ॥ चीयतेस्निग्धशीताभिरुदकौषधिभिःकफः।तुल्येचकालेदेहेचक्लिन्नत्वान्नप्रकुप्यतितुल्ये ऽपिकालेस्निग्धेशीतलेच क्लिन्नत्वात्देहेशुष्कत्वात्।हिमेयातिशमंपित्तंवायु श्लेष्माचचीयते । सवायुःशिशिरेकोपंयात्येवोपहतःकफः ॥ हेमन्तेसञ्चितःश्लेष्माशिशिरेत्वतिचीयते । शीतस्निग्धगुरुद्रव्यैःशैत्यक्लिन्नोनकुप्यति ॥ क्लिन्नःकठिनीभूतः।इतिकालस्वभावोऽयमाहारादिवशात्पुनः। चयादीन्यान्तिसद्योऽपिदोषाःकालेविशेषतः ॥ १०२ ॥

ग्रीष्मादिक तीनऋतुओं में वायुका संचय , कोप तथा शान्ति क्रमसे होती है बर्षा आदिकतीन ऋतुओं में पित्तका संचय कोप तथा शान्ति क्रमसे होती है और शिशिर आदिक तीन ऋतुओं में कफका संचय, कोपतथा शान्ति क्रमसे होती है लघु और रूक्षऔषधियोंके सेवन से बायुका संचय होता है लघु और रुक्ष गुण युक्त बायु लघु और रूखे शरीर में कालकी उष्णता से कोप को नहीं प्राप्तहोती है, खट्टे पाकवाले जल और औषधियोंसे खट्टे पाकवाला पित्त इकट्ठा होजाता है और समयकी शीतलता से कोप को प्राप्त नहींहोता, स्निग्ध और शीतल जल तथा औषधियों से

कफका संचय होता है वहकफ स्निग्ध और शीतल समय तथा शरीर में शुष्क होजाने के कारण से कोष को नहींप्राप्त होता है हेमन्तऋतुमें पित्तकी शान्ति और वायुतथा श्लेष्माका संचय होताहै शिशिर ऋतु में वह वायु कोपको प्राप्तहोता है और कफ संचित रहता है हेमन्तऋतुमें संचयको प्राप्तहुआ श्लेष्मा शीतल स्निग्ध और भारी द्रव्योंके सेवनसे शीतलता के कारण शिशिर ऋतु में अत्यन्त संचित हुआ सूखजाने से अत्यन्त कोपको नहीं प्राप्त होता है यहतो समयका स्वभाव है फिर आहारादिकोंके कारण से वातादिक दोष तत्काल संचयादिकों को प्राप्त होते हैं परन्तु अपने २ समयमें विशेष करके संचयादि को प्राप्त होते हैं ॥ १०२ ॥

चयकोपसमाः पूर्व्वाह्णे वसन्तस्य लिंगं मध्याह्ने ग्रीष्मस्य अपराह्णे प्रावृषःप्रदोषे वार्षिकम् ॥ शरदमर्द्धरात्रे प्रत्यूषसि हेमन्त मुपलक्षयेत् । एव महोरात्रमपि वर्षामिव शीतोष्ण वर्षादोषोपचय प्रकोपोप शमाः जानीयादिति सुश्रुतः ॥ चयकोपसमादोषा विहाराहारसेवनैः । समानैर्य्यान्त्यकालेऽपि विपरीतैर्विपर्य्ययम्॥समानैःतुल्यैःचयादियो ग्यैरितियावत् । विपर्य्ययंकालेऽपि वैपरीत्यं बोध्यम् ॥ १०३ ॥

सुश्रुतने कहा है कि दिनरात्रि में भी संबतत्सरके समान बसन्तादि ऋतुओं के लक्षण प्रकट होते हैं यह दोषोंके संचय कोप और शान्तिसे जानेजाते हैं अर्थात् प्रातःकाल बसन्तका लक्षण मध्याह्न में ग्रीष्मका लक्षण तीसरे पहर प्रावृट्का लक्षण सांयंकाल में बर्षाका लक्षण अर्द्धरात्रि में शरदका लक्षण और पिछली रात्रि में हेमन्तका लक्षण जानना चाहिये संचय कोप और समता करने वाले आहार बिहारों के सेवनसे समय के बिना भी बातादिक दोष संचय कोप और समता को प्राप्तहोते हैं परन्तु विपरीत आहार बिहारों के सेवनसे समय होनेपर भी बिपरीत फलहोता है ॥ १०३ ॥

एवंचयलक्षणमाहसुश्रुतः ॥

स्वस्थानस्थस्यदोषस्य वृद्धिःस्याच्छ्रावकोष्ठता । पीतावभासतावह्नि मन्दताचांगगौरवम् ॥ आलस्यञ्चयहेतौतु द्वेषश्चचयलक्षणम् । सञ्चयोपहतादोषा लभन्तेनोत्तरांगतिम् ॥ तेतूत्तरासुगतिषु भवन्तिबलवत्तराः । वर्षासुप्रबलोवायु स्तस्मान्मिष्टादयस्त्रयः॥ रसाःसेव्याविशेषेण पवनस्योपशान्तये । (मिष्टादयस्त्रयःमधुराम्ललवणाः) भवेद्वर्षासु वपुषः क्लिन्नत्वं यद्विशेषतः । तत्क्लेशशान्तयेसेव्या अपिकट्वादयस्त्रयः ॥ (कट्वादयस्त्रयःकटुतिक्तकषाया) ॥ १०४ ॥

सुश्रुतका कहाहुआ संचयका लक्षण ॥

यदि अपने स्थानमें स्थित हुआ दोष वृद्धिको प्राप्तहोजाय तो कोष्ठबद्धता- शरीरका पीलापन- मंदाग्नि- शरीरमें भारीपना और आलस्यहोताहै और दोषके संचय होनेपर औषधि करनेसे कोप नहीं होता और कोप होनेपर वह अत्यन्त बलवान् होजातेहैं बर्षाऋतुमें वायुप्रबल होताहै इसकारण से मधुर खट्टा और लवण द्रव्योंका अधिकसेवन करनाचाहिये इनसे वायुकी शांतिहोतीहै और उसी ऋतु में शरीरमें गीलापन होताहै उसकी शान्तिके लिये कटु तिक्त और कषाय रसका सेवन करना चाहिये ॥ १०४ ॥

स्वेदनंमर्द्दनंसेव्यंदध्युष्णंजांगलामिषम् । गोधूमाःशालयोमाषाजलंकौपंजलंच्युतम् ॥ नभजेत्पूर्वपवनं वृष्टिंघर्मंहिमंश्रमम् । नदीतीरंदिवास्वप्नं रूक्षंनित्यञ्चमैथुनम्॥ सर्पिःस्वादुकषायतिक्तकरसा यच्छीतलंयल्लघु । क्षीरंस्वच्छसितेक्षवःपटुरसः स्वल्पंपलंजांगलम् ॥ गोधूमायवमुद्गशालिसहिता नादेयमंशूदकम् । चन्द्रश्चन्दनमिन्दुरा जिरजनी माल्यंपटोनिर्मलः ॥ विश्रामःसुहृदांगणेषुमधुरा वाचःसरःक्रीड़नम् । पित्तानां चविरेचनंबलवतो युक्तंशिरामोक्षणम् ॥ एतान्यत्रघनावसानसमये पथ्यानिमुञ्चेद्दधि । व्यायामाम्लकटूष्णतीक्ष्णदिवसस्वप्नंहिमञ्चातपम्॥ १०५ ॥

पसीने के उत्पन्नकरने वाली बस्तु अंग मर्द्दन दधि- उष्णबस्तु और जांगल जीवोंका मांस- गेहूं चावल- उर्द- कूपका जल और टपकायाहुआ जल- यह पदार्थ बर्षाऋतुमें सेवनकरने चाहिये पूर्व की वायु- वृष्टि, धूप, शीत, श्रम, नदीका तट दिनका सोना- रूखीबस्तु और नित्य मैथुन इन सब को बर्षा में सेवन न करै- घृत, मधुर- कषाय तथा तिक्त रस युक्तद्रव्य, शीतल और हलकी बस्तुदुग्ध स्वच्छश्वेत वर्णयुक्त शर्करादिक- लवण, थोड़ा जांगल जीवोंका मांस, गेहूं, जौ, मूंग, चावल, नदीका जल, अंशूदक, कपूर, रक्त चन्दन, रात्रि में चन्द्रमाकी किरणें, मालाका धारण, निर्मल बस्त्र बिश्राम, मित्रोंके साथ मधुर भाषण, तड़ागों में कीड़ा, अधिक पित्त वालों को बिरेचन और बलवान पुरुषोंको फस्त लेना यह सम्पूर्ण बर्षाके अन्त में हितकारकहैं और दही, व्यायाम, खट्टी, कटु,उष्ण तथा तीक्ष्ण बस्तु दिन में सोना, शीत और धूप यह बर्षाके अन्तमें त्यागदेना चाहिये ॥ १०५ ॥

अंशूदक लक्षण माह ।

दिवसेऽर्ककरैर्जुष्टं निशिशीतकरांशुभिः । ज्ञेयमंशूदकंनाम स्निग्धंदोषत्रयापहम् ॥ अत्रसमग्र प्राप्त्यर्थं दिवस दिवापादद्वये निशापादंच । चन्द्रः कर्पूरः ॥ १०६ ॥

अंशूदकका लक्षण ॥

जो जल दिनभर में सूर्य्यकी किरणों से और रात्रि भरमें चन्द्रमाकी किरणों से संयुक्त होताहै वह अंशूदक कहलाताहै यह अंशूदक स्निग्ध और त्रिदोष नाशकहोताहै ॥ १०६ ॥

इक्षवःशालयोमुद्गा सरोऽम्भःक्वथितंपयःशरद्येतानिपथ्यानि प्रदोषेचेंदुरश्मयः १०७॥

ईख, चावल, मूंग, तलावका जल औटादूध और सायंकाल के समय चन्द्रमाकी किरणें यहसब शरदऋतुमें सेवन करने चाहिये ॥ १०७ ॥

प्रातर्भोजनमम्लमिष्टलवणानभ्यंगघर्म्मश्रमान् । गोधूमेक्षवशालिमाषपिशितं पिष्टंनवान्नंतिलान् ॥ कस्तूरीवरकुंकुमागुरुयुता नुष्णाम्बुशौचंतथा । स्निग्धंस्त्रीषुसुखंगुरूष्णवसनं सेवेतहेमन्तके ॥ १०८ ॥

हेमन्तऋतु में प्रातःकाल भोजन खट्टी, मधुर और लवण रसयुक्त बस्तु तैलादिका मर्द्दन, धूप व्यायाम गेहूं, शर्करादि इक्षुसंबंधी बस्तु, चावल उरद मांस पिट्टीकी बस्तु, नबीन अन्न, तिल,कस्तूरी गुग्गुल केशर, अगर, उष्ण जलसे शौच चिकनी बस्तु, स्त्री संभोग और भारी तथा उष्ण बस्त्र सेवन करने चाहिये ॥ १०८

शिशिरेशीतमधिकंरौक्ष्यंवादानकालजम्।विशेषतस्ततस्तत्रहेमन्तस्यमतोविधिः १०९॥

शिशिरऋतुमें हेमन्तकी अपेक्षा शीत अधिक होताहै और कालके स्वभावसे रूक्षता अधिकहोती है इस कारण इस ऋतु में हेमन्तऋतु की कही हुई बिधि अधिकतासे करे ॥ १०९ ॥

वान्तिंनस्यमथाभयाञ्चमधुना व्यायाममुद्वर्त्तनम् । संसेवेतमधौकफघ्नकवलं शूल्यं पलंजांगलम् ॥ गोधूमान्बहुशालिभेदसहिता न्मुद्गान्यवान्षष्टिकान् । लेपश्चन्दन कुंकुमागुरुकृतं रूक्षंकटूष्णंलघु ॥ मिष्टमम्लंदधिस्निग्धं दिवास्वप्नञ्चदुर्ज्जरम् । अव श्यायमपिप्राज्ञो वसन्तेपरिवर्ज्जयेत् ॥ स्वादुस्निग्धहिमंलघुद्रवमयन्द्रव्यंरसालांसिता म् । सक्तुक्षीरदशांगुलानिसितया शालिंरसंमांसजम् ॥ शीतांशुंशयनन्दिवामलयजं शी तम्पयःपानकम् । सेवेतोष्णदिनेत्यजेत्तुकटुक क्षाराम्लंघर्म्मश्रमान् ॥ ऋतुष्वेषुयएतै स्तु विधिभिर्वर्त्ततेनरः । दोषान्नृतुकृतान्नैव लभते स कदाचन ॥ ११० ॥

इतिश्रीलटकनमिश्रतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितेभावप्रकाशे
दिनचर्य्यर्त्तुप्रकरणञ्चतुर्थम् ॥ ४ ॥

वमन- हुलास- सहतसंयुक्तहड़- व्ययाम- उबटन- कफ नाशकग्रास लोहकी सलाकासे सेकाहुआ जांगलजीवोंका मांस (कबाब) गेंहू- बहुतप्रकारके चावल मूंग- जौ- साठी चन्दन केशर तथा अगरका लेप- और रूखी- कडवी- उष्ण तथा हलकी बस्तु यह सब बसन्त ऋतुमें हितकारीहैं और मधुर तथा खट्टी बस्तु दही- चिकनीबस्तु- दिनका सोना- कठिनतासे पचने वाली बस्तु और शीत यहसब बसन्त ऋतुमें त्यागदेना चाहिये- मधुर- चिकनी- शीतल- हल्की तथा पिघली हुई बस्तु शिखरन- शक्कर- सत्तू- दुग्ध शक्करके साथ खरबूजे- चावल- मांसका रस- कपूर दिनकासोना- चन्दन शीतल जल और पना यह सब ग्रीष्म ऋतुमें सेवन करना चाहिये- कटुखार तथा खट्टी बस्तु धूप और श्रम यहसब ग्रीष्म ऋतुमें त्याग देना चाहिये और जो मनुष्य इनऋतुओं में उक्त विधियोंका वर्त्ताव करताहै उसको ऋतुओंके दोष कभी नहीं होते ॥ ११० ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमान्मिश्रभावाविरचितभावप्रकाशस्यभाषानुवादे
दिनचर्य्यर्तचर्य्याप्रकरणंचतुर्थम् ॥ ४ ॥

अथ व्याधेर्लक्षणम् । तत्रवाग्भटः ॥

रोगस्तुदोषवैषम्यं दोषसाम्यमरोगता । रोगादुःखस्यदातारो ज्वरप्रभृतयोहिते ॥ तेचस्वाभाविकाःकेचित्केचिदागन्तवःस्मृताः । मानसाःकेचिदाख्याताः कथिताःकेऽपि कायिकाः ॥ (तत्रस्वाभाविकाः शरीर स्वभावादेवजाताः) क्षुत्पिपासा सुषुप्त्याच जरा मृत्युप्रभृतयः अथवा स्व स्व भाविका दुत्पत्तेर्जाताः स्वाभाविकाः सहजा इति यावत् । तच जन्मान्धत्वादयः आगन्तवोऽभिघातादि जनिताः । अथवा जन्मोत्तर भाविनः ।

कामक्रोध लोभमोहभयाभिमान दैन्य पैशुन्यशोक विषादेर्ष्या सूयामात्सर्य्य प्रभृतयः अथवा उन्मादापस्मारमूर्च्छाभ्रममोह तमः संन्यासप्रभृतयः । कायिकाः पाण्डुरोग प्रभृतयः ॥ १ ॥

वाग्भटकाकहाहुआ व्याधिका लक्षण ॥

दोषोंकी विषमता रोगहै और समता रोगका नहोनाहै मनुष्योंको दुःख देने वाले ज्वर आदिक रोगकहाते हैं- वह रोग स्वाभाविक- आगन्तुक- मानसिक और कायिक इननामोंसे चारप्रकारके हैं- इनमें से जोरोग स्वभावसे उत्पन्न होते हैं वह स्वाभाविकहैं जैसे क्षुधा पिपासा- निद्रा- वृद्धता और मृत्यु आदिक अथवा जो रोगजन्महीसे उत्पन्न होतेहैं वह स्वाभाविक अर्थात् सहजरोग कहलाते हैं जैसे जन्मांधतादिक होते हैं-चोट लगनेसे उत्पन्न अथवा जन्मान्तरमें होनेवाले आगन्तुक कहलाते हैं काम-क्रोध- लोभ- मोह- भय- अभिमान- दीनता- चुगली, शोक- विषाद ईर्ष्या, असूया (गुणोंमें- दोषलगाना) और मत्सरता (पराई सम्पत्तिकान सहना)आदि अथवा उन्माद- मृगी मूर्च्छा-भ्रम मोह अन्धकार और अचेतता आदिक मानसिक रोगहैं और पांडु आदिक रोगोंको कायिक रोग कहते हैं॥१॥

कर्म्मजाःकथिताः केचिद्दोषजाः सन्तिचापरे । कर्म्मदोषोद्भवाश्चान्ये व्याधय स्त्रिविधाः स्मृताः ॥ तत्र कर्म्मजाः व्याधयः । यत्प्राक्तनन्दुष्कर्मप्रबलंकेवल भोगनाश्यम् । प्रायश्चित्तनाश्यं वा ततोजाताः नतुदुष्ट वातादिदोषेण जनितास्तथा ॥ यथा शास्त्रन्तु निर्णीतो यथाव्याधिचिकित्सितः । नशमंयातियोव्याधिः सज्ञेयःकर्म्मजोबुधैः ॥ (दोष जाः । मिथ्याहारविहारप्रकुपितवातपित्तकफजाः) ॥ २ ॥

और वह रोग कर्मज दोषज और कर्म दोषज इसक्रमसे तीनप्रकारके होते हैं पूर्वजन्म में किये हुए दुष्कर्मोंके द्वारा उत्पन्न हुए रोग केवल भोगकरनेसे अथवा प्रायश्चित्तके द्वारा नाशहोतेहैं यही कर्मज रोग कहलातेहैं यह वातादिक की दुष्टतासे नहीं उत्पन्न होतेहैं और कहा भी हैकि शास्त्रके अनुसार निर्णयकरके विधिपूर्वक चिकित्सा करने पर भीजो रोग शान्तनहीं होताहै उसको पंडित लोगकर्मज कहतेहैं- नियमके विना आहार बिहारादिकों के द्वाराकोपको प्राप्त होने वाले बायु पित्त और कफसे जो रोग उत्पन्न होतेहैं वह दोषज कहलाते हैं ॥ २ ॥

ननु मिथ्याहारविहारिणामपि प्राक्तन सुकृतेन नैरुज्यं दृश्यतएव । ततो दोषजेष्व पि प्राक्तनं दुष्कर्मैव कारणम् तत्कथं दोषजाइत्युच्यते । दोषजेष्वपि वस्तुतः । आदि कारणंदुष्कर्म वर्त्ततएव किन्तु तत्र मिथ्याहार विहार दूषिता दोषा हेतवो दृश्यन्त इति दोषजा इत्युच्यन्त इति समाधिः ॥ ३ ॥

अबयह सन्देह होता हैकि नियमके विना आहार बिहार करने वालोंको भी पूर्व जन्मके पुण्य के द्वारा नीरोगता देखतेहैं तो दोषों सेभी उत्पन्न हुएरोगोंमें पूर्व जन्मकापापही कारणहै तबदोषज रोगकैसे हो सक्तेहैं इसकासमाधान यहहै कि दोषसे उत्पन्न हुएभी रोगोंमें ठीक २ तो मूलकारण पापहीहै परन्तु नियमके विना आहार बिहारसे कोपको प्राप्तहुए दोषभी उनमें कारण देखेजाते हैं इसलिये दोषज कहने में कोई हानि नहीं है ॥ ३ ॥

कर्मदोषोद्भवाः । स्वल्पदोषागरीयांस्तेज्ञेयाःकर्म्मदोषजाः ॥ अत्र कारणं दुष्कर्म प्रबलंयतो दोषाल्पत्वेऽपि व्याधेर्गरीयस्त्वन्तत्कर्म्म क्षयादेव क्षीणं भवति । दोषाःस्वल्पा अपि निदानत्वे नोक्ता दृश्यन्त एवेति दोषाणां कारणता मन्यन्त इति । कर्म्मक्षयात् कर्म्मकृता दोषजाः स्वस्वभेषजैः । कर्म्मदोषोद्भवायान्ति कर्म्मदोषक्षयाक्षयम् ॥ दोषजाः स्व स्व भेषजैरिति दोषजेष्वादिकारणं । दुष्कर्म्म तद्भेषजार्थं द्रव्यक्षयादि जनित दुःख भोगेन कटुतिक्तकषायाद्य हृद्य भक्षणादिजनितदुःख भोगे न च क्षयं यांति । शेषा दुष्टा हेतवो दोषास्ते स्वस्व भेषजैः क्षयं यान्तीत्यर्थः ॥ ४ ॥

जो दोष थोडे बिकारको प्राप्तहोवें और रोग अत्यन्त प्रबलहोवें तो कर्म दोषज रोग जानना चाहिये इनका कारणतो प्रबल पापहीहै क्योंकि दोषोंके थोडे होनेपर भी रोगकी प्रबलता होतीहै और वह कर्मके नाशसेही नाशको प्राप्तहोताहै थोड़ेदोषभी रोगकी उत्पत्ति के कारण कहेगये देखेजाते हैं इस्से दोषों को भी कारण मानतेहैं और इसी हेतुसे यह कर्म दोषजरोग कहातेहैं कर्मके नाशसे कर्म्मजरोग, अपनी २ औषधियों से दोषजरोग और कर्म तथा दोषके नाश से कर्मदोषजरोग नाशको पातेहैं यहां अपनी२औषधियोंसे दोषजरोग शान्तहोतेहैं इसका यहतात्पर्य्य है कि दोषजरोगोंका मूल कारण दुष्कर्महै वह औषधि के निमित्त खर्च होने वाले धनके दुःख भोगनेसे और कडवे तिक्त तथा कषाय आदिक मनके न रुचनेवाले पदार्थों के भोजन के द्वारा उत्पन्नहुये दुःखके भोगने से नाशको प्राप्तहोताहै फिर अपनी२ औषधियों के द्वारा विकारको प्राप्तरोगोंके प्रत्यक्ष कारण दोषभी नाशको प्राप्तहोतेहैं ॥ ४ ॥

साध्यायाप्याअसाध्याश्च व्याधयस्त्रिविधाःस्मृताः । सुखसाध्यःकष्टसाध्यो द्विविधः साध्यउच्यते ॥ ५ ॥

साध्य, याप्य और असाध्य यह तीनप्रकार के रोगहोतेहैं इन में से सुखसाध्य और कष्टसाध्य इनदो भेदों से साध्य दोप्रकारका होताहै ॥ ५ ॥

याप्य लक्षण माह ।

यापनीयन्तुतंविद्यात् क्रियाधारयतेहियम् । क्रियायांतुनिवृत्तायां सद्योयश्चविनश्यति ॥ प्राप्तक्रियाधारयति सुखिनंयाप्यमातुरम् । प्रपतिष्यदिवागारं स्तम्भोयत्नेन योजितः ॥ साध्यायाप्यत्वमायान्ति याप्यश्चासाध्यतान्तथा । घ्नन्तिप्राणानसाध्यास्तु नराणामक्रियावताम् ॥ अक्रियावतां चिकित्सा रहितानाम् ॥ ६ ॥

याप्यका लक्षण ॥

जो रोग चिकित्सा के द्वारा रुकताहै और बिना चिकित्सा के प्राणों को नाश करहताहै वह याप्य है जैसे यत्न पूर्वक अड़वार के लगानेसे गिरताहुआ घर रुकजाताहै इसी प्रकार योग्य दवाके द्वारा इलाज करने से याप्यरोगी भी सुख पूर्वक शरीर को धारण करताहै इलाज के बिना मनुष्यों के साध्यरोग याप्यहोजातेहैं याप्यअसाध्य होजातेहैं और असाध्य रोग प्राणों को नाशकरतेहैं ॥ ६ ॥

अथोपद्रवस्य लक्षणम् ॥

रोगारम्भकदोषस्य प्रकोपादुपजायते । योऽन्योविकारःसबुधै रुपद्रवइहोदितः ॥७॥

उपद्रवका लक्षण ॥

रोगके उत्पन्नकरने वाले दोषके कोप से जो अन्यविकार उत्पन्न होते हैं उनको पण्डित लोग उपद्रव कहतेहैं ॥ ७ ॥

अथारिष्टस्य लक्षणमाह ॥

रोगिणोमरणंयस्मादवश्यम्भाविलक्ष्यते।तल्लक्षणमरिष्टंस्याद्रिष्टंचापितदुच्यते॥ ८॥

अरिष्टका लक्षण ॥

जिनलक्षणों से रोगी की मृत्युका निश्चयहोताहै उनको अरिष्ट वारिष्ट भी कहतेहैं ॥ ८ ॥

अथ चिकित्साया लक्षणमाह ॥

याक्रियाव्याधिहरणी साचिकित्सानिगद्यते । दोषधातुमलानांया साम्यकृतसैवरो गहृत् ॥ क्रियात्रकर्म्म व्याधिर्हन्यतेऽनयेति व्याधिहरणी करणाधि करणयोश्चेति सूत्रेण करणार्थेल्युट् तथाच । याभिःक्रियाभिर्जायन्ते शरीरेधातवःसमाः ॥ साचिकित्साविकाराणां कर्म्मतद्भिषजाम्मतम् । याह्युदीर्णंशमयति नान्यंव्याधिंकरोतिच ॥ साक्रियान तुयाव्याधिं हरत्यन्यमुदीरयेत् । (क्रियात्र चिकित्सा) तथा चामरसिंहः । आरम्भीनिष्कृतिःशिक्षा पूजनंसम्प्रधारणम् । उपायःकर्म्मचेष्टाच चिकित्साचनवक्रिया इति ॥९॥

चिकित्साका लक्षण ॥

जो क्रियारोग की नाशकरनेवाली और दोष धातु तथा मलोंकी समता करनेवाली होती है उसी को चिकित्सा (इलाज) कहतेहैं जिसक्रियाके द्वारा शरीरकी सबधातु समताको प्राप्तहोवें उसी क्रियाको रोगों की चिकित्सा कहतेहैं और यही चिकित्सा बैद्य लोगोंको पसन्दहै जिस क्रियाके द्वारा उत्पन्न हुआ रोग शान्तहोताहै और दूसरा कोई रोग नहीं उत्पन्न होताहै उसीको चिकित्सा (मालजा) कहतेहैं और जिस्से रोग की कमीहो और दूसरा पैदाहो उसको चिकित्सा नहीं कहतेहैं यहां क्रिया शब्दका अर्थ चिकित्सा (इलाज) है जैसा कि अमर सिंहने कहाहै कि आरंभ, निष्कृति- शिक्षा, पूजन, संप्रधारण, उपाय, कर्म, चेष्टा और चिकित्सा यह नौ क्रियाशब्द के अर्थ हैं ॥ ९ ॥

अथ चिकित्सा विध्युपदेशः ॥

जातमात्रःचिकित्स्यःस्यान्नोपेक्ष्योऽल्पतयागदः । वह्निशत्रुविषै स्तुल्यःस्वल्पोऽपि विकरोत्यसौ ॥ रोगमादौपरीक्षेत ततोऽनन्तरमौषधम् । ततःकर्म्मभिषक् पश्चात्ज्ञानपूर्वंसमाचरेत् ॥ अयमर्थः भिषक्आदौरोगं परीक्षेतविचारयेत् । ततःपश्चाद्रोगौषधविचारानन्तरं ज्ञानपूर्वंसावधानोनत्ववज्ञायकर्म्म चिकित्सामौषधदानादिरूपं समाचरेदित्यर्थः ॥ १० ॥

चिकित्सा विधिका उपदेश ॥

रोगके उत्पन्न होतेही चिकित्सा करनी योग्य है थोडासमझकर उसकी उपेच्छा (लापरवाही)न

करना चाहिये क्योंकि अग्नि शत्रु और बिषके समान थोडाभी रोग दुखदायी होजाता है वैद्यप्र रोगकी परीक्षाकरे इसके पीछे औषधिकोबिचारे तदनन्तर सावधानीसे चिकित्साकाप्रारंभकरे॥१०॥

रोगाज्ञानेन चिकित्साकरणेदोषमाह ॥

यस्तुरोगमविज्ञायकर्म्माण्यारभतेभिषक् । अप्यौषधविधानज्ञस्तस्य सिद्धिर्यदृच्छया ॥ स्वैरितयासिद्धिर्भवति नापिभवातीत्यर्थः (अन्यच्च) भेषजंकेवलंकर्त्तुंयोजानाति न चामयम् ॥ वैद्यकर्म्मसचेत्कुर्य्याद्वधहार्मतिराज्ञतः ॥ ११ ॥

रोगके बिना जाने चिकित्साकरने में दोष ॥

जो बैद्य रोगको बिना जाने,चिकित्साका प्रारंभ करता है वह चाहे औषधियों के विधान को जानताभी हो परन्तु आराम होने और नहोने का निश्चय नहींहोता और भी कहा हुआ है कि जो केवल औषधि करना जानता है और रोगको नहीं पहचान सक्ता है वह जो चिकित्सा करे तो राजा को उचितहै कि उसका बधकरे ॥ ११ ॥

रोगज्ञाने भेषजाज्ञाने दोषमाह ॥

यस्तुकेवलरोगज्ञो भेषजेष्वविचक्षणः । तंवैद्यंप्राप्यरोगीस्याद्यथा नौर्नाविकंविना ॥ नाविकं कर्णधारंविनायथानौसङ्कटेपततितथारोगीत्यर्थः (अन्यच्च) यस्तुकेवलशास्त्रज्ञः क्रियास्वकुशलोभिषक् । समुह्यत्यातुरंप्राप्ययथाभीरुरिवाहवम् ॥ १२ ॥

रोगको जानकर के भी औषधि के न जानने में दोष ॥

जो केवल रोगों को जानताहै और औषधियों को नहीं जानता उसकी औषधि करनेसे रोगी मल्लाह रहित नौकाके समान विपत्ति में पड़ताहै और भी कहाहुआ है कि जो बैद्य केवल शास्त्र जानताहै और क्रिया में चतुर नहीं है वह युद्ध में डरपोक के समान रोगी को पाकर मोहको प्राप्तहोता है ॥ १२ ॥

रोगौषधयोर्ज्ञाने गुणमाह ॥

यस्तुरोगविशेषज्ञःसर्वभैषजकोविदः । देशकालविभागज्ञस्तस्य सिद्धिर्नसंशयः ॥ आदावन्तेरुजांज्ञाने प्रयतेतचिकित्सकः । भेषजानांविधानेन ततःकुर्य्याच्चिकित्सितम् ॥ चिकित्सितमित्यत्रभावेक्तः ॥ १३ ॥

रोग और औषधि दोनों के जाननेमें गुण ॥

जो संपूर्ण रोग तथा औषधियों को जानताहै और देश तथा कालके विभागको भी जानताहै उसकी औषधि निसन्देह सफलहोतीहै, बैद्य प्रथम आदि से अन्ततकरोग के जाननेमें यत्न करे फिर औषधियोंके बिधान पूर्वक चिकित्साकरे ॥ १३ ॥

विकाराणामकुशलोनजिह्रीयात्कदाचनानहिसर्वविकाराणांनामतोऽस्तिध्रुवास्थितिः ॥ नजिह्रीयात् नलज्जेत् । ध्रुवानियता ॥ नास्तिरोगोविनादोषैर्यस्मात्तस्माच्चिकित्सकः । अनुक्तानामपिदोषाणांलिंगैर्व्याधिमुपाचरेत् ॥ येनकुर्वन्त्यसाध्यानांचिकित्सांतेभिषग्वराः । अतोवैद्यैःश्रमःकार्य्यःसाध्यासाध्यपरीक्षणे ॥ रोगज्ञानोपायाअग्रेवक्ष्यन्ते ॥ १४ ॥

संपूर्ण रोगोंका नामके जाने विना निश्चयकरने में बैद्यको लज्जा नहीं करनी चाहिये क्योंकि सम्पूर्ण रोगों के नाम निश्चित नहीं हैं दोषों के कोपके बिना रोगकी उत्पत्ति नहीं होती इस लिये रोगके नामको बिनाजाने भी वातादिदोषों के लक्षणसे चिकित्सा करनी चाहिये जो वैद्य असाध्य रोगोंकी चिकित्सा नहीं करतेहैं वह श्रेष्ठहैं इस्से बैद्यों को साध्यासाध्य जानने में श्रमकरना चाहिये, रोगों के जानने के उपाय आगे कहेहैं ॥ १४ ॥

शीतेशीतप्रतीकारमुष्णेतूष्णनिवारणम् । कृत्वाकुर्य्यात्क्रियां प्राप्तांक्रियाकालंनहापयेत् ॥ अप्राप्तेवाक्रियाकालेप्राप्ते वानक्रियाकृता । क्रियाहीनातिरिक्ताच साध्येष्वथन सिद्ध्यति (अयमर्थः) कालेचिकित्साऽवसरे । अप्राप्तेऽनागते ॥ याक्रियाचिकित्सा यथाज्वरेजीर्णतामप्राप्ते तरुणएवकषायदानक्रियानसिद्ध्यति।याचक्रियाचिकित्सावसरे प्राप्तेनकृत्वा । अर्थात्पश्चात्कृता यथादाहेकथञ्चिच्छान्तेपश्चाच्छीतलानुलेपनादि क्रिया । तथाहीनातिरिक्ताचक्रियासाध्येष्वपिनसिद्ध्यति॥ १५ ॥

शीतमें शीतलताका निवारण और उष्णरोग में उष्णताका निवारण करके चिकित्साका समय प्राप्तहोनेपर चिकित्साकरे उसके समय को न जानेदे चिकित्सा के समय के पहले अथवा पीछे चिकित्साकरने से और थोड़े रोगमें बहुत चिकित्सा तथा बड़ेरोगमें थोड़ी चिकित्सा करने से साध्य रोगभी नहीं आराम होते, ॥ १५ ॥

अतिरिक्तांहीनांचक्रियावर्ज्जयन्नाह ॥

विकारेऽल्पेमहत्कर्म्मक्रियालघ्वीगरीयसी । द्वयमेतदकौशल्यंकौशल्ययुक्तकर्म्मता ॥ क्रियायास्तुगुणालाभे क्रियामन्यांप्रयोजयेत् । पूर्वस्यांशान्तवेगायांनक्रियासङ्करोहितः॥ भिन्नरूपाभिस्तुक्रियाभिः साङ्कर्य्यमपिनदोषाय (यतआह) क्रियाभिस्तुल्यरूपाभिर्न क्रियासङ्करोहितः । ताभिस्तुभिन्नरूपाभिःसाङ्कर्य्यन्नैवदुष्यति (अतएवोक्तम्) लङ्घनं बालुकास्वेदो नस्यंनिष्ठीवनंतथा । अवलेहोऽञ्जनञ्चापि प्राक्प्रयोज्यंत्रिदोषजे ॥ ज्वर इतिशेषः ॥ १६ ॥

अधिक और न्यून चिकित्साका निषेध ॥

थोड़ेरोग में बड़ीक्रिया और बड़ेरोगमें थोड़ीक्रिया वह दोनों निषिद्ध हैं और युक्ति पूर्वक योग्य क्रियाकरना हितकारी है- एकक्रियाके करनेपर जो उसका कुछ उपकार न होतो उसके वेगके शान्त होनेपर दूसरी क्रिया करे क्योंकि क्रियासंकर (मेल) हितकारी नहींहोता कहा है कि तुल्यरूप वाली क्रियाओंका संकर हितकारी नहीं होता परन्तु भिन्न रूपवाली क्रियाओंका संकर दोषकारी नहीं होता इसीसे कहागया है कित्रिदोषज ज्वरमें लंघन बालुकास्वेद(एकप्रकारका पसीना) हुलास, वमन, अवलेह और अंजनका प्रयोग (इस्तैमाल) करना चाहिये, ॥ १६ ॥

नचैकान्तेननिर्दिष्टेशास्त्रेनिविशतेबुधः । स्वयमप्यत्राभिषजातर्कनीयं चिकित्सता ॥ (यतआह)उत्पद्यतेचसावस्थादोषकालबलम्प्रति । यस्यांकार्य्यमकार्य्यंस्यात्कर्मकार्य्यं विवर्ज्जितंविवर्जितंकर्म्मकर्त्तव्यंभवतीत्यर्थः ॥ १७ ॥

पंडित बैद्य केवल शास्त्रमें कहीहुई बिधिके अनुसार क्रिया नहीं करते औषधि करने के समय वैद्यको अपनी बुद्धि के अनुसार आपभी विचार करलेना चाहिये क्योंकि कहाहुआ है कि दोषकाल और बलकी अवस्थाके अनुसार शास्त्रमेंभी कहीहुई विधि हितकारी नहीं होती है और निषेध की हुई भी बिधि हितकारी होजाती है ॥ १७ ॥

अथ चिकित्सायां फलमाह ॥

क्वचिदर्थःक्वचिन्मैत्री क्वचिद्धर्म्मःक्वचिद्यशः । कर्म्माभ्यासःक्वचिच्चेति चिकित्सानास्तिनिःफलम् ॥ आयुर्व्वेदोदितांयुक्तिं. कुर्व्वाणाविहिताश्चये । पुण्यायुर्बुद्धिसंयुक्ता निरोगाश्चभवन्तिते ॥ नैवकुर्व्वीतलोभेन चिकित्सापुण्यविक्रियम् । ईश्वराणांवसुमतां लिप्सेतार्थन्तुवृत्तये ॥ चिकित्सितंशरीरंयोननिष्क्रीणातिदुर्म्मतिः । सयत्करोतिसुकृतं सर्व्वंतद्भिषगश्नुते ॥ नदेशोमनुजैर्हीनो नमनुष्यानिरामयाः।ततःसर्व्वत्रवैद्यानां सुसिद्धा एववृत्तयः ॥ १८ ॥

चिकित्साका फल ॥

चिकित्सा कभी व्यर्थ नहीं होती कहीं धन लाभ कहीं मित्रता- कहीं धर्म, कहीं यश और कहीं अपने कार्य्य में अभ्यासही होताहै , जो बैद्य आयुर्बेद शास्त्र में कही हुई बिधि के अनुसार चिकित्सा करतेहैं उनके पुण्य तथा आयुकी वृद्धिहोतीहै और शरीर नीरोग होताहै बैद्यलोभसे चिकित्सा रूपी पुण्यको न बेचे और जीविका के निमित्त राजा और धनवानोंसे धन प्राप्त करे, जो दुर्बुद्धि पुरुष चिकित्सा किये हुये शरीरको क्रय (मोललेने की बस्तु) के समान धनदेकर नहीं मोललेताहै उसके सम्पूर्ण पुण्य बैद्यको प्राप्तहोतेहैं- मनुष्योंसे रहित देश नहीं होता और रोग रहित मनुष्य नहीं होता इस्से बैद्योंकी जीविका सर्वत्रहोसक्तीहै ॥ १८ ॥

अस्यचिकित्साया अंगानि ॥

रोगीदूतोभिषग्दीर्घमायुर्द्रव्यंसुसेवकः।सदौषधंचिकित्सायामित्यंगानिबुधाजगुः ॥१९॥

चिकित्साके अंग ॥

रोगी, दूत, वैद्य, दीर्घायु, द्रव्य, अच्छा सेवक और उत्तम औषधि यह पंडित लोगोंने चिकित्सा के अंग कहेहैं ॥ १९ ॥

तत्ररोगिणोलक्षणमाह ॥

रोगोयस्यास्तिरोगीससचिकित्स्यस्तुयादृशः । यादृशश्चा चिकित्स्यो ऽपिवक्ष्यमाणो निशम्यताम् ॥ २० ॥

रोगीका लक्षण ॥

जिसके रोगहो वह रोगी कहावताहै वह चिकित्साके योग्य और अयोग्यदो प्रकारका होताहै ॥ २० ॥

तत्रचिकित्स्यः ॥

निजप्रकृतिवर्णाभ्यां युक्तःसत्वेनचक्षुषा । चिकित्स्योभिषजांरोगी वैद्यभक्तोजितेन्द्रियः ॥ सत्वं व्यसनाभ्युदय क्रियादिष्व विह्वलताकरं तेनयुक्तः । चक्षुषा चक्षुरुपल

क्षितेन । ततो ऽन्येनापीन्द्रियेण चिकित्स्यः रोगान् मोचयितव्यः ॥ (अन्यत्र) आयुष्मान् सत्ववान् साध्यो द्रव्यवान् मित्रवानपि । चिकित्स्योभिषजारोगी वैद्यवाक्यकृदास्तिकः ॥ आयुर्वेदोऽस्तीति मतिर्यस्य । आस्तिकः ॥ २१ ॥

अब इनके लक्षण कहतेहैं वहां चिकित्सा करने योग्य के लक्षण ॥

जो रोगी प्रकृति वर्ण, बल तथा नेत्रादि इन्द्रियों से युक्त और वैद्यका भक्त तथा जितेन्द्री हो उसकी चिकित्सा करनी चाहिये और भी कहाहै कि जो रोगी आयुवाला बलवान्,साध्य, द्रव्यवान् मित्रवान् और बैद्यक शास्त्रमें बिश्वासयुक्त तथा बैद्यका कहनामानने वाला हो उसकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ २१ ॥

अथा चिकित्स्यः ॥

चण्डःसाहसिकोभीरुः कृतघ्नोव्यग्रएवच । शोकाकुलोमुमूर्षुश्च विहीनःकरणैश्च यः ॥ वैरीवैद्यविदग्धश्च श्रद्धाहीनश्चशंकितः । भिषजामविधेयाःस्युर्नोपक्रम्याःभिषग्विधाः ॥ एतानुपाचरन्वैद्योबहून्दोषानवाप्नुयात् । चण्डोऽत्यन्तक्रोधशीलः ॥ साहसिकःअविचार्य्यकारीभीरुर्भयशीलः । कृतघ्नोवैद्यकृतोपकारलोपकः ॥ व्यग्रोव्याकुलः । विहीनःकरणैश्चयःजितेन्द्रियशक्तिरहितः ॥ वैरी न चिकित्स्यःकदाचिद्रोगोद्रेकेअपवादभयात् । वैद्यविदग्धोवैद्यधूर्त्तः ॥ तथाचसुश्रुतः । सनसिद्ध्यतिवैद्यस्तुगृहेयस्यनपूज्यते ॥ शङ्कितोवैद्यविश्वासरहितः । भिषजामविधेयाः ॥ वैद्यवचनाभिधायिनः । भिषग्विधाः वैद्यतुल्याःएतेनोपक्रम्याः ॥ नचिकित्स्याः ॥ २२ ॥

चिकित्सा के अयोग्य वालेके लक्षण ॥

जो रोगी अत्यन्त क्रोधी बिना विचारे कार्य्य करनेवाला भीरु, बैद्यके उपकार को न मानने वाला, व्याकुल, इन्द्रियों की शक्ति से रहित शोकयुक्त,आसन्नमृत्यु, द्वेषी, (रोगके बिगड़ने मेंकलंकदेनेवाला) बैद्यसे धूर्तता करनेवाला, वैद्यमें बिश्वास से रहित, बैद्यके वचन का न मानने वाला और आपको भी वैद्यके तुल्य चिकित्सा जाननेवाला होवे वह चिकित्सा करने के अयोग्यहै क्योंकि उसका इलाज करने से अनेकप्रकार के दोष उत्पन्नहोतेहैं सुश्रुतने कहाहै कि जिस रोगीके घरमें बैद्यका सत्कार नहीं होताहै उसका कार्य्यासिद्ध नहीं होता ॥ २२ ॥

अथदूतस्यलक्षणम् ॥

यश्चिकित्सकमानेतुंयातिदूतःसकथ्यते । सचयादृक्समुचितस्तादृगत्रनिगद्यते ॥ दूताःसुजातयोव्यंगाः पटवोनिर्मलाम्बराः । सुखिनोऽश्ववृषारूढाःशुभ्रपुष्पफलैर्युताः ॥ सजातयःसुचेष्टाश्चसजीवदिशिसंगताः । भिषजंसमयेप्राप्तारोगिणःसुखहेतवे ॥ सजातयःरोगिसमानजातयः । यस्यांप्राणमरुद्वातिसानाड़ीजीवसंज्ञिता ॥ २३ ॥

दूत के लक्षण ॥

जो बैद्यके बुलानेको जाताहै वह दूत कहाताहै वह जैसा उचितहै उसकोकहतेहैं अच्छीजातवाला सब अंगयुक्त चतुरनिर्मलवस्त्रधारी प्रसन्न घोड़े तथा बैलकी सवारी पर चढ़ाहुआ श्वेतपुष्प तथा

फलों से युक्त रोगीका सजाती सुन्दर चेष्टावाला वैद्यकी जिस नाड़ी में प्राणवायु चलता हो उस ओर गयाहुआ और समय पर बैद्यको प्राप्तहुआ दूत रोगीको सुख दायक होताहै ॥ २३ ॥

अथदूतस्ययात्रायांशकुनविचारः ॥

वैद्याह्वानायदूतस्यगच्छतोरोगिणःकृते । नशुभंसौम्यशकुनंप्रदीप्तन्तुसुखावहम् ॥ प्रदीप्तमग्निः दूतोरोगीचरिक्तहस्तोवैद्यंनपश्येत् (अथच) रिक्तहस्तोनपश्येत्तुराजा भिषजंगुरुमिति ॥ २४ ॥

दूतकी यात्रा में शकुन का विचार ॥

रोगीके निमित्त वैद्यको बुलानेको जातेहुए दूतके संमुख जो सौम्य (सुन्दर)शकुन होय तो शुभ नहीं है और जलतीहुई अग्नि शुभदायकहै दूत और रोगीखाली हाथ बैद्यका दर्शन न करे क्योंकि कहाहुआ है कि राजा बैद्य और गुरुको खाली हाथ नदेखे ॥ २४ ॥

अथवैद्यस्यलक्षणम् ॥

चिकित्सांकुरुतेयस्तुसचिकित्सकउच्यते । सचयादृक्समीचीनस्तादृशोऽपिनिगद्यते ॥ तत्त्वाधिगतशास्त्रार्थोदृष्टकर्मास्वयंकृती । लघुहस्तः शुचिःशूरः सज्जोपस्करभेषजः ॥ प्रत्युत्पन्नमतिर्द्धीमान्व्यवसायोप्रियम्बदः । सत्यधर्मपरोयश्चवैद्यईदृक्प्रशस्यते ॥ दृष्टकर्म्मादृष्टपरेणकृताचिकित्सायेनसः स्वयंकृतीस्वयंचिकित्साकुशलः । लघुहस्तः सिद्धिमद्धस्तः ॥ २५ ॥

बैद्यके लक्षण ॥

जो चिकित्सा (इलाज) करे वह बैद्य कहलाताहै और जिस प्रकारका वैद्य उत्तम होताहै उसे कहते हैं शास्त्रों के तत्त्वों का जानने वाला दूसरेसे कीहुई चिकित्सा का देखनेवाला आपभी चिकित्सा में प्रवीण सिद्धयुक्त हाथवाला (दस्तसफा) पवित्र शूर अच्छी औषधि और शास्त्रादिकोंसे युक्त कार्य के समय झटित उत्पन्न होनेवाली बुद्धिवाला बुद्धिमान् उद्योगी मधुरभाषी सत्यवादी और धर्म्मात्मा वैद्य प्रशंसा के योग्यहै ॥ २५ ॥

अथनिषिद्धोवैद्यः ॥

कुचैलःकर्कशस्तब्धोग्रामीणःस्वयमागतः । पंचवैद्यानपूज्यन्तेधन्वन्तरिसमायदि ॥ कर्कशःअप्रियवादीस्तब्धःसाभिमानः । ग्रामीणःव्यवहाराचतुरः ॥ २६ ॥

निषिद्ध वैद्यके लक्षण ॥

मैले वस्त्र धारण करने वाला- अप्रिय बोलनेवाला- अभिमानी- व्यवहारका न जाननेवाला- और अपने आप आयाहुआ यह पांच प्रकार के वैद्यजो धन्वन्तरिके भी समान होंय तौभी प्रशंसा के योग्य नहीं हैं- ॥ २६ ॥

अथवैद्यस्य कर्म्माह ॥

व्याधेस्तत्त्वपरिज्ञानंवेदनायाश्चनिग्रहः । एतद्वैद्यस्यवैद्यत्वंनवैद्यःप्रभुरायुषः(अस्यायमर्थः) व्याधेःसम्यक्परिचयोव्यथाशांतिकरणंवैद्यस्यकर्म्मनतुवैद्यआयुषः प्रभुरित्यर्थः

र्थः । अपरेत्वेवंव्याचक्षते ॥ व्याधेस्तत्त्वतः परिचयोवेदनायाःशांतिकरणञ्च । एतदेव वैद्यस्यवैद्यत्वंकिन्तुवैद्यआयुषःप्रभुःआगन्तुमृत्युशतहरणात् ॥ तथाचसुश्रुतेधन्वन्तरिः । एकोत्तरंमृत्युशतमथर्वाणः प्रचक्षते ॥ तत्रैकःकालसंज्ञःस्यात् शेषास्त्वागन्तवः स्मृताः (अयमर्थः) अथर्वाणःअर्थतत्त्वज्ञत्वेनाथर्ववत्तुल्याः । मृत्युमेकोत्तरंशतंप्रचक्षते ॥ तत्रैकोमृत्युःकालसंयुक्तः । कालआयुषोऽन्तेशरीरिणामवश्यंसंहर्त्ता ॥ सर्वैरुपायैर्निवारयितुमशक्यः । सब्रह्मादीनायुषोऽन्तेसंहरति ॥ यतआहलिङ्गपुराणे । कार्त्तिकेयंप्रति महादेवः ॥ ममायुर्यत्सतेकालःकुतः पुत्ररसायनमिति ॥ तेनकालेनसंयुक्ता संहाराय नियुक्तःसोऽवश्यंभावी ॥ शेषाःशतंमृत्यवःआगन्तवः । आगन्तुरूपहेतुजन्मानःकार्य्य कारणयोरभेदोपचारात् ॥आगन्तवोहेतवोयथा । विषभक्षणमजीर्णेऽत्यन्तभोजनञ्चदुर्हृशजलपानम् ॥ तथाऽतिबलवैरिव्याघ्रवनमहिषमत्तमातंगादिभिर्युद्धम् । दन्दशूकेनक्रीड़नमत्युच्चवृक्षाग्रारोहणं बाहुभ्याम् ॥ महातरङ्गिणीतरणमेकाकिनो रात्रौदुर्गमार्गेगमनम् । इत्यादि ॥ आगन्तुहेतुजामृत्यवोदुर्निमित्ता भाविभावनाबलवत्त्वादायुषि सत्यपि मारयन्ति । यथामल्लिकातैलवर्त्तिवह्निषुविद्यमानेषुवायुनादीपंनाशयति ॥ तथाच । तथा सत्यपि तैलादौदीपंनिर्वापयेन्मरुत् ॥ एवमायुष्यहीनेऽपिहिंसन्त्यागन्तुमृत्यवः । किन्तुआगन्तुनिमित्तानिनिवारयितुंचशक्यन्ते (यतआहसुश्रुतेधन्वन्तरिः) दोषागन्तुनिमित्तेभ्योरसमन्त्रविशारदौ । रक्षेतांनृपतिंनित्यंयत्नाद्वैद्यपुरोहितौ ॥ वैद्यमन्त्रिणौनृपतिंनित्यंयत्नाद्रक्षेताम् । कुतःदोषागन्तुनिमित्तेभ्यःदोषानिषिद्धाहारविहारभूषितावातपित्तकफरोगोत्पादकाः ॥ आगन्तवःनिषिद्धाविहाराअतिबलवैरिविग्रहादयः । तेनिमित्तानियेषान्तेभ्यःशतमृत्युभ्यः ॥ ननुवैद्यपुरोहितौकथंशतंमृत्युंनिवारयितुंशक्तौतत्राह । यतस्तौरसमन्त्रविशारदौप्रथमंवैद्योदिनचर्य्यारात्रिचर्य्यर्तुचर्य्योक्ताहाराविहाराभ्यां वातपित्तकफधातुमलान्समानेवरक्षति ॥ ततोरसज्ञत्वाद्रसैर्मृत्युंजयादिभिर्निषिद्धाहारविहारदूषितदोषजनितान्विकारान्मृत्युहेतूनपहरति । मंत्रीचसद्बुद्धिदानेनमृत्युहेतुभ्योनृपतिंनिवारयति ॥ ततआगन्तुमृत्यवोनिवारयितुंशक्यानत्ववश्यम्भाविनः ॥ २७ ॥

वैद्यका कर्म्म (काम) ॥

रोगका अच्छेप्रकारसे जानना और उसका दूरकरना यह वैद्यकाकर्म अर्थात् काम है वैद्यआयु देनेवाला नहीं है और कोई २ यह अर्थ करते हैं कि रोगका अच्छीरीति से जानना और उसका शान्तकरना केवल यही वैद्यका कर्म नहीं है किन्तु वैद्य आगन्तुक (आनेवाली) सौकृत्युके निवारण करनेसे आयुका स्वामी है सुश्रुतमें धन्वन्तरि जीने कहा है कि अथर्वण वेदके जानने वाले एकसौ एक मृत्यु कहते हैं उनमें से एककाल संयुक्त और बाक़ी आगन्तुक कहलाती हैं कालसंयुक्त मृत्यु आयु के अन्तमें प्राणियोंको अवश्य संहार करती है उसका निवारण किसी उपाय से नहीं होसक्ता वह आयुके अन्तमें ब्रह्मादिकोंको भी संहार करतीहै क्योंकि लिंगपूराणमें

स्वामिकार्तिक से महादेवजी का वचन है कि हेपुत्र ! मुझे भी कालसंहार करता है तो रसायन क्याबस्तुहै इस्से काल संयुक्त मृत्यु प्राणियोंके संहार के लिये अवश्य होगी और शेष एकसौ मृत्यु आगन्तुक कहलाती हैं कार्य्य और कारण के अभेद माननेसे आगन्तुक हेतुओंसे होनेवाली मृत्यु आगन्तुक कहलाती हैं, आगन्तुक हेतु यह हैं कि विष खाना-अजीर्ण में अत्यन्त भोजन करना बुरेदेश का जलपीना- अत्यन्त बलवान् शत्रु- व्याघ्र- बनका भैंसा तथा मतवाले हाथी आदिकों से लडना- सर्पके साथ क्रीडाकरना- बहुत ऊंचे वृक्षकी चोटीपर चढ़ना- हाथोंसे बड़ी नदियों में तैरना और रात्रिके समय दुर्घट मार्गोंमें चलना इत्यादि, जैसे दीपक में बत्ती तेल और अग्निके होते हुए भी वायु के द्वारा दीपक बुझजाता है उसीप्रकार आगन्तुक हेतुओंके द्वारा होनेवाली मृत्यु दुष्टकर्मों से होनहार की प्रबलता के द्वारा आयुके होनेपर भी मारडालती हैं कहा भी है कि जैसे तैलादिकों के होनेपर भी बायुसे दीपक बुझजाता है उसीप्रकार आगन्तुक मृत्यु भी प्राणोंको नाशकरती है आगन्तुक मृत्युओंका निवारण होसक्ता है क्योंकि ऐसाही सुश्रुत में धन्वन्तरि जीने कहा है किरस और मन्त्रके जानने वाले बैद्य और पुरोहित यत्न पूर्वक दोष और आगन्तुक हेतुओंसे राजाकी सर्वदा रक्षा करें, दोष अर्थात् निषिद्ध आहार विहारसे विकारको प्राप्त रोगके उत्पन्न करने वाले बात पित्त और कफ और आगन्तुक अर्थात् अत्यन्त बलवान् शत्रु आदिसे युद्धादिक-अबयह प्रश्न करते हैं कि बैद्य और पुरोहित किस प्रकार से सौ आगन्तुक मृत्युओंको निवारण करसक्ते हैं इसका उत्तर यहहै कि बैद्यरस क्रिया में चतुर और पुरोहित मंत्रमें चतुर होते हैं पहिले बैद्य दिन चर्य्या रात्रिचर्य्या और ऋतुचर्य्या में कहेहुए आहार विहारोंसे बात पित्तकफ धातु और मलोंकी समतारखता है फिर रसके जानने से मृत्युं जयादिक रसोंके द्वारा निषिद्ध आहार विहार से कोपको प्राप्त दोषों से उत्पन्नहुए मृत्यु के कारण रूप विकारों को नाश करता है और पुरोहित यामंत्री अच्छी बुद्धि देनेके द्वारा मृत्यु के कारण रूप निषिद्ध व्यवहारों से राजाको निवारण करता है इस्से आगन्तुक मृत्युओंका तो निवारण होसक्ता है परन्तु अवश्य होने वाली काल संयुक्त मृत्युका निवारण नहीं होसक्ताहै- ॥२७॥

अथायुर्विचारः ॥

भिषगादौपरीक्षेतरुग्णस्यायुःप्रयत्नतः।तत्रआयुषिविस्तीर्णेचिकित्सासफलाभवेत्॥२८॥

आयुका विचार ॥

बैद्य पहले रोगीकी आयुकी परीक्षा यत्न पूर्वक करे क्योंकि आयुके दीर्घ होनेही में चिकित्सा सफल होती है ॥ २८॥

तत्रदीर्घायुषो लक्षणानि ॥

सौम्याद्दृष्टिर्भवेद्यस्यश्रोत्रंवक्त्रंतथैवच । स्वाद्वन्नंविजानातिससाध्योनात्रसंशयः ॥ पाणिपादौचयस्योष्णौदाहःस्वल्पतरोभवेत् । जिह्वातुकोमलायस्यसरोगीनविनश्यति ॥ स्वेदहीनोज्वरोयस्यश्वासोनासिकयाचरेत् । कण्ठश्चकफहीनःस्यात्सरोगीजीवतिध्रुवम् ॥ यस्यनिद्रासुखेनस्यात् शरीरंद्युतिमद्भवेत् । इन्द्रियाणिप्रसन्नानिसरोगीनैवनश्यति ॥ २९ ॥

दीर्घायु के लक्षण ॥

जिसके दृष्टि कान तथा मुख में कोई विकार न होय और जो अच्छी बुरी गंधका ज्ञानकरसक्ताहो वह निस्सन्देह साध्यहै जिसरोगी के हाथपैर उष्णहों थोड़ा दाहहो और जिह्वा कोमलहो वह अवश्य जीताहै जिस रोगीके स्वेद रहित ज्वरहो नासिकाके द्वारा श्वास ले और कण्ठ में कफनहो वह अवश्य जीताहै जिस रोगीको सुख पूर्वक निन्द्रा आवै शरीरमें कान्तिहो और संपूर्ण इन्द्री प्रसन्नहों वह नहीं मरता है ॥ २९ ॥

अथस्वल्पायुषोलक्षणानि ॥

शरीरशीलयोर्यस्यप्रकृतेर्विकृतिर्भवेत् । तदरिष्टंसमासेनव्यासतश्चनिबोधमे ॥ शृणो तिविविधान्शब्दान्विपरीतान्शृणोतिच । योनशृणोतिचाकस्मात्तंवदन्तिगतायुषम् ॥ यस्तूष्णमिवगृह्णातिशीतमुष्णञ्चशीतवत्।उष्णगात्रोऽतिमात्रंयोभृशंशीतेनकम्पते ॥ (तमपिगतायुषंवदन्तीत्यन्वयः) प्रहारंनैवजानातियोगच्छेदन्यथापिवा । पांशुनैवावकी र्णानियश्चगात्राणिमन्यते ॥ वर्णान्यथावाराज्योवायस्यगात्रेभवंतिहि । स्नातानुलिप्तंय श्चापिभजंतेनीलमालिकाः ॥ विपरीतेनगृह्णातिरसान्यश्चोपयोजितान् । योवारसा न्नसेवेततंगतासुम्प्रचक्षते ॥ सुगंधंवेत्तिदुर्गंधंदुर्गंधञ्चसुगंधवत् । गृह्णातियोऽन्यथा गंधंशांतेदीपेनिरामयः ॥ रात्रौसूर्य्यंज्वलंतंवादिवावाचंद्रवर्च्चसम् । दिवाज्योतींषियश्चा पिज्वलितानीवपश्यति ॥ दिवावाचंद्रवर्चसम् । सूर्य्यमित्यन्वयः ॥ ज्योतींषिनक्षत्रा णि । विद्युत्वतोऽसितान्मेघान्गगनेनिर्घनेघनान् ॥ विमानयानप्रासादैर्यश्चसंकुलमम्ब रम् ॥ यश्चानिलंमूर्त्तिमंतमंतरीक्षेऽवलोकते । धूमनीहारवासोभिरावृतामिवमेदनीम् ॥ प्रदीप्तमिवयोलोकंवोवास्तुतामिवाम्भसा । भूमिमष्टापदाकारांलेखाभिर्यश्चपश्यति ॥ यो नपश्यतिऋक्षाणियश्चदेवीमरुंधतीम् । ध्रुवमाकाशगङ्गाञ्चतंवदंतिगतायुषम् ॥ आ दर्शेऽम्बुनिघर्मेवाच्छायांयश्चनपश्यति । पश्यत्येकांगहीनांवाविकृतांवान्यसत्वजाम् ॥ श्वकाककङ्कगृध्राणांप्रेतानांयक्षरक्षसाम् । आतुरोलभतेमृत्युंस्वस्थोऽयाधिमवाप्नुयात् ॥ ह्रीश्रियौनश्यतोयस्यतेजओजःस्मृतिप्रभा (प्रतिभा) अकस्माच्चभजंतेयंसगतासुरसंश यम् । यस्याधरौष्ठौपतितौक्षिप्तश्चोर्ध्वंतथोत्तरः ॥ उभौवाजाम्बवाभासौदुर्लभंतस्यजी वितम् । आरक्तादशनायस्यश्यावावास्युःपतंतिवा ॥ खञ्जनप्रतिभावापितंगतायुषमा दिशेत् । कृष्णातथाम्बुलिप्ताजिह्वाचशूनाचयस्यवै ॥ कर्कशावाभवेद्यस्यसोऽचिरा द्द्विजहात्यसून्।कुटिलास्फुटितावापिशुष्कावायस्यनासिका। अवस्फुर्ज्जतिभग्नावासनजी वतिमानवः ॥ (स्फुर्ज्जतिश्वासवेगेनोच्चैःशब्दंकरोतीत्यर्थः) संक्षिप्तेविषमेस्तब्धेरूक्षे सास्नेचलोचने । स्यातांपरिस्रुतेयस्यसगतायुर्नरोध्रुवम् ॥ कशाःसीमंतिनोयस्यसंक्षि प्तेविनतेभ्रुवौ । लुठंतिचाक्षिपक्ष्माणिसोऽचिराद्यातिमृत्यवे ॥ (लुठंतिपतंति) नाह हरत्यन्नमास्यस्थंनधारयतियःशिरः । एकाग्रदृष्टिर्मूढात्मासद्यःप्राणंविमुञ्चति ॥ उत्था

प्यमानोबहुशःसंमोहंकोऽपिगच्छति । बलवान्दुर्बलोवापितंयाप्यंभिषगादिशेत् ॥ नि द्रानिरंतरंयस्ययोजागर्तिचसर्व्वदा । मुह्यद्वावक्तुकामश्चप्रत्याख्येयःसजानता ॥ उत्त रौष्ठञ्चयोलिह्यादुत्करांश्चकरोतियः । प्रेतैर्वाभाषतेसायंप्रेतरूपंतमादिशेत् ॥ उत्क रान्हस्तपादादिविक्षेपान्) खेभ्यश्चरोमकूपेभ्योयस्यरक्तंप्रवर्त्तते ॥ पुरुषस्याविषार्त्तस्य ससद्योजीवतंत्यजेत् । सम्यक्चिकित्स्यमानस्यविकारोयोऽभिवर्द्धते ॥ प्रक्षीणबलमां सस्यलक्षणंतद्गतायुषः ॥ ३० ॥

अल्पायु के लक्षण ॥

जिस के शरीर और स्वभावकी प्रकृति बदल जाय यह संक्षेप से अरिष्टहै और इसका विस्तार पूर्वक बर्णन करतेहैं कि जो शब्दके नहोने परभी अनेक प्रकार के शब्द सुने अथवा विपरीत शब्दोंको सुने अथवा शब्दोंके होनेपरभी एकाएकीन सुने उस को गतायु(शीघ्रमरनेवाला) कहतेहैं जो उष्णको शीत के समान तथा शीतको उष्ण के समान ग्रहण करे और जो अत्यन्त उष्ण शरीर वालाभी शीतसे कांपे उसको भी गतायु कहते हैं जिसके चोटलगनेसे भी पीडा नहो जो स्वभावके बिपरीत कार्य्य करे अपने शरीरको धूल से लिपटा हुआ जाने जिसके अंगोंका वर्ण बदल जाय अथवा रेखा सी पड़ जांय स्थानकरने और चन्दनादिक के लगानेपरभी जिसके शरीर पर नीलीमक्खी बैठै और जो दिये हुए रसोंको बिपरीत जाने अथवा रसोंका ज्ञाननहो उसको गतायु कहतेहैं जो वातादि दोषों के शान्त होजाने से रोग रहित हुआ सुगंध को दुर्गन्ध और दुर्गन्धको सुगन्धजाने रात्रि में ज्वलित सूर्य्य को तथा दिन में चन्द्रामा की किरणको अथवा जलते हुए नक्षत्रों को देखै निर्मल आकाशमें बिजली सहित काले मेघोंको देखे बिमानकी सवारी और महलोंसे परिपूर्ण आकाश देखे आकाशमें मूर्त्ति मान् वायुका दर्शन करे धुआं पाला तथा बस्त्रोंसे ढकीहुईके समान पृथ्वीको देखे जगत्को जलता हुआ अथवा पानीसे बहता हुआ सा देखे लकीरों से चौपडसी बिछीहुई पृथ्वीको देखे और नक्षत्र अरुन्धती देवी ध्रुव तथा आकाश गंगाको न देखे उसको गतायु कहतेहैं जो दर्पणमें जल में अथवा धूपमें छायाको नहीं देखताहै और जो देखताहै तो एक अंगसे रहित विकार युक्त अथवा कुत्ता काक कंक (उजली चील) गृध्र प्रेत यक्ष राक्षस आदिक अन्य जीवोंके समान अपनी छायाको देखताहै वह जो रोगी होय ता मृत्युको प्राप्त होताहै और अच्छा हो तो रोगी होजाताहै जिसकी लज्जा श्री तेज ओज स्मृति और प्रतिभा (सूझबूझ वाली बुद्धि) अकस्मात् नष्ट होजावे और लज्जादि रः हित पुरुषको अकस्मात् लज्जादिक प्राप्त होजायं उसको निस्सन्देह गतायु जानना चाहिये जिसके दोनों ओष्ठ लटक पड़तेहैं अथवा ऊपरका ओष्ठ ऊंचेको उठजाताहै या दोनों ओष्ठ जामनके रंग के समान रंगवाले होजातेहैं उसका जीना दुर्लभ है जिसके दांत रक्त वर्ण श्याम वर्ण अथवा खंजन के समान वर्णवाले होजांय या एका एकी गिरपडें उसको गतायु जानना चाहिये जिसकी जिह्वा काली जकड़ी हुई लिपी हुई सूजन युक्त अथवा कठोर होजाय वहभी शीघ्र प्राणोंको त्याग करताहै जिसकी नाक टेढ़ी फटी हुई सूखी टूटी अथवा श्वासके बेगसे उच्चशब्द करतीहो वह मनुष्य नहीं जीताहै जिसके नेत्र भीतरको धसे हुए बिषम (एकबड़ा एकछोटा) कठोर रूखे और रुधिर करके सहितहों अथवा बहतेहों उसको निस्सन्देह गतायु जानना चाहिये जिस के बाल बंधेहुएसे होजायं भौंह छोटी तथा झुकी हुई होजायं और नेत्रोंके पलक गिरपड़ें वह शीघ्रही प्राणोंको त्याग करता है

जो मुखमें रक्खी हुई चीज़को निगल न सके शिरको अच्छे प्रकारसे धारण न करसके और जिसकी दृष्टि एकाग्रहो चैतन्य शक्ति जातीरहै वह शीघ्रही प्राणोंको त्याग करताहैं जो उठाने से बारम्बार मूर्च्छाको प्राप्त होताहै वह रोगी बलवान्हो चाहै निर्बलहो बुद्धिमान् वैद्य उसका त्याग करदे जो वह बराबर सोवें अथवा जागे और कुछ कहनेकी इच्छासे मोहको प्राप्तहो उस रोगी को बुद्धिमान् बैद्य शीघ्र त्यागे जो ऊपरके ओष्ठको चाटे हाथ पैरोंको फेंके और सायंकालमें प्रेतों से बातेंकरे उस रोगीको प्रेतरूप जानना चाहिये बिषकी पीड़ाके बिना जिस रोगीके रोमोंसे रुधिर बहे वह शीघ्रही प्राणोंको त्याग करताहै बल और मांसकी क्षीणतावाले रोगीकी अच्छेप्रकार चिकित्सा करनेपर भी जो विकार बढ़ताही जाय तो गतायुका लक्षण जाननाचाहिये ॥ ३० ॥

भूताः प्रेताःपिशाचाश्चरक्षांसिविविधानिच।मरणाभिमुखंजन्तुमुपसृत्यचनित्यशः॥तानि भेषजवीर्य्याणिप्रतीच्छन्तिजिघांसया ।तस्मात्मोघाःक्रियाःसर्वाभवन्त्यवेगतायुषः॥३१॥

भूत-प्रेत-पिशाच और अनेक प्रकारके राक्षस आकर मारनेकी इच्छा से गतायुपुरुषकी औषधियोंके वीर्य्यको हरलेते हैं इस्से सम्पूर्ण क्रिया व्यर्थ होजाती हैं ॥ ३१ ॥

नन्वायुषिसतिचिकित्सायाःसाफल्यमुक्तम् । आयुश्चेदस्तितदादातदेवजीवनहेतुः॥किं चिकित्साविधानंतत्रोच्यते । आयुषिसतिचिकित्सायाःफलंवेदनानिग्रहः ॥ (उक्तञ्च) आयुष्मान्पुरुषोजीवेत्सव्यथाभेषजंविना । भेषजेनपुनर्ज्जीवेत्सएवाहिनिरामयः ॥ किञ्च । आयुषिसत्यपिरोगीचिकित्सांविनाउत्थातुंनशक्नोति (यतआहचरकः) सतिचायुषिनोपायंविनोत्थातुंक्षमोरुजौ ॥ दर्शितश्चात्रदृष्टान्तःपङ्कलग्नोयथागजः । किञ्च ॥ चिकित्सांविनायुष्मानप्यवसीदति । यतआहसएव ॥ सतिचायुषिनष्टःस्यादामयैश्चाचिकित्सितः । यथासत्यपितैलादौदीपोनिर्व्वातिवात्यया ॥ अतएवोक्तम् । साध्यायाप्यत्वमायान्तियाप्यागच्छन्त्यसाध्यताम् ॥घ्नन्तिप्राणानसाध्यास्तुनराणामक्रियावताम्इति। किंचित्सातुअनिश्चितायुषोऽपिकर्त्तव्या (यतआह) तावत्प्रतिक्रियाकार्य्यायावच्छ्वासितिमानवः ॥ कदाचिद्दैवयोगेनदृष्टाऽरिष्टोऽपिजीवति। इतितुयस्यासाध्यत्वंसान्दिग्धंतं प्रत्युक्तम् ॥ येषुत्वसाध्यताशास्त्रेणानुभवेनविनिश्चिताः तेपुनर्न्नचिकित्स्याःयतउक्तम् ॥ सद्वैद्यास्तेनयेसाध्यानारभन्तेचिकित्सितुमिति ॥ ३२ ॥

अब यह सन्देह होताहै कि आयुके होनेपर चिकित्साकी सफलता कही तब जो आयुहै तो वही जीवनका कारण होजायगी फिर औषधि करनेसे क्या इसका उत्तर यहहै कि आयुके होनेपरभी चिकित्साका फल पीडाका रोकना है और कहाभी गयाहै कि आयुके होनेपरभी औषधिके विना शरीर पीड़ा युक्तहोकर सजीव रहताहै और औषधि करनेसे नीरोगी होकर जीताहै किन्तु आयुके होनेपरभी रोगी पुरुष चिकित्सा के विना उठनहीं सक्ता और ऐसाही चरकने कहाहै कि जिसप्रकार कीचड़में फँसाहुआ हाथी बिना किसी सहारेके उठनहीं सक्ता है उसीप्रकार आयुके होनेपरभी बिना किसी उपाय रूप औषधीके रोगसे नहीं उठसक्ता है और आयुके होनेपरभी चिकित्सा या औषधिके बिना मृत्युहोजाती है क्योंकि चरकने कहाहै कि जिसप्रकार तैलादिकों के होनेपरभी वायुके द्वारा

दीपक बुझजाता है इसीप्रकार आयुके होनेपरभी चिकित्साके विना रोगोंसे प्राण नष्टहोजाते हैं इसी से कहागया है कि औषधि न करने से साध्य याप्य होजाते हैं याप्य असाध्य होजाते हैं और असाध्य रोगोंसे मृत्युको प्राप्त होजाते हैं जिसकी आयुका निश्चय न हो उसकीभी चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि कहागया है कि जबतक मनुष्यका श्वास रहै तबतक चिकित्सा करनी चाहिये कदाचित् दैव योगसे अरिष्टके लक्षणोंके होनेपरभी प्राण बचजांय परन्तु यहतो जिसके असाध्य होनेमें सन्देह है उसके लिये कहागया है और जिनकी असाध्यता शास्त्र और अनुभवके द्वारा निश्चय करलीहो उनकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ऐसाही कहाभी गयाहै कि जो असाध्योंकी चिकित्सा करते हैं वह सद्वैद्य नहीं है ॥ ३२ ॥

अथद्रव्यम् ॥

सर्वैर्द्रव्यमपेक्षन्तेरोगिप्रभृतयोयतः। विनावित्तंनभैषज्यंचिकित्साङ्गंततोधनम्॥३३॥

द्रव्यका वर्णन ॥

रोगी आदिके सब द्रव्यकी अपेक्षा करते हैं क्योंकि धनके विना औषधि नहीं होसक्ती इस्से धन भी चिकित्साका अंग है ॥ ३३ ॥

अथपरिचारकस्य लक्षणम् ॥

स्निग्धोऽजुगुप्सुर्बलवान्युक्तोव्याधितरक्षणे । वैद्यवाक्यकृदश्रान्तोयुज्यतेपरिचारकः॥स्निग्धःप्रीतःअजुगुप्सुःआनिन्दकः ॥ ३४ ॥

सेवकका लक्षण ॥

प्रीतियुक्त अनिन्दक-बलवान्-रोगीकी रक्षाकरनेमें युक्त-वैद्यके वाक्यके अनुसार कार्य्य करने वाला और परिश्रमी ऐसा पुरुष रोगीका सेवकहोना चाहिये ॥ ३४ ॥

अथभेषजस्यलक्षणम् ॥

वैद्योव्याधिंहरेद्येनतद्द्रव्यंप्रोक्तमौषधम्। तद्यादृशमवश्यंस्याद्रोगघ्नन्तादृशंब्रुवे ॥३५॥

औषधिका लक्षण ॥

वैद्य जिस वस्तुसे रोगको नाश करता है उस वस्तुको औषधि कहते हैं जिसप्रकारकी औषधिसे निस्सन्देह रोग नाशहोताहै उसको कहते हैं ॥ ३५ ॥

तत्रौषधग्रहण परिभाषा ॥

प्रशस्तदेशसञ्जातंप्रशस्येऽहनिचोद्धृतम् । अल्पमात्रंबहुगुणंगन्धवर्णरसान्वितम् ॥ दोषघ्नमग्लानिकरमधिकंनविकारियत् । समीक्ष्यकालेदत्तञ्चभेषजंस्यादगुणावहम्॥ ३६ ॥

औषधिके ग्रहण करनेकी परिभाषा ॥

अच्छे देशमें उत्पन्न हुई-अच्छे समयमें उखाडीगई थोडी मात्रासे बहुत गुण देनेवाली गन्धवर्ण तथा रसकरके युक्त दोषकी नाशक ग्लानि रहित और अधिक खानेसेभी दोषकी नहीं करनेवाली औषधि विचार पूर्वक समयपर दीगई गुणकारी होती है ॥ ३६ ॥

आग्नेयाविन्ध्यशैलाद्याःसौम्योहिमगिरिःस्मृतः । अतस्तदौषधानिस्युरनुरूपाणिहेतुभिः ॥ आग्नेयाःअधिकाग्न्यांशाःसौम्यःअधिकसोमांशः । औषधयएवौषधानि ॥ अत्रस्वार्थेअण् । अनुरूपाणि सदृशानि ॥ अन्येष्वपिप्रराहन्तिबनेषूपवनेषुच । गृह्णीयात्तानिसुमनाःशुचिःप्रातःसुवासरे ॥ आदित्यसम्मुखोमौनीनमस्कृत्याशिवंहृदि । साधारणधराद्रव्यंगृह्णीयादुत्तराश्रितम् ॥ साधारण धराद्रव्यं । सर्वभूमिभवन्द्रव्यम् ॥ उत्तराश्रितंस्वस्मात्उत्तरादिग्भवम् । वल्मीककुत्सितानूपश्मशानोषरमार्गजाः ॥ जन्तुवह्निहिमव्याप्तानौषध्यःकार्य्यसाधिकाः ॥ ३७ ॥

विन्ध्यादिक पर्बत अधिक अग्निके गुणसे युक्त और हिमालयादि पर्बत अधिक जलके गुणवाले होतेहैं इस्से उनमें उत्पन्न हुई औषधि भी उन्हींके समान गुणवाली होती हैं और भी बाग तथा जगलोंमें औषधि उत्पन्न होतीहैं उनको प्रसन्न चित्त पवित्र सूर्य्यके सन्मुख अच्छे दिन में शिवजीको हृदयमें प्रणाम करके प्रातःकालके समय मौन होकर उखाड़े अपनेसे उत्तरकी ओर सम्पूर्ण पृथ्वी में उत्पन्न हुई बस्तुको ग्रहण करे सर्पकी बामी अपवित्र स्थान बहुत जल युक्त स्थान श्मशान उषर तथा मार्ग में उत्पन्न हुई और कीड़े अग्नि तथा पाले से व्याप्त औषधियों से कार्य्य सिद्ध नहीं होता ॥ ३७ ॥

शरद्यखिलकार्य्यार्थंग्राह्यंसरसमौषधम् । विरेकवमनार्थन्तुवसन्तान्तेसमाहरेत् ॥ बसन्तान्तेवसन्तमध्येसमाहरेत्संगृह्णीयात् । अतिस्थूलजटायास्स्युस्तासांग्राह्यास्त्वचोध्रुवम् ॥ गृह्णीयात्सूक्ष्ममूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् । अन्यच्च ॥ महान्तियेषांमूलानिकाष्ठगर्भाणिसर्व्वतः । तेषान्तुवल्कलंग्राह्यंह्रस्वमूलानिसर्व्वशः ॥ न्यग्रोधादेस्त्वचोग्राह्यःसारःस्याद्बीजकादितः । तालीसादेश्चपत्राणिफलंस्यात्त्रिफलादितः॥क्वचिन्मूलंक्वचित्कन्दःक्वचित्पत्रंक्वचित्फलम्।क्वचित्पुष्पंक्वचित्सर्व्वंक्वचित्सारःक्वचित्त्वचः ॥ चित्रकंसूरणांनिम्बोवासाचात्रिफलाक्रमात् । धातकीकण्टकारीचखदिरःक्षरिपादपः३८ ॥

शरदऋतु में सम्पूर्ण कार्य्योंके लिये सरस औषधि लेनी चाहिये बमन और बिरेचन के लिये औषधि बसन्त ऋतुमें लेनीचाहिये जिन वृक्षोंकी जड़ बहुतमोटीहो उनकी छाल लेनीचाहिये और छोटी जड वाले वृक्षोंकी सर्वांग लेना चाहिये और भी कहाहै कि जिन वृक्षोंकी जड मोटी और काष्ठसे भरीहो उनकी छाल लेनी चाहिये और छोटी जडवाले वृक्षोंकी जड़ लेनी चाहिये बर्गद आदि वृक्षोंकी त्वचा बिजयसारआदिक वृक्षोंके सारांश तालीस आदिक वृक्षोंके पत्र और त्रिफला आदिकोंसे फल लेना चाहिये किसीकी जड किसीका कन्द किसीका पत्र किसीका फल किसीका पुष्प किसीका सर्वाङ्ग किसीका सारांश और किसीकी छाल लेनी चाहिये जैसे चीतेकी छाल शूरन का कन्द (ज़िमीकन्द) नींब और अडूसेके पत्ते त्रिफलाके फल धवईके फूल भटकटैयाका सर्वांग कत्थेका सारांश खैर बर्गद आदिकोंकी छाल लेनी चाहिये ॥ ३८ ॥

क्वचिन्निम्बस्यगृह्णीयात्पत्राभावेत्वचामपि । बालंफलन्तुविल्वस्यपक्वमारग्वधस्यच ॥

अङ्गेऽनुक्तेजटाग्राह्याभागेऽनुक्तेऽखिलंसमम् । पात्रेऽनुक्तेमृदःपात्रंकालेऽनुक्तेत्वहर्मुखम् ॥ ३९ ॥

कहीं २ नीबके पत्तोंके अभावमें छालभी ग्रहण कीजाती है-बेलका कच्चाफल लेना चाहिये और अमलतासका पक्काफल लेना चाहिये जहांपर औषधिका अंग न कहाहो वहां उसकी जडलेनी चाहिये और जहां औषधियोंके भाग न कहेहों वहां समभाग लेना चाहिये पात्र न कहाहो तो मृत्तिकापात्र लेना चाहिये समय न कहाहोवे तो प्रातःकाल लेना चाहिये ॥ ३९ ॥

नवान्येवहियोज्यानिद्रव्याण्यखिलकर्मसु । विनाविड्ङ्गकृष्णाभ्यांगुडधान्याज्यमाक्षिकैः ॥ (धान्यमन्नम्) पुराणन्तुप्रशस्तंस्यात्ताम्बूलङ्काञ्जिकंतथा । शुष्कन्नवीनद्रव्यन्तुयोज्यंसकलकर्म्मसु॥आर्द्रन्तुद्विगुणंयुञ्ज्यादेषसर्व्वत्रनिश्चयः ॥ ४० ॥

सम्पूर्ण कार्योंमें वायबिडंग-पीपल-गुड अन्न घृत तथा मदको छोडकर सब वस्तु नवीन लेनी चाहिये और ताम्बूल तथा कांजीभी प्राचीनही श्रेष्ठहोती है सम्पूर्ण कार्य्योंमें नवीन और सूखी वस्तु लेनी चाहिये और जो गीली लेतो दूनी मात्रालेनी चाहिये यह सर्बत्र निश्चयहै ॥ ४० ॥

गुडूचीकुटजोवासाकुष्माण्डइक्षशतावरी ॥ अश्वगन्धासहचरौ शतपुष्पाप्रसारिणी । प्रयोक्तव्यासदैवार्द्रा द्विगुणंनैवकारयेत् ॥ सहचरःकुरण्टकःकटसरै आइतिलोके । वासानिम्बपटोलके तकवलाकूष्माण्डकेंदीवरी वर्षाभूः कुटजाश्चकन्दसहितासापूतिगन्धास्मृता । ऐन्द्रीनागबलाकुरण्टकपुरो छत्राामृतासर्व्वदा ॥ सार्द्राण्यवतुतत्कचित् द्विगुणिताकार्य्येषुयोज्याबुधैः ॥ ऐन्द्रीइन्द्रवारुणी । वरीशतावरी । पूतिगन्धा गन्धप्रसारणी।नागबलागुलशकरी । कुरण्टकःपीतपुष्पकटसरैआ । पुरोगुग्गुलः ॥ ४१ ॥

गिलोय-कुरैया-अडूसा-पेठा सतावर असगन्ध कटसरैया सौंफ और आकाशबेल यह सब गीली लेनी चाहिये और इनकी मात्रा दूनी नहीं होती- अडूसा- नींव, पर्वल- केतकी- वरियारा- पेठा- इन्द्राइन सतावर गदहपूरना- कुरैया- कन्दशाक- गन्धप्रसारणी- इन्द्रबारुणी गुलशकरी- कटसरैया गूगल, सौंफ और गिलोय यह भी संपूर्ण गीली लेनी चाहिये और इनकी मात्रा कहीं २ दूनीभी करदेनी चाहिये, ॥ ४१ ॥

घृतन्तैलञ्चपानीयं कषायंव्यञ्जनादिकम् । पक्त्वाशीतीकृतंचोष्णं तत्सर्व्वंस्याद्विषोपमम् ॥ ४२ ॥

घृत, तेल- जल- कषाय- और व्यंजनादिक एकबार परिपाक करके शीतल हुए फिर उष्णकरने से विषके तुल्य होजाते हैं- ॥ ४२ ॥

अथद्रव्याणांपरीक्षा ॥

सूक्ष्मास्थिमांसला पथ्यासर्व्वकर्म्माणिपूजिता । क्षिप्ताम्भसि निमज्जेद्यामल्लातक्यस्तथोत्तमाः ॥ वराहमूर्द्धवत्कन्दोवाराहीकन्दसंज्ञकः । सौवर्चलन्तुकाचाभंसैन्धवंस्फटिकप्रभम् ॥ सुवर्णं च्छविकंज्ञेयंस्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् । इन्द्रगोपप्रतीकाशंमनोज्ञाचोत्तमामता ॥ श्रेष्ठंशिलाजतुज्ञेयंप्रक्षिप्तंनविशीर्यते ॥ तोयपूर्णेकांस्यपात्रे प्रतानेनविवर्द्धते । कर्पू

रःस्तुवरःस्निग्धः एलासूक्ष्मफलावरा ॥ श्वेतचन्दनमत्यन्तंसुगन्धिगुरुपूजितम्।रक्तच न्दनमत्यन्तं लोहितंम्प्रवरंमतम् ॥ काकतुण्डनिभःस्निग्धोगुरुः श्रेष्ठोगुरुर्मतः ॥ सुगं धिलघुरूक्षञ्चसुरदारुवरंमतम् । सरलंस्निग्धमत्यर्थं सुगंधिचगुणावहम् ॥ अतिपो ताप्रशस्तातुज्ञेयादारुनिशाबुधैः । जातीफलंगुरुस्निग्धं समंशुभ्रान्तरंवरम् । मृद्वी कासोत्तमाज्ञेयायास्याद्गोस्तनसन्निभा ॥ करम र्दफलाकारामध्यप्रासाप्रकीर्त्तिता ॥ गोस्तनसन्निभा मुनक्काइतिलोके । करमर्दफलाकाराकरौंदीदाखइतिलोके । खण्डंतुवि मलंश्रेष्ठंचंद्रकान्तसमप्रभम् ॥ गव्याज्यसदृशंरुच्यंगंधंमधुवरम्मतम् ॥ ४३ ॥

द्रव्योंकी परीक्षा ॥

छोटी गुठली वाली गूदेदार पानीमें डालनेसे डूबजाने वाली हड़ सब कामोंमें श्रेष्ठ होती है और इसीप्रकार का भिलावां भी उत्तम होताहै शूकरके शिरके समान जो कन्द होताहै उसको वाराही कन्द कहतेहैं काचके समान सौवर्चल (कालानौन) श्रेष्ठहै स्फटिकके समान सेंधानोन श्रेष्ठ है सुवर्ण के समान कान्ति वाली सोना मक्खी श्रेष्ठहै इन्द्रपुष्प के समान मैनसिल श्रेष्ठहै जो शिला जीत जलसे भरेहुए पात्रमें छोड़नेसे क्रमसे सूतके समान बढ़े और बिखरे नहीं वह उत्तमहै चिकना कपूर श्रेष्ठहै इलाचियों में छोटी इलायची श्रेष्ठहै अत्यन्त सुगन्धित और भारी श्वेत चन्दन श्रेष्ठहै बहुत लाल रंगका रक्त चंदन श्रेष्ठहै काक की टोंटके समान कांतिवाला चिकना और भारी अगर श्रेष्ठहै सुगंधि युक्त हलका और रूखा देवदारु श्रेष्टहै अत्यन्त सुगंधित और चिकना सरल (एकतरहकादेवदारु)श्रेष्ठहै अत्यन्त पीले रंगवाली दारुहल्दी श्रेष्ठहै भारी चिकना भीतरसे सफा जायफल श्रेष्ठहै गौके धन के समान मुनक्का श्रेष्ठ करौंदे के फलके समान मुनक्का मध्यमहै निर्मल और चन्द्र कान्ति माणि के समान खांड़ श्रेष्ठहै गौके घृतके समान वर्णवाला रुचि कारक और सुगन्धि युक्त सहत श्रेष्ठहै ॥ ४३ ॥

अथस्वभावतोहितानि ॥

शालीनांलोहितःशालिःषष्टिकेषुचयष्टिका । शूकधान्येष्वपियवोगोधूमःप्रवरोमतः ॥ शिम्बिधान्येवरोमुद्गोमसूरश्चाढकस्तथा । रसेषुमधुरःश्रेष्ठोलवणेषुचसैंधवः ॥ दाड़िमामलकंद्राक्षाखर्ज्जूरंचपरूषकम् । राजादनंमातुलुंगंफलवर्गेषुशस्यते ॥परूषकंफालसा इतिलोके । राजादनंखिरणी इतिलोके ॥ मातुलुङ्गं बिजउरा इतिलोके । पत्रशाकेषु वास्तूकंजीवन्तीपोतिकावरा ॥ पटोलफलशाकेषुकन्दशाकेषुसूरणम् । एणःकुरङ्गोहरिणीजांगलेषुप्रशस्यते ॥ पक्षिणांतित्तिरिर्लावोवरोमत्स्येषुरोहितः ॥ हरिणस्ताम्रवर्णः स्यादेणःकृष्णतयामतः । कुरंगस्ताम्रउद्दिष्टोहरिणाकृकिकोमहान् ॥ जलेषुदिव्यंदुग्धेषु गव्यमाज्येषुगोभवम् तैलेपुतिलजंतैल मैक्षवेषुसिताहिता ॥ ४४ ॥

स्वभावसे हितकारी बस्तु ॥

धानोंमें लाल धान श्रेष्ठ और षष्टिक धान्यों में साठीके चावल श्रेष्ठहैं शूक धान्यों(तुषयुक्तधान्यों)

में जौ गेहूं श्रेष्ठहैं फली वाले धान्यों में मूंग मसूड़ और अरहड़ श्रेष्ठहै रसोंमें मधुर रस श्रेष्ठहै लवणों में सैंधव श्रेष्ठहै फलोंमें अनार आंवला मुनक्का खजूर फालसा खिन्नी और बिजौरा नीबू श्रेष्टहैं पत्रशाकोंमें बथुआ जीवन्ती और पोईश्रेष्ठहै फल शाकोंमें पर्वल श्रेष्ठहै कन्द शाकोंमें जिमीकन्द श्रेष्ठहै जंगली जीवोंके मांस में एण कुरंग और हरिण श्रेष्ठहै पक्षियोंमें तीतर और बटेर श्रेष्ठ है और मछलियों में रोहू श्रेष्ठहै ताम्रवर्ण वाले मृगको हरिण कृष्णवर्णवाले को एण और ताम्र बर्ण वाले मृगकी आकृतिके समान और उससे कुछ बड़े मृगको कुरंग कहतेहैं जलोंमें वर्षाका जल श्रेष्ठहै दुग्धोंमें गौका दूध श्रेष्ठहै घृतोंमें गौकाघृत श्रेष्ठहै तेलों मे तिलका तेल श्रेष्ठहै ईषकी बस्तुओंमें चीनी श्रेष्ठ है ॥ ४४ ॥

अथस्वभावादहितानि ॥

शिम्बीषुमाषान् ग्रीष्मर्तौलवणेष्वोषरंत्यजेत् । फलेषुलकुचंशाकेसार्षपंनहितम्मतम्॥ गोमांसंग्राम्यमांसेषुनहितंमहिषीवसा । मेषीपयःकुसुम्भस्य तैलन्त्याज्यञ्चफाणितम् ॥ इक्षुरसःपरिपक्वोयोऽर्द्धघनफाणितम् । तद्विछोयाराब इतिलोके ॥ ४५ ॥

स्वभावसे अहितकारी ॥

शिंवी धान्यों में उर्द ग्रीष्मऋतु में अहित हैं, लवणों में पांगात्यागने के योग्य है, फलों में बडहर और सागों में सरसो का साग अहित है- गांवके पशुओं के मांस में गोमांसऔर भैंसकी चरबी अहित है, भेडीका दूध कुसुमका तेल, ईख की बस्तुओं में फाणित (ईखकापकाया हुआ रसआधा गाढ़ाहुआ फाणित अर्थात् राब कहाता है) अहित है, ॥ ४५ ॥

अथसंयोगविरुद्धानि ॥

मत्स्यमानूपमांसञ्चदुग्धयुक्तंविवर्ज्जयेत् । कपोतंसर्षपस्नेहंभर्ज्जितम्परिवर्ज्जयेत्॥ मत्स्यानिक्षोर्विकारेणतथाक्षौद्रेणवर्ज्जयेत् । शक्तून्मांसपयोयुक्तानुष्णैर्द्दधिविवर्ज्जयेत् ॥ उष्णैर्नभोऽम्बुनाक्षौद्रंपायसंकृशरान्वितम् । रम्भाफलंत्यजेत्तक्रंदधिबिल्वफलान्वितम् ॥ दशाहमुषितंसर्पिःकांस्येमधुघृतंसमम् । कृतान्नञ्चकषायञ्चपुनरुष्णीकृतंत्यजेत्॥ एकत्रबहुमांसानि विरुध्यन्तेपरस्परम् । मधुसर्पिर्वसातैलंपानीयंवापयस्तथा ॥ ४६ ॥

संयोग से अहित करने वाली बस्तु ॥

मत्स्य और अनूपमांस दूधके साथ न भोजन करे, सरसो के तेल से भुनेहुए कबूतर के मांस को त्याग करदे, गुड आदिक ईखके पदार्थ अथवा सहत के साथ मछली न खाय- मांस और दूधके साथ सत्तू- और गरम चीजों के साथ दही न खाय- गरम वस्तुओं के साथ बर्षाका जल और सहत न खाय- खिचडी के साथ दूधकी बस्तु और केलेका फल न खाय- बेलके साथ दही और मट्ठा न खाय- दशदिनतक कांसेके पात्र में धराहुआ घी अथवा सहत के समभाग न खाय- पक्का अन्नऔर काथफिर पकाकर न खाय- बहुत प्रकार के मांस एकही में मिलाकर न खाय- सहत- घृत चरबी- तेल- जल और दूध एक में मिलाकर न खाय, ॥ ४६ ॥

अथभेषजग्रहणसङ्केतः॥लवणंसैन्धवंप्रोक्तंचन्दनंरक्तचन्दनम्। चूर्णलेहासवस्नेहाः साध्याधवलचन्दनैः ॥ कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचन्दनम् । अंतःसम्मार्ज्जनेज्ञेया

ह्यजमोदायवानिका॥वहिःसम्मार्ज्जनेसैवविज्ञातव्याजमोदिका ॥पयःसर्पिःप्रयोगेषुगव्य मेवहिगृह्यतेसकृद्रसोगोमयकंमूत्रंगोमूत्रमुच्यते ॥ ४७ ॥

औषधि के ग्रहणका संकेत ॥

लवण कहने से सेंधानोन- चन्दन कहने से रक्तचन्दन- परन्तु चूर्ण- अवलेह- आसव और स्नेह में श्वेत चंदन कषाय तथा लेप में प्रायः रक्तचंदन डालाजाता है· खानेपीनेके विषय में अजमोद कहने से अजवाइन लेनी चाहिये और लेपादिकोंमें वही अजमोद लेनाचाहिये- दूध और घी कहने से गौकादूध और घी लेना चाहिये- मलकारस और मूत्र लिखाहोतो गौके गोबर का रस और गौका मूत्र लेना चाहिये- ॥ ४७ ॥

प्रतिनिधिः ॥

चित्रका भावतोदन्तीक्षारःशिखरिजोऽथवा। अभावेधन्वयासस्यप्रक्षेप्यातुदुरालभा ॥ (शिखरीअपामार्गः।) तगरस्याप्यभावेतुकुष्ठंदद्याद्विषग्वरः । मूर्वाभावेत्वचोग्राह्याजिंगिनीप्रभवाबुधैः ॥ अहिंस्रायाअभावेतुमानकन्दः प्रकीर्त्तितः । लक्ष्मणायाअभावेतु नीलकण्ठशिखामता ॥ वकुलाभावतोदेयंकल्हारोत्पलपङ्कजम् । नीलोत्पलस्याभावेतु कुमुदंदेयमिष्यते ॥ जातीपुष्पं नयत्रास्तिलवङ्गंतत्रदीयते । अर्कपर्णादिपयसो ह्यभावे तद्रसोमतः ॥ पौष्करामावतःकुष्ठंतथालांगल्यभावतः। स्थौणेयकस्याभावेतुभिषग्भिर्दीयतेगदः ॥ चविकागजपिप्पल्यौपिप्पलीमूलवत्स्मृतौ । अभावेसोमराज्यास्तुप्रपुन्नाटं फलंमतम् ॥ यदिनस्याद्दारुनिशातदादेयानिशावुधैः। सोमराजीवाकुची ॥ प्रपुनाटफलं चक्रमर्द्दनफलम्।दारुनिशादारुहरिद्रा॥निशाहरिद्रा । रसाञ्जनस्याभावेतुसम्यग्दार्वीप्रयुज्यते ॥ सौराष्ट्र्यभावतोदेयास्फटिकातद्गुणाजनैः । सौराष्ट्रीसोरटीमाटीइतिलोके ॥ स्फटिकाफटिकारीइतिलोके । तालीशपत्रकाभावे स्वर्णतालीप्रशस्यते ॥ भार्ग्यभावेतुतालीशंकण्टकारीजटाथवा । रुचकाभावतोदद्याल्लवणंपांशुपूर्व्वकम्। अभावेमधुयष्ट्यास्तुधातकीञ्चप्रयोजयेत् ॥ रुचकंचौहारइतिलोक । पांशुलवणंखारीअथवा रेहइतिलोके। अम्लवेतसकाभावे चुक्रंदातव्यमिष्यते । द्राक्षायदिनलभ्येत प्रदेयंकश्मरीफलम् ॥ तयोरभावेकुसुमं बन्धूकस्यमतंबुधैः । लवंगकुसुमंदेयं नखस्याभावतःपुनः ॥ कस्तूर्य्यभावेकङ्कोलं क्षेपणीयंबिदुर्बुधाः । कङ्कोलस्याप्यभावेतु जातीपुष्पंप्रदीयते ॥ सुगन्धिमुस्तकंदेयं कर्पूराभावतोबुधैः। कर्पूराभावतोदेयं ग्रन्थिपर्णंविशेषतः ॥ कुंकुमाभावतोदद्यात् कुसुम्भकुसुमंनवम्। श्रीखण्डचन्दनाभावे कर्पूरंदेयमिष्यते॥ अभावे ल्वेतयोर्वैद्यः प्रक्षिपेद्रक्तचंदनम् । रक्तचंदनकाभावे नवोशीरंविदुर्बुधाः ॥ मुस्ताचातिविषाभावे शिवाभावेशिवामता । अभावेनागपुष्पस्य पद्मकेसरमिष्यते ॥ मेदाजीवकाकोली ऋद्धिद्वन्द्वेऽपिवासति । वरीविदार्य्यश्वगंधा वाराहीचक्रमातृक्षिपेत् ॥ (वरीशतावरी) वाराह्याश्चतथाभावेचर्मकारालुकोमतः।वाराहीकंदसंज्ञस्तु पश्चिमेगृष्टिसंज्ञकः॥

वाराहीकंदएवान्यश्चर्म्मकारालुकोमतः । अनूपसम्भवेदेशे वराहइवलोमवान् ॥ भल्लातकासहत्वेतु रक्तचंदनमिष्यते । भल्लातभावताश्चित्रं नलश्चेक्षोरभावनः ॥ सुवर्णाभावतःस्वर्णं माक्षिकंप्रक्षिपेत्बुधः । श्वेतंतुमाक्षिकंज्ञेयं बुधैःरजतवत्धवम् ॥ माक्षिकस्याप्यभावेतु प्रदद्यात्स्वर्णगैरिकम् । सुवर्णंमथवारौप्यं मृतंयत्रनलभ्यते ॥ तत्रकांतेनकर्म्माणि भिषक्कुर्य्याद्विचक्षणः । कांताभावेतीक्ष्णलोहं योजयेद्वैद्यसत्तमः ॥ अभावेमौक्तिकस्यापि मुक्ताशुक्तिंप्रयोजयेत् । मधुयत्रनलभ्येत तत्रजीर्णगुडोमतः ॥ मत्स्यण्डाभावतोदद्यु र्भिषजःसितशर्क्कराम् । असम्भवेसितायास्तु बुधैःखण्डंप्रयुज्यते ॥ क्षीराभावेरसोमौद्गो मासूरोवाप्रदीयते । अत्रप्रोक्तानिवस्तूनि यानितेषुचतेषुच ॥ योज्यमेकतराभावे परंवैद्येनजानता । रसवीर्य्यविपाकाद्यैः समंद्रव्यंविचिन्त्यच ॥ युज्याद्विविधमन्यद्वा द्रव्यानांतुरसादिवित् । योगेयदप्रधानंस्यात्तस्यप्रतिनिधिर्म्मतः ॥ यत्तुप्रधानंतस्यापि सदृशंनैवगृह्यते । व्याधेरयुक्तंयत्द्रव्यं गणोक्तमपितद्त्यजेत् ॥ अनुक्तमपियुक्तंयत योजयेत्तद्रसादिवित् ॥ ४८ ॥

एकके बदले दूसरी बस्तु देना ॥

चीते की छालके अभाव में जमालगोटा अथवा ओंगे का खार लेनाचाहिये, धमासे के अभाव में जवासा- अगरके अभाव में कूट, मरोडफलीके अभाव में मजीठ की छाल, बालछड़ के अभाव में मानकेचू, लक्ष्मणाके अभाव में मोरशिखा, मोमसिरीके अभाव में श्वेत वा नील कमल लेना चाहिये, नील कमल के अभाव में कुमुद, चमेली के अभाव में लौंग, आक और ढाक आदि के दूधके अभाव में उनका रस, पुष्करमूल कलहारी और कुकरौंधा इनके अभाव में कूट, चाव और गजपीपल के अभाव में पीपलामूल, बकुची के अभाव में चकोड़ के बीज- दारु हल्दी के अभाव में हल्दी-रसौत के अभाव में दारुहल्दी सोरठी मट्टीके अभाव में फिटकरी तालीसपत्र के अभाव में स्वर्णताली भारंगीके अभाव में तालीस अथवा भटकटैयाकीजड़ काले निमक के अभाव में खारी निमक सुलहठीके अभाव में धव अमलवेत के अभावमें चूक मुनक्का के अभाव में खंभारी और इन दोनों के अभाव में दुपहरिया का फूल नखके अभाव में लौंग कस्तूरी के अभाव में कंकोल और कंकोलभी न मिले तो चंबेली कपूरके अभाव में नागर मोथा और कुकरौंधा भी के सरके अभाव में नवीन कुसुम के फूल श्रीखंड चन्दन के अभावमें कपूर इन दोनों के अभाव में रक्त चन्दन रक्तचन्दन के अभाव में नवीन खसअतीस के अभाव में नागरमोथा हड़के अभाव में आंवला नागकेसरके अभावमें पद्मकेसर मेदाजीवक काकोली ऋद्धि और वृद्धि के अभावमें क्रम से शतावरि विदारीकन्द असगन्ध और बाराहीकन्द बाराहिकन्द पश्चिमदेशमें गृष्टिकहाताह और उसी को चर्मकार आलु भी कहते हैं यह अनूप देश में उत्पन्नहोता है और इसमें सूअर केसे रोयें होतेहैं भिलावे के अभाव में लालचन्दन अथवा चीता- ईषके अभाव में नरकट- सोने के अभाव में सोना मक्खी- चांदीके अभाव में रूपामक्खी- रूपामक्खी के अभाव में सुनहरी गेरू सोने और चांदी की भस्मके अभाव में कांतीसार कांतीसारके अभाव में फोलाद मोतीके अभाव में मोतीकीसीप सहत के अभावमें पुरानागुड मिश्रीके अभाव में चीनी और चीनीके अभाव में शक्कर और दूधके अभाव में

मूंग अथवा मसूरकारस देना चाहिये यहांपर जो बस्तु जिसके स्थानपर कहीहैं उनके अभावही में वह वस्तु लेनीचाहिये- रस- वीर्य और बिपाक आदिकों से द्रव्यकी समताको बिचारकर अनेक प्रकारकी अन्य वस्तुभीलेवे औषधियों के संयोग में जो द्रव्य प्रधान नहीं है उस के बदले में दूसरी बस्तुलीजातीहै परन्तु जो प्रधानहै उसके सदृश अन्यनहीं लीजातीहै जो द्रव्य रोगमें हितकारी नहो और समूह में कही भी होय उसका त्यागकरदेना चाहिये और बिनाकही हुई भी रोग में हितकारी बस्तुको रसादिकोंका जाननेवाला बैद्य ग्रहण करे ॥ ४८ ॥

इतस्तुद्रव्यगत पञ्चपदार्थ कर्म्माण्याह ।

द्रव्येरसोगुणोवीर्य्यं विपाकःशक्तिरेवच । पदार्थःपञ्चतिष्ठन्ति स्वंस्वंकुर्वंतिकर्म्मच ॥ (तत्र वाग्भटः) रसःस्वाद्वम्ललवण तिक्तोषणकषायकाः । षट्द्रव्यमाश्रितास्तेच यथा पूर्व्वंबलावहाः ॥ (ऊषणः कटुः) तत्राद्यामारुतंघ्नंति स्त्रयस्तिक्तादयःकफम् । कषाय तिक्तमधुराः पित्तमन्येतुकुर्व्वते ॥ येरसावातशमनाः भवंतियदितेषुवै । रौक्ष्यलाघवशैत्यानि नतेहन्युःसमीरणम् ॥ येरसाःपित्तशमना भवंतियदितेषुवै । तीक्ष्णोष्णलघुताचैव नतेतत्कर्म्मकारिणः ॥ येरसाश्लेष्मशमना भवंतियदितेषुवै । स्नेहगौरवशैत्यानि नते हन्युःकफंतदा ॥ ४९ ॥

द्रव्यमें रहनेवाले पांचपदार्थों के कर्म ॥

द्रव्यमें रस गुण वीर्य्य विपाक और शक्ति यह पांच पदार्थ रहतेहैं और अपना २ कार्य्य करते हैं वाग्भटने कहाहैकि मधुर अम्ल लवण तिक्त कटुऔर कषाय यहछः रस द्रव्यमें रहतेहैं यह एक से एक पूर्बके क्रमसे अधिक बलके देनेवालेहैं इन सें से पहले तीन बायुको शान्तकरते हैं और तिक्तादिक तीन कफको शान्तकरते हैं और कषाय तिक्त तथा मधुर पित्तको शान्त करते हैं और बाकी तीन २ बढ़ाते हैं बातके शान्त करने वाले रसोंमें जो रूखापन हलकापन और शीतलता होवे तो वह बायु को नहीं शान्त करताहै पित्तके शान्त करने वाले रसोंमें जो तीक्ष्णता उष्णता और लघुता होवे तो वह पित्तको नहीं शान्त करतेहैं कफ के शान्त करनेवाले रसोंमें जो भारी शीतल और चिकनापन होयतो वह कफको नहीं शान्त करता है ॥ ४९ ॥

तत्रमधुरसस्य गुणाः ॥

मधुरोहिरसःशीतो धातुस्तन्यबलप्रदः । चक्षुष्योवातपित्तघ्नः कुर्य्यात्स्थौल्यमल कृमीन् ॥ रसेषुप्रवरश्चापि स्निग्धःप्रीत्यायुषोहितः । बालवृद्धक्षतक्षीण वर्णकेशेन्द्रियौजसाम् ॥ प्रशस्तोबृहणंकण्ठ्यो गुरुःसंधानकृत्मतः । विषघ्नःपिच्छिलश्चापि स्निग्धः प्रीत्यायुषोहितः ॥ ५० ॥

मधुर रसके गुण ॥

मधुर रस शीतल धातु दुग्ध तथा बल करनेवाला नेत्रोंकोहित बात पित्तका नाशक स्थूलता मल तथा कृमियोंका उत्पन्न करनेवाला बालक वृद्ध घायल क्षीण बर्ण केश इन्द्री और ओजको हितकारी है धातुओं का बढ़ानेवाला कंठको हितभारी टूटेको जोड़नेवाला बिषनाशक चिकना और फिसलाहट वाला और प्रीति तथा आयु को हितकारी होता है ॥ ५०

अथातियुक्तस्य मधुररसस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोज्वरश्वास गलगण्डार्वुदकृमीन्। स्थौल्याग्निमान्द्यमेहांश्च कुर्य्यात्मेदः कफामयान् ॥ ५१ ॥

मधुर रसके बहुत सेवन करने के गुण॥

बहुत सेवन कियाहुआ मधुर रस ज्वर- श्वास- गलगण्ड- अर्वुद- कृमि- स्थूलता- अग्निकी मन्दता- प्रमेह- मेद और कफके रोगोंको करता है- ॥ ५१ ॥

अथाम्लस्य गुणाः ॥

रसोऽम्लंःपाचनोरुच्यःपित्तश्लेष्मासुदोलघुः । लेखितोष्णोबहिःशीतक्लेदनःपवनापहः ॥ स्निग्धस्तीक्ष्णःसरःशुक्रबिबन्धानाहदृष्टिहा । हर्षणो रोमदन्तानामक्षिभ्रूविनिकोचनः ॥ लेखितःलेखनःबहिःशीतःस्पर्शेशीतःविनिकोचनःसङ्कोचनः ॥ ५२ ॥

अल्मरसके गुण ॥

अल्मरस पाचन- रुचि करनेवाला- पित्त श्लेष्मा तथा रुधिर का बढ़ानेवाला- हलका- लेखन. स्पर्शमें शीतल. उष्ण- क्लेदन- वायुनाशक- चिकना- तीक्ष्ण- रेचक (दस्तावर) वीर्य्य- बिबन्ध- अफरा- तथा दृष्टिकानाशक- रोमतथा दांतोंको खट्टा करने वाला और नेत्रतथा भृकुटियोंका संकोच करनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

अथातियुक्तस्याम्लस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोभ्रमंकुर्य्यात्तृट्दाहतिमिरज्वरान् । कण्डुपाण्डुत्ववीसर्पशोथविस्फोटकुष्ठकृत् ॥ ५३ ॥

बहुत सेवन कियेहुए अल्मरसके अवगुण ॥

बहुत सेवन कियागया अल्मरस भ्रम- तृषा- दाह-तिमिर- ज्वर- खुजली,पांडु, विसर्प, सूजन बिस्फोटक और कुष्टरोगको उत्पन्न करता है- ॥ ५३ ॥

अथलवणस्यगुणाः ॥

लवणःशोधनोरुच्यःपाचनःकफपित्तदः ॥ पुंस्त्वबातहरःकायशैथिल्यमृदुताकरः । चक्षुर्नासास्यजलदःकपोलगलदाहकृत् ॥ ५४ ॥

लवण रसके गुण ॥

लवण रस संशोधन करने वाला- रुचिकारक- पाचन- कफपित्त करनेवाला- पुरुषार्थ तथा वात का नाशक- शरीरमें शिथिलता- तथा कोमलता करनेवाला- नेत्र- नासिका- तथा मुखमें जलका बढ़ाने वाला और कपोल तथा गलेमें दाह करनेवाला होता है ॥ ५४ ॥

अतियुक्तस्यलवणस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोऽक्षिपाकास्रपित्तकोठक्षतादिकृत् । वलीपलितखालित्यंकुष्ठवीसर्प्पतृट्प्रदः ॥ कोठोवरटाकृतदंशशोथवत् पलितंकेशशुक्लता । खलित्यंशिरसिकेशनाशः ५५ ॥

बहुत सेवन कियेहुए लवण के अवगुण ॥

बहुत सेवन कियाहुआ लवण रस नेत्रोंका पकना रक्तपित्त- चकत्ते- घाव- झुर्री- बालोंकी सफेदी गंजापन- कुष्ठ- विसर्प और तृषा इनको करता है ॥ ५५ ॥

अथकटुगुणाः ॥

कटुरुष्णश्चतीक्ष्णश्चविशदोवातपित्तकृत्।श्लेष्महल्लघुराग्नेयःकृमिकण्डूविषापहः ॥ रूक्षस्तन्यहरश्चापिमेदःस्थौल्यापकर्षणः।अश्रुदोनासिकास्याक्षिजिह्वाग्रोद्वेजकोमतः ॥ दीपनःपाचनोरुच्यो नासिकाशोषणोभृशम् । क्लेदमेदोवसामज्जाशकृन्मूत्रोपशोषणः ॥ स्रोतःप्रकाशकोरूक्षोमेध्यो वर्च्चोविबन्धकृत् । आग्नेयःअधिकाग्न्याशः मेध्योमेधायैः हितः । वर्चोंबिबन्धकृत् मलबद्धंकरोति ॥ ५६ ॥

कटुरसके गुण ॥

कटुरस- उष्ण- तीक्ष्ण- बिशद- वात पित्त करनेवाला- कफनाशक- हलका- अधिक अग्नि केगुण वाला कृमिखुजली तथा बिषकानाशक- रूखा- दूधका नाशक- मेदतथा स्थूलता का घटाने वाला· आंशू बहानेवाला- नासिका-मुख- नेत्र तथा जिह्वाके अग्रभागको दुखदेनेवाला दीपन- पाचन- रुचि कारक- नाकका सुखाने वाला क्लेद, मेद, चर्बी, मज्जा, मल, तथामूत्रका सुखाने वाला, स्रोतोंका खोलने वाला- रूखा, मेधाका बढ़ाने वाला और मलका रोकने वाला होता है, ॥ ५६ ॥

अतियुक्तस्यकटुरसस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोभ्रान्तिदाहमुखतालवोष्ठशोषकृत् । कण्ठादिपीड़ामूर्च्छान्तर्दाहदोबलकान्तिहृत् ॥ ५७ ॥

बहुत सेवन कियेहुए कटुरस के अवगुण ॥

बहुत सेवन कियागया कटुरस भ्रम दाह, मुखतालु तथा ओठोंका सूखना,कंठादिकों में पीड़ा मूर्च्छा शरीरके भीतर दाह और बलतथा कान्तिका नाश इनसबको करता है ॥ ५७ ॥

अथतिक्तरसस्यगुणाः ॥

तिक्तःशीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफान्जयेत् । कृमिकुष्ठविषोत्क्लेददाहरक्तगदापहः॥ रुच्यःस्वयमरोचिष्णुःकण्ठस्तन्यविशोधनः । वातलोऽग्निकरोनासाशोषणोरूक्षणोलघुः ॥ रुच्यःअन्येषुवस्तुषुरुचिमुत्पादयति । स्वयमरोचिष्णुःयथानिम्बःस्वयन्नरोचते॥ अन्येषुवस्तुषुरुचिंकरोति ॥ ५८ ॥

तिक्तरस के गुण ॥

तिक्त, शीतल, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त तथा कफका जीतने वाला, कृमि, कुष्ठ, विष, क्लेद, दाह तथा रुधिर के रोगोंका नाशक, रुचिकर्ता, आपरुचिसे रहित, कंठ तथा दूध का शोधक, बायुबर्द्धक, अग्निकारक, नाकका सुखाने वाला, रूखा और हलका होता है ॥ ५८ ॥

अतियुक्तस्यतिक्तस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तःशिरःशूलसन्यास्तम्भश्रमार्तिकृत्।कम्पमूर्च्छातृषाकारीबलशुक्रक्षयप्रदः ५९

बहुत सेवन कियेहुए तिक्तरसके अवगुण ॥

बहुत सेवन कियागया तिक्तरस शिरमें पीडा, गलेकी पीछेकी नसका जकड़ना, भ्रम, कम्प मूर्च्छा, तृषा और बलतथा वीर्य्यका नाश इनसबको उत्पन्न करता है ॥ ५९ ॥

अथकषायगुणाः ॥

कषायोरोपणोग्राहीस्तम्भनःशोधनस्तथा। लेखनःपीड़नःसौम्यःशोषणोवातकोपनः ॥ कफशोणितपित्तघ्नोरूक्षःशीतोलघुर्मतः । त्वक्प्रसाधनमामस्यस्तम्भनोविशदोमतः ॥ जिह्वायाजाड्यकृतकण्ठ स्रोतसाञ्चबिबन्धकृतः । रोपणःव्रणस्यस्तम्भनोगात्राणांशो धनोव्रणस्यलेखनोव्रणाद्युतसन्नमांसस्यशोषणोव्रणमज्जादीनाम्पीड़नो हृदयस्यवातका रित्वात्सौम्यःसोमादुत्पन्नः ॥ ६० ॥

कषायरसके गुण ॥

कषायरस घावका भरनेवाला, कब्जकरने वाला, अंगोंको जकड़ने वाला, घावका शुद्ध करनेवाला व्रणपर उठेहुए मांसादिकों का घटाने वाला,हृदयमें पीड़ा करने वाला, सौम्य,घाव तथा मज्जादिकों का सुखानेवाला, बायुवर्द्धक, कफ तथा रक्त पित्त नाशक, रूखा, शीतल,हल्का त्वचा को उत्तम करनेवाला, आंवका रोकने वाला, विशद जिह्वाको जड़करनेवाला और कंठतथास्रोतों को रोकने वाला होता है ॥ ६० ॥

अतियुक्तस्यकषायस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोगृहाध्मानहृत्पीड़ाक्षेपणादिकृत् ॥ ६१ ॥

बहुतसेवनकियेहुएकषायरसकेअवगुण ॥

कषायरसके बहुत सेवन करने से कंठादिकों का जकड़ना- अफरा- हृदयमें पीड़ा और आक्षेप आदिरोग उत्पन्न होतेहैं ॥ ६१ ॥

मधुरादीनामपरेविशेषाः ॥

मधुरंश्लेष्मणंप्रायोजीर्णशालियवादृते । मुद्गाद्गोधूमतःक्षौद्रात् सिताया जाङ्गलामिषात् ॥ अम्लंपित्तकरंप्रायोबिनाधात्रीञ्चदाड़िमम् । लवणंप्रायशोद्वेषिनेत्रयोःसैन्धवं विना ॥ प्रायःकटुतथातिक्तमवृष्यंवातकोपनम् । शुण्ठीकृष्णारसोनानिपटोलममृतंवि ना ॥ चरकेऽपिपिप्पलीनागरंवृष्यंकटुचावृष्यमुच्यते । प्रायशःस्तम्भनंप्रोक्तंकषाय मभयांविना ॥ सामान्येनात्रनिर्दिष्टागुणाःषड्रससम्भवाः । रसानांयोगतस्तुस्यादन्य एवगुणोदयः ॥ संयोगादविषतांयातिसममाज्येनमाक्षिकम् । अमृतत्वंविषंयातिसर्पदष्ट स्यवैयथा ॥ ६२ ॥ मधुरादिरसोंकी और विशेषता ॥

पुराने चावल- जौ- मूंग- गेहूं- सहत- चीनी- और जांगली जीवोंका मांस- इनके सिवाय प्रायः मधुर रस कफकारक होताहै- आंवला और अनार के सिवाय प्रायः अम्लरस पित्तकारक होताहै सेंधोनोनके सिवाय प्रायः लवण नेत्रोंको अहितहोतेहैं- सोंठ- पीपल- लहसन- पवरल और गिलोय के सिवाय प्रायः कटु और तिक्तरस वीर्य्यको अहित और वातके बढ़ाने वाले होतेहैं- चरकमें भी

कहाहै कि पीपल और सोंठ वीर्य्यकोहित और कटुरस अहित होतेहैं- हड़केसिवाय प्रायः कषाय रस स्तंभन करतेहैं- यहांसंक्षेपसे छओंरसोंके गुणकहेगयेहैं परन्तु रसोंके संयोगहोनेसे औरके और गुणहो- जाते हैं- जैसे बराबर मिलेहुए सहत और घृतविष के तुल्य होजाते हैं और सांपके काटे हुएको विष अमृतके तुल्य होजाता है ॥ ६२ ॥

अथगुणाः ॥

लघुर्गुरुस्तथास्निग्धोरूक्षस्तीक्ष्णइतिक्रमात् । नभोभूवारिवातानांवह्वेरेतेगुणाः स्मृताः ॥ ६३ ॥

गुणोंका वर्णन ॥

आकाशका हलकापन- पृथ्वीकी गुरुता- जलकी सचिक्कणता- वायुका रूखापन और अग्निकी तीक्ष्णता गुणहै ॥ ६३ ॥

अथ लघ्वादिगुणवतांगुणाः ॥

लघुपथ्यंपरंप्रोक्तं कफघ्नंशीघ्रपाकिच । लघुद्रव्यमूएवंगुर्वादितथाचोक्तम् ॥ गुर्वा दयोगुणाद्रव्ये पृथिव्यादौरसाश्रये । रसेषुव्यपदिश्यन्ते साहचर्य्योपचारतः ॥ गुरुवात हरंपुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाकिच । स्निग्धंवातहरंश्लेष्मकारिवृष्यंबलावहम् ॥ रूक्षंसमीरणकरं परंकफहरंमतम् । तीक्ष्णंपित्तकरंप्रायो लेखनंकफवातहृत् ॥ सुश्रुतेतुगुणाएते विंशतिस्तान्ब्रुवेशृणु । गुरुर्ल्लघुःस्निग्धरूक्षौ तीक्ष्णःश्लक्ष्णःस्थिरःसरः ॥ पिच्छिलोविशदःशीतउष्णश्चमृदुकर्कशौ । स्थूलःसूक्ष्मोद्रवःशुष्कःआशुर्म्मन्दःस्मृतागुणाः । तत्र गुरुलघुस्निग्धरूक्षतीक्ष्णागुणाउक्ताएव ॥ श्लक्ष्णःस्नेहंविनापिस्यात्कठिनोऽपिहिचिक्कणःस्थिरोवातमलस्तम्मी सरस्तेषांप्रवर्त्तकः । पिच्छिलस्तन्तुलोवल्यःसन्धानःश्लेष्मलोगुरुः ॥ सन्धानोभग्नस्य । क्लेदच्छेदकरःख्यातोविशदोव्रणरोपणः । शीतस्तुह्लादनःस्तम्भीमूर्च्छातृट्स्वेददाहनुत ॥ उष्णोभवतिशीतस्यविपरीतश्चपाचनः । ह्लादनःसुखजनकःस्तम्भीरक्तातिप्रवृत्त्यादीनामुष्णः ॥ शीतस्यविपरीतस्तेनअसुखजनकःरक्तातिप्रवृत्त्यादीनामुस्तम्भनः । मूर्च्छातृट्स्वेददाहकृत् पाचनोव्रणादीनाम् ॥ मृदुकर्कशौप्रसिद्धौस्थूलःस्थौल्यकरौदेहे स्रोतसामवरोधकृत् । देहस्यसूक्ष्मच्छिद्रेषुविशेत्यत सूक्ष्ममुच्यते ॥ द्रवःक्लेदकरोव्यापी शुष्कस्तदविपरीतकः । आशुराशुकरोदेहेधावत्यम्भसितैलवत् ॥ मन्दःसकलकार्येषुशिथिलोऽल्पोऽपिकथ्यते ॥ ६४ ॥

लघुआदिगुणयुक्तद्रव्योंकेगुण ॥

लघुद्रव्य अत्यन्त हितकारी- कफ नाशक और शीघ्र परिपाक होने वाला होताहै यहांलघुशब्द का अर्थ लघुगुणयुक्त द्रव्यहै इसीप्रकार गुरुआदिकों मेंभी जानना चाहिये ऐसाही कहागयाहै कि गुरु आदिक गुणरसके आश्रय भूतपृथिवी आदिक द्रव्योंमें होतेहैं और पृथिवी आदिकों के एकसाथ होने के माननेसे रसों में कहे जातेहैं- गुरुगुण युक्तद्रव्य बातनाशक- पुष्टता तथा कफकारक और देरमें पकनेवाली होती है- स्निग्धद्रव्य बातनाशक कफकारक वीर्य्यबर्द्धक और बलकारक होतीहै

रूखीद्रव्य वायुवर्द्धक और अत्यन्त कफ नाशक होतीहै- तीक्ष्ण द्रव्य पित्तकारक- लेखन और कफ बातनाशकहोती है- और सुश्रुतमें यह गुणसंख्यामें बीसकहेगयेहैं उनको कहते हैं- गुरु- लघु- स्निग्ध- रूक्ष- तीक्ष्ण- श्लक्ष्ण- स्थिरसर- पिच्छिल- विशद शीत- उष्ण, मृदु, कर्कश, स्थूल,सूक्ष्म, द्रव, शुष्क आशुऔर मन्द इनमेंसे गुरु, लघु- स्निग्ध, रूक्ष और तीक्ष्ण इनका वर्णन तोहो चुकाहै और शेषोंका वर्णन करतेहैं श्लक्ष्ण द्रव्यस्नेह रहित कठिन होकर भी चिकनी होती है- स्थिर द्रव्य वात और मलको रोकतीहै, सरद्रव्य वायु और मलको प्रवृत्त करतीहै- पिच्छिल गुणयुक्त द्रव्य तन्तुयुक्त बलकारक, टूटेको जोड़ने वाली, कफ वर्द्धक और गुरुहोती है विशद गुणयुक्त द्रव्य क्लेदनाशक और घावकी भरनेवाली होतीहै, शीत गुणयुक्त द्रव्य सुखदायी, और रुधिरके बहने आदिको रोकने वाली होतीहै, उष्ण गुणयुक्त द्रव्यशीतसे विपरीत अर्थात् दुःखदायी तथा रुधिर आदिके बहनेको नहीं रोकने वाली मूर्च्छा, तृषा, स्वेद तथा दाह करने वाली और व्रणादिकों को पकाने वाली होतीहै मृदु और कर्कश प्रसिद्ध हैं, स्थूलगुण युक्त द्रव्यशरीरकी स्थूल करने वाली और स्रोतों की रोकने वाली होतीहै, सूक्ष्मगुण युक्त द्रव्य शरीरके सूक्ष्माछिद्रोंमें प्रवेश करतीहै, द्रवगुण युक्त द्रव्य क्लेद कारक और व्यापी होती है,शुष्कगुण युक्तद्रव्य क्लेदशोषक और अव्यापी होतीहै, आशुगुणयुक्त द्रव्य जलमें तेलके समान शीघ्र शरीरमें फैल जातीहै, मन्दगुण युक्तद्रव्य संपूर्ण कार्योंमेंशिथिल और अल्पताकरने वाली होतीहै ॥ ६४ ॥

अथ गुणप्रस्तावेदीपनादयोगुणाःसलक्षणालिख्यंते ॥

पचेन्नामंवह्निकृद्यद्दीपनं तद्यथामिसिः ।वह्निकृद्वह्निदीप्तिकृत् । ननुयद्वह्निंप्रदीपयति॥ तदामंकथंनैपचेदित्याशंकायामुच्यतेदीपनद्रव्यंतावन्तंवह्निंप्रदीपयति।तथाअन्नेभोक्तुमिच्छामुत्पादयतिनत्वामंपक्तुंक्षमः यथासूक्ष्मदीपाग्निरुथातंकरोतिनतुबृहत्स्थालस्थान् तण्डुलानोदनंकर्त्तुंक्षमः॥ ६५ ॥

अबगुणोंकेवर्णनमें दीपनआदिकगुणलक्षणसहितलिखे जातेहैं ॥

जिसकेद्वारा आमका परिपाक न होय और अग्नि की दीप्तिहो वह दीपन कहलातीहै जैसे सौंफ अबयह सन्देह उत्पन्न होताहै कि जो अग्निको दीप्तकरताहै वह आपको क्यों नहीं पचाता इसका उत्तर यह है कि जैसे सूक्ष्मदीपककी अग्नि प्रकाशकरतीहै परन्तु बड़ीडेगचीमेंस्थितहुए चावलोंको नहीं पकासक्तीहै इसी प्रकार दीपन बस्तु उतनीही अग्निको प्रकाशित करतीहै जिससे अन्नम भोजनकी रुचि होती है परन्तु आमको परिपक्व नहीं करसक्ती ॥ ६५॥

पचत्यामन्नवह्निञ्चकुर्य्याद्यत्तद्विपाचनम् । नागकेशरवद्विद्याच्चित्रोदीपनपाचनः ॥ ननुयद्वह्निंनदीपयति तदामंकथंपचतीत्याशङ्कायामाह । पाचनबह्निदीप्तिमकुर्वाणमप्याम्पचति । यथाग्न्याधानीस्थोंऽगारसमूहोऽन्नम्पचति । नतुदीपवत्सर्व्वतःप्रदीपयति ६६

जिसकेद्वारा आमकापरिपाकहो और अग्निकी दीप्ति नहोय वह पाचन जैसे नागकेशर और चीते में दीपन और पाचन दोनोंगुण हैं अब यह सन्देह होताहै कि जो अग्निको दीपन नहीं करताहै वह आमको कैसे पचासक्ता है इसका उत्तर यह है कि जैसे अग्निके स्थानमें रक्खा हुआ अंगारोंका समूह अन्नको पकाताहै परन्तु दीपकके समान सब ओर प्रकाश नहीं करता इसी प्रकार पाचनबस्तु अग्निको बिना दीप्ति किये अन्नको पचाती है ॥ ६६ ॥

नशोधयतियत्दोषान्समान्नोदीरयत्यपि । समीकरोतिविषमान्शमनन्तद्यथामृता ॥ यत्द्रव्यन्दोषत्रयं नशोधयतिनोर्द्धाधोमार्गाभ्यामानयति । समान्दोषान्नोदीरयति नवर्द्धयतिशमनंतत् ॥ ६७ ॥

जिसके द्वारा वा तादिक दोष ऊर्द्ध्व, वा अधो मार्गसे न निकाले जांय तथा समदोष अपने स्थान से न हटाये जांय और अपने प्रमाण से न्यूनअथवा अधिक भाव में स्थित दोष समता को प्राप्त किये जांय वह शमन कहलाता है जैसे गिलोय ॥ ६७ ॥

कृत्वापाकम्मलानाञ्चभित्त्वाबन्धमधोनयेत् । तच्चानुलोमनंज्ञेयं यथाप्रोक्ताहरीतकी मलानाम् । अपक्कानांवातपित्तश्लेष्मणांबन्धंवायुबन्धंभित्त्वाअधीनयेत् मलानधःपातयति ॥ पक्तव्यंयदपक्तेवश्लिष्टंकोष्ठेमलादिकम् । नयत्यधःस्रंसनन्तद्यथास्यात्कृतमालकम् ॥ मलादिकम्आदि शब्दात्कफ पित्ते । कृतमालःधनबहेराइतिलोके ॥ ६८ ॥

जोद्रव्य बिना परिपाक हुए बात पित्त और कफको परिपाक करके बायुके बंधन को तोड़के मलोंको नीचेले जाती है उसको अनुलोमन कहते हैं जैसे हड़ जो द्रव्यकोष्ठ में लिपटे हुए पाक करने के योग्य मलकफ और पित्तको नीचे गिराती है उसको स्रंसन कहते हैं जैसे अमलतास॥ ६८

मलादिकमबद्धंयद्बद्धंवापिण्डतंमलैः । भित्त्वाधःपातयतियद्भेदनंकटुकीयथा ॥ अबद्धं शिथिलम्बद्धंगाढ़ंमलैःदोषैःतत्रापिवातैः । बहुत्वमाधिक्यबोधनार्थन्तैःपिण्डितम् । गुटिकीकृतम् ॥ विपक्वंयदपक्वंवामलादिद्रवतांनयेत् । रेचयत्यपितज्ज्ञेयंरेचनन्त्रिवृतायथा ॥ रेचयत्यपिअधःपातयतिचत्रिवृतापनिलरा ॥ ६९ ॥

जो द्रव्य बंधेहुए नहीं बंधेहुए अथवा अधिक बायुके द्वारा गांठके समान होजाने वाले मलको तोड़कर नीचे गिराती है वह भेदन कहलाती है,जैसे कुटकी, जो द्रव्य पकेहुए अथवा बिना पकेहुए अथवा बिनापके हुए मालादिको पतला करके नीचेसे निकालतीहै वह रेचन है जैसे निसोत ॥६९॥

अपक्वंपित्तश्लेष्मान्नंबलादूर्ध्वंनयेत्तुयत् । वमनन्तद्विविज्ञेयंमदनस्यफलंयथा ॥ ऊर्ध्वंनयेतुमुखमार्गेणवहिष्कुर्य्यात् । मदनस्यफलंमयनफलामितिलोके ॥ ७० ॥

जो द्रव्य बिनापके हुए पित्तकफ और भोजन कियेहुए पदार्थ को जबरदस्ती मुखके मार्ग से बाहर निकालती है वह व मनकहलाती है जैसे मैनफल ॥ ७० ॥

स्थानाद्यद्विर्नयेदूर्ध्वमधोवामूलसञ्चयम् । देहेसंशोधनन्तत्स्यादेवदालीफलंयथा ॥ देवदालीसोनैआइतिलोके ॥ ७१ ॥

जोद्रव्य शरीरमें इकट्ठेहुए मलको अपने स्थान से बाहर नीचे अथवा ऊपरलेजाय इसको संशोधन कहते हैं जैसे देवदाली अर्थात् सुनैया, ॥ ७१ ॥

दीपनम्पाचनंयत्स्या दूष्णत्वाद्रवशोषकम् । ग्राहीतच्चयथाशुण्ठी जीरकंगज पिप्पली ॥ ७२ ॥

जो द्रव्य दीपन पाचन दोनों गुणों से युक्त और उष्णताके कारण द्रवको सुखाने वालीहो उस को ग्राही कहते हैं जैसे सोंठ, जीरा और गजपीपल, ॥ ७२ ॥

रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्चयद्भवेत् । वातकृत्स्तम्भनन्तत्स्याद्यथावत्स कटुएटुको ॥ वातकृत्प्रतिलोमवातकृत् । स्तम्भनंअधोगामिमलादीनाम् । वत्सकंकुरै आटुएटुकःसोनापाठा ॥ ७३ ॥

जो द्रव्य रूखापन, शीतलता, कषैलापन और जल्दी परिपाक होने से वायुको उलटी करके नीचे जानेवाले मलादिकों को रोके वह स्तंभन कहलाती है जैसे कुरैया और सोनापाठा ॥ ७३ ॥

श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयतियद्बलात् । च्छेदनन्तत्यथाक्षारमरिचानिशिलाजतु ॥ क्षारायवक्षारादयः ॥ ७४ ॥

जो द्रव्य लिपटे हुए कफादि दोषोंको बल पूर्वक उखाड़ती है वह छेदन कहलाती है, जैसे जवाखार आदिकखार मिरच और शिलाजीत, ॥ ७४ ॥

धातून्मलान्वादेहस्यविशोष्योल्लेखयेच्चयत् । लेखनन्तद्यथाक्षौद्रंनीरमुष्णंवचाय वाः ॥ उल्लेखयेत्कृशीकुर्य्यात् । लेखनं कृशीकारकंक्षौद्रंमधुयवाइन्द्रयवाः ॥ ७५ ॥

जो द्रव्य शरीर के धातुओं और मलोंको सुखाकर दुर्बल करे उसको लेखनकहते हैं जैसे सहत गरम जल वचऔर इन्द्रजव ॥ ७५ ॥

यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषुहर्षोवाजीहितद्यथाश्वगन्धामुशलीशर्करांचशतावरी ॥ हर्षो रन्तुंसमुत्साहः ॥ ७६ ॥

जोद्रव्य स्त्रियोंके संभोग करने में उत्साह उत्पन्न करे उसको वाजीकरण कहते हैं जैसे असगंध मछली, शर्कर और सतावर ॥ ७६ ॥

यस्माच्छुक्रस्यवृद्धिःस्याच्छुक्रलंहितदुच्यते ॥ यथानागबलाद्याः स्युर्वीजञ्चकपिकच्छुजम् । नागबलागुलसकरी ॥ ७७ ॥

जिस द्रव्यके द्वारा वीर्य्यकी वृद्धिहोय उसे शुक्रल कहतेहैं जैसे गुलशकरी और कवांचके बीज ७७॥

दुग्धंमाषाश्चभल्लातफलमज्जामलानिच । एतानिजनकानिस्युःरेचकानिचरेतसः ॥ जनकानिप्रभावाच्छीघ्रमेवरसाद्युत्पादनपूर्व्वकंशुक्रञ्जनयन्ति । रेचकाणिआधिक्यात् प्रवर्त्तयन्तिच ॥ ७८ ॥

दूध, उर्द, भिलावेंका फल तथा मज्जा और आमला यह संपूर्ण पदार्थ अपने प्रभाव से शीघ्र रसादिकों को उत्पन्न करके वीर्य्यको उत्पन्न करतेहैं और अधिकताके कारण निकालते भीहैं॥७८॥

प्रवर्त्तनीस्त्रीशुक्रस्यरेचकंबृहतीफलम्।जातीफलंस्तम्भकंस्यात्कालिंगंक्षयकारिच ॥ स्त्रीस्मरणकीर्त्तनदर्शनसम्भाषणस्पर्शनचुम्बनालिङ्गननिधुवनैः समस्तैर्व्यस्तैश्चशुक्रस्यप्रवर्तिनी । प्रवर्तिनीप्रवृत्तिकारिणी।रेचकम् बृहतीफलम् । बृहत्कण्टकारीफलमपि शुक्रस्यरेचकम प्रवर्त्तकम । कालिंगंकालिन्दफलम् ॥ ७९ ॥

स्त्री स्मरण, कीर्त्तन, दर्शन, भाषण, स्पर्श, चुम्बन, आलिंगन और मैथुन इन सबसे और प्रत्येक से भी वीर्य्य को प्रवृत्तकरताहै और भटकटैयाका फलभी वीर्य्यको निकालताहै, जायफल वीर्य्य का स्तंभन करता है और तरबूज वीर्य्य का नाशक है ॥ ७९ ॥

रसायनन्तुतज्ज्ञेयंयज्जराव्याधिनाशनम् । यथाहरीतकीरुद्रन्तीचगुग्गुलुश्चाशिलाजतु ॥ ८० ॥

जो द्रव्य वृद्धावस्था और रोगोंको नाशकरे उसको रसायन कहते हैं जैसेहड़, रुद्रवंती, गुग्गुल और शिलाजीत ॥ ८० ॥

पूर्व्वंव्याप्याखिलंकायंततःपाकञ्चगच्छति । व्यवायितद्यथाभंगाफेनञ्चाहिसमुद्भवम् ॥ अन्यद्रव्यंपक्वन्तद्गुणंकरोतिव्यवायितुअपक्वमेवस्वगुणैःसकलशरीरंव्याप्यपाकंयाति । अहिसमुद्भवफेनमअफीम् ॥ ८१ ॥

जो द्रव्य अपने गुणसे सब शरीरको व्याप्तकरके पीछे परि पाकको प्राप्तहोती है उसको व्यवायि कहतेहैं जैसे भंग और अफीम- अन्यद्रव्य परिपाकको प्राप्तहोकर गुणकरती हैं परन्तु व्यवायि द्रव्य विना परिपाक को प्राप्तहुएअपनेगुणोंसेसंपूर्ण शरीरकोव्याप्तकरके पीछे परिपाकोप्राप्तहोतीहै ८१॥

सन्धिवंधांस्तुशिथिलान्यत्करोतिविकाशितत् । विशोष्यौजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवौ ॥ धातुभ्यःसकलशरीरस्थेभ्योवीर्य्येभ्यः । ओजःउपधातुविशेषम्विशोष्याक्रमुकम्पूगफलम् ॥ ८२ ॥

जो द्रव्य संपूर्ण शरीरमें स्थित वीर्य्योंसे ओजनाम वाली उपधातुको सुखाकर संधिके बन्धनों को शिथिल करतीहै उसको विकाशी कहतेहैं जैसे सुपारी और कोदों ॥ ८२ ॥

बुद्धिंलुम्पतियद्द्रव्यं मदकारितदुच्यते । तमोगुणप्रधानञ्च यथामद्यंसुरादिकम् ॥ मदकारि मादकम् ॥ ८३ ॥

जो द्रव्य अधिक तमोगुणयुक्त और बुद्धिका लोपकरने वाली होतीहै उसको मादक कहते हैं जैसे सुरा आदिकमद्य ॥ ८३ ॥

व्यवायिचविकाशिस्यात् श्लेष्मच्छेदिमदावहम् ।आग्नेयंजीवितहरं योगवाहिस्मृतं विषम् ॥ व्यवायि सकलकाय गुणव्यापनपूर्वकपाकगमन शीलम् । विकाशिओजः शोषण पूर्वक संधिबंध शिथिलीकरण शीलम् । मदावहम् तमोगुणाधिक्येन वुद्धिविध्वंसकम् । आग्नेयं अधिकाग्नि गुणम् । योगवाहि संसर्गि गुण ग्राहकम् । विषंलक्ष्यं दृष्टान्तो वत्सनाभशक्तुकादिभिः ॥ ८४ ॥

व्यवायि अर्थात् संपूर्ण शरीरमें अपने गुणको व्याप्तकरके परिपक्व होने वाला विकाशि अर्थात् ओजको सुखाकर संधिके बंधनोंको शिथिलकरने वाला कफ नाशक, मदावह अर्थात् तमोगुणकी अधिकतासे बुद्धि नाशक अधिक अग्निके गुणोंसे युक्त, प्राण नाशक और संसर्गी के गुणोंका लेने वाला द्रव्य विष कहलाताहै, जैसे वत्सनाभ और शक्तुक आदि ॥ ८४ ॥

निजवीर्य्येणयद्द्रव्यं स्रोतोभ्योदोषसञ्चयम् । निरस्यतिप्रमाथिस्यात्तद्यथामरिचं बचा ॥ (दोषावातादयः) ॥ ८५ ॥

जो द्रव्य अपने वीर्यके द्वारा स्रोतों से इकट्ठे हुएवातादि दोषोंको निकालतीहै उसको प्रमाथी कहतेहैं जैसे काली मिर्च औरवच ॥ ८५ ॥

पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्य रुद्धारसवहाःशिरा । धत्तेयद्गौरवंतत्स्यादभिष्पन्दियथा दधि ॥ (गौरवंशरीरे) ॥ ८६ ॥

जो द्रव्य पिच्छिलता और गौरवताके कारण रसके ले जाने वाली शिराओंको रोकंकर शरीरमें भारीपन उत्पन्न करतीहै उसको अभिष्पन्दी कहतेहैं जैसे दही ॥ ८६ ॥

विदाहिद्रव्यमुद्गारमम्लंकुर्य्यात्तथातृषाम् । हृदिदाहञ्चजनयेत्पाकंगच्छतिचिरात् ॥ ८७ ॥

जिसद्रव्य के भोजन करने से डकार खट्टी आवे प्यास और दाह उत्पन्नहो और परिपाक बहुत देरमें हो उसको बिदाही कहते हैं ॥ ८७ ॥

गृह्णातियोगवाहिद्रव्यंसंसर्गिबस्तुगुणान्। पच्यमानंतथैतन्मधुजलतैलाज्यसूतलोहादि ॥ ८८ ॥

जो द्रव्य संसर्गी बस्तुके गुणोंको ग्रहण करे उसको योग वाही कहते हैं जैसे सहत जल तेल घृत पारा और लोहा आदिक यह सब पाक होनेपर जिस बस्तुके साथ होतेहैं उस बस्तुके गुणको ग्रहण करलेतेहैं ॥ ८८ ॥

अथवीर्य्यमृतत्रवाग्भटः ॥

उष्णशीतगुणोत्कर्षात्बुधैःवीर्य्यम्द्विधास्मृतम् । यत्सर्वमग्निसोमीयंदृश्यतेभुवनत्रयम् ॥ ८९ ॥

वाग्भटके मतसे वीर्य्य का बर्णन ॥

बुद्धिमान् लोगोंने उष्ण और शीत गुणोंकी अधिकतासे दो प्रकार का बीर्य्य कहाहै क्योंकि संपूर्ण संसार अग्नि और जलमय दिखाई देता है ॥ ८९ ॥

अथतद्गुणः॥उष्णंबातकफौहन्याच्छीतन्तुतनुतेजराम्। शीतंवातकफातङ्कान्कुरुतपित्तहृत्थरम् ॥ अन्यच्चतत्रोष्णंभ्रमतृट्ग्लानिस्वेददाहाश्रुपाकताम् । समञ्चबातकफयोःकरोतिशिशिरंपुनः । ह्लादनंजीवनंस्तम्भंप्रसादंरक्तपित्तयोः ॥ ९० ॥

वीर्य्यके गुण ॥

उष्ण बीर्य बायु कफ नाशक और पित्त तथा जीर्णताका बढ़ाने वाला होता है औरभी कहाहुआहै कि उष्ण वीर्य्य भ्रम तृषा ग्लानि स्वेद दाह और शीघ्र परिपाक को करताहै और इससे बात कफकी शान्तिभी होती है शीतल वीर्य हर्ष जीवन मलका स्तंभ और रक्त पित्तकी प्रसन्नता को करताहै॥९०॥

अथविपाकः ॥

जाठरेणाग्निनायोगाद्यदुदेतिरसान्तरम् । रसानांपरिणामांतेसविपाकइतिस्मृतः ॥ मिष्टःपटुश्चमधुरमम्लोऽम्लंपच्यतेरसः । कटुतिक्तकषायाणांपाकःस्यात्प्रायशःकटुः ॥ (तथाचवाग्भटः) त्रिधारसानांपाकःस्यात्स्वाद्वम्लकटुकात्मकः ॥ प्रायःपदेनत्रीह्यिः स्यात्स्वाद्वम्लरविपाकतः । शिवाकषायामधुरापाकेशुण्ठीकटुकामधुरपाकेत्यादि ॥ ९१ ॥

विपाक का वर्णन ॥

जठराग्निके संयोगसे भोजनके जो रस उत्पन्न होतेहैं उनके परिणाममें जो एक दूसरा रस उत्पन्न होताहै उसको विपाक कहतेहैं मधुर और लवण रसका विपाक मधुर अम्ल का विपाक अम्ल और तिक्त कटु तथा कषाय रसका विपाक प्रायः कटु होताहै ऐसाही वाग्भटने कहाहै कि मधुर अम्ल और कटु इनभेदों से रसोंका विपाक तीन प्रकार का होताहै यहां प्रायः शब्द से यह तात्पर्य्यहै कि यह नियम सब कहीं नहींहै क्योंकि चावल का रस मधुर और विपाक खट्टाहोताहै हड़कपैली है इसका विपाक मधुर होताहै और सोंठि कटु है इसका विपाक मधुर होताहै ॥ ९१ ॥

अथविपाकानांगुणाः ॥

श्लेष्मकृन्मधुरःपाकोवातपित्तहरोमतः । अम्लस्तुकुरुतेपित्तंवातश्लेष्मगदापहः ॥ कटुःकरोतिपवनंकफंपित्तञ्चनाशयेत् । विशेषएवंरसतोविपाकानांनिदर्शितः ॥ ९२ ॥

विपाकोंकेगुण ॥

मधुर विपाक कफ कारक और बात पित्तनाशक, अम्ल विपाक पित्तवर्द्धक और वायु कफकेरोगों का नाशक और कटु विपाक वायुवर्द्धक और कफ पित्तनाशक होता है यहरसोंसे विपाकोंकी विशेषता कही गई है ॥ ९२ ॥

अथप्रभावः ॥

रसादिसाम्येयत्कर्म्मविशिष्टंतत्प्रभावजम् । दन्तीरसाद्यैःतुल्यापिचित्रकस्यविरेचनी ॥ मधुकस्यचमृद्वीकाघृतंक्षीरस्यदीपनम् । प्रभावस्तुयथाधात्रीलकुचस्यरसादिभिः ॥ समापिकुरुतेदोषत्रितयस्यविनाशनम् । क्वचित्तुकेवलंद्रव्यंकर्म्मकुर्य्यात्प्रभावतः ॥ ज्वरंहन्तिशिरोवद्धासहदेवीजटायथा ॥ ९३ ॥

प्रभावकावर्णन ॥

रसादिकोंके तुल्य होनेपर भी जो बिशेष क्रिया उत्पन्नहोतीहै उसे प्रभाव कहतेहैं जैसे चीता और जमालगोटा रसादिकों में तुल्य हैं परन्तु जमालगोटा रेचकहै मुनक्का महुए से और घृत दुग्ध से रसादिकों में तुल्य होनेपर भी दीपन हैं आमला रसादिकों में बडहल के समान होनेपर भी त्रिदोष नाशक है कोई २ द्रव्य केवल प्रभावही से कार्य्य सिद्ध करतीहैं जैसे सहदेईकी जटा शिरमें बांधनेसे ज्वर नष्ट होताहै ॥ ९३ ॥

तथानानौषधियोगेषुफलंप्रतिस्वभावएवाश्रयणीयो नतुतत्ररसादिरूपहेतुविचारः कर्त्तव्यः । (यतआहसुश्रुतः) अमीसामान्यचिंत्यानिप्रसिद्धानिस्वभावतः ॥ आगमेनोपयोज्यानिभेषजानिविचक्षणैः ॥ प्रत्यक्षलक्षणफलाःप्रसिद्धाश्चस्वभावतः । नौषधीर्हेतुभिर्विद्वान्परीक्षेतकदाचन ॥ विरुद्धगुणसंयोगेभूयसाल्पंहिजायते । रसंविपाकस्तौवीर्य्यंप्रभावस्तान्व्यपोहति ॥ इतिरसगुणवीर्य्यविपाकप्रभावाणांस्वरूपाण्यभिधाय कुत्रद्रव्येकेरसगुणवीर्य्यविपाकप्रभावाः संतीतिबोधयितुंद्रव्यगतान्रसगुणवीर्य्यविपाकप्रभावानाह ॥ ९४ ॥

अनेक प्रकारकी औषधियों के योग में फल के लिये स्वभावही का आश्रय करना चाहिये और उसमें रसादि रूप कारणोंका बिचार न करना चाहिये क्योंकि सुश्रुतने भी कहाहै कि जो संपूर्ण औषधि स्वभावसे प्रसिद्धहैं उनमें बिचार और चिन्ता का कोई प्रयोजन नहीं है बुद्धिमान् बैद्य संपूर्ण प्रसिद्ध औषधियोंका व्यवहार शास्त्रकी रीति से करें जो संपूर्ण औषधि स्वभावसे प्रसिद्ध और प्रत्यक्ष फलवाली हैं उनऔषधियोंकी बुद्धिमान लोग हेतुओं से कभी परीक्षा न करें क्योंकि बिरुद्ध गुणके संयोग से दोषोंकी अधिकता और न्यूनता होजातीहै रसको विपाक और रस विपाक को वीर्य्य और सबको प्रभाव नाश करताहै इस प्रकार रसगुण वीर्य बिपाक और प्रभावके स्वरूपोंको कहकर किस द्रव्यमें कौन से रसगुण वीर्य बिपाक और प्रभाव होतेहैं यह जनानेके लिये द्रव्यों में स्थित रसगुण वीर्य्य बिपाक और प्रभावों का वर्णन करतेहैं ॥ ६४ ॥

तत्रप्रथमंहरीतक्याउत्पत्तिनामलक्षणगुणानाह ॥

दक्षंप्रजापतिंस्वस्थमश्विनौवाक्यमूचतुः । कुतोहरीतकीजातातस्यास्तुकतिजातयः ॥ रसाःकतिसमाख्याताःकतिचोपरसाःस्मृताः । नामानिकतिचोक्तानिकिंवातासाञ्चलक्षणम् ॥ केचवर्णागुणाःकेचकाचकुत्रप्रयुज्यते । केनद्रव्येणसंयुक्ताकांश्चरोगान् व्यपोहति ॥ प्रश्नमेतद्यथापृष्टंभगवन्वक्तुमर्हसि । अश्विनोर्वचनंश्रुत्वादक्षोवचनमब्रवीत् ॥ पपातविन्दुर्म्मेदिन्यांशक्रस्यपिवतोऽमृतम् । ततोदिव्यात्समुत्पन्नासप्तजातिर्हरीतकी ॥ हरीतक्यभयापथ्या कायस्थापूतनामृता । हेमवत्यव्यथाचापि चेतकीश्रेयसीशिवा ॥ वयस्थाविजयाचापि जीवन्तीरोहिणीतिच ॥ ६५ ॥

इनमें से प्रथमहड़की उत्पत्ति नाम लक्षण और गुणकहेजातेहैं॥

एक समय स्वस्थ चित्त बैठेहुए दक्ष प्रजापतिसे अश्विनीकुमार पूछतेभये कि हे भगवन् हड़ कहां से उत्पन्न हुई कितनी उसकी जातिहैं उनके रस उपरस नाम लक्षण वर्ण और गुणकितने हैं किस जातिकी हड़ किस काममें लाई जाती है और किस द्रव्यके साथ कौन से रोगोंको नाशकरतीहै आपइस प्रश्नका उत्तर अनुग्रहपूर्वक दीजिये अश्विनीकुमार के बचन को सुनकर दक्ष प्रजापति बोले कि एक समय इन्द्र अमृत पीरहेथे उसका एक बिन्दु पृथ्वीपर गिरपड़ा उससे सात प्रकार की हड़ उत्पन्नहुई हरीतकी- अभया- पथ्या- कायस्था- पूतना अमृता- हैमवती- चेतकी- श्रेयसी- शिवा- वयस्था- विजया- जीवन्ती और रोहिणी यह हड़के नामहैं ॥ ९५ ॥

विजयारोहिणीचैव पूतनाचामृताभया । जीवन्तीचेतकीचेति विज्ञेयाःसप्तजातयः ॥ अलावुवृत्ताविजया वृत्तासारोहिणीस्मृता । पूतनास्थिमतीसूक्ष्मा कथितामांसलामृता ॥ पञ्चरेखाभयाप्रोक्ता जीवन्तीस्वर्णवर्णिनी । त्रिरेखाचेतकीज्ञेया सप्तानामियमाकृतिः ॥ विजयासर्वरोगेषु रोहिणीव्रणरोहिणी । प्रलेपेपूतनायोज्या शोधनार्थेऽमृताहिता ॥ अक्षिरोगेऽभयाशस्ता जीवन्तीसर्वरोगहृत् । चूर्णार्थेचेतकीशस्ता यथायुक्तंप्रयोजयेत् ॥ चेतकीद्विविधाप्रोक्ता श्वेताकृष्णाचवर्णतः । षड्गुलायताशुक्ला कृष्णात्वेकांगुलास्मृता ॥ काचिदास्वादमात्रेण काचिद्गन्धेनभेदयेत् । काचित्स्पर्शेनदृष्ट्यान्या चतुर्द्धाभेदयच्छिवा ॥ चेतकीपादपच्छायामुपसर्प्पन्तियेनराः । भिद्यन्तेतत्क्षणादेव पशुपक्षिमृगादयः ॥

चेतकीतुधृताहस्ते यावत्तिष्ठतिदेहिनः । तावद्विद्येतवेगैस्तु प्रभावान्नात्रसंशयः ॥ नधार्य सुकुमाराणां कृशानांभेषजद्विषाम् । चेतकीपरमाशस्ता हितासुखविरेचनी ॥ सप्तानाम पिजातीनां प्रधानंविजयास्मृता । सुखप्रयोगासुलभा सर्वरोगेषुशस्यते ॥ हरीतकीपञ्च रसा लवणातुवरापरम् । रूक्षोष्णादीपनीमेध्या स्वादुपाकारसायनी ॥ चक्षुष्यालघुरायु ष्या वृंहणीचानुलोमिनी । श्वासकासप्रमेहार्श कुष्ठशोथोदरकृमीन् ॥ वैस्वर्य्यग्रहणीरो ग विबंधविषमज्वरान् । गुल्माध्मानतृषाच्छर्दि हिक्काकण्डूहृदामयान् ॥ कामलांशूलमा नाहं स्नीहानञ्चयकृत्तथा । अश्मरीमूत्रकृच्छ्रञ्च मूत्राघातञ्चनाशयेत् ॥ स्वादुतिक्तक षायत्वात्पित्तहृत्कफहृत्तुसा । कटुतिक्तकषायत्वा दम्लत्वाद्वातहृच्छिवा ॥ पित्तकृत्कटुका म्लत्वा द्वातकृन्नकथंशिवा । प्रभावाद्दोषहन्तृत्वं सिद्धंयत्तत्प्रकाश्यते ॥ हेतुभिःशिष्यबो धार्थं नपूर्व्वंकथ्यतेऽधुना । कर्म्मान्यत्वंगुणैःसाम्यं दृष्टमाश्रयभेदतः ॥ यतस्ततोनेति चिन्त्यं धात्रीलकुचयोर्यथा । पथ्यायामज्जनिस्वादुः स्नाय्वावम्लोऽयवस्थितः ॥ वृतेति क्तस्त्वचिकटु रस्थिस्तुतुवरोरसः । नवास्निग्धाघनावृत्ता गुर्वीक्षिप्ताचयाम्भसि ॥ निम ज्जेत्साप्रशस्ताच कथितातिगुणप्रदा । नवादिगुणयुक्तत्वं तथैकत्रद्विकर्षता ॥ हरीतक्याः फलेयत्र द्वयंतच्छ्रेष्ठमुच्यते । चर्बिताबर्द्धयत्यग्निं पेषितामलशोधिनी ॥ स्विन्नासंग्राहि णीपथ्या भृष्टाप्रोक्तात्रिदोषनुत् । उन्मीलिनीबुद्धिबलेन्द्रियाणां निर्मूलिनीपित्तकफानिलाः नाम् ॥ विस्रंसिनीमूत्रशकृन्मलानां हरीतकीस्यात्सहभोजनेन । अन्नपानकृतान्दोषा न् वातपित्तकफोद्भवान् ॥ हरीतकीहरत्याशु भुक्तस्योपरियोजिता । लवणेनकफंहन्ति पि त्तंहन्तिसशर्करा ॥ घृतेनवातजान्रोगान् सर्वरोगान्गुड़ान्विता । सिंधूत्थशर्कराशुण्ठी कणामधुगुड़ैःक्रमात् । वर्षादिष्वभयाप्राश्या रसायनगुणैषिणा ॥ अध्वातिखिन्नोबलव र्जितश्च रूक्षकृशोःलंघनकर्षितश्च । पित्ताधिकोगर्भवतीचनारी विमुक्तरक्तस्त्वभयान्न खादेत् ॥ ९६ ॥

बिजया रोहिणी पूतना अमृता अभयाजीवन्ती और चेतकी यह सात जातिहैं तोंबी के समान गोल विजया होती है गोल रोहिणी छोटी गुठलीवाली पूतना गूदेदार अमृता पांच रेखावाली अभया सुवर्णके समान बर्णवाली जीवन्ती और तीन रेखावाली चेतकी यह सातोंके स्वरूप हैं सब रोगोंमें बिजया घावोंके भरनेमें रोहिणी लेपमें पूतना शोधनमें अमृता नेत्र रोगोंमें अभया सबरोगों के नाशके लिये जीवन्ती और चूर्णमें चेतकी श्रेष्ठहै इनको यथायोग्य काममें लाना चाहिये चेतकी श्वेत और कृष्ण दोप्रकारकी होतीहै छः अंगुलकी लम्बी श्वेत और १ अंगुलकी कृष्ण जानो कोई खानेसे कोई सूंघनेसे कोई छूनेसे और कोई देखनेसे इस प्रकार चार रीतिसे हडदस्त लाती है मनुष्य पशु पक्षी और मृगादिक जो कोई चेतकीके वृक्षकी छायामें जातेहैं उनको उसी समय दस्त आतेहैं चेतकी नाम हड़को जबतक हाथमें लियेरहो तबतक उसके प्रभावसे बड़े बेगके दस्त आते हैं इससे प्यासे सुकुमार दुर्बल और औषधिसे शत्रुता करनेवाले पुरुषोंको चेतकी सुख पूर्बक दस्तों के लिये अत्यन्त श्रेष्ठहै सात प्रकारकी हड़ोंमेंसे बिजया श्रेष्ठहै यह सुखसे व्यवहार करनेके योग्य सुलभ

और सम्पूर्ण रोगोंमें सुखकारीहै हड़में लवणके सिवाय पांच रसहोते हैं उनमेंसे कषाय रस अधिक है हड़ रूखी उष्ण दीपनी मेधाकरनेवाली विपाकमें मधुर रसायन नेत्रोंको हित हलकी आयुको हित मांस बढ़ानेवाली वायु आदिकको नीचे लेजानेवाली श्वास खांसी प्रमेह बवासीर कुष्ठ सूजन उदर कृमि स्वरभंग संग्रहणी विबन्ध बिषमज्वर गुल्म अफरा तृषा छर्दि हुचकी खुजली हृदयकेरोग कामला शूल आनाह प्लीहा यकृत् पथरी मूत्र कृच्छ्र और मूत्राघात इन सबरोगोंको नाश करती है हड़ मधुर तिक्त और कषाय रससे पित्तको कटु तिक्त और कषाय रससे कफको और अम्ल रसके वायुको नष्ट करतीहै परन्तु कटु और अम्ल रसके द्वारा पित्तकी बढ़ानेवाली हड़ बायुको क्यों नहीं बढ़ाती है इसमें जो कुछ कारण प्रसिद्धहै उसको कहतेहैं कि प्रभावहीसे दोषोंका निवारण होताहै इसमें क्या कारणहै यह कहना असंभवहै इस्से इस समय शिष्योंके समझानेके लिये इतनाही कहा जाताहै कि गुणोंकी समानता होनेपर भी आश्रयके भेदसे क्रियाओंका भेद देखाजाता है जैसे बड़-हर और आमला (इनकी रसादिकोंमें समानता होनेपर भी गुणोंमें बड़ा अन्तरहै) इस हेतु से इसमें और कुछ सन्देह न करना चाहिये हड़की मज्जामें मधुर रसनसमें अम्ल रस परदेमें तिक्त त्वचामें कटु और गुठलीमें कषाय रसहोता है नवीन स्निग्ध कठोर गोल भारी और पानी में फेंकने या डालनेमें डुबनेवाली हड़ अत्यन्त गुणकारी और श्रेष्ठ कहीगईहै जो हड़ पहले कहे हुए नवीन आदिक गुणोंसे युक्त और दोकर्षके प्रमाण वाली होतीहै वह सबमें श्रेष्ठ कहीगईहै हड़ चबाने से अग्नि बढ़ानेवाली पीसकर सेवन करनेसे मलको शुद्ध करनेवाली सिझायकर सेवन करनेसे मल को रोकनेवाली और भूनकर सेवनसे त्रिदोष नाशक कहीगईहै भोजनके साथ हड़का सेवन करने से बुद्धि बल और इन्द्रियोंका प्रकाश पित्त कफ बायुका नाश और विष्ठामूत्र तथा शरीर के मलों का नीचे गिरना होताहै भोजनके उपरान्त हड खानेसे अन्न और पानके किये हुए दोष और बात पित्त कफके दोष शान्त होते हैं लवणके साथ कफ शक्कर के साथ पित्त घृतके साथ बातके रोग और गुड़के साथ हड़ सब रोगोंको नाश करतीहै रसायन के गुणका चाहनेवाला पुरुष वर्षादिक छओं ऋतुओंमें क्रमसे सेंधानोन शर्करा सोंठ पीपल सहत और गुड़के साथ हडको खाय मार्गसे थकाहुआ बलहीन रूखा दुर्बल लंघन करनेवाला अधिक पित्तवाला गर्भवती स्त्री और फस्त लियाहुआ पुरुष यह सबलोग हड़को न खांय ॥ ९६ ॥

अथविभीतकस्यनामानिगुणाश्च ॥

विभीतकस्त्रीलिङ्गःस्यान्नाक्षःकर्षफलस्तुसः । कलिद्रुमोभूतवासस्तथाकलियुगालयः ॥ विभीतकंस्वादुपाकंकषायंकफपित्तनुत् । उष्णवीर्य्यंहिमस्पर्शंभेदनंकासनाशनम् ॥ रूक्षं नेत्रहितंकेश्यंकृमिवैस्वर्यनाशनम् ॥ विभीतमज्जातृट्च्छर्दिकफवातहरोलघुः । कषायो मदकृच्चाथधात्रीमज्जापितद्रुणः ॥ ९७ ॥

बहेड़ेकेनाम औरगुण ॥

विभीतक शब्द त्रिलिङ्गी है अक्ष- कर्षफल- तुष- कलिद्रुम- भूतवास और कलियुगालय यह बहे ड़ेके नामहैं- बहेड़ा पाकमें मधुर कषैला- कफ पित्तनाशक वीर्य्यमें उष्ण स्पर्श में शीतल- दस्तावर- खांसीका नाशक- रूखा, नेत्र और बालों कोहित और स्वरभंग तथा कृमिका दूरकरने वाला होताहै, बहेड़ेकीमींगी तृषा, छर्दि कफ और बातको नाशकरने वाली और हलकी होती है इसके सिवाय

यह कषैली और मदकरने वालीभी होतीहै, आमले की मींगीमें भी इसीके समानगुणहोते हैं॥ ९७ ॥

अथामलक्यानामानिगुणाश्च ॥

त्रिष्वामलकमाख्यातंधात्रीत्रिष्वफलामृता ॥ हरीतकीसमन्धात्रीफलंकिन्तुविशेषतः। रक्तपित्तप्रमेहघ्नंपरंवृष्यंरसायनम् ॥ हन्तिवातंतदम्लत्वात्पित्तंमाधुर्य्यशैत्यतः । कफंरूक्षकषायत्वात्फलंधात्र्यास्त्रिदोषजित् ॥ यस्ययस्यफलस्येहवीर्य्यंभवति यादृशम्। तस्यतस्यैववीर्येणमज्जानमपिनिर्दिशेत् ॥ ९८ ॥

आमलेकेनाम औरगुण ॥

आमलक शब्द त्रिलिंगीहै धात्री, तिष्यफला और अमृता यह आमलेके नाम हैं, आमला हड़के समानहै परन्तु विशेषतायहहै कि रक्त पित्ततथा प्रमेहका नाशक और अत्यन्त पुष्टकारक तथा रसायनहै यह अम्लरससे बायु मधुर तथा शीतलता से पित्त और रूक्षता और कषैले पनसे कफको दूरकरताहै इस प्रकार यह त्रिदोष नाशकहै,यहां जिसर फलका वीर्य्य जैसा कहागयाहै उसीके अनुसार उसकी मींगीभी जानलेनी चाहिये ॥ ९८ ॥

अथत्रिफलायालक्षणनामगुणाः ॥

पथ्याविभीतधात्रीनांफलैःस्यात्त्रिफलासमैः। फलत्रिकञ्चत्रिफलासावराचप्रकीर्तिता ॥ त्रिफलाकफपित्तघ्नीमेहकुष्ठहरासरा। चक्षुष्यादीपनीरुच्याविषमज्वरनाशिनी९९॥

त्रिफलाके लक्षण समेतनाम औरगुण ॥

हड़- बहेड़ा और आमला इनतीनोंके समभाग संयोगसे त्रिफला कहा जाताहै- फलत्रिक- त्रिफला और वरायह इसके नामहैं- त्रिफला कफ पित्त प्रमेह तथा कुष्ठका नाशक, दस्तावर नेत्रोंको हित- दीपन- रुचिकारक और विषम ज्वरका नाशकरने वाला होताहै ॥ ९९ ॥

अथशुण्ठ्यानामानिगुणाश्च ॥

शुण्ठीविश्वाचविश्वञ्चनागरंविश्वभेषजम्। ऊषणंकटुभद्रञ्चशृङ्गवेरंमहौषधम् ॥ शुण्ठीरुच्यामवातघ्नीपाचनीकटुकालघुः। स्निग्धोष्णमधुरापाकेकफवातविबन्धनुत् ॥ वृष्यास्यर्य्यावमिश्वासशूलकासहृदामयान् । हन्तिश्लीपदशोथार्शआनाहोदरमारुतान् ॥ आग्नेयगुणभूयिष्ठंतोयांशम्परिशोषियत्। संगृह्णातिमलंतत्तुग्राहिशुण्ठ्यादयो यथा ॥ विबन्धभेदनीयातुसाकथंग्राहिणीभवेत् । शक्तिर्विबन्धभेदे स्यात्यतोनमलपातने ॥ १०० ॥

सोंठकेनाम औरगुण ॥

शुंठी- विश्वा- विश्व- नागर- विश्वभेषज- ऊषण,कटुभद्र, शृंगवेर और महौषधि, यह सोंठ के नाम हैं सोंठ रुचिकारक, पाचक, रसमेंकटु, हलकी, स्निग्ध उष्ण, पाकमेंमधुर, पुष्टिकारक- स्वरकोहित और आमबात कफ बायु विवन्ध, छर्दि, श्वास, शूल, खांसी- हृदयके रोग, श्लीपद, सूजन, बवासीर, आनाह, उदर तथा बायुके रोगोंकी नाशकरने वाली होतीहै, अग्निके गुणकी अधिकता से भीतर के जल को सुखाकर मलकोरोके वहग्राही कहातीहै जैसे शुंठी आदिक,अबयह सन्देहहोताहै कि जो बस्तु

विबन्धको नाशकरती है वह विबन्धकैसे होसक्तीहै इसका उत्तर यह हैकि उसकी शक्ति विवन्धके नाशकरनेमें है(जमेहुए मलको तोड़तीहै) परन्तु मलके गिरानेमें नहींहै ॥ १०० ॥

अथार्द्रकस्यनामानिगुणाश्च ॥

आर्द्रकंशृंगवेरंस्यात्कटुभद्रंतथार्द्रिका । आर्दिकाभेदिनीगुर्वीतीक्ष्णोष्णादीपनीमता ॥ कटुकामधुरापाकेरूक्षावातकफापहा । येगुणाःकथिताःशुंठ्यास्तेऽपिसंत्यार्द्रकेऽखिलाः ॥ भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम् । अग्निसन्दीपनंरुच्यंजिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥ कुष्ठपाण्डवामयेकृच्छ्ररक्तपित्तव्रणेज्वरे । दाहेनिदाघशरदोर्नैवपूजितमार्द्रकम् ॥ १०१ ॥

अदरकके नामऔर गुण ॥

आर्द्रक शृंगवेर- कटुभद्र और आर्दिका यह अदरक के नाम हैं- अदरक भेदक- भारी- तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन कटु, पाक में मधुर, रूखी और वात तथा कफ की नाशक है जो गुणसोंठ के कहेगयेहैं वह संपूर्ण अदरक में भी हैं। भोजन के आदिमें सदैव सेंधानोंन और अदरक पथ्य है इस्से अग्निकी दीप्ति, रुचि और जिह्वा समेतकण्ठका शोधन होता है, कुष्ठ, पांडु, मूत्रंकृच्छ्र, रक्तपित्त घाव' ज्वर, और दाह इनरोगों में और ग्रीष्म तथा शरद ऋतु में अदरक हितकारी नहीं है, ॥ १०१ ॥

अथपिप्पल्यानामानिगुणाश्च ॥

पिप्पलीमागधीकृष्णावैदेहीचपलाकणा । उपकुल्योषणाशौण्डीकोलास्यात्तीक्ष्णतण्डुला ॥ पिप्पलीदीपनीवृष्यास्वादुपाकारसायनी । अनुष्णाकटुकास्निग्धावातश्लेष्महरीलघुः ॥ पिप्पलीरेचनीहन्तिश्वासकासोदरज्वरान् । कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान् ॥ आर्द्राकफप्रदास्निग्धाशीतलामधुरागुरुः । पित्तप्रशमनीसातुशुष्कापित्तप्रकोपिणी ॥ पिप्पलीमधुसंयुक्ता मेदःकफविनाशिनी । श्वासकासज्वरहरावृष्यामेध्याग्निवर्द्धिनी ॥ जीर्णज्वरेऽग्निमान्द्येचशस्यतेगुड़पिप्पली । कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥ द्विगुणःपिप्पलीचूर्णाद्गुड़ोऽत्रभिषजांमतः ॥ १०२ ॥

पीपल के नाम और गुण ॥

पिप्पली, मागधी, कृष्णा, बैदेही, चपला कणा, उपकुल्या, ऊषणा, शौण्डी, कोला और तीक्ष्ण तंडुला यह पीपल के नाम हैं, पीपल दीपन, पुष्टि कारक, विपाक में मधुर, रसायन, कुछउष्ण, कटु, स्निग्ध, हल्की, दस्तावर और वायु,कफ,श्वास,खांसी,उदर, ज्वर,कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, बवासीर प्लीहा, शूल, तथा आमवात की नाशक होती है, कच्ची पीपल, कफकारक स्निग्ध, शीतल, मधुर, भारी और पित्तनाशकहोती है परन्तु सूखने से पित्तको कुपित करती है, पीपल सहत के साथ मेद कफ, श्वास, खांसी तथा ज्वरकी नाशकारी वीर्य्यबर्द्धक मेधातथा अग्नि की वृद्धि करने वालीहोती है गुड़ के साथ पीपलका सेवन करने से जीर्ण ज्वर, अग्नि की मन्दता, खांसी, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, हृदय के रोग, पांडु और कृमि इनसबरोगों का नाशहोता है यहां पीपलके चूर्णसे दूना गुड़ मिलाना यह वैद्योंकी संमति है, ॥ १०२ ॥

अथमरिचस्यनामानिगुणाश्च ॥

मरिचंवेल्लजंकृष्णमूषणंधर्मपत्तनम् । मरिचंकटुकंतीक्ष्णंदीपनंकफवातजित् ॥ उष्णं पित्तकरंरूक्षंश्वासशूलकृमीन्हरेत् । तदार्द्रमधुरंपाकेनात्युष्णंकटुकंगुरुः ॥ किञ्चित्तीक्ष्ण गुणश्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम् ॥ १०३ ॥

मिर्चकेनाम और गुण ॥

मरिच, बेल्लज, कृष्ण- ऊषण- और धर्म्म पत्तन यह मिर्चके नामहैं- मिरच, कटु, तीक्ष्ण दीपन कफ, बातनाशक, उष्ण, पित्तकारक, रूक्ष और श्वास शूलतथा कृमिरोग की नाशक होती है, गीली मिरच पाक में मधुर कुछऊष्ण, कटु, भारी, कुछतीष्ण और कफ कीनिकालने वाली तथा कुछ पित्त करने वाली होतीहै, ॥ १०३ ॥

अथत्रिकटुकनामलक्षणगुणाः ॥

विश्वोपकुल्यामरिचंत्रयंत्रिकटुकथ्यते । कटुत्रिकन्तुत्रिकटुंत्र्यूषणंव्योषउच्यते॥त्र्यूष णंदीपनंहन्तिश्वासकासत्वगामयान् ।गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदःश्लीपदपीनसान्॥१०४॥

त्रिकटु के नाम लक्षण और गुण ॥

सोंठ, पीपल और मिर्च इनको त्रिकटु कहते हैं. कटुत्रिक त्रिकटु, त्र्यूषण औरव्योष यह इस के नाम हैं, त्रिकटु अग्निदीपक और श्वास खांसी, त्वचाके रोग, गुल्म, प्रमेह, कफ, स्थूलता, मेद, श्लीपद, तथा पीनस का नाशकहोता है, ॥ १०४ ॥

अथपिप्पलीमूलस्यनामानिगुणाश्च ॥

ग्रन्थिकंपिप्पलीमूलमूषणंचटकाशिरः । दीपनंपिप्पलीमूलंकटूष्णंपाचनंलघु ॥ रू क्षंपित्तकरंभेदिकफवातोदरापहम् । आनाहप्लीहगुल्मघ्नंकृमिश्वासक्षयापहम् ॥ १०५ ॥

पीपलामूल के नाम और गुण ॥

ग्रंथिक, पिप्पली मूल, ऊषण और चटका शिर यह पीपलामूलकेनाम हैं पीपलामूल दीपन, कटु, उष्ण, पाचक,हलका, रूखा, पित्त वर्द्धक, भेदक, कफ वायुनाशक और उदर आनाह, प्लीहा, गुल्म कृमि,श्वास और क्षय रोगनाशक होताहै ॥ १०५ ॥

अथचतुरूषणस्यलक्षणगुणाः ॥

त्र्यूषणंसकणामूलंकथितंचतुरूषणम्।व्योषस्यैवगुणाःप्रोक्ताअधिकाश्चतुरूषणे॥१०६॥

चतुरूष ण के लक्षण और गुण ॥

त्रिकटु और पीपला मूल यह चारों मिलकर चतुरूषण कहाते हैं इसमें त्रिकटु के कछु अधिक गुण होते हैं ॥ १०६ ॥

चव्यगुणः ॥

भवेच्चव्यन्तुचविकाकथितासातथोषणा।कणामूलगुणंचव्यंविशेषात्गुदजापहम्॥१०७॥

चव्यके नाम और गुण ॥

चव्य, चविका और ऊषणा यह चव्यके नाम हैं, चव्य में पीपला मूल के समान गुणहैं परन्तु यह गुदाके रोगोंको विशेष करके नाश करती है, ॥ १०७ ॥

अथगजपिप्पल्या नामानिगुणाः ॥

चविकायाःफलंप्राज्ञैः कथितागजपिप्पली । कपिवल्लीकोलवल्लीश्रेयसीवशिरश्च सा ॥ गजकृष्णाकटुर्वात श्लेष्महृद्वह्निवर्द्धिनी । उष्णानिहन्त्यतीसारं श्वासकण्ठामय कृमीन् ॥ १०८ ॥

गजपीपलकेनाम और गुण ॥

पंडित लोग चव्यके फलको गजपीपल कहते हैं, कपि बल्ली, कोलवल्ली श्रेयसी, और व शिर यह गज पीपल के नामहैं गजपीपल कटु, वातकफ नाशक अग्नि बर्द्धक,उष्ण और अतीसार,श्वास कंठ रोग तथा कृमिनाशक होती है ॥ १०८ ॥

अथचित्रकस्यनामानि गुणाश्च ॥

चित्रकोऽनलनामाच पीठोव्यालस्तथोषणः । चित्रकःकटुकः पाकेवह्निकृत्पाचनोलघुः ॥ रूक्षोष्णग्रहणीकुष्ठ शोथार्शःकृमिकासनुत् । वातश्लेष्महरो ग्राहीवातार्शःश्लेष्मपित्तहृत् ॥ १०९ ॥

चीतेके नाम और गुण ॥

चित्रक अनल पीठ व्याल और ऊषण यह चीतेके नामहैं चीता पाकमें कटु अग्निबर्द्धक पाचक हलका रूखा उष्ण ग्राही और संग्रहणी कुष्ठ सूजन बवासीर कृमि खांसी मिलेहुए बात कफवातकफ तथा पित्तका नाशक होताहै ॥ १०९ ॥

अथपञ्चकोलस्यलक्षणगुणाः ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरैः । पञ्चभिःकोलमात्रंयत्पञ्चकोलं तदुच्यते ॥ पञ्चकोलंरसेपाकेकटुकंरुचिकृन्मतम् । तीक्ष्णोष्णंपाचनं श्रेष्ठंदीपनं कफवातनुत् ॥ गुल्मप्लीहोदरानाह शूलघ्नंपित्तकोपनम् ॥ ११० ॥

पंचकोलके लक्षण और गुण ॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ यहसब आठ २ मासे मिलकर पंचकोल कहलाता है,पंचकोल रस तथा पाकमें कटु, रुचिकारक तीक्ष्ण, उष्ण अत्यन्त पाचक, दीपन, पित्तके कोपका करनेवाला और कफ बात गुल्म प्लीहा उदर आनाह तथा शूल नाशक होताहै ॥ ११० ॥

अथषडूषणस्यलक्षणगुणाः ॥

पञ्चकोलंसमरिचंषडूषणमुदाहृतम् । पञ्चकोलगुणंतत्तुरूक्षमुष्णंविषापहम् ॥ १११ ॥

षडूषण के लक्षण और गुण ॥

मिर्च समेत पंचकोलको षडूषण कहतेहैं षडूषण पंच कोलके समान गुणवाला होताहै परन्तु वह विशेष करके रूखा उष्ण और बिष दोष नाशक होताहै ॥ १११ ॥

अथयवान्यानामानिगुणाः ॥

यवानिकोग्रगंधाचब्रह्मदर्भाऽजमोदिका । सैवोक्तादीप्यकादीप्यातथा स्याद्यवसाङ्क

या ॥ यवानीपाचनीरुच्यातीक्ष्णोष्णा कटुकालघुः।दीपनीचतथातिक्ता पित्तलाशुक्रशूल हृत्॥वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत् ॥ ११२ ॥

अजवाइन के नाम और गुण ॥

यवानी उग्रगंधा ब्रह्मदर्भा अजमोदिका दीप्यका दीप्या और यवसाह्वया यह अजवाइनके नाम हैं अजबाइन पाचक रुचिकारक तीक्ष्ण उष्ण और कटु हल्की दीपन तिक्त पित्तवर्द्धक वीर्य नाशक और शूल बात कफ उदर आनाह गुल्म प्लीहा तथा कृमि नाशक होतीहै ॥ ११२॥

अथाजमोदायाः नामानिगुणाश्च ॥

अजमोदाखराश्वाच मयूरोदीप्यकस्तथा । तथाब्रह्मकुशाप्रोक्ता कारवीलोचसमस्तका ॥ अजमोदाकटुस्तीक्ष्णा दीपनीकफवातनुत् । उष्णाविदाहिनीहृद्या वृष्याबलकरी लघुः ॥ नेत्रामयकफच्छर्दि हिक्कावस्तिरुजोहरत् ॥ ११३ ॥

अजमोदके नामऔरगुण ॥

अजमोदा, खराश्वा, मयूर, दीप्यक, ब्रह्मकुशा, कारवी और लोच मस्तक यह अजमोदके नामहैं, अजमोद, कटु, तीक्ष्ण, दीपन, कफ बात नाशक. उष्ण. विदाही, हृदयकोहित, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी लघु और नेत्ररोग, कृमि, छर्दि, हिचकी, तथावस्तिकी पीड़ाका नाशकहोतीहै ॥ ११३ ॥

अथ खुरासानीयवानी गुणाः ॥

पारसीकयवानीतुयवानीसदृशीगुणैः। विशेषात्पाचनीरुच्याग्राहिणीमादिनीगुरुः११४॥

खुरासानी अजवाइनकेगुण ॥

खुरासानी अजवायन अजवाइनके समान गुणवाली होतीहै परन्तु यह विशेष करके पाचक रुचि कारक ग्राही, मदकारी और भारी होती है ॥ ११४ ॥

अथ शुक्लजीरा कृष्णजीरा कलौंजी एषांनामानि गुणाश्च ॥

जीरकोजरणोजाजी कणास्याद्दीर्घजीरकः । कृष्णजीरःसुगन्धश्च तथैवोद्गारशोधनः ॥ कालाजाजीतुशुषवी कालिकाचोपकालिका । पृथ्वीकाकारवीपृथ्वी पृथुकृष्णोपकुञ्चिका ॥ उपकुञ्चीचकुञ्चीचवृहज्जीरकइत्यपि । जीरकत्रितयंरूक्षंकटूष्णंदीपनंलघु ॥ संग्राहिपित्तलंमेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत् । ज्वरघ्नंपाचनंवृष्यंबल्यंरुच्यंकफापहम् ॥ चक्षुष्यंपवनाध्मानगुल्मछर्द्यतिसारहृत् ॥ ११५ ॥

श्वेतजीराकालाजीराऔरकलौंजीके नाम औरगुण ॥

सफेदजीरेको जीरक, जरण, अजाजी, कणा और दीर्घ जीरक कहते हैं, काले जीरेको सुगन्धि, उद्गार शोधन, कालाजाजी, शुषवी, कालिका, उपकालिका, पृथ्वीका, कारवी, पृथ्वी, पृथु, कृष्णा और उपकुंचिका कहतेहैं और कलौंजीको कुंची उपकुंची और वृहज्जीरक कहते हैं यहतीनों प्रकारके जीरेरूखे कटुउष्ण, दीपन, लघु, ग्राही, पित्तवर्द्धक, मेधाको हित गर्भाशयके शुद्धकरने वाले, ज्वर नाशक, पाचक वीर्य्य वर्द्धक, रुचितथा बलकारक, कफ नाशक, नेत्रोंको हित और वायु उदर, आध्मान, गुल्म, छर्दि और अतीसार नाशक होते हैं ॥ ११५॥

अथधान्यकस्यनामानिगुणाश्च ॥

धान्यकंधानकंधान्यंधानाधानेयकंतथा । कुनटीधेनुकाछत्राकुस्तुम्बुरुवितुन्नकम् ॥ धान्यकंतुवरंस्निग्धमवृष्यंमूत्रलंलघु । तिक्तंकटूष्णवीर्य्यञ्चदीपनंपाचनंस्मृतम् ॥ ज्वरघ्नं रोचकंग्राहिस्वादुपाकित्रिदोषनुत् । तृष्णादाहवमिश्वासकासामार्शः क्रिमिप्रणुत् ॥ आर्द्रन्तुतद्गुणंस्वादुविशेषात्पित्तनाशितत् ॥ ११६ ॥

धनियें के नाम और गुण ॥

धान्यक- धानक- धान्य- धाना-धानेयक-कुनटी धेनुका- छत्रा- कुस्तुंबुरु और वितुन्नक यह धनियेंके नामहैं धनियां तिक्तकटु कषाय रसयुक्त स्निग्ध वीर्य को अहित मूत्रकारक- हलका- वीर्य में उष्ण दीपन पाचक ज्वरनाशक रुचिकारक ग्राही पाकमें मधुर त्रिदोषनाशक और तृषादाह छर्दि श्वास खांसी- आम बवासीर तथा कृमिका दूर करनेवाला होताहै गीले धनियें में भी यहीगुण होतेहैं परन्तु बिशेष करके पित्तका नाशक होताहै ॥ ११६ ॥

अथसौंफिसोआतयोर्नामानिगुणाश्च ॥

शतपुष्पाशताह्वाचमधुराकारवीमिसिः । अतिलम्बीसितच्छत्रासंहिताछत्रिकापिच॥ छत्राशालेयशालीनौमिश्रेयामधुरामिसिः । शतपुष्पालघुस्तीक्ष्णापित्तकृद्दीपनीकटुः ॥ उष्णज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् । मिश्रेयातद्गुणाप्रोक्ताविशेषाद्योनिशूलनुत् ॥ अग्निमान्द्यहरीहृद्याबद्धविट्कृमिशुक्रहृत् । रूक्षोष्णापाचनीकासवमिश्लेष्मानिलान् हरेत् ॥ ११७ ॥

सौंफ और सोवाके नाम और गुण ॥

शतपुष्पा शताह्वा मधुरा कारवीमिसि अतिच्छत्रा सितच्छत्रा और छत्रिका यह सौंफकेनाम हैं छत्रा शालेय शालीना मिश्रेया मधुरा और मिसि यह सोवाके नामहैं सौंफ लघु तीक्ष्ण पित्तवर्द्धक दीपन कटु उष्ण और ज्वर बायु कफ घाव शूल तथा नेत्र रोगकी नाशक होती है सोवा सौंफ के समान गुण वाला विशेष करके हृदयको हित रूखा उष्ण पाचक और कब्ज कृमि वीर्य योनिकी पीडा मन्दाग्नि खांसी छर्दि कफ तथा बायुका नाशक होताहै ॥ ११७ ॥

अथमेथीवनमेथी नामगुणाः ॥

मेथिकामिथिनीमेथिदीपनीबहुपत्रिका । बोधिनीबहुबीजाचजातिगन्धफलातथा ॥ बल्लरीचन्द्रिकामन्थामिश्रपुष्पाचकैरवी । कुञ्चिकाबहुपर्णीचपीतबीजामुनिच्छदा ॥ मेथिकावातशमनीश्लेष्मघ्नीज्वरनाशिनी।ततःस्वल्पगुणाःबल्यावाजिनांसातुपूजिता॥११८॥

मेथी और बन मेथीके नामगुण ॥

मेथिका, मेथिनी, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका, बोधिनी, गन्धबीजा, ज्योति, गन्धफला, वल्लरी चंद्रिका, मन्था, मिश्रपुष्पा, कैरवी, कुंचिका, बहुपर्णी, पीतबीजा और मुनिच्छदा यह मेथीके नाम हैं मेथी बायु कफ और ज्वरकी नाश करने वाली होती है और बनमेथी इससे गुणों में न्यून होती है परन्तु यह घोड़ोंको हितकारक होती है ॥ ११८ ॥

अथचन्द्रशूरगुणाः ॥

चन्द्रिकाचर्महन्त्रीचपशुमेहनकारिका। नन्दिनीकारवीभद्रावासपुष्पासुवासरा॥ चन्द्र शूरंहितंहिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम्। असृग्वातगदद्वेषिबलपुष्टिविवर्द्धनम्॥ ११९॥

चन्द्रशूर के नाम और गुण॥

चन्द्रिका- चर्म्महन्त्री, पशुमेहनकारिका- नन्दिनी कारवी, भद्रा-बासपुष्पा और सुवासरा यह चन्द्र-शूरके नामहैं चन्द्रशूर बल तथा पुष्टि कारक बातरक्त रोगमें अहित और बात श्लेष्मा हिचकी तथा अतीसारमें हितहोताहै॥ ११९॥

अथचारदाना॥

मेथिकाचन्द्रशूरश्चकालाजाजीयवानिका। एतच्चतुष्टयंयुक्तंचतुर्बीजमितिस्मृतम्॥ त च्चूर्णंभक्षितंनित्यंनिहन्तिपवनामयम्।अजीर्णंशूलमाध्मानंपार्श्वशूलंकटिव्यथाम्॥१२०॥

चारदाने के लक्षण और गुण॥

मेथी, चन्द्रशूर कालाजीरा और अजवाइन यह सब मिलेहुए चतुर्बीज अर्थात् चारदाना कहलाते हैं इनका चूर्ण नित्यखाने से बायु रोग अजीर्ण शूल उदर आध्मान पशलियों का दर्द और कमर का दर्द नष्ट होताहै॥ १२०॥

अथहिंगुः॥

सहस्रवेधिजतुकंवाह्लीकंहिंगुरामठम्। हिंगूष्णंपाचनंरुच्यंतीक्ष्णंवातबलासहृत्॥ शूलगुल्मोदरानाहकृमिघ्नःपित्तवर्द्धनः॥ १२१॥

हींगके नाम और गुण॥

सहस्रबेधि, जतुक, बाह्लीक, हिंगु और रामठ यह हींग के नाम हैं हींग उष्ण पाचक रुचिकारक तीक्ष्ण पित्तवर्द्धक और बायु कफ शूल गुल्म उदर आनाह और कृमिनाशक होती है॥ १२१॥

अथवचनामानिगुणाश्च॥

वचोग्रगन्धाषड्ग्रन्थागोलोमीशतपर्विका। क्षुद्रपत्रीचमङ्गल्याजटिलोग्राचलोमशा॥ वचोग्रगन्धाकटुकातिक्तोष्णावान्तिवह्निकृत्। विबन्धाध्मानशूलघ्नीशकृन्मूत्रविशोधिनी॥ अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान्हरेत्॥ १२२॥

बचके नाम और गुण॥

वच उग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका क्षुद्रपत्री मंगल्या जटिला उग्रा और लोमशा यह बच के नाम हैं वच उग्रगन्ध वाली कटु तिक्त रससे युक्त उष्ण छर्दि कराने वाली अग्निवर्द्धक मलमूत्र शोधक और बिबन्ध आध्मान शूल मृगी कफ उन्माद भूतदोष कृमि तथा वायुनाशक होती है १२२॥

अथखुरासानीवचा॥

पारसीकवचाशुक्लाप्रोक्ताहैमवतीतिसा। हैमवत्युदितातद्वद्वातंहन्तिविशेषतः॥१२३॥

खुरासानी बच॥

पारसीकबचा हैमवती यह खुरासानी बचके नामहैं इसका रंग श्वेत होताहै इसमें बचके समान गुण होतेहैं परन्तु यह वायुको विशेष करके नाश करतीहै॥ १२३॥

अथमहाभरीवचा ॥

यस्यालोकेकुलिञ्जनइतिनामान्तरम् । सुगन्धाप्युग्रगन्धाचविशेषात्कफकासनुत् ॥ सुस्वरत्वकरीरुच्याहृत्कण्ठमुखशोधिनी । अपरासुगन्धा ॥ स्थूलग्रन्थिःयस्यालोकेमहा भरीइतिनाम । स्थूलग्रन्थिःसुगन्धास्यात्ततोहीनगुणास्मृता ॥ १२४ ॥

महाभरीवचा अर्थात् कुलींजन के नाम और गुण ॥

सुगन्धा और उग्रगंधा यह कुलींजनके नामहैं यह विशेष करके कफ तथा खांसीको नाशकरताहै स्वर को उत्तम करता है रुचिकारकहै और हृदय कंठ तथा मुखको शुद्ध करताहै और मोटी गांठवाला दूसरा कुलींज़न जिसको लोकमें महाभरी कहते हैं यह पहलेकुलींजन से गुणों में हीनहै ॥ १२४ ॥

अथचोवचीनीतिलोकेतुप्रसिद्धातस्यागुणाः ॥

द्वीपान्तरवचा किञ्चित्तिक्तोष्णावह्निदीप्तिकृत् । विबन्धाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधिनी ॥ वातव्याधीनपस्मारमुन्मादंतनुवेदनाम् । व्यपोहतिविशेषेण फिरंगामय नाशिनी ॥ १२५ ॥

चोपचीनी के गुण ॥

द्वीपान्तर वचा अर्थात् चोपचीनी कुछ तिक्त उष्ण अग्निदीपक मलमूत्र की शुद्धि करनेवाली और बिबन्ध आध्मान शूल वात व्याधि मृगी उन्माद और शरीर की पीड़ा की नाशक होती है और यह फिरंग रोग को विशेष करके नाश करतीहै ॥ १२५ ॥

अथहौहवेरद्वयम् ॥

तन्मध्येप्रथमंफलंमत्स्यसदृशंविस्रगन्धंद्वितीयमश्वत्थफलसदृशंमत्स्यगन्धंतयोर्नामानिगुणाश्च । हवुषाहपुषाविस्रापराश्वत्थफलामता । मत्स्यगंधाह्लीहहंत्रीविषघ्नीध्वांक्षनाशिनी ॥ हवुषादीपनीतिक्तामृदूष्णातुवरागुरुः । पित्तोदरसमीराशोंग्रहणीगुल्मशूलहृत् ॥ परान्येतद्गुणाप्रोक्तारूपभेदीद्वयोरपि ॥ १२६ ॥

दोनों हाऊबेर ॥

उनमें से पहला फल मछली के समान कच्चे मांसकी दुर्गन्धि वाला और दूसरा पीपल के फल के समान और मछली के समान दुर्गन्धिवाला होताहै उनदोनों के नाम और गुण कहेजाते हैं हबुषा हपुषा और विस्रा यह पहले के नामहैं अश्वत्थफला मत्स्यगन्धा प्लीहहन्त्री विषघ्नी और ध्वांक्षनाशिनी यह दूसरी के नामहैं हबुषा अग्नि दीप्ति कारक तिक्त कषाय रस युक्त कोमल उष्ण भारी और पित्त उदर वायु बवासीर ग्रहणी गुल्म और शूल रोगकी नाशक होतीहै दूसरी में भी इसीके समान गुण होतेहैं केवल सूरतमें भेदहै ॥ १२६ ॥

अथवायुभृंगइतिलोके ॥

पुंसिक्लीवेविड्गंःस्यात्कृमिघ्नोजन्तुनाशनः । तण्डुलश्चतथावेल्लममोघाचित्रतण्डुला ॥ विडंगंकटुतीक्ष्णोष्णंरूक्षंवह्निकरंलघु । शूलाध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ॥ १२७ ॥

वाय बिडंगके नाम और गुण

बिड़ंग शब्द पुल्लिंग और नपुंसक लिंगहै कृमिघ्न जन्तुनाशक तंडुल वेल्ल अमोघा और चित्रतंडुला यह बाय बिड़ंग के नामहैं बायबिड़ंग कटु तीक्ष्ण उष्ण रूखी अग्निबर्द्धक लघु और शूल आध्मान उदर कफ कृमि बायु तथा बिवन्धका नाशक होताहै ॥ १२७ ॥

अथतुम्बुरुफलम् ॥

तुम्बुरुःसौरभःसौरोवनजःसानुजोन्धकः । तुम्बुरुप्रथितंतिक्तंकटुपाकेऽपितत्कटु ॥ रूक्षोष्णंदीपनंतीक्ष्णंरुच्यंलघुविदाहिच । वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुक्गुरुताकृमीन् ॥ कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणिनाशयेत् ॥ १२८ ॥

तुम्बुरु (मिर्चके आकार फटे मुखवाला फल) के नाम और गुण ॥

तुम्बुरु,सौरभ,सौर,वनज,सानुज,और अन्धक यह तुम्बुरुके नामहैं तुम्बुरु तिक्त,कटुरसयुक्त, बिपाक में कटु, रूखा, उष्ण, दीपन, तीक्ष्ण रुचि कारक,लघु बिदाही और बात कफके रोग नेत्र कर्ण ओष्ठ तथा शिरके रोग, शरीरका भारीपन, कृमि, कुष्ठ, शूल, अरुचि , श्वास, प्लीहा तथा मूत्रकृच्छ्र का नाशक होताहै ॥ १२८ ॥

अथवंशलोचननामगुणाः ॥

स्याद्वंशरोचनावांशीतुगाक्षीरातुगाशुभा । त्वक्क्षीरीवंशजाशुभ्रावंशक्षीरीचवैणवी ॥ वंशजावृंहणीवृष्यावल्यास्वाद्वीचशीतला । तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामलाः ॥ हरेत्कुष्ठंव्रणंपाण्डुंकषायंवातकृच्छ्रजित् ॥ १२९ ॥

बंशलोचन के नाम और गुण॥

बंशरोचना, वांशी,तुगाक्षीरी,तुगा, शुभा, त्वक् क्षीरी, वंशजा, शुभ्रा, बंशक्षीरी और बैणवी यहबंश लोचन के नामहैं बंशलोचन धातुओं का बढ़ानेवाला बीर्य्यबर्द्धक बलकारक,मधुर,कषाय रसयुक्त, शीतल और तृषा खांसी, ज्वर, श्वास, क्षय, रक्त पित्त, कामला, कुष्ठ, व्रण, पांडु, तथा बात रोग नाशक होताहै ॥ १२९ ॥

अथसमुद्रफेन ॥

समुद्रफेनःफेनश्चडिण्डीरोऽब्धिकफस्तथा । समुद्रफेनश्चक्षुष्योलेखनःशीतलश्चसः ॥ कषायोविषापित्तघ्नःकर्णरुक्कफहल्लघुः ॥ १३० ॥

समुद्र फेन के नाम और गुण ॥

समुद्रफेन, फेन, डिंडीर,और अब्धिकफ यह समुद्रफेन के नामहैं,समुद्रफेन नेत्रोंकोहित, दुर्बलता करने वाला, शीतल, दस्तावर,कषैला, लघु और बिषदोष, पित्त, कान के रोग, तथा कफका नाशक होताहै ॥ १३० ॥

अथाष्टकवर्गस्यलक्षणंगुणाः ॥

जीवकर्षभकौमेदकाकोल्यौऋद्धिवृद्धिके । अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैःकथितश्चरकादिभिः॥ अष्टवर्गोहिमःस्वादुःवृंहणःशुक्रलोगुरुः । भग्नसन्धीन्कृत्कामवलासबलवर्द्धनः ॥ वातपित्तास्रतृट्दाहज्वरमेहक्षयापहः ॥ १३१ ॥

अष्टकवगके लक्षण और गुण ॥

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि इनसबके योगको चरक आदिकोंने अष्टवर्ग कहाहै, अष्टवर्ग शीतल, धातुओंका बर्द्धक, वीर्य वर्द्धक, भारी, टूटेको जोड़ने वाला, काम, बलतथा कफका बर्द्धक और बातरक्त पित्ततृषा, दाह,ज्वर,प्रमेह,तथा क्षयरोग का नाशकहोता है ॥ १३१ ॥

तत्रजीवकर्षभकयोरुत्पत्तिलक्षणनामगुणाः ॥

जीवकर्षभकौज्ञेयौ हिमाद्रिशिखरोद्भवौ । रसोनकन्दवत्कन्दौ निःसारौसूक्ष्मपत्रकौ॥ जीवकःकूर्चकाकार ऋषभोवृषशृंगवत् । जीवकोमधुरःशृंगो ह्रस्वांगःकूर्चशीर्षकः ॥ ऋषभोवृषभोधीरो विषाणीद्राक्षइत्यपि । जीवकर्षभकौबल्यौ शीतौशुक्रकफप्रदौ॥ मधुरौपित्तदाहास्त्रकार्श्यवातक्षयापहौ ॥ १३२ ॥

जीवकऋषभककी उत्पत्तिलक्षण नामऔरगुण ॥

जीवक और ऋषभक हिमालयपर्व्वतके शिखरपर उत्पन्नहोतेहैं इनका कन्दलहसनके समानपत्ते छोटे तथा निस्सार होते हैं, जीवकका आकार कूचीके समान और ऋषभकका आकार बैलके सींगके समान होताहै, मधुर शृंग, ह्रस्वांग और कूर्च शीर्षक यह जीवकके नाम हैं, ऋषभ, वृषभ, धीर, विषाणी और इन्द्राक्ष यह ऋषभकके नामहैं, जीवक और ऋषभक बल कारक, वीर्य्य तथा कफके वर्द्धक, शीतल, मधुर और पित्तदाह, रुधिर दोष,दुर्बलता, बाततथा क्षयरोगके नाशकहैं ॥ १३२ ॥

अथ मेदामहामेदयोरुत्पत्तिलक्षण नामगुणाः ॥

महामेदाभिधःकंदो मोरंगादौप्रजायते । महामेदाखनौमेदा स्यादित्युक्तंमुनीश्वरैः ॥ शुक्लार्द्रकनिभःकंदो लताजातःसुपाण्डुरः । महामेदाभिदोज्ञेयो मेदोलक्षणमुच्यते ॥ शुक्लकंदोनखच्छेद्यो मेदोधातुमिवस्रवेत् । यःसमेदेतिविज्ञेयो जिज्ञासातत्परैर्ज्जनैः॥ शल्यपर्णीमणिच्छिद्रा मेदामेदोभवाध्वरा । महामेदावसुच्छिद्रा त्रिदंतीदेवतामणिः ॥ मेदायुगंगुरुस्वादु वृष्यंस्तन्यकफावहम् । वृंहणंशीतलंपित्त रक्तवातज्वरप्रणुत् ॥ १३३ ॥

मेदामहामेदाके उत्पत्ति लक्षण नाम और गुण ॥

महामेदा नाकम कन्द मोरंग आदि स्थानों में उत्पन्न होताहै, मुनिलोगोंने इसको खनोमेदानाम सेभी कहाहै, यह कन्दलतासे उत्पन्न होताहै और श्वेत अदरकके समान रंगमें श्वेत होताहै, मेदा नामक कन्द श्वेत वर्णहोताहै इसको नखोंसे फाड़ने में मेदधातुके समानरस निकलता है शल्यपर्णी मणिच्छिद्रा, मेदा, मेदोभवा और अध्वरा यह मेदाके नामहैं, महामेदा, वसुच्छिद्रा, त्रिदन्ती और देवतामणि यह महामेदाके नामहैं, मेदा और महामेदा भारी, मधुर, वीर्यवर्द्धक, दुग्ध तथा कफ कारक, शरीरपोषक, शीतल और रक्त पित्तवात तथा ज्वर नाशक होती हैं ॥ १३३ ॥

अथ काकोली क्षीरकाकोल्योरुत्पत्तिलक्षण नामगुणाः ॥

जायतेक्षीरकाकोली महामेदोद्भवस्थले । यत्रस्यातक्षीरकाकोली काकोलीतत्रजायते ॥ पीवरीसदृशःकंदः क्षीरंस्रवतिगंधवान् । सप्रोक्तःक्षीरकाकोली काकोलीलिंगमुच्य

ते ॥ यथास्यात्क्षीरकाकोली काकोल्यपितथाभवेत् । एषाकिञ्चिद्भवेत्कृष्णा भेदोऽयमु भयोरपि ॥ काकोलीवायसोलीच वीराकायस्थिकातथा । साशुक्लाक्षीरकाकोली वयस्था क्षीरवल्लिका ॥ कथिताक्षीरिणीधारा क्षीरशुक्लापयस्विनी । काकोलीयुगलंशीतं शुक्रलंम धुरंगुरु ॥ बृंहणंवातदाहास्र पित्तशोषज्वरापहम् ॥ १३४ ॥

काकोली और क्षीरकाकोलीकी उत्पत्तिलक्षण नाम और गुण ॥

जहां महामेदा उत्पन्न होतीहै वहांकाकोली और क्षीर काकोलीभी उत्पन्न होतीहै, क्षीर काकोली का कन्दसतावरिके समान होताहै उसमें दूध और उत्तम सुगन्धि होती है यह क्षीरकाकोली कहीगई अब काकोलीका लक्षण कहतेहैं- क्षीर काकोली और काकोली समान होती हैं भेद इतना है कि काकोली कुछकाली होती है,काकोली, वायसोली, बीरा और कायस्थिका यह काकोली के नाम हैं वयस्था, क्षीरवल्लिका,क्षीरिणी,धारा,क्षीरशुक्ला और पयस्विनी यह क्षीर काकोलीके नामहैं, काकोली और क्षीरकाकोली शीतल, वीर्य्य वर्द्धक, मधुर, भारी, मांसवर्द्धक और बात, दाह, रक्त पित्त, शोष तथा ज्वरकी नाशकहोतीहैं ॥ १३४ ॥

अथर्द्धिवृद्ध्योरुत्पत्ति लक्षणनाम गुणाः ॥

ऋद्धिर्वृद्धिश्चकंदौद्वौ भवतःकोशयामले । शीतलोमान्वितःकंदो लताजातःसुरन्ध्रकः ॥ सएवऋद्धिर्वृद्धिश्च भेदमप्येतयोर्ब्रुवे । स्थूलग्रन्थिसमाऋद्धि र्वामावर्त्तफलाच सा ॥ बृद्धिस्तुदक्षिणावर्त्त फलाप्रोक्तामहर्षिभिः । ऋद्धिर्योग्यंसिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याङ्ग याङ्गमें ॥ ऋद्धिर्मत्स्यात्रिदोषघ्नी शुक्रलामधुरागुरुः । प्राणैश्वर्य्यकरीमूर्च्छा रक्तपित्तवि नाशिनी ॥ वृद्धिगर्भप्रदाशीता बृंहणीमधुरास्मृता । बृष्यापित्तास्त्रशमनी क्षतकासक्षया पहा ॥ राज्ञामप्यष्टवर्गास्तु यतोऽयमतिदुर्लभः । तस्मादस्यप्रतिनिधिर्गृह्णीयात्तद्गुणं भिषक् ॥ (मुख्यः सदृशः प्रतिनिधिः) एतस्य प्रतिनिधिमाह ॥ मेदाजीवककाकोली ऋद्धिवृद्धेऽपिचासती । वरीविदार्य्यश्वगन्धा वाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत् ॥ मेदामहामेदा स्थाने शतावरी मूलम् । जीवकर्षभकस्थानेविदारीमूलम् । काकोली क्षीरकाकोलीस्थाने अश्वगन्धामूलम् । ऋद्धिबृद्धिस्थाने वाराहीकंदंगुणैस्तत्तुल्यं क्षिपेत् ॥ १३५ ॥

ऋद्धिबृद्धिकी उत्पत्ति लक्षणनामऔरगुण ॥

ऋद्धि वृद्धि यह दोनों कन्द कोश यामलनाम देशमें उत्पन्नहोते हैं यहदोनों कन्द श्वेतरंगरोमयुक्त छिद्र संयुक्त और लतासे उत्पन्न होतेहैं- अब इनका भेदकहते हैं-ऋद्धिरुईके डोंडेके समान होती है उसका फलबाईं ओरको घूमाहुआ होताहै और वृद्धिकाफल दाहिनी ओरको घूमाहुआ होता है-योग्य सिद्धि और लक्ष्मी यह ऋद्धि और वृद्धि इनदोनोंके नामहैं- ऋद्धि बल कारक, त्रिदोष नाशक, वीर्य वर्द्धक, मधुर,भारी, बलतथा एश्वर्य्य की देनेवाली और मूर्च्छा तथारक्त पित्तकी नाशकहोती है, वृद्धि गर्भदायक,शीतल, मांसवर्द्धक, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और रक्त, पित्त, घाव, खांसी तथा क्षयरोग की नाशक होतीहै बैद्य प्रायः इनके बदलेमें इनके ही समान औषधियों को ग्रहणकरें क्योंकि यह अष्टवर्ग राजालोगोंको भी दुर्लभहै, मेदा और महामेदाके बदलेमें सतावरि, जीवक ऋषभकके बलदे

में विदारीकन्द, काकोली और क्षीरकाकोली के अभावमें असगन्ध और ऋद्धि तथा वृद्धि के अभाव में बाराही कन्द ग्रहणकरे क्योंकि यहगुणमें समानहैं॥ १३५॥

अथ जेठीमधु॥

यष्टीमधुतथायष्टी मधुकंक्लीतकंतथा। अन्यत्क्लीतनकन्तत्तु भवेत्तोयेमधूलिका॥ यष्टीहिमागुरुःस्वाद्वी चक्षुष्याबलवर्णकृत्। सुस्निग्धाशुक्रलाकेश्या स्वर्य्यापित्तानिलास्र जित्॥ व्रणशोथविषच्छर्दि तृष्णाग्लानिक्षयापहा॥ १३६॥

मुलहटी के नाम और गुण॥

यष्टीमधु, यष्टी, मधूक और क्लीतक, यह मुलहटी के नाम हैं, एक दूसरे प्रकार की मुलहटी जो कि पानीमें उत्पन्न होती है उसको क्लीतनक और मधूलिका कहते हैं- मुलहटी शीतल, भारी, मधुर, नेत्रोंको हित, बल तथा वर्ण करने वाली, स्निग्ध, वीर्य्य बर्द्धक, केशोंको हित, स्वर को उपकारी और पित्त वायु, रुधिर दोष, घाव, सूजन, विषदोष, छर्दि, तृषा, शरीर की ग्लानि तथाक्षय की नाशक होती है॥ १३६॥

अथ कम्बीला॥

काम्पिल्लःकर्कशश्चन्द्रो रक्तांगोरोचनोऽपिच। काम्पिल्लःकफपित्तास्र कृमिगुल्मो दरव्रणान्॥ हन्तिरचीकदूष्णश्च मेहानाहविषाश्मनुत्॥ १३७॥

कबीले के नाम और गुण॥

कांपिल्य, कर्कश, चन्द्र, रक्तांग और रोचन यह कबीले के नाम हैं, कबीला कफ पित्त रुधिर दोष, कृमि, गुल्म, उदर, व्रण, प्रमेह, आनाह, विष तथा पथरीका नाशक, रेचक, कटु और उष्ण होता है॥ १३७॥

अथ धनबहेरा॥

आरग्वधोराजवृक्षःशम्पाकश्चतुरङ्गुलः। आरवेतोऽयाधिघातःकृतमालःसुवर्णकः॥ कर्णिकारोदीर्घफलःस्वर्णाङ्गःस्वर्णभूषणः। आरग्वधोगुरुःस्वादुःशीतलःस्रंसनोमृदुः॥ ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलनुत्। तत्फलंस्रंसनंरुच्यं कुष्ठपित्तकफापहम्॥ ज्वरेतु सततंपथ्यंकोष्ठशुद्धिकरंपरम्॥ १३८॥

अमलतास के नाम और गुण॥

आरग्वध, राजवृक्ष, संपाक, चतुरंगुल, आरवेत, व्याधि घात, कृतमाल, सुवर्णक, कर्णिकार दीर्घफल, स्वर्णांग और स्वर्ण भूषण, यह अमलतास के नाम हैं, अमलतास, भारी, मधुर, शीतल, संसन और ज्वर, हृदय के रोग, रक्तपित्त, बात, उदावर्त, तथा शूल रोगनाशक होता है, अमलतास का फल संसन, रुचिकारक, कुष्ठ, पित्त तथा कफनाशक, ज्वरमें सदैव पथ्य और कोष्टका अत्यन्त शोधक होता है॥ १३८॥

अथकटुकी॥

कटीतुकटुकातिक्ताकृष्णभेदाकटुम्भरा। अशोकामत्स्यशकलाचक्राङ्गीशकुलादनी॥

मत्स्यपित्ताकाण्डरुहारोहिणीकटुरोहिणी । कट्वीतुकटुकापाकेतिक्तारूक्षाहिमालघुः ॥ भेदिनीदीपनीह्रद्याकफपित्तज्वरापहा। प्रमेहश्वासकासास्रदाहकुष्ठकृमिप्रणुत् ॥१३९॥

कुटकी के नाम और गुण ॥

कटुकी, कटुका, तिक्ता, कृष्णभेदा, कटम्भरा, अशोका, मत्स्यशकला, चक्रांगी, शकुलादिनी मत्स्य पित्ता, काण्डरुहा, रोहिणी और कटुरोहिणी यह कुटकी के नाम हैं, कुटकी विपाक में कटु तिक्त, रूखी, शीतल, हल्की, भेदक, दीपन, हृदयको हित और कफ पित्त ज्वर प्रमेह श्वास, खांसी रुधिर के दोष, दाह, कुष्ठ तथा कृमिकी नाशक होती है ॥ १३९ ॥

अथ चिरायता ॥

किरातितिक्तःकैरातःकटुतिक्तःकिरातकः । काण्डतिक्तोनार्य्यतिक्तो भूनिम्बोरामसेनकः ॥ किरातकोऽन्योनैपालःसोऽर्द्धतिक्तोज्वरान्तकः । किरातःसारकोरूक्षःशीतलस्तिक्तकोलघुः ॥ सन्निपातज्वरश्वासकफपित्तास्रदाहनुत् । कासशोथतृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ॥ १४० ॥

चिरायते के नाम और गुण ॥

किरात, तिक्त, कैरात, कटुतिक्त, किरातक, कांडतिक्त, नार्य्यतिक्त, भूनिम्ब और रोमसेनक, यह चिरायते के नामहैं-एक दूसरे प्रकारका चिरायता नैपाल देशमें होताहै उसको अर्द्धतिक्त और ज्वरांतक भी कहते हैं-चिरायता, सारक, रूखा, शीतल, तिक्त, हलका और सन्निपात ज्वर, श्वास, कफ रक्त, पित्त, दाह, खांसी, सूजन, तृषा, कुष्ठ, ज्वर, घाव तथा कृमिका विनाशक होताहै ॥ १४० ॥

अथ इन्द्रयवः ॥

उक्तंकुटजबीजन्तुयवमिन्द्रयवंतथा।कलिंगञ्चापिकालिंगंतथाभद्रयवाअपि(इतिक्षीरस्वामी)अमरःप्राह)क्वचिदिन्द्रस्यनामैवभवेत्तदभिधायकम्। फलानीन्द्रयवास्तस्यतथाभद्रयवाअपि॥इन्द्रयवंत्रिदोषघ्नंसंग्राहिकटुशीतलम्॥ज्वरातीसाररक्तार्शोवमिवीसर्पकुष्ठनुत्। दीपनंगुदकीलास्रवातास्रश्लेष्मशूलजित् ॥ १४१ ॥

इन्द्रजौके नाम और गुण ॥

कुटज के बीजको यव, इन्द्रयव, कलिंग, कालिंग और भद्रयव कहतेहैं इसको अमरसिंहने नपुंसक लिंगमें कहाहै और धन्वन्तरि कहते हैं कि इंद्रके सम्पूर्ण नाम कुटज वृक्षके नाम हैं उसके फलको इंद्रयव और भद्रयव कहते हैं इंद्रयव त्रिदोष नाशक, ग्राही, कटु, शीतल, दीपन और ज्वर अतीसार खूनी बवासीर, छर्दि, वीसर्प, कुष्ठ, गुदकील, रुधिरदोष, बात रक्त कफ तथा शूलका नाशकहोताहै १४१॥

मयनफलम् ॥

मर्दनश्छर्दनःपिंडीनटःपिंडीतकस्तथा । करहाटोमरुवकःशल्यकोविषपुष्पकः । मदनोमधुरस्तिक्तोवीर्य्योष्णोलेखनोलघुः ॥ वान्तिकृद्विद्रधिहरःप्रतिश्यायव्रणान्तकः । रूक्षःकुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः ॥ १४२ ॥

मैनफल के नाम और गुण ॥

मर्दन, छर्दन, पिंड, नट, पिंडीतक, करहाट, मरुवक, शल्यक और विषपुष्पक यह मैनफलके नामहैं

मैनफल,मधुरतिक्त,रसयुक्त,वीर्य्य में उष्ण,लेखन, हलका,छर्दिकारक,रूखा और विद्रधि, पीनस घाव,कुष्ठ,कफ,आनाह,सूजन,गुल्म तथा व्रणनाशक होताहै ॥ १४२ ॥

अथरासना ॥

रास्नायुक्तरसारस्यासुवहारसनारसा । एलापर्णीचसुरसासुगन्धाश्रेयसीतथा ॥ रास्नामपाचिनीतिक्तागुरूष्णाकफवातजित् । शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ॥ कासज्वरविषार्शीतिवाति कामयसिध्महृत् ॥ १४३ ॥

रासनाके नाम और गुण ॥

रासना,युक्तरसा,रस्या,सुवहा,रसना,रसा एलापर्णी,सुरसा, सुगंधा और श्रेयसी यह रासना के नामहैं, रासना आमकी पचानेवाली,तिक्त,भारी,उष्ण और कफ, बात,सूजन,श्वास,बातरक्त,बात शूल,उदर, खांसी,ज्वर,विष, अस्सी प्रकारके बातरोग तथा सिध्मरोग की नाशकहोती है ॥ १४३ ॥

अथरास्नाभेदनाइइतिलोके ॥

नाकुलीसरसानागसुगन्धागन्धनाकुली । नकुलेष्टाभुजङ्गाक्षीसर्प्पाङ्गीविषनाशिनी ॥ नाकुलीतुवरातिक्ताकटुकोष्णाविनाशयेत् । भोगीलूताव्रश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान् ॥ १४४ ॥

रासनाका भेद अर्थात् नाईके नाम और गुण ॥

नाकुली,सुरसा,नागसुगन्धा,गन्धनाकुली,सकुलेष्टा,भुजंगाक्षी,सर्पाक्षी और विष नाशिनी यह नाईके नामहैं, नाई तिक्त कटु, कषाय रसयुक्त,उष्ण और सर्प ,मकडी,विच्छू तथा मूसेका विष, ज्वर कृमि तथा घावकी नाशक होती है ॥ १४४ ॥

अथमाचिका ॥

(पश्चिमदेशेमोइआइतिलोकेप्रसिद्धोवृक्षविशेषः) माचिकाप्रस्थिकाम्बष्ठातथाबाम्बालिकाम्बिका । मयूरविदलाकेशी सहस्राबालमूलिका ॥ माचिकाम्लारसेपाकेकषायाशीतलालघुः। पक्वातीसारपित्तास्र कफकण्ठाभयापहा ॥ १४५ ॥

माचिका अर्थात् पश्चिम देशमें मोइया इस प्रसिद्ध के नाम और गुण ॥

माचिका, प्रस्थिका, अम्बष्ठा,अम्बालिका,अम्विका, मयूरविदला, केशी, सहस्रा और बलिमूलिका यह माचिकाके नामहैं,माचिका रसमें अम्ल, पाकमें कषाय, शीतल, हलकी और पक्वातीसार पित्त,रुधिरदोष, कफ, तथा कंठके रोगोंकी नाशक होतीहै ॥ १४५ ॥

अथतेजवती ॥

तेजवल्कलइतिच । तेजस्विनीतेजवती तेजोव्हातेजनीतथा ॥ तेजस्विनीकफश्वासकासास्यामयवातहृत् । पाचन्युष्णाकटुस्तिक्तारुचिवह्निप्रदीपिनी ॥ १४६ ॥

तेजवती के नाम और गुण ॥

तेजस्विनी,तेजवती, तेजोह्वा और तेजनी यह तेजोवती के नामहैं,तेजवती,कफ,श्वास, खांसी मुखके रोग तथा बातकी नाशक, पाचक, उष्ण, कटु,तिक्त रसयुक्त, रुचिकारक और अग्निदीपक होती है ॥ १४६ ॥

अथउमिजिनीमालकांगुनीइतिवा ॥

ज्योतिष्मतीस्यात्कटभीज्योतिष्काकङ्गनीतिच। पारावतपदीपण्यालताप्रोक्ताककुन्दनी ॥ ज्योतिष्मतीकटुस्तिक्तासराकफसमीरजित्। अत्युष्णावामनीतीक्ष्णावह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ॥ १४७ ॥

मालकांगनीके नाम और गुण ॥

ज्योतिष्मती,कटभी,ज्योतिष्का,कंगुनी, पारावतपदी, पण्यालता और ककुन्दनी यह मालकांगनी के नामहैं, मालकांगनी कटु तिक्त रसयुक्त, सारक,कफ बातनाशक, अत्यन्त उष्ण,छर्दिकारक तीक्ष्ण और अग्नि,बुद्धि तथा स्मृति की देनेवाली होती है ॥ १४७ ॥

अथकूटः ॥

कुष्ठरोगाह्वयम्बाप्यंपारिभव्यन्तथोत्पलम् ॥ कुष्ठमुष्णङ्कटुस्वादुशुक्रलन्तिक्तकंलघु॥ हन्तिवातास्रवीसर्पकासकुष्ठमरुत्कफान् ॥ १४८ ॥

कूटके नाम और गुण ॥

कुष्ठ,रोगाह्वय,आप्य,पारिभव्य और उत्पल यहकूटके नामहैं,कूटउष्ण,कटु तिक्त मधुर रसयुक्त वीर्य्यबर्द्धक, हलकी और बात रक्त, वीसर्प,खांसी, कुष्ठ,बात तथा कफ नाशक होती है ॥ १४८ ॥

अथकुष्ठभेदपुष्करमूलम् ॥

उक्तंपुष्करमूलन्तुपौष्करंपुष्करञ्चतत्। पद्मपत्रञ्चकाश्मीरंकुष्ठभेदमिमंजगुः ॥ पौष्करंकटुकन्तिक्तमुक्तंवातकफज्वरान् । हन्तिशोथारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ॥ १४९ ॥

पुष्करमूल के नाम और गुण ॥

पुष्करमूल,पौष्कर, पुष्कर,पद्मपत्र, काश्मीर और कुष्ठभेद यह पुष्करमूलके नामहैं, पुष्करमूल कटुतिक्त रसयुक्त, उष्ण और बात कफ ज्वर, सूजन,अरुचि तथा श्वास नाशक होताहै और यह पसली की पीड़ामें अत्यन्त गुणदायक है ॥ १४९ ॥

अथचोक ॥

कटुपर्णीहैमवतीहेमक्षीरीहिमावती। हेमाह्वापीतदुग्धाचतन्मूलञ्चोकमुच्यते ॥ हेमाह्वाचोचनीतिक्ताभेदिन्युत्क्लेशकारिणी। कृमिकण्डूविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ॥ १५० ॥

चोकके नाम और गुण ॥

कटुपर्णी,हैमवती, हेमक्षीरी, हिमावती हेमाह्वा और पीतदुग्धा, यहकटुपर्णी के नामहैं इसकी जड़को चोक कहते हैं, चोक दस्तावर,तिक्त, भेदक,मचली करनेवाली और कृमि,कंडू,विष,आनाह कफ,पित्त,कुष्ठ तथा रक्तदोषकी नाशक होती है ॥ १५० ॥

अथकाकराशृंगी ॥

शृंगीकर्कटशृंगीचस्यात्कुलीरविषाणिका॥अजशृंगीचवक्त्राचकर्कटाख्याचकीर्तिता॥

श्रृंगीकषायातिक्तोष्णा कफवातक्षयज्वरान् । श्वासोऽर्द्धवाततृट्कास हिक्कारुचिवमीन्हरेत् ॥ १५१ ॥

काकड़ासिंगी के नाम और गुण ॥

श्रृंगी, कर्कटश्रृंगी, कुलीर, बिषाणिका, अजश्रृंगी, वक्त्रा और कर्कटाख्या यह काकड़ासिंगी के नामहैं,काकड़ासिंगी तिक्त कषाय रसयुक्त, उष्ण और कफ बात क्षय,ज्वर,श्वास,ऊर्द्ध्व बात, तृषा खांसी, हिचकी, अरुचि तथा छर्दिकी नाशक होती है ॥ १५१ ॥

अथकायफरस्यनामगुणाः ॥

कट्फलःसोमवल्कश्च कैटर्य्यःकुम्भिकाऽपिच । श्रीपर्णीकाकुमुदिकाभद्राभद्रवतीत्रि च ॥ कट्फलस्तुवरस्तिक्तःकटुर्वातकफज्वरान् । हन्तिश्वासप्रमेहार्शःकासकण्ठामया रुचीः ॥ १५२ ॥

कायफल के नाम और गुण ॥

कटफल, सोमबल्क, कैटर्य्य, कुंभिका,श्रीपर्णिका,कुमुदिका, भद्रा और भद्रवती यहकायफल के नाम हैं, कायफल कषाय तिक्त और कटुरसयुक्त और बात कफ ज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर खांसी, कंठरोगतथा अरुचिका नाशक होताहै ॥ १५२ ॥

अथभार्गीवभनेटीइतिच ॥

भारङ्गीभृगुभवापद्माफञ्जीब्राह्मणयष्टिका । ब्राह्मण्यंगारवल्लीचखरशाकश्चहञ्जिका॥ भार्गीरूक्षाकटुस्तिक्तारुच्योष्णापाचनीलघुः॥ दीपनीतुवरागुल्मरक्तजन्नाशयेद्ध्रुवम् ॥ शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ॥ १५३ ॥

भारंगीके नाम औरगुण ॥

भारंगी, भृगुभवा, पद्मा, फंजी, ब्राह्मण यष्टिका, ब्राह्मणी, अंगारबल्ली, खरशाका और हंजिका यह भारंगीके नामहैं, भारंगी रूखी, कटुतिक्त कषायरसयुक्त, रुचिकारक, उष्ण, पाचक, लघु दीपन और गुल्म, रुधिर, सूजन, खांसी, कफ, श्वास, पीनस,ज्वर तथा बात नाशकहोती है १५३॥

अथपाषाणभेदः ॥

पाषाणभेदकोऽश्मघ्नोगिरिभिद्भिन्नयोजनी । अश्मभेदोहिमास्तिक्तःकषायोवस्तिशोधनः ॥ भेदनोहन्तिदोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः । योनिरोगान्प्रमेहांश्च प्लीहशूलव्रणानिच ॥ १५४ ॥

पाषाणभेदके नाम और गुण ॥

पाषाण भेद, अश्मघ्न, गिरिभित् और भिन्न योजनी, यह पाषाण भेद के नामहैं, पाषाणभेद शीतल, तिक्तकषाय रसयुक्त, मूत्राशयका शोधक, भेदक और त्रिदोष,बवासीर, गुल्म,मूत्र कृच्छ्र, पथरी, हृदयकेरोग, योनिरोग, प्रमेह, प्लीहा, शूलतथा घावका नाशक होताहै ॥ १५४ ॥

अथधावई ॥

धातकीधातुपुष्पीचताम्रपुष्पीत्रिकुञ्जरा । सुभिक्षावहुपुष्पचिवाह्निज्वालाचसास्मृता॥ धातकीकटुकाशीतामृदुकृत्तुवरालघुः । तृष्णातीसारपित्तास्रविषकृमिविसर्पजित॥१५५॥

धवईकेनाम और गुण ॥

धातुकी, धातुपुष्पी, ताम्रपुष्पी, कुंजरा, सुभिक्षा, बहुपुष्पी और वह्निज्वाला यह धवई के नाम हैं, धवई कटुकषाय रसयुक्त, शीतल, कोमलता करने वाली, हल्की और तृषा, अतीसार, पित्त, रक्त दोष, विष, कृमि और वीसर्प नाशक होतीहै ॥ १५५ ॥

अथमञ्जिष्ठा ॥

मञ्जिष्ठाविकसाजिङ्गीसमंगाकालमेषिका । मण्डूकपर्णीभण्डीरीभण्डीयोजनवल्ल्यपि ॥ रसायन्यरुणाकालारक्तांगीरक्तयष्टिका । भण्डीतर्कीचगण्डीरीमञ्जूषावस्त्ररञ्जिनी ॥ मञ्जिष्ठामधुरातिक्ताकषायास्वरवर्णकृत् । गुरुरुष्णाविषश्लेष्मशोथयोन्यक्षिकर्णरुक् ॥ रक्तातीसारकुष्ठास्रवीसर्प्पव्रणमेहनुत् ॥ १५६ ॥

मजीठके नाम औरगुण ॥

मंजिष्ठा, विकसा, जिंगी, समंगा, कालमेषिका, मंडूकपर्णी, भंडीरी, भंडी, योजनवल्ली, रसायनी, अरुणा काला, रक्तांगी, रक्तयष्टिका, भंडीतकी, गण्डीरी, मंजूषा और बस्त्र रंजिनी यह मजीठ के नाम हैं, मजीठ मधुर तिक्तकषाय रसयुक्त, स्वरको उत्तमकरने वाला, वर्णकोहित, भारी, उष्ण और विषकफ, सूजन, योनिरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग और रक्तातीसार, कुष्ठ, रक्त दोष, वीसर्प घावतथा प्रमेह नाशकहोता है ॥ १५६ ॥

अथकुसुम्भ ॥

स्यात्कुसुम्भम्बह्निशिखं वस्त्ररञ्जकमित्यपि । कुसुम्मम्बातलंकृच्छ्रं रक्तपित्तकफापहम् ॥ १५७ ॥

कुसुंभके नाम औरगुण ॥

कुसंभ, वह्निशिख और बस्त्र रंजक यह कुसुम के नामहैं, कसुम वात वर्द्धक और मूत्रकृच्छ्र, रक्त पित्ततथा कफ नाशकहोताहै ॥ १५७ ॥

अथलाही ॥

लाक्षापलंकषालक्तो यावोवृक्षामयोजतुः । लाक्षावर्ण्याहिमाबल्यास्निग्धाचतुवरालघुः ॥ अनुष्णाकफपित्तास्रहिक्काकासज्वरप्रणुत् ॥ व्रणोरःक्षतवीसर्प्पकृमिकुष्ठगदापहा ॥ अलक्तकोगुणै स्तद्वद्विशोषाद्व्यङ्गनाशनः ॥ १५८ ॥

लाखके नाम औरगुण ॥

लाक्ष्या, पलंकशा, अलक्त, याव, वृक्षामय और जतु यह लाख के नामहैं, लाख वर्ण के लियेहित शीतल, बलकारक, स्निग्ध, कषाय, हलकी उष्णतासे रहित और कफ पित्तरक्त दोष, हिचकी, स्वांसी ज्वर, घाव, उरक्षत, वीसर्प, तथा कुष्ठरोगकी नाशक होती है और अलक्तकमें भी इसी प्रकार के गुणहोते हैं यह व्यंगरोगमें अधिक गुणकरताहै ॥ १५८ ॥

अथहरिद्रा ॥

हरिद्राकाञ्चनीपीतानिशारुयावरवर्णिनी । कृमिघ्नाहलदीयोषित्प्रियाहृद्रविलासिनी ॥ हरिद्राकटुकातिक्तारूक्षोष्णाकफपित्तनुत्वर्ण्यात्वग्दोषमेहास्रशोथपाण्डुव्रणापहा ॥ १५९ ॥

हल्दी के नाम और गुण ॥

हरिद्रा- कांचनी- पीता- निशा- बरवर्णिनी- कृमिघ्ना- हलदी- योषित- प्रिया और हरविलासिनी- यह हल्दी के नाम हैं- हल्दी कटु तिक्त रसयुक्त-रूखी- उष्ण- वर्णके लिये हित और कफ पित्त त्वचा दोष, प्रमेह-रक्तदोष- सूजन- पांडु और घाव के रोगकी नाशक होती है ॥ १५९ ॥

कर्पूरहरदि ॥

दार्वीभेदाम्रगन्धाचसुरभीदारुदारुच । कर्पूरापद्मपत्रास्यात्सुरीमत्सुरतारका॥ आम्रगन्धिर्हरिद्रायासाशीतावातलामतापित्तहन्मधुरातिक्तीसर्वकण्डूविनाशिनी ॥ १६० ॥

कपूर हल्दी के नाम और गुण ॥

दार्वीभेदा, आम्रगन्धा, सुरभीदारु, दारु, कर्पूरा, पद्मपत्रा, सुरभी और सुरतारका यह कपूर हल्दी के नाम हैं, कपूर हल्दी, शीतल, बायु वर्द्धक, पित्तनाशक, मधुर तिक्त रसयुक्त और सब प्रकार की खुजली की नाशक होती है, ॥ १६० ॥

अथवनहरदी ॥

अरण्यहलदीकन्दः कुष्ठवातास्रनाशनः ॥ १६१ ॥

बनहल्दीके गुण ॥

बनहल्दी नामका कन्द कुष्ठ और बातरक्त दोषका नाशक होताहै ॥ १६१ ॥

अथदारुहरिद्रा ॥

दार्वीदारुहरिद्राचपर्ज्जन्यापर्ज्जनीतिच । कटंकटेरीपीताचभवेत्सैवपचम्पचा ॥ सैव कालीयकःप्रोक्तस्तथाकालेयकोऽपिच । पीतद्रुश्चहरिद्रुश्च पीतदारुकपीतकम् ॥ दार्वी निशागुणाकिन्तुनेत्रकर्णास्यरोगनुत् ॥ १६२ ॥

दारुहल्दीके नाम और गुण ॥

दार्वी,दारुहरिद्रा,पर्ज्जन्या,पर्जनी,कटंकटेरी,पीता,पचंपचा,कालीयक, कालेयक, पीतद्रु, हरिद्रु पीतदारुक और पीतक यह दारुहल्दीकेनामहैं दारुहल्दी गुणोंमें हल्दीके समानहै और नेत्रकर्ण तथा मुखके रोगोंमें विशेष हितकारीहै ॥ १६२ ॥

रसाञ्जनम् ॥

दार्वीक्वाथसमंक्षीरंपादम्पक्त्वायथाघनम् । तदारसाञ्जनाख्यन्तत्नेत्रयोःपरमंहितम् ॥ रसञ्जनन्तार्क्ष्यशैलंरसगर्भञ्चतार्क्ष्यजम् । रसाञ्जनंकटुश्लेष्मविषनेत्रविकारनुत् ॥ उष्णंरसायनन्तिक्तंछेदनंव्रणदोषहृत् ॥ १६३ ॥

रसौतके नाम और गुण ॥

दारुहल्दीके काढ़ेमें समभाग दूध मिलाकर परिपाक करनेसे जब चौथाई गाढ़ा शेष रहजाय उसको रसौत कहते हैं यह नेत्रोंको अत्यन्त हितकारी होताहै रसांजन तार्क्ष्यशैल रसगर्भ और तार्क्ष्यज यह रसौतके नामहैं रसौत कटु तिक्तरसयुक्त- उष्ण- रसायन- छेदन और कफविष नेत्ररोग तथा घाव नाशक होताहै ॥ १६३ ॥

अथवकुची ॥

अवल्गुजीवाकुचीस्यात्सोमराजीसुपर्णिका । शशिलेखाकृष्णफलासोमाभूतफली

तिच ॥ सोमवल्लीकालमेषीकुष्ठघ्नीचप्रकीर्तिता । वाकुचीमधुरातिक्ताकटुपाकारसायनी ॥विष्टम्भहृद्विमारुच्यासराश्लेष्मास्रपित्तनुत्।रूक्षाह्यश्वासकुष्ठमेहज्वरकृमिप्रणत्॥ तत्फलंपित्तलंकुष्ठकफानिलहरंकटु।केश्यन्त्वच्यंवमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत् १६४॥

बकुचीके नाम और गुण ॥

अवल्गुज,बाकुची,सोमराजी,सुपर्णिका.शशिलेखा,कृष्णफला.सोमा,पूतिफली, सोमवल्ली, कालमेषी और कुष्ठघ्नी यह वकुचीकेनामहैं बकुची मधुर तिक्त रसयुक्त,विपाकमें कटु,रसायन, विष्टम्भ नाशक,शीतल, रुचिकारक, शाक,रूखा, हृदयकोहित और कफरक्त,पित्तश्वास, कुष्ठ,प्रमेह, ज्वर तथा कृमि नाशक होतीहै बकुचीका फल पित्तवर्द्धक,कटु, केशोंकोहित,त्वचाका उपकारी और कुष्ठ कफ बात श्वास खांसी सूजन आम दोष तथा पांडुका नाशक होताहै ॥ १६४ ॥

अथचक्रमर्दः ॥

चक्रमर्दःप्रपुन्नाटोदद्रुघ्नोमेषलोचनः। पद्माटःस्यादेड़गजश्चक्रीपुन्नाटइत्यपि ॥ चक्रमर्दोलघुःस्वादुरूक्षःपित्तानिलापहः। हृद्योहिमःकफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीनहरेत ॥ हन्त्युष्णन्तत्फलंकुष्ठकण्डूदद्रुविषानिलान् । गुल्मकासकृमिश्वासनाशनंकटुकंस्मृतम् ॥ १६५ ॥

पवांड़के नाम और गुण ॥

चक्रमर्द,प्रपुंनाट,दद्रुघ्न,मेषलोचन, पद्माट,एडगज, चक्री और पुन्नाट यह पवांड़के नामहैं पवांड हलका, मधुर, रूखा, हृदयकोहित, शीतल और पित्त, वात, कफ, श्वास, कुष्ठ, दाद, तथा कृमि का नाशक होताहै पवांडका फल उष्ण- कटु और कुष्ठ- खुजली दाद- विष- बात गुल्म खांसी कृमि तथा श्वासनाशक होताहै ॥ १६५ ॥ अथअतीसः ॥

विषात्वतिविषाविश्वाशृङ्गीप्रतिविषारुणा। शुक्लकन्दाचोपविषाभंगुराघुणवल्लभा ॥ विषासोष्णाकटुस्तिक्तापाचनीदीपनीहरेत्।कफपित्तातिसारामविषकासवमिकृमीन्॥१६६॥

अतीसके नाम और गुण ॥

विषा, अतिबिषा, विश्वा, शृंगी, प्रतिबिषा, अरुणा, शुक्लकन्दा, उपबिषा, भंगुरा और घुण बल्लभा यह अतीसके,नामहैं अतीस उष्ण, कटु तिक्त, रसयुक्त पाचक, दीपन और कफ पित्त,अतीसार, आम रोग, बिष, खांसी छर्दितथा कृमि नाशक होताहै ॥ १६६ ॥

अथसावरलोधः । पठिआलोधइतिलोके ॥

लोध्रस्तिल्वस्तिरीटश्चशावरीमालवस्तथा ॥ द्वितीयःपट्टिकालोधःक्रमुकःस्थूलवल्कलः। जीर्णपत्रोबृहत्पत्रःपट्टीलाक्षाप्रसादनः॥ लोध्रोग्राहीलघुःशीतश्चक्षुष्यःकफपित्तनुत्। कषायोरक्तपित्तासृग्ज्वरातीसारशोथहृत् ॥ १६७ ॥

लोध और पठानीलोधके नाम और गुण ॥

लोध्र, तिल्व, तिरीट, शावर और गालव यह लोधके नामहैं पट्टिकालोध्र, क्रमुक, स्थूलबल्कल जीर्णपत्र- बृहत्पत्र- पट्टी और लाक्षाप्रसादन यह पठानीलोधके नामहैं लोध, ग्राही, हल्का, शीतल नेत्रोंको हित, कषाय, और कफ, पित्त, रक्त, पित्त, रक्त, दोष, ज्वर अतीसार तथा सूजन का नाशक होताहै ॥ १६६ ॥

अथलशुनः ॥

लशुनस्तुरसोनः स्यादुग्रगन्धोमहौषधम् । अरिष्टोम्लेच्छकन्दश्चयवनेष्टोरसोनकः ॥ तदाततोऽपतद्बिन्दुःसरसोनोऽभवद्भुवि । पञ्चभिश्चरसैर्युक्तोरसेनाम्लेनवर्ज्जितः ॥ तस्माद्रसोनइत्युक्तोद्रव्याणांगुणवेदिभिः । कटुकश्चापिमूलेषुतिक्तपत्रेषुसंस्थितः ॥ नालेकषायउद्दिष्टोनालाग्रेलवणःस्मृतः । वीजेतुमधुरःप्रोक्तोरसस्तद्गुणवेदिभिः॥ रसोनोवृंहणोवृष्यःस्निग्धोष्णःपाचनःसरः । रसेपाकेचकटुकस्तीक्ष्णोमधुरकोमतः ॥ बलवर्णकरोमेधाहितोनेत्र्योरसायनः । हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूलविबन्धगुल्मारुचिकासशोफान् ॥ दुर्नामकुष्ठानलसादजन्तुसमीरणश्वासकफांश्चहन्ति । मद्यंमांसंतथाम्लञ्चहितंलशुनसेविनाम् ॥ व्यायाममातपंरोषमतिनीरंपयोगुड़म् । रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतान्निरन्तरम् ॥ १६८ ॥

लहसन के नाम उत्पत्ति और गुण ॥

लसुन, रसोन, उग्रगन्ध, महौषधि, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द, यवनेष्ट और रसोनक यह लहसनके नामहैं, जिस समय गरुडजीने इंद्रसे अमृत छीनलिया था उस समय उस अमृतसे एक बूंद पृथ्वी पर गिरपडी उसी से लहसन उत्पन्नहुआहै, लहसनमें अम्लरस के बिना सब रस होतेहैं इसी से इसका नाम रसोनहै, लहसनकी जडमें कटु पत्रमें तिक्त, नाल में कषाय, नालके अग्रभागमें लवण और बीजमें मधुररस होताहै, यह उसके रसज्ञ लोगोंने कहाहै, लहसन, धातु वर्द्धक, वीर्य्य वर्द्धक, स्निग्ध, उष्ण, पाचक,सारक, कटु मधुर रसयुक्त, विपाकमें कटु,तीक्ष्ण, टूटेको जोडनेवाला गलेका शुद्धकरने वाला, कंठको हित, भारी, रक्त पित्त बर्द्धक, बलकारी, वर्णको उत्तम करनेवाला मेधाको हित, नेत्रोंको हित, रसायन और हृदय के रोग, जीर्णज्वर, कुक्षिकी पीडा विवन्ध, गुल्म अरुचि, खांसी, सूजन, बवासीर, कुष्ठ, आमदोष,मंदाग्नि, कृमि, बात श्वास तथा कफ नाशक होताहै, लहसन खानेवाले पुरुषको मद्य, मांस, तथा खट्टी वस्तु हितहै और व्यायाम, धूप, क्रोध बहुत जलपान, दुग्ध और गुड़ यह संपूर्ण निरन्तर त्याग करने के योग्य हैं ॥ १६८ ॥

अथपिआज ॥

पलाण्डुर्यवनेष्टश्चदुर्गन्धोमुखदूषकः । पलाण्डुस्तुगुणैर्ज्ञेयोरसोनसदृशोगुणैः ॥ स्वादुपाकेरसोऽनुष्णःकफकृन्नातिपित्तलः। हरतेकेवलंवातंबलवीर्य्यकरोगुरुः ॥ १६९ ॥

प्याजके नाम और गुण ॥

पलांडु, यवनेष्ट, दुर्गन्ध और मुखदूषक यह प्याज के नामहैं, प्याजमें लहसनके समान गुण हैं और विशेषता यहहै कि प्याज रस तथा पाक में मधुर, शीतल, कफकृत कुछ पित्तकारक, केवल बात नाशक बल वीर्य्य वर्द्धक और भारी होतीहै ॥ १६९ ॥

अथभेला ॥

भल्लातकंत्रिषुप्रोक्तमरुष्कोऽरुष्करोऽग्निकः । तथैवाग्निमुखीभल्लीवीरवृक्षश्च शोफकृत् ॥ भल्लातकफलंपक्वंस्वादुपाकरसंलघु । कषायंपाचनंस्निग्धंतीक्ष्णोष्णं

च्छेदिभेदनम् ॥ मेध्यंवह्निकरंहन्तिकफवातव्रणोदरम्। कुष्ठार्शोग्रहणीगुल्मशोफानाहज्व रकृमीन् ॥ तन्मज्जामधुरोष्ण्योवृंहणोवातपित्तहा ।वृत्तमारुष्करंस्वादुपित्तघ्नंकेश्यमग्नि कृत् ॥ भल्लातकःकषायोष्णःशुक्रलोमधुरोलघुः । वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीग दान् ॥ हन्तिगुल्मज्वरश्वित्रवह्नि मांद्यकृमिव्रणाम् ॥१७० ॥

भिलावेके नाम और गुण ॥

भल्लातक शब्द त्रिलिंगी है, अरुष्क, अरुष्कर, अग्निक, अग्निमुखी, भल्ली, वीरवृक्ष और शोफ कृत्, यह भिलावेके नामहैं, भिलावेका पक्काफल मधुर कषाय रसयुक्त पाकमें मधुर, हलका, पाचक स्निग्ध, तीक्ष्ण, उष्ण, छेदक, भेदक, मेधाको हित, अग्निकारक और कफ, वात, घाव, उदर, कुष्ठ बवासीर, ग्रहणी, गुल्म, सूजन, आनाह, ज्वर तथा कृमि नाशक होताहै, उसकी मींगी मधुर वीर्य्य बर्द्धक, धातु बर्द्धक, और बाततथा पित्त नाशक होता है, गोलभिलावा मधुर, पित्तनाशक, केशों को हित और अग्नि बर्द्धकहोता है, भिलावा, कषाय मधुर रसयुक्त, उष्ण, बीर्य बर्द्धक, हलका और वातकफ उदर, आनाह, कुष्ठ, बवासीर, ग्रहणी, गुल्म, ज्वर, श्वित्र, मंदाग्नि, कृमि, तथाघाव नाशक होता है, ॥ १७० ॥

अथभंगा ॥

भंगागञ्जामातुलानीमादिनीविजयाजया ॥ भंगाकफहरीतिक्ताग्राहणीपाचनीलघुः। तीक्ष्णोष्णापित्तलामाहमन्दवाग्वह्निवर्द्धिनी ॥ १७१ ॥

भांगके नाम और गुण ॥

भंगा, गंजा, मातुलानी; मादिनी, विजया और जया- यह भंगके नाम हैं. भंग, कफनाशक, तिक्त ग्राही, पाचक, हलकी, तीक्ष्ण, उष्ण, पित्तवर्द्धक, मोह तथा मदकारक और वाक्य तथा अग्नि की भी बढ़ाने वाली होती है ॥ १७१ ॥

अथपोस्ता ॥

तिलभेदःखसतिलःखाखसश्चापिसस्मृतः । स्यात्खाखसफलोद्भूतंवल्कलंशीतलं लघु ॥ ग्राहितिक्तंकषायञ्चवातकृत्कफास्रहृत्।धातूनांशोषकंरूक्षंमदकृद्वाग्विवर्द्धनम्। मुहुर्मोहकरंरुच्यंसेवनात्पुंस्त्वनाशनम् ॥ १७२ ॥

पोस्तके नाम और गुण ॥

तिल भेद, खसतिल और खाखस यह पोस्ते के नाम हैं पोस्ते का बक्कल, शीतल, हलका, ग्राही तिक्त कषाय रसयुक्त, वात बर्द्धक, कफ तथा खांसी नाशक, धातुओं का सुखाने वाला, रूखा, मद-कारक, वाक्य बर्द्धक, बारंबार मोह करने वाला, रुचिकारक और अधिक सेवन करने से पुरुषार्थका नाशक होता है ॥ १७२ ॥

अथअफीम ॥

उक्तंखसफलक्षीरमाफूकमहिफेनकम् । आफूकंशोषणंग्राहिश्लेष्मघ्नंवातपित्तलम् ॥ तथाखसफलोद्भूतवल्कलप्रायमित्यपि ॥ १७३ ॥

अफीम के नाम और गुण ॥

पोस्त फल के दूधको अफूक और अहिफेण कहते हैं, अफीम सुखाने वाली, ग्राही, कफनाशक वात पित्त बर्द्धक और प्रायः पोस्तके बल्कलके ही समान इसमें गुण होते हैं ॥ १७३ ॥

अथ खाखसदान ॥

उच्यन्तेखसवीजानि तेखाखसतिलाअपि । खसवीजानिबल्यानि वृष्याणिसुगुरूणि च ॥ जनयन्तिकफंतानि शमयन्तिसमीरणम् ॥ १७४ ॥

खसखस के नाम और गुण ॥

खसबीज और खाखस तिल, यह खसखस के नाम हैं, खसखस बलकारक, वीर्य बर्द्धक, बहुत भारी, कफ कारक और बात नाशक होती है ॥ १७४ ॥

अथ सैन्धव ॥

सैन्धवोऽल्पोशीतशिवं माणिमंथञ्चसिंधुजम् । सैन्धवंलवणंस्वादुदीपनंपाचनंलघु॥ स्निग्धंरुच्यंहिमंवृष्यं सूक्ष्मंनेत्र्यंत्रिदोषहृत् ॥ १७५ ॥

सेंधो नौन के नाम और गुण ॥

सैंधव शब्द पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिंग, शीत, शिव माणिमन्थ और सिन्धुज यह सेंधो नौनके नाम हैं, सेंधानौन, लवण मधुर रसयुक्त, दीपन, पाचक,हलका, स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्य वर्द्धक सूक्ष्म. नेत्र हित और त्रिदोष नाशक होता है ॥ १७५ ॥

अथ शाकम्भरि ॥

शाकम्भरीपंकथितं गुडाख्यंरोमकन्तथा । गुड़ाख्यंलघुवातघ्नमत्युष्णंभेदिपित्तलम् ॥ तीक्ष्णोष्णञ्चापिसूक्ष्मञ्चा भिष्पन्दिकटुपाकिच ॥ १७६ ॥

सांभर नौनके नाम और गुण

शाकंभरीप, गुड़ाख्य और रोमक, यह सांभर नौनके नामहैं, सांभर नोन, हलका, बात नाशक अति उष्ण, भेदक, पित्तबर्द्धक, तीक्ष्ण, उष्ण, सूक्ष्म, अभिष्पंदी और विपाकमें कटुहोताहै ॥ १७६॥

अथ पांगा ॥

सामुद्रंयत्तुलवणमक्षारंवशरञ्चतत् । सामुद्रजंसागरजं लवणोदधिसम्भवम् ॥ सामुद्रंमधुरम्पाके सतिक्तंमधुरंगुरु । नात्युष्णंदीपनंभेदि सक्षारमविदाहिच ॥ श्लेष्मलंवातनुत्तिक्त मरूक्षंनातिशीतलम् ॥ १७७ ॥

पांगानौन के नाम और गुण ॥

सामुद्र लवण, अक्षार, व शर, सागरज और उदधि संभव यह पांगा नौनके नामहैं, पांगा नौन पाक में मधुर, तिक्त, मधुर रसयुक्त, भारी, मंदोष्ण, दीपन, भेदक, क्षारयुक्त, विदाह रहित, कफ कारक, वात नाशक, तीक्ष्ण, रुक्षता रहित और कुछ शीतल होताहै ॥ १७७॥

अथ विरिआसोचर इति ॥

विडम्पाकञ्चकतकं तथाद्राविड़मासुरम् । विड़ंसक्षारमूर्द्धाधः कफवातानुलोमनम् ॥

(ऊर्द्ध्वंकफमधोवातं सञ्चारयेदित्यर्थः)दीपनंलघुतीक्ष्णोष्णं रूक्षंरुच्यंव्यवायिच । विबन्धानाहविष्टम्भ हृद्रुक्गौरवशूलनुत् ॥ १७८ ॥

विड़नौनके नाम और गुण ॥

विड़, पाक, कतक, द्राविड़ और आसुर, यह विड़ नौन के नामहैं, बिड़नौन, क्षारयुक्त कफ को ऊपर तथा बातको नीचे लेजाने वाला, दीपन, हलका, तीक्ष्ण, उष्ण, रूखा, रुचिकारक, बिवाई और विबन्ध, आनाह, विष्टंभ, हृदय के रोग, भारीपन तथा शूलका नाशक होताहै ॥ १७८ ॥

अथ चौहारकीड़ा इतिच ॥

सौवर्च्चलंस्याद्रुचकमन्धपाकञ्चतन्मतम् । रुचकंरोचनम्भेदीदीपनम्पाचनम्परम् ॥ सुस्नेहंवातनुन्नाति पित्तकंविशदंलघु । उद्गारशुद्धिदंसूक्ष्मं विबंधानाहशूलजित् ॥१७९॥

काले नौन के नाम और गुण ॥

सौवर्चल, रुचक,अन्ध और पाक यह काले नौनके नामहैं, कालानौन रुचिकारक, भेदक, अग्नि दीपक, अत्यन्त पाचक, स्निग्ध,बात नाशक, कुछ पित्तबर्द्धक, विशद, लघु, डकारका शुद्धकरनेवाला सूक्ष्म और विबन्ध, आनाह तथा शूल का नाशक होताहै ॥ १७९ ॥

रेहगहगया प्रभृति ॥

औद्भिदम्पांशुलवण वज्जातंभूमितःस्वयम् । क्षारंगुरुकटुस्निग्धं शीतलंवातनाशनम् ॥ १८० ॥

कचनौन के नाम और गुण ॥

पांशुनौन पृथ्वीसे आप उत्पन्न होताहै इसको उद्भिज कहते हैं, कचनौन क्षारयुक्त, भारी, कटु स्निग्ध, शीतल, और बात नाशक होताहै ॥ १८० ॥

अथ चणकलोनी ॥

चणकाम्लकमत्युष्णंदीपनंदन्तहर्षणम्लवणाम्लरसंरुच्यंशूलाजीर्णविबंधनुत् ॥१८१।

चने के खारके नाम और गुण ॥

चनेके खारको चणका म्लक कहते हैं, चनेका खार अत्यन्त उष्ण,दीपन, दांतोंको ऐंठने वाला लवण रसयुक्त, खट्टा, रुचिकारक और शूल,अजीर्ण तथा विबन्ध नाशक होताहै ॥ १८१ ॥

अथ यवक्षारःसाजीसोरा ॥

पाकाःक्षारोयवक्षारो यावशूकोयवाग्रजः । स्वर्जिकापिस्मृतःक्षारः कापोतःसुखवर्चकः ॥ कथितःस्वर्जिकाभेदो विशेषज्ञौसुवर्च्चिकः । यवक्षारोलघुःस्निग्धः सुसूक्ष्मोवह्निदीपनः ॥ निहन्तिशूलवाताम श्लेष्मश्वासगलामयान् । पाण्डुर्शोग्रहणीगुल्मा नाहप्लीह हृदामयान् ॥ स्वर्जिकाल्पगुणातस्मा द्विशेषाद्गुल्मशूलहृत् । सुवर्चिकास्वर्जिकावद्बो द्धव्यागुणतोजनैः ॥ १८२ ॥

जवाखार सज्जी और सोरेके नाम गुण ॥

पाक, क्षार, यवक्षार, यावशूक और यवाग्रज यह जवाखारके नामहैं, क्षार, कापोत, सुखवर्चक

और स्वर्जिका यह सज्जी के नाम हैं सुवर्चिका अर्थात् शोरा यह भी सज्जीका भेद पंडितों ने कहा है, जवाखार हलका, स्निग्ध, अत्यन्त सूक्ष्म,अग्नि दीपक और शूल,बात, आम दोष, कफ, श्वास गलेके रोग, पांडु,बवासीर ग्रहणी गुल्म, आनाह, प्लीहा और हृदय के रोगोंका नाशक होताहै, सज्जी जवाखारकी अपेक्षा गुणोंमें कुछ न्यून होतीहै और यह बिशेषकरके गुल्म और शूलको नाश करतीहै और शोरेमें भी सज्जीके समान गुण जानने चाहिये ॥ १८२ ॥

अथ सोहागा ॥

सौभाग्यंटङ्कणंक्षारोधातुद्रावकमुच्यते।टङ्कणंवह्निकृद्रूक्षंकफहृद्वातपित्तकृत्॥१८३॥

सुहागेके नाम और गुण ॥

सौभाग्य, टंकण क्षार और धातु द्रावक येसुहागाके नामहैं सुहागा अग्निवर्द्धक,रूखा, कफ नाशक और बात पित्त वर्द्धक होताहै ॥ १८३ ॥

अथ क्षारद्वयं क्षारचयम् ॥

स्वर्जिकायावशूकश्च क्षारद्वयमुदाहृतम् । टङ्कणेनसुतंतत्तु क्षारत्रयमुदीरितम् ॥ मिलितस्तूक्तगुणवद्विशेषाद्गुल्महृत्परम् ॥ १८४ ॥

क्षारद्वयके नामऔरगुण ॥

सज्जी और जवाखार इनदोनोंको क्षारद्वयकहते हैं, और इसी क्षारद्वयके साथ सुहागा मिलानेसे क्षारत्रयकहाताहैयहसबमिलेहुएउक्तगुणोंकोकरतेहैंपरन्तुगुल्म रोगकोबिशेषकरकेनाशकरतेहैं॥१८४॥

क्षाराष्टकं ॥

पलाशवज्रीशिखरि चिञ्चार्कतिलनालजाः । यवजःस्वर्जिकाचेति क्षाराष्टकमुदाहृतम् ॥ क्षाराएतेऽग्निनातुल्या गुल्मशूलहराभृशम् ॥ १८५ ॥

क्षाराष्टकके नाम औरगुण ॥

पलाश, थूहर, ओंगा, इमली, आक, तिलकीडंडी, जवाखार और सज्जीखार, यह क्षाराष्टक कहाताहै, क्षाराष्टक अग्निके सदृशहोताहै और गुल्म तथा शूलके नाशकरनेमें अत्यन्तश्रेष्ठहै १८५॥

अथ चूक्रम् ॥

चुक्रंसहस्रवेधिस्याद्रसाम्लंशुक्लमित्यपि । चुक्रमत्यम्लमुष्णञ्च दीपनंपाचनंपरम् ॥ शूलगुल्मविबन्धाम वातश्लेष्महरंसरम् । कृमितृष्णास्यवैरस्य हृत्पीडावह्निमान्द्यहृत ॥ १८६ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमिश्रभावविरचितेभावप्रकाशे
हरीतक्यादिवर्गः ॥

चूककेनाम औरगुण ॥

चुक्र, सहस्रवेधि रसाम्ल, और शुक्ल यह चूकके नामहैं, चूक बहुतखट्टा, उष्ण, दीपन, अत्यन्त

पाचक, सारक और शूलगुल्म, विबन्ध, आमदोष बातकफ छर्दि, तृषा, मुखकी विरसता, हृदयके रोग तथा मन्दाग्निका नाशक होताहै ॥ १८६ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमिश्रभावविरचितभावप्रकाशस्यभाषानुवादेहरीतक्यादिवर्गः ॥

अथ कर्पूरादिवर्गः (तत्रादौकर्पूरस्य नामगुणाश्च) ॥

पुंसिक्लीवेचकर्पूरःसिताभ्रोहिमबालुकः । घनसारश्चन्द्रसंज्ञः हिमनामापिसस्मृतः ॥ कर्पूरःशीतलोवृष्यश्चक्षुष्योलेखनोलघुः । सुरभिर्मधुरास्तिक्तः कफपित्तविषापहः ॥ दाहतृष्णास्यवैरस्य मेदोदौर्गन्ध्यनाशनः । कर्पूरोद्विविधःप्रोक्तः पक्वापक्वप्रभेदतः ॥ पक्वात्कर्पूरतःप्राहुर पक्वंगुणवत्तरम् ॥ १ ॥

अथकर्पूरादिवर्ग्गः । कपूरके नामऔरगुण ॥

कर्पूर शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिंगहै सिताभ्र, हिमबालुक, घनसार, चन्द्र और हिमयह कपूरके नामहैं, कपूर, शीतल, वीर्य्य वर्द्धक, नेत्रोंकोहित, लेखन, हलका, सुगन्धियुक्त, मधुर तिक्तरस युक्त और कफ पित्त, बिष, दाह, तृषा, मुखकी विरसता, मेदरोग तथा दुर्गन्धि नाशक होताहै, कपूरकच्चा तथा पक्काइन दोप्रकारोंका होताहै, पक्केकपूरकी अपेक्षा कच्चाकपूर अधिक गुणकारी होताहै ॥ १ ॥

अथ चिनीआ कर्पूरः ॥

चीनाकसंज्ञःकर्पूरः कफक्षयकरःस्मृतः । कुष्ठकंडूवमिहरस्तथातिक्तरसश्चसः ॥ २ ॥

चीनियांकपूरके गुण ॥

चीनाक नाम कपूर, कफ नाशक, तिक्त और खुजली तथा छर्दिनाशक होता है ॥ २ ॥

अथ कस्तूरी ॥

मृगनाभिर्मृगमदः कथितस्तुसहस्रभित् । कस्तूरिकाचकस्तूरी वेधमुख्याचसास्मृता ॥ काश्मरीकपिलच्छायाकस्तूरीत्रिविधास्मृता । कामरूपोद्भवाश्रेष्ठानैपालीमध्यमा भवेत् ॥ कामरूपोद्भवाकृष्णानैपालीनीलवर्णयुक्। काश्मीरदेशसम्भूता कस्तूरीहयधमा मता ॥ कस्तूरिकाकटुस्तिक्ता क्षारोष्णाशुक्रलागुरुः । कफवातविषच्छर्दि शीतदौर्गन्ध्य शोषहृत् ॥ ३ ॥

कस्तूरीकेनाम औरगुण ॥

मृगनाभि, मृगमद, सहस्रभित्, कस्तूरिका, कस्तूरी, और वेदमुख्या, यह कस्तूरीके नामहैं, काम रूपदेशमें उत्पन्न हुई कस्तूरी कृष्णवर्ण तथा उत्तम होती है, नैपाल देशमें उत्पन्न हुई नीलवर्ण तथा मध्यम होती है और कश्मीर देशमें उत्पन्न हुई कस्तूरी कुछ कपिल वर्णतथा निकृष्ट होतीहै इस प्रकार कस्तूरीके तीन भेद होते हैं, कस्तूरी कटुतिक्त रसयुक्त, क्षार, उष्ण, वीर्यवर्द्धक, भारी और कफ, बात, बिष, छर्दि, शीत, दुर्गन्धि तथा शोषरोगकी नाशक होतीहै ॥ ३ ॥

अथमुसुकदाना ॥

लताकस्तूरिकातिक्तास्वाद्वीदृष्याहिमालघुः। चक्षुष्याच्छेदिनीश्लेष्मतृष्णावस्त्यास्य रोगहृत् ॥ ४ ॥

लताकस्तूरीके गुण ॥

लताकस्तूरी (वेदमुश्क) तिक्त मधुर रसयुक्त, वीर्य्यवर्द्धक शीतल, हलकी, नेत्रोंकोहित, छेदक और कफ, तृषामूत्राशयके रोग तथा मुखरोग नाशक होतीहै ॥ ४ ॥

अथगौरासाखभेदआण्डीइतिलोके ॥

गन्धमार्ज्जारवीर्य्यन्तुवीर्य्यकृत्कफवातहृत् । कण्डुकुष्ठहरंनेत्र्यंसुगन्धंस्वेदगन्धनुत् ॥ ५ ॥

आंडी (मुश्कबिलाई) के गुण ॥

आंडीको गन्ध मार्जार बीज कहते हैं यह वीर्य वर्द्धक नेत्रोंकोहित, सुगन्धि युक्त और कफ वात खुजली कुष्ठ, तथापसीनेकी दुर्गन्धि नाशक होती है ॥ ५ ॥

अथचन्दनः ॥

श्रीखण्डंचन्दनंनस्त्रीभद्रःश्रीस्तैलपर्णिकःगन्धसारोमलयजस्तथाचन्द्रद्युतिश्चसः॥ स्वादेतिक्तंकषेपीतंच्छेदेरक्तंतनौसितम्। ग्रन्थिकोटरसंयुक्तंचन्दनंश्रेष्ठमुच्यते ॥ चन्दनं शीतलंरूक्षंतिक्तमाह्लादनंलघु। श्रमशोषविषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहनुत् ॥ ६ ॥

श्वेत चन्दन के नाम और गुण ॥

श्रीखण्ड,चन्दन शब्द पुल्लिंग और नपुंसकलिंग है भद्र श्रीतैल पर्णिक गन्धसार मलयज औरचन्द्र द्युति यह चन्दनके नामहैं स्वादुमें तिक्त रगड़ने से पीला काटने से लाल ऊपर देखने में श्वेत वर्ण और गांठ तथा गड्ढोंसे युक्त चन्दन श्रेष्ठ होताहै चन्दन शीतल रूखा तिक्त प्रसन्न करनेवाला हलका और श्रम, शोष, विष, कफ, तृषा, पित्त, रक्तदोष तथा दाह नाशक होताहै ॥ ६ ॥

अथपीतचन्दनम् ॥

कलम्बकइतिलोके। कालीयकन्तुकालीयंपीताभंहरिचन्दनम्॥हरिप्रियंकालसारंतथा कालानुसार्य्यकम्। कालीयकंरक्तगुणंविशेषाद्व्यंगनाशनम् ॥ ७ ॥

पीत चन्दन अर्थात् कलंबकके नाम और गुण ॥

कालीयक कालीय पीताभ हरिचन्दन हरिप्रिय कालसार और कालानुसार्य्यक यह पीतचन्दन के नामहैं पीतचन्दन गुणोंमें रक्तचन्दन के समानहै और विशेष करके मुखकी झांई को दूर करताहै॥७॥

अथ रक्तचन्दनम् ॥

रक्तचन्दनमाख्यातं रक्तांगंक्षुद्रचन्दनम्। तिलपर्णंरक्तसारं तत्प्रबालफलंस्मृतम्॥ रक्तंशीतंगुरुस्वादुश्छर्दितृष्णास्रपित्तहृत्। तिक्तंनेत्रहितंतृष्यंज्वरव्रणविषापहम् ॥ ८ ॥

रक्तचन्दन के नाम और गुण ॥

रक्तचन्दन रक्तांग क्षुद्रचन्दन तिलपर्ण,रक्तसार और प्रबाल फल यहरक्तचन्दन के नाम हैं लाल

चन्दन शीतल भारी- मधुरतिक्त रसयुक्त नेत्रों को हित वीर्य्यवर्द्धक और छर्दि तृषा रक्तपित्त ज्वर व्रण तथा विषका नाशक होताहै ॥ ८ ॥

अथ वकम् ॥

पतंगंरक्तसारञ्चसुरंगंरञ्जनंतथा । पट्टरञ्जकमाख्यातंपत्तूरञ्चकुचन्दनम् ॥ पतंगंमधुरंशीतंपित्तश्लेष्मव्रणास्रनुत् । हरिचंदनवद्द्व्यविशेषाद्दाहनाशनम् ॥ चन्दनानितुसर्वाणिसदृशानिरसादिभिः । गन्धेनतुविशेषोऽस्तिपूर्वःश्रेष्ठतमोगुणैः ॥ ९ ॥

पतंगके नाम और गुण ॥

पतंग, रक्तसार सुरंग रंजन पट्ट रंजक पत्तूर और कुचन्दन यह पतंगकेनाम हैं पतंग मधुर शीतल और पित्तकफ घाव तथा रुधिर नाशक होताहै यह गुणोंमें हरिचन्दन के समानहै और विशेष करके दाह नाशक है सब प्रकार के चंदन रसादिकों में तुल्य हैं केवल गन्ध में भेद है इनमें क्रम पूर्व्वक एक से दूसरा गुणों में श्रेष्ठहै ॥ ९ ॥

अथअगरु कृष्णागुरु अगुरुसत ॥

अगुरुप्रवरंलोहंराजार्हंयोगजंतथा । वंशिष्कंकृमिजंवापिकृमिजग्धमनार्यकम् ॥ अगुरूष्णंकटुत्वच्यंतिक्तंतीक्ष्णञ्चपित्तलम् । लघुकर्णाक्षिरोगघ्नंशीतवातकफप्रणुत् ॥ कृष्णंगुणाधिकंतत्तुलोहवद्वारिमज्जति । अगुरुप्रभवःस्नेहःकृष्णागुरुसमःस्मृतः ॥ १० ॥

अगर और काले अगरके नाम गुण ॥

अगुरु प्रवर लोह राजार्ह योगज बंशिक कृमिज कृमिजग्ध और अनार्यक यह अगरके नाम हैं अगर उष्ण कटु तिक्त रसयुक्त त्वचा कोहित तीक्ष्ण पित्तवर्द्धक हलका और कर्ण रोग नेत्ररोग शीत बात तथा कफ नाशक होताहै इसमें से काला अगर गुणोंमें अधिक है यह पानी में डालने से लोहे के समान डूबजाताहै अगर का तेलभी काले अगर के समान गुणकारी होताहै ॥ १० ॥

अथदेवदारुः ॥

देवदारुस्मृतंदारुभद्रंदार्व्वीन्द्रदारुच । मस्तदारुद्रुकिलिमंकिलिसंसुरभूरुहः ॥ देवदारुलघुस्निग्धंतिक्तोष्णंकटुपाकिच । विबन्धाध्मानशोथामतन्द्राहिक्काज्वरास्राजित् ॥ प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकण्डूसमीरनुत् ॥ ११ ॥

देवदारुके नाम और गुण ॥

देवदारु दारुभद्र दारु इन्द्रदारु मस्तदारु द्रुकिलिम किलिस और सुरभूरुह यह देवदारु के नाम हैं देवदारु हलका स्निग्ध तिक्त उष्ण पाक में कटु और बिबन्ध आध्मान सूजन आमदोष तन्द्रा हिचकी ज्वर रक्तदोष प्रमेह, पीनस, कफ, खांसी, खुजली तथा बात का नाशक होताहै ॥ ११ ॥

अथधूपसरलः ॥

सरलःपीतवृक्षःस्यात्तथासुरभिदारुकः । सरसोमधुरस्तिक्तोकटुपाकरसोलघुः ॥ स्निग्धोष्णःकर्णकण्ठाक्षिरोगरक्तोहरःस्मृतः । कफानिलस्वेददाहकासमूर्च्छाव्रणापहः ॥ १२ ॥

सरलअर्थात् एक प्रकार के देवदारुके नाम और गुण ॥

सरल, पीत वृक्ष और सुरभिदारु यह सरलकेनामहैं सरल मधुर तिक्त और कटुरस युक्त पाकमें कटु हलका स्निग्ध उष्ण और कर्णरोग कंठरोग नेत्ररोग राक्षसोंकी पीड़ा कफ बात स्वेद दाह खांसी मूर्च्छा तथा घावका नाशकहोताहै ॥ १२ ॥

अथतगरं ॥

कालानुसार्य्यंतगरंकुटिलंमधुपंनतम्। अपरंपिण्डतगरंदण्डहस्तीचवार्हिणम् ॥ तगरद्वयमुष्णंस्यात्स्वादुस्निग्धंलघुस्मृतम्। विषापस्मारशूलाक्षिरोगदोषत्रयापहम्॥ १३॥

तगरके नाम और गुण ॥

कालानुसार्य्य तगर कुटिल मधुप औरतन यहतगर के नामहैं और दूसरे प्रकारके तगरको पिंडतगर दण्ड हस्ती और बार्हिण कहतेहैं यह दोनोंप्रकारके तगर उष्ण मधुर स्निग्ध लघु और बिष मृगी शूल नेत्र रोग तथा त्रिदोष नाशक होतेहैं ॥ १३ ॥

अथपद्माकं ॥

पद्मकंपद्मगन्धिस्यात्तथापद्माक्षयंस्मृतम् । पद्मकन्तुपरन्तिक्तंशीतलंवातलंलघु ॥ वीसर्पदाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तनुत्। गर्भसंस्थापनंवृष्यंवमिव्रणतृषाप्रणुत्॥ १४॥

पद्माक के नाम और गुण ॥

पद्मक, पद्मगंधि और पद्म यह पद्माक के नामहैं, पद्माक कषाय तिक्त रसयुक्त, शीतल, बात वर्द्धक, हलका, गर्भका स्थापन करनेवाला, रुचिकारक और विसर्प,दाह,विस्फोट, कुष्ठ, कफ, रक्तदोष पित्त, छर्दि, घाव, तथा तृषाका नाशक होताहै ॥ १४ ॥

अथगुग्गुलुः ॥

गुग्गुलुर्देवधूपश्चजटायुःकौशिकःपुरः। कुस्तालूखलकंक्कीवेमहीषाक्षः पलङ्कषः॥ महीषाक्षोमहानीलःकुमुदःपद्मइत्यपि। हिरण्यःपञ्चमोज्ञेयोगुग्गुलोःपञ्चजातयः ॥ भृङ्गाञ्जनसवर्णस्तुमहिषाक्षइतिस्मृतः। महानीलस्तुविज्ञेयःस्वनामसमलक्षणः ॥ कुमुदःकुमुदाभःस्यात्पद्मोमाणिक्यसन्निभः। हिरण्याक्षस्तुहेमाभःपञ्चानांलिंगमीरितम् ॥ महिषाक्षोमहानीलोगजेन्द्राणांहितावुभौ। हयानांकुमुदःपद्मःस्वस्त्यारोग्यकरौपरौ ॥ विशेषेणमनुष्याणांकनकःपरिकीर्तितः। कदाचिन्महिषाक्षश्चयतःकैश्चिन्नृणामपि॥गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तोवीर्य्योष्णःपित्तलःसरः । कषायःकटुकःपाकेकटूरूक्षोलघुःपरः ॥ भग्नसन्धानकृद्वृष्यःसूक्ष्मःस्वर्योरसायनः। दीपनःपिच्छिलोबल्यःकफबातव्रणापचीः॥ मेदोमेहाश्मबातांश्चक्लेदकुष्ठाममारुतान्। पिण्डिकाग्रन्थिशोफार्शःगण्डमालाकृमीन्जयेत् ॥ माधुर्य्याच्छमयेद्वातंकषायत्वाच्चपित्तहा। तिक्तत्वात्कफजित्तेनगुग्गुलुःसर्व्वदोषहा ॥ सनवोबृंहणोवृष्यःपुराणस्त्वतिलेखनः। स्निग्धःकाञ्चनसङ्काशःपक्वजम्बूफलोपमः ॥नूतनोगुग्गुलुःप्रोक्तःसुगन्धिर्यस्तुपिच्छिलः। शुष्कोदुर्गन्धकश्चैवत्यक्तप्रकृतिवर्णकः ॥ पुराणःसतुविज्ञे

यःगुग्गुलुर्वीर्य्यवर्जितः। अम्लंतिक्ष्णामजीर्णञ्च व्यवायंश्रममातपम् ॥ मद्यंरोषन्त्यजे त्सम्यग्गुणार्थीपुरसेवकः ॥ १५ ॥

गूगल के नाम और गुण ॥

गुग्गुल, देवधूप, जटायु, कौशिक, पुर, कुस्त, उलूखल, (यह शब्द नपुंसक लिंगहै) महिषाक्षि और पलंकष यह गुग्गुलके नामहैं महिषाक्ष, महानील, कुमुद, पद्म और हिरण्य, यह पांच गुग्गुलके भेदहै, यह महिषाक्ष गूगल भौंरे तथा अंजनके समान रंगवाला होताहै महानील गूगल अत्यन्त नील वर्ण होता है, कुमुद नाम गूगल, कुमुद के समान कांतिवाला होताहै, पद्म नाम गूगल माणिक्य के समान होताहै, और हिरण्याक्ष गूगल सुवर्ण के समान कान्तिवाला होताहै यह पांचोंके लक्षण कहे गये हैं महिषाक्ष और महानील गूगल हाथियोंके लिये हितकारी होतेहैं, कुमुद और पद्म नाम गूगल घोड़ोंके लिये मंगलकारी और रोग नाशक होते हैं और हिरण्याक्ष गूगल मनुष्यों के लिये हितकारी है, कहीं २ महिषाक्ष गूगल भी मनुष्योंके प्रयोजन में आताहै, गूगल विशद, तिक्त, कटु कषाय रस युक्त, पाकमें कटु वीर्यमें उष्ण, पित्तवर्द्धक, दस्तावर, रूखा, अत्यन्त लघु टूटेको जोड़नेवाला, वीर्य वर्द्धक, सूक्ष्म, स्वरको हित, रसायन, दीपन, फिसलाहट वाला, बलकारी और कफ, बात, घाव अपची, मेद दोष, प्रमेह, पथरी, बात रोग, क्लेद, कुष्ठ, आमवात, पीड़िता, गंडमाला, ग्रंथि, सूजन बवासीर तथा कृमिका नाश करताहै, गूगल मधुरता से बातको, कषाय रस से पित्तको और तिक्त रससे कफ को नाश करता है इसप्रकार करके गूगल सर्वदोषों का नाशक है, नवीन गूगल मांस तथा वीर्य्य बर्द्धक होता है प्राचीन गूगल अत्यन्त कफकारक होता है, सुवर्ण के समान कान्ति युक्त पक्की जामन के समान वर्ण वाला, सुगन्धित और पिच्छिल गूगल नवीन कहलाता है, सूखा दुर्गन्धित युक्त, बिकारीवर्ण वाला और वीर्य्य रहित गूगल पुराना जानना चाहिये- गुणों की प्राप्ति की इच्छासे गूगल का सेवन करनेवाला पुरुष खट्टी, तीक्ष्ण तथा अजीर्ण करने वाली वस्तु मैथुन परिश्रम, धूप, मद्य और क्रोधको अच्छे प्रकार से छोड़देवे ॥ १५ ॥

अथसरलनिर्य्यासगुग्गुलुः ॥

श्रीवासःसरलस्रावःश्रीवेष्टोवृक्षधूपकः। श्रीवासोमधुरास्तिक्तःस्निग्धोष्णस्तुवरःसरः ॥ पित्तलोवातमूर्द्धाक्षिस्वररोगकफापहः। रक्षोघ्नःस्वेददौर्गन्ध्यःयूकाकण्डूव्रणप्रणुत् ॥ १६ ॥

सरलनिर्यास (गंधाबिरोजा) केनामऔर गुण ॥

श्रीबास, सरलस्राव, श्रीवेष्ट और वृक्षधूपक यहसरल निर्यासके नामहैं, सरल निर्यास मधुर तिक्त कषाय रसयुक्त, स्निग्ध, उष्ण, सरपित्तवर्द्धक और बात रोग, शिररोग, नेत्ररोग, स्वरभंग कफ, राक्षसोंकी पीड़ा, पसीनेकी दुर्गन्धि, जुआं, खुजली तथा व्रणका नाशक होताहै ॥ १६ ॥

अथरालः ॥

रालस्तुशालनिर्य्यासस्तथासर्ज्जरसःस्मृतः। देवधूपोयक्षधूपस्तथासर्वरसश्चसः ॥ रालोहिमोगुरुस्तिक्तःकषायोग्राहकोहरेत् । दोषास्रस्वेदवीसर्पज्वरव्रणविषादिकाः ॥ ग्रहभग्नाग्निदग्धाश्चशूलातीसारनाशनः ॥ १७ ॥

रालकेनाम औरगुण ॥

राल सालनिर्यास सर्जरस, देवधूप, यक्षधूप और सर्वरस यह रालके नामहैं, राल शीतल, भारी, तिक्त कषाय रसयुक्त, ग्राही और बातादिक दोष, रुधिरके दोष, स्वेद वीसर्प, ज्वर, घाव, बिवांई ग्रहोंके दोष- भग्नरोग- अग्निदग्ध- शूल और अतीसार इनसबका नाशक है ॥ १७ ॥

अथकुंदुरुसुगन्धद्रव्यशल्लकीनिर्य्यासः ॥

कन्दुरुस्तुमुकुन्दःस्यात्सुगन्धःकुन्दइत्यपि । कुन्दुरुर्मधुरस्तिक्तस्तीक्ष्णस्त्वच्यःकटुर्हरेत् ॥ ज्वरस्वेदग्रहालक्ष्मीमुखरोगकफाऽनिलान् ॥ १८ ॥

कुन्दुरएकप्रकार की सुगन्धितद्रव्य जो शल्लकीवृक्षका गोंदहै उसके नामगुण ॥

कुन्दुरु मुकुन्द सुगन्ध और कुन्द यह कुन्दुरके नामहैं कुन्दुर मधुर तिक्त कटुरसयुक्त तीक्ष्ण त्वचा को हितकारी और ज्वर धूप ग्रहोंके दोष आलस्य मुखरोग कफ तथा वातका नाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथशिलारसः ॥

सिल्हकस्तुतुरुष्कःस्याद्यतोयवनदेशजः । कपितैलंचसंख्यातस्तथाचकपिनामकः ॥ सिल्हकःकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णाशुक्रकान्तिकृत् । वृष्यःकण्ठ्यःस्वेदकुष्ठज्वरदाहग्रहापहः ॥ १९ ॥

शिलारस के नाम और गुण ॥

शिलारस यवन देशमें उत्पन्न होताहै इसीसे इसको तुरुष्क कहतेहैं सिल्हक कपि तैल और कपि यह शिलारसके नाम हैं शिलारस कटु मधर रसयुक्त स्निग्ध उष्ण वीर्य्यवर्द्धक कान्तिवर्द्धक पुष्ट गलेका शुद्ध करनेवाला और स्वेद कुष्ठ ज्वर दाह तथा ग्रहोंके दोषोंका दूर करनेवाला होताहै ॥१९॥

अथजायफल ॥

जातीफलंजातिकोशंमालतीफलइत्यपि । जातीफलंरसेतिक्तंतीक्ष्णोष्णंरोचनंलघु ॥ कटुकंदीपनंग्राहिस्वर्य्यंश्लेष्मानिलापहम् । निहन्तिमुखवैरस्यंमद्यदौर्गन्ध्यकृष्णताः ॥ कृमिकासवमिश्वासशोषपीनसहृद्रुजः ॥ २० ॥

जायफल के नाम और गुण ॥

जातीफल जातिकोश और मालती फल यह जायफलकेनामहैं जायफल तिक्तकटु रसयुक्त तीक्ष्ण उष्ण रुचिकारक हलका दीपन ग्राही स्वरकोहित और कफ बात मुखकी बिरसता मलकी दुर्गन्धि तथा कृष्णता कृमि खांसी छर्दि श्वास शोष पीनस तथा हृदय के रोगोंका नाशक होताहै ॥ २० ॥

अथजावत्री ॥

जातीफलस्यत्वक्प्रोक्ताजातीपत्रीभिषग्वरैः । जातिपत्रीलघुःस्वादुःकटूष्णारुचिवर्णकृत् ॥ कफकासवमिश्वासतृष्णाकृमिविषापहाः ॥ २१ ॥

जावित्रीके नाम और गुण ॥

बैद्यलोग जायफल की त्वचाको जातीपत्री कहतेहैं जावित्री हलकी मधुर कटु रसयुक्त उष्ण रुचिकारक वर्णको हित और कफ खांसी छर्दि श्वास तृषा कृमि तथा बिषनाशक होती है ॥ २१ ॥

अथलवंगः ॥

लवंगंदेवकुसुमंश्रीसंज्ञंश्रीप्रसूनकम् । लवंगंकटुकंतिक्तंलघुनेत्रहितंहिमम् ॥ दीपनंपाचनंरुच्यंकफपित्तास्रनाशकृत् । तृष्णांछर्दितथाध्मानंशूलमाशुविनाशयेत् ॥ कासंश्वासंचहिक्काञ्चक्षयंक्षपयतिध्रुवम् ॥ २२ ॥

लवङ्गके नाम और गुण ॥

लवंग देवकुसुम श्रीसंज्ञ और श्रीप्रसूनक यह लवंगके नामहैं लौंग कटु तिक्त रसयुक्त हलकी नेत्रों कोहित शीतल दीपन पाचक रुचिकारक और कफ पित्तरक्तदोष तृषा छर्दि उदर आध्मान शूल खांसी श्वास हिचकी तथा क्षयरोग की नाशक होतीहै ॥ २२ ॥

अथइलायचीपूरवी ॥

एलास्थूलाचबहुलापृथ्वीकात्रिपुटापिच । भद्रैलावृहदेलाचइंद्रबालाचनिष्कुटिः ॥ स्थूलैलाकटुकापाकेरसेचानलकृल्लघुः । रूक्षोष्णाश्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृषापहा ॥ हृल्लासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत् ॥ २३ ॥

बड़ी इलायची के नाम और गुण ॥

एला,स्थूला,बहुला पृथ्वीका त्रिपुटा भद्रैला चन्द्रबाला वृहदेला और निष्कुटि यहबड़ी इलायची के नामहैं बड़ी इलायची रस तथा विपाक में कटु अग्निवर्द्धक हलकी रूखी उष्ण और कफ पित्त रक्तदोष खुजली,श्वास,तृषा,हृल्लास (थुकथुकी) विषमूत्राशयके रोग,मुखरोग,शिरकेरोग, छर्दि तथा खांसीकी नाशक होतीहै ॥ २३ ॥

अथएलागुजराती ॥

सूक्ष्मोपकुञ्चिकातुच्छाकोरंगीद्राविडीत्रुटिः । एलासूक्ष्माकफश्वासकाशार्शोमूत्रकृच्छ्रहृत् ॥ रसेतुकटुकाशीतालघ्वीवातहरीमता ॥ २४ ॥

छोटीइलायचीके नाम और गुण ॥

सूक्ष्मा,उपकुंचिका,तुच्छा,कोरंगी,द्राविडी और त्रुटि,यह छोटी इलायचीके नाम हैं छोटीइलायची कफ, श्वास,खांसी,बवासीर,मूत्रकृच्छ्र,तथा वात नाशक कटु,शीतल और लघु होतीहै ॥ २४ ॥

अथ तज ॥

त्वक्पत्रञ्चवरांगंस्याद्भृंगंचोद्दन्तथोत्कटम् । त्वचंलघूष्णंकटुकंस्वादुतिक्तञ्चरूक्षकम् ॥ पित्तलंकफवातघ्नं कण्डूवामारुचिनाशनम् । हृद्वास्तिरोगवातार्शः कृमिपीनसशुक्रहृत् ॥ २५ ॥

तजकेनाम और गुण ॥

त्वक् पत्र,वरांग,भृंग और उत्कट,यहतजके नामहैं, तज, हलकी,उष्ण, कटु, मधुर तिक्त रसयुक्त रूखी, पित्तबर्द्धक और कफ वात खुजली आमदोष, अरुचि, मूत्राशयके रोग, बादी बवासीरकृमि पीनस तथा वीर्य्यनाशक होतीहै ॥ २५ ॥

दालचीनी ॥

त्वक्स्वादीतुतनुत्वक्स्यात्तथादारुसितामता । उक्तादारुसितास्वाद्वीतिक्ताचानिल पित्तहृत् ॥ सुरभिः शुक्रलावर्ण्यामुखशोषतृषापहा ॥ २६ ॥

दालचीनीके नाम और गुण ॥

त्वक्स्वादु, तनुत्वक् और दारुसिता, यहदालचीनी के नामहैं, दालचीनी, मधुर तिक्तरस युक्त वात पित्तनाशक, सुगन्धित, वीर्य्यबर्द्धक, बलकारक मुखका सूखना तथा तृषा नाशक होतीहै॥२६॥

अथ पत्रकम् ॥

पत्रन्तमालपत्रञ्चतथास्यात्पत्रवामकम् । पत्रकंमधुरंकिञ्चित्तीक्ष्णोष्णंपिच्छिलं लघु ॥ निहन्तिकफवातार्शोहल्लासारुचिपीनसान् ॥ २७ ॥

तेजपातके नाम और गुण ॥

पत्र, तमालपत्र और पत्रनामक, यहतेजपातके नामहैं, तेजपात. मधुर. कुछतीक्ष्ण, उष्ण, लसदार हलका और कफ वात, बवासीर हल्लास (मतली) अरुचि तथापीनसकानाशक होताहै॥२७॥

अथ नागकेशरः ॥

नागपुष्पःस्मृतोनागःकेशरोनागकेशरः । चाम्पेयोनागकिञ्जल्कः कथितःकाञ्चनाह्वयः ॥ अयंपुष्पेतुक्लीवे नागपुष्पंकषायोष्णंरूक्षंलघ्वामपाचनम् । ज्वरकण्डूतृषास्वेदच्छर्दिहल्लासनाशनम् ॥ दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ॥ २८ ॥

नागकेशर के नाम और गुण ॥

नागपुष्प, नाग, केशर, नागकेशर, चांपेय, नागकिंजल्क और कांचनाह्वय, यहनागकेशर के नामहैं, यहशब्द जबनपुंसक लिंगमें व्यवहार कियेजातेहैं तबपुष्पवाची होते हैं, नागकेशर कषाय, उष्ण रूखी, हलकी, आमकी पचानेवाली और ज्वर, खुजली, तृषा, स्वेद, छर्दि, मतली, दुर्गन्धि, कुष्ठ, वीसर्प, कफ, पित्त तथा बिषनाशक होतीहै ॥ २८ ॥

अथ त्रिजातचातुर्जातके ॥

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धित्रिजातकम् । नागकेशरसंयुक्तं चातुर्जातकमुच्यते ॥ तद्द्वयंरेचनंरूक्षं तीक्ष्णोष्णंमुखगन्धहृत्लघुपित्ताग्निकृद्वर्ण्यंकफवातविषापहम्॥२९॥

त्रिजात और चतुर्जातके लक्षण तथा गुण ॥

तज, इलायची और तेजपात यह समभाग एक में मिलाने से त्रिजात या त्रिसुगन्धकहलाता है और इन्हों में नागकेशर मिलाने से चतुर्ज्जातक कहलाता है यहदोनों दस्तावर, रूखे, तीक्ष्ण, उष्ण, मुख की दुर्गन्धि नाशक हलके पित्तबर्द्धक, अग्निकारक वर्णको हित और कफबात तथा विषनाशक होतेहैं ॥ २९ ॥

अथ कुंकुमम् ॥

कुंकुमं घसृणंरक्तंकाश्मीरंपीतकंवरम् । सङ्कोचंपिशुनन्धीरं वाह्लीकंशोणिताभिधम् ॥ काश्मीरदेशजेक्षेत्रेकुंकुमंयद्भवेद्धितत् । सूक्ष्मकेशरमारक्तंपद्मगन्धितदुत्तमम् ॥ वाह्लीक

देशसञ्जातं कुंकुमंपाण्डुरम्मतम् । केतकीगन्धयुक्तन्तन्मध्यमंसूक्ष्मकेशरम् ॥ कुंकुम म्पारसीकेयत्मधुगान्धितदीरितम् । ईषत्पाण्डुरवर्णंतदधमंस्थूलकेशरम् ॥ कुंकुमं कटुकं स्निग्धं शिरोरुग्व्रणजन्तुजित् । तिक्तंवमिहरंवर्ण्यंव्यंगदोषत्रयापहम् ॥ ३० ॥

केशरके नाम और गुण ॥

कुंकुम, घृश्रृण, रक्त, काश्मीर- पीतक- बर- संकोच- पिशुन- धीर-वाह्लीक और शोणित- यहकेशर केनामहैं- जोकेशर कश्मीरमें उत्पन्न होतीहै वह सूक्ष्म केशर रक्तवर्ण पद्मके समान गन्धवाली और श्रेष्ठ होतीहै, जो केशर बाह्लीक देशमें उत्पन्न होतीहै वहपांडु वर्ण.केतकीके समान गन्धवाली- सूक्ष्म केशर मध्यमहोतीहै और जो केशर पारस देशमें उत्पन्न होतीहै वह सहतके समान गन्धि युक्त कुछपांडु वर्णस्थूल केशर निकृष्टहोतीहै- केशर- तिक्त कटुरस युक्त, स्निग्ध- वर्णकोहित- और शिररोग- घाव, कृमि, छर्दि, व्यंग तथा त्रिदोष नाशक होतीहै ॥ ३० ॥

अथगोरोचना ॥

गोरोचनातुमंगल्यावन्ध्यागौरीचरोचना । गोरोचनाहिमातिक्तावश्यामंगलकान्तिदा ॥ विषालक्ष्मीग्रहोन्मादगर्भस्रावक्षतास्रहृत् ॥ ३१ ॥

गोरोचनके नाम औरगुण ॥

गोरोचना, मंगल्या- वंध्या- गौरी और रोचना यह गोरोचनके नाम हैं, गोरोचन शीतल- तिक्त वशीकरण, मंगलकारक कांति बर्द्धक और विष अलक्ष्मी, ग्रहोंके दोष- उन्माद गर्भगिरना, घावतथा, रक्तदोष नाशकहोताहै ॥ ३१ ॥

अथनखनखीगन्धद्रव्यम् ॥

नखंव्याघ्रनखंव्याघ्रा युधन्तच्चक्रकारकम् । नखंस्वल्पंनखीप्रोक्ताहनुर्हट्टविलासिनी ॥ नखद्रव्यग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठहृत् । लघूष्णंशुक्रलंवर्ण्यंस्वादुव्रणविषापहम् ॥ अलक्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोःकटुः ॥ ३२ ॥

नखनखीके नामऔरगुण ॥

नख, व्याघ्रनख, और चक्र कारक यह नखके नामहैं, और छोटे नखको नखी, हनु, और हट्ट विलासिनी कहतेहैं. नखऔर नखी दोनों ग्रहदोष, कफ, बात, रुधिर, ज्वर, कुष्ठ, घाव, बिष, अलक्ष्मी और मुखकी दुर्गन्धिके नाशक लघु, उष्ण, वीर्य वर्द्धक वर्णकोहित, मधुर कटुरसयुक्त और विपाकमें कटुहोतेहैं ॥ ३२ ॥

अथसुगन्धबाला ॥

बालंह्रीवेरवर्हिष्ठोदीच्यङ्केशाम्बुनामच । बालकंशीतलंरूक्षंलघुदीपनपाचनम् ॥ हृल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगामातिसारजित् ॥ ३३ ॥

सुगन्धबालाके नामऔरगुण ॥

बाल, ह्रीवेर, बर्हिष्ट, उदीच्य, केश और अंबु- यह सुगन्ध बालाके नाम हैं, सुगन्ध बाला, शीतलरूखी, लघु, दीपन, पाचक और मतली अरुचि, वीसर्प, हृदयके रोग, आमदोष तथा अतीसार नाशक होताहै ॥ ३३ ॥

अथ वीरणम् ॥

स्याद्वीरणंवीरतरुर्वीरञ्चबहुमूलकम् । वीरणम्पाचनंशीतं वान्तिहल्लघुतिक्तकम् ॥ स्तम्भनंज्वरनुद्वान्तिमदजित्कफपित्तहृत् । तृष्णास्रविषवीसर्पकृच्छ्रदाहव्रणापहम् ३४

गांडरके नामऔरगुण ॥

वीरण, वीरतरु, वीर और बहुमूलक यह गांडर के नामहैं, गांडर शीतल, लघु, पाचक, स्तंभन तिक्त और छर्दि ज्वर, श्रम, मद, कफ, पित्त, तृषा, रुधिर, विष, वीसर्प, मूत्रकृच्छ्र, दाह तथा घाव नाशक होती है ॥ ३४ ॥

अथउशीर ॥

वीरणस्यतुमूलंस्यादुशीरंनलदंचनत् । अमृणालञ्चसेव्यञ्च समगंधिकमित्यपि ॥ उशीरम्पाचनंशीतंस्तम्भनंलघुतिक्तकम् । मधुरंज्वरहृद्भ्रांतिमदनुत्कफपित्तहृत् ॥ तृष्णा स्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् ॥ ३५ ॥

खसके नाम और गुण ॥

गांडरकी जडको उशीर (खस) कहतेहैं नलद, अमृणाल, सेव्य और समगन्धिक यह खसके नामहैं खस पाचक, शीतल, स्तंभन, लघु, तिक्तमधुर रसयुक्त और ज्वर, छर्दि, मद, कफ, पित्त, तृषा, रक्तदोष, विष, वीसर्प दाह, मूत्रकृच्छ्र तथा व्रणकी नाशकहोतीहै ॥ ३५ ॥

अथजटामांसी ॥

जटामांसीभूतजटाजटिलाचतपस्विनी । भांसीतिक्ताकषायाचमेध्याकान्तिबलप्रदा॥ स्वाद्वीहिमात्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ ३६ ॥

जटामांसीके नामऔरगुण ॥

जटामांसी, भूतजटा, जटिला और तपस्विनी, यह जटामांसी के नामहैं, जटामांसी तिक्त मधुर और कषाय रसयुक्त,मेधाको हित, बलबर्द्धक,कान्ति कारक, शीतल और त्रिदोष, रक्तदोष, दाह वीसर्प तथा कुष्ठनाशक होतीहै ॥ ३६ ॥

अथभूरछरीलइतिलोके ॥

शैलेयन्तुशिलापुष्पंवृद्धङ्कालानुसार्यकम् ॥ शैलेयंशीतलंहृद्यंकफपित्तहरंलघु । कण्डू कुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्रुदरक्तहृत् ॥ ३७ ॥

छारछबीलाकेनामऔरगुण ॥

शैलेय,शिलापुष्प, वृद्ध और कालानुसार्यक यहछार छबीले के नामहैं, छारछबीला शीतल,हृदय कोहित,हलका और कफ पित्त,खुजली,कुष्ठ, पथरी,दाह,बिष तथा गुदाकेरक्तकानाशकहोताहै ॥३७॥

मोथानागरमोथा ॥

मुस्तकंनस्त्रियांमुस्तंत्रिषुवारिदनामकम् । कुरुविन्दअसंख्यातोऽपरःक्रोडकसेरुकः ॥ भद्रमुस्तंचगुन्द्राचतथानागरमुस्तकः । मुस्तंकटुहिमंग्राहितिक्तंदीपनपाचनम् ॥ कषा

यंकफपित्तास्र तृट्ज्वरारुचिजन्तुहृत्। अनूपदेशेयज्जातं मुस्तकंतत्प्रशस्यते ॥ तत्रा पिमुनिभिःप्रोक्तं वरंनागरमुस्तकम् ॥ ३८ ॥

नागरमोथा के नाम और गुण ॥

मुस्तक शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग होताहै मुस्त शब्द त्रिलिंगी होताहै,वारिद और कुरुविन्द यह मोथा के नामहैं, कोड़, कसेरुक, भद्रमुस्त, गुंद्राऔर नागरमुस्तक यह नागरमोथाके नामहैं, मोथा कटु तिक्त कषायरस युक्त,शीतल, ग्राही,दीपन,पाचक और कफ पित्त रक्तदोष,तृषा, ज्वर,अरुचितथा कृमिनाशक होताहै जो मोथा अनूप देश में उत्पन्न होताहै वह उत्तमहै उसमें भी मुनियोंने नागर मोथे को सब से श्रेष्ठ कहाहै॥ ३८ ॥

अथकर्चूर ॥

कर्चूरांवेधमुख्यश्च द्राविड़ःकल्पकःशटी।कर्चूरोदीपनोरुच्यःकटुकस्तिक्तएवच॥सुगंधिः कटुपाकःस्यात् कुष्ठार्शोव्रणकासनुत्। उष्णोलघुःहरेच्छ्वासं गुल्मवातकफकृमीन्॥३९॥

कचूर के नाम और गुण ॥

कर्चूर,वेधमुख्य, द्राविड,कल्पक और शटी,यह कचूरके नामहैं, कचूर दीपन,रुचिकारक,कटुतिक्त रसयुक्त, सुगन्धित, पाक में कटु, उष्ण,हलका और कुष्ठ बवासीर,घाव,खांसी,श्वास गुल्म,बातकफ तथा कृमि नाशक होताहै ॥ ३९ ॥

अथएकागी ॥

मुर्रागंधकटीदैत्या सुरभिःशालपर्णिका । मुरातिक्ताहिमास्वाद्वी लघ्वीपित्तानिलापहा ॥ ज्वरामृगभूतरक्षोघ्नी कुष्ठकासविनाशिनी ॥ ४० ॥

मरोर फली के नाम और गुण ॥

मूरा,गंधकुटी,दैत्या, सुरभि और शालपर्णिका यह मरोर फलीके नामहैं, मरोर फली तिक्त मधुर रस युक्त, शीतल, हलकी और पित्त, वायु,ज्वर, रक्तदोष,भूतोंका आवेश,राक्षसों की बाधा, कुष्ठतथा खांसी की नाशक होतीहै ॥ ४० ॥

अथगंधपलाशीसुगंधद्रव्यंकाश्मीरेप्रसिद्धा ॥

शठीपलाशीषड्ग्रंथा सुव्रतागंधमूलिका। गन्धारिकागन्धबधू र्बधूःपृथुपलाशिका ॥ भवेद्गन्धपलाशीतु कषायाग्राहिणीलघुः । तिक्तातीक्ष्णाचकटुका नुष्णास्यमलनाशिनी । शोथकासव्रणश्वास शूलहिध्मग्रहापहा ॥ ४१ ॥

गन्धपलाशी (एक प्रकारकी सुगंधित वस्तुकाश्मीर देशमें प्रसिद्धहै) के नाम और गुण ॥

शठी,पलाशी,षड्ग्रंथा,सुव्रता,गन्धमूलिका,गान्धारिका,गन्धबधू ,बधूऔर पृथुपलाशिका यहगन्धप लाशीके नामहैं,गंधपलाशी कषाय तिक्त कटुरस युक्त,ग्राही,हलकी,तीक्ष्ण,उष्णता रहित, मुखकेमल की नाशक और सूजन,खांसी,घाव,श्वास,श्वेत कुष्ठ तथा ग्रह दोषोंकी नाशक होतीहै ॥ ४१ ॥

अथप्रियंगुगंधप्रियंगु ॥

प्रियंगुःफलिनीकांता लताचमहिलाह्वया। गुंद्रागुंद्रफलाश्यामा विष्वक्सेनांगनाप्रिया ॥ प्रियंगुःशीतला तिक्ता तुवरानिलपित्तहृत्। रक्तातियोगदौर्गन्ध्य स्वेददाहज्वराष

हा ॥ गुल्मतृट्विषमोहघ्नीतद्वद्गंधप्रियंगुकाः । तत्फलंमधुरंरूक्षं कषायंशीतलंगुरु ॥ विबंधाध्मानबलकृत् संग्राहिकफपित्तजित् ॥ ४२ ॥

प्रियंगु (ककुनी) और गंधप्रियंगुके नाम और गुण ॥

प्रियंगु, फलिनी, कान्ता, महिलाराचेक, गुंद्रा, यन्द्रफला, श्यामा और अंगनाप्रिया यह प्रियंगुके नामहैं प्रियंगु शीतल तिक्त कषाय रसयुक्त और बातपित्त रुधिरकी अधिकता, दुर्गन्धि, श्वेद, दाह, ज्वर, गुल्म तृषा, बिष और मोह नाशक होतीहै और गन्धप्रियंगु में भी यही गुण होते हैं प्रियंगु का फल मधुर कषाय रसयुक्त, रूखा, शीतल, भारी, बलवर्द्धक, ग्राही, बिबंध तथा आध्मान करनेवाला और कफ तथा पित्त नाशक होताहै ॥ ४२ ॥

अथरेणुकामरिचसदृशा ॥

रेणुकाराजपुत्रीच नंदिनीकपिलाद्विजा । भस्मगंधापाण्डुपुत्री स्मृताकौन्तीहरेणुका ॥ रेणुकाकटुकापाकेतिक्तामुष्णाकटुर्लघुः । पित्तलादीपनीमेध्या पाचिनीगर्भपातिनी ॥ बलासवातकृच्चैवतृट्कण्डूविषदाहनुत् ॥ ४३ ॥

रेणुका (मिर्चके सदृश एक प्रकारकी सुगंधित द्रव्य]के नाम और गुण ॥

रेणुका, राजपुत्री, नन्दिनी, कपिला, द्विजा, भस्मगंधा, पांडुपुत्री, कौन्ती और हरेणुका यहरेणुकाके नाम हैं, रेणुका बिपाकमें कटु, तिक्त, कटु रस युक्त, उष्णता रहित, हलकी, पित्तवर्द्धक, दीपन, मेधाकोहित, पाचक गर्भ गिराने वाली और कफ बातका कोप, खुजली, तृषा, बिष तथा दाहकी नाशकहोती है ॥ ४३ ॥

अथठिवन ॥

ग्रंथिपर्णग्रंथिकंचकाकपुच्छञ्चगुच्छकम् । नीलपुष्पंसुगंधञ्चकथितंतैलपर्णकम् ॥ ग्रंथिपर्णतिक्ततीक्ष्णंकटूष्णंदीपनंलघुः । कफवातविषश्वासकण्डूदौर्गन्ध्यनाशनम् ॥ ४४ ॥

भटोरा के नाम और गुण ॥

ग्रंथिपर्ण, ग्रंथिक, काकपुष्प, नीलपुष्प, गुच्छक, सुगन्ध और तैलपर्णक यह भटोराके नामहैं, भटोरा तिक्त कटुरसयुक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन, हलकाऔर कफ, वात, विष, श्वास खुजली, तथा दुर्गन्धिनाशक होताहै ॥ ४४ ॥

अथग्रंथिपर्णस्यैवभेदईषत्सुगंधःस्थौणेयंथनेरइतिलोकेप्रसिद्धम् ॥

स्थौणेयकंवर्हिवर्हशुक्रवर्हञ्चकुक्कुरम् । शीर्षरोमशुकञ्चापिशुष्कपुष्पंशुकच्छदम् ॥ स्थौणेयकङ्कटुस्वादुतिक्तंस्निग्धंत्रिदोषनुत् । मेधाशुक्रकरंरुच्यंरक्षोघ्नंज्वरजंतुजित् ॥ हंतिकुष्ठास्रतृड्दाहदौर्गंध्यतिलकालकान् ॥ ४५ ॥

कुकरौंधाके नाम और गुण ॥

स्थौणेयक, वर्हिवर्ह, शुकवर्ह, कुक्कुर, शीर्ण, रोमशुक, शुकपुष्प और शुकच्छद, यह कुकरौंधे के नाम हैं, कुकरौंधा कटु, मधुर, तिक्त, स्निग्ध, त्रिदोष नाशक, मेधाको हित, बीर्य बर्द्धक, रुचिकारक और राक्षसों की पीडा, ज्वर, कृमि, कुष्ठ, रक्तदोष, तृषा, दाह, दुर्गन्धि तथातिल नाशक होताहै ॥४५॥

अथग्रंथिपर्णस्यैवभेदःभटेउरइतिनेपालदेशेभवति ॥

निशाचरोधनहरो कितवोगणहालकः । रोचकोमधुरस्तिक्तः कटुपाकेकटुर्लघुः ॥ ती

क्षणोद्द्योहिमोहंतिकुष्ठकण्डुकफानिलान्।रक्षाश्रीस्वेदमेदोऽस्रज्वरगंधविषव्रणान्॥४६॥

ग्रंथिवर्ण का भेद भटेयुर नाम से नेपाल देशमें प्रसिद्ध है उसके नाम और गुण ॥

निशाचर, धनहर, कितव और गणहासक यह भटेयुर के नाम हैं, भटेयुर रुचिकारक, मधुर तिक्त, कटु विपाक में कटु, हलका, तीक्ष्ण, हृदय को हित, शीतल और कुष्ठ, खुजली, कफ, वातु राक्षसों की बाधा, अलक्ष्मी, स्वेद, मेद, रुधिर ज्वर, दुर्गन्धि, विष तथा घावका नाशक होताहै॥४६॥

अथभूम्यामलकीसदृश स्तालीसः ॥

तालीसमुक्तम्पत्राढ्यंधात्रपत्रञ्चतत्स्मृतम् । तालीसंलघुतीक्ष्णोष्णंश्वासका सकफानिलान् ॥ निहंत्यरुचिगुल्मामवह्निमांद्यक्षयामयान् ॥ ४७ ॥

भूमि आमले के समान तालीस होता है उसके नाम और गुण ॥

तालीस, पत्राढ्य और धात्रीपत्र यह तालीस के नाम हैं, तालीस हलका, तीक्ष्ण, उष्ण और श्वास, खांसी, कफ, वात,अरुचि,गुल्म, आमदोष, मंदाग्नितथा क्षय रोगका नाशक होता है ४७

अथकंकोलंसुगंधद्रव्यम् शीतलचीनीतिलोके ॥

कंकोलकोलकम्प्रोक्तंतथाकोशफलंस्मृतम् । कंकोलंलघुतीक्ष्णोष्णंतिक्तंहृद्यंरुचि प्रदम् ॥ आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयान्ध्यहृत् ॥ ४८ ॥

शीतल चीनीके नाम और गुण ॥

कंकोल, कोलक और कोशफल यह शीतल चीनी के नाम हैं, शीतलचीनी लघु, तीक्ष्ण, उष्ण तिक्त, हृदय को हित, रुचिकारक और मुखकी दुर्गन्धि, हृदय के रोग, कफ बात रोग तथा अन्धता की नाशक होती है ॥ ४८ ॥

अथगंधकोकिलागंधमालती ॥

स्निग्धोष्णाकफहृत्तिक्तासुगन्धागन्धकोकिला । गन्धकोकिलयातुल्या विज्ञेयागन्ध मालती ॥ ४९ ॥

गंधकोकिला और गंधमालतीके गुण ॥

गंधकोकिला, स्निग्ध, उष्ण, तिक्त और सुगन्धित होती है सुगन्ध मालती में भी इसी के समान गुण होते हैं॥ ४९ ॥

अथलामज्जकमुशीरवत् पीतच्छवितृणविशेषः ॥

लामज्जकंसुनालंस्यादमृणालंलवंलघुः । इष्टकापथकंसेव्यंनलदञ्चावदातकम् ॥ लामज्जकंहिमन्तिक्तंलघुदोषत्रयास्रजित्। त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्रनुत्॥५०॥

लामज्जक (खसके समान पीले रंगका एकतृण) के नाम और गुण ॥

लामज्जक, सुनाल, अमृणाल, लव, लघु, इष्टका पथक, सेव्य, नलद और अवदातक यह लामज्जक के नाम हैं, लामज्जक शीतल, तिक्त, लघु और त्रिदोष, रक्त, चर्मरोग, स्वेद, मूत्र कृच्छ्र, दाह तथा रक्त पित्त नाशक होता है॥ ५० ॥

अथएलबालुकंकङ्कोलसदृशंकुष्ठगन्धि ॥

एलवालुकमैलेयंसुगन्धिहरिवालुकम् । एलवालुकमेलालुकपित्थंपत्रमीरितम् ॥

एल्वालुकटुकंपाकेकषायंशीतलंलघु। हन्तिकण्डूव्रणच्छर्दितृट्कासारुचिहृद्रुजः॥ बला सविषपित्तास्रकुष्ठमूत्रगदकृमीन्॥ ५१॥

एलबालुक(दालचीनीकासाडौल और कूट कीसी सुगन्धि उसमें होती है) के नाम और गुण॥

एलवालुक ऐलेय, सुगन्धि, हरिबालुक, एलालू और कपित्थपत्र यह एलबालुकके नामहैं, एल बालुक पाकमें कटु, कषाय, शीतल, लघु और खुजली घाव, छर्दि, तृषा, खांसी, अरुचि, हृदय के रोग कफ बिष पित्त रुधिर कुष्ठ मूत्ररोग तथा कृमिनाशक होताहै॥ ५१॥

कोसचीमोथा॥

गुड़तजीइतिचइयन्तुवितुन्नकनाम्नोवृक्षस्यत्वक्मुस्ताकृतिः। कुटन्नटंदासपुरंवालेयं परिपेलवम्॥ प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानिच॥ मुस्तावत्पेलवंपुष्टंशुक्लाभंस्याद्वितुन्नकम्। वितुन्नकंहिमंतिक्तं कषायंकटुकान्तिदम्॥ कफपित्तास्रवीसर्प कुष्ठकण्डूविष प्रणुत्॥ ५२॥

जलमोथा (बितुन्नकनामवृक्षकीछाल, इसकी मोथे के समान आकृतिहोतीहै) के नाम और गुण॥

कुटन्नट, दासपुर, वालेय,परिपेलव,प्लव, गोपुर,गोनर्द और कैवर्त्त मुस्तक यहजलमोथाकेनाम हैं वितुन्नक के पत्ते मोथाके समानकोमल और शुक्लवर्ण होतेहैं, वितुन्नक शीतल तिक्त कषाय कटु कान्तिबर्द्धक और कफ पित्त रक्त वीसर्प कुष्ठ खुजली तथा बिषका नाशकहोताहै॥ ५२॥

अथस्पृक्का॥

सुगन्धिद्रव्यंशाकविशेषः। लङ्केइकपुरीतिलोकेच। स्पृक्कासृक्ब्राह्मणीदेवीमरुन्माला लालतालघुः। समुद्रान्ताबधूःकोटिवर्षालङ्केपिकेत्यपि॥ स्पृक्कास्वाद्वीहिमातृष्यातिक्ता निखिलदोषनुत्। कुष्ठकण्डूविषस्वेददाहास्रज्वररक्तहृत्॥ ५३॥

स्पृक्का (लंकोइकपुरी नामसेप्रसिद्ध सुगन्धितशाक बिशेष) के नामगुण॥

स्पृक्का, असृक ब्राह्मणी देवी मरुन्नमाला लता लघु समुद्रान्ता बधू कोटिबर्षा और लंकोपिका यह स्पृक्काके नामहैं स्पृक्का, मधुर, तिक्त, शीतल वीर्य्यबर्द्धक त्रिदोषनाशक और कुष्ठ खुजली बिष स्वेद दाह अलक्ष्मी ज्वर तथा रक्तनाशक होतीहै॥ ५३॥

अथपर्पटीइतिप्रसिद्धंपद्मावतीइतिच॥

उत्तरदेशेसुगन्धिद्रव्यं।पर्पटीरञ्जनाकृष्णाजतुकाजननीजनी। जतुकृष्णाग्निसंस्पर्शा जतुकृच्चक्रवर्तिनी॥ पर्पटीतुवरातिक्ताशिशिरावर्णकृल्लघु। विषव्रणहरीकण्डू कफपित्तास्र कुष्ठनुत्॥ ५४॥

उत्तर देशमें प्रसिद्धपद्मावतीके नाम गुण॥

पर्पटी रंजना कृष्णा जतुका जननी जनी जतुकृष्णा अग्निसंस्पर्शा जतुकृत् और चक्रवर्तिनी यह पद्मावती के नामहैं पद्मावती, कषाय तिक्त शीतल वर्णबर्द्धक लघु और विषव्रण खुजली कफपित्त रक्त तथा कुष्ठ नाशक होती है॥ ५४॥

अथनलिका ॥

उत्तरापथेप्रसिद्धा । सुगन्धावलाकृतिर्यवारीइतिचक्वचित्प्रसिद्धा । नलिकाविद्रुमल ताकपोतचरणानटी । धमन्यञ्जनकेशीचनिर्मध्यासुषिरानली ॥ नलिकाशीतलालघ्वी चक्षुष्याकफपित्तहृत् । कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥ ५५ ॥

नलिका उत्तरदेशकी सुगन्धित बस्तु सुगन्धवाला के समान उसके नामगुण ॥

नलिका विद्रुमलता कपोत चरणा नटी धमनी अंजनकेशी निर्मध्या सुशिरा और नली यह नलिका के नामहैं नलिका शीतल लघु नेत्रों कोहित और कफ पित्त मूत्र कृच्छ्र पथरी बात तृषा रक्तकुष्ठ खुजली तथा ज्वर नाशक होती है ॥ ५५ ॥

अथप्रपौण्डरीकं ॥

सुगन्धद्रव्यंपुण्डेरीइतिलोकेप्रसिद्धम् । प्रपौण्डरीपौण्डर्य्यंचक्षुष्यंपौण्डरीयकम् ॥ पौण्डर्य्यंमधुरंतिक्तंकषायंशुक्रलंहिमम् ॥ चक्षुष्यंमधुरंपाकेवर्ण्यंपित्तकफप्रणुत् ॥ ५६ ॥

इतिभावप्रकाशेकर्पूरादिवर्गः ॥

पुंडेरी एक प्रकारकी सुगन्धित बस्तु के नाम और गुण ॥

प्रपौंडरीक, पौंडर्य्य, चक्षुष्य और पौंडर्यक यह पुंडेरीके नामहैं, पुंडेरी, मधुर, तिक्त, कषाय, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, नेत्रोंकोहित पाकमें मधुर वर्ण कोहित और पित्त कफ नाशक होती है ॥ ५६ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेकर्पूरादिवर्गः ॥

अथगुडूच्यादिवर्गः तत्रादौगुडूच्याउत्पत्तिर्नामानिगुणाश्च ॥

अथलङ्केश्वरोमानी रावणोराक्षसाधिपः । रामपत्नींबलात्सीतांजहारमदनातुरः ॥ ततस्तंबलवान्रामो रिपुंजायापहारिणम् । ततोवानरसैन्येनजघानरणमूर्द्धनि ॥ हतेतस्मिन्सुरारातौ रावणेबलगर्विते । देवराजःसहस्राक्षः परितुष्टोऽतिराघवे ॥ तत्रयेवानराःकेचिद्राक्षसैर्निहतारणे । तानिन्द्रोजीवयामाससंसिच्यामृतवृष्टिभिः ॥ ततोयेषुप्रदेशेषु कपिगात्रात्परिच्युताः । पीयूषविन्दवोयेतुतेभ्योजातागुडूचिका ॥ गुडूचीमधुपर्णीस्याद मृताऽमृतवल्लरी । छिन्नाछिन्नरुहाछिन्नोद्भवावत्सादनीतिच ॥ जीवन्तीतंत्रिकासोमासोम वल्लीचकुण्डली । चक्रलक्षणिकाधीराविशल्याचरसायनी ॥ चंद्रहासीवयस्थाचमण्डली देवनिर्मिता । गुडूची कटुका तिक्ता स्वादु पाका रसायनी ॥ संग्राहिणीकषायोष्णालघ्वीव ल्याग्निदीपनी । दोषत्रयामतृड्दाहमेहकासांश्चपाण्डुताम् ॥ कामलाकुष्ठवातास्रज्वर कृमिवमीन्हरेत् । प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥ १ ॥

गिलोयकी उत्पत्ति नामऔरगुण ॥

एक समयराक्षसोंका स्वामी लंका का राजा मदोन्मत्त रावणकामसे व्याकुल होकर रामचन्द्रजी

की पत्नी सीताजीको हरलेगया इसके उपरान्त अत्यन्त प्रतापी रामचन्द्रजीने बानरोंकी सेनाइकट्ठी करके स्त्रीके हरने वाले रावणको मारा देवताओंके परम शत्रु उसरावणके मारेजाने पर सहस्र लोचन इन्द्रने रामचन्द्रजीपर अत्यन्त प्रसन्न होकर उसरण में राक्षसों के हाथसे मारेहुए बानरोंको अमृत वरसाकर जिवाया उनवानरोंके शरीरसे जहाँ २ अमृतके बिन्दु पड़ेउसी स्थानमें यह गिलोय उत्पन्न हुई, गुडूची, मधुपर्णी, अमृता, अमृतवल्लरी, छिन्ना,छिन्नरुहा,छिन्नोद्भवा,वत्सादनी, जीवन्ती तांत्रिका, सोमा, सोमबल्ली, कुंडली, चक्रलक्षणिका,धीरा,विशल्या,रसायनी,चन्द्रहासी,वयस्था,मंडली और देवनिर्मिता यह गिलोयके नामहैं, गिलोयकटु, तिक्त, पाकमें मधुर, रसायन, ग्राही, कषाय-उष्ण, हलकी, बलकारक, अग्निदीपक और त्रिदोष आम, तृषा, दाह, प्रमेह, खांसी, पांडु कामला, कुष्ठ, बातरक्त, ज्वर, कृमि, छर्दि, श्वास, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, वात तथा हृदयके रोगकी नाशक होतीहै ॥ १ ॥

अथपान ॥

ताम्बूलवल्लीताम्बूलीनागिनीनागवल्लरी । ताम्बूलंविशदंरुच्यंतीक्ष्णोष्णंतुवरंसरम् ॥ वश्यंतिक्तंकटुक्षारंरक्तपित्तकरंलघु । वल्यंश्लेष्मास्यदौर्गंध्यमलवातश्रमापहम् २ ॥

तांबूलके नाम और गुण ॥

तांबूलबल्ली, तांबूली, नागिनी और नागवल्लरी यह तांबूल (पान) के नामहैं, तांबूल, विशद रुचिकारक, तीक्ष्ण, उष्ण,कषाय, सारक, वशीकरण, तिक्त, कटु, क्षार, रक्त,पित्तकारक हलका, बलकारी और कफ, मुखकी दुर्गंधि, मल, बात तथा श्रमका नाशक होताहै ॥ २ ॥

अथबेल ॥

बिल्वःशाण्डिल्यशैलूषौमालूरश्रीफलावपि । श्रीफलस्तुवरस्तिक्तोग्राहीरूक्षोऽग्निपित्तकृत् । वातश्लेष्महरोबल्योलघुरुष्णश्चपाचनः ॥ ३ ॥

बेलके नामगुण ॥

विल्व, शांडिल्य,शैलूष,मालूर और श्रीफल यहबेलके नामहैं, बेल, कषाय, तिक्त, ग्राही, रूखा अग्निवर्द्धक, पित्तकारी, बात, कफ नाशक, बलकारी हलका, उष्ण और पाचक होताहै ॥ ३ ॥

अथगम्भारी ॥

गम्भारीभद्रपर्णीचश्रीपर्णीमधुपर्णिका । काश्मीरीकाश्मरीहीराकाश्मर्य्यःपीतरोहिणी ॥ कृष्णवृन्तामधुरसामहाकुसुमिकापिच । काश्मरीतुवरानिक्तावीर्य्योष्णामधुरागुरुः ॥ दीपनीपाचनीमेध्याभेदिनीभ्रमशोषजित् । दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा ॥ तत्फलंबृंहणंचक्ष्यंगुरुकेशंरसायनम् । वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धनुत् ॥ स्वादुपाकेहिमंस्निग्धंतुवराम्लविशुद्धिकृत् । हन्याद्दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥ ४ ॥

गंभारीके नामऔरगुण ॥

गंभारी, भद्रपर्णी, श्रीपर्णी, मधुपार्णिका, काश्मीरी, काश्मरी, हीरा, काश्मर्य्य,पीतरोहिणी, कृष्णवृन्ता,मधुरसा और महाकुसुमिका यहगंभारी (खंभारी) के नामहैं गंभारी, कषाय, तिक्त, उष्ण मधुर,भारी,दीपन, पाचक, मेधाकोहित भेदक और श्रम,शोष,त्रिदोष, तृषा,आम, शूल,बवासीर, विष

दाह तथा ज्वर नाशक होतीहै गंभारीकाफल धातुवर्द्धक,वीर्य्यवर्द्धक,भारी,केशोंकोहित,रसायन, और वात, पित्त, तृषा, रक्त, क्षय,मूत्रका रुकना,दाह, बात,रक्त तथा घावका नाशक पाकमें मधुर शीतल स्निग्ध, कषाय,अम्ल और शोधन कारक होताहै ॥ ४ ॥

अथपाण्डरिकण्ठपाण्डरि ॥

पाटलिःपाटलामोघामधुदूतीफलेरुहा । कृष्णवृन्ताकुवेराक्षीकालस्थाल्यलिबल्लभा ॥ ताम्रपुष्पीचकथितापरास्यात्पाटलासिता । मुष्ककोमोक्षकोघण्टापाटलिःकाष्ठपाटला ॥ (कालस्थालीत्यत्रकाचस्थालीत्येके) पाटलातुवरातिक्तानुष्णादोषत्रयापहा । अरुचिः श्वासशोथास्रक्छर्दिहिक्कातृषाहरौ ॥ पुष्पंकषायंमधुरंहिमंहृद्यंकफास्रनुत् । पित्तातिसारहृत्कण्ठ्यंफलंहिक्कास्रपित्तहृत् ॥ ५ ॥

पाटलि और घंटा पाटलिके नामगुण ॥

पाटलि, पाटला, अमोघा, मधुदूती,फलेरुहा,कृष्णवृन्ता,कुबेराक्षी,कालस्थाली अथवा काचस्थाली अलिबल्लभा और ताम्रपुष्पी यह पाटला (पाढरि).के नाम हैं एक दूसरे प्रकारकी श्वेत पाटला होतीहै उसको मुष्कक, मोक्षक, घंटा पाटलि और काष्ठ पाटला यह कहते हैं, पाढ़रि, कषाय, तिक्त कुछ उष्ण और त्रिदोष, अरुचि, श्वास,सूजन, रुधिर, छर्दि, हिचकी, तथा तृषा की नाशक होती है पाढ़रि का पुष्प कषाय, मधुर, शीतल, हृदय कोहित और कफ, रक्तदोष,पित्त,अतीसार नाशक तथा कंठका शोधक होताहै इसका फल हिचकी और रक्तपित्तको नाश करतोहै ॥ ५॥

अथअग्नेंथगनिआरिइतिच ॥

अग्निमंथोजयःसस्याच्छ्रीपर्णीगणिकारिका । जयाजयंतीतर्कारीनादेयीवैजयंतिका ॥ अग्निमन्थःश्वयथुनुद्वीर्य्योष्णःकफवातहृत्।पाण्डुनुत्कटुकस्तिक्तस्तुवरोमधुरोऽग्निदः॥६॥

अरणीके नाम और गुण ॥

अग्निमन्थ, जय, श्रीपर्णी, गणिकारिका, जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी और बैजयन्तिका यह अरणी काष्ठके नामहैं अरणी सूजन नाशक,उष्ण,कटु, तिक्त, कषाय, मधुर, अग्निवर्द्धक और कफ बात तथा पांडु रोगनाशक होतीहै ॥ ६ ॥

अथसोनापाढ़ा ॥

स्योनाकःशोषणश्चस्यान्नटकट्वङ्गटुंटुकः । मण्डूकपर्णपत्रोर्णीशुकनासकुटन्नटा ॥ दीर्घवृन्तोरलुश्चापिपृथुशिम्बःकटम्भरः । स्योनाकोदीपनःपाकेकटुकस्तुवरोहिमः ॥ ग्राही तिक्तोऽनिलःश्लेष्मपित्तकासप्रणाशनः । टुण्टुकस्यफलंबालंरूक्षंवातकफापहम् ॥ हृद्यं कषायंमधुरंरोचनंलघुदीपनम् । गुल्मार्शःकृमिहृत्प्रौढंगुरुवातप्रकोपनम् ॥ ७ ॥

सोना पाढ़ाके नाम गुण ॥

श्योनाक, शोषण नट, कट्वंग टुंटुंक, मंडूकपर्ण,पत्रोर्ण, शुकनास कुटंनट,दीर्घवृन्त,अरल, पृथुशिव और कटंभर, यह सोना पाढ़ाके नामहैं सोना पाढ़ा दीपन, पाक में कटु, कषाय, तिक्त शीतल ग्राही और वात कफ पित्त तथा खांसी का नाशक होता है इसका कच्चाफल, रूखा, हृदय कोहित कषाय

मधुर, रुचिकारक,हलका अग्निदीपक और बात कफ गुल्म बवासीर तथा कृमिनाशक होताहै पक्काफल भारी और वायुका कोपकरने वाला होताहै ॥ ७॥

अथबृहत्पञ्चमूलस्यलक्षणंगुणाः ॥

श्रीफलःसर्वतोभद्रापाटलागणिकारिका । स्योनाकःपञ्चभिश्चैतैःपञ्चमूलंमहन्मतम्॥पञ्चमूलंमहत्तिक्तंकषायंकफवातनुत्।मधुरंश्वासकासघ्नमुष्णंलघ्वग्निदीपनम् ॥८॥

बृहत्पंचमूल के लक्षण और गुण ॥

बेल खंभारी पाढर अरणी और सोना पाढा इनपांचोंके मिलनेसे बृहत्पंचमूल कहलाताहै बृहत्पंचमूल तिक्त,कषाय,मधुर,हलका,दीपन,उष्ण और कफ बात श्वास तथा खांसीका नाशक होताहै॥८॥

अथसरिवन ॥

शालिपर्णीस्थिरासौम्यात्रिपर्णीपीवरीगुहा । विदारिगन्धादीर्घांगीदीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥ शालिपर्णीगुरुच्छर्दीज्वरश्वासातिसारजित् । शोषदोषत्रयहरीबृंहण्युत्कारसायनी ॥ तिक्ताविषहरीस्वादुःक्षतकासकृमिप्रणुत् ॥ ९ ॥

शालिपर्णी (सरिवन) के नाम और गुण ॥

शालिपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्णी पीवरी गुहा बिदारिगंधा दीर्घाङ्गी दीर्घपत्रा और अंशुमती यह सरिवन के नाम हैं सरिवन धातुओं का पुष्ट करनेवाला रसायन तिक्त मधुर भारी और बिष छर्दि ज्वर श्वास अतीसार शोष त्रिदोष घाव खांसी तथा कृमि नाशकहोता है ॥ ९ ॥

अथपिठवन ॥

पृश्निपर्णीपृथक्पर्णीचित्रपर्ण्यंघ्रिपर्ण्यपि । क्रोष्टुविन्नासिंहपुच्छीकलशीधावनिर्गुहा॥ पृष्टिपर्णीत्रिदोषघ्नीवृष्योष्णमधुरासरा । हंतिदाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमीः ॥१०॥

पृश्निपर्णी (पिठवन) के नामगुण ॥

पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी, चित्रपर्णी, अंघ्रिपर्णी क्रोष्टुबिन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनि और गुहा यह पृश्निपर्णीके नामहैं, पृश्निपर्णी वीर्यबर्द्धक, उष्ण, मधुर, सारक और त्रिदोष; दाह,ज्वर, श्वास रक्तातीसार, तृषा तथा छर्दिनाशकहोतीहै ॥ १० ॥

अथबरहण्ट्वा ॥

वार्त्ताकीक्षुद्रभण्टाकीमहतीबृहतीकुली । हिंगुलीराष्ट्रिकासिंहीमहोष्ट्रीदुःप्रधर्षिणी ॥ बृहतीग्राहिणीहृद्यापाचनीकफवातहृत् । कटुतिक्तास्यवैरस्यमलारोचकनाशिनी ॥ उष्णकुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमान्द्यजित् ॥ ११ ॥

बड़ीभटकटैयाके नाम और गुण ॥

वार्त्ताकी.क्षुद्रभंटाकी, महती, बृहती, कुली, हिंगुली, राष्ट्रिका, सिंही, महोष्ट्री और दुष्प्रधर्षिणी यहबड़ी भटकटैयाके नामहैं भटकटैया ग्राही हृदयको हित पाचक कटु तिक्त उष्ण और कफ वात मुखकी विरसता मल,अरुचि कुष्ठ ज्वर श्वास शूल खांसी तथा अग्निकी मन्दताको नाशकरतीहै॥ ११॥

अथभटकटैयारोगिणीइतिच ॥

कण्टकारीतुदुःस्पर्शाक्षुद्राव्याघ्रीनिदिग्धिका । कण्टालिकाकण्टकनीधावनीबृहती

तथा ॥ उभेचबृहत्यौ । (यतआहसुश्रुतः)क्षुद्रायाक्षुद्रभद्राख्याबृहतीतिनिगद्यते । श्वेता क्षुद्राचंद्रहासालक्ष्मणाक्षेत्रदूतिका ॥ गर्भदाचंद्रभाचंद्रीचन्द्रपुष्पाप्रियंकरी । कण्टकारीसरातिक्ताकटुकादीपनीलघुः ॥ रूक्षोष्णापाचनीकासश्वासज्वरकफानिलान् । निहंतिपीनसंश्वासपार्श्वपीड़ाहृदामयान् ॥ तयोःफलंकटुरसेपाकेचकटुकंभवेत् । शुक्रस्यरेचनंभेदितिक्तंपित्ताग्निकृल्लघु ॥ हन्यात्कफमरुत्कण्डूकासमेदकृमिज्वरान् । तद्वत्प्रोक्तासितायाक्षुद्राविशेषाद्गर्भकारिणी ॥ १२ ॥

छोटी भटकटैयाके नाम और गुण ॥

कंटकारी दुःस्पर्शा क्षुद्रा व्याघ्री निदिग्धिका कंटालिका कंटकनी धावनी और बृहती यह छोटी भटकटैयाके नामहैं छोटी भटकटैया और बडीभटकटैया इनदोनों को बृहती कहतेहैं क्योंकि सुश्रुत में कहाहै कि क्षुद्रा (छोटीभटकटैया) और क्षुद्रभंटाकी यहदोनों बृहती कहलाती हैं श्वेतभटकटैया को चन्द्रहासा लक्ष्मणा क्षेत्रदूतिका गर्भदा चन्द्रभा चन्द्री चन्द्रपुष्पा और प्रियंकरीकहते हैं भटकटैया सारक तिक्त कटु दीपन हलकी रूखी उष्ण पाचक और खांसी श्वास ज्वर कफ वात पीनस पसलीकादर्द कृमितथा हृदयके रोगोंकी नाशकहोतीहै दोनों भटकटैयाके फलकटु पाक में कटु वीर्य के गिरानेवाले भेदक तिक्त पित्तबर्द्धक अग्निकारक हलके और कफ वात खुजली मेद कृमि तथा ज्वर के नाशक होते हैं श्वेत भटकटैयामें भी यही गुणहोतेहैं और यह विशेष करके गर्भ देने वाली होतीहै ॥ १२ ॥

अथ गोक्षुर ॥

गोक्षुरः क्षुरकोऽपिस्यात्त्रिकण्टःस्वादुकण्टकः । गोकण्टकोभक्षटकोवनशृङ्गाटइत्यपि ॥ पलंकषाश्वदंष्ट्राचतथास्यादिक्षुगन्धिका । गोक्षुरःशीतलःस्वादुर्बलकृद्वस्तिशोधनः ॥ मधुरोदीपनोबृष्यः पुष्टिदश्चाश्मरीहरः । प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥ १३ ॥

गोखुरू के नाम और गुण ॥

गोक्षुर, क्षुरक, त्रिकंट, स्वादु कंटक, गोकंटक, भक्षटक, बनशृंगाट, पलंकषा, अश्वदंष्ट्रा और इक्षुगंधिका, यह गोखुरू के नाम हैं, गोखुरू, शीतल मधुर, बलकारक, मूत्राशयका शोधक, दीपन, वीर्य बर्द्धक, पुष्टिकारक, और पथरी, प्रमेह, श्वास, खांसी, बवासीर, मूत्रकृछ्र, हृदय के रोग, तथा वातका नाशक होता है ॥ १३ ॥

अथलघुपञ्चमूलस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

शालिपर्णीपृष्ठपर्णीवार्ताकीकण्टकारिका । गोक्षुरःपञ्चभिश्चैतैःकनिष्ठंपञ्चमूलकम् ॥ पञ्चमूलंलघुस्वादुबल्यम्पित्तानिलापहम् ॥ नात्युष्णंबृंहणंग्राहिज्वरश्वासाश्मरीप्रणुत् ॥ १४ ॥

लघु पंचमूलके लक्षण और गुण ॥

सरिवन, पिठवन, बडी छोटी भटकटैया और गोखुरू यह पांचों मिलेहुए होने से लघुपंचमूल कहाते हैं, लघुपंचमूल, मधुर, हलका, बलकारक, कुछउष्ण, धातुबर्द्धक, ग्राही और पित्त वायु ज्वर श्वास तथा पथरी का नाशक होता है ॥ १४ ॥

अथदशमूलस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

उभाभ्यांपञ्चमूलाभ्यांदशमूलमुदाहृतम्। दशमूलंत्रिदोषघ्नंश्वासकासशिरोरुजः ॥ तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीड़ारुचिर्हरेत् ॥ १५ ॥

दशमूल के लक्षण और गुण ॥

दोनों पंचमूलोंके मिलाने से दशमूल कहाते हैं, दशमूल, त्रिदोष,श्वास, खांसी,शिररोग, तन्द्रा, सूजन,ज्वर,आनाह,पसलीकी पीड़ा,और अरुचिका नाशक होता है ॥ १५ ॥

जीवइतिशाकबिशेषः। शर्करावन्मधुरपुष्पाव्रततिः ॥

जीवन्तीजीवनीजीवाजीवनीयामधुस्रवा।मंगल्यानामधेयाचशाकश्रे ष्ठापयस्विनी॥जी वन्तीशीतलास्वादुःस्निग्धादोषत्रयापहा। रसायनीबलकरीचक्षुष्याग्राहिणीलघुः॥१६॥

जीव (डोंडी) शाक बिशेष शक्कर के समान मधुर पुष्पवाली लता के नाम और गुण ॥

जीवन्ती,जीवनी, जीवा,जीवनीया, मधुस्रवा, मंगल्या, शाकश्रेष्ठा और पयस्विनी,यह जीवन्ती के नाम हैं, जीवन्ती, शीतल, मधुर,स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, रसायन, बलकारक, नेत्रहित, ग्राही, और लघुहोती है ॥ १६ ॥

अनन्तरवनमूंग। अथमुद्गपर्णी ॥

मुद्गपर्णीकाकपर्णीसूर्य्यपर्ण्यल्पिकासहा। काकमुद्गाचसाप्रोक्तातथामार्ज्जारगंधिका मुद्गपर्णीहिमारूक्षातिक्तास्वादुश्चशुक्रला । चक्षुष्याक्षतशोथघ्नीग्राहिणीज्वरदाहनुत् ॥ दोषत्रयहरीलघ्वीग्रहण्यर्शोऽतिसारजित् ॥ १७ ॥

बनमूंग के नाम और गुण ॥

मुद्गपर्णी,काकपर्णी,सूर्य्यपर्णी,अल्पिका,सहा,काकमुद्गा और मार्जारगंधिका यह बनमूंगके नाम हैं बनमूंग,शीतल,रूखी तिक्त, मधुर,वीर्य्यबर्द्धक, ग्राही,हलकी और घाव,सूजन, ज्वर, दाह, त्रिदोष, संग्रहणी,बवासीर और अतीसार नाशक होती है ॥ १७ ॥

अथमाषपर्णी ॥

माषपर्णीसूर्य्यपर्णीकाम्बोजीहयपुच्छिका। पाण्डूलोमशपर्णीच कृष्णवृन्तामहासहा माषपर्णीहिमातिक्तारूक्षाशुक्रबलास्रकृत्। मधुराग्राहिणीशोथवातपित्तज्वरास्रजित् १८॥

वन उर्दके नाम और गुण ॥

माषपर्णी, सूर्य्य पर्णी, काम्बोजी, हयपुच्छिका, पांडु, लोमशपर्णी, कृष्णवृन्ता और महासहा यह बनउर्द के नाम हैं, वनउर्द, शीतल, तिक्त, रूखा, वीर्य्यबर्द्धक, कफकारी, मधुर, ग्राही और सूजन, बात, पित्त, ज्वर, तथा रुधिर नाशक होता है ॥ १८ ॥

अथजीवनीयगणस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

अष्टवर्गःसयष्टीकोजीवन्तीमुद्गपर्णिका । माषपर्णीगणोऽयन्तुजीवनीयगणःस्मृतः ॥ जीवनोमधुरश्चापिनाम्नासपरिकीर्तितः।जीवनीयगणःप्रोक्तःशुक्रकृद्वृंहणोहिमः॥गुरुग र्भप्रदस्तन्यकफकृत्पित्तरक्तहृत्। तृष्णांशोषंज्वरंदाहंरक्तपित्तंव्यपोहति ॥ १९ ॥

जीवनीय गणका लक्षण और गुण ॥

प्रथम कहाहुआ अष्टवर्ग, मुलहटी, जीवन्ती, बनमूंग और वनउर्द, यह सब मिलकर जीवनीय गण कहाता है, इसको जीवन और मधुर भी कहते हैं, जीवनीय गण, वीर्य्य बर्द्धक, शरीरका पुष्टकारक, शीतल, भारी, गर्भदायक, दूधपैदा करने वाला, कफकारक और रक्तपित्त, तृषा, शोष, ज्वर, दाह, पित्त तथा रुधिर के दोषों का नाशक होता है ॥ १९ ॥

अथशुक्लरक्तैरण्डः ॥

शुक्लएरण्डआमण्डश्चित्रोगन्धर्वहस्तकःपञ्चांगुलोबर्द्धमानोदीर्घदण्डोऽप्यदण्डकः॥ बातारिस्तरुणश्चापिरुवूकश्चनिगद्यते । रक्तोऽपरोरुवूकःस्यादुरुबूकोरुबूस्तथा ॥ व्याघ्रपुच्छश्चवातारिश्चञ्चुरुत्तानपत्रकः । एरण्डयुग्ममधुरमुष्णंगुरुविनाशयेत् ॥ शूलशोथकटीवास्तिशिरःपीड़ोदरज्वरान् । बध्मश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ॥ एरण्डपत्रंवातघ्नंकफकृमिविनाशनम् । मूत्रकृच्छ्रहरञ्चापिपित्तरक्तप्रकोपणम् ॥ वातार्य्यग्रदलंगुल्मंवस्तिशुलहरंपरम् । कफवातकृमीन्हन्तिवृद्धिंसप्तविधामपि ॥ एरंडफलमत्युष्णंगुल्मशूलानिलापहम् । यकृत्प्लीहोदरार्शोघ्नंकटुकंदीपनंपरम् ॥ तद्वन्मज्जाचविड्भेदीवातश्लेष्मोदरापहः ॥ २० ॥

श्वेत और रक्त एरंड के नाम गुण ॥

आमंड, चित्र, गन्धर्वहस्तक, पंचांगुल, बर्द्धमान, दीर्घदंड, अदंडक, वातारि, तरुण और रुवूक यह श्वेत एरंडकेनामहैं और लालएरंडकोरुवूक उरुवूक, रुवू, व्याघ्रपुच्छ, बातारि, चंचु और उत्तानपत्रककहतेहैं यहदोनोंप्रकारके एरंड मधुर, उष्ण, भारी और शूल, सूजन कमरकी पीड़ा, मूत्राशयकी पीड़ा, शिरकी पीड़ा, उदर, ज्वर, बद, श्वास, कफ, आनाह, खांसी, कुष्ठ, आम तथा वातनाशकहोते हैं, एरंडके पत्ते, वात, कफ, कृमितथा मूत्रकृच्छ्रनाशक और रक्तपित्तकारक होते हैं अरंडकी कोपल गुल्म मूत्राशयकी पीड़ा कफ वात, कृमि और सातप्रकारके वृद्धरोगोंको नाशकरतीहै, अरंडका फल, अत्यन्त उष्ण, कटु, अतिदीपन, और गुल्म, शूल, बात, यकृत, प्लीहा, उदर और बवासीरका नाशकहोताहै, इसकी मींगी मलभेदक और वात कफ तथा उदर रोगनाशक होतीहै ॥ २० ॥

अथ शुक्लरक्तार्कइतिलोके ॥

अलर्कोगुणरूपःस्यान्मन्दारोवसुकोऽपिच । श्वेतपुष्पःसदापुष्पःसबालार्कःप्रतीपसः रक्तोपरोर्कनामास्यादर्कपर्णोविकीर्णकः । रक्तपुष्पःशुक्लफलस्तथास्फोटः प्रकीर्तितः ॥ अर्कद्वयंसरंवातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् । निहन्तिप्लीहगुल्मार्शश्लेष्मोदरशकृत्कृमीन् ॥ अलर्ककुसुमंतृष्ण्यंलघुदीपनपाचनम् । अरोचकप्रसेकार्शःकासश्वासनिवारणम् ॥ रक्तार्कपुष्पंमधुरंसतिक्तंकुष्ठकृमिघ्नंकफनाशनञ्च । अर्शोविषंहन्तिचरक्तपित्तंसंग्राहिगुल्मेश्वयथौहितंतत् ॥ क्षीरमर्कस्यतिक्तोष्णंस्निग्धंसत्लवणंलघु । कुष्ठगुल्मोदरहरंश्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥ २१ ॥

श्वेत और लालआकके नामगुण ॥

गणरूप श्वेतार्क मंदारबसुक श्वेतपुष्प सदापुष्प अलर्क प्रतापस यह श्वेतमदार के नामहैं लाल मदारको अर्कपर्ण विकीरण रक्तपुष्प और आस्फोट कहतेहैं दोनोंप्रकार के आक सारक और वात कुष्ठ खुजली बिष घाव प्लीहा गुल्म बवासीर कफ उदर तथा बिष्ठाके कृमियोंके नाशकहोते हैं श्वेत आक के पुष्प वीर्यबर्द्धक लघुदीपन पाचन और अरुचि कफादिकोंका वहना बवासीर खांसी तथा श्वासके नाशकहोतेहैं लालआक के पुष्प मधुर तिक्त ग्राही और कुष्ठ कृमि कफ बवासीर बिष रक्त पित्त गुल्म तथा सूजन के नाशक होतेहैं आकका दूध तिक्त लवण उष्ण स्निग्ध हलका और कुष्ठ गुल्म तथा उदर नाशकहोताहै और यह विरेचन के लिये भी बहुतश्रेष्ठहै ॥ २१ ॥

अथ सेहुण्ड ॥

सेहुण्डःसिंहतुण्डःस्याद्वज्रीवज्रद्रुमोऽपिच । सुधासमन्तदुग्धाचस्तुक्स्त्रियांस्यात् स्नुहीगुड़ा ॥ सेहुण्डोरेचनस्तीक्ष्णोदीपनःकटुकोगुरुः । शूलमष्टीलिकाध्मानःकफगुल्मोदरानिलान् ॥ उन्मादमोहकुष्ठार्शःशोथमेदोऽस्मपाण्डुताः । व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूर्वा विषंहरेत् ॥ उष्णवीर्य्यस्नुहीक्षीरंस्निग्धञ्चकटुकंलघु । गुल्मिनांकुष्ठिनाञ्चापितथैवोदररोगिणाम् ॥ हितमेतद्विरेकार्थंयेचान्येदीर्घरोगिणः ॥ २२ ॥

थूहरके नाम और गुण ॥

सेहुंड, सिंहतुंड, वज्री, वज्रद्रुम, सुधा, समन्तदुग्धा, स्नुक स्नुही और गुड़ा यह थूहरके नामहैं, थूहर, दस्तावर तीक्ष्ण, दीपन, कटु, भारी, और शूल, अष्टीलिका, आध्मान, कफ, गुल्म, उदर, बात, उन्माद, मोह, कुष्ठ, बवासीर, सूजन, मेद, पथरी, पांडु, घावकी सूजन, ज्वर, प्लीहा, बिष, तथा नेत्र के मलको विषका नाशक होताहै, थूहरका दूध, बीर्यमें उष्ण, स्निग्ध, कटु, हलका और गुल्मरोगी, कुष्ठी, उदररोगी तथा अन्य प्राचीन रोगवालोंको विरेचनके लिये अत्यन्त हितकारी है ॥ २२ ॥

अथसेहुण्डभेदः ।शातलाअनेनैवनाम्नाप्रसिद्धा ॥

शातलासप्तलासाराविमलाविदुलाचसा । तथानिगदिताभूरिफेनाचर्मकषेत्यपि ॥ शातलाकटुकापाकेवातलाशीतलालघुः । तिक्ताशोथकफानाहपित्तोदावर्त्तरक्तजित् ॥ २३ ॥

शातलाके नाम और गुण ॥

शातला, सप्तला सारा, विमला, बिदुला, भूरिफेना और चर्मकशा, यह शातलाके नामहैं, शातला पाकमें कटु, बादी, शीतल, हलका तिक्त, और सूजन, कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त्त तथा रक्तनाशक होताहै ॥ २३ ॥

अथ करिहारी ॥

कलिहारीतुहलिनीलाङ्गलीशक्रपुष्प्यपि । विशल्याग्निशिखानन्तावह्निचक्राचगर्भनुत् ॥ कलिहारीसराकुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित् । सक्षाराश्लेष्माजित्तिक्ताकटुकातुवरापिच ॥ तीक्ष्णोष्णकृमिहल्लघ्वीपित्तलागर्भपातिनी ॥ २४ ॥

करिहारीके नाम और गुण ॥

कलिहारी, हलिनी, लांगली, शक्रपुष्पी, विशल्या, अग्निशिखा, अनन्ता, बह्निचक्रा और गर्भनुत

यह करिहारी के नामहैं, करिहारी, लारक, क्षार, तिक्त कटु कषाय, तीक्ष्ण उष्ण, हलकी, पित्तवर्द्धक और कुष्ठ, सूजन, ववासीर, घाव, शूल, कफ, कृमि तथा गर्भकी नाशकहोती है ॥ २४ ॥

अथ श्वेतरक्तकरवीरः ॥

करवीरःश्वेतपुष्पःशतकुम्भोऽश्वमारकः ॥ द्वितीयोरक्तपुष्पश्चचण्डातोलगुड़स्त था ॥ करवीरद्वयंतिक्तंकषायंकटुकञ्चतत् । व्रणलाघवकृन्नेत्रकोपकुष्ठव्रणापहम् ॥ वीर्यो ष्णंकृमिकण्डूघ्नंभक्षितंविषवन्मतम् ॥ २५ ॥

श्वेत और रक्त कनेरकेनाम गुण ॥

करवीर, श्वेत पुष्प, शतकुम्भ, और अश्व मारक, यह श्वेत कनेरके नामहैं और लालकनेरको रक्त पुष्प चंडात और लगुड कहतेहैं, दोनों प्रकारके क़नेर, तिक्त कषाय, कटु, घावके हलके करनेवाले, वीर्यमेंउष्ण और नेत्रोंकाकोप, कुष्ठ, घाव, कृमितथा खुजलीनाशक होतेहैं और खानेसे विषके समान गुण दायक होतेहैं ॥ २५॥

अथ धत्तूरः ॥

धत्तूर धूर्त्त धत्तूरा उन्मत्तः कनकाह्वयः । देवताकितवस्तूरीमहामोहीशिवप्रियः ॥ मा तुलोमदनश्वास्यफलेमातुलपुत्रकः । धत्तूरोमदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ॥ कषायो मधुरस्तिक्तोयूकालिक्षाविनाशकः॥ उष्णोगुरुर्व्रणश्लेष्मकंडूकृमिविषापहः ॥ २६ ॥

धतूरे के नाम और गुण ॥

धतूर धूर्त धूस्तूर कनक देविका कितवतूरी महामोही शिवप्रिय मातुल और मदन यह धतूरे के नामहैं इसके फलको, मातुल, पुत्रकहतेहैं धतूरा, मदकारी, बर्णकोहित अग्निवर्द्धक, बादी, कषाय, मधुर तिक्त, उष्ण भारी और जुआं लीख घाव कफ, खुजली, कृमि, तथा बिष नाशक होताहै ॥ २६ ॥

अथ अरूसा ॥

वासकोवाशिकावासाभिषङ्मातासिंहिका । सिंहास्योवाजिदन्तास्यादाटरूषोऽटरू षकः ॥ आटरूषोवृषस्ताम्रःसिंहपर्णश्चसस्मृतः । वासकोवातकृत्स्वर्य्यःकफपित्तासृनां शनः ॥ तिक्तस्तुवरकोहृद्योलघुःशीतस्तृडर्त्तिहृत् । श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षया पहः ॥ २७॥

अड़ूसाके नाम और गुण ॥

बासक,बाशिका,बासा ।भिषङ्ममाता सिंहिका,सिहास्य वाजिदन्ता आटरूष वृष आटरूषक और सिंह पर्ण, यहअड़ूसेके नामहैं अड़ूसा बादी स्वरकोहित तिक्त कषाय हृदयको हित हलका शीतल और कफ पित्त रुधिर दोष तृषा श्वास खांसी ज्वर छर्दि प्रमेह कुष्ठ तथाक्षय रोगका नाशक होताहै ॥२७॥

अथ दवन् पापरा ॥

पर्पटोवरतिक्तश्चस्मृतःपर्पटकश्चसः । कथितःपांशुपर्य्यायस्तथाकवचनामकः ॥ पर्प टोहन्तिपित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् । संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहनुद्वातलोलघुः॥ २८ ॥

पित्त पापडेके नाम और गुण ॥

परपट वरातिक्त पर्पटक पांशु और कवच यह पित्त पापडेके नामहैं पित्तपापड़ा पित्त रक्तदोष भ्रम तृषा कफ ज्वर तथा दाहका नाशक ग्राही शीतल तिक्त बादी और हलका होताहै ॥ २८ ॥

अथ निम्बः ॥

निम्बःस्यात्पिचुमर्दश्चपिचुमन्दश्चतिक्तकः।अरिष्टःपारिभद्रश्चहिंगुनिर्य्यासइत्यपि निम्बः शीतोलघुर्ग्राहीकटुपाकोग्निवातनुत् । अहृद्यःश्रमतृट्कासज्वरारुचिकृमिव्रणुत् ॥ व्रणपित्तकफछर्दिकुष्ठहल्लासमेहनुत्। निम्बपत्रंस्मृतंनेत्र्यंकृमिपित्तविषप्रणुत् ॥ वातलंकटुपाकञ्चसर्व्वारोचककुष्ठनुत् । निम्बफलंरसेतिक्तंपाकेतुकटुभेदनम् ॥ स्निग्धंलघूष्णंकुष्ठघ्नंगुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ॥ २९ ॥

नींबके नामऔर गुण ॥

पिचुमर्द पिचुमन्द तिक्तक अरिष्टवारिभद्र और हिंगु निर्यास यहनींबकेनामहैं नींब शीतल हलका ग्राहीपाकमेंकटु हृदयको अप्रिय और श्रम तृषा खांसी ज्वर अरुचि कृमि घाव पित्त कफ छर्दि कुष्ठ मतली अग्नि बात तथा प्रमेहका नाशक होताहै नींबके पत्ते नेत्रोंको हित बादी पाकमें कटुऔर कृमि पित्त विष सबप्रकारकी अरुचि तथा कुष्ठके नाशकहोतेहैं नींबकी निंबौरी रसमें तिक्त पाकमें कटु भेदक स्निग्ध हलकी उष्ण और कुष्ठ गुल्म ववासीर कृमि तथा प्रमेहकी नाशकहोतीहै ॥ २८ ॥

अथ वकाइन ॥

महानिम्बःस्मृतोद्रेकारम्यकोविषमुष्टिकाः । केशामुष्टिनिम्बकश्चकार्मुकोजीवइत्यपि ॥ महानिम्बोहिमोरूक्षस्तिक्तोग्राहीकषायकः । कफपित्तभ्रमच्छर्दिकुष्ठहल्लासरक्तजित् ॥ प्रमेहश्वासगुल्मार्शोमूषिकाविषनाशनः ॥ ३० ॥

बकायन के नाम और गुण ॥

महानिंब, अद्रेका, रम्यक,विषमुष्टिक, केश मुष्टि, निंबक, कार्मुक और जीव, यह बकायन के नाम हैं बकायन, शीतल, रूखी, तिक्त, ग्राही, कषाय और कफ, पित्त, भ्रम, छर्दि, कुष्ठ, मतली, रक्तदोष, प्रमेह, श्वास, गुल्म, बवासीर तथा मूसेके बिषकी नाशक होती है, ॥ ३० ॥

अथ फरहद ॥

पारिभद्रोनिम्बतरुर्म्मन्दारःपारिजातकः । पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेदःकृमिप्रणुत् ॥ पत्रंचपित्तरोगघ्नंकर्णव्याधिविनाशनम् ॥ ३१ ॥

जलनींब के नाम और गुण ॥

पारिभद्र, निंबतरु,मन्दार, और पारिजातक यह जलनींबके नामहैं जलनींब,बात कफ सूजन मेह और कृमिनाशक होताहै उसके पत्ते पित्तके रोग और कर्णके रोगके नाशक होतेहैं ॥३१ ॥

अथ कचनारः ॥

काञ्चनारःकाञ्चनकोगण्डारिःशोणपुष्पकः। (अथकचनारभेदः ।) कोविदारश्च मरिकःकुद्दालोयुगपत्रकः । कुण्डलीताम्रपुष्पश्चस्मन्तकःस्वल्पकेशरी ॥ काञ्चनारोहि

मोग्रहीतुवरश्लेष्मपित्तनुत् । कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः ॥ कोविदारोऽपितद्व त्स्यात्तयोःपुष्पंलघुस्मृतम् । रूक्षंसंग्राहिपित्तास्रप्रदरक्षयकासनुत् ॥ ३२ ॥

कचनारके नाम और गुण ॥

कांचनारि,कांचनक,गंडारि, और शोणपुष्पक यह कचनारके नामहैं और दूसरे प्रकारके कचनारको कोबिदार, मरिक, कुद्दाल, युगपत्रक, कुंडली, ताम्र पुष्प, स्मन्तक, और स्वल्प केशरी कहते हैं कचनार. शीतल, ग्राही, कषाय, और कफ, पित्त, कृमि, कुष्ठ, गुदभ्रंश, गण्डमाला, तथा घावकी नाशक होतीहै कोबिदार, मेंभी कचनारके समान गुण होतेहैं इनदोनोंके पुष्प हलके, रूखे, ग्राही, और पित्त रक्तदोष, प्रदर, क्षय, तथाखांसीके नाशक होतेहैं ॥ ३२ ॥

अथ सहिञ्जनश्यामःश्वेतरक्तश्च ॥

शोभाञ्जनःशिग्रुतीक्ष्णोगन्धकाक्षीवमोचकः।तद्बीजंश्वेतमरिचंमधुशिग्रुःसलोहितः॥ शिग्रुःकटुःकटुःपाकेतीक्ष्णोष्णोमधुरोलघुः । दीपनोरोचनोरूक्षःक्षारस्तिक्तोविदाहकृत् ॥ संग्राहीशुक्रलोहद्योपित्तरक्तप्रकोपनः । चक्षुष्यःकफवातघ्नोविद्रधिश्वयथुकृमीन् ॥ मेदोपचीविषप्लीहगुल्मगण्डव्रणानुहरेत् । श्वेतःप्रोक्तगुणोज्ञेयोविशेषाद्दाहकृद्भवेत् ॥ प्लीहानंविद्रधिंहन्तिव्रणघ्नःपित्तरक्तहृत् । मधुशिग्रुःप्रोक्तगुणोविशेषाद्दीपनःसरः ॥ शिग्रुवल्कलपत्राणांस्वरसःपरमार्त्तिहृत् । चक्षुष्यंशिग्रुजंबीजंतीक्ष्णोष्णंविषनाशनम् ॥ अक्षुष्यंकफवातघ्नंतन्नस्येनशिरोर्त्तिनुत् ॥ ३३ ॥

श्वेतश्याम और लाल सहजनके नामऔर गुण ॥

शोभांजन, शिग्रु.तीक्ष्ण, गन्धक, अक्षीव मोचक यह सहंजनके नामहैं सहंजनके बीजको श्वेतमिर्च कहतेहैं और लाल सहंजनको मधुशिग्रु कहते हैं सहंजन, कटु, पाकमेंकटु, तीक्ष्ण उष्ण, मधुर, हलका, दीपन, रुचिकारक, रूखा, क्षार, तिक्त, विदाही; ग्राही, वीर्यवर्द्धक, हृदयकोहित, रक्तपित्तके कोपका करनेवाला नेत्रहित और कफ, बात, विद्रधि, सूजन, कृमि, मेध, अपची, बिष, प्लीहा, गुल्म, गलगंड तथाघावका नाशक होताहै और श्वेत सहंजनमें भी यहीगुणहैं और विशेष करके दाहकारी प्लीहा, विद्रधि. घाव, पित्त, तथा रक्त दोषका नाशक होताहै और लाल सहंजन में भी यहीगुणहोतेहैं यह विशेष करके दीपन और सारक होताहै सहंजन के बल्कल और पत्तों कारस पीडाका अत्यन्त नाशक होताहै सहंजनके बीज नेत्रोंकोहित तीष्ण, उष्ण बिष नाशक बीर्यको अहित और कफ तथा बायुनाशक होतेहैं इनकी हुलाससे शिरके रोग नष्ट होतेहैं॥ ३३ ॥

अथ श्वेतपुष्पानीलपुष्पाअपराजिता ॥

आस्फोतागिरिकर्णीस्याद्विष्णुक्रान्तापराजिता । अपराजितेकटुमेध्येशीतेकण्ठ्येसुदृष्टिदे ॥ कुष्ठमूत्रत्रिदोषामशोथव्रणविषापहे। कषायेकटुकेपाकेतिक्तेचस्मृतिबुद्धिदे ३४॥

श्वेत और नीले पुष्पकी बिष्णुक्रान्ता के नाम और गुण ॥

आस्फोता,गिरिकर्णी,बिष्णुक्रान्ता,औरअपराजिता यह विष्णुक्रान्ताके नामहैं दोनोंप्रकारकी विष्णुक्रान्ता, कटु,मेधाकोहित,शीतल, कंठकोहित, सुन्दरदृष्टि देनेवाली कषाय, पाकमेंकटु तिक्त, स्मृति तथा बुद्धिदेनेवाली और कुष्ठ मूत्रदोष, त्रिदोष आम सूजन घाव तथा विषकी नाशक होती है ॥ ३४॥

अथ मेउडीसम्भालू । सेन्दुवारइतिच ॥

सिन्दुवारःश्वेतपुष्पःसिन्दुकःसिन्दुवारकः।नीलपुष्पीतुनिर्गुण्डीशेफालीसुवहाचसा॥ सिन्दुकःस्मृतिदस्तिक्तःकषायःकटुकोलघुः। केश्योनेत्रहितोहन्तिशूलशोथामवातान् ॥ कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मज्वरान्नीलापितद्विधा। सिन्दुवारदलंजन्तुवातश्लेष्महरंलघु॥३५॥

संभालूके नाम और गुण ॥

सिन्धुवार, श्वेतपुष्प सिन्दुक और सिन्दुवारक यह संभालूके नामहैं नीले संभालूको नील पुष्पी निर्गुण्डी शेफाली और सुवहाकहतेहैं संभालू स्मृतिदायक तिक्तकषायकटु हलकाकेश तथानेत्रों कोहित और शूल सूजन आमवात कृमि कुष्ठ अरुचि कफ तथा ज्वर नाशक होताहै नीला संभालू भीइसी के समान गुणवाला होताहै संभालू के पत्ते हलके और कृमि वातके नाशक होतेहैं ॥ ३५ ॥

अथ कोरैया ॥

कुटजःकूटजःकीटीवत्सकोगिरिमल्लिका । कालिङ्गःशक्रशाखीचमल्लिकापुष्पइत्यपि ॥ इन्द्रोयवफलःप्रोक्तोवृक्षकःपाण्डुरद्रुमः । कुटजःकटुकोरूक्षोदीपनःस्तुवरोहिमः ॥ अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ॥ ३६ ॥

कुरैयाके नाम और गुण ॥

कुटज, कूटज, कौट, वत्सक, गिरिमल्लिका, कालिंग, शक्रशाखी, मल्लिकापुष्प, इन्द्र, यव फल, वृक्षक, और पाण्डुरद्रुम, यह कुरैयाके नाम हैं, कुरैया, कटु रूखी, दीपन, कषाय, शीतल और बवासीर, अतीसार, पित्त, रक्त, कफ, तृषा, आम, तथा कुष्ठ नाशक होती है ॥ ३६ ॥

अथकण्टकरंजाकरञ्जघोराकरञ्ज ॥

करञ्जोनक्तमालश्चकरञ्जश्चिरविल्वकः । घृतपूर्णकरञ्जोऽन्यःप्रकीर्य्यःपूतिकोऽपि च ॥ सचोक्तःपूतिकरञ्जःसोमवल्कश्चसस्मृतः । करञ्जःकटुकस्तीक्ष्णोवीर्य्योष्णोयोनि दोषहृत् ॥ कुष्ठोदावर्त्तगुल्मार्शोव्रणकृमिकफापहः । तत्पत्रंकफवातार्शःकृमिशोथहरंपरम् ॥ भेदनंकटुकंपाकेवीर्य्योष्णंपित्तलंलघु । तत्फलंकफवातघ्नंमेहार्शःकृमिकुष्ठजित् ॥ घृतपूर्णकरञ्जोऽपिकरञ्जसदृशोगुणैः ॥ ३७ ॥

करंजुआके नाम और गुण ॥

करंजु, नक्तमाल, करज और चिरविल्वक, यह करंजुएके नाम हैं और दूसरे प्रकारके करंजुएको घृतपूर्ण प्रकीर्य, पूतिका, पूतिकरंज और सोमवल्क कहते हैं, करंजुआ,कटु, तीक्ष्ण, वीर्यमें उष्ण और योनिके दोष, कुष्ठ, उदावर्त्त, गुल्म, बवासीर, घाव, कृमि, तथा कफ नाशक होताहै, करंजुएके पत्ते, कफ, बात, बवासीर, कृमि तथा सूजन के नाशकरने में अत्यन्त श्रेष्ठ भेदक पाक में कटु वीर्य में उष्ण, पित्तवर्द्धक और हलके होते हैं और करंजुए के फल , कफ, वात, प्रमेह, बवासीर कृमि, तथा कुष्ठ नाशक होते हैं, दूसरे प्रकारके करंजुए में भी इसी प्रकारके गुण होते हैं ॥ ३७ ॥

अथ अरारि ॥

उदकीर्य्यस्तृतीयोऽन्यःषड्ग्रन्थाहस्तिवारुणी । मर्कटीवायसीचापिकरञ्जीकरभ

ञ्जिका॥ करञ्जीस्तम्भनीतिक्तातुवराकटुपाकिनी। वीर्य्योष्णवामिपित्तार्शःकृमिकुष्ठप्रमेह जित्॥ ३८॥

डार करंज के नाम और गुण॥

उदकीर्य, षड्ग्रंथा, हस्तिवारुणी, मर्कटी, वायसी, करंजी, और करभंजिका, यह डारकरंज के नाम हैं, डारकरंज, स्तंभन, तिक्त, कषाय, पाक में कटु, उष्ण, और छर्दि, पित्त बवासीर, कृमि, कुष्ठ, तथा प्रमेह नाशक होताहै॥ ३८॥

अथश्वेतरक्तगुञ्जा॥

श्वेतारक्तोच्चटाप्रोक्ताकृष्णलाचापिसास्मृता। रक्तासाकाकचिञ्चीस्यात्काकानन्ताच रक्तिका॥ काकादनीकाकपीलुःसास्मृताकाकवल्लरी। गुञ्जाद्वयन्तुकेश्यंश्यात्वातपित्त ज्वरापहम्॥ मुखशोषभ्रमश्वासतृष्णामदविनाशनम्। नेत्रामयहरंतृष्ण्यंवल्यंकण्डूव्रणं हरेत्॥ कृमीन्द्रलुप्तकुष्ठानिरक्ताचधवलापिच॥ ३९॥

श्वेत और लाल घोंघची के नाम गुण॥

उच्चटा और कृष्णला, यह श्वेत घोंघची के नाम हैं और लाल घोंघची को काकचिंची, काकानन्ता, रक्तिका, काकादनी, काकपील और अंगारवल्लरी कहते हैं, यह दोनों प्रकारकी घोंघची केशोंकोहित, वीर्य बर्द्धक, बलकारक, और वात, पित्त, ज्वर, मुखका सूखना, घाव, श्वास, तृषा, उन्मत्तता, नेत्ररोग, खुजली, घाव, कृमि, गंजापन, तथा कुष्ठकी नाशक होती हैं॥ ३९॥

अथ कपिकच्छु॥

कपिकच्छुरात्मगुप्ता वृष्याप्रोक्ताचमर्कटी। अजराकण्डुराव्यंगा दुःस्पर्शाप्रावृषायणी॥ लांगलीशूकसिम्बीच सैवप्रोक्तामहर्षिभिः। कपिकच्छुर्भृशंवृष्या मधुराबृंहणीगुरुः॥ तिक्तावातहरीबल्या कफपित्तास्रनाशिनी। तद्बीजंवातशमनं स्मृतंवाजीकरं परम्॥ ४०॥

कवांच के नाम और गुण॥

कपिकच्छू, आत्मगुप्ता, ऋष्यप्रोक्ता, मर्कटी, अजरा, कंडुरा, अव्यंगा, दुस्पर्शा, प्रावृषायणी, लांगली, और शूकशिंबी यह कवांच के नाम हैं, कवांच अत्यन्त वीर्यबर्द्धक, मधुर, पोषक, भारी, बलकारक, तिक्त, और कफ, पित्त, तथा रक्त दोष नाशक होताहै, कवांचका बीज, बात नाशक और अत्यन्त वीर्यवर्धक होता है॥ ४०॥

अथ रोहिणी॥

मांसरोहिण्यतिरुहा वृत्तीचर्मकरीकृशा। प्रहारवल्लीविकशा वीरवत्यपिकथ्यते॥ स्यान्मांसरोहिणी वृष्यासरादोषत्रयापहा॥ ४१॥

रोहिणी के नाम और गुण॥

मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकशा, कशा, प्रहारवल्ली, विकशा और वीरवती, यह मांसरोहिणीके नाम हैं, मांसरोहिणी, वीर्यवर्द्धना, सारक, और त्रिदोष नाशक होती है॥ ४१॥

अथ चिह्ल ॥

चिह्लकोवातनिर्हारो श्लेष्मघ्नोधातुपुष्टिकृत् । आग्नेयोविषवद्यस्य फलमत्स्यनिषूदनम् ॥ ४२ ॥

चील् के गुण ॥

चिल्हक, बात कफ नाशक, धातुपोषक, और अग्निगुण युक्त होता है, इसका फल विषके समान मछलियों का नाशक होता है ॥ ४२ ॥

अथ टङ्कारि ॥

टङ्कारिवातजित्तिक्ता श्लेष्मघ्नीदीपनीलघुः । शोथोदरव्यथाहन्त्री हितापीठविसर्पिणाम् ॥ ४३ ॥

टंकारी के गुण ॥

टंकारी, बातनाशक, तिक्त, दीपन, हलकी, सूजन तथा उदरकी व्यथा की नाशक और पीठ विसर्परोग बालोंको हितकारक होती है ॥ ४३ ॥

अथ वेतसः ॥

वेतसानम्बकःप्रोक्तो वाणीरोवञ्जुलस्तथा । अभ्रपुष्पश्चविदुलो रथशीतश्चकीर्त्तितः ॥ वेतसःशीतलोदाह शोथार्शोयोनिरुक्प्रणुत् । हन्तिविसर्पकच्छास्र पित्ताश्मारक फानिलान् ॥ ४४ ॥

वेत के नाम और गुण ॥

वेतस, नम्बक, वानीर, वजुल, अभ्रपुष्प, विदुल, रथ, और शीत, यह वेतके नाम हैं, वेंत, शीतल और दाह, सूजन, ववासीर योनिरोग, विसर्प मूत्रकृच्छ्र, रक्त पित्त, पथरी, कफ तथा वात नाशक होता है ॥ ४४ ॥

अथ जलवेतसः ॥

निकुञ्चकःपरिव्याधोनादेयोजलवेतसः । जलजोवेतसःशीतःकुष्ठहृद्वातकोपन॥४५॥

जलवेतके नाम और गुण ॥

निकुंचक, परिव्याध नादेय और जलवेतस, यह जलवेत के नामहैं जलवेत, शीतल कुष्ठ नाशक और वायुका कोप करनेवाला होता है ॥ ४५ ॥

अथ इज्जलसमुद्रफल इतिलोके ॥

इज्जलोहिज्जलश्चापि निचुलश्चाम्बुजस्तथा । जलवेतसवद्वेद्यो हिज्जलोऽयंविषापहः ॥ ४६ ॥

समुद्रफलके नाम और गुण ॥

इज्जल, हिज्जल, निचुल और अम्बुज, यह समुद्रफल के नाम हैं समुद्रफल, जलवेत के समान गुणवाला और विषनाशक होताहै ॥ ४६ ॥

अथ ढेरा ॥

अङ्कोटोदीर्घकीलःस्या दङ्कोलश्चनिकोचकः । अङ्कोटकःकटुस्तीक्ष्णःस्निग्धोष्णस्तु

वरोलघुः ॥ रेचनःकृमिशूलाम शोफग्रहविषापहः । विसर्पकफपित्तास्र मूषकाहिविषाप हः ॥ ततूफलंशीतलंस्वादु श्लेष्मघ्नंबृंहणंगुरु । बल्यंविरेचनंवात पित्तदाहक्षयास्र जित् ॥ ४७ ॥

पिस्ते के नाम और गुण ॥

अंकोट, दीर्घकील, अंकोट और निकोचक, यह पिस्ते के नामहैं पिस्तेकावृक्ष,कटु, तीक्ष्ण, स्निग्ध उष्ण कषाय, हलका, दस्तावर और कृमि, शूल, आम, सूजन ग्रहदोष, बिष, बिसर्प, कफ, पित्त रक्त दोष, मूसेका बिष तथा सर्पके बिषका नाशक होताहै इसका फल, शीतल, मधुर, पोषक, भारी, बल कारक, दस्तावर और कफ बात पित्त, दाह क्षयतथा रक्तदोषका नाशक होताहै ॥ ४७ ॥

अथ वरिआर सहदेवी ककहिआ गुलसकरी । इति बलाचतुष्टयम् ॥

वलावाट्यालिकावाट्या सैववाट्यालकाऽपिच । महाबलापीतपुष्पा सहदेवीचसास्मृ ता ॥ ततोऽन्यातिबलाऋष्य प्रोक्ताकङ्कतिकाचसा । गांगेरुकीनागबला ह्येषाह्रस्वाग वेधुका ॥ बलाचतुष्टयंशीतं मधुरंबलकान्तिकृत् । स्निग्धंग्राहिसमीरास्रपित्तास्रक्षतना शनम् ॥ बलामूलस्त्वचश्चूर्णं पीतंसक्षीरशर्करम् । मूत्रातिसारंहरति दृष्टमेतन्नसंशयः॥ हरेन्महाबलाकृच्छ्रं भवेद्धातानुलोमनी । हन्यादतिबलामेहं पयसासितयासमम् ॥४८॥

वरियारा सहदेई ककैह्या,गुलशकरी यहबलाचतुष्टयहै इसके नाम और गुण ॥

बला, बाट्यालिका, बाट्या, और बाट्यालक, यह वरियाराके नामहैं महाबला, पीतपुष्पा, और सह देवी, यह सहदेईकी के नाम हैं अतिबला ऋष्यप्रोक्ता और कंकतिका, यह ककैह्याके नामहैं गांगेरुकी, नागवला और ह्रस्वगवेधुका, यहगुलशकरी के नामहैं यह चारों,शीतल,मधुर,बलवर्द्धक, कान्तिकारक स्निग्ध,ग्राही और बात, रक्त पित्त, रक्तदोष तथा घावनाशक होती हैं बरयारेकी जड़कीछाल का चूर्ण शक्कर और दूधके साथ पीनेसे मूत्रातीसार नष्ट होताहै यह देखा गयाहै इसमें कुछ सन्देह नहींहै सहदेईका चूर्ण दूध शक्कर के साथ पीनेसे मूत्र कृच्छ्रका नाश होताहै बात अपने मार्गके अनुसार होजातीहै ककैह्या का चूर्ण दूध शक्कर के साथ पीने से प्रमेह नष्ट होताहै ॥ ४८ ॥

अथ लक्ष्मणा ॥

पुत्रकाकाररक्ताल्प विन्दुभिर्लाञ्छितासदा । लक्ष्मणापुत्रजननी वस्तगन्धाकृतिर्भवे त् ॥ कथितापुत्रदावश्यं लक्ष्मणामुनिपुंगवैः ॥ ४९ ॥

लक्ष्मणा के नाम और गुण ॥

इसमें बालक के समान लाल और छोटे बिंदुओं के चिह्न सदैव रहते हैं लक्ष्मणा, पुत्रजननी और वस्त गंधा कृति,यह लक्ष्मणाके नामहैं मुनिलोगोंने लक्ष्मणाको अवश्य पुत्र देनेवाली कहाहै ४९॥

स्वर्णवल्ली ॥

स्वर्णवल्लीरक्तफला काकायुःकाकवल्लरी । स्वर्णवल्लीशिरःपीड़ां त्रिदोषांन्हन्ति दुग्धदा ॥ ५० ॥

स्वर्णवल्लीके नाम और गुण ॥

स्वर्णबल्ली, रक्तफला, काकायु और काकवल्लरी यह स्वर्ण वल्लीके नामहैं स्वर्णवल्ली शिरके रोग तथा त्रिदोष नाशक होतीहै और दुग्ध उत्पन्न करतीहै॥ ५० ॥

अथ कपास ॥

कार्पासीतुण्डकेरीच समुद्रान्ताचकथ्यते । कार्पासकीलघुःकोष्णामधुरावातनाशिनी॥ तत्पत्राशंसमीरघ्नं रक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम् । तत्कर्णपीड़कानाद पूयास्रावविनाशनम्॥ तद्बीजंस्तन्यदंबृष्यं स्निग्धंकफकरंगुरु ॥ ५१ ॥

कपासके नाम और गुण ॥

कार्पासी, तुंडकेरी और समुद्रान्ता, यह कपास के नामहैं कपास हलका, कुछ उष्ण, मधुर और वायु नाशक होताहै, कपासके पत्ते, रक्ततथा मूत्रबर्द्धक और बात, कानकी कुसी, शब्द तथा पीपके बहने को रोकने वाले होतेहैं कपासके बीज दुग्ध वर्द्धक, वीर्य वर्द्धक, स्निग्ध, कफकारक और भारीहोतेहैं५१॥

अथबंश ॥

वंशस्त्वक्सारकर्मार त्वचिसारःतृणध्वजः । शतपर्वाशतफली वेणुमस्करतेजनाः॥ वंशःसरोहिमःस्वादुःकषायोवस्तिशोधनः । छेदनःकफपित्तघ्नः कुष्ठास्रव्रणशोथजित् ॥ तत्करीरःकटुःपाकेरसेरूक्षोगुरुःसरः । कषायःकफकृत्स्वादुर्विदाहीवातपित्तलः॥ तद्यवास्तु सरारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः । वातपित्तकराउष्णा बद्धमूत्राःकफापहाः ॥ ५२ ॥

बांसके नाम और गुण ॥

वंश, त्वक्सार, करमार, त्वचिसार, तृणध्वज, शतपर्व्वा, शतफली, वेणु, मस्कर और तेजना, यह बांसके नामहैं बांस, सारक, शीतल, मधुर, कषाय, मूत्राशय का शोधक, छेदक और कफ पित्त कुष्ठ व्रण तथा सूजनका नाशक होताहै बांसका अंकुर, पाकमें कटु, रसमेंकटु, रूखा, भारी, सारक कषाय, कफबर्द्धक, मधुर, विदाही और बात पित्तका नाशक होताहै बांसके जौ, सारक, रूखे, कषाय, पाकमें कटु, बादी, पित्तवर्द्धक, उष्ण, मूत्ररोधक और कफ नाशक होतेहैं ॥ ५२ ॥

अथनलः ॥

नलःपोटगलःशून्य मध्यश्चधमनस्तथा ॥ नलस्तुमधुरस्तिक्तः कषायःकफरक्तजित्॥ उष्णोहृद्वस्तियोन्यर्ति दाहपित्तविसर्पहृत् ॥ ५३ ॥

नरकुलके नाम और गुण ॥

नल, पोटगल, शून्यमध्य और धमन, यह नरकुलके नामहैं, नरकुल, मधुर, तिक्त, कषाय, उष्ण और कफ, रक्तदोष, हृदयरोग, मूत्राशयके दोष, योनिके दोष, दाह, पित्त, तथावीसर्प नाशक होता है ॥ ५३ ॥

अथरामशर । शरपतइतिवा ॥

भद्रमुञ्जःशरोबाणः तेजनश्चक्षुवेष्टनः । (अथमुञ्जः) मुञ्जोमुञ्जातकोबाणः स्थूल दर्भःसुमेखलः ॥ मुञ्जद्वयन्तुमधुरं तुवरंशिशिरंतथा । दाहतृष्णाविसर्प्पाममूत्रकृच्छ्रा क्षिरोगजित् । दोषत्रयहरंबृष्यं मेखलासूपयुज्यते ॥ ५४ ॥

सर्पत और मूंजके नाम और गुण ॥

भद्रमुंज, शर, बान, तेजन और इक्षुवेष्टन, यह सर्पतके नामहैं मुंज, मुंजातक, वान, स्थूलदर्भ और सुमेखल यह मूंजके नामहैं, यह दोनों मधुर,कषाय, शीतल, वीर्य वर्द्धक और दाह, तृषा, विसर्प, आम, मूत्रकृच्छ्र,नेत्ररोग तथा त्रिदोष नाशक होते हैं इनका मेखला बनाने आदि में काम पड़ता है ॥ ५४ ॥

अथकाशः ॥

काशःकाशेक्षुरुद्दिष्टः सस्यादिक्षुसरस्तथा । इक्ष्वालिकेक्षुगन्धाच तथापोटगलस्मृतः॥ काशःस्यान्मधुरस्तिक्तः स्वादुपाकोहिमःसरः । मूत्रकृच्छ्राश्मदाहास्र क्षयपित्तजरोग जित् ॥ ५५ ॥

काशके नाम और गुण ॥

काश, काशेक्षु, इक्षुरस, इक्ष्वालिका, इक्षुगंधा और पोटगल, गल, यह काशके नामहैं काशमधुर तिक्त, पाक में मधुर, शीतल, सारक और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, रक्तदोष, क्षयतथा पित्तरोग की नाशक होतीहै ॥ ५५ ॥

गन्धपटेरइतिच ॥

गुन्द्रःपटेरकोरुच्छः शृङ्गवेराभमूलकः ॥ गुन्द्रःकषायोमधुरः शिशिरःपित्तरक्तजित् ॥ स्तन्यःशुक्रकरोमूत्र शोधनोमूत्रकृच्छ्रहृत् ॥ ५६ ॥

गन्धपटेरके नाम और गुण ॥

गुन्द्र, पटेरक, उरच्छ, शृंगवेराह्व और मूलक, यह गन्धपटेरकेनामहैं, गन्धपटेर, कषाय, मधुर शीतल, पित्तरक्त नाशक, दुग्ध, वीर्य, रज तथा मूत्रशोधक और मूत्रकृच्छ्र नाशक होताहै ॥ ५६ ॥

मोथीतृणविशेषः ॥

एरकागुन्द्रमूलाचशिविर्गुन्द्राशरीतिच ॥ एरकाशिशिराहृष्या चक्षुष्यावातकोपिनी॥ मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाह पित्तशोणितनाशिनी ॥ ५७ ॥

मोथीतृणविशेषके नाम और गुण ॥

एरका, गुन्द्रमूला, शिवि,गुन्द्रा और शरी, यह मोथीके नामहें, मोथी शीतल, वीर्यवर्द्धक, नेत्रहित वादी और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, पित्त तथारक्त दोष नाशक होतीहै ॥ ५७ ॥

अथकुश ॥

कुशोदर्भस्तथावर्हिः सूच्यग्रोयज्ञभूषणः ॥ (अथडाभ) ततोऽन्योदीर्घपत्रः स्यात् क्षुरपत्रस्तथैवच ॥ दर्भद्वयंत्रिदोषघ्नं मधुरंतुवरंहिमम् । मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णावस्तिरुक् प्रदरास्रजित् ॥ ५८ ॥

कुशके नाम और गुण ॥

कुश, दर्भ, वर्हि, सूच्यग्र और यज्ञभूषण, यह कुशके नामहैं और भी एक प्रकारका कुश होताहै उसको दीर्घपत्र और क्षुरपत्र कहतेहैं दोनों प्रकारके कुश त्रिदोष नाशक, मधुर, कषाय,शीतल और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, मूत्राशयके रोग, प्रदरतथा रक्तदोष नाशक होतेहैं ॥ ५८ ॥

अथकत्तृणम्। रोहिससोधिआइतिच ॥

कत्तृणंरोहिषंदेव जग्धंसौगन्धिकंतथा। भूतीकंध्यामपौरञ्च श्यामकंधूमगन्धिकम् ॥ रोहीषंतुवरंतिक्तं कटुपाकंव्यपोहति। हृत्कण्ठव्याधिपित्तास्त्रशूलकासकफज्वरान् ॥ ५९ ॥

कत्तृण (रोहिपसोधियानामसे प्रसिद्ध एक प्रकारकी पीली खस) के नाम और गुण ॥

कत्तृण, रोहिष, देवजग्ध, सौगन्धिक, भूतिक, ध्याम, पौर, श्यामक और धूम गन्धिक यह कत्तृण के नामहैं कत्तृण कषाय, तिक्त, पाकमें कटु और हृदयके रोग, कण्ठरोग, पित्त, रक्तदोप, शूल, खांसी, कफ तथा ज्वरनाशक होताहै ॥ ५९ ॥

अथभूस्तृणम् ॥

भूगुह्यबीजन्तुभूतीकंसुगन्धंजम्बुकप्रियम्॥भूस्तृणंतुभवेच्छत्रा मालातृणकमित्यपि ॥ स्तृणंकटुकंतिक्तं तीक्ष्णोष्णंरेचनंलघु ॥ विदाहिदीपनंरूक्ष मनेत्र्यंमुखशोधनम्। अवृष्यंवहुविट्कञ्च पित्तरक्तप्रदूषणम् ॥ ६० ॥

भूस्तृणके नाम और गुण ॥

गुह्यबीज, भूतीक, सुगन्ध, जंबुकप्रिय, भूस्तृण, छत्रा और मालातृण-यह भूस्तृणके नामहैं भूस्तृण कटु, तिक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, दस्तावर, हलका, विदाही, दीपन, रूखा, नेत्रोंको अहित, मुखशोधक, वीर्यको अहित मलवर्द्धक और पित्त तथा रक्तका दूषित करनेवाला होताहै ॥ ६० ॥

अथनीलदूर्वा ॥

नीलदूर्वारुहानन्ता भार्गवीशतपर्विका। शष्यंसहस्रवीर्य्याच शतवल्लीचकीर्तिता ॥ नीलदूर्वाहिमातिक्ता मधुरातुवराहरा। कफपित्तास्रवीसर्प तृष्णादाहत्वगामयान् ॥६१॥

नीलीदूबके नाम और गुण ॥

नीलदूर्वा, रुहा, अनन्ता, भार्गवी, शतपार्विका, शष्य, सहस्रवीर्या और शतवल्ली, यह नीलीदूबके नामहैं नीलीदूब, शीतल, तिक्त, मधुर, कषाय और कफ पित्त रक्तदोप, वीसर्प, तृषा, दाह और त्वचा के रोगोंकी नाशक होतीहै ॥ ६१ ॥

अथश्वेतदूर्व्वा ॥

दूर्व्वाशुक्लातुगोलोमी शतवीर्य्याचकथ्यते। श्वेतादूर्व्वाकषायास्यात् स्वाद्वीव्रण्याच जीवनी। तिक्ताहिमाविसर्पास्रतृट्पित्तकफदाहहृत् ॥ ६२ ॥

श्वेतदूर्वाके नाम और गुण ॥

गोलोमी और शतवीर्या, यह श्वेतदूर्वाके नामहैं श्वेतदूर्वा, कषाय, मधुर, घावमें हित, जीवनरूप तिक्त, शीतल और वीसर्प, रक्तदोप, तृषा, पित्त कफ तथा दाह नाशक होतीहै ॥ ६२ ॥

अथगाण्डरिदूर्विपाचइतिच ॥

गण्डदूर्व्वातुगण्डालीमत्स्याक्षीशकुलाक्षकः। गण्डदूर्व्वाहिमालोहद्राविणीग्राहिणी लघुः ॥ तिक्ताकषायामधुरा वातकृत्कटुपाकिनी। दाहतृष्णाव्रणासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा ॥ ६३ ॥

गांडरके नाम और गुण ॥

गंडाली, गंडदूर्वा, मत्स्याक्षी और शकुलाक्षक, यह गांडरके नामहैं, गांडर, शीतल लोहेकी गलानेवाली, ग्राही, हलकी, तिक्त, कषाय, मधुर, वादी, पाकमेंकटु, दाह, तृषा, कफ, रक्त, पित्त तथा ज्वर नाशक होती है ॥ ६३ ॥

अथविदारीकन्दः।क्षीरविदारीगेण्ठइतिलोके ॥

वाराहीकन्दएवान्येश्चर्मकारालुकोमतः । अनूपसम्भवेदेशेवाराहइवलोमवान् ॥ विदारीस्वादुकन्दाचसातुक्रोष्ट्रीसितास्मृता । इक्षुगन्धाक्षीरवल्लीक्षीरशुक्लापयस्विनी ॥ वाराहवदनागृष्टिर्व्वदरेत्यपिकथ्यते । विदारीमधुरास्निग्धाबृंहणीस्तन्यशुक्रदा ॥ शीता स्वर्य्यामूत्रलाचजीवनीबलवर्णदा । गुरुःपित्तास्रपवनदाहा न्हन्तिरसायनी ॥ ६४ ॥

विदारी कन्दके नाम और गुण ॥

इसको पश्चिम में गृष्टि कहते हैं और इसीको कोई चर्मकारालुकभी कहते हैं यह अनूपदेश में वाराहके समान रोमोंसे युक्त उत्पन्न होताहै, बिदारी, स्वादु कंदक्रोष्ट्री, शिता, इक्षुगन्धा, क्षीरवल्ली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, बाराहबदना, गृष्टि और बदरा यह विदारीकन्द के नामहैं, विदारीकन्द, मधुर, स्निग्ध, धातुबर्द्धक, दुग्धवर्द्धक, बीर्यबर्द्धक, शीतल, स्वरकोहित, मूत्रकारक, जीवनरूप, बलकारक, वर्णकोहित, भारी, रसायन और पित्त रक्त दोष वात तथा दाहनाशक होता है ॥ ६४ ॥

अथमुशलीकन्दम् ॥

तालमूलीतुविद्वद्भिर्मुशलीपरिकीर्तिता । मुशलीमधुराबृष्यावीर्य्योष्णाबृंहणीगुरुः ॥ तिक्तारसायनीहन्तिगुदजान्यनिलन्तथा ॥ ६५ ॥

मुसली के नाम और गुण ॥

तालमूली को पंडित लोग मुसली कहते हैं, मुसली, मधुर, बीर्यबर्द्धक, बीर्यमें उष्ण, धातुबर्द्धक, भारी, रसायन, तिक्त और गुदाके रोग तथा वातनाशक होतीहै ॥ ६५ ॥

अथशतावरीमहाशतावरी ॥

शतावरीबहुसुताभीरुरिन्दीवरीवरी । नारायणीशतपदीशतवीर्य्याचपीवरी ॥ महा शतावरीचान्याशतमूल्यर्द्धकण्टिका । सहस्रवीर्य्याहेतुश्चऋष्याप्रोक्तामहोदरी ॥ शता वरीगुरुःशीतातिक्तास्वाद्वीरसायनी । मेधाग्निपुष्टिदास्निग्धानेत्र्यागुल्मातिसारजित् ॥ शुक्रस्तन्यकरीबल्यावातपित्तास्रशोथजित् । महाशतावरीमेध्याहृद्याबृष्यारसायनी ॥ शीतवीर्य्यानिहन्त्यर्शोग्रहणीनयनामयान् ॥ ६६ ॥

शतावरी महाशतावरीके नाम और गुण ॥

शतवरी, बहुसुता, भीरु, इन्दीवरी, नारायणी, शतपदी, शतवीर्या और पीवरी, यह शतावरके नाम हैं शतमूली, अर्द्धकंटिका, सहस्र वीर्या, हेतु, ऋष्यप्रोक्ता और महोदरी, यह महाशतावरीके नाम हैं शतावर, भारी, शीतल, तिक्त, मधुर, रसायन, मेधा, अग्नि, तथा पुष्टिवर्द्धक, स्निग्ध, नेत्रहित, वीर्य वर्द्धक, दूग्धवर्द्धक बलकारक, और गुल्म, अतीसार, बात, पित्त, रक्तदोष, तथा सूजनकी नाशक होतीहै

महाशतावरी, मेधाकोहित, हृदयको प्रिय, वीर्यवर्द्धक, रसायन, शीतल, और बवासीर, ग्रहणी तथा नेत्ररोग नाशक होतीहै ॥ ६६ ॥

अथअसगन्धः ॥

गन्धान्तावाजिनामादिरश्वगन्धाहयाह्वया। वराहकर्णीवरदाबलदाकुष्ठगन्धिनी ॥ अश्वगन्धानिलश्लेष्माश्वित्रशोथक्षयापहा।बल्यारसायनीतिक्ताकषायोश्नातिशुक्रला ६७ ॥

असगंधके नाम और गुण

गन्धान्ता, बाजिनामा, अश्वगन्धा, हयाह्वया, वराहकर्णी, वरदा, बलदा, और कुष्ठ गन्धिनी, यह असगन्धके नामहैं असगन्ध,बात, कफ,श्वेत कुष्ठ, सूजन तथा क्षयरोगकी नाशक बलकारक, रसायन तिक्त,कषाय, उष्ण और अत्यन्त वीर्यवर्द्धक होतीहै ॥ ६७ ॥

अथपाठा ॥

पाठांवष्ठावष्टकीचप्राचीनापापचेलिका। एकष्ठीलारसाप्रोक्तापाठिकावरतिक्तिका ॥ पाठोष्णाकटुकातीक्ष्णावातश्लेष्महरीलघुः। हन्तिशूलज्वरछर्द्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः॥ दाहकण्डुविषश्वासकृमिगुल्मगरव्रणान् ॥ ६८ ॥

पाठा वा पाढ़र के नाम और गुण ॥

पाठा, अंवष्ठा, अवष्टकी, प्राचीना, पापचेलिका, एकष्ठीला, रसा, पाठिका और रसतिक्तिका यह पाठा वा पाढ़रके नामहैं पाठा उष्ण, कटु तीक्ष्ण, हलकी और बात, कफ, शूल, ज्वर, छर्दि, कुष्ठ, अतीसार, हृदयके रोग, दाह, खुजली, विष, श्वास, कृमि, गुल्म, गरदोष, तथा घाव नाशक होती है ॥ ६८ ॥

अथश्वेतपनिलर ॥

श्वेतात्रिवृताभण्डीस्यात्त्रिवृतात्रिपुटापिच । सर्व्वानुभूतिःसरलानिशोत्रारेचनीतिच ॥ श्वेतातृद्वेचिनीस्यात्स्वादुरुष्णासमीरहृत् । रूक्षापित्तज्वरश्लेष्म पित्तशोथोदरापहा ॥ ६९ ॥

श्वेतनिशोथके नाम और गुण ॥

श्वेता, त्रिवृता, भंडी, त्रिवृता, त्रिपुटा सर्वानुभूति, सरला, निशोत्रा और रेचनी यह सफेद निशोथके नामहैं सफेद निशोथ, दस्तावर, मधुर, उष्ण, रूखा और बात, पित्तज्वर, कफ, पित्त, सूजन तथा उदररोगका नाशक होताहै ॥ ६९ ॥

अथश्यामपनिलर ॥

त्रिवृत्श्यामार्द्धचन्द्राचपालिन्दीचसुषेणिका । मसूरविदलाकोलाकैषिकाकालमेषिका ॥ श्यामात्रिवृत्ततोहीनागुणातीव्रविरेचनी । मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिकण्ठोत्कर्षणकारिणी ॥ ७० ॥

काले निशोथके नाम और गुण ॥

त्रिवृत श्यामा अर्धचन्द्रा, पालिन्दी, सुषेणिका,मसूर विदला, काला, कैशिका और कालमेषिका

यह काले निशोथके नामहैं काला निशोथ, श्वेत निशोथकी अपेक्षा गुणों में न्यूनहै,विशेषता यहहै कि बहुत दस्तावर और मूर्च्छा, दाह, मद, भ्रान्ति तथा कण्ठकी उत्तमता करनेवालाहै ॥ ७० ॥

अथलघुदन्ती ॥

लघुदन्तीविशल्याचस्यादुदुम्बरपर्ण्यपि । तथैरण्डफलाशीघ्राश्येनघण्टाघुणप्रिया ॥ वाराहाङ्गीचकथितानिकुम्भश्चमकूलकः (अथवृहत्दन्तीएरण्डपत्रविटपा) द्रवन्तीसाव रीचित्राप्रत्यक्पर्ण्यौखुपर्ण्यपि ॥ चित्रापचित्रान्यग्रोधाप्रत्यक्च्छ्रेण्याखुकर्ण्यपि । दनता द्वयंसरम्पाकेरसेचकटुदीपनम् ॥ गुदांकुराश्मशूलार्शःकण्डूकुष्ठविदाहनुत् । तीक्ष्णोष्णंह न्तिपित्तास्रकफशोथोदरकृमीन्(अथलघुदन्तीफलम्)क्षुद्रदन्तीफलन्तुस्यान्मधुरंरसपा कयोः । शीतलंसृष्टविण्मूत्रंगरशोथकफापहम् ॥ ७१ ॥

छोटी दन्तीके नाम और गुण ॥

विशल्या, उदुम्बर पर्णी, एरंडफला, शीघ्रा,श्येनघंटा घुणप्रिया, वाराहांगी, निकुम्भ और मकूलक यह छोटी दन्तीके नामहैं बड़ी दन्ती, इसके पत्ते अरंडके पत्तोंके समान होतेहैं द्रवन्ती सम्बरी, वृषा चित्रा, उपचित्रा, न्यग्रोधी, प्रत्यक्श्रेणी और आखुपर्णी यह बडीदन्ती के नाम हैं यह दोनों दन्ती दस्तावर, रस तथा पाक में कटु, दीपन, तीक्ष्ण, उष्ण और गुदांकुर, पथरी, शूल, बवासीर खुजली कुष्ठ,विदाह, पित्त, रक्तदोष कफ, सूजन, उदर, तथा कृमि नाशक होती हैं छोटी दन्तीका फल रस तथा पाक में मधुर, शीतल, मलमूत्रका निकालने वाला और गरदोष, सूजन, तथा कफ नाशक होता है ॥ ७१ ॥

जयपालोदन्तिबीजंविख्यातन्तितिडीफलम् । जयपालोगुरुःस्निग्धोरेचिपित्तकफा पहः ॥ ७२ ॥

जमालगोटेके नाम और गुण ॥

जयपाल दन्तीबीज और तिंतिड़ी फल,यहजमालगोटेके नामहैं जमालगोटा,भारी,स्निग्धदस्ता-वर और पित्त तथा कफ नाशक होताहै ॥ ७२ ॥

इन्दारुणवड़ीइन्द्रकला ॥

ऐन्द्रीन्द्रवारुणीचित्रागवाक्षीचगवादिनी । वारुणीचपराप्युक्तासाविशालामहाफ ला ॥ श्वेतपुष्पामृगाक्षीचमृगैर्वारुमृगादनी । गवादिनीद्वयंतिक्तंपाकेकटुसरंलघु ॥ वी र्य्योष्णंकामलापित्तकफप्लीहोदरापहम् । श्वासकासापहंकुष्ठगुल्मग्रन्थिव्रणप्रणुत् ॥ प्रमेह मूढ़गर्भामगण्डामयविषापहम् ॥ ७३ ॥

दोनोंइन्द्रायणके नाम और गुण ॥

ऐन्द्री इन्द्रबारुणी चित्रा गवाक्षी गवादनी और बारुणी यहइन्द्रायन के नामहैं दूसरी इन्द्रायन को विशाला, महाफला, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगैर्वारु और मृगादना कहतेहैं दोनों इन्द्रायन तिक्त पाक में कटु दस्तावर हलकी उष्ण और कामला पित्त, कफ, प्लीहा, उदर, श्वास, खांसी, कुष्ट, गुल्म, ग्रन्थि घाव, प्रमेह, मूढ़गर्भ (बायुकेद्वारा टेढ़ाहोकर योनिमें आयाहुआ गर्भ) आम, गलगंड तथा बिष नाशक होती हैं ॥ ७३॥

अथनील ॥

नीलीतुनीलिनीतूलीकालदोलाचनीलिका । रञ्जनीश्रीफलीतुच्छाग्रामीणामधुपर्णिका ॥ क्लीतकाकालकेशीचनीलपुष्पाचसास्मृता । नीलिनीरोचिनीतिक्ताकेश्यामोहभ्रमापहा ॥ उष्णाहन्त्युदरप्लीहवातरक्तकफानिलान् । आमवातमुदावर्त्तम्मन्दंचविषमुद्भूतम् ॥ ७४ ॥

नीलके नाम और गुण ॥

नीली, नीलिनी, तूली, काला दोला, नीलिका, रंजनी, श्रीफली, तुच्छा, ग्रामीणा, मधुपर्णिका क्लीतका, कालकेशी और नीलपुष्पा यह नीलके नामहैं नीलदस्तावर, तिक्त, केशोंको हित, उष्ण और मोहभ्रम, उदर, प्लीहा, बात रक्त, कफ, बात, आम बात, उदावर्त्त, मद तथा विषका नाशक होता है ॥ ७४ ॥

अथशरफोका ॥

शरपुङ्खाप्लीहशत्रुर्नीलीवृक्षाकृतिश्चसः । शरपुङ्खोयकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहाः । तिक्तःकषायकासास्रश्वासःज्वरहरोलघुः ॥ ७५ ॥

सर्फोंकाके नाम और गुण ॥

शरपुंख प्लीहशत्रु और नीली वृक्षाकृति, यह शरफोंका के नामहैं सरफोंका,तिक्त, कषाय हलका और यकृत्प्लीहा, गुल्म, घाव, बिष खांसी, रक्तदोष, श्वास, तथा ज्वरनाशक होताहै ॥ ७५ ॥

अथयवासादुराला ॥

यासोयवासीदुःस्पर्शोधन्वयासःकुनाशकः । दुरालभादुरालम्भासमुद्रान्ताचरोदिनी॥ गान्धारीकच्छुरानन्ताकषायादुरभिग्रहा । यासःस्वादुःसरस्तिक्तःस्तुवरःशीतलोलघुः ॥ कफमेदोमदभ्रान्तिपित्तासृक्कुष्ठकासजित् । तृष्णाविसर्पवातास्रवमिज्वरहरःस्मृतः ॥ यवासस्यगुणैस्तुल्याबुधैरुक्तादुरालभा ॥ ७६ ॥

जवासा और दुरालभाके नाम गुण ॥

यास,यवास,दुष्पर्श, धन्वयास, कुनाशक, दुरालभा, दुरालंभा, समुद्रान्ता रोदनी, गान्धारी,कच्छुरा अनन्ता कषाया और दुरभिग्रहा, यह जवासेके नामहैंजवासा, मधुर, दस्तावर,तिक्त, कषाय शीतल हलका और कफ, मेद, मद, भ्रान्ति, पित्त, रक्तकुष्ठ, खांसी, तृषा वीसर्प, वातरक्त, छर्दि तथा ज्वर नाशक होताहै पण्डितलोग दुरालभाको भी जवासे के समान गुणवाली कहते हैं ॥ ७६ ॥

अथमुण्डी ॥

मुण्डीभिक्षुरपिप्रोक्ताश्रावणीचतपोधना । श्रवणाह्वामुण्डतिकातथाश्रवणशीर्षका ॥ महाश्रावणिकान्यातुसास्मृताभूकदम्बिका । कदम्बपुष्पिकाचस्यादव्यथातितपस्विनी ॥ मुण्डतिकाकटुःपाकेवीर्य्योष्णामधुरालघुः।मेध्यागण्डापचीकृच्छ्रकृमियोन्यर्त्तिपाण्डुनुत्॥ श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्त्तिहृत् । महामुण्डीचतत्तुल्यागुणैरुक्तामहर्षिभिः ७७॥

मुंडी और महामुंडीके नाम गुण ॥

मुंडी, भिक्षु, श्रावणी, तपोधना, श्रवणाह्या, मुंडितिका और श्रावण शीर्षका यहमुंडी के नाम

हैं, महामुंडी को महाश्रावणिका, भूकदम्बिका, कदम्ब पुष्पिका अन्यथा, और अति तपस्विनी कहतेहैं, मुंडी, पाकमें कटु, वीर्य में उष्ण, मधुर हलकी, मेधाको हित और गलगंड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, योनिरोग पांडुश्लीपद, अरुचि, मृगी, प्लीहा, मेद तथा गुदाकी व्याधिनाशक होती है महर्षिलोगोंनेमहामुंडी को भी मुंडी के समान कहाहै ॥ ७७ ॥

अथचिरचिरि ॥

अपामार्गस्तुशिखरीह्यधःशल्योमयूरकः । मर्कटोदुर्ग्रहाचापिकिणहीखरमञ्जरी ॥ अपामार्गःसरस्तीक्ष्णःदीपनस्तिक्तकःकटुः । पाचनोरोचनश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः ॥ निहन्तिहृद्रुजाध्मार्शःकण्डूशूलोदरापची ॥ ७८ ॥

लटजीराके नाम और गुण ॥

अपामार्ग शिखरी, अधश्शल्य मयूरक, मर्कटी,दुर्ग्रहा, किणिही और खरमंजरी, यह लट जीरे के नामहैं लटजीरा दस्तावर तीक्ष्ण, दीपन, तिक्त, कटु, पाचक, रुचिकारक और छर्दि, कफ मेद बात, हृदयके रोग, आध्मान, बवासीर, खुजली, शूल, उदर तथा अपचीका नाशक होताहै॥ ७८ ॥

अथरक्तचिरचिरा ॥

रक्तोन्योवशिरोवृत्तफलोधामार्गवोऽपिच। प्रत्यक्पर्णीकेशपर्णीकथिताकपिपिप्पली॥ अपामार्गोऽरुणोवातविष्टम्भीकफकृत्हिमः । रूक्षःपूर्वगुणैर्न्यूनःकथितोगुणवेदिभिः॥अपामार्गफलंस्वादुरसेपाकेचदुर्ज्जरम् । विष्टम्भिवातलंरूक्षंरक्तपित्तप्रसादनम् ॥ ७९ ॥

लाललटजीरेके नाम और गुण ॥

वशिर, वृत्तफल, धामार्गव प्रत्यक्पर्णी, केशपर्णी और कपि पिप्पली यह लाललटजीरे के नाम हैं, लाललटजीरावादी, विष्टंभी, कफ कारक, शीतल रूखा और श्वेतलटजीरेसे गुणोंमें कम होताहै यह गुणज्ञलोगोंने कहाहै लटजीरे के फल रस तथा पाकमें मधुर विलम्बसे पचने वाले विष्टंभी, बादी, रूखे और रक्त पित्तकरने वाले होतेहैं ॥ ७९ ॥

अथतालमखाना ॥

कोकिलाक्षस्तुकाकेक्षुरिक्षुरःक्षुरकःक्षुरः।भिक्षुःकाण्डेक्षुरप्युक्तःइक्षुगन्धेक्षुवालिका॥क्षुरकःशीतलोवृष्यःस्वाद्वम्लपित्तलस्तथा।तिक्तोवातामशोथाश्मतृष्णादृष्ट्यनिलास्रजित् ८०

तालमखाने के नाम गुण ॥

कोकिलाक्ष, काकेक्षु, इक्षुर,क्षुरक क्षुर, भिक्षु काण्डेक्ष, इक्षुगन्धा और इक्षुवालिका, यह तालमखानेके नामहैं, तालमखाना, शीतल, वीर्यबर्द्धक मधुर, अम्ल, तिक्त, पित्तबर्द्धक और आम वात सूजन, पथरी, तृषा, दृष्टि तथा बातरक्त का नाशक होताहै ॥ ८० ॥

अथहड़सङ्कारि ॥

ग्रन्थिमानस्थिसंहारीवज्रांगीवास्थिशृङ्खला । अस्थिसंहारकःप्रोक्तोवातश्लेष्महरोऽस्थियुक् ॥ उष्णःसरःकृमिघ्नश्चदुर्नामघ्नोऽक्षिरोगजित् । रूक्षःस्वादुर्लघुर्वृष्यःपाचनःपित्तलःस्मृतः ॥ काण्डत्वग्विरहितमस्थिशृङ्खलाया माषार्द्रद्विदलमकंचुकंतदर्द्धम् । सम्पिष्टंतदनुततस्तिलस्यतैलेसम्पक्वंवटकमतीववातहारि ॥ ८१ ॥

हारसिंगारके नाम और गुण ॥

ग्रंथिमान अस्थिसंहारी वज्रांगी और अस्थिखला यह हारसिंगारके नाम हैं हारसिंगार हड्डियोंका जोड़नेवाला उष्ण सारक रूखा मधुर हलका वीर्यवर्द्धक पाचक पित्तबर्द्धक और वातकफ कृमि बवासीर, तथा नेत्ररोगोंका नाशक होताहै हारसिंगार के बक्कलको निकालकर उस के आधे छिलेहुये चने आदिककी दालें एकमें पीसकर बनाये हुये बड़ेको तिलोंके तेलमें पकाकर सेवनकरने से अत्यन्त बातका नाशहोताहै ॥ ८१ ॥

अथघिउकुवारि ॥

कुमारीगृहकन्याचकन्याघृतकुमारिका। कुमारीभेदिनीशीतातिक्तानेत्र्यारसायनी॥ मधुराबृंहणीबल्याबृष्यावातविषप्रणुत् । गुल्मप्लीहयकृद्वृद्धिकफज्वरहरीहरेत् ॥ ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटपित्तरक्तत्वगामयान् ॥ ८२ ॥

घीग्वारके नाम और गुण ॥

कुमारी गृहकन्या कन्या और घृतकुमारिका यहघीग्वारके नाम हैं घीग्वार मेदक शीतल तिक्त नेत्रोंको हित रसायन मधुर धातुबर्द्धक बलकारी वीर्यबर्द्धक और वात बिष गुल्म प्लीहा यकृत् वृद्धि ज्वर ग्रंथि मंदाग्नि अग्निदग्ध विस्फोट रक्तपित्त और त्वचा के रोगोंका नाशकहोताहै ॥८२॥

अथश्वेतपुनर्नवा ॥

पुनर्नवाश्वेतमूलाशोथघ्नीदीर्घपत्रिका । कटुःकषायानुरसापाण्डुघ्नीदीपनीसरा ॥ शोफानिलगरश्लेष्महरीव्रणयोदरप्रणुत् ॥ ८३ ॥

श्वेतगदहपूरना के नाम गुण ॥

पुनर्नवा श्वेतमूला शोथघ्नी और दीर्घपत्रिका यहश्वेत गदहपूरना के नाम हैं श्वेतगदहपूरना कटु कुछ कषाय दीपन और पांडु सूजन वात गरदोष कफ घाव तथा उदररोग नाशक होती है८३॥

अथरक्तपुष्पापुनर्नवा ॥

पुनर्नवापररक्तारक्तपुष्पाशिलाटिका । शोथघ्नःक्षुद्रवर्षाभूवृषकेतुःकपिल्लकः ॥ पुनर्नवारुणातिक्ताकटुपाकाहिमालघुः । वातलाग्राहिणीश्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी ॥ ८४ ॥

लाल गदहपूरनाके नाम गुण ॥

रक्तपुष्पा शिलाटिका शोथघ्नी क्षुद्रवर्षाभू वृषकेतु और कठिल्लक यहलालगदह पूरनाके नामहैं लाल गदह पूरना तिक्त पाकमेंकटु शीतल हलका बादी ग्राही और पित्त तथा रक्त नाशक होताहै॥८४ ॥

अथगन्धप्रसारणी ॥

प्रसारणीराजवलाभद्रपर्णीप्रतापनी । सरणीसारणीभद्राबलाचापिकटम्भरा ॥ प्रसारणीगुरुर्वृष्याबलसन्धानकृत्सरा । वीर्य्योष्णावातहृत्तिक्तावातरक्तकफापहा ॥ ८५ ॥

गन्धप्रसारणी के नाम और गुण ॥

प्रसारिणी राजवला भद्रपर्णी प्रतापनी सरणी सारिणी भद्रा वला और कटंभरा यह गंध प्रसारणी के नामहैं गन्धप्रसारिणी भारी वीर्यवर्द्धक बलकारी टूटेकी जोड़नेवाली दस्ताबर उष्ण बात नाशक तिक्त और वातरक्त तथा कफ नाशक होतीहै ॥ ८५ ॥

अथकरिआबांसा ॥

इन्द्रजम्बूकवत्पत्रासुगन्धाकलघण्टिका । कृष्णातुसारिवाश्यामागोपीगोपबधूश्च सा (गोरिआसांउ) इयमपिजम्बूवत्पत्रादुग्धगर्भाव्रततिर्भवति । धवलासारिवागोपी गोपकन्याकृशोदरी ॥ स्फोटाश्यामागोपवल्लीलतास्फोताचचन्दना। गोपीगोपस्यस्त्रीपुं योगादीप्।गोपा गांपातीतिगोपागोपकन्या श्यामापदेनकृष्णाश्वेतापिसारिवाकथ्यते॥सा श्वेतेनसारिवापदस्यप्रयुक्तत्वात् (तद्यथा) सारिवायांनिशिश्यामाश्यामौचहरितासिता विति । सारिवायुगलंस्वादुस्निग्धंशुक्रकरंगुरु ॥ अग्निमान्द्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम्। दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् ॥ ८६ ॥

कृष्ण और श्वेत सारिवा (सांई) के नाम और गुण ॥

काली सारिवा के पत्ते इन्द्र जंबू (जामन) के समान होतेहैं सुगन्धा, कल घंटिका, कृष्णा,सारिवा श्यामा गोपी और गोपबधू, यह काली सारिवा के नामहैं श्वेत सारिवा के भी पत्ते जामन के समान होतेहैं इसका वृक्ष दूध से भरीहुई लताकी जातिका होताहै धवला, सारिवा गोपा, गोपकन्या, कृशोदरी, स्फोटा, श्यामा, गोपवल्ली, लता, आस्फोता और चन्दना, यह श्वेत सारिवा के नाम हैं श्यामशब्दसे कृष्ण और श्वेत दोनों सारिवा लीजातीहैं क्योंकि साश्वतने सारिवा मात्रमें इसशब्दका प्रयोग कियाहै जैसे सारिवा शब्दमें निशि, श्यामा श्याम हरित और असित, यह कहेजातेहैं दोनों सारिवा मधुर, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, भारी और मंदाग्नि अरुचि, श्वास खांसी,आम बिष, त्रिदोष रक्त दोष प्रदर ज्वर तथा अतीसार नाशक होती हैं ॥ ८६ ॥

अथ भंगरा ॥

भृंगराजोभृंगरजो मार्कवोभृंगएवच । अंगारकःकेशराजो भृंगारःकेशरञ्जनः ॥ भृंगारःकटुकस्तीक्ष्णो रूक्षोष्णःकफवातनुत् । केश्यस्त्वच्यःकृमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत् ॥ दन्त्योरसायनोबल्यः कुष्ठनेत्रशिरोर्त्तिनुत् ॥ ८७ ॥

भंगरे के नाम और गुण ॥

भृंगराज, भृंगरज, मार्कव भृंग, अंगारक केशराज, भृंगार और केशरंजन यह भंगरेके नाम हैं भंगरा कटु, तीक्ष्ण, रूखा, उष्ण, केशोंकोहित, त्वचा को उपकारी, रसायन बलकारक दांतों को हित और कृमि, श्वास, खांसी, सूजन, आम, पांडु, कुष्ठ, नेत्ररोग तथा शिरके रोगोंका नाशक होता है॥ ८७ ॥

शणपुष्पाइति च हुली । शण इव पुष्पा ॥

शणपुष्पीस्मृताघण्टाशणपुष्पसमाकृतिः।शणपुष्पीकटुस्तिक्तावामिनीकफपित्तजित्८८

शण पुष्पी (इसके पुष्पसन के पुष्पके समान होतेहैं) के नाम और गुण ॥

शणपुष्पी, घंटा और शणपुष्प समाकृति यह शणपुष्पी के नामहैं शणपुष्पी कटु तिक्त छर्दिकारक और कफ पित्त नाशक होतीहै॥८८॥ अथ त्रायमाना ॥

बलभद्रात्रायमाना त्रायन्तीगिरिसानुजा । त्रायन्तीतुवरातिक्ता सरापित्तकफापहा ॥ ज्वरहृद्रोगगुल्मार्श भ्रमशूलविषप्रणुत् ॥ ८९ ॥

त्रायमाणा (चिरायते के फल) के नाम गुण ॥

बलभद्र बलभद्रा त्रायमाणा त्रायन्ती गिरजा और अनुजा यह त्रायमाणा के नामहैं त्रायमाणा कषाय तिक्त दस्तावर और पित्त कफ ज्वर हृदय रोग गुल्म बवासीर भ्रम शूल तथा बिषकी नाशक होती है ॥ ८९ ॥

अथ चूर्णहार ॥

मूर्व्वामधुरसादेवी मोरटातेजनीस्नुवा । मधूलिकामधुश्रेणी गोकर्णीपीलुपर्ण्यपि ॥ मूर्व्वासरागुरुःस्वादुस्तिक्तापित्तास्रमेहनुत्त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकण्डूकुष्ठज्वरापहा॥९०॥

मरोडफली के नाम और गुण ॥

मूर्वा मधुरसा देवी मोरटा तेजनी स्नुवा मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णीपीलुपर्णी यह मरोड़फली के नाम हैं मरोड़फली दस्तावर भारी मधुर तिक्त और पित्त रक्त प्रमेह त्रिदोष तृषा हृदयकेरोग खुजली कुष्ठ तथा ज्वरनाशक होती है ॥ ९० ॥

अथ कवैआ ॥

काकमाचीध्वाङ्क्षमाची काकाह्वाचैववायसी । काकमाचीत्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा ॥ तिक्तारसायनीशोथ कुष्ठार्शोज्वरमेहजित् । कटुर्नेत्रहिताहिक्का च्छर्दिहृद्रो गनाशिनी ॥ ९१ ॥

मकोह के नाम और गुण ॥

काकमाची ध्वांक्षमाची काकाह्वा और बायसी यह मकोह के नाम हैं मकोह त्रिदोषनाशक स्निग्ध उष्ण स्वरकोहित बीर्यबर्द्धक तिक्त कटु रसायन नेत्रोंकोहित और सूजन कुष्ठ बवासीर ज्वर प्रमेह हिचकी छर्दि तथा हृदय के रोगोंकी नाशकहोती है ॥ ९१ ॥

कौआढोढी ॥

काकनासातुकाकांगी काकतुण्डफलाचसा । काकनासाकषायोष्णा कटुकारसपाक योः ॥ कफघ्नीवामनीतिक्ता शोथार्शःश्वित्रकुष्ठहृत् ॥ ९२ ॥

कौआ टोड़ीके नाम और गुण ॥

काकनासा, काकांगी और काकतुण्डफला, यह कौआटोड़ी के नाम हैं, कौआटोड़ी, कषाय उष्ण रस तथा पाक में कटु, छर्दिकारक, तिक्त. और, कफ, सूजन, बवासीर तथा श्वेतकुष्ठ नाशक होती है ॥ ९२

अथ काकजंघा मसीतिलोके ॥

काकजंघानदीकान्ता काकतिक्तासुलोमशा । पारावतपदीदासी काकाचापिप्रकीर्त्तिता ॥ काकजङ्घाहिमातिक्ता कषायाकफपित्तजित् । निहन्तिज्वरपित्तास्र ज्वरकण्डूविषकृमीन् ॥ ९३ ॥

काकजंघा के नामगुण ॥

काकजंघा नदीकान्ता काक तिक्ता सुलोमशा पारा वतपदी दासी और काका यह काकजंघा के

नामहैं काकजंघा शीतल तिक्त कषाय और कफ पित्त ज्वर रक्तपित्त घाव खुजली विष तथा कृमिनाशक होती है ॥ ९३ ॥

अथ नागपुष्पी ॥

नागपुष्पीश्वेतपुष्पा नागिनीरामदूतिका । नागिनीरोचनीतिक्ता तीक्ष्णोष्णाकफपित्तनुत् ॥ विनिहन्तिविषंशूलं योनिदोषवमिकृमीन् ॥ ९४ ॥

नागपुष्पी के नाम गुण ॥

नागपुष्पी श्वेतपुष्पा नागिनी और रामदूतिका यह नागपुष्पीके नामहैं नागपुष्पी रुचिकारक तिक्त तीक्ष्ण उष्ण और कफ पित्त बिष शूल योनिदोष छर्दि तथा कृमिनाशक होतीहै॥ ९४॥

अथ मेढ़ासिङ्गी ॥

मेषशृङ्गीविषाणीस्यान्मेषवल्ल्यजशृङ्गिका । मेषशृङ्गीरसेतिक्ता वातलाश्वासकासहृत् ॥ रूक्षापाकेकटुस्तिक्त व्रणश्लेष्माक्षिशूलनुत् । मेषशृङ्गीफलंतिक्तं कुष्ठमेहकफप्रणुत्॥ दीपनंस्रंसनंकास कृमिव्रणविषापहम् ॥ ९५ ॥

मेढ़ासिंगी के नाम और गुण ॥

मेषशृंगी बिषाणी मेषबल्ली और अजशृंगिका यह मेढ़ाशृंगी के नाम हैं मेढ़ा सिंगी तिक्त बादी रूखी पाकमें कटु और श्वास खांसी कुष्ठ घाव कफ तथा नेत्रकी पीड़ाकी नाशक होती है मेढ़ा सिंगी का फल तिक्त दीपन स्रंसन और कुष्ठ प्रमेह कफ खांसी कृमि घाव तथा विष दोष नाशक होताहै ॥ ९५ ॥

अथ हंसपदी ॥

हंसपादीहंसपदी कीटमातात्रिपादिका । हंसपादीगुरुःशीता हन्तिरक्तविषव्रणान् ॥ विसर्पदाहातीसार लूताभूताग्निरोहिणी ॥ ९६ ॥

हंसपदी के नामगुण ॥

हंसपादी हंसपदी कीटमाता और त्रिपादिका यह हंसपदी के नाम हैं हंसपदी भारी शीतल और रक्तदोष विष घाव बीसर्प दाह अतीसार मकड़ी भूतदोष तथा अग्नि रोहिणीरोग को नाशकरती है ॥ ९६ ॥

अथ सोमलता ॥

सोमवल्लीसोमलता सोमक्षीरीद्विजप्रिया । सोमवल्लीत्रिदोषघ्नी कटुस्तिक्तारसायनी ॥ ९७ ॥

सोमलता के नामगुण ॥

सोमबल्ली सोमलता सोमक्षीरी और द्विजप्रिया यह सोमलता के नामहैं सोमलता, त्रिदोष-नाशक कटु तिक्त और रसायन होती है ॥ ९७ ॥

अथ आकाशवल्ली ॥

(अमरवेलि इति च) आकाशवल्लीतुबुधैः कथितामरवल्लरी । खवल्लीग्राहिणी तिक्ता पिच्छिलाक्ष्मामयापहा ॥ तुवराग्निकरीहृद्या पित्तश्लेष्मामनाशिनी ॥ ९८ ॥

अमरबेल के नाम गुण ॥

आकाशबल्ली और अमरबल्लरी यह अमरवेलके नामहैं अमरवेल ग्राही तिक्त पिच्छिल कषाय अग्नि वर्द्धक हृदयकोहित और नेत्ररोग पित्त कफ तथा आमनाशकहोतीहै ॥ ९८ ॥

अथ पातालगरुड़ी ॥

छिलिहिंटोमहामूलः पातालगरुड़ाह्वयः । छिलिहिंटःपरंवृष्यः कफघ्नःपवनापहः ९९॥

पातालगरुड़ी के नामगुण ॥

छिलिहिंट महाशूल और पातालगरुडी यहनाम हैं पातागरुड़ी अत्यन्त बीर्य्यवर्द्धक और कफ तथा बायुनाशक होती है ॥ ९९ ॥

अथ वन्दा ॥

वन्दावृक्षादनीवृक्ष भक्ष्यावृक्षरुहापिच । वन्दाकःस्याद्धिमस्तिक्तः कषायोमधुरोरसे॥ मांगल्यःकफवातास्रक्षोव्रणबिषापहः ॥ १०० ॥

बांदा के नामगुण ॥

बन्दा वृक्षादनी वृक्षभक्ष्या और वृक्षरुहा यह बांदाके नामहैं बांदा शीतल तिक्त कषाय मधुर मंगलकारी और कफ वात रक्त दोष राक्षसोंकी पीड़ा घाव तथा विषनाशकहोता है ॥ १०० ॥

अथ वटपत्री ॥

वटपत्रीतुकथिता मोहिनीरेचनीबुधैः । वटपत्रीकषायोष्णा योनिमूत्रगदापहा १०१॥

बट पत्रीके नामगुण ॥

बटपत्री को पंडितलोग मोहिनी और रेचनी कहतेहैं बटपत्री कषाय उष्ण और योनि तथा मूत्रके रोगोंको नाश करतीहै ॥ १०१ ॥

अथ हिंगुपत्री ॥

हिंगुपत्री तुकवरीपृथ्विका पृथुकापृथुः ॥ हिंगुपत्रीभवेद्रुच्यातीक्ष्णोष्णापाचनीकटुः । हृद्वस्तिरुग्विबन्धार्शः श्लेष्मगुल्मानिलापहा ॥ १०२ ॥

हिंगु पत्रीके नाम गुण ॥

हिंगुपत्री कवरी पृथ्विका पृथुका और पृथु यह हिंगुपत्री के नामहैं हिंगुपत्री रुचिकारक तीक्ष्ण उष्ण पाचक कटु और हृदयके रोग मूत्राशयके रोग विवन्ध बवासीर कफ गुल्म तथा वायु नाशक होतीहै ॥ १०२ ॥

अथ वंशपत्री ॥

वंशपत्रीवेणुपत्रीपिङ्गाहिङ्गुशिवाटिका । हिंगपत्रीगुणाविज्ञैर्वंशपत्रीचकीर्त्तिता ॥ १०३ ॥

बंश पत्रीके नाम गुण ॥

बंशपत्री बेणुपत्री पिंगा हिंगु और शिवाटिका यह पत्रीके नामहैं बंशपत्री हिंगुपत्रीके समानगुण दायक होतीहै ॥ १०३ ॥

अथ मत्स्याक्षी ॥

मछेछीइतिलोके । छछमछरिआइतिच ॥ मत्स्याक्षीबाह्लिकामत्स्यगन्धामत्स्यादनी

तिच। मत्स्याक्षीग्राहिणीशीताकुष्ठपित्तकफास्रजित् ॥ लघुस्तिक्ताकषायाचस्वाद्वीकटु विपाकिनी ॥ १०४ ॥

मत्स्याक्षी (छछमछरिया या मछेछी)
के नाम और गुण ॥

मत्स्याक्षी वाह्लिका मत्स्यगन्धा और मत्स्यादनी यह मत्स्याक्षी के नाम हैं मत्स्याक्षी ग्राही शीतल हलकी तिक्त कषाय मधुर पाक मेंकटु और कुष्ठ पित्त कफ तथा रक्त दोष नाशक होती है ॥ १०४ ॥

अथ सरहटीगण्डिनीतिच ॥

सर्पाक्षीस्यात्तुगण्डालीतथानाड़ीकपालकः। सर्पाक्षीकटुकातिक्तासोष्णाकृमिविकृन्तनी ॥ वृश्चिकीन्दुरसर्पाणांविषघ्नीव्रणरोपिणी ॥ १०५ ॥

सर्पाक्षीके नाम गुण ॥

सर्पाक्षी, गंडाली, और नाड़ी कपालक, यह सर्पाक्षीके नामहैं सर्पाक्षी, कटु, तिक्त, उष्ण, घावभरने वाली कृमिनाशक और विच्छू, मूस तथा सर्पके, विषकी नाशक होतीहै ॥ १०५ ॥

अथ शङ्खपुष्पी ॥

शङ्खपुष्पीतुशङ्खाङ्कामाङ्गल्यकुसुमापिच। शङ्खपुष्पीसरामेध्यावृष्यामानसरोगहृत्रसायनीकषायोष्णस्मृतिकान्तिबलाग्निदा। दोषापस्मारभूतादिकुष्ठकृमिविषप्रणुत् १०६ ॥

शंख पुष्पी के नाम गुण ॥

शंखपुष्पी, शंखाङ्का और मांगल्य कुसुमा, यह शंख पुष्पी के नाम हैं, शंखपुष्पी, दस्तावर, मेधाको हित, आयुको हित, उष्ण, रसायन, कषाय, स्मृति, कान्ति, बल तथा अग्नि बर्द्धक और मानसिक रोग, त्रिदोष मृगी, भूतदोष, अलक्ष्मी, कुष्ठ, कृमि, तथा विषकी नाशक होती है, ॥ १०६ ॥

अथ अर्कपुष्पी ॥

अर्कपुष्पीक्रूरकर्मापयस्याजलकामुका।अर्कपुष्पीकृमिश्लेष्ममेहपित्तविकारजित् १०७॥

अर्क पुष्पी के नाम गुण ॥

अर्कपुष्पी, क्रूरकर्मा, पयस्या और जलकामुका, यह अर्क पुष्पी के नाम हैं, अर्कपुष्पी, कृमि, कफ प्रमेह, और चित्तके विकारों की नाशकहोती है ॥ १०७ ॥

अथ लज्जालुः ॥

लज्जालुःस्यात्शमीपत्रासमङ्गाजलकारिका । रक्तपादीनमस्कारीनाम्नाखदिरकेत्यपि ॥ लज्जालुःशीतलातिक्ताकषायाकफापित्तजित्। रक्तपित्तमतीसारंयोनिरोगान्विनाशयेत् ॥ १०८ ॥

लज्जालू के नाम गुण ॥

लज्जालू, शमीपत्रा, समंगा, जलकारिका, रक्तपादी, नमस्कारी और खदरिका यह लज्जालू के नाम हैं लज्जालू, शीतल, तिक्त कषाय और कफ पित्त, रक्तपित्त, अतीसार, तथा योनि रोग नाशक होती है ॥ १०८ ॥

लज्जालूभेदः अलम्बुषा ॥

अलम्बुषाखरत्वक्च तथामेदोगलास्मृता । अलम्बुषालघुः स्वादुः कृमि पित्तक फापहा ॥ १०९ ॥

लज्जालू का भेद अलंबुषाके नाम और गुण ॥

अलंबुषा खरत्वक् और मेदोवला यह अलंबुषा के नाम हैं अलंबुषा हलकी मधुर और कृमि कफ तथा पित्त नाशक होती है ॥ १०९ ॥

अथ दूधी ॥

दुग्धिकास्वादुपर्णीस्यात्क्षीराविक्षीरिणीतथा । दुग्धिकोष्णागुरूरूक्षावातलागर्भका रिणी ॥ स्वादुक्षीराकटुस्तिक्तासृष्टमूत्रमलापहा । स्वादुर्विष्टम्भिनीवृष्याकफकुष्ठकृमि प्रणुत् ॥ ११० ॥

दूधीके नाम गुण ॥

दुग्धिका स्वादुपर्णी क्षीरा और विक्षीरिणी यह दूधीके नाम हैं दूधी उष्ण भारी रूखी वादी गर्भकारक स्वादिष्ट दुग्धवाली कटु तिक्त मधुर मलमूत्र की निकालने वाली विष्टंभी वीर्य बर्द्धक और कफ कुष्ठ तथा कृमि नाशक होती है ॥ ११० ॥

अथ भुइआम्बरा ॥

भूम्यामलकिकाप्रोक्ताशिवातामलकीतिच । वहुपत्रावहुफलावहुवीर्य्याजटापिच ॥ भूधात्रीवातकृत्तिक्ताकषायामधुराहिमा । पिपासाकासपित्तास्रकफपाण्डुक्षतापहा॥ १११ ॥

भुइँआमलेके नाम गुण ॥

भूम्यामलकिका शिवा तामलकी बहुपत्रा बहुफला बहुवीर्या और अजटा यह भुइआमले के नाम हैं भुइआमला वादी तिक्त कषाय मधुर शीतल और तृषा खांसी रक्तपित्त कफ पांडु तथा क्षतनाशकहोताहै ॥ १११ ॥

अथ वरंभी ॥

ब्राह्मीकपोतवङ्काचसोमवल्लीसरस्वती । ब्रह्ममाण्डूकी ॥ मण्डूकपर्णीमाण्डूकीत्वाष्ट्री दिव्यामहौषधी । ब्राह्मीहिमासरातिक्तालघुर्मेध्याचशीतला ॥ कषायामधुरास्वादुपाका युष्मारसायनी । स्वर्य्यास्मृतिप्रदाकुष्ठपाण्डुमेहास्रकासजित् ॥ विषशोथज्वरहरीतद्वन्म ण्डूकपर्णिनी ॥ ११२ ॥

ब्राह्मी और ब्रह्ममांडूकी के नाम गुण ॥

ब्राह्मी कपोतवंका सोमबल्ली और सरस्वती यह ब्राह्मी के नामहैं मंडूकपर्णी मांडूकी त्वाष्ट्री दिव्या और महौषधी यह ब्रह्ममांडूकी के नामहैं ब्राह्मी दस्तावर, वीर्य में शीतल तिक्त कषाय मधुर हलकी मेधाको हित शीतल पाकमें मधुर आयुको हित रसायन स्वरको हित स्मृतिदायक और कुष्ठ पांडु प्रमेह रक्तदोष खांसी बिष सूजनतथा ज्वर नाशकहोती है ब्रह्म मांडुकी में भी इसी के समानगुणहोतेहैं ॥ ११२ ॥

अथ गूमा ॥

द्रोणाचद्रोणपुष्पीचफलेपुष्पाचकीर्तिता॥द्रोणपुष्पीगुरुःस्वादूरूक्षोष्णावातपित्तकृत्॥स तीक्ष्णलवणास्वादुपाकाकट्वीचभेदिनी॥कफामकामलाशोथतमकश्वासजन्तुजित् ११३॥

गूमाके नाम और गुण ॥

द्रोणा, द्रोणपुष्पी और फलेपुष्पा, यहगूमा के नामहैं गूमा भारी, लवण, मधुर कटु,रूखा उष्ण वादी पित्तवर्द्धक तीक्ष्ण पाकमें मधुर भेदक और कफ आम कामला सूजन तमकश्वास तथा कृमि नाशकहोताहै ॥ ११३ ॥

अथहुरहुरद्वितीयहुरहुर ॥

सुवर्च्चलासूर्य्यभक्तावरदावदरापिच । सूर्य्यावर्त्तारविप्रीताऽपराब्रह्मसुवर्च्चला ॥सुवर्च्च लाहिमारूक्षास्वादुपाकासरागुरुः । अपित्तलाकटुःक्षाराविष्टम्भकफवाताजित् ॥ अन्या तिक्ताकषायोष्णासरारूक्षालघुःकटुः । निहन्तिकफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥ विस्फोटकुष्ठमेहास्रयोनिरुक्कृमिपाण्डुताः ॥ ११४ ॥

दोनों प्रकार के हुर हुर के नामगुण ॥

सुवर्चला सूर्य्यभक्ता वरदा वदरा सूर्य्यावर्ता और रविप्रीता यह हुर २ के नामहैं और दूसरे प्रकारके हुर२को ब्रह्मसुवर्चलाकहतेहैं हुर२ शीतल रूखा पाक में मधुर दस्तावर भारी पित्तको न करनेवाली क्षार कटु और बिष्टंभ कफ तथा बातको नाशकरती है और दूसरे प्रकारकी हुर २ तिक्त कषाय उष्ण दस्तावर रूखी हलकी कटु और कफ पित्त रक्तदोष श्वास खांसी अरुचि ज्वर स्फोट कुष्ठ प्रमेह रक्तपित्त योनिरोग कृमितथा पांडु नाशक होतीहै ॥ ११४ ॥

अथवाभूख्खा ॥

बन्ध्याकर्कोटकीदेवीकन्यायोगीश्वरीतिच । नागारिनक्रदमनीविषकण्टकिनीतथा॥ बन्ध्याकर्कोटकीलघ्वीकफनुद्व्रणशोधिनी॥सर्पदर्पहरीतीक्ष्णाविसर्पविषहारिणी ११५॥

बांझ खकसाके नामगुण ॥

बंध्याकर्कोटकी देवी कन्या योगीश्वरी नागारि नक्रदमनी और बिषकंटकिनी यह बांझखकसा के नामहैं बांझ खकसा हलका घावको शोधक तीक्ष्ण और कफ सर्पकाबिष विसर्प तथा बिष नाशक होताहै ॥ ११५ ॥

अथ भूइखखसा बल्लीभूमिप्रसरणशीला ॥

मार्कण्डिकाभूमिवल्लीमार्कण्डीमृदुरेचनी । मार्कण्डिकाकुष्ठहरीऊर्ध्वाधःकायशोधि नी ॥ विषदुर्गन्धकासघ्नीगुल्मोदरविनाशिनी ॥ ११६ ॥

भुइँखकसा के नामगुण ॥

मार्कण्डिका भूमिवल्ली मार्कण्डी और मृदुरेचनी यह भुइँखकसाके नामहैं भुइँखकसाबमनबिरेचनके द्वारा ऊपर नीचे के शरीर का शुद्ध करनेवाला और कुष्ठ विष दुर्गन्धि खांसी गुल्म तथा उदर रोग नाशक होताहै ॥ ११६ ॥

अथदेवदालीसोनेआखखसावत् फलव्रततिः ॥

देवदालीतुवेणीस्यात् कर्कटीचगरागरी। देवताण्डीवृत्तकोशस्तथाजीमूतइत्यपि॥पी तापराखरस्पर्शाविषघ्नीगरनाशिनी।देवदालीरसेतिक्ताकफार्शःशोफपाण्डुताः॥नाशयेत् वामनीतिक्ताक्षयहिक्काकृमिज्वरान् । देवदालीफलंतिक्तंकृमिश्लेष्मविनाशनम् ॥ स्रंसनं गुल्मशूलघ्नमर्शोघ्नंवातजित्परम् ॥ ११७ ॥

सुनैया (खकसा के समान फलवाली लता) के नाम और गुण ॥

देवदाली वेणी कर्कटी गरागरी देवतांडी वृत्तकोश और जीमूत यह सुनैया के नाम हैं पीतवर्ण की दूसरी सुनैयाको खरस्पर्शा बिषघ्नी और गरनाशिनी कहते हैं सुनैया रसमें तिक्त छर्दि कारक तीक्ष्ण और कफ बवासीर सूजन पांडु क्षय हिचकी कृमितथा ज्वर नाशक होती है सुनैयाका फल तिक्त स्रंसन और कफ कृमि गुल्म श्वास शूल बवासीर तथा अत्यन्त वात नाशक होताहै ११७॥

अथ जलपिप्पली पनिसगाइतिलोके ॥

जलपिप्पल्यभिहिताशारदीशकलादनी । मत्स्यादनीमत्स्यगन्धालाङ्गुलीत्यपिकीर्त्तिता ॥ जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशुक्रलालघुः । संग्राहिणीहिमारूक्षारक्तदाहव्रणाप हा ॥ कटुपाकरसारुच्याकषायावह्निवर्द्धिनी ॥ ११८ ॥

जल पीपल के नाम गुण ॥

जलपिप्पली शारदी शकुलादनी मत्स्यादनी मत्स्यगंधा और लांगली यह जलपीपलके नाम हैं जलपीपल हृदयको हित नेत्रोंकोहित वीर्यवर्द्धक हलकी ग्राही शीतल रूखी रसतथा पाक में कटु रुचिकारक कषाय अग्निवर्द्धक और रक्तदोष दाह तथा घाव की नाशक होतीहै ॥ ११८ ॥

अथगोभी ॥

गोजिह्वागोजिकागोभीदार्विकाखरपर्णिनी।गोजिह्वावातलाशीताग्राहिणीकफपित्तनुत्॥ हृद्याप्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरीलघुः। कोमलातुवरातिक्तास्वादुपाकरसास्मृता॥ ११९ ॥

गावजमाके नाम गुण ॥

गोजिह्वा गोजिका गोभी दार्विका और खरपर्णिनी गोजिह्वा वादी शीतल ग्राही हृदयको हित हलकी कषाय तिक्त मधुर पाकमें मधुर और प्रमेह खांसी रक्तदोष तथा ज्वरनाशक होताहै ॥ ११९॥

अथनागदमनी ॥

विज्ञेयानागदमनीबलामोटाविषापहा । नागपुष्पीनागपत्रामहायोगेश्वरीतिच ॥ व लामोटाकटुस्तिक्तालघुःपित्तकफापहा । मूत्रकृच्छ्रव्रणान्रक्षोनाशयेज्जालगर्द्दभम् ॥ स र्वग्रहप्रशमनीनिश्शेषविषनाशिनी । जयंसर्वत्रकुरुतेधनदासुमतिप्रदा ॥ १२० ॥

नागदमनके नाम गुण ॥

नागदमनी बलामोटा बिषापहा नागपुष्पी नागपत्रा और महायोगेश्वरी यह नागदमनके नाम हैं नागदमनी कटु तिक्त हलकी सर्वत्र जयदायक धन देनेवाली सुबुद्धिदायक और पित्त कफ मूत्रकृच्छ्र घाव राक्षसोंकीपीडा जालगर्द्दभ सब ग्रह पीडा तथा अत्यन्त विषनाशक होती है ॥ १२० ॥

अथवरवेल ॥

वेलन्तरोजगतिवीरतरुःप्रसिद्धःश्वेतासितारुणविलोहितनीलपुष्पः । स्याज्जातितुल्यकुसुमःशमिसूक्ष्मपत्रः स्यात्कण्टकीविजलदेशजएषवृक्षः ॥ वेलन्तरोरसेपाकेतिक्तः तृष्णाकफापहः । मूत्राघाताश्मजित्ग्राहीयोनिमूत्रानिलार्त्तिजित् ॥ १२१ ॥

बरबेलके नामगुण ॥

बेलन्तर जगत् में बीरुतरु नाम से प्रसिद्धहै इसके पुष्प श्वेत कृष्ण कुछ लाल लाल और नील वर्ण के होते हैं पुष्पों का आकार चमेलीके समान होता है पत्ते छोंकर के समान सूक्ष्म होते हैं यह वृक्ष जल राहित स्थान में उत्पन्न होता है और कांटेवाला होता है बरबेलरस तथा पाकमें तिक्त ग्राही और तृषा कफ मूत्राघात पथरी योनिरोग मूत्ररोग तथा बातरोग नाशक होताहै ॥ १२१ ॥

छिक्कनी ॥

छिक्कनीक्षवकृत्तीक्ष्णाछिक्किकाघ्राणदुःखदा । छिक्कानीकटुकारुच्यातीक्ष्णोष्णावह्निपित्तकृत् ॥ वातरक्तहरीकुष्ठकृमिवातकफापहा ॥ १२२ ॥

नकछिकनी के नामगुण ॥

छिक्कनी क्षवकृत् तीक्ष्णा छिक्किका और घ्राणदुःखदायह नकछिकनीकेनामहैं नकछिकनी कटुरुचि कारकतीक्ष्ण उष्ण अग्निवर्द्धक पित्तकारक और बातरक्त कुष्ठ कृमिवात तथा कफनाशकहोतीहै १२२ ॥

अथकुकुन्दर ॥

कुकुन्दरस्ताम्रचूड़ः सूक्ष्मपत्रोमृदुच्छदः । कुकुन्दरःकटुस्तिक्तोज्वररक्तकफापहः ॥ तन्मूलमार्द्रंनिःक्षिप्तंवदनेमुखशोषहृत् ॥ १२३ ॥

कुकुरौंदेके नाम गुण ॥

कुकुंदर ताम्रचूड़ सूक्ष्मपत्र और मृदुच्छद यह कुकुरौंदा के नाम हैं यह कटु तिक्त और ज्वर रक्त दोष तथा कफ नाशक होताहै कुकुरौंदेकी गीली जड़ मुखमें रखनेसे मुखका सूखना मिटता है॥ १२३ ॥

अथसुदर्शनः ॥

सुदर्शनासोमवल्लीचक्राङ्कामधुपर्णिका । सुदर्शनास्वादुरुष्णाकफशोफास्रवाताजित् १२४

सुदर्शनके नाम गुण ॥

सुदर्शना सोमवल्ली चक्राह्वा और मधुपर्णिका यह सुदर्शनके नाम हैं सुदर्शन मधुर उष्ण और कफ सूजन तथा वात रक्त नाशक होताहै ॥ १२४ ॥

अथमूसाकर्णी ॥

आखुकर्णीत्वाखुकर्णपर्णिकाभूदरीभवा । आखुकर्णीकटुस्तिक्ताकषायाशीतलालघुः॥ विपाकेकटुकामूत्रकफामयकृमिप्रणुत् ॥ १२५ ॥

मूसाकर्णीके नाम गुण ॥

आखुपर्णी आखुकर्णी पर्णिका और भूदरीभवा यह मूसाकर्णीके नाम हैं यह कटु तिक्त कषाय शीतल लघु पाकमें कटु और मूत्र कफ तथा कृमिरोग नाशक होतीहै ॥ १२५ ॥

अथ मयूरशिखा ॥

मयूराङ्गशिखाप्रोक्ता सहस्राहिर्म्मधुच्छदा । नीलकण्ठशिखालघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥ १२६ ॥

इतिभावप्रकाशेगुडूच्यादिवर्गः ॥

मोरशिखाके नाम गुण ॥

मयूराङ्गशिखा सहस्राहि और मधुच्छदा यह मोरशिखाके नाम हैं यह हलकी और पित्त कफ तथा अतीसार नाशकहोती है ॥ १२६ ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेगुडूच्यादिवर्गः ॥

अथ पुष्पवर्गः । तत्रादौकमलस्यनामानिगुणाश्च ॥

वापुंसिपद्मंनलिनमरविन्दंमहोत्पलम् । सहस्रपत्रंकमलं शतपत्रंकुशेशयम् ॥ पङ्केरुहन्तामरसं सारसीसरसीरुहम् । विशप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणिच ॥ कमलंशीतलंवर्ण्यं मधुरंकफपित्तजित् । तृष्णादाहास्रविस्फोट विषवीसर्पनाशनम् ।।विशेषतःसितं पद्मंपुण्डरीकमितिस्मृतम् । रक्तंकोकनदंज्ञेयं नीलमिन्दीवरंस्मृतम् ॥ धवलंकमलंशीतं मधुरंकफपित्तजित् । तस्मादल्पगुणंकिञ्चिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम् ॥ १ ॥

अथ पुष्प वर्गः ॥

कमलके नाम और गुण ॥

पद्म नलिन अरविन्द महोत्पल सहस्रपत्र कमलशतपत्र कुशेशय पंकेरुह तामरस सारस सरसीरुह विशप्रसून राजीव पुष्कर और अम्भोरुह यहकमलकेनामहैं यहसब शब्द पुल्लिंग और नपुंसकलिंगहैं कमल शीतल वर्णकोहित मधुर और कफ पित्त तृषादाह रक्तदोष विष्फोट विष तथा वीसर्पनाशक होताहै श्वेत कमलको पुंडरीक लालको कोकनद और नीलको इन्दीवर कहतेहैं श्वेतकमल शीतल मधुर और कफ पित्त नाशकहोताहै और लालकमलादिक इसकी अपेक्षा कुछकम गुणवाले होतेहैं ॥ १ ॥

अथ पद्मिनी ॥

मूलनालदलोत्फुल्लः फलैःसमुदितापुनः । पद्मिनीप्रोच्यतेप्राज्ञैर्विसिन्यादिचसास्मृता ॥ आदिशब्दान्नलिनीकमलिनीत्यादि ॥ पद्मिनीशीतलागुर्व्वी मधुरालवणाचसा । पित्तासृक्कफनुद्रूक्षावातविष्टम्भकारिणी ॥ २ ॥

कमलनी के नामगुण ॥

मूल नाल और पत्ते इन सब समेत कमल के पुष्पको पंडित लोग पद्मिनी कहते हैं बिसिनी नलिनी और कमलनी आदिक उसके नामहैं कमलनी शीतल भारी मधुर लवण रक्त पित्तनाशक कफघ्न रूखी बादी और विष्टंभकारक होती है ॥ २ ॥

चमेली को स्वर्णजाति कहतेहैं यह दोनों प्रकार की चमेली तिक्त उष्ण कषाय हलकी और त्रिदोष शिरकी पीड़ा नेत्ररोग मुखरोग दन्तरोग विष कुष्ठ वात तथा रक्तदोषनाशक होती है ॥ ११ ॥

अथ जुही सुवर्णजुही ॥

यूथिकागणिकाम्बष्ठासापीताहेमपुष्पिका । यूथीयुगंहिमंतिक्तंकटुपाकरसंलघु ॥ मधुरंतुवरंहृद्यंपित्तघ्नंकफवातलम् । व्रणास्रमुखदन्ताक्षिशिरोरोगविषापहम् ॥ १२ ॥

जूही और पीलीजुही के नामगुण ॥

यूथिका गणिका और अम्बष्ठा यह जूही के नामहैं पीली जूहीको हेम पुष्पिका कहते हैं यह दोनों जूही शीतल तिक्त पाक में कटु रसमेंकटु हलकी मधुर कषाय हृदयकोहित पित्तनाशक कफबर्द्धक वादी और घाव रक्तदोष मुखरोग दन्तव्याधि नेत्ररोग शिरकी पीडा तथा विषनाशकहोती है ॥ १२ ॥

अथचम्पा ॥

चाम्पेयश्चम्पकःप्रोक्तोहेमपुष्पश्चसस्मृतः।एतस्यकलिकागन्धफलीतिकथितावुधैः॥ चम्पकःकटुकास्तिक्तःकषायोमधुरोहिमः । विषकृमिहरःकृच्छ्रकफवातास्रपित्तजित्॥१३॥

चंपाके नामगुण ॥

चांपेय चंपक और हेमपुष्प यह चंपा के नामहैं पंडित लोग चंपा की कलीको गन्धफली कहतेहैं चंपा कटु तिक्त कषाय शीतल और बिष कृमि मूत्र कृच्छ्र बात तथा रक्त पित्तनाशकहोती है ॥ १३ ॥

अथ वकुल मौलसिरी इति लोके ॥

वकुलोमधुगन्धश्चसिंहकेसरकस्तथा । वकुलस्तुवरोऽनुष्णःकटुपाकरसोगुरुः॥ कफपित्तविषश्वित्रकृमिदन्तगदापहः ॥ १४ ॥

मौलसिरी के नाम गुण ॥

बकुल मधुगन्ध और सिंहकेशर मौलसिरी के नाम हैं मौलसिरी कषाय कुछ उष्ण रस तथा पाकमें कटु भारी और कफ पित्त विष श्वेतकुष्ठ कृमि तथा दन्तरोग नाशक होती है ॥ १४ ॥

अथ वकुलबृहद्बोलशरीतिच ॥

शिवमल्लीपाशुपतएकष्ठीलोवकोवसुः । वकोऽनुष्णःकटुस्तिक्तःकफपित्तविषापहः॥योनिशूलतृषादाहकुष्ठशोथास्रनाशनः ॥ १५ ॥

बड़ी मौलसिरी के नाम गुण ॥

शिवमल्ली पाशुपत एकष्ठीलाबक और बसु यह बड़ी मौलसिरी के नाम हैं बडी मौलसिरी कुछ उष्ण कटु तिक्त और कफ पित्त बिष योनिशूल तृषा दाह कुष्ठ सूजन तथा रक्तदोषनाशकहोतीहै १५॥

अथ कदम्बः ॥

कदम्बःप्रियकोनीपोवृत्तपुष्पोहलिप्रियः । कदम्बोमधुरःशीतोकषायोलवणोगुरुः ॥ सरोविष्टम्भकृद्रूक्षःकफस्तन्यानिलप्रदः ॥ १६ ॥

कदंबके नामगुण ॥

कदंब प्रियक नीप वृत्तपुष्प और हलिप्रिय यह कदंबके नामहैं कदंब मधुर शीतल कषाय लवण भारी दस्तावर विष्टंभी रूखा कफकारक दुग्धबर्द्धक और बादी होता है ॥ १६ ॥

अथ कूजा ॥

कुब्जकोभद्रतरुणिर्बृहत्पुष्पोऽतिकेसरः । महासहाकण्टकाढ्यानीलालिकुलसंकुला ॥
कुब्जकःसुरभिःस्वादुःकषायानुरसःसरः । त्रिदोषशमनोवृष्यःशीतहर्त्ताचसस्मृतः ॥ १७॥

कूजा के नामगुण ॥

कुब्जक भद्रतरुणी बृहत्पुष्प अतिकेशर महासह कंटकाढ्या नीला और अलिकुलसंकुला यह कूजा के नामहैं कूजा सुगन्धित मधुर कुछ कषैला दस्तावर त्रिदोषनाशक वीर्यबर्द्धक और शीतनाशकहोताहै ॥ १७ ॥

अथ मल्लिका ॥

मल्लिकामदयन्तीचशीतभीरुश्चभूपदी । मल्लिकोष्णालघुर्वृष्यातिक्ताचकटुकाहरेत्॥
वातपित्तास्यदृग्व्याधिकुष्ठारुचिविषव्रणान् ॥ १८ ॥

बेला के नामगुण ॥

मल्लिका मदयंती शीतभीरु और भूपदी यह बेला के नाम हैं बेला उष्ण हलका वीर्यबर्द्धक तिक्त कटु और बात पित्त मुखरोग नेत्ररोग कुष्ठ अरुचि बिष तथा घावनाशक होता है ॥ १८ ॥

अथ माधवी ॥

माधवीस्यात्तुवासन्तीपुण्ड्रकोमण्डकोऽपिच । अतिमुक्तोविमुक्तश्चकामुकोभ्रमरोत्सवः ॥ माधवीमधुराशीतालघ्वीदोषत्रयापहा ॥ १९॥

मोतियाके नाम गुण ॥

माधवी बासन्ती पुंड्रक मंडक अति मुक्त विमुक्तकामुक और भ्रमरोत्सव यह मोतिये के नाम हैं मोतिया मधुर शीतल हलका और त्रिदोष नाशक होताहै ॥ १९ ॥

केवरासुवर्णकेतकी ॥

केतकःसूचिकापुष्पोजम्बुकःककचच्छदः।सुवर्णकेतकीत्वन्यालघुपुष्पासुगन्धिनी॥ केतकःकटुकःस्वादुर्लघुस्तिक्तःकफापहः । उष्णातिक्तरसाज्ञेयाचक्षुष्याहेमकेतकी ॥ २० ॥

केवड़ा और सुवर्ण केतकीके नामगुण ॥

केतक सूचिकापुष्प जंबुक और ककचच्छद यह केवड़े के नामहैं सुवर्ण केतकी केवड़े का भेद है उस को लघुपुष्पा और सुगंधिनी कहते हैं केवड़ाकटु मधुर तिक्त हलका और कफनाशक होताहै सुवर्ण केतकी तिक्त उष्ण और नेत्रों को हित होतीहै ॥ २० ॥

अथ किङ्किरात इति गौड़ादौ प्रसिद्धः ॥

किङ्किरातोहेमगौरःपीतकःपीतभद्रकः ॥ किङ्किरातोहिमस्तिक्तःकषायश्चहरेदसौ ॥
कफपित्तपिपासास्रदाहशोषवमिकृमीन् ॥ २१ ॥

किंकिरात के नामगुण ॥

किंकिरात हेमगौरि पीतक और पीतभद्रक यह किंकिरात के नामहैं किंकिरात शीतल तिक्त कषाय और कफ पित्त तृषा रक्तदोष दाहशोष छर्दि तथा कृमि नाशक होताहै ॥ २१ ॥

अथकर्णिकारः ॥

कर्णिकारःपरिव्याधःपादपोत्पलइत्यपि ॥ कर्णिकारःकटुस्तिक्तस्तुवरःशोधनोलघुः । रञ्जनःसुखदःशोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित् ॥ २२ ॥

कर्णिकार के नामगुण ॥

कर्णिकार परिव्याध और पादपोत्पल यह कर्णिकार के नामहैं कर्णिकार कटु तिक्त कषाय शोधन करनेवाला हलका रंगदेनेवाला सुखदायक और सूजन कफ रक्तदोष व्रणतथा कुष्ठ नाशकहोताहै२२॥

अथअशोक अमोगि ॥

अशोकोहेमपुष्पश्चवञ्जुलस्ताम्रपल्लवः। कङ्केलिःपिण्डपुष्पश्चगन्धपुष्पोनटस्तथा॥ अशोकःशीतलस्तिक्तोग्राहीवर्ण्यःकषायकः।दोषापचीतृषादाहकृमिशोथविषास्रजित् २३

अशोक के नामगुण ॥

अशोक हेमपुष्प वंजुल ताम्रपल्लव कंकेलि पिंडीपुष्प गन्धपुष्प और नट यह अशोक के नाम हैं अशोक शीतल तिक्त ग्राही वर्ण कोहित कषैला और त्रिदोष अपची तृषा दाह कृमि शोथ बिष तथा रक्तदोष नाशक होताहै ॥ २३ ॥

अथबाणपुष्पइतिगौड़ादौ प्रसिद्धः ॥

अम्लातोऽम्लाटनःप्रोक्तस्तथाम्लातकइत्यपि ॥ कुरण्टकोवर्णपुष्पःसएवोक्तोमहासहः । अम्लाटनःकषायोष्णःस्निग्धःस्वादुश्चतिक्तकः ॥ २४ ॥

बाणपुष्प के नामगुण ॥

अम्लात अम्लाटन अम्लातक कुरंटक वर्णपुष्प और महासह यह बाणपुष्प के नामहैं बाणपुष्प कषाय मधुर तिक्त उष्ण और स्निग्ध होताहै ॥ २४ ॥

अथकटसरैआ ॥

सैरेयकःश्वेतपुष्पःसैरेयःकटसारिका । सहाचरःसहचरःसचभिन्द्यपिकथ्यते ॥ कुरण्टकोऽत्रपीतेस्याद्रक्तेकुरवकःस्मृतः । नालेवाणाद्वयोरुक्तोदासेआर्त्तगलश्चसः ॥ सैरेयः कुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः । तिक्तोष्णोमधुरोऽनम्लःसुस्निग्धःकेशरञ्जनः ॥ २५ ॥

कटसरैया के नामगुण ॥

सैरेयक श्वेतपुष्प सैरेय कटसारिका सहाचर सहचर और भिन्दी यह कट सरैया के नामहैं पीली कटसरैयाको कुरंटक लालकट सरैयाको कुरवक और नीली कटसरैया को बाणा दासी और आर्तगल कहतेहैं कटसरैया कुष्ठ बात रक्तदोष कफ खुजली तथा विष नाशक तिक्त उष्ण मधुर कुछ अम्ल स्निग्ध और बालोंकी रंगने वाली होतीहै ॥ २५ ॥

अथकुन्दः ॥

कुन्दन्तुकथितंमान्द्यंसदापुष्पञ्चततत्स्मृतम् । कुन्दंशीतंलघुश्लेष्मशिरोरुग्विष पित्तहृत् ॥ २६ ॥

कुन्द के नाम गुण ॥

कुन्द माध्य और सदापुष्प यह कुन्द के नामहैं कुन्द शीतल हलका और कफ शिरके रोग बिष तथा पित्त नाशक होताहे ॥ २६ ॥

अथमुचुकुन्दनाम्नैवप्रसिद्धः ॥

मुचुकुन्दःक्षत्रवृक्षश्चित्रकःप्रतिविष्णुकः। मुचुकुन्दःशिरःपीड़ापित्तासृविषनाशनः२७ ॥

मुचकुन्द के नाम और गुण ॥

मुचुकुन्द क्षत्रवृक्ष चित्रक और प्रति विष्णुक यह मुचकुंदके नाम हैं मुचकुंद शिरकी पीड़ा रक्त पित्त तथा बिष नाशक होताहै ॥ २७ ॥

अथतिलाभपुष्पस्तिलकनाम्नैवप्रसिद्धः ॥

तिलकःक्षुरकःश्रीमान् पुरुषश्छिन्नपुष्पकः। तिलकःकटुकःपाकेरसेचोष्णोरसायनः ॥ कफकुष्ठकृमीन्वस्ति मुखदन्तगदान्हरेत् ॥ २८ ॥

तिलक के नाम गुण ॥

तिलक क्षुरक श्रीमान् पुरुष और छिन्नपुष्पक यह तिलकके नामहैं तिलक रसतथा पाक में कटु कुछ उष्ण रसायन और कफ कुष्ठ कृमि वस्तिरोग मुखरोग तथा दन्त रोगोंका नाशकहोता है २८ ॥

अथगेजुनिआ ॥

बन्धूकोबन्धुजीवश्च रक्तोमाध्याह्निकोऽपिच्च। बन्धूकःकफकृत्ग्राहीवातपित्तहरोलघुः२९

दुपहरिया के नामगुण ॥

बंधूक बंधुजीव रक्त और माध्याह्निक यहदुपहरिया के नामहैं दुपहरिया कफ कारक ग्राही बात पित्त नाशक और हलका होताहै ॥ २९ ॥

अथवोड़हुल तथासाम्फी ॥

ऊर्ध्वपुष्पश्जपाचाथ त्रिसन्ध्यासारुणासिता। जपासंग्राहिणीकेश्या त्रिसन्ध्याकफ वातजित् ॥ ३० ॥

गुड़हल के नाम गुण ॥

ऊर्ध्वपुष्प जपा और त्रिसंध्या यह गुड़हलके नामहैं गुड़हल लाल और सुपेद दोप्रकारकी होती है, गुड़हल ग्राही केशोंकोहित और कफबात नाशकहोतीहै ॥ ३० ॥

अथसेन्दुरिआ ॥

सिन्दूरीरक्तबीजाचरक्तपुष्पासुकोमला। सिन्दूरीविषपित्तासृतृष्णावान्तिहरीहिमा ३१॥

सिंदूरियाके नाम गुण ॥

सिंदूरी रक्तबीजा रक्तपुष्पा और सुकोमला यह सिंदूरियाके नामहैं सिंदूरिया बिष पित्त रक्त तृषा तथा छर्दि नाशक और शीतल होताहै ॥ ३१ ॥

अथागस्तिः ॥

अथागस्त्योवङ्गसेनो मुनिपुष्पोमुनिद्रुमः ॥ अगस्तिःपित्तकफजित् चातुर्थकहरोहिमः। रूक्षोवातकरस्तिक्तःप्रतिश्यायनिवारणः ॥ ३२ ॥

अगस्त्यके नाम गुण ॥

अगस्त्य बंगसेन मुनिपुष्प और मुनिद्रुम यह अगस्त्यके नाम हैं अगस्त्य पित्त कफ चातुर्थिकज्वर तथा नुकामका नाशक शीतल रूखा वादी और तिक्त होताहै ॥ ३२ ॥

अनन्तरतुलसीशुक्लाकृष्णाच ॥

तुलसीसुरसाग्राम्यासुलभाबहुमञ्जरी ॥ अपेतराक्षसीगौरीशूलघ्नीदेवदुन्दुभिः ॥ तुलसीकटुकातिक्ताहृद्योष्णादाहपित्तकृत् ॥ दीपनीकुष्ठकृच्छ्रासृपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥ शुक्लाकृष्णाचतुलसीगुणैस्तुल्याप्रकीर्तिता ॥ ३३ ॥

श्वेत और कृष्ण तुलसीके नाम गुण ॥

तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमंजरी अपेत राक्षसी गौरी भूतघ्नी और देवदुन्दुभि यह तुलसीके नामहैं तुलसी कटु तिक्त हृदयको हित उष्ण दाहकारक पित्तवर्द्धक प्रदीपन और कुष्ठ मूत्रकृच्छ्र रक्तदोष पसलीकी पीड़ा कफ तथा बातनाशक होती है दोनों तुलसियोंमें समान गुण होतेहैं ॥ ३३ ॥

अथमरुआ ॥

मारुत्तोऽसौमरुवकोमरुन्मरुरपिस्मृतः ॥ फणीफणिञ्जकश्चापिप्रस्थपुष्पःसमीरणः । मरुदग्निप्रदोहृद्यस्तीक्ष्णोष्णःपित्तलोलघुः ॥ वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत् । कटुपाकरसोरुच्यस्तिक्तोरूक्षःसुगन्धिकः ॥ ३४ ॥

मरुआके नाम गुण ॥

मारुत्तक मरुवक मरुत मरु फाणि फणिञ्जक प्रस्थपुष्प और समीरण यह मरुआके नामहैं मरुआ अग्निवर्द्धक हृदयकोहित तीक्ष्ण उष्ण पित्तवर्द्धक हलका पाक तथा रसमें कटु रुचिकारक तिक्त रूखा सुगन्धियुक्त और बिच्छू आदिका विष कफ बात कुष्ठ तथा कृमिनाशक होताहै ॥ ३४ ॥

अथदवना ॥

उक्तोदमनकोदान्तोमुनिपुत्रस्तपोधनः । गन्धोत्कटोब्रह्मजटोविनीतःकलपत्रकः ॥ दमनस्तुवरस्तिक्तोहृद्योवृष्यःसुगन्धिकः । ग्रहणीविषकुष्ठासृक्क्लेदकण्डूत्रिदोषजित् ३५ ॥

दोनाके नाम गुण ॥

दमनक दान्त मुनिपुत्र तपोधन गन्धोत्कट ब्रह्मजटा विनीत और कुलपुत्रक यह दोनाके नाम हैं दोना कषाय तिक्त हृदयकोहित वीर्यवर्द्धक सुगन्धित और ग्रहणीविष कुष्ठ रक्तदोष क्लेद खुजली तथा त्रिदोष नाशकहोताहै ॥ ३५ ॥

अथवर्वरी ॥

वर्वरीतुवरीतुंगीखरपुष्पाजगंधिका । पर्णाशस्तत्रकृष्णेतुकटिल्लककुठेरकौ ॥ तत्र शुक्लेऽर्जकःप्रोक्तोवटपत्रस्ततोपरः । वर्वरीत्रितयंरूक्षंशीतंकटुविदाहिच ॥ तीक्ष्णंरुचिकरंहृद्यंदीपनंलघुपाकिच । पित्तलंकफवातासृक्कण्डूकृमिविषापहम् ॥ ३६ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेपुष्पादिवर्गः ॥

बबईके नाम गुण ॥

वर्वरी कवरी तुंडी खरपुष्पा अजगन्धिका और पर्णाश यह बबईके नामहैं कालीबबईको कटिंजर तथा कुठेरक कहतेहैं और श्वेत बबईको अर्जक तथा बटपत्र कहतेहैं यह तीनोंप्रकारकी बबई रूखी शीतल कटु विदाही तीक्ष्ण रुचिकारक हृदयकोहित दीपन शीघ्रपरिपाक होनेवाली पित्तवर्द्धक और कफबात रक्त खुजली कृमि तथा बिषनाशकहोती हैं ॥ ३६ ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेपुष्पादिवर्गः ॥

अथ वटादिवर्गः । तत्रादौवटस्यनामानिगुणाश्च ॥

वटोरक्तफलःशृङ्ग्यन्यग्रोधःस्कन्धजोध्रुवःक्षीरीवैश्रवणावासो बहुपादोवनस्पतिः ॥वटः शीतोगुरुर्ग्राहीकफपित्तव्रणापहः । वर्ण्योविसर्पदाहघ्नः कषायोयोनिदोषहृत् ॥ १ ॥

अथ वट आदि वर्गः ॥

बर्गदके नाम और गुण ॥

बट रक्तफल शृंगी न्यग्रोध स्कन्धज ध्रुव क्षीरी वैश्रवणावास बहुपाद और बनस्पति यह बर्गदके नामहैं बर्गद शीतल भारी ग्राही वर्णकोहित कषाय और कफ पित्तघाव विसर्प दाह तथा योनिदोष नाशक होताहै ॥ १ ॥

अथ पीपर ॥

बोधिद्रुःपिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रोगजाशनः । पिप्पलोदुर्ज्जरःशीतः पित्तश्लेष्मव्रणा स्रजित् ॥ गुरुस्तुवरकोरूक्षो वर्ण्योयोनिविशोधनः ॥ २ ॥

पीपल के नाम गुण ॥

बोधिद्रु पिप्पल अश्वत्थ चलपत्र और गजाशन यह पीपल के नाम हैं पीपल कठिनतासे पचने वाला शीतल पित्तनाशक कफघ्न व्रणतथा रक्तदोष नाशक भारी कषाय रूखा वर्णको हित और योनिदोष का शुद्ध करने वाला होता है ॥ २ ॥

अथ पिप्पलभेदः । गजदण्डसहोराइतिलोके ॥

पारीषोऽन्यःपलाशश्च कपिचूतःकमण्डलः । गर्द्दभाण्डस्कन्दरालःकपीतनसुपार्श्वकः ॥ पारीषोदुर्ज्जरःस्निग्धः कृमिशुक्रकफप्रदः । फलेऽम्लोमधुरोमूलेकषायःस्वादुमज्जकः ॥ ३ ॥

पीपल के भेद (गजदंड सहोरा) के नाम और गुण ॥

पारीश पलाश कपिचूत कमंडल गर्दभांड कन्दराल कपीतन और सुपार्श्वक यह गजदंड सहोरा के नाम हैं गजदंड कठिनता से पचनेवाला स्निग्ध और कृमिवीर्य तथा कफका वर्द्धक होता है इसका फल अम्लतथा मधुर जड़ कसैली और मींगी मीठी होती है ॥ ३ ॥

अथ बेलियापीपर ॥

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदःप्ररोहीगजपादपःस्थालीवृक्षःक्षयतरुःक्षीरीचस्याद्वनस्पतिः॥

नन्दीवृक्षोलघुःस्वादुःतिक्तस्तुवरउष्णकः। कटुपाकरसोग्राहीविषपित्तकफास्रजित् ॥ ४ ॥

वेलियापीपल के नाम गुण ॥

नन्दीवृक्ष अश्वत्थ भेद प्ररोही गजपादप स्थाली वृक्ष क्षयतरु क्षीरी और वनस्पति यह बेलिया पीपल के नाम हैं बेलियापीपल लघु मधुर तिक्त कषाय उष्ण रसतथा पाक में कटु ग्राही और विष पित्त कफतथा रक्तदोष नाशक होता है ॥ ४ ॥

अथ उदुम्बरः ॥

उदुम्बरोजन्तुफलोयज्ञांगोहेमदुग्धकः। उदुम्बरोहिमोरूक्षोगुरुःपित्तकफास्रजित् ॥ मधुरस्तुवरोवर्ण्योव्रणशोधनरोपणः ॥ ५ ॥

गूलर के नाम गुण ॥

उदुंवर जंतुफल यज्ञांग हेम दुग्धक यह गूलर के नाम हैं गूलर शीतल रूखा पित्तनाशक कफ तथा रक्तनाशक मधुर कषाय वर्ण को हित और घावको शुद्ध करके भरनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ कटुम्भरी ॥

काकोदुम्बरिकाफल्गुर्म्मलपूर्ज्जघनेफला। मलपूस्तम्भकृत्तिक्ताशीतलातुवराजयेत् ॥ कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपाण्ड्वर्शकामलाः ॥ ६ ॥

कठिया गूलर के नाम गुण ॥

काकोदुम्वरिका फल्गु मलपू और जघनेफला यह कठिया गूलर के नाम हैं कठिया गूलर स्तंभन तिक्त शीतल कषाय और कफ पित्त घाव श्वेतकुष्ठ कुष्ठ पांडु बवासीर तथा कामला नाशक [redacted] है ॥ ६ ॥

अथ पाकरि ॥

प्लक्षोजटीपर्कंरीचपर्कटीचस्त्रियामपि। प्लक्षःकषायःशिशिरोव्रणयोनिगदापहः ॥ दाहपित्तकफास्रघ्नःशोथहारक्तपित्तहृत् ॥ ७ ॥

पकरिया के नाम गुण ॥

प्लक्ष जटी पर्करी और पर्कटी यह पकरियाके नामहैं पकरिया कषाय शीतल और घाव योनिरोग दाह पित्त कफ रक्त दोष सूजन तथा रक्त पित्त नाशक होता है ॥ ७ ॥

अथ शिरीषः ॥

शिरीषोभण्डिलोभण्डीभण्डीरश्चकपीतनः।शुकपुष्पःशुकतरुर्म्मृदुपुष्पःशुकप्रियः॥ शिरीषोमधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्चतुवरोलघुः। दोषशोथविसर्पघ्नःकासव्रणविषापहः ॥ ८ ॥

सिरस के नाम गुण ॥

शिरीष भंडिल भंडी भंडीर कपीतन शुक पुष्प शुकतरु मृदुपुष्प और शुक प्रिय यह सिरस के नाम हैं सिरस मधुर कषाय तिक्त कुछ उष्ण हलका और त्रिदोष सूजन वीसर्प खांसी घावतथा विष नाशक होता है ॥ ८ ॥

अथ क्षीरवृक्षःपञ्चवल्कलयोर्ल्लक्षणंगुणाश्च ॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारीषप्लक्षपादपाः।पञ्चैतेक्षीरिणीवृक्षास्त्वेषांत्वक्पञ्चवल्कलम्॥

केचित्तुपारीषस्थानेशिरीषंवेतसंपरेवदन्तीतिशेषः। क्षीरवृक्षाहिमावर्ण्यायोनिरोगव्रणाप हाः॥ रूक्षाःकषायामेदोघ्नाविसर्पामयनाशनाः॥ शोथपित्तकफास्रघ्नाःस्तन्याभग्नास्थियो जकाः। त्वक्पञ्चकंहिमंग्राहित्रणशोथविसर्पजित्। तेषांपत्रंहिमंग्राहकफत्रातास्रनुल्लघु॥ विष्टम्भाध्मानजित्तिक्तंकषायंलघुलेखनम्॥ ९॥

क्षीरि वृक्ष और पंचवल्कल के लक्षण और गुण॥

बरगद गूलर पीपल पारीष और पकरिया इनपांच वृक्षोंको क्षीरि वृक्ष कहते हैं और इनके वल्कल को पंचवल्कल कहते हैं कोई २ पारीष के स्थान में सिरस और कोई वेतसका व्यवहार करते हैं क्षीरि वृक्ष शीतल वर्णको हित रूखे कषाय दुग्धवर्द्धक टूटीहड्डी के जोड़ने वाले और योनि रोग घाव मेदके दोष वीसर्प सूजन पित्त कफ तथारक्त दोष नाशक होते हैं पंचवल्कल शीतल ग्राही और घाव सूजन वीसर्प नाशक इनके पत्ते शीतल ग्राही हलके तिक्त कषाय लेखन और कफ बात रक्त दोष विष्टंभ तथा आध्मानरोग नाशक होते हैं॥ ९॥

अथ शालः॥

शालस्तुसर्जकाश्वर्याश्वकर्णिकाशस्यसम्बरः। अश्वकर्णःकषायःस्याद्व्रणस्वेदकफकृ मीन्॥ व्रध्मविद्रधिवाधिर्य्ययोनिकर्णगदान्हरेत्॥ १०॥

शालके नाम गुण॥

शाल सर्ज काश्वर्य अश्वकर्णिका और शस्यसम्बर यह शालके नामहैं शाल कषाय और घाव स्वेद कफ कृमि बद विद्रधि बधिरता योनिरोग तथा कर्णरोग नाशकहोता है॥ १०॥

अथशालभेदः॥

सर्ज्जकोऽजककर्णःस्याच्छालोमरिचपत्रकः। अजकर्णःकटुस्तिक्तःकषायोष्णोऽयपो हति॥ कफपाण्डुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रणान्॥ ११॥

शालभेद के नाम गुण॥

सर्ज्जक अजकर्ण शाल और मरिच पत्रक यह शालभेदके नामहैं शालभेद कटु तिक्त कषाय उष्ण और कफ पांडु कर्णरोग प्रमेह कुष्ठ विष तथा घावको दूरकरता है॥ ११॥

अथशालइ॥

शल्लकीगजभक्ष्याचसुवहासुरभीरसा। महेरुणाकुन्दुरुकीवल्लकीचबहुस्रवा॥ शल्ल कीतुवराशीतापित्तश्लेष्मातिसारजित्। रक्तपित्तव्रणहरीपुष्टिकृत्समुदीरिता॥ १२॥

सलई के नाम गुण॥

शल्लकी गजभक्ष्या सुवहा सुरभी रसा महेरुणा कुन्दुरुकी शल्लकी और बहुस्रवा यह सलईके नामहैं सलई कषाय शीतल पुष्टिकारक और पित्त कफ अतीसार रक्तपित्त तथा घावनाशकहोतीहै॥ १२॥

अथशीसव॥

(कपिलवर्णाशीसव) शिंशिपापिच्छिलाश्यामा कृष्णसाराचसागुरुः। कपिलासैवमु निभिर्भस्मगर्भैतिकीर्त्तिता॥ शिंशिपाकटुकातिक्ताकषायाशोषहारिणी। उष्णवीर्य्याह

रेन्मेदःकुष्ठश्वित्रवमिकृमीन् ॥ वस्तिरुग्व्रणदाहास्रबलासानुगर्भपातिनी ॥ १३ ॥

शीशम और कपिलवर्ण शीशम के नाम गुण ॥

शिंशपा पिच्छिला श्यामा कृष्णसारा और अगुरु यह शीशमके नाम हैं कपिलवर्ण शीशमको भस्मगर्भाकहते हैं शीशम कटु तिक्त कषाय वीर्यमें उष्ण गर्भगिरानेवाली और शोष मेद कुष्ठ श्वेतकुष्ठ छर्दि कृमि मूत्राशयकीपीड़ा घाव दाह रक्तदोष तथा कफनाशक होताहै ॥ १३ ॥

अथकोह ॥

ककुभोऽर्जुननामाख्योनदीसर्ज्जश्चकीर्त्तितः । इन्द्रद्रुर्वीरवृक्षश्चवीरश्चधवलःस्मृतः॥ककुभःशीतलोहृद्यःक्षतक्षयविषास्रजित्॥मेदोमेहव्रणान्हंतितुवरःकफपित्तहृत्॥१४॥

अर्जुनवृक्ष के नाम गुण ॥

ककुभ अर्जुननामाख्य नदीसर्ज इन्द्रद्रु वीरवृक्ष वीर और धवल यह अर्जुनके नामहैं अर्जुन शीतल हृदयकोहित कषाय और घाव क्षय विष रक्तदोष मेद प्रमेह घाव कफ तथा पित्तनाशक होताहै॥१४॥

अथासनविजयसारइतिच ॥

बीजकःपीतसारश्चपीतशालकइत्यपि । बन्धूकपुष्पःप्रियकःसर्ज्जकश्चासनःस्मृतः ॥ बीजकःकुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगुदकृमीन्॥हन्तिश्लेष्मास्रपित्तञ्चत्वचःकेश्योरसायनः॥१५॥

विजयसार के नाम गुण ॥

बीजक पीतसार पीतशालक बन्धूकपुष्प प्रियकसर्जक और आसन यह बिजयसार के नाम हैं बिजयसार कुष्ठ वीसर्प श्वेतकुष्ठ प्रमेह गुदा के कृमि कफ तथा रक्त पित्तनाशक त्वचाकोहित केशोंकोउपकारी और रसायनहोताहै ॥ १५ ॥

अथ खदिर ॥

खदिरोरक्तसारश्चगायत्रीदन्तधावनः । कण्टकीबालपत्रश्चबहुशल्यश्चयज्ञियः ॥ खदिरःशीतलोदन्त्यःकण्डूकासारुचिप्रणुत् । तिक्तकषायोमेदोघ्नःकृमिमेहज्वरव्रणान् ॥ श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान्हरेत् ॥ १६ ॥

खैर (कत्था) के नाम गुण ॥

खदिर रक्तसार गायत्री दन्तधावन कंटकी बालपत्र बहुशल्य और यज्ञिय यह कत्थे के नाम हैं कत्था शीतल दातोंकोहित तिक्त कषाय और खुजली खांसी अरुचि मेद कृमि प्रमेह ज्वर घाव श्वेतकुष्ठ सूजन आम पित्त रक्तदोष पांडु कुष्ठ तथा कफनाशक होताहै ॥ १६ ॥

अथ श्वेतखदिरपपरीखयरइतिच ॥

खदिरःश्वेतसारोऽन्यःकदरःसोमवल्कलः।कदरोविशदोवर्ण्योमुखरोगकफास्रजित्॥१७॥

पपड़ियाकत्थे के नाम गुण ॥

खदिर श्वेतसार कदर और सोमवल्कल यह पपड़ियाकत्थेके नामहैं पपड़ियाकत्था विशद वर्णकेहित और मुखरोग कफ तथा रक्तदोष नाशकहोताहै ॥ १७ ॥

अथ इरिमेद दुर्गन्धखदिरइतिच ॥

इरिमेदोविट्खदिरःकालस्कंधोऽरिमेदकः । इरिमेदःकषायोष्णोमुखदंतगदास्रजित् ॥
हन्तिकण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठविषव्रणान् ॥ १८ ॥

दुर्गन्धित खदिर के नाम गुण ॥

इरिमेद विट्खदिर कालस्कन्ध और अरिमेदक यह इसकेनामहैं दुर्गन्धित खदिर कषाय उष्ण और मुखरोग दन्तरोग रक्तदोष खुजली विष कफ कृमि कुष्ठ घाव तथा ग्रहदोषनाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथरोहितकः ॥

रोहीतकोरोहितकोरोहीदाड़िमपुष्पकः।रोहीतकःप्लीहघातीरुच्योरक्तप्रसाधनः ॥१९ ॥

रोहितक (लालकरंज) नामगुण ॥

रोहीतक रोहितक रोही और दाड़िम पुष्पक यह रोहितक के नामहैं रोहितक प्लीहा नाशक रुचि-कारक और रुधिर का शुद्धकरने वाला होताहै ॥ १९ ॥

अथबबूल ॥

बबूलःकिङ्किरातःस्यात्किङ्किराटःसपीतकः।सएवकथितस्तज्ज्ञैराभाषपदमोदिनी ॥
बब्बूलःकफनुद्ग्राहीकुष्ठकृमिविषापहः ॥ २० ॥

बबूल के नामगुण ॥

बबूल किंकिरात किंकिराटसपीतक आभाष और पदमोदिनी यह बबूलकेनामहैं बबूलग्राही और कफ कुष्ठ कृमि तथा विषनाशकहोताहै॥२०॥ अथरीठा ॥

अरिष्टकस्तुमांगल्यःकृष्णवर्णोऽर्थसाधनःरक्तबीजःपीतफेनःफेनिलोगर्भपातनः॥२१॥

रीठा के नाम गुण ॥

अरिष्टक मांगल्य कृष्णवर्ण अर्थसाधन रक्तबीज पीतफेन फेनिल और गर्भपातन यहरीठाकेनाम हैं रीठा त्रिदोषनाशक ग्रहदोषनाशक और गर्भगिरानेवालाहोताहै ॥ २१ ॥

अथपितौजिआ ॥

पुत्रजीवोगर्भकरोयष्टीपुष्पोऽर्थसाधकः । पुत्रजीवोगुरुर्वृष्योगर्भदःश्लेष्मवातहृत् ॥
सृष्टमूत्रमलोरूक्षीहिमःस्वादुःपटुःकटुः ॥ २२ ॥

पुत्रजीवा (पतौजिया) के नाम गुण ॥

पुत्रजीव गर्भकर यष्टीपुष्प और अर्थसाधक यह पुत्रजीवाकेनाम हैं पुत्रजीवा गुरु वीर्य्यबर्द्धक गर्भदायक कफघ्न बातनाशक मलमूत्रका निकासनेवाला रूखा शीतलमधुर लवण तथाकटुहोताहै २२॥

अथइंगुदी ॥

इंगुदोऽङ्गारवृक्षश्चतिक्तकस्तपसद्रुमः । इंगुदःकुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषकृमीन् ॥ ह
न्त्युष्णःश्वित्रशूलघ्न स्तिक्तकःकटुपाकवान् ॥ २३ ॥

गोंदी के नाम गुण ॥

इंगुद अंगारवृक्ष तिक्तक और तापसद्रुम यह गोंदी के नाम हैं गोंदी कुष्ठ भूतादिकोंका आवेश

ग्रहदोष घाव बिष कृमि श्वेत कुष्ठ तथा शूल नाशक उष्ण तिक्त और पाकमें कटु होती है ॥ २३ ॥

अथ जिंगिनी ॥

जिंगिनीझिंगिनीझिंगीसुनिर्य्यासाप्रमोदिनी । जिंगिनीमधुरासोष्णाकषायाव्रणशोधिनी॥ कटुकाव्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटुः । तमालःशालवद्वेद्योदाहविस्फोटहृत्पुनः २४॥

जिंगनी के नामगुण ॥

जिंगिनी झिंगिनी झिंगी सुनिर्यासा और प्रमोदिनी यह जिंगिनी के नामहैं जिंगिनी मधुर उष्ण कषाय व्रण शोधक कटु और घाव हृदयरोग वात तथा अतीसार नाशक होती है यह तमाल और शाल के समान दाह तथा विस्फोटक नाशक होती है ॥ २४ ॥

अथ तूणि ॥

तूणीस्तुन्नकआपीनस्तुणिकःकच्छकस्तथा । कठेरकःकान्तलकोनान्दिवृक्षश्चनंदकः॥ तुणिरक्तःकटुःपाकेकषायोमधुरोलघुः।तिक्तोग्राहीहिमोवृष्योव्रणकुष्ठास्रपित्तजित्॥२५ ॥

तुनिके नाम गुण ॥

तूणी तुन्नक आपीन तुणिक कच्छक कठेरक कान्तलक नन्दि वृक्ष और नन्दक यहतुनिके नाम हैं तुनि पाकमें कटु कषाष मधुर तिक्त हलका ग्राही शीतल वीर्य बर्द्धक और घाव कुष्ठ तथा रक्त पित्त नाशक होता हैं ॥ २५ ॥

अथ भूर्जपत्र ॥

भूर्जपत्रःस्मृतोभूर्जचर्म्मीबहुलबल्कलः । भूर्ज्जोभूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित् ॥ कषायोराक्षसघ्नश्चमेदोविषहरःपरः ॥ २६ ॥

भोजपत्रके नाम गुण ॥

भूर्जपत्र भूर्जचर्म्मी और बहुबल्कल यह भोजपत्र के नाम हैं भोजपत्र कषाय और भूतावेश ग्रह दोष कफ कर्णरोग रक्त पित्त राक्षस मेद तथाविषके नाशकरनेमें अत्यन्त श्रेष्ठ होता है ॥ २६ ॥

अथ पलाश ॥

पलाशःकिंशुकःपर्णोयज्ञियोरक्तपुष्पकः । क्षारश्रेष्ठोवातहरोब्रह्मवृक्षःसमिद्वरः ॥ पलाशोदीपनोवृष्यःसरोष्णव्रणगुल्मजित् । कषायःकटुकस्तिक्तःस्निग्धोभग्नसन्धानकृद्दोषग्रहणयर्शकृमीन्हरेत् । तत्पुष्पंस्वादुपाकेतुकटुतिक्तंकषायकम् ॥ वातलंकफपित्तास्रकृच्छ्रजिद्ग्राहिशीतलम् । तृड्दाहशमकंवातरक्तकुष्ठहरम्परम् ॥ फलंलघूष्णंमेहार्शकृमिवातकफापहम् । विपाकेकटुकंरूक्षंकुष्ठगुल्मोदरव्रणुत् ॥ २७ ॥

पलाशके नामगुण ॥

पलाश किंशुक पर्ण यज्ञिय रक्तपुष्पक क्षारश्रेष्ठ बातहर ब्रह्मवृक्ष और समिद्वर यह पलाश के नाम हैं पलाश दीपन वीर्यबर्द्धक दस्तावर उष्ण कषाय कटु तिक्त स्निग्ध टूटेकोजोड़नेवाला और घाव गुल्म गुदाके उत्पन्नरोग त्रिदोष ग्रहणी बवासीर तथा कृमिनाशक होताहै पलाश के पुष्प पाक में मधुर कटु तिक्त कषाय बादी ग्राही शीतल और कफ रक्तापेत्त मूत्र कृच्छ्र तृषा दाह बात रक्त

तथा कुष्ठ नाशक होतेहैं पलाशकाफल हलका उष्ण पाक में कटु रूखा और प्रमेह बवासीर कृमि बात कफ कुष्ठ गुल्म तथा उदररोग नाशक होताहै ॥ २७ ॥

अथ शाल्मलिः ॥

शाल्मलिस्तुभवेन्मोचापिच्छिलापूरणीतिच । रक्तपुष्पास्थिरायुश्चकण्टकाढ्याचतूलिनी । शाल्मलीशीतलास्वाद्वीरसेपाकेरसायनी । श्लेष्मलापित्तवातासृहारिणीरक्तपित्तजित् ॥ २८ ॥ सेमरके नामगुण ॥

शाल्मलि मोचा पिच्छिला पूरणी रक्तपुष्पा स्थिरायु कंटकाढ्या और तूलिनी यह सेमर के नाम हैं सेमर शीतल रसतथा पाक में मधुर रसायन कफ कारक और पित्त बात रक्त तथा रक्तपित्त नाशक होती है ॥ २८ ॥

अथ मोचरसः ॥

निर्य्यासःशाल्मलेःपिच्छाशाल्मलीवेष्टकोऽपिच । मोचास्रावोमोचरसोमोचनिर्य्यास इत्यपि ॥ मोचास्राहिमोग्राहीस्निग्धोवृष्यःकषायकः ॥ प्रवाहिकातिसारामकफपित्तासृदाहनुत् ॥ २९ ॥ मोचरसके नाम गुण ॥

सेमरके गोंदको पिच्छा शाल्मलीवेष्टक मोचास्राव मोचरस और मोचनिर्यास कहते हैं मोचरस शीतल ग्राही स्निग्ध वीर्य्यवर्द्धक कषाय और प्रवाहिका अतीसार आम कफ पित्त रक्त तथा दाहनाशक होता है ॥ २९ ॥

अथ कूटशाल्मलिः ॥

कुत्सितःशाल्मलिःप्रोक्तोरोचनःकूटशाल्मलिः । कूटशाल्मलिकस्तिक्तःकटुकःकफवातनुत्॥भेद्युष्णःप्लीहजठरःयकृद्गुल्मविषापहः। भूतानाहविबन्धासृमेदःशूलकफापहः ॥३०॥ कालीसेमरके नाम गुण ॥

कुत्सित शाल्मलि रोचन और कूट शाल्मलि यह काली सेमरके नामहैं काली सेमर तिक्त कटु भेदक उष्ण और कफ बात प्लीहा उदर यकृत् गुल्म बिष भूतावेश आनाह विबंध रक्तदोष मेद शूल तथा कफ नाशक होती है ॥ ३० ॥

अथ धवः ॥

धवोघटोनंदितरुःस्थिरोगौरीधुरन्धरः । धवःशीतप्रमेहार्शःपाण्डुतिक्तकफापहः ॥ मधुरस्तुवरस्तस्यफलंचमधुरंमनाक् ॥ ३१ ॥ धवई के नाम गुण ॥

धवई घट नन्दितरु स्थिर गौरि और धुरन्धर यह धवई के नामहैं धवई शीतल मधुर कषाय और प्रमेह बवासीर खुजली पित्त तथा कफ नाशक होती है इसका फल कुछ मधुर होताहै ॥ ३१ ॥

अथ धामिन ॥

धन्वंगस्तुधनुर्वृक्षोगोत्रवृक्षःसुतेजनः । धन्वंगःकफपित्तासृकासहृत्तुवरोलघुः ॥ दंहणोबलकृद्वृक्षःसंधिकृत्व्रणरोपणः ॥ ३२ ॥

धामिन के नाम गुण

धन्वंग धनुर्वृक्ष गोत्रवृक्ष और सुतेजन यह धामिनके नामहैं धामिन कफ पित्त रक्तदोष तथा खांसी की नाशक कषाय हलकी धातुवर्द्धक बलकारक रूखी टूटेहुए को जोड़नेवाली और घावको भरने वाली होतीहै ॥ ३२ ॥

अथ करीर ॥

करीरःक्रकरोपत्रोग्रन्थिलोमरुभूरुहः । करीरःकटुकस्तिक्तःस्वेद्युष्णोभेदनःस्मृतः ॥ दुर्न्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ ३३ ॥

करील के नामगुण ॥

करील क्रकर अपत्र ग्रंथिर और मरुभूरुह यह करील के नाम हैं करील कटु तिक्त स्वेदकारक उष्ण भेदक और बवासीर कफ बात आम गरदोष तथा व्रणनाशक होताहै ॥ ३३ ॥

अथ सहोरा ॥

शाखोटःपीतफलकोभूतावासःस्वरच्छदः । शाखोटोरक्तपित्तार्शोवातश्लेष्मातिसारजित् ॥ ३४ ॥

सहोराके नामगुण ॥

शाखोट पीत फलक भूताबास और स्वरच्छद यह सहोरेके नामहैं सहोरा रक्तपित्त बवासीर बात कफ और अतीसार नाशक होताहै ॥ ३४ ॥

अथ वरुणः ॥

वरुणोवरुणःसेतुस्तिक्तशाकोऽग्निदीपनः । कषायोमधुरस्तिक्तःकटुकोरूक्षकोलघुः ३५॥

वरना के नाम गुण ॥

वरुण वराण सेतु तिक्तशाक और अग्निदीपन यह वरना के नामहैं वरना पित्तवर्द्धक भेदक अग्नि दीपक कषाय मधुर तिक्त कटु रूखा हलका और कफ मूत्रकृच्छ्र पथरी बात गुल्म बात रक्त तथा कृमि नाशक होताहै ॥ ३५ ॥

अथ कटुंभी ॥

कटभीस्वादुपुष्पश्चमधुरेणुःकटुम्भरः । कटभीतुप्रमेहार्शः नाड़ीव्रणविषकृमीन् । हन्त्युष्णाकफकुष्ठघ्नीकटूरूक्षाचकीर्त्तिता । तत्फलंतुवरंज्ञेयंविशेषात्कफशुक्रहृत् ॥ ३६ ॥

कटभी के नाम गुण ॥

कटभी स्वादुपुष्प मधुरेणु और कटुंभर यह कटभी के नामहैं कटभी प्रमेह बवासीर नासूर बिष कृमि कफ तथा कुष्ठ नाशक उष्ण कटु और रुक्ष होताहै इसके फल में इसीके समान गुण होते हैं यह बिशेष करके कफ तथा वीर्य का नाशक होताहै ॥ ३६ ॥

अथ मोक्षपलाशवत्पर्वतवृक्षः ॥

मोक्षस्तुमोक्षकोऽपिस्या द्वोलीढगोलिहस्तथा । क्षारश्रेष्ठःक्षारवृक्षोद्विविधःश्वेतकृष्णकः । मोक्षकःकटुकस्तिक्तोग्राह्युष्णःकफवातहृत् ॥ विषमेदोगुल्मकण्डूवस्तिरुक्कृमिशुक्रनुत् ॥ ३७ ॥

मोक्ष (पलाश के समान पहाड़ी वृक्ष) के नाम और गुण ॥

मोक्ष मोक्षक गोलाढ़ गोलिह क्षारश्रेष्ठ क्षारवृक्ष इसको घंटा पाटला भी कहतेहैं यह श्वेत और श्याम दोभेदका होताहै मोक्ष कटु तिक्त ग्राही उष्ण और कफ बात मेद बिष गुल्म खुजली मूत्राशय की पीड़ा कृमितथा वीर्य नाशक होताहै ॥ ३७ ॥

अथ जलशिरषिंटिंटिणिइतिच ॥

शिरिषिकाटिण्टिणिकादुर्बलाम्बुशिरीषिका। त्रिदोषविषकुष्ठार्शोहरीवारिशिरीषिका ३८॥

जलशिरसके नाम गुण ॥

शिरीशिका टिंटिणिका दुर्बला और अम्बुशिरीशिका यह जल शिरसके नाम हैं जल शिरस त्रिदोष बिष कुष्ठ तथा बवासीर नाशक होताहै ॥ ३८ ॥

अथशमी ॥

शमीशक्तुफलातुंगाकेशहन्त्रीफलाशिवा । मंगल्याचतथालक्ष्मीशमीरःसाल्पिका स्मृता ॥ शमीतिक्ताकटुःशीताकषायारेचनीलघुः । कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःकृमिजित् स्मृता ॥ ३९ ॥

शमीके नाम गुण ॥

शमी शक्तु फलातुंगा केशहंत्री फलाशिवा मंगल्या और लक्ष्मी यह शमीके नाम हैं छोटी शमीको शमीर कहतेहैं शमी तिक्त कटु शीतल कषाय दस्तावर हलकी और कफ खांसी भ्रम श्वास कुष्ठ बवासीर तथा कृमिनाशक होती है ॥ ३९ ॥

अथ छितवन ॥

सप्तपर्णीविशालत्वक्शारदोविषमच्छदः । सप्तपर्णीव्रणश्लेष्मवातकुष्ठास्रजन्तुजित् ॥ दीपनःश्वासगुल्मघ्नःस्निग्धोष्णस्तुवरःसरः ॥ ४० ॥

छितवनके नाम गुण ॥

सप्तपर्ण विशालत्वक् शारद और बिष मच्छद यह छितवन के नाम हैं छितवन घाव कफ बात कुष्ठ रक्तदोष कृमि श्वास तथा गुल्म नाशक दीपन स्निग्ध उष्ण कषाय तथा दस्तावर होताहै ४० ॥

अथ तिनिशःतिरिच्छइतिच ॥

तिनिशःस्पन्दनोनेमीरथद्रुर्वञ्जुलस्तथा । तिनिशःश्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहजित् ॥ तुवरःश्वित्रदाहघ्नोव्रणपाण्डुकृमिप्रणुत् ॥ ४१ ॥

तिनिश के नाम गुण ॥

तिनिश स्पन्दन नेमी रथद्रु और वंजुल यह तिनिश के नामहैं तिनिश कफ पित्त रक्तदोष मेद कुष्ठ प्रमेह श्वेत कुष्ठ दाह घाव पांडु तथा कृमि नाशक और कषैला होताहै ॥ ४१ ॥

अथ भुइँसहा ॥

भूमीसहोद्वारदारुवरदारुःस्वरच्छदः । भूमीसहस्तुशिशिरोरक्तपित्तप्रसादनः ४२॥

इतिश्रीभावप्रकाशेवटादिवर्गः ॥

भुइँसहाके नाम गुण ॥

भूमीसह द्वारदारु वरदारु और स्वरच्छद यह भुइँसहा के नामहैं भुइँसहा शीतल और रक्तपित्त करनेवाला होताहै ॥ ४२ ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेवटादिवर्गः ॥

अथाम्रादिफलवर्गः । तत्रादावाम्रस्यनामानिगुणाश्च ॥

आम्रःप्रोक्तोरसालश्चसहकारोऽतिसौरभः । कामांगोमधुदूतश्चमाकन्दःपिकवल्लभः॥ आम्रपुष्पमतीसारंकफपित्तप्रमेहनुत् । असृग्दुष्टिहरंशीतंरुचिकृद्ग्राहिवातलम् ॥ आम्रंबालंकषायाम्लंरुच्यंमारुतपित्तकृत् । तरुणन्तुनदत्यम्लंरूक्षंदोषत्रयास्रकृत् ॥ आम्रमामंत्वचाहीनमातपेऽतिविशोषितम्। अम्लंस्वादुकषायंस्याद्भेदनंकफवातजित् ॥ पक्वन्तुमधुरंवृष्यंस्निग्धंबलसुखप्रदम् । गुरुवातहरंह्रद्यंवर्ण्यंशीतमपित्तलम् ॥ कषायानुरसंवह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् । तदेववृक्षसम्पक्वंगुरुवातहरंपरम् ॥ मधुराम्लरसंकिञ्चिद्भवेत्पित्तप्रकोपनम्। आम्रकृत्रिमपक्वञ्चतद्भवेत्पित्तनाशनम् ॥ रसस्याम्लस्यहीनस्तु माधुर्य्याच्चविशेषतः । उषितंतत्परंरुच्यंबल्यंवीर्य्यकरंलघु ॥ शीतलंशीघ्रपाकिस्याद्वात पित्तहरंसरम्। तद्रसोगालितोबल्योगुरुवातहरःसरः॥ अह्रद्यस्तर्पणोऽतीवबृंहणःकफवर्द्धनः । तस्यखण्डंगुरुपरंरोचनंचिरपाकिच ॥ मधुरंबृंहणंबल्यंशीतलंवातनाशनम् । वातपित्तहरंरुच्यंबृंहणंबलवर्द्धनम् ॥ वृष्यंवर्णकरंस्वादुदुग्धाम्लंगुरुशीतलम् । मन्दानलत्वंविषमज्वरञ्चरक्तामयंबद्धगुदोदरञ्च ॥ आम्रातियोगोनयनामयंवाकरोतितस्मादतिताम्रनाद्यात् । एतदम्लाम्रविषयंमधुराम्लपरंनतु ॥ मधुरस्यपरंनेत्राहितंत्वाद्यागुणायतः । श्रुण्ठ्याम्भसोऽनुपानंस्यादाम्राणामतिभक्षणे ॥ जीरकंवाप्रयोक्तव्यंसहसौवर्च्चलेनच ॥

अथ आम्रादि फल वर्गः । आमके नाम गुण ॥

आम्र रसाल सहकार अतिसौरभ कामांग मधुदूत आकन्द और पिकवल्लभ यह आमके नाम हैं आमका और अतीसार कफ पित्त प्रमेह तथा रक्तदोष नाशक शीतल रुचिकारक ग्राही और बादी होताहै इसकी केरी कषाय अम्ल रुचिकारक और बात पित्त वर्द्धक होती है कच्चा आम अत्यन्त खट्टा रूखा त्रिदोषकारक और रुधिर का बिगारनेवाला होताहै छिलका छीलकर धूपमें सुखाया हुआ कच्चा आम खट्टा मधुर कषैला भेदक और कफ तथा बात नाशक होताहै पक्काआम मधुर वीर्यवर्द्धक स्निग्ध बलकारी सुखद भारी बात नाशक हृदयको हित वर्णको हित शीतल पित्तका नहीं बढ़ानेवाला कुछ कषैला और अग्निकफ तथा वीर्यका बढ़ानेवाला होताहै वृक्षका पकाहुआ आम मधुर अम्ल भारी अत्यन्त बात नाशक और कुछ पित्तवर्द्धक होताहै पालकाआम पित्तनाशक खट्टापन न होनेसे अधिक मधुरताके कारण अत्यन्त पित्तनाशक होताहै बासीपकाहुआ आम बलकारक अत्यन्त रुचिकारक वीर्य वर्द्धक हलका शीतल शीघ्र पकनेवालाबात पित्तनाशक और दस्तावर होताहै पक्केआमका निकालाहुआ रस बलकारक भारी बातनाशक दस्तावर हृदयको अहित तृप्ति कारक बहुत धातुवर्द्धक और कफवर्द्धक होताहै आमके तरासे हुऐ टुकड़े भारीरुचि देरमें पचनेवाले मधुर धातुवर्द्धक बलकारक शीतल

और वातनाशक होते हैं दूध के साथ आम मधुर वीर्यवर्द्धक बर्णको हित भारी शीतल बात पित्त नाशक रुचिकारक धातुवर्द्धक और बलका बढ़ानेवालाहोता है बहुतआम खाने से मंदाग्नि विषम ज्वर रुधिररोग उदर तथा गुदाका जकड़ना और नेत्ररोगहोते हैं इस्से बहुत आम न खाना चाहिये यहसबबातें खट्टे आम के विषय में कहीगई हैं मीठे आम के विषय में नहीं क्योंकि मीठे आम के अत्यन्त नेत्रको हितकारी आदिक गुणकहेगये हैं बहुत आम खानेमें सोंठिकापानी पीछे पीनाचाहिये अथवा जीरा और कालेनोन का सेवनकरना चाहिये ॥ १ ॥

अथाम्रावर्त्तस्यलक्षणंगुणाश्च॥

पक्वस्यसहकारस्यपटेविस्तारितोरसः । धर्म्मशुष्कोमुहुर्दत्तआम्रावर्त्तइतिस्मृतः ॥ (अम्बवटइतिलोके) आम्रावर्त्तस्तृषाच्छर्द्दिवातपित्तहरःसरः । रुच्यःसूर्य्यांशुभिःपाकाल्लघुश्चसहिकीर्तितः ॥ २ ॥ आमरस के लक्षण और गुण ॥

पके आमका रस कपड़ेपर फैला के धूप में सुखायाहुआ और उसपर बारबार टपकाया हुआ दलदार सूखाहुआ आम्रावर्त्त कहलाताहै यह आम्रावर्त्त तृषा छर्दि वात तथा पित्त नाशक दस्तावर रुचि कारक और विशेष करके धूपमेंपकनेसे हलकाहोता है ॥ २ ॥

अथकोइलीया ॥

आम्रबीजंकषायंस्याच्छर्द्यतीसारनाशनम् । ईषदम्लञ्चमधुरंतथाहृदयदाहनुत् ॥ (अथनवपल्लवः) आम्रस्यपल्लवंरुच्यंकफपित्तविनाशनम् ॥ ३ ॥

आमकी बिजलीके गुण ॥

आमकी बिजली कषैली कुछखट्टी मधुर और छर्दि अतीसार तथा हृदय के दाहकी नाशक होती है आमके नवीनपत्ते रुचिकारक और कफ तथा पित्तनाशकहोते हैं ॥ ३ ॥

अथअम्बरा ॥

आम्रातकःपीतनश्चमर्कटाम्रःकपीतनः ॥ आम्रातमम्लंवातघ्नंगुरूष्णंरुचिकृत्सरम्॥ पक्वन्तुतुवरंस्वादुरसेपाकेहिमंस्मृतम् ॥ तर्पणंश्लेष्मलंस्निग्धंवृष्यंविष्टम्भिबृंहणम्।गुरु बल्यम्मरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित् ॥ ४ ॥

अमराके नाम गुण ॥

आम्रातक पीतन मर्कटाम्र और कपीतन यह आम्रा के नाम हैं कच्चाअमरा अम्ल बातनाशक भारी उष्ण रुचिकारक और दस्तावरहोता है पक्काअमरा कषाय मधुर पाक में मधुर शीतल तृप्ति कारक कफवर्द्धक स्निग्ध वीर्यवर्द्धक विष्टंभी धातुवर्द्धक भारी बलकारक और बात पित्त क्षत दाह क्षय तथा रक्तदोष नाशकहोताहै ॥ ४ ॥

अथराजाम्रः ॥

राजाम्रष्टङ्कआम्रातःकामाङ्कोराजपुत्रकः । राजाम्रन्तुवरंस्वादुविशदंशीतलंगुरु ॥ ग्राहिरूक्षंविबन्धाध्मवातकृत्कफपित्तनुत् ॥ ५ ॥

राजाम्र के नाम गुण ॥

राजाम्र टंक आम्रात कामाङ्क और राजपुत्रक यह राजाम्र के नामहैं राजाम्र कषाय मधुर विशद

शीतल भारी ग्राही रूखा विबन्ध तथा आध्मान करने वाला बादी और कफ पित्त नाशकहोताहै ५॥

अथकोशाम्रकोशम्भट्टतिच ॥

कोशाम्रउक्तःक्षुद्राम्रःकृमिवृक्षःसुकोशकः । कोशाम्रःकुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः ॥
तत्फलंग्राहिवातघ्नमम्लोऽम्लंगुरुपित्तलम् । पक्वन्तुदीपनंरुच्यंलघूष्णंकफवातनुत्६॥

कोशाम्र कोशम्भके नाम गुण ॥

कोशाम्र क्षुद्राम्र कृमिवृक्ष और सुकोशक यह कोशाम्रके नामहैं कोशाम्र कुष्ठ सूजन रक्त पित्त व्रण तथा कफ नाशकहोताहै कोशाम्रका कच्चाफल ग्राही बात नाशक खट्टा उष्ण भारी और पित्त वर्द्धक होताहै कोशाम्रका पक्काफल दीपन रुचिकारक हलका उष्ण और कफ तथा बात नाशकहोताहै ६॥

अथ कटहर ॥

पणशःकण्टकिफलःपणसोऽतिबृहत्फलः। पणशंशीतलंपक्वंस्निग्धंपित्तानिलापहम्॥
तर्पणंबृंहणंस्वादुमांसलंश्लेष्मलंभृशम् । बल्यंशुक्रप्रदंहन्तिरक्तपित्तक्षतव्रणान् ॥ आ
मन्तदेवविष्टम्भिवातलन्तुवरंगुरु । दाहकृत्मधुरंबल्यंकफमेदोविवर्द्धनम् ॥ पणसोद्भूत
बीजानिबृष्याणिमधुराणिच । गुरूणिबद्धविट्कानिसृष्टमूत्राणिसंवदेत् (अन्यच्च) मज्जा
पणसजोबृष्योवातपित्तकफापहः । विशेषात्पणसोवर्ज्यःगुल्मिभिर्मन्दवह्निभिः ॥ ७ ॥

कटहल के नाम गुण ॥

पणश कण्टकिफल पणस और अतिबृहत्फल यह कटहल के नामहैं पक्काकटहल शीतल स्निग्ध तृप्तिकारक धातुबर्द्धक मधुर मांसबर्द्धक अत्यन्तकफकारक बलकारक वीर्यबर्द्धक और पित्त बात रक्तपित्त क्षत तथा घावनाशकहोता है कच्चाकटहल विष्टंभी बादी कफैला मधुर भारी दाहकारक बलकारक और कफ तथा मेदबर्द्धक होताहै कटहलकेबीज बीर्य्यबर्द्धक मलरोधक मधुर भारी और मूत्र निकालनेवाले होते हैं और भी कहागयाहै कि कटहल के बीज वीर्य्यबर्द्धक और बात पित्त तथा कफ नाशक होते हैं गुल्मरोगवाले और मन्दाग्नि पुरुषों को कटहल अत्यन्त वर्जनीय है ॥ ७ ॥

अथ बड़हर ॥

लकुचःक्षुद्रपणसोलकुचोडहुइत्यपि । आमंलकुचमुष्णञ्चगुरुविष्टम्भकृत्तथा ॥ म
धुरञ्चतथाम्लञ्चदोषत्रितयरक्तकृत् । शुक्राग्निनाशनंवापिनेत्रयोरहितंस्मृतम् ॥ सुपक्व
न्तत्तुमधुरमम्लञ्चानिलपित्तहृत् । कफवह्निकरंरुच्यंवृष्यंविष्टम्भकञ्चतत् ॥ ८ ॥

बड़हल के नाम गुण ॥

लकुच क्षुद्रपणस लिकुच और डहु यह बड़हलके नामहैं कच्चाबड़हल उष्ण भारी विष्टंभी मधुर खट्टा त्रिदोषकारी रुधिरका बिगाड़नेवाला वीर्यनाशक अग्निनाशक और नेत्रोंको अहितहोताहै पक्का बड़हल मधुर खट्टा बादी पित्त कफ अग्नि तथा विष्टंभकारी रुचिकारक और बीर्यबर्द्धकहोताहै॥ ८ ॥

अथकदली ॥

कदलीवारणामोचाम्बुसारांशुमृतीफला॥ मोचाफलंस्वादुशीतंविष्टम्भिकफनुद्गुरु ॥
स्निग्धंपित्तासृतृट्दाहक्षतक्षयसमीरजित् । पक्वंस्वादुहिमंपाकेस्वादुवृष्यञ्चबृंहणम् ॥

क्षुत्तृष्णानेत्रगदहन्मेहघ्नंरुचिमांसकृत्। माणिक्यमर्त्यामृतचम्पकाद्या भेदाःकदल्याबहवो ऽपिसन्ति ॥ उक्तागुणास्तेष्वधिकाभवन्तिनिर्दोषतास्याल्लघुताचतेषाम् ॥ ९ ॥

केलेके नाम गुण ॥

कदली वारणा मोचा अंबुसारा और अंशुमतीकला यह केले के नाम हैं कच्चाकेला मधुर शीतल बिष्टंभी कफघ्न भारी स्निग्ध और रक्त पित्त तृषा दाह क्षय तथा बातनाशक होताहै पक्काकेला मधुर शीतल पाक में मधुर वीर्य्यबर्द्धक धातुबर्द्धक रुचिकारक मांसबर्द्धक और क्षुधा तृषा नेत्ररोग तथा प्रमेह नाशकहोता है माणिक्यमर्त्य अमृत और चंपकादि केलेके बहुतसे भेद हैं इनमें कहेहुयेगुण अधिकतासे होते हैं यह बिशेषकरके हलके और निर्दोषहोते हैं ॥ ९॥

अथ गुरुभीहंभुकुरइतिच ॥

चिर्भिटंधेनुदुग्धंचतथागोरक्षकर्कटी । चिर्भिटंमधुरंरूक्षंगुरुपित्तकफापहम् ॥ अनूष्णंग्राहिविष्टम्भिपक्वंतूष्णंचपित्तलम् ॥ १० ॥

कचरीके नाम गुण ॥

चिरभिट धेनुदुग्ध और गोरक्षकर्कटी यह कचरीके नामहैं कच्ची कचरी मधुर रूखी भारी पित्तघ्न कफनाशक कुछ उष्ण ग्राही और विष्टंभकारक होतीहै पक्की कचरी उष्ण और पित्तवर्द्धकहोतीहै १०

अथ नारिकेल ॥

नारिकेरोदृढ़फलोजांगलीकूर्च्चशीर्षकः। तुंगस्कन्धफलश्चैवतृणराजःसदाफलः ॥नारिकेरफलंशीतंदुर्ज्जरंवस्तिशोधनम् । विष्टम्भिबृंहणंबल्यंवातपित्तास्रदाहंनुत्॥विशेषतःकोमलनारिकेरंनिहंतिपित्तज्वरपित्तदोषान् । तदेवजीर्णंगुरुपित्तकारिविदाहिविष्टम्भिमतं भिषग्भिः ॥ तस्याम्भःशीतलंहृद्यंदीपनंशुक्रलंलघुः । पिपासापित्तजित्स्वादुवस्तिशुद्धिकरम्परम् ॥ नारिकेरस्यतालस्यखर्ज्जूरस्यशिरांसितु । कषायस्निग्धमधुरबृंहणानि गुरूणिच ॥ ११ ॥

नारियलके नाम गुण ॥

नारिकेर दृढ़फल लांगली कूर्चशीर्षक तुंग स्कन्धफल तृणराज और सदाफल यह नारियल के नामहैं नारियल शीतल कठिनतासे पचनेवाला मूत्राशयका शोधक विष्टंभी धातुवर्द्धक बलकारक और बात पित्त रक्तदोष तथा दाह नाशकहोताहै कोमल नारियल पित्तज्वर और पित्तके दोषों को विशेषकरके नाश करताहै पुराना नारियल भारी पित्तवर्द्धक विदाही और विष्टंभी होताहै नारियल का पानी शीतल हृदयकोहित दीपन वीर्य्यवर्द्धक हलका तृषा नाशक पित्तघ्न मधुर और मूत्राशय का अत्यन्त शोधन करनेवाला होताहै नारियल ताड और खजूर इन वृक्षों के मस्तक कषाय मधुर स्निग्ध धातुवर्द्धक और भारी होतेहैं ॥ ११॥

अथ तरबूजइतिलोकेकालिन्दम् ॥

कालिन्दंकृष्णबीजंस्यात्कालिंगञ्चसुवर्त्तलम् । कालिन्दंग्राहिदृक्पित्तशुक्रहच्छीतलं गुरु ॥ पक्वन्तुसोष्णंसक्षारंपित्तलंकफवातजित् ॥ १२ ॥

तरबूजके नाम गुण ॥

कालिन्द कृष्णबीज कालिंग और सुवर्तुल यह तरबूजके नामहैं कच्चा तरबूज ग्राही दृष्टि पित्त तथा वीर्य्यनाशक शीतल और भारी होता है पक्का तरबूज उष्ण क्षार पित्तकारक और कफ तथा वातनाशक होताहै ॥ १२ ॥

अथ खर्बुजा ।

दशाङ्गुलन्तुखर्बूजंकथ्यतेतत्गुणाअथ । खर्बूजंमूत्रलंबल्यंकोष्ठशुद्धिकरंगुरु ॥
स्निग्धंस्वादुतरंशीतंवृष्यम्पित्तानिलापहम् ॥ तेषुयच्चाम्लमधुरं सक्षारञ्चरसाढ्यवेत् ॥
रक्तपित्तकरन्तत्तुमूत्रकृच्छ्रकरम्परम् ॥ १३ ॥

खरबूजेके नाम गुण ॥

दशांगुल और खरबूज यह खरबूजेके नामहैं खरबूजा मूत्रकारक बलवर्द्धक कोष्टशोधक भारी स्निग्ध मधुर शीतल वीर्यवर्द्धक और पित्त तथा वातनाशक होतेहैं जो खरबूजा कुछ क्षार और खट-मिट्ठा होताहै वह रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्रको करताहै ॥ १३ ॥

अथलघुखीराबालमखीरा ॥

त्रपुषंकण्टकिफलंसुधावासःसुशीतलम् । त्रपुसंलघुनीलञ्चनवंतृट्क्लमदाहजित् ॥
स्वादुपित्तापहंशीतंरक्तपित्तहरम्परम् । तत्पक्वमम्लमुष्णंस्यात्पित्तलंकफवातनुत् ॥
तद्बीजंमूत्रलंशीतंरूक्षंपित्तास्रकृच्छ्रजित् ॥ १४ ॥

बालमखीराके नाम गुण ॥

त्रपुष कंटकिफल सुधावास और सुशीतल यह बालमखीरेके नामहैं कच्चा बालमखीरा हलका मधुर शीतल और तृषा ग्लानि दाह पित्त तथा रक्तपित्त नाशकहोताहै पक्का बालमखीरा खट्टा उष्ण पित्तवर्द्धक और कफ तथा वातनाशक होताहै इसके बीज मूत्रकारक शीतल रूखे और पित्त रक्तदोष तथा मूत्रकृच्छ्रकारक होते हैं ॥ १४ ॥

अथसुपारीछोटी ॥

घोरण्टःपूगीपूगश्चगुवाकःक्रमुकोऽस्यतु ॥ फलम्पूगीफलम्प्रोक्तमुद्वेगञ्चतदीरितम् ॥ पूगंगुरुहिमंरूक्षंकषायाङ्गकफपित्तजित् ॥ मोहनन्दीपनंरुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ॥
आर्द्रंतद्दुर्ज्जरंभिष्पन्दिवह्निदृष्टिहरंस्मृतम् ॥स्विन्नंदोषत्रयच्छेदिदृढमध्यन्तदुत्तमम् ॥१५॥

छोटी सुपारीके नाम गुण ॥

घोरण्ट पूगी पूग गुवाक और क्रमुक यह सुपारी वृक्षके नामहैं इसके फलको पूगीफल और उद्वेग कहतेहैं सुपारी भारी शीतल रूखी कषैली कफनाशक पित्तघ्न मदकारक दीपन रुचिकारक और मुखके फीकेपनेको दूरकरती है कच्ची सुपारी भारी अभिष्यन्दी और अग्नि तथा दृष्टिनाशक होतीहै और सिझाईहुई सुपारी त्रिदोषनाशक होतीहै जिस सुपारीका मध्यभाग दृढहोताहै वह श्रेष्ठहै ॥१५॥

अथतालः ॥

तालस्तुलेखपत्रःस्यात्तृणराजोमहोन्नतः । पक्वंतालफलम्पित्तरक्तश्लेष्मविबर्द्धनम् ॥
दुर्ज्जरम्बहुमूत्रञ्चतन्द्राभिष्पन्दिशुक्रदम् ॥ तालमज्जातुतरुणःकिञ्चिन्मदकरोलघुः ॥
श्लेष्मलोवातपित्तघ्नः सस्नेहोमधुरःसरः ॥१६॥

अथ ताड़ी ॥

तालजन्तरुणन्तोयमतीवमादकृन्मतम्।अम्लीभूतन्तदातुस्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् १६

ताड के नाम गुण ॥

ताल लेखपत्र तृणराज और महोन्नत यह तालके नाम हैं पक्का ताडका फल पित्त रक्त तथा कफ वर्द्धक कठिनता से पचने वाला बहुमूत्र कारक और तंद्रा अभिष्यन्द तथा वीर्यकाकरने वाला होता है पक्के ताडकी गिरी कुछमदकारक हलकी कफ वर्द्धक बातनाशक पित्तघ्न स्निग्ध मधुर और दस्तावर होती है ताड़ी बहुत मद करती है और खट्टी होजाने पर पित्त वर्द्धक तथा वात रोग नाशक होती है ॥ १६ ॥

अथबेल ॥

विल्वःशाण्डिल्यशैलूषोमालूरश्रीफलावपि । बालंविल्वफलंविल्वकर्कटीविल्वपेशिका॥ ग्राहिणीकफवातामशूलघ्नीविल्वपेषिका । (अन्यच्च) वालंविल्वफलंग्राहिदीपनम्पाचन ङ्कटु । कषायोष्णंलघुस्निग्धंतिक्तवातकफापहम् ॥ पक्वंगुरुत्रिदोषंस्यात्दुर्जरंपूतिमारुतम्।विदाहिविष्टम्भकरंमधुरंवन्हिमान्द्यकृत्॥ फलेषुपरिपक्वंयद्गुणवत्तदुदाहृतम् । विल्वादन्यत्रविज्ञेयमामन्तद्विगुणाधिकम् ॥ द्राक्षाविल्वशिवादीनांफलंशुष्कंगुणाधिकम्॥१७॥

बेलके नाम गुण ॥

विल्व शांडिल्य शैलूष मालूर और श्रीफल यह बेलके नाम हैं बेलके कच्चे फलको विल्व कर्कटी और विल्वपेशिका कहते हैं बेलका कच्चा फल ग्राही दीपन पाचक कटु कषाय उष्ण हलका तिक्त स्निग्ध और वातकथा कफका नाशक होता है पक्का बेल भारी त्रिदोष कारक कठिनतासे पचने वाला वायु को सुगन्धित करनेवाला विदाही विष्टंभी मधुर और मंदाग्नि करने वाला होता है फलों में पक्केही फल गुणदायक होते हैं परन्तु बेल नहीं क्योंकि यह कच्चाही अधिक गुण वाला होता है मुनक्का बेल और हड़ आदिक फल सूखेही अधिक गुणवाले होते हैं ॥ १७ ॥

अथ कैथि ॥

कपित्थस्तुदधित्थःस्यात्तथापुष्पफलःस्मृतः । कपिप्रियोदधिफलस्तथादन्तशठोऽपिच ॥ कपित्थमामंसंग्राहिकषायंलघुलेखनम् । पक्वंगुरुतृषाहिक्काशमनंवातपित्तजित्॥ स्यादल्पन्तुवरङ्कण्ठशोधनंग्राहिदुर्ज्जरम् ॥ १८ ॥

कैथे के नाम गुण ॥

कपित्थ दधित्थ पुष्पफल कपिप्रिय दधिफल और दन्तशठ यह कैथे के नाम हैं कच्चा कैथा ग्राही कषैला हलका और लेखन होता है पक्का कैथा भारी तृषा हिचकी वात तथा पित्तनाशक खट्टा कषैला कण्ठशोधक ग्राही और कठिनता से पचने वालाहोता है ॥ १८ ॥

अथ नारङ्गी ॥

नारंगोनागरंगःस्यात्त्वक्सुगन्धोमुखप्रियः।नारंगोमधुराम्लःस्याद्दीपनंवातनाशनम् ॥ अपरन्त्वम्लमत्युष्णंदुर्ज्जरंवातहृत्सरम् ॥ १९ ॥

नारंगी के नाम गुण ॥

नारंग नागरंग त्वक्सुगन्ध और मुखप्रिय यह नारंगी के नाम हैं नारंगी मधुर खट्टी दीपन और

बातनाशक होती है और दूसरे प्रकार की नारंगी बहुत खट्टी होती है वह उष्ण कठिनता से पचने वाली बात नाशक और दस्तावर होती है ॥ १९ ॥

अथ तेंदु ॥

तिन्दुकःस्फूर्य्यकःकालस्कन्धश्चासितसारकः । स्यादामन्तिंदुकंग्राहिवातलंशीतलं लघु ॥ पक्वंपित्तप्रमेहास्रश्लेष्मघ्नंमधुरंगुरु ॥ २० ॥

तेंदुआ के नाम गुण ॥

तिंदुक स्फूर्जक कालस्कंध और शिति शारक यह तेंदुआ के नाम हैं कच्चा तेंदुआ ग्राही वादी शीतल और हलका होता है पक्का तेंदुआ मधुर भारी और पित्त प्रमेह रक्तदोष तथा कफ नाशक होता है ॥ २० ॥

अथ कुपीलु ॥

यस्यफलंकुचिलाइतिलोकेमकरतेंदुआइतिच ॥ तिन्दुकोयस्तुकथितोजलदोदीर्घप त्रकः । कुपीलःकुलकःकालस्तिन्दुकःकालपीलुकः ॥ काकेन्दुर्विषतिन्दुश्चतथामर्कटतिन्दु कः । कुपीलुःशीतलंतिक्तंवातलंमदकृल्लघु ॥ पादव्यथाहरंग्राहिकफपित्तास्रनाशनम् २१ ॥

कुपील कुचले का वृक्ष इसके नाम गुण ॥

तिंदुक जलद दीर्घ पत्रक कुपीलु कुलक कालतिंदुक कालपीलुक काकेन्दु विषतिन्दु और मर्कट तिंदुक यह कुपीलु अर्थात् कुचले के वृक्षके नाम हैं कुपीलु शीतल तिक्त वादी मदकारक हलका व्यथा नाशक ग्राही और कफ पित्त तथा रक्त नाशक होता है ॥ २१ ॥

अथ फलेन्द्रा ॥

फलेन्द्राकथितानन्दीराजजम्बूर्महाफला । तथासुरभिपत्राचमहाजम्बूरपिस्मृता ॥ राजजम्बूफलंस्वादुविष्टम्भिगुरुरोचनम् ॥ २२ ॥

फलेंदा के नाम गुण ॥

फलेन्द्र नन्द राजजंबू सुरभिपत्रा और महाजंबू यह फलेंदेके नामहैं फलेंदा मधुर विष्टंभी भारी और रुचिकारक होताहै ॥ २२ ॥

अथ जामुनीनदीजामुनी ॥

क्षुद्रोजम्बूःसूक्ष्मपत्रानादेयीजलजम्बुकाजम्बूःसंग्राहिणीरूक्षाकफपित्तास्रदाहजित् २३॥

छोटी जामन के नाम गुण ॥

क्षुद्रजंबू सूक्ष्मपत्रा नादेयी और जलजंबुका यह छोटीजामनके नाम हैं जामन ग्राही रूखी और कफ पित्त रक्त तथा दाहनाशकहोती है ॥ २३ ॥

अथवैरि ॥

पुंसिस्त्रियाञ्चकर्क्कन्धूर्वदरीकोलमित्यपि । फेनिलंकुवलंघोंटासौवीरंवदरंमहत् ॥ अ जप्रियाकुहाकोलीविषमोभयकण्टका । तत्रबदरविशेषाणांलक्षणानिगुणाश्च । पच्यमा नंसुमधुरंसौवीरंवदरंमहत् । सौवीरंवदरंशीतंभेदनंगुरुशुक्रलम् ॥ वृंहणम्पित्तदाहास्र

क्षयतृष्णानिवारणम्। सौवीरंलघुसम्पक्वंमधुरंकोलमुच्यते ॥ कोलन्तुवदरंग्राहिरुच्यमुष्णञ्चवातलम्। कफपित्तकरञ्चापिगुरुसारकमीरितम् ॥ कर्कन्धुक्षुद्रवदरंकथितंपूर्व्वसूरिभिः। अम्लंस्यात्क्षुद्रवदरंकषायंमधुरंमनाक् ॥ स्निग्धंगुरुचतिक्तञ्चवातपित्तापहंस्मृतम्। शुष्कंभेद्यग्निकृत्सर्व्वंलघुतृष्णाक्लमास्रजित् ॥ २४ ॥

बेर के नाम गुण ॥

कर्कन्धू (यह शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग होताहै) बदरी कोल फेनिल कुवल घोंटा सौवीर बदर अजप्रिया कुहा कोली विषम और भयकंटक यह बेरकेनामहैं बेर अनेक प्रकारकेहोते हैं उनके लक्षण और गुण लिखते हैं जो बेर पकने के समयपर मधुर और बड़ाहो उसको सौवीर कहते हैं सौवीर शीतल भेदक भारी वीर्यवर्द्धक धातुबर्द्धक और पित्त दाह रक्तदोष तथा क्षयनाशक होता है जो बेर सौबीर से कुछ छोटा और पकनेपर मधुर होताहै उसको कोल कहते हैं कोल ग्राही रुचिकारक उष्ण बादी कफकर पित्तबर्द्धक भारी और दस्तावर होताहै प्राचीन पण्डितलोग छोटेबेरको कर्कन्धू कहते हैं कर्कन्धू खट्टा कुछ मधुर कषाय तिक्त स्निग्ध भारी और बात तथा पित्तनाशकहोता है सूखा बेर भेदक अग्निबर्द्धक हलका और तृषा ग्लानि तथा रक्तदोष नाशकहोताहै ॥ २४ ॥

अथपानिअम्वरा ॥

प्राचीनामलकंलोकेपानीयामलकंस्मृतम्।प्राचीनामलकंदोषत्रयजिद्ज्वरघातिच २५॥

पानी आमले के नाम गुण ॥

लोकमें प्राचीनामलकको पानीयामलक कहते हैं यहत्रिदोषनाशक और ज्वरघ्नहोता है ॥ २५ ॥

अथलवली। हरफारीइतिच ॥

सुगन्धमूलालवलीपाण्डुःकोमलवल्कला ॥ लवलीफलमङ्मार्शःकफपित्तहरंगुरु ॥ विशदंरोचनंरूक्षंस्वाद्वम्लन्तुवरंरसे ॥ २६ ॥

हरफा रेवडी के नाम गुण ॥

सुगन्धिमूला लवली पांडु और कोमलबल्कला यह हरफ़ारेवड़ी के नाम हैं हरफ़ारेवड़ी पथरी बवासीर कफ तथा पित्तनाशक भारी विषद रुचिकारक रूखी मधुर खट्टी और कषैलीहोती है ॥ २६ ॥

अथ करोंदा। करोंदी ॥

करमर्द्दःसुषेणःस्यात्कृष्णपाकफलस्तथा। तस्माल्लघुफलायातुसाज्ञेयाकरमर्द्दिका ॥ करमर्द्दद्वयंत्वाममम्लंगुरुतृषाहरम्। उष्णंरुचिकरंप्रोक्तंरक्तपित्तकफप्रदम् ॥ तत्पक्वंमधुरंरुच्यंलघुपित्तसमीरजित् ॥ २७ ॥

करोंदा और करोंदी के नाम गुण ॥

करमर्द्द सुषेणु कृष्णपाक और कृष्णफल यह करोंदा के नाम हैं छोटेकरोंदे को करमर्द्दिका अर्थात् करोंदीकहते हैं दोनों प्रकारके कच्चे करोंदे खट्टे भारी तृषानाशक उष्ण रुचिकारक और रक्त पित्त तथा कफकारकहोते हैं और पकजानेपर मधुर रुचिकारक हलके और पित्त तथा बातनाशकहोते हैं ॥ २७ ॥

अथ पिआलचिरौञ्जी ॥

प्रियालस्तुखरस्कन्धश्चारोबहुलवल्कलः ॥ राजादनस्तापसेष्टःसन्नकद्रुर्द्धनुष्पदः ॥ चारःपित्तकफास्रघ्नस्तत्फलंमधुरंगुरु॥स्निग्धंसरंमरुत्पित्तदाहज्वरतृषापहम् ॥ प्रियालमज्जामधुरोवृष्यःपित्तानिलापहः॥ह्योऽतिदुर्ज्जरःस्निग्धोविष्टम्भीचामवर्द्धनः ॥२८॥

चिरौंजी के नाम गुण ॥

प्रियाल खरस्कन्ध चार बहुलवल्कल राजादन तापसेष्ट सन्नकद्रु और धनुष्पद यह चिरौंजी के नाम हैं चिरौंजी पित्त कफ तथा रक्तदोषनाशक इसका फल मधुर भारी स्निग्ध दस्तावर और वात पित्त दाह ज्वर तथा तृषानाशकहोताहै इसकीमींगी मधुर बीर्यवर्द्धक पित्तनाशक वातघ्न हृदयकोहित कठिनतासे पचनेवाली स्निग्ध विष्टंभी और आमवर्द्धकहोती है ॥ २८ ॥

अथ क्षीरणी ॥

राजादनःफलाध्यक्षोराजन्याक्षीरिकापिच ॥ क्षीरिकायाःफलंवृष्यंबल्यंस्निग्धंहिमंगुरु ॥ तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयासृजित् ॥२९ ॥

खिन्नी के नाम गुण ॥

राजादन फलाध्यक्ष राजन्य और क्षीरिका यह खिन्नीके नामहैं खिन्नी वीर्यवर्द्धक बलकारक स्निग्ध शीतल भारी और तृषा मूर्च्छा मदभ्रांति क्षय त्रिदोष तथा रक्तदोषनाशक होतीहै ॥ २९ ॥

अथ कण्टाइ ॥

विकङ्कतःस्तुवावृक्षोग्रन्थिलःस्वादुकण्टकः ॥ सएवयज्ञवृक्षश्चकण्टकीव्याघ्रपादपि ॥ विकङ्कतफलंपक्वंमधुरंसर्वदोषजित् ॥ ३०

कंटाई के नाम गुण ॥

विकंकट स्तुवावृक्ष ग्रंथिल स्वादुकंटक यज्ञवृक्ष कंटकी और व्याघ्रपात् यह कंटाई के नाम हैं कंटाईका पक्काफल मधुर और सर्व दोषनाशक होताहै ॥ ३० ॥

अथकमलगट्टा ॥

पद्मबीजन्तुपद्माक्षंगालोड्यंपद्मकर्कटी । पद्मबीजंहिमंस्वादुकषायंतिक्तकंगुरु ॥ विष्टम्भिवृष्यंरूक्षञ्चगर्भसंस्थापकंपरम् । कफवातकरंबल्यंग्राहिपित्तासृदाहनुत् ॥ ३१ ॥

कमलगट्टेके नाम गुण ॥

पद्मबीज पद्माक्ष गालोड्य और पद्मकर्कटी यह कमलगट्टे के नाम हैं कमलगट्टा शीतल मधुर कषाय तिक्त भारी विष्टंभी वीर्यवर्द्धक रूखा गर्भस्थितिकरने में श्रेष्ठ कफकारी वादबिलकारक ग्राही और पित्त रक्तदोष तथा दाहनाशक होताहै ॥ ३१ ॥

अथमखाना ॥

माखान्नंपद्मबीजाभंपानीयफलमित्यपि । माखान्नंपद्मबीजस्यगुणैस्तुल्यंविनिर्द्दिशेत् ३२ ॥

मखानेके नाम गुण ॥

माखान्न पद्मबीजाभ और पानीयफल यहमखानेकेनामहैं मखानेमें कमलगट्टेके समानगुणहैं ३२ ॥

अथ सिंघाड़ा ॥

शृङ्गाटकंजलफलंत्रिकोणफलमित्यपि ॥ शृंगाटकंहिमंस्वादुगुरुवृष्यंकषायकम्। ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मप्रदंपित्तास्रदाहनुत् ॥ ३३ ॥

सिंघाड़ेके नाम गुण ॥

शृंगाटक जलफल और त्रिकोणफल यह सिंघाड़ेके नामहैं सिंघाड़ा शीतल कषैला मधुर भारी धातुबर्द्धक ग्राही वीर्य्यवर्द्धक वादी कफकारक और पित्त रक्तदोष तथा दाहनाशक होताहै ॥ ३३ ॥

अथभेट ॥

उक्तंकुमुदबीजन्तुबुधैःकैरविणीफलम् । भवेत्कुमुद्वतीबीजंस्वादुरूक्षंहिमंगुरु॥३४॥

कोकाबेलीके फलके नाम गुण ॥

कुमुदबीजको पंडितलोग कैरविणीफल कहतेहैं यह मधुर रूखा शीतल और भारी होताहै ॥३४॥

अथ महुआबनमहुआ ॥

मधूकोगुड़पुष्पःस्यान्मधुपुष्पोमधुस्रवः । वानप्रस्थोमधुष्ठीलोजलजेत्रमधूलकः ॥ मधूकपुष्पंमधुरंशीतलंगुरुवृंहणम्। बलशुक्रकरंप्रोक्तंवातपित्तविनाशनम् ॥ फलंशीतं गुरुस्वादुशुक्रलंवातपित्तनुत् । अहृद्यंहन्तितृष्णास्रदाहश्वासक्षतक्षयान् ॥ ३५ ॥

महुआ और बनमहुआके नाम गुण ॥

मधूक गुड़पुष्प मधुपुष्प मधुस्रव बानप्रस्थ और मधुष्ठील यह महुआके नामहैं जलमें हुए महुएको मधूलक कहतेहैं महुएका पुष्प मधुर शीतलभारी धातुवर्द्धक बलकारक वीर्यवर्द्धक और वात पित्त नाशकहोताहै महुएका फल शीतल भारी मधुर वीर्यवर्द्धक हृदयको अहित और वात पित्त तृषा रक्तदोष दाह श्वास क्षत तथा क्षयनाशक होताहै ॥ ३५ ॥

अथ फरुसा ॥

परूषकन्तुपरुषमल्पास्थितचपरापरम् । परूषकंकषायाम्लमामंपित्तकरंलघु ॥ तत पक्वंमधुरंपाकेशीतंविष्टम्भिवृंहणम् । हृद्यन्तुपित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरहृत् ॥ ३६ ॥

फालसे के नाम गुण ॥

परूषक परुष अल्पास्थि और परापर यह फालसे के नामहैं फालसे का कच्चाफल कषैला खट्टा पित्त वर्द्धक और हलका होताहै पक्काफालसा पाक में मधुर शीतल बिष्टंभी धातुवर्द्धक हृदयको हित और पित्त दाह रक्तदोष ज्वर क्षय तथा बातनाशक होताहै ॥ ३६॥

अथतूत ॥

तूतःस्थूलश्चपूगश्चक्रमुकोब्रह्मदारु च । तूतंपक्वंगुरुस्वादुहिमंपित्तनिलापहम् ॥ तदेवामंगुरुसरमम्लोष्णंरक्तपित्तकृत् ॥ ३७ ॥

सहतूतके नाम गुण ॥

तूत स्थूल पूग क्रमुक और ब्रह्मदारु यह सहतूतके नामहैं पक्का सहतूत भारी मधुर शीतल और पित्तबातनाशक होताहै कच्चासहतूत भारी दस्तावर खट्टा उष्ण और रक्त पित्तकरनेवाला होताहै ३७

अथ अनार ॥

दाड़िमःकरकोदन्तबीजोलोहितपुष्पकः । तत्फलंत्रिविधंस्वादुस्वाद्वम्लंकेवलाम्लकम् ॥ तत्तुस्वादुत्रिदोषघ्नंतृड्दाहज्वरनाशनम् ॥ हृत्कण्ठमुखगन्धघ्नंतर्पणंशुक्रलंलघु॥ कषायानुरसंग्राहिस्निग्धंमेधाबलापहम् ॥ स्वाद्वम्लंदीपनंरुच्यंकिञ्चित्पित्तकरंलघु ॥अम्लंतुपित्तजनकमम्लंवातकफापहम् ॥ ३८ ॥

अनारके नाम गुण ॥

दाड़िम करक दन्तवीज और लोहित पुष्पक यह अनार के नाम हैं इसका फल मधुर खटमिट्ठा और केवल खट्टा इनभेदोंसे तीन प्रकार का होता है मीठा अनार त्रिदोष तृषा दाह ज्वर हृदय केरोग कंठ रोग तथा मुखरोगनाशक तृप्तिकारक वीर्यबर्द्धक हलका कुछ कषैला ग्राही स्निग्ध और मेधा तथा बलबर्द्धकहोताहै खटमिट्ठा अनार दीपन रुचिकारक कुछ पित्तवर्द्धक और हलकाहोताहै खट्टा अनार पित्तबर्द्धक और कफ बातनाशक होता है ॥ ३८ ॥

अथ बहुआर ॥

बहुबारस्तुशीतःस्यादुद्दालोबहुवारकः॥ शेलुःश्लेष्मातकश्चापिच्छिलोभूतवृक्षकः॥ बहुबारोविषस्फोटव्रणवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ मधुरस्तुवरस्तिक्तःकेश्यश्चकफपित्तहृत्॥ फलमा मन्तुविष्टम्भिरूक्षंपित्तकफास्रजित् । तत्पक्वंमधुरंस्निग्धंश्लेष्मलंशीतलंगुरु ॥ ३९ ॥

लिसौड़े के नाम गुण ॥

बहुबार शीत उद्दाल बहुबारक शेलु श्लेष्मातक पिच्छिल और भूतवृक्षक यह लिसौड़ेके नाम हैं लिसौड़ा बिष स्फोटक घाव वीसर्प कुष्ठ कफ तथा पित्तनाशक मधुर कषाय तिक्त और केशोंको हित होताहै कच्चालिसौड़ा विष्टंभी रूखा और पित्त कफ तथा रक्तदोषनाशक होताहै पक्कालिसौड़ा मधुर स्निग्ध कफकारक शीतल और भारीहोता है ३९ ॥

अथ कतकः ॥

पयःप्रसादिकतकङ्कतकंतत्फलञ्चतत् । कतकस्यफलंनेत्र्यंजलनिर्मलताकरम् ॥ वातश्लेष्महरंशीतंमधुरंतुवरंगुरु ॥ ४० ॥

निर्मली के नाम गुण ॥

पयःप्रसादि कतक कत और कतफल यह निर्मली के नाम हैं निर्मली का फल नेत्रोंको हित जलका निर्मलकरनेवाला बातनाशक कफघ्न शीतल मधुर कषैला और भारी होता है ॥ ४० ॥

अथ द्राक्षा ॥

द्राक्षास्वादुफलाप्रोक्तातथामधुरसापिचं । मृद्वीकाहारहूराचगोस्तनीचापिकीर्तिता ॥ द्राक्षापक्कासराशीताचक्षुष्यावृंहणीगुरुः । स्वादुपाकरसास्वर्य्यातुवरासृष्टमूत्रविट् ॥ कोष्ठमारुतकृद्वृष्याकफपुष्टिरुचिप्रदा । हन्तितृष्णाज्वरश्वासवातवातासृकामलाः ॥ कृच्छ्रास्रपित्तसंमोह दाहशोषमदात्ययान् । आमास्वल्पगुणागुर्व्वी सैवाम्लारक्तपित्तकृत् ॥ वृष्यास्याद्गोस्तनीद्राक्षा गुर्व्वीचकफपित्तनुत् । (गोस्तनी मुनक्का इतिलोके)

अबीजान्यास्वल्पतरा गोस्तनीसदृशीगुणैः। द्राक्षापर्वतजालघ्वी साम्लाश्लेष्माम्लपित्तकृत् ॥ द्राक्षापर्वतजायादृक् तादृशीकरमर्द्दिका। अबीजा। ईषद्बीजा। किसमिस इति लोके। पर्वजायहारी इति लोके। कग्मर्द्दिका करौंदी इतिलोके ॥ ४१ ॥

दाख के नाम गुण ॥

द्राक्षा स्वादुफला मधुरसा मृद्वीका हारहूरा और गोस्तनी यह दाख के नाम हैं पकीहुई दाख दस्तावर शीतल नेत्रोंकोहित धातुबर्द्धक भारी पाक में मधुर २ कषाय मधुर स्वरकोहित मलमूत्रकी निकालनेवाली कोष्ठमें बात उत्पन्नकरनेवाली वीर्यबर्द्धक कफकारक पोषक रुचिकारक और तृषा ज्वर श्वास बात बातरक्त कामला मूत्रकृच्छ्र रक्त पित्त मोह दाह शोष और मदनाशकहोतीहै कच्चीदाख उससे गुणोंमें न्यूनहोतीहै खट्टीदाख रक्त पित्तकारक होती है मुनक्का वीर्यबर्द्धक भारी और कफ तथा पित्तनाशकहोतीहै किसमिस मुनक्काके ही समान गुणवालीहोती है पहाड़ीदाख हलकी खट्टी और कफ तथा अम्लपित्तकारकहोती है जैसी पहाड़ीदाख होतीहै वैसीही करौंदीहोती है ॥ ४१ ॥

अथ क्षुद्रखर्ज्जूरी। पिण्डखर्ज्जूरी छोहारा ॥

भूमिखर्जूरिकास्वाद्वी दुरारोहामृदुच्छदा। तथास्कन्धफलाकाक कर्कटीस्वादुमस्तका ॥ पिण्डखर्ज्जूरिकात्वन्या सादेशपश्चिमेभवेत्। खर्ज्जूरीगोस्तनाकारा परद्वीपादिहागता ॥ जायतेपश्चिमेदेशे साच्छोहारेतिकीर्त्यते। खर्ज्जूरीत्रितयंशीतं मधुरंरसपाकयोः ॥ स्निग्धंरुचिकरंहृद्यं क्षतक्षयहरंगुरुः। तर्पणरक्तपित्तघ्नं पुष्टिविष्टम्भशुक्रदम् ॥ कोष्ठमारुतहृद्बल्यं वान्तिवातकफापहम्। ज्वरातिसारक्षुत्तृष्णा कासश्वासनिवारकम् ॥ मदमूर्च्छामरुत्पित्त मद्योद्भूतगदान्तकृत्। महतीभ्यांगुणैरल्पा स्वल्पखर्ज्जूरिकास्मृता ॥ खर्जूरीतरुतोयंतु मदपित्तकरंभवेत्। वातश्लेष्महरंरुच्यं दीपनंबलशुक्रकृत् ॥ ४२ ॥

खजूर पिण्ड खजूर और छुहाराके नाम गुण ॥

भूमि खर्जूरिका स्वाद्वी दुरारोहा मृदुच्छदा स्कन्धफला काककर्कटी और स्वादुमस्तका यहखजूर के नामहैं और दूसरी पिंड खजूर कहलातीहै वहपश्चिम देशमें उत्पन्नहोती है मुनक्का के समान आकार वाली खजूर अन्य द्वीपसे यहां आई और पश्चिम देशमें उत्पन्नहोतीहै उसको छुहारा कहतेहैं और तीनों प्रकारकी खजूर शीतल रसतथापाकमें मधुर स्निग्ध रुचिकारक हृदयकोहित क्षततथा क्षय नाशक भारीतृप्तिकारक रक्तपित्तनाशक पोषक बिष्टंभी वीर्यवर्द्धक बलकारक और कोष्ठकीवायु छर्दि बात कफ ज्वर अतीसार क्षुधा तृषा खांसी श्वास मद मूर्च्छा बातपित्त तथामदात्यय रोगनाशक होतीहैं छोटी खजूर में बड़ी खजूरसे कमगुणहोतेहैं खजूर के वृक्षकारस मदकारक पित्तबर्द्धक बातघ्न कफनाशक रुचिकारक दीपन बलकारक और वीर्यवर्द्धकहोताहै ॥ ४२ ॥

अथ पिण्डखर्ज्जूरीभेदः सुलेमानी ॥

सुलेमानीतुमृदुलादलहीनफलाचसा। सुलेमानीश्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छास्रपित्तहृत् ४३

पिंड खजूरकाभेद सुलहमानी के नामगुण

सुलहमानी मृदुला और दलहीनफला यह सुलहमानीके नामहैं सुलहमानी श्रमभ्रम दाहमूर्च्छा और रक्त पित्तनाशकहोतीहै ॥ ४३ ॥

अथ बादाम ॥

वातादोवातवैरीस्यान्नेत्रोपमफलस्तया । वातादउष्णःसुस्निग्धो वातघ्नःशुक्रकृद् गुरुः ॥ वातादमज्जामधुरो वृष्यःपित्तानिलापहः । स्निग्धोष्णःकफकृन्नेष्टो रक्तपित्तविकारिणाम् ॥ ४४ ॥

बदाम के नामगुण ॥

वाताद बातवैरी और नेत्रोपमफल यह बदामके नामहैं बदाम उष्ण स्निग्ध बातनाशक वीर्यवर्द्धक और भारीहोताहै बदामकी गिरीमधुर बीर्यवर्द्धक पित्तघ्न बातनाशक स्निग्ध उष्ण कफकारकहोती है यह रक्त पित्त के विकार वालोंको हित नहींहोतीहै ॥ ४४ ॥

अथ सेव ॥

मुष्टिप्रमाणंवदरं सेवंसिविंतिकाफलम् । सेवंसमीरपित्तघ्नं वृहणंकफकृद्गुरु ॥ रसे पाकेचमधुरं शिशिरंरुचिशुक्रकृत् ॥ ४५ ॥

सेव के नाम गुण ॥

मुष्टिप्रमाण वदर सेव और सिविंतिकफल यह सेव के नाम हैं सेव बातघ्न पित्तनाशक धातुवर्द्धक कफकारक भारी रस तथा पाक में मधुर शीतल रुचिकारक और वीर्यबर्द्धकहोताहै ॥ ४५ ॥

अथामृतफलम् ॥

यत्वदक्सानकाबिल प्रभृतिषुदेशेषु नासपातीति प्रसिद्धः ॥ अमृतफलंलघुवृष्यं सुस्वादुत्रीन्हरेत्दोषान् । देशेषुमुद्गलानां बहुलन्तल्लभ्यतेलोकैः ॥ ४६ ॥

नाशपाती के गुण ॥

अमृतफल (नाशपाती) हलकी वीर्यबर्द्धक स्वादिष्ट त्रिदोषनाशकहोती है यह मुद्गलादि देश में बहुतहोती हैं ॥ ४६ ॥

अथ पीलूः ॥

पीलुगुड़फलःसंस्त्री तथाशीतफलोऽपिच । पीलुःश्लेष्मसमीरघ्नं पित्तलंभेदिगुल्मनुत् ॥ स्वादुतिक्तञ्चयत्पीलु तन्नात्युष्णन्त्रिदोषहृत् ॥ ४७ ॥

पीलू के नाम गुण ॥

पीलु गुड़फल संसी और शीतफल यह पीलू के नाम हैं पीलू कफघ्न बातनाशक पित्तबर्द्धक भेदक और गुल्मनाशकहोताहै मधुर तिक्त रसवाला पीलू बहुत उष्ण नहींहोता और त्रिदोषको नाश करताहै ॥ ४७ ॥

अथ अखरोटपीलुः ॥

पीलुःशैलभवोक्षोटः कर्पराल्श्चकीर्त्तितः । अक्षोटकोऽपिवाताम सदृशः कफपित्तकृत् ॥ ४८ ॥

अखरोट के नाम गुण ॥

पर्वत जातपीलु अक्षोट और कर्पराल यह अखरोट के नाम हैं अखरोट बदाम के समान गुण वाला और कफ पित्तकारकहोता है ॥ ४८ ॥

अथ बिजौरा ॥

बीजपूरोमातुलुङ्गोरुचकःफलपूरकः । बीजपूरफलंस्वादु रसेम्लंदीपनंलघु ॥ रक्तपित्तहरंकंठ जिह्वाहृदयशोधनम् । श्वासकासारुचिहरं हृद्यंतृष्णाहरंस्मृतम् ॥ ४९ ॥

बिजौरा के नाम गुण ॥

बीजपूर मातलुंग रुचक फलपूरक यह बिजौरा के नाम हैं बिजौरेकाफल मधुर अम्ल दीपन हलका रक्त पित्तनाशक कंठ जिह्वा और हृदयकाशोधक हृदयकोहित और श्वास खांसी अरुचि तथा तृषानाशक होताहै ॥ ४९ ॥

अथ विजौरभेद मधुकाकड़ि ॥

बीजपूरोऽपरःप्रोक्तो मधुरोमधुकर्कटी । मधुकर्कटिकास्वाद्वी रोचनीशीतलागुरुः ॥ रक्तपित्तक्षयश्वास कासहिक्काभ्रमापहा ॥ ५० ॥

विजौराका भेद मधुककड़ीके नाम गुण ॥

एक दूसरे प्रकारके विजौरेको मधुर और मधुकर्कटी कहतेहैं मधुककड़ी मधुर रुचिकारक शीतल भारी और रक्तपित्तक्षय श्वास खांसी हिचकी तथा भ्रमनाशक होतीहै ॥ ५० ॥

अथ जम्बीरीद्वयम् ॥

स्याज्जम्बीरीदन्तशठो जम्भजम्भीरजम्भलाः । जम्बीरमुष्णंगुर्व्वम्लं वातश्लेष्म विबन्धनुत् ॥ शूलकासकफोत्क्लेश छर्द्दितृष्णामदोषजित् । आस्यवैरस्यहृत्पीड़ावह्निमा न्द्यकृमीन्हरेत् ॥ स्वल्पजम्बीरिकातद्वत् तृष्णाछर्दिनिवारणी ॥ ५१ ॥

दोनोंजंभीरी नींबूके नाम गुण ॥

जंबीर दन्तशठ जंभ जंभीर और जंभल यह जंभीरी नींबूके नामहैं जंभीरी उष्ण भारी खट्टा और बात कफ विबन्ध शूल खांसी कफकी पीड़ा छर्दि तृषा आम दोष मुखकी विरसता हृदयकीपीड़ा मंदाग्नि तथा कृमिनाशक होताहै छोटा जंभीरी भी इसीके समान गुणवाला होताहै और विशेषकरके तृषा और छर्दिनाशक होताहै ॥ ५१ ॥

निम्बू ॥

निम्बूस्त्रीनिम्बुकंक्लीवे निम्बूकमपिकीर्त्तितम् । निम्बूकमम्लंवातघ्नं दीपनंपाचनंलघु ॥ (अन्यच्च) निम्बूकङ्कृमिसमीहनाशनन्तीक्ष्णमम्लमुदरग्रहापहम् । वातपित्तकफशूलिनेहितंकष्टनष्टरुचिरोचनंपरम् ॥ त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगनिपीड़ितानां विषविक्लानां । मन्दानलेबद्धगुदेप्रदेयं विसूचिकायांमुनयोवदन्ति ॥ ५२ ॥

नींबूके नाम गुण ॥

निंबू (स्त्रीलिंग) निंबुक नपुंसक लिंग और निंबूक यह नींबूके नामहैं नींबू खट्टा बातनाशक दीपन पाचक और हलका होताहै और भी कहाहुआ है कि निंबू कृमि समूहनाशक तीक्ष्ण खट्टा उदर रोगनाशक ग्रहोंका शान्तकरनेवाला बात पित्त कफ तथा शूलवाले को हित कष्टसाध्य तथा नष्टहोगई रुचिवालेको रुचिकारक और त्रिदोष मंदाग्नि बातरोग विष गलेकेरोग बद्धगुद और विसूचिकामें देनेके योग्य होताहै यह मुनियोंने कहाहै ॥ ५२ ॥

अथ मिष्टनिम्बू ॥

मिष्टनिम्बूफलंस्वादु गुरुमारुतपित्तनुत् । गररोगविषध्वंसि कफोत्क्लेशिचरक्तहृत् ॥ शोषारुचितृषाछर्दि हरंबल्यञ्चबृंहणम् ॥ ५३ ॥

मीठेनिंबूके गुण ॥

मीठानिंबू मधुर भारी बातघ्न पित्तनाशक कफका उखाड़नेवाला बलकारक धातुवर्द्धक और गर दोष विष रक्तदोष शोष अरुचि तृषा तथा छर्दिनाशकहोताहै ॥ ५३ ॥

अथ कर्मरंग ॥

कर्मरंगंहिमंग्राहिस्वाद्वम्लंकफवातहृत् ५४ (अथअम्बर्ला) अम्लिकाचुक्रिकाम्ली च चुक्रादन्तशठापिच । अम्लाचविचकाचिञ्चा तिन्तिड़ीकाचतिन्तिड़ी ॥ अम्लिका म्लागुरुर्वात हरीपित्तकफास्रकृत्॥ पक्कातुदीपनीरूक्षा सरोष्णाकफवातनुत् ॥ ५५ ॥

कमरखके गुण ॥

कर्मरंग (कमरख) शीतल ग्राही मधुर खट्टी और कफवातनाशक होती है॥ ५४ (इमलीके नाम गुण) अम्लिका चुक्रिका अम्ली चुक्रा दन्तशठा अम्ला चिंचिका चिंचा तिंतिड़ीका और तिंतिड़ीयह इमलीके नामहैं कच्चीइमली खट्टी भारी बातनाशक और रक्त तथा कफकारक होती है पक्की इमली दीपन रूखी दस्तावर उष्ण और कफ तथा बातनाशक होतीहै ॥ ५५ ॥

अथाम्लवेतसः ॥

स्यादम्लवेतसश्चुक्रंशतवेधिसहस्रनुत् । अम्लवेतसमत्यम्लंभेदनंलघुदीपनम् ॥ हृद्रोगशूलगुल्मघ्नंपित्तलंलोमहर्षणम् । रूक्षंविष्मूत्रदोषघ्नंप्लीहोदावर्त्तनाशनम् ॥ हिक्का नाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत् । कफवातामयध्वंसिछागमांसद्रवत्वकृत् ॥ चणकाम्लगुणंज्ञेयंलोहसूचीद्रवत्वकृत् ५६ ॥

अमलबेतके नाम गुण ॥

अम्लबेतस चुक्र शतवेधी और सहस्रनुत यह अमलबेतके नाम हैं अमलबेत अत्यन्त खट्टा भेदक हलका दीपन पित्तवर्द्धक रोमांचकारक रूखा और हृदयके रोग शूल गुल्म मलदोष मूत्रदोष प्लीहा उदावर्त्त हिचकी आनाह अरुचि श्वास खांसी अजीर्ण छर्दि कफरोग तथा बातरोग नाशक होताहै इससे बकरेका मांस जल्दी गलताहै इसमें चनेकी कांजीके समान गुण होताहै और यह लोहेकी सुई को गलाता है ॥ ५६ ॥

अथ विषाम्बिल ॥

वृक्षाम्लान्तितिड़ीकञ्चचुक्रंस्यादम्लवृक्षकम् । वृक्षाम्लमाममम्लोष्णंवातघ्नंकफापित्तलम् । पक्वन्तुगुरुसंग्राहिकटुकन्तुवरंलघु ॥ अम्लोष्णंरोचनंरूक्षंदीपनंकफवातकृत् । तृष्णार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृद्रोगजन्तुजित् ॥ ५७ ॥

विषाम्बिलके नाम गुण ॥

वृक्षाम्ल तिंतिड़ीक चुक्र और अम्लवृक्षक यह विषाम्बिलके नामहैं कच्चा विषाम्बिल खट्टाउष्ण बातघ्न कफकारक और पित्तवर्द्धक होताहै पक्का विषाम्बिल भारी ग्राही कटु कषैला खट्टा हलका उष्ण रुचिकारक रूखा दीपन कफकारक वादी और तृषा बवासीर ग्रहणी गुल्म शूल हृदयके रोग तथा कृमिनाशक होताहै ॥ ५७ ॥

अथ चतुरम्लपञ्चाम्लयोर्लक्षणम् ॥

अम्लवेतसवृक्षाम्लबृहज्जम्बीरनिम्बुकैः।चतुरम्लंहिपञ्चाम्लंबीजपूरयुतैर्भवेत् ५८॥

चतुरम्ल और पञ्चाम्लके लक्षण ॥

अमलबेत चूकाशाक बड़ाजंभीरी और निंबू इनचारोंको चतुरम्ल कहतेहैं और इन में बिजोरा मिलानेसे पंचाम्ल कहलाताहै ॥ ५८ ॥ अथपरिभाषा ॥

फलेषुपरिपक्वंयद्गुणवत्तदुदाहृतम् । विल्वादन्यत्रविज्ञेयमामंतद्द्विगुणाधिकम् ॥ फलेषुसरसंयत्स्याद्गुणवत्तदुदाहृतम् । द्राक्षाविल्वशिवादीनांफलंशुष्कंगुणाधिकम् ॥ फलतुल्यगुणंसर्वमज्जानमपिनिर्दिशेत् । फलंहिमाग्निदुर्वातव्यालकीटादिदूषितम् ॥ अकालजंकुभूमौजम्पाकातीतंनभक्षयेत् । पाकातीतंपाकमतिक्रम्यास्थितम् ॥ ५९ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेफलवर्गः ॥

परिभाषा ॥

बेलको छोडकर सम्पूर्ण फल पक्केही गुणदायक होतेहैं और बेल कच्चाही अधिक गुणवालाहोताहै सम्पूर्ण फल रसयुक्तही गुणदायक होतेहैं परन्तु दाखबेल और हड़ आदिक सूखेही अधिक गुण वाले होतेहैं फलोंके गुणके समान फलोंकी मींगीके भी गुण जाननेचाहिये जो फल पाला अग्नि विकारयुक्त बायु सर्प और कीटादिकोंके द्वारा दूषित अकालमें उत्पन्न खराब पृथ्वी में पैदाहुआ और पकनेके उपरांतभी अधिक दिनतक रहा (उतराहुआ) हो वहफल भक्षणके योग्य नहीं रहताहै ५९॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेफलवर्गःसमाप्तः ॥

अथ धातूपधातुरसोपरसरत्नोपरत्नविषोपविषवर्गः ॥

तत्रधातूनांलक्षणानिगुणाश्च ॥

स्वर्णंरूप्यञ्चताम्रञ्चरङ्गंयसदमेवच । सीसंलौहञ्चसप्तैतेधातवोगिरिसम्भवाः ॥ वलीपलितखालित्यकार्श्यबल्यजरामयान् । निवार्य्यदेहंदधतिनृणांतद्धातवोमताः १ ॥

अथ धातु उपधातु रस उपरस रत्न उपरत्न विष उपविष वर्गः ॥

धातुओंके लक्षण और गुण ॥

सुवर्ण रूपा तांबा रांगा जस्त सीसा और लोहा यह सात धातु पर्व्वतसे उत्पन्न होती हैं यह झुर्रीवालोंका पकना गंजापन कृशता दुर्बलता और वृद्धावस्था आदि रोगोंको दूरकरके देहको पुष्ट करतीहैं इसलिये इनको धातु कहते हैं ॥ १ ॥

तत्रादौसुवर्णस्योत्पत्तिनामलक्षणगुणाश्च ॥

पुरानिजाश्रमस्थानांसप्तर्षीणांजितात्मनाम् । पत्नीर्विलोक्यलावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयौवनाः ॥ कन्दर्प्पदर्पविध्वस्तचेतसोजातवेदसः । पतितंयद्वराष्ठेरेतस्तद्धेमतामगात् ॥ वशिष्ठश्चेतिसप्तैतेकीर्तिताःपरमर्षयः।मरीचिरङ्गिराअत्रिःपुलस्त्यःपुलहःक्रतुः । कृत्रिमञ्चापिभवतितद्रसेन्द्रस्यवेधतः ॥ स्वर्णंसुवर्णंकनकंहिरण्यंहेमहाटकम् । तपनीयञ्चगा

ज्ञेयकलधौतञ्चकाञ्चनम् ॥ चामीकरंशातकुम्भंतथाकार्त्तस्वरञ्चतत् । जाम्बूनदंजातरूपंमहारजतइत्यपि ॥ दाहेरक्तंसितंच्छेदेनिकषेकुंकुमप्रभम् । तारंशुल्वोज्झितंस्निग्धंकोमलंगुरुहेमसत् (सत्तमम्) तच्छेतंकठिनंरूक्षंविवर्णंसमलंदलम् । दाहेछेदेसितंश्वेतंकषेत्याज्यंलघुस्फुटम् (दलञ्जोरइतिलोके स्फुटंयद्घनाहतंस्फुटति) सुवर्णंशीतलंवृष्यंबल्यंगुरुरसायनम् ॥ स्वादुतिक्तञ्चतुवरंपाकेचस्वादुपिच्छिलम् । पवित्रंचक्षुहृणंनेत्र्यंमेधास्मृतिमतिप्रदम् ॥ हृद्यमायुःकरंकान्ति वाक्विशुद्धिस्थिरत्वकृत् । विषहृयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ॥ बलंसवीर्य्यंहरतेनराणांरोगव्रजान्शोषयतीहकाये । असौख्यकर्त्ताचसदासुवर्णमशुद्धमेतन्मरणञ्चकुर्य्यात् ॥ असम्यक्मारितंस्वर्णंबलं वीर्य्यञ्चनाशयेत् । करोतिरोगान्मृत्युञ्चतद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥ २ ॥

सुवर्णकी उत्पत्ति नामलक्षण और गुण ॥

पूर्वकालमें अपने आश्रममें बैठेहुये जितेन्द्री सप्तर्षिलोगों की युवावस्था युक्त लावण्यवती स्त्रियों को देखकर कामके वेगसे चलायमान चित्तवाले अग्निदेवताका जो वीर्य पृथ्वीपर गिरा वह सुवर्णहो गया मरीचि अंगिरा अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु और वशिष्ठ यह सातों ऋषि परमर्षि कहलाते हैं पारेके बेधसे कृत्रिमसुवर्णभी होताहै स्वर्ण सुवर्ण कनक हिरण्य हेम हाटक तपनीय गांगेय कलधौत कांचन चामीकर शातकुम्भ कार्त्तस्वर जांबूनद जातरूप और महारजत यह सुवर्णके नामहैं जो सुवर्ण तपानेसे लाल काटनेसे श्वेत कसौटीमें कसनेसे केशरके समान चांदी तथा तामेसे रहित स्निग्ध कोमल और भारी होताहै वह उत्तम होताहै जो सुवर्ण श्वेत कठिन रूखा विवर्ण मलयुक्त दलवाला तपानेमें तथा काटनेमें श्वेत कसौटीपर कसनेसे घीके वर्ण हलका और घनके मारनेसे फटनेवाला होताहै वह निकृष्ट कहलाहै सुवर्ण शीतल वीर्य्यवर्द्धक बलकारक भारी रसायन मधुर तिक्त कषैला पाकमें मधुर पिच्छिल पवित्र धातुवर्द्धक नेत्रोंको तथा बुद्धिकोहित स्मृतिदायक बुद्धि वर्द्धक हृदयको हित आयुवर्द्धक कांतिकारक वाणीको उत्तम तथा स्थिर करनेवाला और स्थावर जंगम विष क्षय उन्माद त्रिदोष ज्वर तथा राजयक्ष्मा नाशक होताहै अशुद्ध सुवर्ण बलवीर्यनाशक रोगकारी शरीर शोषक और सुखका नाशक होताहै और इससे मृत्युभी होजातीहै अच्छेप्रकारसे नहीं मराहुआ सुवर्ण बलवीर्यनाशक और रोग तथा मृत्युकारक भी होता है इससे यत्नपुर्वक सुवर्ण को मारना चाहिये ॥ २ ॥

अथ रूप्यस्योत्पत्तिनामलक्षणगुणाश्च ॥

त्रिपुरस्यवधार्थायनिर्निमिषैर्विलोचनैः । निरीक्षयामासशिवःक्रोधेनपरिपूरितः ॥ अग्निस्तत्कालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात् । ततोरुद्रःसमभवद्वैश्वानरइवज्वलन् ॥ द्वितीयादपतन्नेत्रादश्रुबिन्दुस्तुवामकात् । तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तकर्म्मसुयोजयेत् ॥ कृत्रिमञ्चभवेतद्विवङ्गादिरसयोगतः । रूप्यन्तुरजतंतारञ्चन्द्रकान्तिसितप्रभम् ॥ गुरुस्निग्धंमृदुश्वेतंदाहेछेदेघनक्षमम् । वर्णाढ्यंचन्द्रवत्स्वच्छंरूप्यंनवगुणंशुभम् ॥ कठिनंकृत्रिमंरूक्षंरक्तंपीतदलंलघु । दाहच्छेदघनैर्नष्टंरूप्यंदुष्टंप्रकीर्तितम् ॥ रूप्यंशीतंकषायाम्लंस्वा

दुपाकरसंसरम् । वयसःस्थापनंस्निग्धंलेखनंवातपित्तजित् ॥ प्रमेहादिकरोगांश्चनाश यत्यचिराद्ध्रुवम् । तारंशरीरस्यकरोतितापंविद्धंघनंयच्छतिशुक्रनाशम्॥ वीर्य्यंबलंहन्ति तनोश्चपुष्टिंमहागंदान्शोषयतिह्यशुद्धम् ॥ ३ ॥

रूपेकी उत्पत्तिनामलक्षण और गुण ॥

त्रिपुरके मारनेके लिये क्रोधमें पूर्णहोके शिवजीने विनापलकलगाये नेत्रोंसे देखा उससमय एक नेत्रसे अग्नि गिरी उस अग्निसे अग्निके समान जाज्वल्यमान रुद्र उत्पन्न हुए और दूसरे बाम नेत्रसेअश्रु विन्दुगिरा उससे चांदी उत्पन्न हुई उसको कहेहुए अनेक कामोंमें लानाचाहिये यह बंग आदिरसोंके योगसे कृत्रिमभी होती है रूप्य रजत तार चन्द्रकांति और सितप्रभ यह रूपाके नाम हैं जो रूपाभारी चिकना कोमल तपानेसे अथवा काटनेसे श्वेत चोटका सहने वाला चन्द्रमाके समान कान्ति वाला और स्वच्छ होताहै वह श्रेष्ठहै जोरूपा कठिन कृत्रिम रूखा रक्तवर्ण पीतदल युक्त हलका और तपानेसे काटनेसे तथा चोट लगानेसे विकार युक्तहोवे वह निकृष्टहै रूपा शीतल कषैला खट्टा मधुर पाकमें मधुर दस्तावर अवस्थाका स्थितरखने वाला स्निग्ध लेखन और वातपित्त तथा प्रमेह आदि रोगोंका शीघ्र नाशक होताहै विनाशोधा हुआ रूपा तापकारक वीर्य्य बल वीर्य नाशक धातु तथा शरीरकी पुष्टि का नाशक और बड़े रोगोंका उत्पन्न करने वालाहोता है ॥ ३ ॥

अथताम्रस्यउत्पत्तिर्नामलक्षणगुणाश्च ॥

शुक्रंयत्कार्तिकेयस्यपतितंधरणीतले । तस्मात्ताम्रंसमुत्पन्नमिदमाहुःपुराविदः ॥ ताम्रमौदुम्बरंशुल्वमुदुम्बरमपिस्मृतम् । रविप्रियंम्लेच्छमुखंसूर्य्यपर्यायनामकम् ॥ जपाकुसुमसङ्काशंस्निग्धंमृदुघनक्षमम् । लोहनागोज्झितंताम्रंमारणायप्रशस्यते ॥ कृष्णंरूक्षमतिस्तब्धंश्वेतञ्चापिघनासहम् । लोहनागयुतञ्चेतिशुल्वंदुष्टंप्रकीर्तितम् ॥ ताम्रंकषायंमधुरञ्चातिक्तमम्लञ्चपाकेकटुसारकञ्च । पित्तापहंश्लेष्महरञ्चशीतंतद्रोपणंस्याल्लघुलेखनञ्च ॥ पाण्डुदरार्शोज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयात्पीनसमम्लपित्तम् । शोथंकृमिंशूलमपाकरोतिप्राहुःपरेवृंहणमल्पमेतत् ॥ एकोदोषोविषेताम्रेत्वसम्यग्मारितेऽष्टते । दाहःश्वेदोरुचिर्मूर्च्छाक्लेदोरेकोवमिर्भ्रमः (रेकःविरेकः) ॥ ४ ॥

तांबेकी उत्पत्तिनाम लक्षण और गुण ॥

प्राचीन पंडित लोग कहते हैं कि जो स्वामिकार्त्तिकजी का वीर्य्य पृथ्वी पर गिरा उससे तांबा उत्पन्न हुआ ताम्र औदुम्बर शुल्व उदुम्बर रविप्रिय म्लेच्छमुख और सूर्य्यके संपूर्णनाम यहतांबे के नामहैं जोतांबा गुड़हलके फूलके समान वर्णयुक्त चिकना कोमल चोटसहने वाला और लोह तथा सीसेके मेलसे रहित होताहै वह श्रेष्ठहै जोतांबा कृष्ण अथवा श्वेत वर्णरूखा बहुत कठिन लोह तथा सीसेके मेलवाला और चोट लगनेसे फटने वाला होताहै वह निकृष्ट होताहै तांबा कषाय मधुर तिक्त अम्ल पाकमेंकटु दस्तावर पित्त तथा कफ नाशक शीतल घावका पूरने वाला हलका लेखन कुछधातु वर्द्धक और पांडु उदर बवासीर ज्वर कुष्ठ खांसी श्वास क्षय पीनस अम्लापित्त सूजन कृमितथा शूल नाशक होताहै विषमें एक दोष होताहै और अच्छे प्रकार से विना मारेहुए तांबेमें दाह स्वेद अरुचि मूर्च्छाक्लेद दस्तछर्दि और भ्रमयह आठ दोष होतेहैं ॥ ४ ॥

अथ रंगस्यनामलक्षणगुणाः ॥

रक्तंवंगंत्रपुप्रोक्तंतथापिच्चटमित्यपि । खुरकंमिश्रकञ्चापिद्विविधंवंगमुच्यते ॥ उत्तमं खुरकंतत्रमिश्रकंत्ववरंमतम् । रंगंलघुसरंरूक्षमुष्णंमेहकफकृमीन् ॥ निंहन्तिपाण्डुंसश्वा संचक्षुष्यंपित्तलंमनाक् । सिंहोयथाहस्तिगणंनिहन्तितथैववंगोऽखिलमेहवर्गम् ॥ देह स्यसौख्यंप्रबलेन्द्रियत्वंनरस्यपुष्टिंविदधातिनूनम् ॥ ५ ॥

बंगके नामगुण ॥

लालरांगेको बंग त्रपु और पिच्चट कहतेहैं रांगा दोप्रकार काहै एक क्षुरक दूसरा मिश्रक मिश्रककी अपेक्षा क्षुरक उत्तम होताहै बंग हलकी दस्तावर रूखीउष्ण नेत्रोंकोहित कुछ पित्त वर्द्धक और प्रमेह कफ कृमि पांडु तथा श्वास नाशक होती है जिस प्रकार सिंह हाथियोंको मारताहै उसी प्रकार बंग संपूर्ण प्रमेहोंको नाशकरती है और यह शरीरको सुखदायक इन्द्रियों को प्रबल करने वाली तथा मनुष्योंको पुष्टतादेने वाली होतीहै ॥ ५ ॥

अथ यसद ॥

यसदंरंगसदृशंरीतिहेतुश्चतन्मतम् । यसदंतुवरंतिक्तंशीतलंकफपित्तहृत् ॥ चक्षुष्यं परमंमेहात्पाण्डुंश्वासञ्चनाशयेत् ॥ ६ ॥

जस्तेके नामगुण ॥

जस्ता बंगके समान होताहै और पीतलका कारणहै जस्ताकसैला तिक्त शीतल नेत्रोंकोहित और कफ पित्त प्रमेह पांडु तथा श्वास नाशक होताहै ॥ ६ ॥

अथसीसस्योत्पत्तिर्नामगुणाश्च ॥

दृष्ट्वाभोगिसुतांरम्यांवासुकिस्तुमुमोचयत् । वीर्य्यंजातस्ततोनागःसर्वरोगापहोनृणाम् ॥ सीसंब्रध्नञ्चवप्रञ्चयोगेष्टंनागनामकम् । नागःभुजङ्गःइत्यादि ॥ सीसंवंगगुणं ज्ञेयंविशेषान्मेहनाशनम् । नागस्तुनागशततुल्यबलंददातिव्याधिंविना शयतिजीवन मातनोति ॥ वह्निंप्रदीपयतिकामबलंकरोतिमृत्युञ्चनाशयतिसन्ततसेवितःसः । पाके नहीनौकिलवङ्गनागौकुष्ठानिगुल्मांश्चतथातिकष्टान् ॥ कण्डून्प्रमेहानलसादशोथभग न्दरादीन्कुरुतःप्रभुक्तौ ॥ ७ ॥

सीसेकी उत्पत्तिनामऔरगुण ॥

सुन्दर नागकन्याकोदेखकर बासुकिका वीर्यगिरा उससे सीसा उत्पन्नहुआ यह सीसा मनुष्योंके सम्पूर्ण रोगोंकानाशकहोताहै शीश ब्रध्न वप्र योगेष्ट और सर्पोंके नाम भुजंग इत्यादिनाम यह सीसेके नाम हैं सीसा बंगके समान गुणवालाहोताहै और विशेषकरके प्रमेहोंकानाशकहै यह सीसा सदैव सेवनकरनेसे सौ हाथियों के समान बलदायक रोगनाशक जीवनदायक अग्निदीपक और काम तथा बलकाबर्द्धकहोताहै इससे मृत्युकाभीनाशकहोताहै अच्छी रीतिसे नहीं फुकेहुये सीसा और रांगा कुष्ठ गुल्म अत्यन्त कुष्ठ खुजली प्रमेह मंदाग्नि जकडना सूजन और भगन्दरकोकरते हैं ॥ ७ ॥

अथ लोहस्योत्पत्तिर्नामलक्षणगुणाश्च ॥

पुरालोमिनदैत्यानांनिहतानांसुरैर्युधि । उत्पन्नानिशरीरेभ्योलोहानिविविधानिच ॥ लोहोऽस्त्रीशस्त्रकंतीक्ष्णंपिण्डंकालायसायसी । गुरुतादृढतोत्क्लेदःकश्मलंदाहकारिता ॥ अश्मदोषःसुदुर्गन्धोदोषःसप्तायसस्यतु । लोहंतिक्तंसरंशीतंमधुरंतुवरंगुरु ॥ रूक्षंवय स्यंचक्षुष्यंलेखनंवातलंजयेत् । कफंपित्तंगरंशूलंशोथार्शप्लीहपाण्डुताः ॥ मेदोमेहकृमी न्कुष्ठंतत्किट्टंतद्वदेवहि । पाण्डुत्वंकुष्ठामयमृत्युदंभवेत्तद्वद्रोगशूलौकुरुतेऽश्मरीञ्च ॥ नानारुजानाञ्चतथाप्रकोपं करोतिहल्लासुमशुद्धलोहम् । जीवहारीमदकारीचायसंदेह शुद्धिमदसंस्कृतंध्रुवम् ॥ पाटवंनतनुतेशरीरकेदारुणांहृदिरुजाञ्चयच्छति । कूष्माण्डं तिलतैलञ्चमाषान्नंराजिकांतथा ॥ मद्यमम्लरसञ्चापित्यजेल्लोहस्यसेवकः ॥ ८ ॥

लोहेकी उत्पत्ति नाम लक्षण और गुण ॥

पूर्वकालमें देवतालोगोंकेद्वारा युद्धमेंमारेगये लोलिमनाम दैत्योंके शरीरसे अनेक प्रकारके लोहेकी उत्पत्तिहुई लोह (पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग) शस्त्रक तीक्ष्ण पिंड कालायश और आयस यह लोहेके नामहैं भारीपन कठिनता मचली मूर्च्छा दाह पत्थरकादोष और दुर्गन्धि यह सात लोहेकेदोष हैं लोहा तिक्त दस्तावर शीतल मधुर कषैला भारी रूखा अवस्थाकास्थापक नेत्रोंकोहित लेखनं बादी और कफ पित्त गरदोष शूल सूजन बवासीर प्लीहा पांडु मेद प्रमेह कृमि तथा कुष्ठनाशकहोताहै और इसीके समान लोह के कीटमें भी गुणहोते हैं बिना शोधाहुआ लोहा नपुंसकता कुष्ठ हृदयकेरोग शूल पथरी मतली अनेक प्रकारकीपीड़ा और मृत्युको भी करताहै अशुद्ध लोहा जीवकानाशक मदकारी देहको अशुद्ध करनेवाला शरीरको असमर्थकरनेवाला और हृदयके रोगोंका अत्यन्त उत्पन्न करनेवालाहोता है लोहके सेवनकरनेवाले मनुष्योंको पेठा तिलकातेल उर्द राई मद्य और खटाई त्यागदेनी चाहिये ॥ ८ ॥ तत्रसार लोहस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

क्षमाभृच्छिखराकारान्यङ्गान्यम्लेनलेपयेत् । लोहेस्युर्य्यत्रसूक्ष्माणितत्सारमभिधीयते॥लोहंसाराङ्गयंहन्यात्ग्रहणीमतिसारकम् । अर्द्धंसर्वाङ्गजंवातंशूलञ्चपरिणामजम् ॥ क्षर्दिञ्चपीनसंपित्तंश्वासंकासंव्यपोहति ॥ ९

सारलोह के लक्षण और गुण ॥

जो लोहा खटाईके लेपकरनेसे सूक्ष्म भाग पर्व्वतके शृंगके समान लक्षितहो वह सार कहलाता है सार नामलोहा ग्रहणी अतीसार अर्द्धाङ्ग तथा सर्व्वाङ्ग बात परिणामशूल छर्दि पीनस पित्त श्वास तथा खांसीका नाशक होताहै॥९॥ अथ कान्तलोहस्य लक्षणं गुणाश्च ॥

यत्पात्रेनप्रसरतिजलेतैलविन्दुः प्रतप्ते हिंगुर्गन्धन्त्यजतिचनिजं तिक्ततांनिम्बबल्कः । तत्तंदुग्धंभवतिशिखराकारकंनैतिभूमिं कृष्णांगःस्यात्सजलचणकः कान्तलोहं तदुक्तम् ॥ गुल्मोदरार्शःशूलाममामवातंभगन्दरम् । कामलाशोथकुष्ठानिक्षयंकान्तमयो हरेत् ॥ प्लीहानमम्लापित्तञ्चयकृच्चापिशिरोरुजम् ॥ सर्वान्रोगान्विजयतेकान्तलोहंन संशयः ॥ बलंवीर्य्यवपुःपुष्टिंकुरुतेऽग्निंविवर्द्धयेत् ॥ १० ॥

कान्तलोह के लक्षण और गुण ॥

जो जिस लोहेके पात्रमें जलको तपाकर तेल डालनेसे फैलेनहीं हींग भूननेसेहींगकी सुगन्धिजाती रहै नींव के बक्कल का कड़वाहट नहो और दूध गरम करने से शिखरके समान ऊंचाहो और गिरे नहीं उसको कान्तीसार लोहा कहते हैं कान्तीसार लोहा गुल्म उदर बवासीर शूल आम आमवात भगंदरकामला सूजन कुष्ठक्षय प्लीहाअम्लपित्त यकृत् शिरके रोग और सम्पूर्ण रोगों को निस्सन्देह दूर करता है यह बलवीर्य शरीरकी पुष्टता और अग्निकी वृद्धि करताहै ॥ १० ॥

अथकीटी ॥

ध्यायमानस्यलोहस्यमलंमण्डूरमुच्यते ।श्लोहसिंहानिकाकिट्टीसिंहानञ्चनिगद्यते ॥ यल्लोहंयद्गुणंप्रोक्तंतत्किट्टमपितद्गुणम् ॥ ११ ॥

कीटीके नाम गुण ॥

तपाये हुये लोहे के मलको मंडूर लोह सिंहानिका किट्ट और सिंहान कहतेहैं जिस लोहे में जो गुण होते हैं वही उसकी कीटी में भी होतेहैं ॥ ११ ॥

अथोपधातवः ॥

तत्रोपधातूनांलक्षणंगुणाश्च । सप्तोपधातवःस्वर्णमाक्षिकंतारमाक्षिकम् । तुत्थंकांस्य चरीतिश्चसिन्दूरश्चाशिलाजतु ॥ (उपधातवःगौणाधातवः) उपधातुषुसर्वेषुतत्तद्धातु गुणाअपि । सन्तिकिंतेषुतेऽत्रोनात्तदंशाल्पभावतः ॥ १२ ॥

उपधातुओं के लक्षण और गुण ॥

सोनामक्खी रूपामक्खी तूतिया कांसा पीतल सिंदूर और शिलाजीत यह सात उपधातुहैं संपूर्ण उपधातुओं में अपनी २ धातुके गुण होतेहैं परन्तु कुछ कम होतेहैं क्योंकि इनमें धातुओंका अंशथोड़ा होताहै ॥ १२ ॥ तत्र सुवर्ण माक्षिकस्य नामानिगुणाश्च ॥

स्वर्णमाक्षिकमाख्यातंतापीजंमधुमाक्षिकम् । ताप्यंमाक्षिकधातुश्चमधुधातुश्चसस्मृतः ॥ किंचित्सुवर्णसांहित्यात्स्वर्णमाक्षिकमीरितम् । उपधातुःसुवर्णस्यकिञ्चित्स्वर्णगुणान्वितम् ॥ तथाचकाञ्चनाभावेदीयतेस्वर्णमाक्षिकम् । किन्तुतस्यानुकल्पत्वात्किञ्चिदूनगुणास्ततः ॥ नकेवलंस्वर्णगुणाःवर्त्तन्तेस्वर्णमाक्षिके । द्रव्यान्तरस्यसंसर्गात्सन्त्यन्येऽपिगुणायतः ॥ सुवर्णमाक्षिकंस्वादुतिक्तंचक्षुष्यंरसायनम् । चक्षुष्यंवस्तिरुक्कुष्ठपाण्डुमेहविषोदरान् ॥ अर्शःशोथंविषङ्कण्डूंत्रिदोषमपिनाशयेत् ॥ मन्दानलत्वांबलहानिमुग्रांविष्टम्भितांनेत्रगदान्सकुष्ठान्।तथैवमालांव्रणपूर्त्तिकाञ्चकरोतितापीजमशुद्धमेतत् ॥ १३ ॥

सोनामक्खी के नाम और गुण ॥

स्वर्णमाक्षिक तापीज मधुमाक्षिक ताप्य माक्षिक धातु और मधुधातु यह सोना मक्खी के नामहैं कुछ सुवर्ण के योग होने से स्वर्णमाक्षिक कहलातीहै इसमें सुवर्ण के कुछ गुणहैं यह सुवर्ण के अभाव में व्यवहार कीजाती है सोनामक्खी सोनेकी उपधातुहोने से उसकी अपेक्षा कुछ न्यूनगुण वालीहै सोना मक्खी में केवल सुवर्णही के गुण नहीं हैं किन्तु अन्य द्रव्यों के संयोगसे और२ भी गुण होतेहैं

सोनामक्खी मधुर तिक्त धातुवर्द्धक रसायन नेत्रोंको हित और मूत्राशय के रोग कुष्ठ पांडु प्रमेह विष उदर बवासीर सूजन क्षय खुजली तथा त्रिदोष नाशक होतीहै बिना शोधीहुई सोनामक्खी मंदाग्नि अत्यन्त बल नाश बिष्टंभ नेत्ररोग कुष्ठ गंडमाला तथा घावको करतीहै ॥ १३ ॥

अथ तारमाक्षिकस्य नाम गुणाः ॥

तारमाक्षिकमन्यत्तुतद्भवेद्रजतोपमम् । किञ्चिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥
अनुकल्पतथातस्यततोहीनगुणाःस्मृताः । नकेवलंरूप्यगुणाःयतःस्यात्तारमाक्षिकम् ॥
स्वादुपाकेरसेकिञ्चित्तृतिक्तंवृष्यंरसायनम् । चक्षुष्यंवस्तिरुक्कुष्ठपाण्डुमेहविषोदरम्॥
अर्शःशोथंक्षयङ्कण्डूंत्रिदोषमपिनाशयेत् । मन्दानलत्वंबलहानिमुग्रांविष्टम्भितान्नेत्रग
दान्सकुष्ठान् । तथैवमालांव्रणपूर्व्विकाञ्चकरोतितापीजभिदञ्चतद्वत् ॥ १४ ॥

रूपामक्खी के नाम गुण ॥

रूपामाखी चांदीके समान होतीहै कुछ चांदीके संयोग से तारमाक्षिक कहलाती है यह चांदीकी अपेक्षा अप्रधान होने से चांदीकी अपेक्षा कम गुणवाली है रूपामाखी में केवल चांदीकेही गुण नहीं होते किन्तु अन्य द्रव्योंके संयोगसे अन्य २ भी गुण होतेहैं रूपामाखी रसतथा पाकमें मधुर कुछतिक्त वीर्यवर्द्धक रसायन नेत्रोंकोहित और मूत्राशय की पीड़ा कुष्ठ खुजली प्रमेह विष उदर बवासीर सूजन क्षय पांडु तथा त्रिदोष नाशक होतीहै जैसे बिना शोधी सोनामाखी मंदाग्नि अत्यन्त बल नाश बिष्टंभ नेत्ररोग कुष्ठगण्डमाला और घावकोभरतीहै इसीप्रकार अशुद्धरूपामाखी भी जाननीचाहिये १४ ॥

अथ तूतिया ॥

तुत्थंवितुन्नकञ्चापिशिखिग्रीवंमयूरकम् । तुत्थन्ताम्रोपधातुर्हिकिञ्चित्ताम्रेणतद्भवेत् ॥ किञ्चित्ताम्रगुणन्तस्माद्वक्ष्यमाणंगुणञ्चतत् । तुत्थकंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु ॥
लेखनम्भेदनंशीतंचक्षुष्यंकफपित्तहृत् । विषाश्मकुष्ठकण्डूघ्नंखर्परञ्चापितद्गुणम् १५ ॥

तूतिया के नाम गुण ॥

तूत्थ वितुन्नक शिखिग्रीव और मयूरक यह तूतियाके नामहैं तूतिया तामेकी उपधातुहै उसमें कुछ तांबेका संयोगहै इसकारण से इसमें कुछ तांबेके गुणहैं और आगे लिखे हुए गुणभी हैं तूतिया कटु क्षार कषैला छर्दि करानेवाला हलका लेखन भेदक शीतल नेत्रोंकोहित और कफ पित्त बिष पथरी कुष्ठतथा खुजली नाशक होताहै खपरिया में भी इसीके समान गुण होतेहैं ॥ १५ ॥

अथ कांसा ॥

ताम्रत्रपुजमाख्यातङ्कांस्यंघोषञ्चकंसकम् । उपधातुर्भवेत्कांस्यंद्वयोस्तरणिरङ्गयोः ॥
कांसस्यतुगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः । संयोगजप्रभावेणतस्यान्येऽपिगुणाःस्मृताः ॥
कांस्यङ्कषायन्तिक्तोष्णंलेखनंविशदंसरम् । गुरुनेत्रहितंरूक्षंकफपित्तहरम्परम् ॥१६ ॥

कांसे के नाम गुण ॥

तांबे और रांगेसे कांसा बनताहै कांस्य घोष और कंसक यह कांसे के नामहैं यह तांबे और रांगेकी उपधातुहै कांसेमें अपने कारण के समान गुण होते हैं और संयोगके प्रभाव से अन्य२भी गुणहैं कांसा

कषाय तिक्त उष्ण लेखक विशद दस्तावर भारी नेत्रों को हित और कफ तथा पित्त के नाश करनेमें श्रेष्ठ होताहै ॥ १६ ॥

तथा पीतरिकांचीपीतरि ॥

पित्तलंत्वारकूटंस्यादारोरीतिश्चकथ्यते । राजरीतिर्ब्रह्मरीतिःकपिलापिङ्गलापिच ॥ रीतिरप्युपधातुःस्यात्तास्रस्ययसदस्यच । पित्तलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः ॥ संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः । रीतिकायुगलंरूक्षंतिक्तञ्चलवणंरसे ॥ शोधनंपाण्डुरोगघ्नंकृमिघ्नंनातिलेखनम् ॥ १७ ॥

पीतल और कच्ची पीतल के नाम गुण ॥

पित्तल आरकूट आररीति यह पित्तल के नामहैं कपिला राजरीति पिंगला और ब्रह्मरीति यह कच्चे पीतल के नामहैं पीतल तांबे और जस्तेकी उपधातुहै पीतल में अपने कारण के समान गुण होते हैं और संयोग के प्रभाव से अन्य गुणभी होतेहैं दोनों पीतल रूखी तिक्त लवण शोधन कारक पाण्डु तथा कृमि नाशक और बहुत लेखन नहीं होतीहै ॥ १७ ॥

अथ सिन्दूर ॥

सिन्दूरंरक्तरेणुश्चनागगर्भश्चसीसजम् । सीसोपधातुःसिन्दूरगुणैस्तत्सीसवन्मतम् ॥ संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः ॥ सिन्दूरमुष्णंवीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम् । भग्नसन्धानजननंव्रणशोधनरोपणम् ॥ १८ ॥

सिंदूर के नाम और गुण ॥

सिंदूर रक्तरेणु नाग गर्भ और सीसज यह सिंदूर के नामहैं सिंदूर सीसेकी उपधातुहै इसीसे इसमें सीसेके समान गुण होतेहैं और संयोग के प्रभाव से अन्य गुणभी होते हैं सिंदूर उष्ण टूटेको जोड़ने वाला घावका शोधक तथा भरनेवाला और वीसर्प कुष्ठ तथा खुजली नाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथ शिलाजतु ॥

(तदुत्पत्तिर्नामलक्षणगुणाश्च) निदाघघर्म्मसन्तप्तधातुसारन्धराधराः । निर्य्यासवत्प्रमुञ्चन्तितच्छिलाजतुकीर्त्तितम् ॥ सौवर्णंराजतन्ताम्रमायसन्तच्चतुर्विधम् । शिलाजत्वद्रिजतुचशैलनिर्य्यासइत्यपि ॥ गैरेयमश्मजञ्चापिगिरिजंशैलधातुजम् । शिलाजं कटुतिक्तोष्णंकटुपाकंरसायनम् ॥ छेदियोगवहंहन्तिकफमेदाश्मशर्कराः । मूत्रकृच्छ्रक्षयं श्वासंवाताशांसिचपाण्डुताम् ॥ अपस्मारन्तथोन्मादंशोथकुष्ठोदरकृमीन् । सौवर्णन्तु जवापुष्पवर्णंभवतितद्रसात् । मधुरंकटुतिक्तञ्चशीतलंकटुपाकिच ॥ राजतम्पाण्डुरं शीतंकटुकंस्वादुपाकिच । ताम्रंमयूरकण्ठाभंतीक्ष्णमुष्णञ्चजायते ॥ लौहंजटायुपक्षाभं तत्तिक्तंलवणम्भवेत् । विपाकेकटुकंशीतंसर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥ १९ ॥

शिलाजीत के नाम उत्पत्ति लक्षण और गुण ॥

ग्रीष्म ऋतुमें धूपसे तप्त पर्वतों से जोधातुओं कासार गोंदके समान निकलताहै उसको शिलाजीत कहतेहैं सोनेका चांदीका तांबेका और लोहेका इसरीति से चार प्रकारका शिलाजीत होताहै अद्रिजतु शिलाजतु शैल निर्यास गैरेय अश्मज गिरिज और शैलधातुज यह शिलाजीत के नामहैं शिलाजीत

कटु तिक्त उष्ण पाकमें कटु रसायन छेदन योगवाही और कफ मेद पथरी शर्करा मूत्रकृच्छ्र क्षय श्वास बात बवासीर पांडु मृगी उन्माद सूजन कुष्ठ उदर तथा कृमिनाशक होताहै सोनेका शिलाजीत गुडहर के पुष्प समान वर्णवाला मधुर कटु तिक्त शीतल और पाकमें कटु होताहै चांदीका शिलाजीत श्वेतवर्ण शीतल कटु और पाकमें मधुर होताहै तांबेका शिलाजीत मोरके कंठ समान वर्णवाला तीक्ष्ण और उष्ण होताहै लोहेका शिलाजीत जटायु के पक्षके समान वर्णवाला तिक्त लवण पाकमें कटु और शीतल होताहै और यही शिलाजीत गुणमें सबसे अधिक होताहै ॥१६॥

अथ रसः तत्ररसस्यनिरुक्तिः ॥

रसायनार्थिभिर्लोकैःपारदोरस्यतेयतः । ततोरसइतिप्रोक्तःसचधातुरपिस्मृतः २० ॥

पारेका वर्णन पारेकी निरुक्ति ॥

रसायन की इच्छा करनेवाले लोग पारेको रसन अर्थात् भक्षण करतेहैं इसीसे इसको रस कहते हैं और पारेको धातुभी कहते हैं ॥ २० ॥

अथ पारदस्योत्पत्तिर्लक्षणनामगुणाः ॥

शिवाङ्गात्प्रच्युतंरेतःपतितन्धरणीतले । तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्चतत् ॥ क्षेत्रभेदेनविज्ञेयंशिववीर्य्यञ्चतुर्विधम् । श्वेतंरक्तन्तथापीतंकृष्णन्तत्तुभवेत्क्रमात् ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रश्चखलुजातितः । श्वेतंशस्तंरुजांनाशेरक्तङ्किलरसायनम् ॥ धातुवेधेतुतत्पीतंखेगतौकृष्णमेवच । पारदोरसधातुश्चरसेन्द्रश्चमहारसः ॥ चपलःशिववीर्य्यश्चरसःसूतःशिवाक्षयः । पारदःपड्रसःस्निग्धस्त्रिदोषघ्नोरसायनः ॥ योगवाहीमहावृष्यःसदादृष्टिबलप्रदः । सर्वामयहरःप्रोक्तोविशेषात्सर्व्वकुष्ठनुत् ॥ स्वस्थोरसोभवेद्ब्रह्मा बद्धोज्ञेयोजनार्द्दनः । रञ्जितःकामितश्चापिसाक्षाद्देवोमहेश्वरः ॥ मूर्च्छितोहरतिरुजंबन्धनमनुभूयखेगतिंकुरुते । अजरीकरोतिहिमृतःकोऽन्यकरुणाकरःसूतात् ॥ असाध्योयोभवेद्रोगोयस्यनास्तिचिकित्सितम् । रसेन्द्रोहन्तितंरोगंनरकुञ्जरवाजिनाम् ॥ मलंविषंवह्निगिरित्वचापलन्नैसर्गिकन्दोषमुशन्तिपारदे । उपाधिजौद्वौत्रपुनागयोगजौदोषौरसेन्द्रेकथितोमुनीश्वरैः ॥ मलेनमूर्च्छामरणंविषेणदाहोऽग्निनाकष्टतरःशरीरे । देहस्यजाड्यङ्गिरिणासदास्यात्चाञ्चल्यतोवीर्य्यहतिश्चपुंसाम् ॥ वङ्गेनकुष्ठम्भुजगेनषण्ढोभवेद्ततोऽसौपरिशोधनीयः । वह्निर्विषमलञ्चेतिमुख्यादोषास्त्रयोरसे ॥ एतेकुर्वन्तिसन्तापंमृतिंमूर्च्छांनृणांक्रमात् । अन्येऽपिकथितादोषाभिषग्भिःपारदेयदि ॥ तथाप्येतेत्रयोदोषाहरणीयाविशेषतः । संस्कारहीनंखलुसूतराजंयःसेवतेतस्यकरोतिबाधाम् ॥ देहास्यनाशंविदधातिनूनंकष्टांश्चरोगाञ्जनयेन्नराणाम् ॥ २१ ॥

पारेकी उत्पत्तिनाम लक्षण और गुण ॥

पृथ्वीपर गिरेहुए शिवजी के वीर्यसे पारा उत्पन्न हुआहै शिवजीके शरीरके सारांशसे उत्पन्नहोने के कारण वह श्वेत और स्वच्छ हुआ और क्षेत्र के भेदसे श्वेत रक्त पीत तथा कृष्ण इनभेदों से चार प्रकारका होता है ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रयह क्रमसे चारोंकी जातिहैं श्वेत पारा रोगोंके

नाशकरने में रक्तवर्ण पारा रसायन में पीतवर्ण पारा धातुओं के भेदनमें और कृष्ण वर्ण पारा आकाश के गमन करने में श्रेष्ठ है पारद रसधातु रसेन्द्र महारस चपल शिववीर्य रस सूत और शिव जीके नाम यह पारेके नाम हैं पारा छः रसोंसे युक्त स्निग्ध त्रिदोष नाशक रसायन योगवाही अत्यन्तवीर्य वर्द्धक सदैव दृष्टि को बल देनेवाला सर्वरोगनाशक और विशेष करके सर्वकुष्ठनाशक होता है स्वस्थपारा ब्रह्माके समान बंधाहुआ पारा जनार्दन के समान और रंजित तथा कामित पारा साक्षात् शिवजी के समान होताहै मूर्च्छित पारा रोगनाशक बंधाहुआपारा आकाशकी गति देनेवाला और मराहुआ पारा वृद्धावस्था नाशक होता है पारेसे अधिक हित करनेवाला कोई नहीं है जो रोग असाध्य होते हैं जिनकी चिकित्सा नहीं है मनुष्य हाथी तथा घोड़े के वह रोग पारेकेद्वारा नष्टहोते हैं पारेमें स्वभावहीसे मल विष वह्नि गिरि और चंचलता यह दोष होते हैं और दो दोष रांगे और सीसे के योगसे उपाधिज होनेवाले होते हैं मलसे मूर्च्छा विषसे मरण अग्नि से शरीर में अत्यन्त दाह गिरिसे शरीर की जड़ता चंचलता से वीर्यका नाश बंगसे कुष्ठ और सीसे से नपुंसकता होती है इस्से पारे को शुद्ध करना चाहिये अग्नि विष और मल यह तीन मुख्य दोष हैं इनके द्वारा क्रमसे सन्ताप मृत्यु और मूर्च्छा होती है यद्यपि पारे में और अनेक दोषभी वैद्योंने कहे हैं तथापि इनतीनों दोषोंके दूर करने में विशेष यत्न करना चाहिये जो मनुष्य विना शोधेहुए पारेका सेवन करता है उसको अत्यन्त बाधा उत्पन्न होती हैं अर्थात् देहका नाश होता है अथवा निस्सन्देह बड़े कठिन रोग उत्पन्न होते हैं ॥ २१ ॥

अथोपरसानांलक्षणम् ॥

गन्धोहिंगुलमभ्रतालकशिलाःस्रोतोऽञ्जनएटङ्कणंराजावर्त्तकचुम्बकोस्फटिकयाशङ्खः खटीगैरिकम्। कासीसंरसकङ्कपर्दसिकताबोलाश्चकंकुष्ठकम्सौराष्ट्रीचमताम्रमीउपरसाः सूतस्यकिञ्चिद्गुणैः ॥ (उपरसागौणारसाः)॥ २२॥

उपरसों के लक्षण ॥

गंधक सिंदरफ अभ्रक हरताल मैनशिल सुरमा सुहागा रेह चुम्बक फिटकरी शंख खड़िया गेरू हीराकसीस खपरिया कौड़ी बालू बोल मुरदासिंग और सौरठी मट्टी यह सब उपरस कहलाते हैं इनमें पारे के कुछ २ गुण होते हैं ॥ २२ ॥

हिंगुलस्यनामानिलक्षणंगुणाश्च ॥

हिंगुलन्दरदंम्लेच्छमिंगुलम्पूर्णपारदम्।दरदस्त्रिविधःप्रोक्तश्चर्म्मारःशुकतुण्डकः॥ हंसपादस्तृतीयःस्याद्गुणवानुत्तरोत्तरम् । चर्म्मारःशुक्लवर्णःस्यात्सपीतःशुकतुण्डकः ॥ जवाकुसुमसङ्काशोहंसपादोमहोत्तमः । तिक्तंकषायंकटुहिंगुलंस्यान्नेत्रामयघ्नङ्कफपित्तहारि । हल्लासकुष्ठज्वरकामलांश्चक्षीहामवातौचगरन्निहन्ति ॥ ऊर्ध्वपातनयुक्त्याचतुडमरूयन्त्रपाचितम् । हिंगुलन्तस्यसूतन्तुशुद्धमेवंनशोधयेत् ॥ २३ ॥

सिंदरफ के नाम लक्षण गुण॥

दरद म्लेच्छ चित्रांग और पूर्णपारद और हिंगुल यह सिंदरफके नाम हैं चर्मार शुक तुंडक और हंसपाद यह तीन प्रकार के सिंदरफ होते हैं यह क्रमसे उत्तरोत्तर गुणमें अधिक होते हैं चर्मार

सिंदरफ श्वेतवर्ण शुकतुंडक पीतवर्ण और हंसपाद गुडहर के पुष्प के समान रक्तवर्ण होता है और यही सबसे उत्तम होता है सिंदरफ तिक्त कषाय कटु और नेत्ररोग कफ पित्त मतली कुष्ठ ज्वर कामला प्लीहा आमवात तथा गरदोष नाशक होता है ऊपर उड़ाने की युक्ति से डमरू यंत्र में पकाए हुए सिंदरफ से निकला हुआ पाराशुद्ध होता है उसको फिर शुद्ध न करे ॥ २३ ॥

अथ गन्धकस्योत्पत्तिर्नामलक्षणगुणाश्च ॥

श्वेतद्वीपेपुरादेव्याः क्रीड़न्त्यारजसाप्लुतम् । दुकूलन्तेनवस्त्रेणस्नातायाःक्षीरनीरधौ प्रसृतंयद्रजस्तस्मात्गन्धकःसमभूत्ततः । गन्धकोगन्धिकश्चापिगन्धपाषाणइत्यपि ॥ सौगन्धिकश्चकथितोबलिर्बलरसापिच । चतुर्द्धागन्धकःप्रोक्तोरक्तःपितःसितोऽसितः ॥ रक्तहेमक्रियासूक्तःपीतश्चैवरसायने।व्रणादिलेपनेश्वेतःकृष्णःश्रेष्ठःसुदुर्ल्लभः॥ (श्रेष्ठःहेम क्रियादिषुसर्वत्रप्रशस्ततरः)गन्धकःकटुकस्तिक्तोवीर्य्योष्णस्तुवरःसरः। पित्तलःकटुकःपा केकण्डूवीसर्पजन्तुजित् । हन्तिकुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनः । अशोधितोगन्धकएष कुष्ठंकरोतितापंविषमंशरीरेशोषञ्चरूपञ्चबलंतथोजःशुक्रंनिहन्त्येवकरोतिचास्रम् २४

गंधक की उत्पत्ति नाम लक्षण और गुण ॥

पूर्वकाल में श्वेतद्वीप में क्रीड़ा करती हुई श्रीपार्वतीजी का वस्त्र रज से भरगया उसी वस्त्र को पहनकर क्षीर समुद्र में स्नान करने से जो रज फैला उसीसे गंधक उत्पन्न हुई गंधक गंधिक गंधपाषाण सौगन्धिक बलि और बलिरस यह गन्धक के नाम हैं लाल पीली श्वेत और कृष्ण इन भेदोंसे चारप्रकार की गन्धक होती है लाल गन्धक सुवर्ण बनाने में पीली रसायन में श्वेत घाव आदिके लेप करने में और कृष्ण गन्धक सुवर्णादिक बनाने में सबसे श्रेष्ठ है परन्तु वह दुर्लभ है गन्धक कटु तिक्त उष्ण कषैली दस्तावर पित्तबर्द्धक रसायन पाक में कटु और खुजली वीसर्प कृमि कुष्ठ छय प्लीहा कफ तथा वात नाशक होती है विना शोधी हुई गन्धक कुष्ठ शरीर संताप और सुख रूप बल ओज तथा वीर्य्य की हानि और रुधिर के दोषों को करती है ॥ २४ ॥

अथाभ्रकस्योत्पत्तिर्नामलक्षणगुणाश्च ॥

पुराबधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धृतम् । विस्फुलिंगास्ततस्तस्यगगनेपरिसर्पिताः ॥ तेनिपेतुर्घनध्वानाच्छिखरेषुमहीभृताम् । तेभ्यएवसमुत्पन्नंतत्तद्गिरिषुचाभ्रकम् ॥ तद्वज्रं वज्रपातत्वादभ्रमभ्रवोद्भवात् । गगनात्स्खलितंयस्माद्गगनञ्चततोमतम् ॥ विप्रक्ष त्रियविट्शूद्रभेदात्तत्स्याच्चतुर्विधः । क्रमेणैवासितंरक्तंपीतंकृष्णञ्चवर्णतः । प्रशस्यतेसि तन्तारंरक्तंतत्तुरसायने ॥ पीतंहेमनिकृष्णन्तुगदेषुद्युतयेऽपिच । पिनाकंदर्दुरंनागंवज्रञ्चे तिचतुर्विधम् ॥ मुञ्चत्यग्नौविनिक्षिप्तंपिनाकन्दलसञ्चयम् । अज्ञानाद्भक्षणंतस्यमहाकु ष्ठप्रदायकम् ॥ दर्दुरंत्वग्निनिःक्षिप्तंकुरुतेदर्दुरध्वनिम् । गोलकान्बहुशःकृत्वासस्यान्मृत्यु प्रदायकः ॥ नागन्तुनागवद्वह्नौफुत्कारंपरिमुञ्चति । तद्भक्षितमवश्यन्तुविदधातिभगन्द रम् ॥ वज्रन्तुवज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौविकृतिंव्रजेत् । सर्वाभ्रेषुवरंवज्रंव्याधिवार्द्धक्यमृत्युहृत् ॥ अभ्रमुत्तरशैलोत्थंबहुसत्वंगुणाधिकम् । दक्षिणाद्रिभवंस्वल्पंसत्यमल्पगुणप्रदम् ॥

अभ्रंकषायंमधुरंसुशीतमायुष्करंधातुविबर्द्धनञ्च । हन्यात्त्रिदोषंव्रणमेहकुष्ठप्लीहोदरंग्रन्थिविषकृमींश्च ॥ रोगान्नहन्तिदृढ़यतिवपुर्वीर्यवृद्धिंविधत्तेतारुण्याढ्यंरमयतिशतंयोषितांनित्यमेव । दीर्घायुष्कान्जनयतिसुतान्नाविक्रमैः सिंहतुल्यान्मृत्योर्भीतिंहरतिसततंसेव्यमानंमृताभ्रम ॥ पीड़ांविधत्तेविविधांनराणांकुष्ठंक्षयंपाण्डुगदञ्चशोथम् । हृत्पार्श्वपीड़ाञ्चकरोत्यशुद्धमभ्रन्त्वसिद्धंगुरुताप्रदंस्यात् ॥ २५ ॥

अभ्रककी उत्पत्तिलक्षण नामऔरगुण ॥

पहले वृत्रासुरके मारने के लिये जब इन्द्रने वज्रउठायातब उस्से पतंगे उड़कर आकाशमें फैलगये पीछे मेघोंके गर्जनेसे पहाड़ोंके शिखरोंपर गिरेजिन २ पर्वतोंपर वह अग्निकी चिनगारियां गिरीं उन २ में अभ्रकउत्पन्न हुआ यह वज्रसे उत्पन्न होनेके कारण वज्रअभ्र [मेघ] अभ्रके वेगसेउत्पन्न होनेके कारणअभ्र और गगनसे गिरनेकेकारण गगनकहलताहै ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्र इनभेदों से अभ्रक चारप्रकार का होताहै यह चारों प्रकारका अभ्रक क्रमसे श्वेतरक्त पीत और कृष्ण होताहै श्वेत अभ्रक चांदीकी क्रियामें लालरसायनकी क्रियामें पीला सुवर्णकी क्रियामें और कृष्ण अभ्रक संपूर्ण रोगोंके नाशकरने में श्रेष्ठहै पिनाक दर्दुर नाग और बज्रयह चारप्रकार अभ्रक होताहै पिनाक नाम अभ्रक अग्निमें छोड़नेसे पर्त्त २ अलग होजाताहै अज्ञानतासे जो उसको खाय तो महाकुष्ठ उत्पन्न होताहै दर्दुरनाम अभ्रक अग्निमें छोड़नेसे गोलाकार होकर मैंढकके समान शब्दकरताहै इसके खानेसे मृत्यु होतीहै नागनाम अभ्रक अग्निमें छोड़नेसे सर्पके समान फुंकार शब्द करताहै इसके खानेसे अवश्य भगन्दर नाम रोग होताहै और बज्रनाम अभ्रक अग्निमें छोड़नेसे वज्रके समान स्थित रहताहै बिकारको नहीं प्राप्तकरता यह संपूर्ण अभ्रकों में श्रेष्ठहै इस्से रोग वृद्धावस्था और मृत्युका नाशहोताहै उत्तरके पर्व्वतोंमे उत्पन्न हुआ अभ्रक अत्यन्त बलयुक्त और गुणदायक होताहै दक्षिणीय पर्व्वतोंमें पैदाहुआ अभ्रक स्वल्पबल और गुणयुक्तहोताहै अभ्रक कषैला मधुर शीतल आयुवर्द्धक धातुवर्द्धक और त्रिदोष घावप्रमेह कुष्ठ प्लीहा उदरग्रंथि बिषतथा कृमिनाशक होताहै नित्यसेवन कियाहुआ माराहुआ अभ्रक रोगनाशक शरीरको दृढ़करनेवाला मृत्युकेभयका नाशक और वीर्यबर्द्धक होताहै इसको सेवन करने वाला पुरुष तरुण सौ स्त्रियोंको नित्यरमाताहै और सिंहके समान पराक्रम बालेदीर्घायु पुत्रोंको उत्पन्न करताहै बिनाशोधाहुआ अभ्रक मनुष्योंको अनेक प्रकारकी पीड़ाओंका देनेवाला और कुष्ठ क्षय पांडु सूजन हृदय की पीड़ा पसलीकी पीड़ा और भारीपनका करने वालाहोताहै ॥ २५ ॥

अथ हरितालस्य नामानि लक्षणंगुणाश्च ॥

हरितालंतुतालंस्यादालंतालकमित्यपि । हरितालंद्विधाप्रोक्तंपत्राख्यंपिण्डसंज्ञकम्॥ तयोराद्यंगुणैः श्रेष्ठंततोहीनगुणंपरम् । स्वर्णवर्णंगुरुस्निग्धंसपत्रंचाम्रपत्रवत् ॥ पत्राख्यंतालकंविद्याद्व्रणाढ्यंतद्रसायनम् । निष्पत्रंपिण्डसदृशंस्वल्पसत्वंतथागुरु ॥ स्त्रीपुष्पहारकंस्वल्पगुणंतत्पिण्डतालकम् । हरितालंकटुस्निग्धंकषायोष्णंहरेद्विषम् ॥ कण्डुकुष्ठास्यरोगास्रकफपित्तकचव्रणान् । हरतिचहरितालञ्चारुतांदेहजातांसृजतिचबहुतापानंगसङ्कोचपीड़ाम् । वितरतिकफवातौकुष्ठरोगंविदध्या दिदमशितमशुद्धंमारितञ्चाप्यसम्यक् ॥ २६ ॥

हरितालके नाम लक्षण और गुण ॥

हरिताल ताल आल और तालक यह हरितालके नाम हैं हरिताल दो प्रकारकी है एक तबकी दूसरी गोबरिया इनमें पहली गुणोंमें श्रेष्ठ है और दूसरीमें कम गुणहैं तबकियाहरिताल सुवर्णकेसमान वर्णवाली भारीस्निग्ध अभ्रककेसमान पत्रयुक्त श्रेष्ठ गुणदायक और रसायनहोती है गोबरियाहरिताल पिंडकेसमान पत्ररहित स्वल्प बलवाली थोडेगुणोंसेयुक्त हलकी और स्त्रीकेरजकी नाशक होतीहै हरिताल कटु कषाय स्निग्ध उष्ण और विष खजुली कुष्ठ मुखरोग रक्तदोष कफ पित्त तथा कचव्रण (बालोंकाघाव) नाशकहोती है विनाशोधी और अच्छी न मारीहुई हरितालके सेवनकरनेसे देहकी सुन्दरताकानाश और अनेक प्रकारके सन्ताप आक्षेप कफ वात तथा कुष्ठरोग होताहै ॥ २६ ॥

अथ मनःशिलानामानिगुणाश्च ॥

मनःशिलामनोगुप्तामनोह्वानागजिह्विका । नैपालीकुनटीगोलाशिलादिव्यौषधिःस्मृता ॥ मनःशिलागुरुर्वर्ण्यासरोष्णालेखनीकटुः । तिक्तास्निग्धाविषश्वासकासभूतकफास्रनुत् ॥ मनःशिलामन्दबलंकरोतिजन्तुंध्रुवंशोधनमन्तरेण । मलानुबन्धंकिलमूत्ररोधं सशर्करंकृच्छ्रगदञ्चकुर्य्यात् ॥ २७ ॥

मैनसिल के नाम और गुण ॥

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका नैपाली कुनटी गोला शिला और दिव्यौषधि यह मैनसिल के नाम हैं मैनसिल भारी वर्णकोहित दस्तावर उष्ण लेखन कटु तिक्त स्निग्ध और विष श्वास खांसी भूतबाधा कफ तथा रक्तदोषनाशक होती है विनाशोधी मैनसिल के खाने से बलकी हानि मलमूत्रकाअवरोध शर्करा और मूत्रकृच्छ्र इनकी उत्पत्ति होती है ॥ २७ ॥

अथ सुरमासौवीर ॥

अञ्जनंयामुनञ्चापिकापोताञ्जनमित्यपि । तत्तुश्रोतोऽञ्जनंकृष्णंसौवीरंश्वेतमीरितम् ॥ वल्मीकशिखराकारंभिन्नमञ्जनसन्निभम् । घृष्टन्तुगैरिकाकारमेतत्श्रोतोऽञ्जनंस्मृतम् ॥ स्रोतोऽञ्जनसमंज्ञेयंसौवीरन्तत्तुपाण्डुरम् । स्रोतोऽञ्जनंस्मृतंस्वादुचक्षुष्यं कफपित्तनुत् ॥ कषायंलेखनंस्निग्धंग्राहिछर्द्दिविषापहम् । सिध्मक्षयासृहच्छीतंसेवनीयं सदाबुधैः ॥ स्रोतोऽञ्जनगुणाःसर्वेसौवीरेपिमताबुधैः । किन्तुद्वयोरञ्जनयोःश्रेष्ठंस्रोतोऽञ्जनंस्मृतम् ॥ २८ ॥

सुरमा के नाम गुण ॥

यामुन अंजन और कापोतांजन यह सुरमेके नाम हैं काले सुरमेको श्रोतोंजन और श्वेतको सौवीर कहते हैं कालासुरमा वामीके शिखर के समान आकारवाला तोड़नेसे अंजनकेसमान कांतिवाला और घिसनेसे गेरूके समान होताहै सौवीर नाम सुरमा भी इसीके समान होता है परन्तु वह श्वेत वर्णहोताहै कालासुरमा मधुर नेत्रोंकोहित कफ पित्तनाशक कषैला लेखन स्निग्ध ग्राही और छर्दि विष सिध्म (श्वेतकुष्ठ वा सेंहुआं) क्षय तथा रक्तदोष नाशक होताहै इस कारण पण्डितोंको सदैव इसका सेवन करना चाहिये श्वेत सुरमा भी इसीके समान गुणवालाहोताहै परन्तु दोनों सुरमों में कालासुरमा श्रेष्ठहै ॥ २८ ॥

अथ सोहागा ॥

टङ्कणोऽग्निकरोरूक्षःकफघ्नोवातपित्तकृत् । अयमुपरसत्वात्पुनरुक्तः ॥ २९ ॥

सुहागे के गुण ॥

सुहागा अग्निवर्द्धक रूखा कफघ्न वादी और पित्तवर्द्धक होताहै यहउपरसके कारण दुबारालिखाहै२९॥

अथ फिटिकरी ॥

स्फटीचस्फटिकाप्रोक्ताश्वेताशुभ्राचरंगदा । दृढ़रंगारंगदाचदृढ़ारंगापिकथ्यते ॥ स्फा टिकातुकषायोष्णावातपितकफव्रणान्।निहन्तिश्वित्रवीसर्पान्योनिसङ्कोचकारिणी ३०॥

फिटकरी के नाम गुण ॥

स्फटी स्फटिका श्वेता शुभ्रा रंगदा दृढ़रंगा और रंगांगा यह फिटकरी के नामहैं फिटकरी कषाय उष्ण योनिसंकोचक और वात पित्त कफ धावश्वेत कुष्ठ तथा वीसर्पकी नाशकरनेवालीहोती है ३०॥

अथरेवटी ॥

राजावर्त्तःकटुस्तिक्तःशिशिरःपित्तनाशनः । राजावर्त्तःप्रमेहघ्नःछर्दिहिक्कानिवारणः ३१॥

रेवटी के गुण ॥

रेवटी कटु तिक्त शीतल और पित्त प्रमेह छर्दि तथा हिचकी नाशक होतीहै ॥ ३१ ॥

अथ चुम्बकः ॥

चुम्वकःकान्तपाषाणोयःकान्तोलोहकर्षकः । चुम्बकोलेखनःशीतोमेदो बिषगरां पहः ॥ ३२ ॥

चुम्बक के नाम गुण ॥

चुम्बक कान्तपाषाण और लोहकर्षक यहचुम्बक के नामहैं जिस पत्थर से लोहा खिंचजाताहै उसे चुम्बक कहतेहैं चुम्बक लेखन शीतल और मेद बिष तथा गरदोष नाशक होताहै॥ ३२ ॥

गेरूसुवर्णगेरू ॥

गौरिकंरक्तंधातुश्चगैरेयंगिरिजंतथा । सुवर्णगैरिकन्त्वन्यत्ततोरक्ततरंहितत् ॥ गैरि कंद्वितयंस्निग्धंमधुरंतुवरंहिमम् । चक्षुष्यंदाहपित्तास्त्रकफहिक्काविषापहम् ॥ ३३ ॥

गेरू और सुनहरी गेरू के नाम गुण ॥

गैरिक रक्तधातु गैरेय और गिरिज यह गेरूके नामहैं और दूसरा सुनहरी गेरू इससे अधिक लाल होताहै दोनों गेरू स्निग्ध मधुर २ कषैले शीतल नेत्रकोहित और दाह पित्त रक्त दोष कफ हिचकी तथा विषनाशक होतेहैं ॥ ३३ ॥

अथ खरी गौरखरी ॥

खटिकाकठिनीचापिलेखनीचनिगद्यते । खटिकादाहजिच्छीतामधुराविषशोथजित् ॥ लेपादेतद्गुणाप्रोक्ताभक्षितामृत्तिकासमा । खटीगौरखटीद्वेचगुणैस्तुल्येप्रकीर्त्तिते ॥ ३४॥

खड़िया और श्वेत खड़िया के नाम गुण

खटिका कठिनी और लेखनी यहखड़ियाके नामहैं खड़िया मधुर शीतल और दाह विष तथा सूजन की नाशक होती है यहगुण लेपकरने में हैं और खानेमें मृत्तिकाके समान होती है खड़िया और श्वेत खड़िया दोनों में समान गुणहैं ॥ ३४ ॥

अथ बालू ॥

बालुकासिकताप्रोक्ताशर्करारेंतजापिच। बालुकालेखनीशीताव्रणोरःक्षतनाशिनी३५

बालू के नाम गुण ॥

बालुका सिकता शर्करा और रेतजा यह बालू के नामहैं बालू लेखन शीतल और घाव तथा उरक्षत नाशक होतीहै ॥ ३५ ॥

खपरी आतुत्थभेद ॥

खर्पराीतुत्थकंतुत्थादन्यत्तद्रसकंस्मृतम्।येगुणास्तुत्थकेप्रोक्तास्तेगुणाःरसकेस्मृताः३६॥

तूतिये का भेदखपरिया के नाम गुण ॥

खर्परी तुत्थक यह तूतिया का भेदमात्र है इसका दूसरा नाम रसक है तूतिया के जो गुणकहे हैं वही खपरियामें भी हैं ॥ ३६ ॥

काशीस मांगफूल ॥

काशीशंधातुकाशीशंपांशुकाशीशमित्यपि। तदेवकिंचित्पीतंतुपुष्पकाशीशमुच्यते॥
काशीशमम्लमुष्णंचतिक्तञ्चतुवरंतथा । वातश्लेष्महरंकेश्यंनेत्रकण्डूविषप्रणुत् ॥
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनंपरिकीर्त्तितम् ॥ ३७ ॥

हीराकशीस के नाम गुण ॥

काशीस धातु काशीस और पांशु कशीस यह हीरा कशीस के नामहैं कुछ पीले कशीस को पुष्प काशीस कहते हैं हीराकशीस खट्टा उष्ण तिक्त कषैला केशोंकोहित और वात कफ नेत्रोंकी खुजली विष मूत्रकृच्छ्र पथरी तथा श्वेतकुष्ठ नाशक होताहै ॥ ३७ ॥

अथ सौराष्ट्रीमाटी ॥

सौराष्ट्रीतुवरीकांक्षीमृतालकसुराष्ट्रजे ॥ आढ़कीचापिसाख्यातामृत्स्नाचसुरमृत्तिका। स्फटिकायागुणाःसर्वेसौराष्ट्राअपिकीर्त्तिताः ३८ (अथ कृष्णमृत्तिका) कृष्ण मृत्क्षतदाहास्त्रप्रदरश्लेष्मदाहनुत् ३९ (अथ कर्दमः) कर्दमोदाहपित्तार्त्तिशोथघ्नः शीतलःसरः ॥ ४० ॥ सोरठी मिट्टी के नाम गुण ॥

सौराष्ट्री तुवरी कांक्षी मृतालक सुराष्ट्रज आढ़की मृत्स्ना और सुरमृत्तिका यह सोरठी मट्टी के नामहैं इसमें सब फिटकरी के गुणहोतेहैं ३८ [काली मट्टीके गुण] काली मट्टी घाव दाह रक्त दोष प्रदर कफ तथा पित्तनाशक होती है ३९ [कर्दम [कीचड] के गुण] कर्दम दाह पित्तरोग तथा सूजन की नाशक शीतल और दस्तावर होती है ॥ ४० ॥

अथ बोल ॥

बोलंगंधरसंप्राणःपिण्डगोपरसाःसमाः । बोलंरक्तहरंशीतंमेध्यन्दीपनपाचनम् ॥
मधुरंकटुतिक्तंचदाहस्वेदत्रिदोषजित् ॥ ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नंगर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥४१॥

बोल के नाम गुण ॥

बोल गन्धरस प्राण पिंड गोपरस यह बोलके नाम हैं बोल रक्तनाशक शीतल मेधा को हित

दीपन पाचक मधुर कटु तिक्त गर्भाशय शोधक और दाह स्वेद त्रिदोष ज्वर मृगी तथा कुष्ठ नाशक होता है ॥ ४१ ॥ अथकंकुष्ठोत्पत्तिलक्षणनामगुणाः ॥

हिमवत्पादशिखरेकंकुष्ठमुपजायते । तत्रैकंरक्तकालंस्यात्तदन्यद्धेमप्रभंस्मृतम् ॥ पीतप्रभंगुरुस्निग्धंश्रेष्ठंकंकुष्ठमादिशेत् ॥ श्यामंपीतंलघुत्यक्तंसत्वंनेष्टंतथाण्डकम् । कंकुष्ठंकाककुष्ठञ्चवरांगंरंगदायकं ॥ कंकुष्ठंरेचनंतिक्तंकटूष्णंवर्णकारकम् । कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥ ४२ ॥

कंकुष्ठ [मुर्दासिंग] की उत्पत्ति नाम गुण ॥

हिमालय पर्वत के शिखर में कंकुष्ठ उत्पन्न होता है कंकुष्ठ दोप्रकारकाहै एक लाल काला और दूसरा पीतवर्ण होता है पीतवर्ण भारी और स्निग्ध होताहै वह श्रेष्ठ होता है जो कंकुष्ट श्याम वर्ण और हलका होता है वह बल और गुण से रहित होता है कालकुष्ट कंकुष्ठ विरांग और रंगदायकयह कंकुष्ठ के नाम हैं कंकुष्ठ रेचक तिक्त कटु उष्ण वर्ण कारक और कृमि सूजन उदर आध्मान गुल्म आनाह तथा कफ नाशक होता है ॥ ४२ ॥

(अथरत्नस्यनिरुक्तिः) धनार्थिनोजनाःसर्वेरमंतेऽस्मिन्अतीवयत् । ततोरत्नमितिप्रोक्तंशब्दशास्त्रविशारदैः ॥ ४३ ॥

रत्नकी निरुक्ति ॥

धनार्थी लोग इसमें अत्यन्त अनुरक्त रहते हैं इसी से शब्द शास्त्र के जानने वाले इसको रत्न कहते हैं ॥ ४३ ॥ अथ रत्नस्यनामानिस्वरूपणंच ॥

रत्नंक्लीवेमणिःपुंसिस्त्रियामपिनिगद्यते । तत्तुपाषाणभेदोऽस्तिमुक्तादिचतदुच्यते ॥ तथा (चामरसिंहः) रत्नंमणिर्द्वयोरश्मजातोमुक्तादिकेऽपिच ॥ ४४ ॥

रत्न के नाम और स्वरूप ॥

रत्न[नपुंसक लिंग] को मणि पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिंग कहते हैं यह पाषाण का भेदहै जैसे मोती आदिक और अमरकोष में कहा है कि रत्न अथवा मणि पत्थरों के भेद तथा मोती आदिक कहाते हैं॥ ४४॥

अथ रत्नानांनिरूपणम् ॥

रत्नंगारुत्मतंपुष्परागोमाणिक्यमेवच । इन्द्रनीलश्चगोमेदस्तथावैडूर्य्यमित्यपि ॥ मौक्तिकंविद्रुमश्चेतिरत्नान्युक्तानिवैनव । रत्नंहीरा ॥ गारुत्मतंपन्ना । माणिक्यंपद्मरागः । इन्द्रनीलःलीला । (विष्णुधर्म्मोत्तरेऽपिनवरत्ननिरूपणम्) मुक्ताफलंहीरकंचवैडूर्य्यंपद्मरागकम् ॥ पुष्परागंचगोमेदंनीलंगारुत्मतंतथा । प्रवालयुक्तान्येतानिमहारत्नानिवै नव ॥ तत्रहीरकंहीराइतिलोके ॥ ४५ ॥

रत्नोंका वर्णन ॥

हीरा पन्ना पुष्पराग माणिक्य नीलम गोमेद वैडूर्य मोती और मूंगा यह नौरत्न हैं विष्णु धर्मोत्तरग्रंथ में भी रत्नोंका वर्णन है जैसे की मोती हीरा बैडूर्य माणिक्य पुष्पराग गोमेद नीलम पन्ना और मूंगा यह नौ महारत्न हैं ॥ ४५ ॥

तस्यनामलक्षणंगुणाश्च ॥

हीरकःपुंसिवज्रोऽस्त्रीचन्द्रोमणिवरश्चसः। सतुश्वेतःस्मृतोविप्रोलोहितःक्षत्रियःस्मृतः॥ पीतोवैश्योऽसितःशूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्चसः।रसायनेमतोविप्रःसर्वसिद्धिप्रदायकः॥ क्षत्रियोव्याधिविध्वंसीजरामृत्युहरःस्मृतः। वैश्योधनप्रदःप्रोक्तःतथादेहस्यदार्ढ्यकृत्॥शूद्रोनाशयतिव्याधीन्वयस्तम्भंकरोतिच। पुंस्त्रीनपुंसकानीहलक्षणीयानिलक्षणैः॥ सुवृत्ताःफलसम्पूर्णास्तेजोयुक्ताबृहत्तराः। पुरुषास्तेसमाख्यातारेखाबिन्दुविवर्जिताः॥ रेखाबिन्दुसमायुक्ताःषड़स्त्रास्तेस्त्रियःस्मृताः। त्रिकोणाश्चसुदीर्घास्तेविज्ञेयाश्चनपुंसकाः॥ तेषुस्युःपुरुषाःश्रेष्ठारसबन्धनकारिणः। स्त्रियःकुर्वन्तिकायस्यकान्तिंस्त्रीणांसुखप्रदाः॥ नपुंसकास्त्ववीर्य्यास्युरकामाःसत्ववर्जिताः।स्त्रियस्त्रीभ्यःप्रदातव्याःक्लीवंक्लीवेप्रयोजयेत्॥ सर्वेभ्यःसर्वदादेयाःपुरुषाःवीर्य्यवर्द्धनाः। अशुद्धंकुरुतेवज्रंकुष्ठंपाण्डुंव्यथान्तथा। पाण्डुतांम्यंगुरत्वञ्चतस्मात्संशोध्यमारयेत्॥ ४६॥

हीराके नाम लक्षण और गुण॥

हीरक (पुंल्लिंग) वज्र पुंलिंग और नपुंसकलिंग चन्द्र और मणिवर यह हीरेके नाम हैं श्वेतहीरा ब्राह्मण लाल हीरा क्षत्री पीला वैश्य और कालाहीरा शूद्र वर्ण होता है इस क्रम से चारप्रकार का हीरा होता है ब्राह्मण वर्णका हीरा रसायन में श्रेष्ठ और सर्व सिद्धिदायक क्षत्री वर्ण हीरा रोग वृद्धावस्था और मृत्युका नाशक वैश्यवर्ण हीरा संपत्तिदायक और शरीरका दृढ़करनेवाला और शूद्रवर्ण हीरा रोगनाशक और अवस्थाका स्थापन करने वाला होता है हीरे में पुरुष स्त्री और नपुंसक इनके भी लक्षण होतेहैं जो हीरा सुन्दर गोल सम्पूर्ण फल दायक तेजयुक्त बहुत बड़ा और रेखा तथा बिन्दु रहित होताहै वह पुरुष कहलाताहै जोहीरा रेखा तथा बिन्दुयुक्त और छःकोने वालाहोताहै उसको स्त्री कहतेहैं जोहीरा त्रिकोण और लम्बा होता है वह नपुंसक होता है उनमें से पुरुष जातिकेहीरे श्रेष्ठ और पारेके बांधने वाले होतेहैं स्त्रीजातिके हीरे शरीरकी शोभा करने वाले और स्त्रियोंको सुखदायक होतेहैं नपुंसक जातिके हीरे वीर्य्य रहित बलवर्जित और बेकाम होतेहैं स्त्रियोंको स्त्री हीरे नपुंसकोंको नपुंसकहीरे और वीर्यबढ़ाने वालेपुरुषहीरे सबको सदैव देनेचाहिये विनाशोधा हुआहीरा कुष्ठ पसलीकीपीड़ा पाण्डु और लूलेपनको करताहै इस्से हीरेको शुद्धकरके मारनाचाहिये॥ ४६॥

मारितस्यवज्रस्यगुणाः॥

आयुःपुष्टिबलंवीर्य्यंवर्णंसौख्यंकरोतिच। सेवितंसर्वरोगघ्नंमृतंवज्रन्नसंशयः॥४७॥

मारेहुएहीरेके गुण॥

मराहुआ हीरासेवनकरने से आयु पुष्टता बलवीर्य वर्ण सुखकोकरता और निस्सन्देह सबरोगोंका नाशकरताहै॥ ४७॥ अथ हरितमणिः (पन्नाइतिलोके) तस्यनामानि॥

गारुत्मतंमरकतमश्मगर्भोहरिन्मणिः ४८ (अथ माणिक्यइतिलोकेतस्यनामानि) माणिक्यंपद्मरागःस्याच्छोणरत्नं च लोहितम् ४९ (अथ पुष्परागनामानि) पुष्परागोमञ्जुमणिःस्याद्वाचस्पतिवल्लभः ५० (अथइंद्रनीलगोमेदयोर्नामानि) नी

लंतथेन्द्रनीलंचगोमेदःपीतरत्नकम् ५१ (अथ वैदूर्य्य) वैदूर्य्यंदूरजंरत्नंस्यात्केतुग्रह वल्लभम् ॥ ५२ ॥

पन्नाके नाम ॥

गारुत्मत मरकत अश्मगर्भ और हरिन्मणि यह पन्नाके नामहैं ४८ [माणिक्यके नाम] माणिक्य पद्मराग शोणरत्न और लोहित यह माणिक्यके नाम हैं ४९ [पुष्परागके नाम] पुष्पराग मंजुमणि और वाचस्पति वल्लभ यहपुष्पराग के नामहैं ५० [नीलम और गोमेदके नाम] नीलमको नील और इन्द्रनील और गोमेदको पीतरत्न कहते हैं ५१ [वैडूर्य के नाम] बैडूर्य दूरजरत्न और केतुग्रहवल्लभ यह बैडूर्य के नाम हैं ॥ ५२ ॥

अथ मौक्तिकस्यनामानि ॥

मौक्तिकंशौक्तिकंमुक्तातथामुक्ताफलंचतत्।शुक्तिःशंखोगजक्रोड़ःफणीमत्स्यश्चदर्दुरः ॥ वेणुरेतेसमाख्यातास्तज्ज्ञेमौक्तिकयोनयः।मौक्तिकंशीतलंवृष्यंचक्षुष्यंबलपुष्टिदम् ५३ ॥

मोती के नाम ॥

मौक्तिक'शौक्तिक मुक्ता और मुक्ताफल यह मोती के नाम हैं शुक्ति शंख हाथी शूकर सर्प मछली मेंढक और बांस यह मोतीके उत्पत्ति स्थानहैं मोती शीतल वीर्यवर्धक नेत्रोंकोहित बलकारी और पुष्टदायक होताहै ॥ ५३ ॥

अथ प्रवालस्यनामानि ॥

पुंसिःक्लीवेप्रवालःस्यात्पुमानेवतुविद्रुमः ॥ ५४ ॥ (अथ रत्नानांगुणाः) रत्नानिभक्षितानिस्युमधुराणिसराणिच । चक्षुष्याणिचशीतानिविषघ्नानिधृतानिच ॥ मंगल्यानिमनोज्ञानिग्रहदोषहराणिच (किंरत्नंकस्यग्रहस्यप्रीतिकारित्वेनदोषहरंभवतीतिप्रश्ने तदुत्तरमाहरत्नमालायां)माणिक्यन्तरणेःसुजातममलंमुक्ताफलंशीतगोर्माहेयस्यतुविद्रुमोनिगदितःसौम्यस्यगारुत्मतम् । देवेज्यस्यचपुष्परागमसुराचार्यस्यवज्रंशनेर्नीलंनिर्म्मलमन्ययोर्निगदितेगोमेदवैडूर्य्यके ॥ ५५ ॥

मूंगे के नाम ॥

प्रवाल [पुल्लिङ्ग नपुंसकलिंग] और विद्रुम [पुंल्लिंग] यह मूंगे के नाम हैं ५४ रत्नों के गुण रत्न सेवनकरने से मधुर दस्तावर नेत्रों को हित शीतल तथा विष नाशक और धारणकरने से मंगलदायक तथा ग्रहदोषनाशकहोते हैं कौनरत्न किसग्रहके दोषको शांतकरताहै यह रत्नमालामें कहाहै कि माणिक्य सूर्यका सुन्दर निर्मल मोती चन्द्रमाका मूंगा मंगलका पन्ना बुधका पुष्पराग वृहस्पतिकाहीरा शुक्रकानीलम शनैश्चरका गोमेदरा हुका और वैडूर्यकेतुका दोषनाशक होताहै५५॥

अथोपरत्नानां निरूपणम् ॥

उपरत्नानिकाचश्चकर्पूराश्मातथैवच । मुक्ताशुक्तिस्तथाशङ्खइत्यादीनिबहून्यपि ॥ उपरत्नानिगौणरत्नानि । कर्पूराश्माकपर्नीयाकर्पुनीश्रा ॥ मुक्ताशुक्तिःसीप । गुणायथैव रत्नानामुपरत्नेषुतेयथा । किन्तुकिञ्चित्ततोहीनाविशेषोऽयमुदाहृतः ॥ ५६ ॥

उपरत्नोंका वर्णन ॥

काच कर्पूरी पत्थर मोतीकी सीप और शंखादिक बहुतसे उपरत्नहैं रत्नोंमें जो गुण हैं वही उपरत्नों में हैं परन्तु बिशेषता यहहै कि रत्नोंकी अपेक्षा कुछ कम गुण हैं ॥ ५६ ॥

अथ विषस्य नाम लक्षण गुणाः ॥

विषन्तुगरलःक्ष्वेडस्तस्यभेदानुदाहरे । वत्सनाभःसहारिद्रःसक्तुकश्चप्रदीपनः ॥ सौराष्ट्रिकःशृङ्गिकश्चकालकूटस्तथैवच । हालाहलोब्रह्मपुत्रोविषभेदाअमीनव ॥ ५७ ॥

बिषके नाम लक्षण और गुण ॥

बिष गरल और क्ष्वेड यह बिषके नामहैं वत्सनाभ हारिद्र सक्तुक प्रदीपन सौराष्ट्रिक शृंगिक काल-कूट हालाहल और ब्रह्मपुत्र यह नौ प्रकारके बिषहैं ॥ ५७ ॥

तत्र वत्सनाभस्य स्वरूप निरूपणम् ॥

मिन्दुवारसदृशपत्रोवत्सनाभ्याकृतिस्तथा।यत्पार्श्वेनतरोर्वृद्धिर्वत्सनाभःसभाषितः५८॥

वत्सनाभ बिषके स्वरूप का वर्णन ॥

जिसके पत्ते निर्गुण्डीके समानहों और जिसकी आकृति बछडेके नाभिकी समान हो जिसके पास अन्य किसी वृक्षकी वृद्धि नहो उसको वत्सनाभ [मीठातेलिया] बिष कहते हैं ॥ ५८ ॥

अथ हारिद्रस्य स्वरूप निरूपणम् ॥

हरिद्रातुल्यमूलोयोहारिद्रःसउदाहृतः ५९ (अथ सक्तुकस्य स्वरूपम्) यद्ग्रन्थिः सक्तुकेनैवपूर्णामध्यःससक्तुकः ॥ ६० ॥

हारिद्रकास्वरूप ॥

जिस विष वृक्षकी जड हल्दीके समानहो उसको हारिद्र (विष कहतेहैं५९सक्तुक विषका स्वरूप) जिस विषकी गांठ सक्तुके समान चूर्णसे पूर्णहो उसे सक्तुक विषकहतेहैं ॥ ६० ॥

अथ प्रदीपनस्य स्वरूपम् ॥

वर्णतोलोहितोयःस्याद्दीप्तिमान्दहनप्रभः। महादाहकरःपूर्वैःकथितःसप्रदीपनः॥६१॥

प्रदीपन विषका स्वरूप ॥

जो विष रक्तवर्ण दीप्तिमान् अग्निके समान प्रभायुक्त और अत्यन्तदाह करनेवालाहोताहै उसको प्राचीन लोग प्रदीपन कहतेहैं ॥ ६१ ॥

अथ सौराष्ट्रिकस्य स्वरूपम् ॥

सुराष्ट्रविषयेयःस्यात्ससौराष्ट्रिकउच्यत ६२ (अथ शृङ्गिकस्यस्वरूपम्) यस्मिन्गो शृङ्गकेवद्धेदुग्धम्भवतिलोहितम्।सशृंगिकइतिप्रोक्तोद्रव्यतत्त्वविशारदैः ६३

सौराष्ट्रिकका स्वरूप ॥

जो विष सुराष्ट्र देशमें उत्पन्नहोताहै उसे सौराष्ट्रिक विषकहतेहैं ६२ [शृंगिकविषकास्वरूप] जिस विषको गौके सींगमें बांधनेसे दूध लाल होजाताहै उसको द्रव्य तत्त्वज्ञलोग शृंगिक [सिंगिया] कहते हैं ॥ ६३ ॥ अथ कालकूटस्य स्वरूपम् ॥

देवासुररणेदेवैर्हतस्यपृथुमालिनः । दैत्यस्यरुधिराज्जातस्तरुरश्वत्थसन्निभः ॥ नि

र्यासःकालकूटोऽस्यमुनिभिःपरिकीर्तितः । सोहिक्षेत्रेश्रृंगवेरेकोङ्कणेमलयेभवेत् ॥ ६४ ॥

कालकूटकास्वरूप ॥

देवदानवोंके युद्धमें देवताओंसे मारेहुए पृथुमाली नाम दैत्यके रुधिरसे जो पीपलके समान वृक्ष उत्पन्नहुआ उसके गोंदको कालकूट कहतेहैं यह श्रृंगबेरकोंकण और मलयमें उत्पन्नहोताहै ॥ ६४ ॥

अथ हालाहलस्य स्वरूपम् ॥

गोस्तनाभफलोगुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा । तेजसायस्यदह्यन्तेसमीपस्थाद्रुमादयः ॥ असौहालाहलोज्ञेयःकिष्किन्धायांहिमालये । दक्षिणाब्धितटेदेशेकोङ्कणेऽपिच जायते ॥ ६५ ॥

हालाहलकास्वरूप ॥

जिस बिष वृक्षके फल मुनक्काकेसमान गुच्छाकार उत्पन्नहोते हैं जिसकेपत्ते ताड़पत्रकेसमानहोते हैं और जिसके तेजसे निकटके वृक्षादिक जलजाते हैं उसको हालाहलकहते हैं यह किष्किन्धा हिमालय दक्षिण समुद्रकातट और कोंकणदेश में उत्पन्नहोता है ॥ ६५ ॥

अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम् ॥

वर्णतःकपिलोयःस्यात्तथाभवतिसारतः । ब्रह्मपुत्रःसविज्ञेयोजायतेमलयाचले ॥ ब्राह्मणःपाण्डुरस्तेषुक्षत्रियोलोहितःप्रभः । वैश्यःपीतःसितःशूद्रोविषउक्तश्चतुर्विधः ॥ रसायनेविषंविप्रंक्षत्रियन्देहपुष्टये । वैश्यंकुष्ठविनाशायशूद्रन्दद्याद्वधायहि ॥ विषंप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच । आग्नेयंवातकफह्योगवाहिमदावहम् ॥ व्यवायिसकलकायगुणव्यापनपूर्वकंपाकगमनशीलं । विकाशि । ओजःशोषणपूर्वकंसन्धिबन्धशिथिलीकरणशीलम् ॥ आग्नेयं । अधिकाग्न्यंयोगवाहिसंगिगुणग्राहकं ॥ मदावहम् । तमोगुणाधिक्येनबुद्धिविद्वंसकम् ॥ तदेवयुक्तियुक्तन्तुप्राणदायिरसायनम् । योगवाहित्रिदोषघ्नंधातुहर्णबीर्य्यवर्द्धनम् ॥ येदुर्गुणाविषेऽशुद्धेतेस्युर्हीनाविशोधनात् । तस्माद्विषंप्रयोगेषुशोधयित्वाप्रयोजयेत् ॥ ६६ ॥

ब्रह्मपुत्रकास्वरूप ॥

जोविष कपिलवर्ण और सार से उत्पन्नहोताहै उसको ब्रह्मपुत्रजानना चाहिये यह मलयपर्व्वत में होताहै श्वेतवर्ण ब्राह्मण रक्तवर्ण क्षत्री पीतवर्ण वैश्य और कृष्ण वर्ण विष शद्र यह चारप्रकारका विषहोताहै रसायनमें ब्राह्मण विष शरीरकी पुष्टतामें क्षत्रीविष कुष्ठनाशकरने में वैश्य विष और मारने में शूद्रविष देनाचाहिये विष प्राणनाशक व्यवाई [संपूर्ण शरीर में गुणके व्याप्तहोजाने पर परिपाकको प्राप्त होनेवाला] विकाशी [ओजको सुखाकर सन्धि बन्धनोंको शिथिल करने वाला] आधिक अग्निके गुणवाला वातघ्न कफ नाशक योगवाही [जिस द्रव्यके साथमिले उसीके गुणको ग्रहण करने वाला] और मदावह [तमोगुणकी अधिकतासे बुद्धिका नाशकहोताहै] यह विष जो युक्तिपूर्व्वक काममें लायाजाय तो प्राणदायक रसायन योगवाही त्रिदोषनाशक धातुवर्द्धक और वीर्य वर्द्धक होताहै अशुद्ध विषमें जो दुर्गुण होतेहैं वह शुद्धकरने से हीन होजाते हैं इसकारण से विषको शुद्धकरके काममें लानाचाहिये ६६ ॥

अथोपविषाणां निरूपणम् ॥

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलांगलीकरवीरकः । गुञ्जाहिफेनोधत्तूरःसप्तोपविषजातयः ॥ उप विषाःगौणविषाः । एषांगुणास्तत्रतत्रद्रष्टव्याः ॥ ६७ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशे धातूपधातु रसोपरस रत्नोपरत्न विषोपविषवर्गः ॥

उपविषोंका वर्णन ॥

आककादूध थूहरकादूध करहारी कनेर घोंघची अफीम और धतूरा यहसात उपविष हैं इनके गुण पीछे वर्णनहो चुकेहैं ॥ ६७ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेधातुउपधातुरसउपरसरत्नउपरत्नविषउपविषवर्गसमाप्तः ॥

अथ धान्यवर्गः । तत्रधान्यानांभेदाः ॥

शालिधान्यंव्रीहिधान्यंशूकधान्यंतृतीयकम् । शिम्बीधान्यंक्षुद्रधान्यंमित्युक्तंधान्यप ञ्चकम् ॥ शालयोरक्तशालाद्याव्रीहयःषष्ठिकादयः । यवादिकंशूकधान्यंमुद्गाद्यंशिम्बि धान्यकम् ॥ कंग्वादिकंक्षुद्रधान्यंतृणधान्यञ्चतत्स्मृतम् ॥ १ ॥

अथ धान्यवर्गः । धान्यों के भेद ॥

शालिधान्य व्रीहिधान्य शूकधान्य शिंबीधान्य और क्षुद्रधान्य यह पांचप्रकारके धान्यहोते हैं लाल धान आदिक शालिधान्य साठीआदिक व्रीहिधान्य जौआदिक शूकधान्य मूंग आदिक शिंबीधान्य और कंगनी आदिक क्षुद्रधान्य अथवा तृणधान्य कहलातेहैं ॥ १ ॥

तत्र शालिधान्यस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

कण्डनेनविनाशुक्लैहैमन्ताःशालयःस्मृताः २ (अथशालीनांनामानि) रक्तशालिः सकलमःपाण्डुकःशकुनाहृतः । सुगन्धकःकर्दमकोमहाशालिश्चदूषकः ॥ पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथामहिषमस्तकः । दीर्घशूकःकाञ्चनकोहायनोलोध्रपुष्पकः ॥ इत्याद्याःशालयः सन्तिबहवोबहुदेशजाः । ग्रन्थविस्तरभीतेस्तेसमस्तानात्रभाषिताः ॥ ३ ॥

शालिधान्यके लक्षण और गुण ॥

जो हेमन्त ऋतुका धान्य बिनाकूटे श्वेतहो वह शालिधान्य कहलाते हैं २ [शालियों के नाम] रक्तशालि कलम पांडुक शकुनाहृत सुगंधककर्दमक महाशालि दूषक पुष्पांडक पुंडरीक महिष मस्तक दीर्घशूक कांचनक हायन और लोध पुष्पक इत्यादिक बहुत से शालि अनेक देशों में होतेहैं यहां ग्रंथ के बिस्तार के भयसे सब नहीं कहेगये हैं ॥ ३ ॥

अथ तेषांगुणाः ॥

शालयोःमधुराःस्निग्धाबल्याबद्धाल्पवर्च्चसः । कषायालघयोरुच्याःस्वर्य्यातृष्ण्याश्च बृंहणाः ॥ अल्पानिलकफाःशीताः पित्तलामूत्रलास्तथा । शालयोदग्धमृज्जाताःक षायालघुपाकिनः ॥ सृष्टमूत्रपुरीषाश्चरूक्षाःश्लेष्मापकर्षणाः ॥ कैदारावातपित्तघ्नाःगुरु

वःकफशुक्रलाः। कषायाअल्पवर्च्चस्कामध्याश्चैवबलावहाः ॥ केदाराःकृष्टक्षेत्रजाःउप्ताः। स्थलजाःस्वादवःपित्तकफघ्नावातपित्तदाः ॥ किञ्चित्तिक्ताःकषायाश्चविपाकेकटुकाअपि। स्थलजाःअकृष्टभूमिजाताः ॥ स्वयंजाता। वापितामधुराबृष्याबल्याःपित्तप्रणाशनाः ॥ श्लेष्मलाश्चाल्पवर्च्चस्काःकषायागुरवोहिमाः। वापिताःकृष्टक्षेत्रेअकृष्टक्षेत्रेच ॥ वापितेभ्योगुणैःकिञ्चितहीनाःप्रोक्ताअवापिताःकृष्टक्षेत्रेअकृष्टक्षेत्रेवा ॥ रोपितास्तुनवाबृष्याःपुराणालघवःस्मृताः। तेभ्यस्तुरोपिताभूयःशीघ्रपाकागुणाधिकाः ॥ छिन्नरूढ़ाःहिमारूक्षाबल्याःपित्तकफापहाः। बद्धविट्काःकषायाश्चलघवश्चाल्पतिक्तकाः ॥ ४ ॥

शालियोंके गुण ॥

शालि मधुर कषैले स्निग्ध बलकारी मलको कठिन तथा अल्प करनेवाले हलके रुचिकारक स्वर कोहित वीर्यवर्द्धक धातुवर्द्धक कुछबादी कुछ कफकारक शीतल पित्तनाशक और मूत्रवर्द्धक होतेहैं दग्धमृत्तिकामें उत्पन्नहुए शालि कषैले शीघ्रपचने वाले मलमूत्रको निकालनेवाले रूखे और कफनाशक होतेहैं जोतेहुये खेत में बोयेगये शालिधान बात पित्त नाशक भारी कफकारी वीर्यवर्द्धक कषैले मल को स्वल्प करनेवाले मेधाकोहित और बलकारी होतेहैं बिनाजोतीहुई पृथ्वीमें आपसे आप उत्पन्नहुए शालि मधुर पित्तनाशक कफघ्न वात तथा अग्निवर्द्धक कुछ तिक्त कषैले और पाकमें कटु होतेहैं जोते अथवा बे जोतेहुए खेतमें बोयेहुए धान्य मधुर वीर्यबर्द्धक बलकारक पित्तनाशक कफवर्द्धक मलको स्वल्प करनेवाले भारी और शीतल होतेहैं जोते अथवा बिनाजोतेहुए खेतमें बिनाबोयेहुए धान्य बोये हुओं से गुणमें कुछ कम होतेहैं एक स्थानसे उखाड़कर दूसरे स्थान में बोये गये धान्य नवीन होनेपर वीर्यवर्द्धक और प्राचीन होनेपर हलके होतेहैं वही धान्य उखाड़कर फिर बोयेगये शीघ्रपकने वाले अधिक गुणयुक्त काटने से फिर जमनेवाले शीतल रूखे पित्त कफ नाशक मलके बांधनेवाले कषैले हलके और कुछ तिक्त होतेहैं ॥ ४ ॥

अथ रक्तशालेर्गुणाः ॥

रक्तशालिवरस्तेषुबल्योवर्ण्यस्त्रिदोषजित्। चक्षुष्योमूत्रलःस्वर्य्यःशुक्रलस्तृट्ज्वरापहः ॥ विषव्रणश्वासकासदाहनुद्वह्निपुष्टदः। तस्मादल्पान्तरगुणाःशालयोमहदादयः ॥ रक्तशालिःदाउदखानीइतिलोके। मगधदेशेप्रसिद्धः ॥ ५ ॥

लाल धान्य के गुण ॥

सब शालि धान्योंमें रक्त शालि श्रेष्ठ बलकारक वर्णकोहित त्रिदोष नाशक नेत्रोंकोहित मूत्रवर्द्धक स्वरकोहित वीर्यवर्द्धक अग्निवर्द्धक पुष्टताकारक और तृषा ज्वर बिष घाव श्वास खांसी तथा दाह नाशक होतेहैं महा शालि आदिक इनसे गुण में कम होतेहैं ॥ ५ ॥

अथ व्रीहिधान्यस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

वार्षिकाःकण्डिताःशुक्लव्रीहयश्चिरपाकिनः। कृष्णव्रीहिःपाटलश्चकुक्कुटाण्डकइत्यपि ॥ शालामुखोजतुमुखइत्याद्याःव्रीहयःस्मृताः। कृष्णव्रीहिःसविज्ञेयोयत्कृष्णतुषतण्डुलः ॥ पाटलःपाटलापुष्पवर्णकोव्रीहिरुच्यते। कुक्कुटाण्डाकृतिव्रीहिःकुक्कुटाण्डकत

उच्यते ॥ शालामुखःकृष्णशूकःकृष्णतण्डुलउच्यते।लाक्षावर्णमुखंयस्यज्ञेयोजतुमुखस्तु सः ॥ व्रीहयःकथिताःपाकेमधुरावीर्य्यतोहिताः । अल्पाभिष्यन्दिनीबद्धवर्च्चस्काःषष्ठिकैः समाः ॥ कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषांतस्मादल्पगुणाःपरे ॥ ६ ॥

व्रीहि धान्यके लक्षण और गुण ॥

वर्षाकालमें उत्पन्न होनेवाले कूटने से श्वेत और देरमें पचने वाले धान्य व्रीहिकहलातेहैं कृष्ण व्रीहि पाटल कुक्कुटांडक शाला मुख और जत मुख आदिक व्रीहिधान्य कहेगये हैं काले छिलके के चावल को कृष्ण व्रीहिकहतेहैं जिसका वर्ण पाटल पुष्पके समानहो उसको पाटलव्रीहि मुर्गेके अण्डे के समान आकारवाले को कुक्कुटांड व्रीहि जिसकी कालीनोक तथा काले चावलहों उसको शालामुख और जिसके मुखका वर्ण लाख के समानहो उसको जतु मुख व्रीहि कहतेहैं व्रीहि धान्य पाक में मधुर वीर्य में शीतल कुछ अभिष्यन्दी मलके रोकनेवाले और षष्ठिक धान्य के समान होतेहैं इन में कृष्ण व्रीहि सबसे श्रेष्ठहैं और शेष इनकी अपेक्षा स्वल्पगुणवाले होतेहैं॥ ६ ॥

अथ षष्ठिकानां लक्षणंगुणाश्च ॥

गर्भस्थाएवयेपाकंयान्तितेषष्ठिकामताः ७ (अथषष्ठिकानांनामानि) षष्ठिकःशत पुष्पश्चप्रमोदकमुकुन्दकौ ।महाषष्ठिकइत्याद्याःषष्ठिकाःसमुदाहृताः ॥ एतेऽपिव्रीहयःप्रोक्ताव्रीहिलक्षणदर्शनात् । षष्ठिकाःमधुराःशीतालघवोबद्धवर्च्चसः ॥ वातपित्तप्रशमनाः शालिभिःसदृशाःगुणैः ॥ ८ ॥

षष्ठिकों के लक्षण और गुण ॥

जो गर्भमेही स्थितहुए पकजांय वह षष्ठिक कहलाते हैं ७[षष्ठिकके नाम और गुण]षष्टिक शनपुष्प प्रमोदक मुकुन्दक और महाषष्ठिक आदिषष्ठिक धान्य कहलाते हैं इनको व्रीहिधान्य भी कहते हैं क्योंकि इनमें व्रीहिके लक्षण दिखाई देतेहैं षष्ठिक धान्य मधुर शीतल हलके मलरोधक बातपित्त नाशक और शालिधान्य के समान गुणवाले होते हैं ॥ ८ ॥

तत्र षष्ठिकायागुणाः ॥

षष्ठिकाप्रवरातेषांलघ्वीस्निग्धात्रिदोषजित् । स्वाद्वीमृद्वीग्राहिणीचबलदाज्वरहारिणी ॥ रक्तशालिगुणैस्तुल्याततःस्वल्पगुणापरेषष्ठिकःसाठीइतिलोके ॥ ९ ॥

साठी केगुण ॥

षष्ठिक धान्योंमें साठीसबसे श्रेष्ठहै यहहलकी स्निग्ध त्रिदोष नाशक मधुर कोमल ग्राहीबलकारकज्वर नाशक और रक्त शालिके समान गुणवाली होतीहै इसकी अपेक्षा अन्य षष्ठिक धान्यकम गुणवाले होतेहैं ॥ ९ ॥

अथ शूकधान्यानि ॥

तेषुयवःप्रसिद्धः । अतियवोअतिशूकःकृष्णारुणोवर्णोयवः ॥ तोक्योहरितोनिशूकःस्वल्पोयवःयवेतिप्रसिद्धः । (तेषांनामानिगुणाश्च) यवस्तुशतकः स्यान्निःशूकोऽतियवःस्मृतः ॥ तोक्यस्तद्वत्सहरितस्ततःस्वल्पश्चकीर्त्तित ॥ यवः कषायो

मधुरःशीतलोलेखनोमृदुः । व्रणेषुतिलवत्पथ्योरूक्षोमेधाग्निवर्द्धनः ॥ कटुपाकोऽनभिष्पन्दीस्वर्य्योबलकरोगुरुः । बहुवातमलोवर्णस्थैर्य्यकारीचपिच्छिलः ॥ कण्ठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदःप्रणाशनः । पीनसश्वासकासोरुस्तम्भलोहितत्तृट्प्रणुत् ॥ अस्मादतियवोन्यूनस्तोक्योन्यूनतरस्ततः ॥ १० ॥

शूकधान्यका वर्णन ॥

(जौ अतिजौ (बडीनोककृष्ण औररक्तवर्ण) स्तोक्य (हरावर्णऔर नोकरहितजौ) इनकेनाम गुण)यव (इसकीनोक श्वेतहोतीहै) अतियव (इसमेंनोकनहींहोती) स्तोक्य (हरितवर्णऔरछोटा) यह जौकेभेदहैं जौ कषैला मधुर शीतल लेखन कोमल घावमें तिलके समानपथ्य रूखा मेधाकोहित अग्निवर्द्धक पाकमेंकटु अभिष्पन्दसे रहित स्वरको हित बलकारकभारी अत्यन्तवादी बहुतमल वर्द्धक वर्णको स्थिर करने वाला पिच्छिल और कंठरोग त्वचारोग कफपित्त मेद पीनस श्वास खांसी उरस्तंभ रक्तदोष तथा तृषा नाशक होताहै यवकी अपेक्षा अतियवमें गुणकम होताहै और स्तोक्यमें बहुतही कमगुण होतेहैं ॥ १० ॥

अथ गोधूमस्यनामानिलक्षणंगुणाश्च ॥

गोधूमःसुमनोऽपिस्यात्त्रिविधःसचकीर्त्तितः । महागोधूमइत्याख्यःपश्चाद्देशात्समागतः ॥ (महागोधूम) बड़गोधूमाइतिलोके । मधूलीतुततःकिञ्चिदल्पोमध्यदेशजा ॥ निःशूकोदीर्घगोधूमःक्वचिन्नंदीमुखाभिधः । गोधूमोमधुरःशीतोबातपित्तहरोगुरुः ॥ कफशुक्रप्रदोबल्यःस्निग्धःसन्धानकृत्सरः । जीवसोवृंहणोवर्ण्योव्रण्योरुच्यस्थिरत्वकृत् (कफप्रदोनवीनोनतुपुराणः) पुराणयवगोधूमःक्षौद्रजांगलशूल्यभागिति॥ वाग्भटेनवसंतेगृहीतत्वात् । मधूलीशीतलास्निग्धापित्तघ्नीमधुरालघुः ॥ शुक्रलावृंहणीपथ्यातद्वन्नन्दीमुखःस्मृतः ॥ ११ ॥

गेहूँकेनाम लक्षणऔर गुण ॥

गोधूम और सुमन यह गेहूंके नामहैं महा गोधूम जिसको बडागेहूं कहतेहैं पश्चिम देशसे आताहै मधूली नामगेहूं कुछछोटा होताहै और मध्यदेशमें उत्पन्न होताहै और नन्दी मुखनामगेहूं नोकरहित और लम्बाहोताहै गेहूं मधुर शीतल बातघ्न पित्तनाशक भारी कफकारक वीर्य वर्द्धक बलकारक स्निग्ध टूटेको जोड़ने वाला सारक जीवन धातुवर्द्धक वर्णकोहित घावमेंपथ्य रुचिकारक और शरीरको स्थिर करने वालाहोताहै नवीनगेहूं कफकारक होताहै नकिपुराना क्योंकि बाग्भटमें कहाहै कि वसन्तऋतुमें पुराने जौ गेहूं सहत जंगलीजीवोंका मांस और शूल्य (कवाव) खानाकहाहै मधूली नामगेहूं शीतल स्निग्ध पित्तनाशक मधुर हलके वीर्यवर्द्धक धातुबर्द्धक और पथ्यहोतेहैं नान्दीमुख गेहूंमें भी इसी के समान गुणहोते हैं ॥ ११ ॥

अथ शिम्बीधान्यम् ॥

तत्पर्य्यायानाह ॥ शमीजाःशिम्बिजाःशिम्बीभवाःसूर्य्याश्चवैदलाः (तेषांगुणाः) वैदलामधुरारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः ॥ वातलाःकफपित्तघ्नाःबद्धमूत्रमलाहिमाः । ऋतेमु-

द्गमसूराभ्यामन्येत्वाध्मानकारिणः ॥ मुद्गमसूरयोराध्मानकारित्वमन्यवैदलापेक्षयानतुसर्व्वथा। एतयोरपिकिञ्चिदाध्मानकारित्वात् ॥ १२ ॥

शिंवीधान्यका वर्णनइसके नाम और गुण ॥

शमीज शिंवीज शिंवीभव सूर्य्य और वैदल यह शिंवी धान्यके नामहैं इनकेगुण शिंवीधान्य मधु कषाय रूखा पाकमेंकटु बादी कफ नाशक पित्तघ्न मलमूत्र रोधक और शीतल होताहै मूंगऔर मसूरको छोकर सब शिंवीधान्य आध्मान कारक होतेहैं यहां मूंग और मसूर अन्य शिंवीधान्योंकी अपेक्षा आध्मानकारी नहीं हैं यहकहागया नकिसर्वथा क्योंकि यहभी कुछ आध्मानकरते हैं आध्मान अफरेको कहतेहैं ॥ १२ ॥ तत्रमुद्गस्यगुणाः ॥

रूक्षोलघुर्ग्राहीकफपित्तहरोहिमः। स्वादुरल्पानिलोनेत्र्योज्वरघ्नोवनजस्तथा ॥ मुद्गो बहुविधःश्यामोहरितःपीतकस्तथा। श्वेतोरक्तश्चतेषान्तुपूर्व्वःपूर्व्वोलघुःस्मृतः ॥ सुश्रुतेनपुनप्रोक्तोहरितःप्रवरोगुणैः। चरकादिभिरप्युक्तःएषएवगुणाधिकः ॥ १३ ॥

मूंग के गुण ॥

मूंग रूखी हलकी ग्राही पित्तनाशक कफघ्न शीतल मधुर कुछ बादी नेत्रों को हित और ज्वरकी नाशकहोती है बनमूंगमें भी इसीके समान गुणहोते हैं मूंग बहुत प्रकारकी होती है जैसे श्याम हरी पीत श्वेत और लाल यह क्रमसे पूर्व्व २ हलकी हैं सुश्रुतने हरीमूंगको सबसे गुणों में श्रेष्ठ कहाहै और चरकादिक मुनियोंने भी इसीको अधिक गुण युक्तकहाहै ॥ १३ ॥

अथ उड़द ॥

माषोगुरुःस्वादुपाकःस्निग्धोरुच्योऽनिलापहः। स्रंसनस्तर्पणोबल्यःशुक्रलोबृंहणःपरः ॥ भिन्नमूत्रमलस्तन्योमेदःपित्तकफप्रदः। गुदकीलार्दितःश्वासपंक्तिशूलानिनाशयेत् ॥ कफपित्तकरामाषाःकफपित्तकरंदधि।कफपित्तकरामत्स्याबृन्ताकंकफपित्तकृत्॥ १४॥

उर्द के गुण ॥

उर्द भारी पाक में मधुर स्निग्ध रुचिकारक बातनाशक उष्ण तृप्तिकारक बलकारी वीर्यबर्द्धक धातुबर्द्धक मलमूत्रका पृथक् करनेवाला दुग्धबर्द्धक मेदकरनेवाला पित्तबर्द्धक कफकारी और गुदाकी कीलकीपीड़ा श्वास तथा पंक्ति शूलकानाशकहोता हैं उर्द दही मछली और बैंगन यह चारों कफ तथा पित्तके करनेवालेहैं ॥ १४ ॥

अथ वोड़ायस्यचवेरातरालोविआइत्यादयोभेदाः ॥

राजमाषोमहामाषश्चपलश्चवलःस्मृतः। राजमाषोगुरुःस्वादुस्तुवरस्तर्पणःसरः ॥ रूक्षोवातकरोरुच्यःस्तन्यमूरिबलप्रदः। श्वेतोरक्तस्तथाकृष्णःत्रिविधःसप्रकीर्त्तितः। यो महांस्तेषुभवतिसएवोक्तोगुणाधिकः ॥ १५ ॥

(राजमाष जिसके बोड़ा वेरातरा और लुबिया आदिक भेद हैं उसके नाम और गुण)

राजमाष महामाष चपल और चवल यह राजमाष के नाम हैं राजमाष भारी मधुर कषैले तृप्तिकारक दस्तावर रूखे बातबर्द्धक रुचिकारक दुग्धबर्द्धक और बहुत बलकारीहोते हैं श्वेत रक्त तथा कृष्ण इनभेदोंसे राजमाष तीन प्रकारकाहोताहै इनमें जो बड़ाहोताहै वही अधिक गुणवानहोताहै १५॥

अथ निष्पावःसतुराजसिम्बीवींजंभटवासुइतिलोके ॥

निष्पावोराजशिम्बिःस्याद्वल्लकःश्वेतशिम्बिकः निष्पावोमधुरोरूक्षोविपाकेऽम्लो गुरुःसरः ॥ कषायस्तन्यपित्तास्रमूत्रवातविबन्धकृत् । विदाह्युष्णोविषश्लेष्मशोथहृच्छुक्रनाशनः ॥ १६ ॥

भटमाष के नाम गुण ॥

निष्पाव राजशिंवी वल्लक और श्वेतशिंविक यह भटमाष के नाम हैं भटमाष मधुर रूखा पाकमें खट्टा भारी दस्तावर कषैला और दुग्ध पित्त रक्त मूत्र बात तथा विवन्धकारी उष्ण और विष कफ सूजन तथा वीर्यनाशकहोता है ॥ १६ ॥

अथ मोठ ॥

मकुष्ठोबनमुद्गःस्यान्मकुष्ठकमुकुष्ठकौ ॥ मकुष्ठोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः । वह्निजिन्मधुरःपाकेकृमिकृज्ज्वरनाशनः ॥ १७ ॥

मोठ के नाम गुण ॥

मकुष्ट वनमुद्ग मकुष्टक और मुकुष्टक यह मोठ के नाम हैं मोठ बादी ग्राही (काविज़) हलकी पाकमें मधुर कृमिकारक और कफ पित्त जठराग्नि तथा ज्वरनाशकहोती है ॥ १७ ॥

अथ मसूर ॥

मङ्गल्यकोमसूरःस्यान्मंङ्गल्याचमसूरिका । मसूरोमधुरःपाकेसंग्राहिशीतलोलघुः। कफपित्तास्रजिद्रूक्षोवातलोज्वरनाशनः ॥ १८ ॥

मसूर के नाम गुण ॥

मंगल्यकमसूर मंगल्या और मसूरिका यह मसूर के नाम हैं मसूर पाकमें मधुर काविज शीतल हलकी रूखी बादी और कफ पित्त रक्तदोष तथा ज्वरनाशकहोतीहै ॥ १८

अथ रहरी ॥

आढ़कीतुवरीचापिसाप्रोक्ताशणपुष्पिका। आढ़कीतुवरारूक्षामधुराशीतलालघुः ॥ ग्राहिणीवातजननीवर्ण्यापित्तकफास्रजित् ॥ १९ ॥

अरहड़ के नाम गुण ॥

आढ़की तुवरी और श्येनपुष्पिका यह अरहड़के नाम हैं अरहड़ कषैली रूखी मधुर शीतल हलकी काविज़ बादी बर्णकोहित और पित्त कफ तथा रक्त नाशकहोती है ॥ १९ ॥

अथ छोला ॥

चणकोहरिमन्थःस्यात्सकलप्रियइत्यपि । चणकःशीतलोरूक्षःपित्तरक्तकफापहः ॥ लघुःकषायोविष्टम्भीवातलोज्वरनाशनः । सचांगारेणसम्भृष्टस्तैलभृष्टश्चतत्गुणः ॥ आर्द्रभृष्टोबलकरोरोचनश्चप्रकीर्तितः । शुष्कभृष्टोऽतिरूक्षश्चवातकुष्ठप्रकोपणः ॥ स्विन्नःपित्तकफंहन्यात्सूपःक्षोभकरोमतः ॥ आर्द्रोऽतिकोमलोरुच्यःपित्तशुक्रहरोहिमः । कषायोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः ॥ २० ॥

चनें के नाम गुण ॥

चणक हरिमन्थ और सकलप्रिय यह चने के नाम हैं चना शीतल रूखा हलका कषैला विष्टंभी बादी और रक्त पित्त कफ तथा ज्वरनाशकहोताहै अंगारों में और तेल में भूनेहुए चने के भी यही गुणहैं गीला भूनाहुआ चना बलकारी और रुचिबर्द्धकहोता है सूखा भूनाहुआ चना अत्यन्त रूखा और बात तथा कुष्ठकारीहोताहै सिझायाहुआ चना पित्त तथा कफनाशकहोताहै चनेकी दाल क्षोभ (बिगाड़) करतीहै कच्चाचना अत्यन्त कोमल रुचिकारी शीतल कषैला बादी काविज्ञ हलका और रक्त पित्त तथा कफ नाशकहोताहै ॥ २० ॥ केराव ॥

कलायोवर्तुलःप्रोक्तःसतिनश्चहरेणुकः । कलायोमधुरःस्वादुपाकेरूक्षश्चशीतलः२१॥

मटर के नाम गुण ॥

कषाय वर्त्तुल सतीन और हरेणुक यह मटर के नाम हैं मटर रस तथा पाक में मधुर रूखा और शीतल होता है ॥ २१ ॥

अथ खेसारी ॥

त्रिपुटःखण्डकोऽपिस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ।त्रिपुटोमधुरस्तिक्तस्तुवरोरूक्षणोभृशं ॥ कफपित्तहरोरुच्योग्राहकःशीतलस्तथा।किन्तुखञ्जत्वपंगुत्वकारीवातातिकोपनः॥२२॥

खिसारी के नाम गुण ॥

त्रिपुट और खण्डक यह खिसारी के नाम हैं खिसारी मधुर तिक्त कषैली अत्यन्त रूखी कफघ्न पित्तनाशक रुचिकारक काविज्ञ शीतल लूला लँगड़ाकरनेवाली और अत्यन्त बादीहोती है ॥ २२ ॥

अथ कुलत्थी ॥

कुलत्थिकाकुलत्थश्चकथ्यन्तेतद्गुणाअथ । कुलत्थःकटुकःपाकेकषायःपितरक्तकृत् ॥ लघुर्विदाहिवीर्य्योष्णःश्वासकासकफानिलात् ॥ हन्तिहिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान् । स्वेदसंग्राहकोमेदोज्वरकृमिहरःपरः ॥ २३ ॥

कुलथी के नाम गुण ॥

कुलथीको कुलत्थिका और कुलत्थ कहतेहैं कुलथी पाक में कटु कषैली पित्त तथा रक्तकारक हलकी बिदाही उष्ण श्वेद रोधक और श्वास खांसी कफ बात हिचकी पथरी वीर्य दाह आनाह पीनस मेद ज्वर तथा कृमिनाशक होताहै ॥ २३ ॥ अथतिलः ॥

तिलःकृष्णःसितोरक्तःसवर्ण्योऽल्पतिलःस्मृतः । तिलोरसेकटुस्तिक्तोमधुरस्तुवरोगुरुः ॥ विपाकेकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णःकफपित्तनुत् । वल्यःकेश्योहिमस्पर्शस्त्वच्यस्तन्योव्रणेहितः ॥ दन्त्योऽल्पमूत्रकृद्ग्राहीबातघ्नोऽग्निमतिप्रदः । कृष्णःश्रेष्ठतमस्तेषुशुक्लोमध्यमःसितः ॥ अन्येहीननराःप्रोक्तास्तजज्ञैरक्तादयस्तिलाः ॥ २४ ॥

तिलके नाम गुण ॥

काला श्वेत और रक्त यह तीन प्रकारका तिलहोताहै एक प्रकार का और भी छोटा तिल जिसको वन्य कहतेहैं होताहै तिल कटु तिक्त मधुर कषैला भारी पाक में कटु तथा मधुर स्निग्ध उष्ण कफघ्न पित्तनाशक बलकारक केशोंकोहित स्पर्शमें शीतल त्वचाकोहित दुग्धवर्द्धक घावमें हित दांतोंको दृढ करनेवाला मूत्रको कम करनेवाला काविज्ञ वातघ्न अग्निकारक और बुद्धि वर्द्धक होताहै सबतिलोंमें

काले तिल श्रेष्ठहोतेहैं श्वेत तिल वीर्य्यवर्द्धक और मध्यम होताहै और रक्तवर्ण आदिक तिल गुणोंमें हीन होतेहैं ॥ २४ ॥

अथातिसि ॥

अतसीनीलपुष्पीचपार्वतीस्यादुमाक्षुमा । अतसीमधुरातिक्तास्निग्धापाकेकटुर्गुरुः ॥ उष्णदृक्शुक्रवातघ्नीकफपित्तविनाशिनी ॥ २५ ॥

अलसीके नामगुण ॥

अतसी नीलपुष्पी पार्वती उमाऔर क्षुमायह अलसीके नामहैं अलसी मधुर तिक्त स्निग्धपाक में कटु भारी उष्ण और दृष्टि वीर्य बात कफ तथा पित्तनाशक होतीहै ॥ २५ ॥

अथ तोरीतोड़िसेतिलोके ॥

तुवरीग्राहिणीप्रोक्तालघ्वीकफविषास्रजित् । तीक्ष्णोष्णावह्निदाकण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिप्रणुत् ॥ २६ ॥

तोरीके गुण ॥

तोरी काविज़ हलकी तीक्ष्ण उष्ण अग्नि कारक और कफ विष रक्त खुजली कुष्ठ तथा कोष्ठ के कृमियोंकी नाशक होतीहै ॥ २६ ॥

अथ रक्तसरीसोपिअरीसरीसो ॥

सर्षपःकटुकःस्नेहस्तुन्तुभश्चकदम्बकः । गौरस्तुसर्षपःप्राज्ञैःसिद्धार्थःइतिकथ्यते ॥ सार्षपस्तुरसेपाकेकटुस्निग्धःसतिक्तकः । तीक्ष्णोष्णः कफबातघ्नोरक्तपित्ताग्निबर्द्धनः ॥ रक्षोहरोजयेत्तगण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिग्रहान् । यथरक्तस्तथागौरःकिंतुगौरोमतः ॥ २७ ॥

लालऔर पीलीसरसोंके नामगुण ॥

सर्षप कटुकस्नेह तंतुभ और कदंबक यह सरसोंके नामहैं श्वेत सरसोंको पंडित लोग सिद्धार्थ कहतेहैं सरसों रसतथा पाकमें कटु स्निग्ध कुछ तिक्त तीक्ष्ण उष्ण रक्त पित्त तथा अग्नि वर्द्धक रक्त सीयबधा नाशक और कफ बात खुजली कुष्ठ कोष्ठके कृमि तथा ग्रहदोष नाशक होती है लाल और श्वेत यह दोनों सरसों समानहैं परन्तु श्वेतसरसों श्रेष्टहै ॥ २७ ॥

अथ राई कृष्णराई ॥

राजीतुराजिकातीक्ष्णगन्धाक्षुज्जनिकासुरी । क्षवःक्षुधाभिजनकःकृमिकृत्कृष्णसर्षपः । राजिकाकफपित्तघ्नीतीक्ष्णोष्णारक्तपित्तकृत् । किंचिद्रूक्षाग्निदाकण्डूकुष्ठकोष्ठकृमीन्हरेत् ॥ अतितीक्ष्णाविशेषेणतद्वत्कृष्णापिराजिका ॥ २८ ॥

राई और काली राईके नाम गुण ॥

राजी राजिका तीक्ष्णगन्धा क्षुज्जनिका और आसुरी यह राई के नामहैं क्षव क्षुधाभिजनक कृमिकृत् और कृष्ण सर्षप यह काली राई के नाम हैं राई तीक्ष्ण उष्ण रक्त पित्तकारक कुछ रूखी अग्नि वर्द्धक और कफ पित्त खुजली कुष्ठ तथा कोष्ठ के कृमि की नाशक होती है कालीराई विशेष करके तीक्ष्ण और राई के समान गुणवाली होतीहै ॥ २८ ॥

अथ क्षुद्रधान्यम् ॥

क्षुद्रधान्यंकुधान्यंचतृणधान्यमितिस्मृतम् । क्षुद्रधान्यमनुष्णंस्यात्कषायंलघुलेखनम् ॥

मधुरंकटुकंपाकेरूक्षंचक्लेदशोषकम् ॥ बातकृत्वद्धविट्कंचपित्तरक्तकफापहम् ॥ २६ ॥

क्षुद्रधान्यका वर्णन ॥

क्षुद्रधान्य कुधान्य और तृणधान्य यह क्षुद्रधान्यके नामहैं क्षुद्रधान्य कुछ उष्ण कषैला हलका लेखन मधुर पाकमें कटु रूखा गीलेको सुखानेवाला वादी मलरोधक और पित्त रक्त तथा कफनाशक होताहै ॥ २९ ॥

तत्र कंगुनी ॥

स्त्रियांकंगुप्रियंगुद्वेकृष्णारक्तासितातथा। पीताचतुर्व्विधाकंगुस्तासाम्पीतावरास्मृता ॥ कंगुस्तुभग्नसंधानवातकृत्वृंहणीगुरुः। रूक्षाश्लेष्महरातीववाजिनांगुणकृद्भृशम् ॥३०॥

कंगुनीके नाम गुण ॥

कंगुनीको कंगु और प्रियंगु कहतेहैं यह कृष्ण रक्तश्वेत और पीत इन भेदोंसे चार प्रकारकीहै इन में पीलीकंगुनी श्रेष्ठहै कंगुनी टूटे हाड़को जोड़नेवाली वादी धातुवर्द्धक भारी रूखी अतिकफनाशक और घोड़ोंको अत्यन्त गुणदायक होती है ॥ ३० ॥

अथ चीना ॥

चीनाकःकंगुभेदोऽस्तिसज्ञेयःकंगुवद्गुणैः ॥ (अथ श्यामा) श्यामाकःशोषणोरूक्षोवातलःकफपित्तहृत् ॥ ३२ ॥

चीनाके गुण ॥

चीना कंगुनीका भेदहै इसमें कंगुनीके समान गुणहोते हैं ३१ (सामाके गुण) सामा सुखानेवाला रूखा वादी और कफ पित्तनाशक होताहै ॥ ३२ ॥

अथ कोद्रवः ॥

कोद्रवःकोरदूषःस्यादुद्दालोबनकोद्रवः । कोद्रवोवातलोग्राहीहिमपित्तकफापहः ॥ उद्दालस्तुभवेदुष्णोग्राहीवातकरोभृशम् ॥ ३३ ॥

कोदोके नाम गुण ॥

कोद्रवको कोरदूष कहतेहैं और बनकोदोको उद्दाल कहतेहैं कोदो वादी काविज शीतल तथा पित्त कफनाशक और बनकोदो उष्ण काविज़ और अत्यन्त वादी होताहै ॥ ३३ ॥

अथ चारुकः सरबीजः ॥

चारुकःसरबीजःस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ । चारुकोमधुरोरूक्षोरक्तपित्तकफापहः ॥ शीतलोलघुवृष्यश्चकषायोवातकोपनः ॥ ३४ ॥

सरबीजके नाम गुण ॥

सरबीजको चारुक कहतेहैं सरबीज मधुर कषैला रूखा रक्तपित्तनाशक कफघ्न शीतल हलका वीर्यवर्द्धक और वादी होताहै ॥ ३४ ॥

अथ वंशबीजः ॥

यवावंशभवारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः।बद्धमूत्राःकफघ्नाश्चबातपित्तकराःसराः ३५ ॥

बांसके बीजोंके गुण ॥

बांसके बीज रूखे कषैले पाकमेंकटु मूत्ररोधक कफनाशक वादी पित्तवर्द्धक और दस्तावरहोतेहैं ३५॥

अथ बरैकुसुम्भबीज ॥

कुसुम्भबीजंवरटासैवप्रोक्तावरट्टिका । वरटामधुरास्निग्धारक्तपित्तकफापहा॥ कषायाशी तलागुर्व्वीस्यादवृष्यानिलापहा ॥ ३६ ॥

कुसुमके बीजोंके नाम गुण ॥

कुसुंभबीज बरटा और वरट्टिका यहकुसुमके बीजोंके नामहैं कुसुमकेबीज मधुर कषैले स्निग्ध रक्त पित्तनाशक कफघ्न शीतल भारी वीर्यके नहीं बढ़ानेवाले और बातनाशक होतेहैं ॥ ३६ ॥

अथ गरहेडुआ ॥

गवेधुकातुविद्वद्भिर्गवेधुःकथितास्त्रियाम्।गवेधुःकटुकास्वादीकाश्यर्कृत्कफनाशिनी३७॥

गरहडुआके नाम गुण ॥

गरहडुआको गवेधुका और गवेधू (स्त्रीलिंग) कहतेहैं गरहडुआ कटु मधुर कृशकरनेवाला और कफनाशक होताहै ॥ ३७ ॥

अथ तीनी ॥

प्रसाधिकातुनीवारस्तृणान्तमितिचस्मृतम्।नीवारःशीतलोग्राहीपित्तघ्नःकफवातकृत्३८॥

तिन्नीपसाईके नाम गुण ॥

प्रसाधिका नीवार और तृणान्न यह तिन्नीपसाईके नामहैं तिन्नीपसाई शीतल ग्राही पित्तनाशक कफकारी और वादी होती है ॥ ३८ ॥

अथ पुनेरा ॥

पवनाःलोहितःस्वादुर्ल्लोहितःश्लेष्मपित्तजित् । अवृष्यस्तुवरोरूक्षःक्लेदकृत्कथितो लघुः ॥ ३९ ॥

पुनराके गुण ॥

पवना पुनेरा शीतल मधुर वीर्यको नहीं बढ़ानेवाला कफघ्न पित्तनाशक रूखा क्लेदकारक और हलका होताहै ॥ ३९ ॥

अथ सर्ब धान्य गुणाः ॥

धान्यंसर्व्वंनवंस्वादुगुरुश्लेष्मकरंस्मृतम् । तत्तुवर्षोषितंपथ्यंयतोलघुतरंहितम् ॥ वर्षोषितंसर्वधान्यंगौरबंपरिमुञ्चति । नतुत्यजतिबीर्य्यंस्वंक्रमान्मुञ्चत्यतःपरम् ॥ एते षुयवगोधूममतिलमाषानवाहिताः ॥ पुराणाविरसारूक्षानतथागुणकारिणः ॥ पुराणावर्ष द्वयादुपरिस्थिताः । यवादयोनवाःस्वास्थ्यान्प्रतिहिताः ॥ पथ्याशिनान्तुपुराणाहिताः । पुराणायवगोधूमक्षौद्रजांगलशूल्यभुगितिबासन्तेवाग्भटेनोक्तत्वात् ॥ ४० ॥

इतिश्रीभावप्रकाशे धान्यवर्गः ॥

सम्पूर्ण धान्योंके गुण ॥

सम्पूर्ण नवीनधान्य मधुर भारी और कफकारक होतेहैं एकबर्षका पुरानाधान्य हलकेपनेसे पथ्य होताहै एकबर्षका पुराना सब अनाज भारीपनको छोड़ताहै और वीर्य्यको नहींछोड़ता इसके उपरांत क्रमसे वीर्यको भी छोड़ताहै जौ गेहूं तिल और उड़द यहनवीनही हितकारी होतेहैं और दोबर्षके पुराने

रसरहित और रूखे होजातेहैं ऊपरकहेहुए जौ आदिक नवीन होनेपर स्वस्थ पुरुषोंको हितकारी होते हैं परन्तु पथ्यवालोंको पुरानेहितहैं क्योंकि बाग्भटने वसन्तचर्य्यामें पुराने जौ तथा गेहू सहत जंगल जीवोंका मांस और शूल्य कबाब खाना कहाहै ॥ ४० ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेधान्यवर्गः समाप्तः ॥

अथ शाकवर्गः तत्र शाकनिरूपणम् ॥

पत्रंपुष्पंफलंनालंकन्दंसंस्वेदजंतथा । शाकंषड्विधमुद्दिष्टंगुरुविद्याद्यथोत्तरम् १ ॥

अथशाकवर्गः ॥ शाकोंका वर्णन ॥

पत्र पुष्प फल नालकन्द और स्वेदज यह छः प्रकारके शाक (तरकारी) होतेहैं यह क्रमसे उत्तरोत्तर भारी होतेहैं १ ॥ अथ शाकानांगुणाः ॥

प्रायःशाकानिसर्व्वाणिविष्टम्भीनिगुरूणिच । रूक्षाणिबहुवर्च्चांसिसृष्टविण्मारुतानिच ॥ शाकंभिन्नतिवपुरस्थिनिहन्तिनेत्रम् वर्णंविनाशयतिरक्तमथापिशुक्रम् । प्रज्ञाक्षयञ्चकुरुतेपलितञ्चनूनम् हन्तिस्मृतिंगतिमितिप्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥ शाकेषुसर्व्वेषु वसन्तिरोगास्तेहेतवोदेहविनाशनाय । तस्मात्बुधःशाकविवर्ज्जनन्तुकुर्य्यात्तथाम्लेषु सएवदोषः ॥ एतानिशाकनिन्दकानिवचनानिसामान्यानि ॥ अथ शाकेषुविशिष्टानि वचनानि ॥ २ ॥

शाकोंकेगुण ॥

प्रायःसंपूर्ण शाक विष्टंभी भारी रूखे अत्यन्त मल वर्द्धक मलनिकालनेवाले और वादीहोतेहैं शाक शरीरकी हड्डी नेत्र वर्ण रुधिर वीर्य बुद्धि स्मृति तथा गतिको नष्टकरतेहैं और बालोंको श्वेत करतेहैं संपूर्ण शाकोंमें रोगरहतेहैं वही शरीर के विनाशके कारणहोतेहैं इससे पंडित लोग शाकका त्यागकरें और खटाई में भी यही दोषहै यह शाकोंकी निन्दा के सामान्य बचन हैं अब शाकों के वर्णनमें विशेष बचन कहेजाते हैं ॥ २

तत्र पत्रशाकानि ॥ तत्रापिवास्तूकद्वयस्यनामानि गुणाश्च ॥

वास्तूकंबास्तुकञ्चस्यात्क्षारपत्रञ्चशाकराट् । तदेवतुवृहत्पत्ररक्तस्याद्गौड़वास्तुकम् ॥ प्रायशोयवमध्येस्याद्यवशाकंमतःस्मृतम् । वास्तूकद्वितयंस्वादुक्षारंपाकेकटूदितम् । दीपनंपाचनंरुच्यंलघुशुक्रबलप्रदम् । सरंप्लीहास्रपित्तार्शःकृमिदोषत्रयापहम् ॥ ३ ॥

पत्रशाकोंका वर्णन । दोनोंबथुईके नामगुण ॥

वास्तूक वास्तुक क्षारपत्र और शाकराट् यह बथुईके नामहैं बड़ेपत्तेकी लालबथुई को गौड़वास्तुक और प्रायः यवोंके बीच में होनेसे यवशाक कहतेहैं दोनों बथुई मधुर क्षार पाकमें कटुदीपन पाचक रुचिकारक हलकी वीर्य वर्द्धक बलकारी दस्तावर और प्लीहा रक्तपित्त बवासीर कृमि तथा त्रिदोष नाशकहोतीहैं ॥ ३ ॥

अथ पोतकी ॥

पोतक्युपोदिकासातुमालवाम्रतवल्लरी । पोतकीशीतलास्निग्धाश्लेष्मलावातपित्तनुत् ॥ अकण्ट्यापिच्छिलानिद्राशुक्रदारक्तपित्तजित् । बलदारुचिकृत्पथ्यावृंहणीतृप्तिकारिणी ॥ ४ ॥

पोयकेनामगुण ॥

पोतकी उपोदिका मालवा और अमृत बल्लरी यह पोयकेनाम हैं पोय शीतल स्निग्ध कफकारक बात पित्तनाशक कंठको अहित पिच्छिल निद्राकारी बीर्य बर्द्धक रक्त पित्त नाशक बलकारीरुचिकारक पथ्य धातुवर्द्धक और तृप्तिकारी होतीहै ॥ ४ ॥

अथ श्वेतमरुसा लोहितमरुसा नवड़ा इतिच ॥

मारिषोवाष्पकोमार्षःश्वेतोरक्तश्चसरस्मृतः । मारिषोमधुरःशीतोविष्टम्भीपित्तनुत्गुरुः॥ वातश्लेष्मकरोरक्तपित्तनुत्विषमाग्निजित् । रक्तमार्षोगुरुर्नातिसक्षारोमधुरःसरः॥ श्लेष्मलःकटुकःपाकेस्वल्पदोषउदीरितः ॥ ५ ॥

श्वेत मरसा और लालमरसाके नाम और गुण ॥

मारिष वाष्पक और मार्ष यह दोनों मरसाके नामहैं मरसा मधुर शीतल विष्टंभी पित्तनाशक भारी बादी कफकारी और रक्त पित्त तथा विषमाग्नि नाशकहोताहै लालमरसा बहुतभारीपनसे रहित कुछ क्षार मधुर दस्तावर कफकारी पाक में कटु और थोड़े दोषवाला होताहै ॥ ५ ॥

अथ चवराई ; अल्पमरुसा इतिच ॥

तण्डुलीयोमेघनादः काण्डेरस्तण्डुलेरकः । भण्डीरस्तण्डुलीबीजोविषघ्नश्चाल्पमारिषः ॥ तण्डुलीयोलघुःशीतोरूक्षःपित्तकफास्रजित् । सृष्टमूत्रमलोरुच्योदीपनोविषहारकः॥ ६ ॥

चौराईके नाम गुण ॥

तंडुलीय मेघनाद कांडेर तंडुलेरक भंडीर तंडुलीबीज विषघ्न और अल्पमारिष यह चौराई के नामहैं चौराई शीतल हलकी रूखी पित्तघ्न कफनाशक रक्तदोष नाशक मलमूत्र निकालनेवाली रुचिकारी दीपन और विषनाशक होती है ॥ ६ ॥

अथचवराईभेदः ॥

जलतण्डुलीयंशास्त्रेकचटामितिप्रसिद्धम् ॥ पानीयंतण्डुलीयन्तुकचटंसमुदाहृतम् । कचटंतिक्तकंरक्तपित्तानिलहरंलघु ॥ ७ ॥

जलचौराई के नामगुण ॥

जल चौराई को जलतंडुलीय और कचट कहते हैं जल चौराई तिक्त रक्तपित्त नाशक बातघ्न और हलकी होतीहै ॥ ७ ॥

अथ पलकी ॥

पलक्यावास्तुकाकाराच्छुरिकाचीरितच्छदा ॥ पलक्यावातलाशीताश्लेष्मलाभेदिनीगुरुः । विष्टम्भिर्नामदश्वासपित्तरक्तकफापहाः ॥ ८ ॥

पालकके नाम गुण ॥

पलक्या वास्तुकाकारा छुरिका और चीरितच्छदा यह पालकके नामहैं पालक वादी शीतल कफकारी दस्तावर भारी बिष्टंभी और मदरोग श्वास पित्तरक्त तथा बिषनाशक होताहै ॥ ८ ॥

अथ नीरचाकालशाकामितिच ॥

नाड़िकंकालशाकञ्चश्राद्धशाकञ्चकालकम् ॥ कालशाकंसरंरुच्यंवातकृत्कफशोथ हृत् । बल्यंरुचिकरंमेध्यंरक्तपित्तहरंहिमम् ॥ ९ ॥

नारीके शाक के नाम गुण ॥

नाड़िक कालशाक श्राद्धशाक और कालक यह नारीके शाकके नामहैं नारीकाशाक दस्तावर रुचिकारकबादी कफघ्नशोथनाशकबलकारी रुचिकारक मेधाकोहित रक्त पित्तनाशक और शीतल होताहै९॥

अथ पटुआ ॥

पटशाकस्तुनाड़ीकोनाड़ीशाकश्चसःस्मृतः।नाड़ीकोरक्तपित्तघ्नोविष्टम्भीवातकोपनः१०

पटुआशाक के नामगुण ॥

पटशाक नाड़िका और नाड़ीशाक यह पटुशाक के नामहैं पटुआ रक्तपित्त नाशक बिष्टंभी और बादी होताहै ॥ १० ॥

अथ कलम्बी ॥

कलम्बीशतपर्वाचकथ्यन्तेतद्गुणाअथ । कलम्बीस्तन्यदाप्रोक्तामधुराशुक्रकारिणा ११॥

कलगीके नाम गुण ॥

कलगीको कलंबी और शतपर्व्वा कहतेहैं कलगी दुग्धवर्द्धक मधुर और वीर्यवर्द्धक होतीहै ॥ ११ ॥

अथ लोणि ॥

वृहल्लोणीलोणालोणीचकथितावृहल्लोणीतुघोटिका । लोणीरूक्षास्मृतागुर्व्वीवात श्लेष्महरीपटुः॥ अर्शोघ्नीदीपनीचाम्लामन्दाग्निविषनाशिनी । घोटिकाम्लासराचोष्णा वातकृत्कफपित्तहृत् ॥ वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नीश्वासकासप्रमेहनुत् । शोथलोचनरोगेच हिं तातज्ज्ञैरुदाहृता ॥ १२ ॥

छोटी और बड़ी नोनिया के नाम गुण

छोटी नोनियाको लौणा तथा लौणी और बड़ी नोनियाको घोटिका कहतेहैं नोनिया रूखी भारी दीपन खट्टी नमकीन और बात कफ बवासीर मन्दाग्नि तथा बिष नाशक होती है और बड़ी नोनिया खट्टी दस्तावर उष्ण बादी और कफ पित्त त्वचा के दोष घाव गुल्म श्वास खांसी प्रमेह सूजन और नेत्र रोग नाशक होती है ॥ १२ ॥

अथ चांगेरीअम्बिलीनारतिच ॥

चाङ्गेरीचुक्रिकादन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका । अश्मन्तकस्तुशफरीपिसलीचाम्लप त्रकः ॥ चाङ्गेरीदीपनीरुच्यारूक्षोष्णाकफवातनुत् । पित्तलाम्लाग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसार नाशिनी ॥ १३ ॥

चांगेरी चूकाका भेद उसके नाम गुण ॥

चांगेरी चुक्रिका दन्तशठा अम्बष्ठा अम्ल लोणिका अश्मन्तक शफरी कुशली और अम्ल पत्रक यह चांगेरी के नामहैं चांगेरी दीपन रुचिकारक रूखी उष्ण पित्त वर्द्धक खट्टी और कफ वात ग्रहणी बवासीर कुष्ठतथा अतीसार नाशक होतीहै ॥ १३ ॥

अथ चूक ॥

चुक्रिकास्यात्तुपत्राम्लारोचनीशतवेधिनी ॥ चुक्रात्वम्लतरास्वाद्वीवातघ्नीकफपित्त कृत् । रुच्यालघुतरापाकेवृन्ताकेनातिरोचनी ॥ १४ ॥

चूकाके नाम गुण ॥

चुक्रिका पत्राम्ला रोचनी और शतवेधिनी यह चूकाके नामहैं चूका बहुतखट्टा मधुर वात नाशक कफ पित्तकारक रुचिकारी शीघ्रपचने वाला और बैंगन के साथ बहुत रुचिकारी होताहै ॥ १४ ॥

अथ चेवुनानाड़ीचवत् ॥

चिञ्चाचञ्चुश्चञ्चुकीचदीर्घपत्रासतिक्तका ॥ चुञ्चुःशीतासरारुच्यास्वाद्वीदोषत्रया पहा । धातुपुष्टिकरीबल्यामेध्यपिच्छिलकास्मृता ॥ १५ ॥

चेबुना के नाम गुण ॥

चिंचा चंचू चंचुकी दीर्घपत्रा और तिक्तका चेबुना शीतल दस्तावर रुचिकारी मधुर त्रिदोष नाशक धातुपोषक बलकारी मेधाकोहित और पिच्छिल होताहै ॥ १५ ॥

अथ हिलमोचिकाहुरहुरइतिलोके ॥

ब्राह्मीशङ्खधराचारीब्राह्मीचहिलमोचिका । शोथंकुष्ठंकफंपित्तंहरतेहिलमोचिका १६ ॥

हुरहुर के नाम गुण ॥

ब्राह्मी शंखधरा आचारी मंत्री और हिलमोचिका यह हुरहुरके नामहैं हुरहुर सूजन पित्त कफ और कुष्ठ नाशक होता है ॥ १६ ॥

अथ शिरीआरी ॥

शितिवारःशितिवरःस्वस्तिकःसुनिषण्णकः । श्रीवारकःसूचिपत्रःपर्णकःकुक्कुटःशिखी ॥ चांगेरीसदृशःपत्रश्चतुर्दलइतीरितः । शाकोजलान्वितेदेशेचतुःपत्रीतिचोच्यते ॥ सुनि षण्णोहिमोग्राहीमोहदोषत्रयापहः ॥ अविदाहीलघुःस्वादुःकषायोरूक्षदीपनः । वृष्योरु च्योज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ॥ १७ ॥

शिरयारी के नाम और गुण

शितिवार शितिवर स्वस्तिक सुनिषण्णक श्रीवारक शुचिपत्र पर्णक कुक्कुट और शिखी यह शिरयारी के नामहैं इसके पत्ते चांगेरी के समानहोतेहैं और यह सजल देशमें उत्पन्न होताहै इसमें चार दल होतेहैं उसको चतुःपत्री भी कहतेहैं शिरयारी शीतल ग्राही मेदनाशक त्रिदोषघ्न बिदाह रहित हलकी मधुर कषैली रूखीदीपन वीर्य्य वर्द्धक रुचिकारी और ज्वर श्वास प्रमेह कुष्ठ तथाभ्रमनाशक होतीहै १७

अथ मुरईपत्रम् ॥

पाचनंलघुरुच्योष्णंपत्रंमूलकजंनवम्।स्नेहसिद्धंत्रिदोषघ्नमसिद्धंकफपित्तकृत १८ ॥

मूलीके पत्तों के गुण ॥

मूलीके नयेपत्ते पाचक हलके रुचिकारक और उष्ण होतेहैं यह स्नेहमें पकायेहुए त्रिदोष नाशक और कच्चे कफ पित्तकारी होतेहैं ॥ १८

अथ गुम्मा ॥

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरूक्षंगुरु चपित्तकृत् । भेदनंकामलाशोथमेहज्वरहरंकटु ॥ १९ ॥

गूमाके गुण ॥

गूमाकेपत्ते मधुर रूखे भारी पित्तवर्द्धक दस्तावर कटु और कामला सूजन प्रमेह तथा ज्वर नाशक होतेहैं ॥ १९ ॥

अथ जवाइन ॥

यवानीशाकमाग्नेयंरुच्यंवातकफप्रणुत्।उष्णंकटुचतिक्तंचपित्तलंलघुशूलहृत् २० ॥

अजवाइन के शाकके गुण ॥

अजवाइनका शाक अग्निके गुणवाला रुचिकारी बातघ्न कफ नाशक उष्ण कटु तिक्त पित्त वर्द्धक हलका और शूल नाशक होताहै ॥ २० ॥

अथ चकवड़ ॥

दद्रुघ्नपत्रंदोषघ्नमम्लंवातकफापहम् । कण्डूकासकृमिश्वासदद्रूकुष्ठप्रणुल्लघु॥ २१॥

पवांड के पत्तोंके गुण

पवांड़ के पत्ते दोषनाशक खट्टे हलके और बात कफ खुजली खांसी कृमि श्वास दाद तथा कुष्ठ नाशक होते हैं ॥ २१ ॥

अथ सेहुण्ड ॥

सेहुण्डस्यदलंतीक्ष्णंदीपनंरोचनंहरेत्।आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणिच २२॥

सेंहुड़ के पत्तों के गुण ॥

सेंहुड़के पत्तेतीक्ष्णदीपन रुचिकारक और उदर आध्मान अष्ठीला गुल्मशूलतथासूजननाशकहोताहै २२॥

अथ दवनपापरा ॥

पर्प्पटोहंतिपित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान् । संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहनुद्रातलोलघुः २३॥

पित्तपापड़े के शाक के गुण ॥

पित्तपापड़ा पित्त रक्त ज्वर तृषा कफ भ्रम तथा दाह नाशक ग्राही शीतल तिक्त वादी और हलका होताहै ॥ २३ ॥

अथ गोभी ॥

गोजिह्वाकुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरोलघुः २४ ॥ (अथ पटोलपत्र) पटोलपत्रंपित्तघ्नंदीपनम्पाचनंलघु । स्निग्धंतृष्यंतथोष्णञ्चज्वरकासकृमिप्रणुत् ॥ २५ ॥

गोभी के गुण ॥

गोभी कुष्ठ मेह रक्तदोष मूत्रकृच्छ्र तथा ज्वर नाशक और हलकी होती है ॥ २४ ॥ (परवलके पत्तोंकेगुण) पटोलपत्र पित्तघ्न दीपन पाचन हलकेस्निग्ध बर्यिवर्द्धक उष्ण औरज्वर खांसीतथा कृमि* नाशक होतेहैं ॥ २५ ॥

अथ गुडूची ॥

गुडूचीपत्रमाग्नेयंसर्वज्वरहरंलघु । कषायंकटुतिक्तञ्चस्वादुपाकंरसायनम् ॥ बल्यमुष्णञ्चसंग्राहिहन्यात्दोषत्रयंतृषाम् । दाहप्रमेहवातास्रकामलाकुष्ठपाण्डुताम् २६॥

गिलोयके पत्तोंके गुण ॥

गिलोयके पत्ते अग्निके गुणवाले संपूर्ण ज्वरनाशक हलके कषैले कटु तिक्त पाकमें मधुर रसायन बलकारीउष्णग्राही और त्रिदोष तृषादाहप्रमेहबातरक्तकामला कुष्ठतथापांडुनाशकहोतेहैं २६॥

अथ कसौंदी काममर्दोऽरिमर्दश्चकासारिःकर्कशस्तथा ॥

कासमर्द्ददलंरुच्यंबृष्यंकासविषास्रनुत् । मधुरंकफवातघ्नंपाचनंकण्ठशोधनम् ॥
विशेषतःकासहरंपित्तघ्नंग्राहकंलघु ॥ २७ ॥

कसौंदीकेनामगुण ॥

कासमर्द अरिमर्द कासारि और कर्कश यह कसौंदी के नाम हैं कसौंदीके पत्ते रुचिकारी वीर्यवर्द्धक खांसी नाशक विषघ्न रक्तदोष नाशक मधुर कफ बातनाशक पाचक कंठशोधक और विशेष करके खांसी तथा विषके नाशक ग्राही और हलके होतेहैं ॥ २७ ॥

अथ चणक ॥

रुच्यश्चणकशाकंस्यात्दुर्ज्जरंकफवातकृत्।अम्लंविष्टम्भजनकंपित्तनुत्दंतशोथहृत् २८

चनेके शाककेगुण ॥

चनेकाशाक रुचिकारी कठिनतासे पचने वाला कफकारी वादी खट्टा विष्टंभी पित्तनाशक और दांतोंकी सूजनका नाशक होताहै ॥ २८ ॥

अथ केराव ॥

कलायशाकम्भेदिस्यान्नघुतिक्तंत्रिदोषजित् २९ (अथसरिसो) कटुकंसार्षपंशाकंबहुमूत्रमलंगुरु । अम्लपाकंविदाहिस्यादुष्णंरूक्षंत्रिदोषजित् ॥ सक्षारंलवणंतीक्ष्णंस्वादुशाकेषुनिन्दितम् ॥ ३० ॥

मटरके शाककेगुण ॥

मटरकाशाक दस्तावर हलका तिक्त और त्रिदोष नाशक होता है २९ ॥ (सरसोंकेशाककेगुणा) सरसोंकाशाक कटु मलमूत्र वर्द्धक भारी खट्टा विदाही उष्ण रूखा त्रिदोष नाशक कुछक्षार सलोन मधुर और तीक्ष्ण होताहै यह संपूर्ण शाकोंमें निन्दितहै ॥ ३० ॥

अथ पुष्पशाकानि । तत्रागस्तिपुष्पस्यगुणाः ॥

अगस्तिकुसुमंशीतंचातुर्थकनिवारणम् । नक्तान्ध्यनाशनंतिक्तंकषायंकटुपाकिच । पीनसश्लेष्मपित्तघ्नंवातघ्नंमुनिभिर्मतम् ॥ ३१ ॥

पुष्पशाकोंका वर्णन ॥ अगस्तकेपुष्पोंका गुण ॥

अगस्तके पुष्प शीतल चौथैया ज्वरनाशक रतौंधी दूरकरने वाले तिक्त कषैले पाकमें कटु और पीनसकफ पित्ततथा बातनाशक होतेहैं ॥ ३१ ॥

अथ कदलीपुष्पम् ॥

कदल्याःकुसुमंस्निग्धंमधुरंतुवरंगुरु । वातपित्तहरंशीतंरक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥ ३२ ॥

केलेकेफूलके गुण ॥

केलेकेपुष्प स्निग्ध मधुर कषैले भारी शीतल और बात पित्त रक्तपित्त तथा क्षयनाशकहोतेहैं ३२ ॥

शोभाञ्जन ॥

शिग्रोःपुष्पन्तुकटुकंतीक्ष्णोष्णंस्नायुशोथकृत् । कृमिहृत्कफवातघ्नंविद्राधिप्लीहगुल्म जित् ॥ मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितंरक्तपित्तप्रसादनं ॥ ३३ ॥

सहजनके पुष्पोंके गुण ॥

सहजने के पुष्प कटु तीक्ष्ण उष्ण स्नायु में सूजन करनवाले और कृमि कफ बात विद्रधि प्लीहा तथा गुल्म नाशक होतेहैं लालसहजनके पुष्प नेत्रोंकोहित और रक्त पित्तकारक होतेहैं ॥ ३३ ॥

अथ शाल्मलीपुष्पम् ॥

शाल्मलीपुष्पशाकंतुघृतसैन्धवसाधितम् । प्रदरंनाशयत्येवदुःसाध्यञ्चनसंशयः ॥ रसेपाकेचमधुरंकषायंशीतलंगुरु । कफपित्तास्रजिद्ग्राहिवातलंचप्रकीर्त्तितम् ॥ ३४ ॥

सेमरके पुष्पोंकेगुण ॥

घृत और सेंधोनोनके द्वारा पकायेहुए सेमरके पुष्प अत्यन्त दुस्साध्य प्रदरको भी नाशकरते हैं यह मधुर कषैले पाकमें मधुर शीतल भारी कफघ्न पित्तघ्न रक्तदोषघ्न ग्राही और बादी होते हैं॥ ३४ ॥

अथ फलशाकानि । तत्रकूष्माण्डस्यनामानिगुणाश्च ॥

कूष्माण्डंस्यात्पुष्पफलम्पीतपुष्पंबृहत्फलम् । कूष्माण्डंवृंहणंवृष्यंगुरुपित्तास्रवात नुत् ॥ बालंपित्तापहंशीतंमध्यमंकफकारकम् । वृद्धंनातिमिमंस्वादुसक्षारन्दीपनंलघु ॥ वस्तिशुद्धिकरंचेतोरोगहृत्सर्व्वदोषजित् ॥ ३५ ॥

फलशाकोंका वर्णन ॥ पेठेकेनाम औरगुण ॥

कूष्मांड पुष्पफल पीतपुष्प और वृहत्फल यहपेठेके नामहैं पेठा धातुवर्द्धक वीर्यवर्द्धक भारी और रक्तपित्त तथा बातनाशकहोताहै कच्चापेठा पित्तनाशक तथा शीतल मध्यमपेठा कफकारक और पक्का पेठा बहुत शीतलतासे रहित मधुर कुछक्षार दीपन हलका मूत्राशयका शोधक और चित्तके रोगतथा सर्व दोषनाशक होताहै ॥ ३५ ॥ अथकोहडी ॥

कूष्माण्डीतुभृशंलघ्वीकर्कारुरपिकीर्तितम् । कर्कारुर्ग्राहिणीशीतारक्तपित्तहरागुरुः ॥ पक्वातिक्ताग्निजननीसक्षाराकफवातनुत् ॥ ३६ ॥

छोटेपेठेके नाम गुण ॥

बहुत छोटेपेठेको कूष्मांडी और कर्कारु कहतेहैं छोटापेठा ग्राही शीतल रक्तपित्तनाशक और भारी होताहै पकाहुआ छोटापेठा तिक्त अग्निकारक कुछक्षार और कफ बातनाशक होताहै॥ ३६ ॥

अथलवलौआ । गृहलौआ ॥

अलाबूःकथितातुम्बीद्विधादीर्घाचवर्त्तुला ॥ मिष्ठतुम्बीहृद्यंपित्तश्लेष्मापहंगुरु वृष्यंरुचिकरंप्रोक्तंधातुपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ३७ ॥

लौकीके नाम गुण ॥

लौकीको अलाबू और तुंबी कहतेहैं यहलंबी और गोल दोप्रकारकी होतीहै लौकी मधुर हृदयको हित पित्तघ्न कफनाशक भारी वीर्यवर्द्धक रुचिकारी और धातुपोषक होतीहै ॥ ३७ ॥

अथतीतलौकी ॥

इक्ष्वाकुःकटुतुम्बीस्यात्सातुम्बीचमहाफला। कटुतुम्बीहिमाहृद्यःपित्तकासविषापहाः॥ तिक्ताकटुर्विपाकेचवातपित्तज्वरान्तकृत् ॥ ३८ ॥

कड़वीतूंबीके नाम गुण ॥

इक्ष्वाकु कटुतुम्बी तुंबी और महाफला यह कड़वीलौकीके नाम हैं कडवीलौकी शीतल हृदयको हित तिक्त पाकमें कटु और पित्त खांसी विष बात तथा पित्तज्वर नाशक होतीहै ॥ ३८ ॥

अथककड़ी ॥

एर्वारुः कर्कटीप्रोक्ताकथ्यन्तेतद्गुणाअथ । कर्कटीशीतलारूक्षाग्राहिणीमधुरागुरुः॥ रुच्यापित्तहरासामापक्वातृष्णाग्निपित्तकृत् ॥ ३९ ॥

ककड़ीके नाम गुण ॥

ककड़ीको एर्वारु और कर्कटी कहतेहैं ककडी शीतल रूखी ग्राही मधुर और भारी होतीहै कच्ची ककडी रुचिकारक तथा पित्तनाशक और पक्कीककडी तृषा अग्नि तथा पित्तनाशकहोतीहै ॥ ३९ ॥

अथचिचिण्डा ॥

चिचिण्डाश्वेतराजिःस्यात्सुदीर्घोगृहकूलकः । चिचिण्डोवातपित्तघ्नोबल्यःपथ्योरुचिप्रदः॥ शोषिणोऽति हितःकिञ्चिद्गुणैर्न्यूनःपटोलतः ॥ ४० ॥

चिचेंड़ाके नाम गुण ॥

चिचिंड श्वेतराजि सुदीर्घ और गृहकूलक यह चिचेंड़ेके नामहैं चिचेंड़ा बातघ्न पित्तनाशक बलकारी पथ्य रुचिकारक शोषरोगियोंको अत्यन्तहित और परवलसे कुछ कमगुणवाला होताहै ॥ ४० ॥

अथकरेलाकरेली ॥

कारवेल्लंकटिल्लंस्यात्कारवेल्लीततोलघुः । कारवेल्लंहिमंभेदिलघुतिक्तमवातलम् ॥ ज्वरपित्तकफास्रघ्नंपाण्डुमेहकृमीन्हरेत्।तद्गुणाकारवेल्लीस्याद्विशेषाद्दीपनीलघुः॥४१॥

करेला और करेलीके नाम गुण ॥

कारबेल्ल और कटिल्ल यह करेलेके नामहैं करेली इससे छोटी होतीहै करेला शीतल दस्तावर हलका तिक्त बातरहित और केवल पित्त कफ रक्त पांडु प्रमेह तथा कृमिनाशक होताहै और करेली में भी इसीके समान गुणहोतेहैं यह विशेषकरके दीपन तथा हलकी होतीहै ॥ ४१ ॥

अथ नेनुआ ॥

महाकोशातकीप्रोक्ता हस्तिघोषामहाफला । धामार्गवोघोषकश्च हस्तिपर्णश्चसस्मृतः ॥ महाकोशातकीस्निग्धा रक्तपित्तानिलापहा ॥ ४२ ॥

घियातोरईके नाम गुण ॥

महाकोशातकी हस्तिघोषा महाफला धामार्गवघोषक और हस्तिपर्ण यह घियातोरईके नामहैं घिया तोरई स्निग्ध और रक्तपित्त तथा बातनाशक होतीहै ॥ ४२ ॥

अथ ।तोरई ॥

धामार्गवःपीतपुष्पो जालिनीकृतवेधना । राजकोशातकीचेति तथोक्ताराजिमत्फला॥

राजकोशातकीशीता मधुराकफवातना। पित्तघ्नीदीपनीश्वास ज्वरकासकृमिप्रणुत्४३॥

तोरईके नाम गुण॥

धामार्ग पीतपुष्प जालिनी कृतवेधना राजकोशातकी और राजिमत्फला यह तोरईके नाम हैं तोरई शीतल मधुर कफकारक वादी पित्तनाशक दीपन और श्वास ज्वर खांसी तथा कृमि नाशक होती है॥ ४३॥ अथ पटोर॥

पटोलःकूलकस्तिक्तः पाण्डुकःकर्कशच्छदः। राजीफलःपाण्डुफलो राजेयश्चामृता फलः॥ बीजगर्भःप्रतीकश्च कुष्ठहाकासभञ्जनः। पटोलंपाचनंहृद्यं वृष्यंलघ्वग्निदीपन म्॥ स्निग्धोष्णंहन्तिकासास्र ज्वरदोषत्रयकृमीन्। पटोलस्यभवेन्मूलंविरेचनकरंसुखां त्॥ नालंश्लेष्महरंपत्रं पित्तहारिफलंपुनः। दोषत्रयहरंप्रोक्तंतद्वत्तिक्तापटोलिका ४४॥

परवलके नाम गुण॥

पटोल कूलक तिक्त पांडुक कर्कशच्छद राजीफल पांडुफल राजेय अमृताफल बीजगर्भ प्रतीक कुष्ठहा और कासभंजन यह परवल के नामहैं परवल पाचक हृदयकोहित वीर्यवर्द्धक हलका दीपन स्निग्ध उष्ण और खांसी रक्तज्वर त्रिदोष तथा कृमिनाशकहोता है परवलकी जड़ सुखपूर्वक दस्तावर परवलकी डंडी कफनाशक पत्ते पित्तनाशक और फल त्रिदोषनाशक होताहै और कड़वे परवलमें भी इसी के समान फल होतेहैं॥ ४४॥ अथ कुन्दुरी॥

विम्बीरक्तफलातुण्डी तुण्डकेरीचविम्बिका। ओष्ठोपमफलाप्रोक्ता पीलुपर्णीचकथ्य ते॥ विम्बीफलंस्वादुशीतं गुरुपित्तास्रवातजित्। स्तम्भनंलेखनंरुच्यं विबन्धाध्मान कारकम्॥ ४५॥ कुंदरूके नामगुण॥

विम्बी रक्तफला तुंडी तुंडिकेरी बिम्बिका ओष्ठोपमफला और पीलुपर्णी यह कुंदरूके नाम हैं कुंदरू मधुर शीतल भारी रक्त पित्त नाशक बातघ्न स्तंभन लेखन रुचिकारक और विबन्धतथा आध्मान कारीहोताहै॥ ४५॥ शेम्बिशेवा॥

शिम्बिःशिम्बीपुस्तशिम्बी स्तथापुस्तकशिम्बिका। शिम्बीद्वयञ्चमधुरं रसेपाकेहिमं गुरु॥ बल्यंदाहकरंप्रोक्तं श्लेष्मलंबातपित्तजित्॥ ४६॥

दोनोंसेमोंके नामगुण॥

शिम्बि और शिम्बी यह सेमके नामहैं दूसरी सेमको पुस्तशिम्बी और पुस्तशिम्बिका कहते हैं दोनों प्रकारकी सेम रस तथा पाकमें मधुर शीतल भारी बलकारी दाहकारक कफकारक और बात पित्त नाशकहोतीहैं॥ ४६॥ अथ सुवराशेम्बि॥

कोलशिम्बिःकृष्णफला तथापर्य्यंकपट्टिका। कोलशिम्बिःसमीरघ्नी गुर्व्युष्णाकफपि त्तकृत्॥ शुक्राग्निसादकृत्तृष्या रुचिकृत्बद्धविड्गुरुः॥ ४७॥

सुवरा सेमके नामगुण॥

कोलशिम्बि कृष्णफला और पर्य्यंकपट्टिका यह सुवरा सेमके नामहैं सुवरा सेम बातनाशक भारी उष्ण मलरोधक और कफ पित्त वीर्य मंदाग्नि तथा रुचिकारक होतीहै॥ ४७॥

अथ सोहिजनाफल ॥

सोभांजनफलंस्वादु कषायंकफपित्तनुत् । शूलकुष्ठक्षयंश्वास गुल्महृद्दीपनंपरम् ४८॥

सहजनके फलकेगुण ॥

सहजन के फल मधुर कसैले दीपन और कफ पित्त शूल कुष्ठ क्षय श्वास तथा गुल्म नाशक होतेहैं ॥ ४८ ॥

अथ भण्टा ॥

वृन्ताकंस्त्रीतुवार्ताकुर्भण्टाकीभाण्टिकापिच । वृन्ताकंस्वादुतीक्ष्णोष्णं कटुपाकमपित्तलम् ॥ ज्वरवातबलासघ्नं दीपनंशुक्रलंलघु । तद्वालंकफपित्तघ्नं वृद्धंपित्तकरंलघु ॥ वृन्ताकंपित्तलंकिञ्चित् अंगारपरिपाचितम् । कफमेदोनिलामघ्न मत्यर्थंलघुदीपनम् ॥ तदेवहिगुरुस्निग्धं सतैलंलवणान्वितम् । अपरंश्वेतवृन्ताकं कुक्कुटांडसमंभवेत् ॥ तद्शःसुविशेषेण हितंहीनञ्चपूर्ववत् ॥ ४९ ॥

बैंगनकेनामगुण ॥

वृन्ताक वार्त्ताकू भंटाकी और भंटिका (यह तीन शब्द स्त्रीलिंग हैं) यह बैंगनकेनाम हैं बैंगन मधुर तीक्ष्ण उष्ण पाकमें कटु पित्तको न करनेवाले ज्वर नाशक बातघ्न कफघ्न दीपन वीर्यबर्द्धक और हलके होते हैं कच्चे बैंगनकफ पित्त नाशक और पक्के बैंगन पित्तवर्द्धक तथा भारी होते हैं अंगार आदि में भूनेहुए बैंगन कुछ पित्तबर्द्धक हलके दीपन और कफ मेद बात तथा आम दोषे नाशकहोते हैं इन्हीं में नोन और तेल मिलाने से भारी और स्निग्ध होतेहैं मुर्गेके अंडेके समान एकप्रकार के श्वेत बैंगन बवासीर में अत्यन्त पथ्य और पहले कहेहुए बैंगनों से गुणमें कमहोतेहैं ४९ ॥

अथ डिंडिश ॥

डिंडिशोरोमशफलो मुनिनिर्मितइत्यपि । डिंडिशोरुचिकृद्वेदी पित्तश्लेष्मापहःस्मृतः ॥ सुशीतोवातलोरूक्षो मूत्रलश्चाश्मरीहरः ॥ ५० ॥

टिंडेके नामगुण ॥

डिंडिश रोम शफल और निर्मित यह टिंडेकेनामहैं टिंडा रुचिकारक दस्तावर पित्तघ्न कफनाशक शीतल बादी रूखा मूत्रबर्द्धक और पथरी नाशकहोताहै ॥ ५० ॥

अथ पिंडारः ॥

पिंडारंशीतलंबल्यंपित्तघ्नंरुचिकारकम् । पाकेलघुविशेषेणविषशांतिकरंस्मृतम्५१॥

पिंडारकेगुण ॥

पिंडार शीतल बलकारक पित्तघ्न रुचिकारी शीघ्र पचनेवाला और विशेष करके विष नाशक होताहै ॥ ५१ ॥

अथ खेखसा ॥

कर्कोटकीपीतपुष्पा महाजालीतिचोच्यते । कर्कोटीमलहृत्कुष्ठ हल्लासारुचिनाशिनी ॥ श्वासकासज्वरान्हन्ति कटुपाकाचदीपनी ॥ ५२ ॥

खिगसाके नामगुण ॥

कर्कोटकी पीतपुष्पा और महाजाली यह खिगसाके नाम हैं खिगसा मल कुष्ठ मतली अरुचि श्वास खांसी तथा ज्वरनाशक पाकमें कटु और दीपनहोताहै ॥ ५२ ॥

अथ करेरुआ ॥

डोडिकाविषमुष्टिश्च डोडीत्यपिसुमुष्टिका ।डोडिकापुष्टिदावृष्या रुच्यावह्निप्रदालघुः॥ हन्तिपित्तकफार्शांसि कृमिगुल्मविषामयान् ॥ ५३ ॥

करेरुआकेनामगुण ॥

डोडिका विषमुष्टि डोडी और समुष्टिका यह करेरुआके नामहैं करेरुआ पुष्टिकारी वीर्यवर्द्धक रुचिकारी दीपन हलका और पित्त कफ बवासीर कृमि गुल्म तथा बिषरोग नाशकहोताहै ॥ ५३ ॥

अथ कण्टकारीफलम् ॥

कण्टकारीफलंतिक्तंकटुकंदीपनंलघुः । रूक्षोष्णंश्वासकासघ्नंज्वरानिलकफापहम् ५४॥

भटकटैयाकेफलकेगुण ॥

भटकटैया के फल तिक्त कटु दीपन हलके रूखे उष्ण और श्वास खांसी ज्वर बात तथा कफ नाशकहोतेहैं ॥ ५४ ॥ अथ नालशाकानि । तत्रसर्षपनालम् ॥

तीक्ष्णोष्णंसार्षपंनालंवातश्लेष्मव्रणापहम्।कण्डूवमिहरंदद्रूकुष्ठघ्नंरुचिकारकम्५५॥

नालशाकोंकावर्णन ॥ सरसोंकीनालकेगुण ॥

सरसोंका नाल तीक्ष्ण उष्ण रुचिकारक और बात कफ घाव खुजली कृमि दाद तथा कुष्ठनाशक होताहै ॥ ५५ ॥

अथ कन्दशाकानि । तत्रसूरणस्यनामानिगुणाश्च ॥

सूरणःकन्दओलश्चकन्दलोऽशोघ्नइत्यपि । सूरणोदीपनोरूक्षःकषायःकण्डुकृत्कटुः ॥ विष्टम्भीविशदोरुच्यःकफार्शःकृन्तनोलघुः॥ विशेषादर्शसेपथ्यःप्लीहागुल्मबिनाशनः ॥ सर्वेषांकन्दशाकानांसूरणःश्रेष्ठउच्यते ॥ दद्रुणांरक्तपित्तानांकुष्ठिनांनहितोहिसः । सन्धानयोगंसम्प्राप्तःसूरणोगुणवत्तरः ॥ ५६ ॥

कन्दशाकोंकावर्णन ॥ जिमीकन्दके नामगुण ॥

सूरण कन्द ओल कंडूल और अर्शोघ्न यह ज़िमीक़न्दके नाम हैं जिमीक़न्द दीपन रूखा कषैला कटु खुजली करने वाला विष्टंभी विशद रुचिकारक हलका और कफ बवासीर प्लीहा गुल्म और विशेष करके बवासीर नाशक होता है यह ज़िमीक़ंद सब क़न्दशाकोंमें श्रेष्ठहै दाद रक्त पित्त औरकुष्टरोग वालोंको ज़िमीक़ंद हितकारी नहीं है ज़िमीक़ंद संधानके योगसे अधिक गुणदायक होताहै५६॥

अथ आरु ॥

आरुकमप्यालूकं तत् कथितम् । (बीरसेनश्च) काष्ठालुक शंखालुक हस्त्यालुकानि कथ्यन्ते ॥ पिंडालुक सप्तालुक रक्तालुकानि चोक्तानि । काष्ठालुकं काठिन्ययुक्तंकढारु । शङ्खालुकंश्वेततायुक्तम् (शङ्खारु) हस्त्यालुकंदीर्घतायुक्तं महाशरीरम् ॥ पिण्डारु । शङ्खालुकंश्वेततायुक्तम् (शङ्खारु) हस्त्यालुकंदीर्घतायुक्तं महाशरीरम् ॥ पिण्डालुकंवर्त्तुलम् (सुथनी) सप्तालुकंमधुरतायुक्तं रोमान्वितंदीर्घसुथनी । रक्तालूरक्तारुरतड़ा इतिच ॥ आलुकंशीतलंसर्वविष्टम्भिमधुरंगुरु । सृष्टमूत्रमलंरूक्षंदुर्ज्जरंरक्तपित्तनुत् ॥ कफानिलकरंबल्यं वृष्यंस्वल्पाग्निवर्द्धनम् ॥ ५७ ॥

आलूके नाम गुण ॥

आरुक आलुक और बीरसेन यह आलूके नामहैं काष्ठालुक शंखालुक हस्त्यालुक पिंडालुक मध्वालुक और रक्तालुक यह आलूके भेदहैं जो आलू कठिनतायुक्तहो वह काष्ठालुक (कठिया आलू) जो आलू श्वेतहो उसको शंखालुक जो आलू दीर्घ तथा बड़े आकारवालाहो उसको हस्त्यालुक गोल आलूको पिण्डालुक मधुरता युक्त रोमयुक्त तथा दीर्घ आलूको मध्वालुक और लाल आलूको रक्तालू (रतालू) कहतेहैं सम्पूर्ण आलू शीतल विष्टंभी मधुर भारी मलमूत्रनिस्सारी रूखे कठिनता से पचनेवाले रक्तपित्तघ्न कफकारी वादी बलकारक वीर्यबर्द्धक और दुग्धबर्द्धक होते हैं ॥ ५७ ॥

अथ अरुई ॥

रक्तालुभेदेपाटियातन्वीचपृथुतालुकी । आलुकीबलकृत्स्निग्धागुर्व्वीहृत्कफनाशिनी ॥ विष्टम्भकारिणीतैलेललितातिरुचिप्रदा ॥ ५८ ॥

अरुईके नाम गुण ॥

जोरतालू लंबा और छोटा हो उसको आलुकी (अरुई) कहतेहैं अरुई बलकारक स्निग्ध भारी हृदयके कफकी नाशक और विष्टंभी होतीहै यह तेलमें तलीहुई अत्यन्त रुचिकारकहोतीहै ॥ ५८॥

अथ वोचीमुरई नेवाएमुरई ॥

मूलकंद्विविधंप्रोक्तंतत्रैकंलघुमूलकं । शालमर्कटकंबिस्त्रंशालेयंमरुसम्भवम्॥चाणक्य मूलकंतीक्ष्णंतथामूलकपोतिका । नेपालमूलकंचान्यत्तद्भवेद्गजदन्तवत् ॥ लघुमूलंकटूष्णंस्याद्रुच्यंलघुचपाचनम्।दोषत्रयहरंस्वर्य्यंज्वरश्वासविनाशनम् ॥नासिकाकण्ठरोगघ्नं नयनामयनाशनम् । महत्तदेवरूक्षोष्णंगुरुदोषत्रयप्रदम् ॥ स्नेहसिद्धंतदेवंस्यात्दोषत्रयविनाशनम् ॥ ५९ ॥ मूलीके नामगुण ॥

मूलीदोप्रकार की होतीहै लघुमूलक शालामर्कट बिस्र शालेय मरुसंभव चाणक्य मूलक और मूलक पोतिका यह मूलीके नामहैं दूसरी हाथीके दांतकी समान बड़ी मूली नेपालदेशमें उत्पन्न होतीहै छोटीमूली कटु उष्ण रुचिकारक हलकी पाचक त्रिदोष नाशक स्वरकोहित और ज्वर श्वास नासिकाकेरोग कंठरोग तथा नेत्ररोगोंकी नाशकहोतीहै बड़ीमूली रूखी उष्ण भारी और त्रिदोषकारी होती है परन्तु वहभी तैलादिमें पकाईहुई त्रिदोष नाशक होती है ॥ ५९ ॥

अथ गाजर ॥

गाजरंगृञ्जनंप्रोक्तं तथानारङ्गवर्णकम् । गाजरंमधुरंतीक्ष्णं तिक्तोष्णंदीपनंलघु ॥ संग्राहिरक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ॥ ६० ॥

गाजरके नामगुण ॥

गाजर गृंजन और नागर वर्णक यह गाजरके नामहैं गाजर मधुर तीक्ष्ण उष्ण तिक्त दीपन हलकी ग्राही और रक्त पित्त बवासीर ग्रहणी कफतथा बातनाशक होतीहै ॥ ६० ॥

अथकेराकन्द ॥

शीतलःकदलीकन्दोबल्यःकेश्योऽम्लपित्तजित्।वह्निकृद्दाहहारीचमधुरोरुचिकारकः६१॥

केलाकन्दके गुण ॥

केलाकन्द शीतल बलकारी केशोंकोहित अम्ल पित्तनाशक दीपन दाहनाशक मधुर और रुचि दायक होताहै ॥ ६१ ॥

अथमानकन्दः ॥

मानकःस्यात्महापत्रःकथ्यन्तेतद्गुणाअथ।मानकःशोथहृच्छीतःपित्तरक्तहरोलघुः॥६२॥

मानकेचूके नामगुण ॥

मानकेचूको मानक और महापत्र कहतेहैं मानकेचू सूजन नाशक शीतल रक्त पित्तघ्न और हलका होताहै ॥ ६२ ॥

अथवाराही कन्दः ॥

गोठिइतिलोके । वाराहीपित्तलाबल्याकट्वीतिक्तारसायनी ॥ आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा ॥ ६३ ॥ बाराही कन्दकेगुण ।

बाराहीकन्द पित्तवर्द्धक बलकारक कटु तिक्तरसायन आयुतथा वीर्यवर्द्धक दीपन और प्रमेहकफ कुष्ठतथा बात नाशक होताहै ॥ ६३ ॥ अथहस्तिकर्णा ॥

गजकर्णातुतिक्तोष्णातथावातकफाञ्जयेत् । शीतज्वरहरीस्वादुःपाकेतस्यास्तुकन्दकः॥ पाण्डुशोथकृमिप्लीह गुल्मानाहोदरापहः । ग्रहण्यर्शोविकारघ्नोवनसूरणकन्दवत् ॥ ६४ ॥

हस्तिकर्णाके गुण ॥

हस्तिकर्णा तिक्त उष्ण पाकमें मधुर और बातकफ तथा शीतज्वर नाशक होतीहै इसका कन्द पांडु सूजन कृमि 'लीहा गुल्म आनाह और उदर रोगनाशक होताहै यह बनशूरण कुन्द के समान ग्रहणी तथा बवासीरका नाशक होताहै ॥ ६४ ॥ अथ केमुकं ॥

केमुआ इतिलोके । केमुकंकटुकंपाकेतिक्तंग्राहिहिमंलघुः ॥ दीपनंपाचनंहृद्यं कफ पित्तज्वरापहम् । कुष्ठकासप्रमेहास्रनाशनंवातलंकटु ॥ ६५ ॥

केमुआके गुण ॥

केमुआ पाकमें कटु तिक्त ग्राही शीतल हलका दीपन पाचक हृदयकोहित बादी सलौना और कफ पित्तज्वर कुष्ठ खांसी प्रमेह तथा रक्तदोष नाशक होताहै ॥ ६५ ॥

अथकसेरुचिचोढ़ ॥

कसेरुद्विविधन्तत्तुमहद्राजकसेरुकम्। मुस्ताकृतिर्लघुस्याद्यत्तच्चिचोढ़ामितिस्मृतम् ॥ कसेरुकद्वयं शीतंमधुरंतुवरंगुरु । पित्तशोणितदाहघ्नं नयनामयनाशनम् ॥ ग्राहिशुक्रा निलश्लेष्मारुचिस्तन्यकरंस्मृतम् ॥ ६६ ॥

कसेरूऔर चिचोड़के गुण ॥

कसेरू दोप्रकारकाहै बड़े कसेरूको राजकसेरू और मोथाके समान आकृति वाले छोटे कसेरूको चिचोड कहतेहैं दोनोंकसेरू शीतल मधुर कषैले भारी पित्तघ्न रक्तनाशक दाह तथा नेत्ररोगके दूर करने वाले ग्राही और वीर्यबात कफ अरुचि तथा दूधके वर्द्धक होतेहैं ॥ ६६ ॥

अथकसेरुभिसीड़ा ॥

पद्मादिकन्दः शालूकङ्कुरहाटश्चकथ्यते । मृणालमूलाम्भिस्माण्डं लजाशूकञ्चकथ्य

ते ॥ शालूकंशीतलंवृष्यंपित्तदाहास्रनुद्गुरु । दुर्ज्जरंस्वादुपाकञ्च स्तन्यानिलकफप्रदम् ॥ संग्राहिमधुरं रूक्षम्भिसाण्डमपितद्गुणम् ॥ ६७ ॥

कसेरूभिसीड़ाके नामगुण ॥

कमल आदिके कन्दको शालूक करहाट मृणालमूल भिस्सांड और जलालूक कहते हैं कमलका कन्द शीतल वीर्य्यवर्द्धक पित्तघ्न दाह नाशक रक्तदोषनाशक भारी कठिनता से पचनेवाला पाकमें मधुर दुग्ध वर्द्धक बादी कफकारक ग्राही मधुर और रूखाहोता है भसीड़में भी इसीके समान गुणहोते हैं ॥ ६७ ॥

बालंह्यनार्तवंजीर्णंव्याधितः क्रिमिभक्षितम् ॥ कन्दंविवर्ज्जयेत् सर्वंयद्वाऽग्न्यादि विदूषितम् । अतिजीर्णमकालोत्थं रूक्षंसिद्धमदेशजम् ॥ कर्कशंकोमलंचाति शीतव्यालादिदूषितम् । संशुष्कंसकलंशाकं नाश्नीयान्मूलकंविना ॥ अतैलादिसिद्धं रूक्षंअदेशजमशुभस्थानजम् ॥ ६८ ॥

कच्चा विनासमयके उत्पन्न हुआ पुराना व्याधियुक्त कीड़ोंकाखायाहुआ और अग्निसे दूषित ऐसे कन्दको सदैव त्याग करदे बहुत पुराने अकालमें उत्पन्नहुएं तैलादिक विना पकायेहुए बुरेस्थान में उत्पन्न हुए कठोर बहुतको मल पाला तथा सर्पादिकसे दूषित और सूखे सब शाक न खाने चाहिये परन्तुमूली सूखीहुईभी अहित नहींहै ॥ ६८ ॥

अथसंस्वेदज शाकानितेषांनामानि गुणाश्च.॥

उक्तंसंस्वेदजंशाकम्भूमिच्छन्नंशिलीन्ध्रकम् । क्षितिगोमयकाष्ठेषु वृक्षादिषुतदुद्भवेत्। सर्वेसंस्वेदजाःशीतादोषलाः पिच्छलाश्चते ॥ गुरवश्छर्द्यतीसारज्वरश्लेष्मामयप्रदाः ॥ श्वेतशुभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोव्रणसम्भवाः ॥ नातिदोषकरास्तेस्युः शेषास्तेभ्योविगर्हिता संस्वेदजाश्छाताइतिलोके ॥ ६९ ॥

इति श्रीभावप्रकाशेशाकवर्गः ॥

संस्वेदज [छाता] शाकोंका वर्णन। इनके नाम और गुण ॥

पृथ्वी गोबर काष्ठ और वृक्षादिकोंपर स्वेदजशाक उत्पन्न होतेहैं इनको भूमिच्छन्न और शिलीन्ध्रक कहतेहैं सबप्रकारके स्वेदजशाक शीतल दोषकारी पिच्छिल भारी और छर्दि अतीसार ज्वर तथा कफ रोग करनेवाले होतेहैं जो स्वेदजशाक पवित्रस्थान काष्ठ बांस तथा वृक्षमें उत्पन्न होतेहैं वह अत्यन्त दोषकारी नहीं होतेहैं इनके सिवाय सब स्वेदजशाक निन्दितहैं ॥ ६९ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेशाकवर्गःसमाप्तः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

भाव प्रकाश

द्वितीयभाग ॥

अथ मांसवर्गः । तत्र मांसस्य नामानि ॥

मांसंतुपिशितंक्रव्यमामिषंपललम्पलम् । मांसंवातहरंसर्ब्बबृंहणंबलपुष्टिकृत् ॥ प्रीणनं गुरुहृद्यञ्चमधुरंरसपाकयोः ॥ १ ॥

अथ मांसवर्ग । मांसके नाम ॥

मांस पिशित क्रव्य आमिष पलल और पल यह मांसके नामहैं सबप्रकारका मांस बातनाशक धातु वर्द्धक बल तथा पुष्टताकारक प्रीति उपजानेवाला भारी हृदयको हित और रस तथा पाक में मधुर होताहै ॥ १ ॥

अथ तद्भेदाः ॥

मांसवर्गोद्विधाज्ञेयोजाङ्गलोऽनूपभेदतः २(तत्र जांगलस्यलक्षणंगुणाश्च) मांसवर्गोऽत्रजंगालाविलस्थाश्चगुहाशयाः तथापर्णमृगाज्ञेयाविष्किरःप्रतुदोऽपिच । प्रसहाः (अथग्राम्याअष्टौजांगलजातयः) जांगलामधुराःरूक्षास्तुवराःलघवस्तथा । बल्यास्ते बृंहणावृष्यादीपनादोषहारिणः ॥ मूकतांमिन्मिनत्वंचगद्गदत्वार्दितेतथा । वाधिर्य्यमरुचिच्छर्दिप्रमेहंमुखजान्गदान् ॥ श्लीपदंगलगण्डञ्चनाशयत्यनिलामयान् ॥ ३ ॥

मांसकेभेद ॥

मांस दो प्रकारकाहै एक जांगल दूसरा आनूप २ [जांगलके लक्षण गुण] जंगाल विलस्थ गुहाशय पर्णमृग विष्किर प्रतुदप्रसह और ग्राम्य यह आठप्रकारके जांगलमांसहैं जांगल मांस मधुर कषैला रूखा हलका बलकारी धातुवर्द्धक बीर्यवर्द्धक दीपन दोषनाशक और मूकता मिनमिनायन गद्गदता अर्दित वधिरता अरुचि छर्दि प्रमेह मुखरोग श्लीपद गलगंड तथा बात रोगनाशक होताहै ॥ ३ ॥

अथा नूपस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

कूलेचराःप्लवाश्चापिकोशस्थाःपादिनस्तथा । मत्स्याएतेसमाख्याताःपञ्चधाऽनूप जातयः ॥ अनूपामधुराःस्निग्धागुरवोवह्निसादनाः । श्लेष्मलापिच्छलाश्चापिमांसपुष्टि प्रदाभृशम् ॥ तथाभिष्यन्दिनस्तेहिप्रायःपथ्यतमाःस्मृताः ॥ ४ ॥

अनूपमांसके लक्षण गुण ॥

कूलेचर प्लव कोशस्थ पादी और मत्स्य यह पांच प्रकारका अनूप मांस होताहै अनूप मांस मधुर स्निग्ध भारी मन्दाग्निकारी कफकारी पिच्छिल अत्यन्त मांस पोषक अभिष्यन्दी और प्रायः पथ्य होताहै ॥ ४ ॥

अथ जांगलानांगणनाविशिष्टगुणाश्च ॥

हरिणैनकुरङ्गर्ष्यपृषतन्यङ्कुसम्बराः। राजीवोऽपिचमुण्डीचेत्याद्याःजंघालसंज्ञकाः ॥ हारिणस्ताम्रवर्णःस्यादेनःकृष्णःप्रकीर्त्तितः । कुरङ्गईषत्ताम्रःस्यादेनतुल्याकृतिर्महान् ॥ ऋष्योनीलांगकोलोकेसरोह्यइतिकीर्त्तितः । पृषतश्चन्द्रविन्दुःस्याद्धरिणात्किञ्चिदल्पकः ॥ न्यंकुर्बहुविषाणोऽथसम्बरोगवयोमहान्। राजीवस्तुमृगोज्ञेयोराजभिःपरितोवृतः॥ योमृगःशृंगहीनःस्यात्समुण्डीतिनिगद्यते । जंघालाःप्रायशःसर्वेपित्तश्लेष्महराःस्मृताः ॥ किञ्चिद्वातकराश्चापिलघवोबलवर्द्धनाः ॥ ५ ॥

जंघालोंकी गणना और विशेषगुण ॥

हरिण एण कुरंग ऋष्य पृषत न्यंकु संवर राजीव और मुंडी यह जंघाल कहलातेहैं ताम्रवर्ण मृग को हरिण कृष्णवर्ण को एण कुछ ताम्रवर्ण बड़े तथा कृष्ण मृगके समान आकृतिवाले हिरणको कुरंग नीलवर्ण हरिणको ऋष्य (यह सरोही नामसे प्रसिद्धहै) हिरणकी अपेक्षा कुछ छोटेतथा चन्द्रबिन्दुयुक्त मृगको पृषत् और बहुत सींगवालेको न्यंकु बडे शरीरवालेको सम्बर अथवा गवय सबओर रेखाओंसे युक्त मृगको राजीव और सींग रहित मृगको मुंडी कहते हैं प्रायःसम्पूर्ण जंघाल पित्त कफनाशक कुछ वादी हलके और बलबर्द्धक होतेहैं ॥ ५॥

अथ बिलेशयानां गणनागुणाश्च ॥

गोधाशशभुजंगाखुशल्लक्याद्याबिलेशयाः । बिलेशयावातहरामधुरारसपाकयोः ॥ बृंहणाबद्धविटमूत्राबीर्य्योष्णाश्चप्रकीर्त्तिताः ॥ ६ ॥

बिलेशयों की गणना और गुण ॥

गोह खरगोश सर्प चूहा और सेई आदिक बिलेशय कहलातेहैं बिलेशय बातनाशक रसतथा पाकमें मधुर धातुवर्द्धक मलमूत्र रोधक और वीर्यमें उष्ण होतेहैं ॥ ६ ॥

अथ गुहाशयानांगणना गणाश्च ॥

सिंहव्याघ्रवृकाऋक्षतरक्षुद्वीपिनस्तथा। बभ्रूजम्बूकमार्ज्जाराइत्याद्याःस्युर्गुहाशयाः॥ तरक्षुःहउहाइतिलोके । द्वीपीचिताव्याघ्रइतिलोके ॥ स्थूलपुच्छोरक्तनेत्रोबभ्रूःदेहःसनाकुलः । गुहाशयोवातहरागुरूष्णामधुराश्चते ॥ स्निग्धाबल्याहितानित्यंनेत्रगुह्यविकारिणाम् ॥ ७ ॥

गुहाशयों की गणना और गुण ॥

सिंह व्याघ्र भेड़िया रीछ चीतल चीता व्याघ्र मोटी पूंछ तथा लालनेत्रवाला बड़ानौला सियार और बिलार इत्यादिक गुहाशय कहाते हैं गुहाशयोंका मांस बात नाशक भारी उष्ण मधुर स्निग्ध बलकारी और नेत्र तथा गुदाके रोगवालों को सदैव हितहोताहै ॥ ७ ॥

अथ पर्णमृगानां गणना गुणाश्च ॥

वनौकोवृक्षमार्ज्जारोवृक्षमर्कटिकादयः । एतेपर्णमृगाःप्रोक्ताःसुश्रुताद्यैर्महर्षिभिः ॥ बनौकावानरःवृक्षमार्ज्जारोवृक्षबिड़ालः । वृक्षमर्कटिकारूषीइतिलोके । स्मृताःपर्णमृगाःवृष्याश्चक्षुष्याःशोषिणेहिताः । श्वासार्शःकासशमनाःसृष्टमूत्रपुरीषिकाः ॥ ८ ॥

पर्णमृगों की गणना और गुण ॥

बानर वृक्ष बिलार और वृक्षमर्कटिका (रूखी) इत्यादि पर्णमृग कहलातेहैं पर्णमृगोंका मांस वीर्य वर्द्धक नेत्ररोग तथा शोषरोगमेंहित मलमूत्र निस्सारक और श्वास बवासीर तथाखांसी नाशकहोताहै८

अथ विष्किराणांगणनागुणाश्च ॥

वर्त्तकालाववर्त्तीरकपिञ्जलकतित्तिराः। कुलिंगकुक्कुटाद्याश्चविष्किराःसमुदाहृताः॥विकीर्य्यभक्षयन्त्येतेयस्मात्तस्माद्विविष्किराः। कपिञ्जलइतिप्राज्ञैःकथितोगौरतित्तिरिः॥ कुलिंगःगवरैआइतिलोके। विष्किराःमधुराःशीताःकषायाःकटुपाकिनः। बल्यावृष्यास्त्रिदोषघ्नाःपथ्यास्तेलघवःस्मृताः ९ ॥ बिष्किरों की गणना और गुण ॥

बटेर लवा वर्त्तीर श्वेततीतर तीतर गौरैया और मुर्ग्गा आदि बिष्किरकहलातेहैं यहबखेरकरखातेहैं इस्से इनको बिष्किर कहते हैं बिष्किर मांस मधुर शीतल कषैला पाकमें कटु बलकारक वीर्यवर्द्धक त्रिदोष नाशक पथ्य और हलका होताहै ॥ ९॥

अथ प्रतुदानांगणनागुणाश्च ॥

हरीतोधवलःपाण्डुश्चित्रयक्षोवृहच्छुकः । पारावतःखञ्जरीटःपिकाद्याःप्रतुदाःस्मृताः ॥ प्रतुद्यभक्षन्त्येतेतुण्डेनप्रतुदास्ततः। हारीतःहारिलइतिलोके ॥ कपोतोःधवलपाण्डुःशतपत्रोवृहच्छुकः। दार्वाघाटइत्यमरः। कठफोरवाइतिलोके ॥ प्रतुदामधुराःपित्तकफघ्नास्तुवराहिमाः। लघवोबद्धवर्च्चस्काकिञ्चिद्वातकराःस्मृताः ॥ १० ॥

प्रतुदोंकी गणना और गुण ॥

हारिल कठफुरवा जंगलीतीतर पहाड़ीतोता कबूतर खंजन और कोयल आदिक प्रतुद कहलातेहैं यह टोंटमार कर खातेहैं इसी से प्रतुद कहातेहैं प्रतुदोंका मांस मधुर पित्तघ्न कफ नाशक कषैला शीतल हलका मल रोधक और कुछ बादी होता है ॥ १० ॥

अथ प्रहंसानाङ्गणनागुणाश्च ॥

काकोगृध्रउलूकश्चचिल्लश्चशशघातकः । चाषोभासश्चकुररइत्याद्याःप्रसहाःस्मृताः ॥ शश घातकः। बाजइतिलोके । चाषंनीलकमूइतिलोके। भासोगृध्रविशेषस्यात्। कुररःकराकुरइतिलोके । प्रसहाःकीर्त्तिताःएतेप्रसह्याच्छिद्यभक्षणात्। प्रसहाःखलुबीर्योष्णास्तन्मांसंभक्षयन्तिये ॥ तेशोषभस्मकोन्मादशुक्रक्षीणाभवन्तिहि ॥ ११ ॥

प्रसहों की गणना और गुण ॥

काक गृध्र उलूक चील बाज नीलकंठ गृध्र बिशेष और कुरर आदिक प्रसह कहाते हैं यह जबरदस्ती छीनकर खातेहैं इस हेतु से प्रसह कहातेहैं प्रसह मांस वीर्य में उष्ण होताहै जो कोई इनके मांसको खातेहैं वह शोष भस्मक तथा उन्माद रोगसे व्याकुल और क्षीण वीर्य होजाते हैं ॥ ११ ॥

अथ ग्राम्याणांगणनागुणाश्च ॥

छागमेषवृषाश्चाश्वाःग्राम्याःप्रोक्तामहर्षिभिः। ग्राम्याःवातहराःसर्वेदीपनाःकफपित्तलाः ॥ मधुरारसपाकाभ्यांवृहणाबलवर्द्धनाःइत्यनूपाजन्तवः ॥ १२ ॥

ग्राम्यों की गणना और गुण ॥

बकरा मेढा बैल और घोड़े आदिको ग्राम्य कहतेहैं संपूर्ण ग्राम्यमांस बात नाशक दीपन कफ पित्त वर्द्धक रस और पाकमें मधुर धातुवर्द्धक और बलवर्द्धक होतेहैं ॥ १२ ॥

अथ कूलेचराणांगणनागुणाश्च ॥

लुलापगण्डवाराहचमरीवारणादयः। एतेकूलचराप्रोक्ताःयतःकूलेचरन्त्यपाम् ॥ लुलापोमहिषगण्डः,खड्गः, (चमरीचमरपुच्छिगौ) कूलेचरामरुत्पित्तहराबृष्याबलावहाः। मधुराःशीतलाःस्निग्धामूत्रलाःश्लेष्मवर्द्धनाः ॥ १३ ॥

कूलेचरों की गणना और गुण ॥

भैंसा गैंडा सूअर सुरागौ और हाथी आदिक कूलेचर कहलातेहैं क्योंकि यह जल के किनारे पर चरते हैं कूलेचरों का मांस बात पित्तनाशक वीर्यवर्द्धक बलकारी मधुर शीतल स्निग्ध मूत्रकारक और कफ वर्द्धक होताहै ॥ १३ ॥

प्लवानांगणनागुणाश्च ॥

हंससारसकारण्डवककौञ्चसरारिकाः। नन्दीमुखीसकादम्बाबलाकाद्याःप्लवाःस्मृताः ॥ प्लवंतिसलिलेयस्मादेतेतस्मात्प्लवाःस्मृताः॥कारण्डः कपर्दिकारव्योवृहदवकाश "क्रौञ्चःरट्टिहंगःस्यात्" टेङ्कइतिलोके शरारिकासिन्धुइति ॥ स्थूलाकठोरावृत्ताचयस्याश्चञ्चूपरिस्थिता। गुटिकाजम्बुसदृशीप्रोक्तानन्दीमुखीतिसा ॥ कादम्बःकरवाइतिलोके । वलाकावगुलीइतिलोके ॥ प्लवापित्तहरास्निग्धामधुरागुरवोहिमाः । वातश्लेष्मघ्नदाश्चापिबलशुक्रकराःसराः ॥ १४ ॥

प्लवों की गणना और गुण ॥

हंस सारस कारंड बगला ढेंक शरारिक नंदीमुखी बत्तक और बलाका (बगला बिशेष) आदिको प्लव कहतेहैं क्योंकि यह जलपर तैरतेहैं जिसपक्षी की चोंचपर स्थूल कठोर और गोलजामन के समान गोलीसी बनीहो उसको नन्दीमुखी कहतेहैं प्लवोंका मांस पित्तघ्न स्निग्ध मधुर भारी शीतल बादी कफकारक बलवीर्य बर्द्धक और दस्तावर होताहै ॥ १४ ॥

अथ कोशस्थानांगणनागुणाश्च ॥

शङ्खःशङ्खनखश्चापिशुक्तिशम्बूककर्कटाः । जीवाएवंविधाश्चान्येकोशस्थाःपरिकीर्तिताःशङ्खनखःक्षुद्रशङ्खः ॥ कोशस्थामधुराःस्निग्धाःवातपित्तहराहिमाः । वृंहणाबहुवर्चस्काबृष्याश्चबलवर्द्धनाः ॥ १५ ॥

कोशस्थोंकी गणना और गुण ॥

शंख क्षुद्रशंख सीपी घोंघाऔर कर्कट इसप्रकार के अनेक जीव कोशस्थ कहाते हैं कोशस्थों का मांस मधुर स्निग्ध वातघ्न पित्तनाशक शीतल धातुवर्द्धक बहुत मलकारी और वीर्यतथा बलबर्द्धक होता है ॥ १५ ॥

अथपादिनांगणनागुणाश्च ॥

कुम्भीर कूर्मनक्राश्चगोधामकरशङ्कवः । घण्टिकः शिशुमारश्चेत्यादयःपादिनःस्मृताः ॥ कुम्भीरोमारकोजलजन्तुःकूर्मः कच्छपः नक्रःनाकइतिलोकेगोधागोहिजलज-

न्तुः । मकरमगरइतिलोके । शंकुःसाकुचइतिलोके ॥ घण्टिकःघरीआलइतिलोके । शिशुमारःसूसइतिलोके । पादिनोऽपिचयेतेतुकोशस्थानाङ्गुणैःसमाः ॥ १६ ॥

पादियों की गणना और गुण ॥

कुम्भीर (मारनेवाला जल का जीव) कछुआ नाक गोह मगर साकुच घडियाल और सूंस आदिक पादिक कहलाते हैं पादियों में कोशस्थों के समान गुण कहते हैं ॥ १६ ॥

अथ मत्स्यनामानिगुणाश्च ॥

मत्स्योमीनोविकारश्चउषोवैशारिणोऽण्डजः । शकुलीपृथुरोमाचससुदर्शनइत्यपि॥ रोहिताद्यास्तुयेजीवास्तेमत्स्याःपरिकीर्तिताः । मत्स्याःस्निग्धोष्णमधुरागुरवःकफपित्तलाः ॥ वातघ्नाबृंहणावृष्यारोचकाबलवर्द्धनाः । मद्यव्यवायसक्तानांदीप्ताग्नीनाञ्च पूजिताः ॥ १७ ॥

मछलियों के नाम और गुण ॥

मत्स्य मीन बिसार झष बैसारिण अंडज शकली पृथुरोमा और सुदर्शन यह मछलियों के नाम हैं रोहू आदि जीवों को मत्स्य कहते हैं मछली स्निग्ध उष्ण मधुर भारी कफ वर्द्धक पित्तकारक बातघ्न धातुबर्द्धक बीर्यवर्द्धक रुचिकारक और बलवर्द्धक होती है यह मद्य पीने वाले मैथुन में आशक्त और दीप्ताग्नि वाले पुरुषों को हितहै ॥ १७ ॥

अथ जङ्घालादीनांनामानिगुणाश्चतत्रजङ्घालेषुहरिणस्यगुणाः ॥

हरिणःशीतलोवद्धविण्मूत्रोदीपनोलघुः । रसेपाकेचमधुरःसुगन्धिःसन्निपातहा १८॥

जंघाल आदिकोंके नामगुण । जंघालों में हरिणके गुण ॥

हरिण का मांस शीतल मलमूत्र रोधक दीपन हलकारस तथापाक में मधुर सुगन्धित और सन्निपात नाशकहोता है ॥ १८ ॥

करीसाइलहरिणः ॥

एणःकषायोमधुरःपित्तासृक्कफबातहृत् । संग्राहीरोचनोबल्योज्वरघ्नश्मनःस्मृतः१९॥

एणके मांस के गुण ॥

काले हरिण का मांस कषैला मधुर ग्राही रुचि कारक बलवर्द्धक और पित्त रक्त कफ बात तथा ज्वर नाशक होताहै ॥ १९ ॥

अथ कुरङ्गः ॥

कुरंगोबृंहणोबल्यःशीतलःपित्तहृद्गुरुःमधुरोवातहृद्ग्राहीकिञ्चित्कफकरःस्मृतः२०॥

कुरंगके गुण ॥

कुरंगका मांस धातुवर्द्धक बलकारी शीतल पित्तघ्न भारी मधुर वातघ्न ग्राही और कुछ कफकारकहोता है ॥ २० ॥

अथ रोऊ ॥

ऋष्योनीलाण्डकश्चापिगवयोरोऊइत्यपि। गवयोमधुरोबल्यःस्निग्धोष्णकफपित्तलः २१

ऋष्य के नाम गुण ॥

ऋष्य नीलाण्डक गवय और रोज यह ऋष्यकेनामहैं ऋष्यका मांस मधुरबलकारक और स्निग्ध उष्ण और कफपित्त वर्द्धक होताहै ॥ २१ ॥

अथ चित्तरि ॥

पृषतस्तुभवेत्स्वादुर्ग्राहकःशीतलोलघुः।दीपनोरोचनःश्वासज्वरदोषत्रयास्रजित्२२॥

चित्तर के गुण ॥

चित्तर का मांस मधुर ग्राही हलका दीपन रुचि कारक और श्वास ज्वर त्रिदोष तथा रक्तना-शक होता है ॥ २२ ॥

अथ बारहासिङ्गी ॥

न्यंकुःस्वादुर्लघुर्बल्यो वृष्योदोषत्रयापहः २३ (अथ सावर) सावरंपललंस्निग्धं शीतलंगुरुचस्मृतम् । रसेपाकेचमधुरं कफदंरक्तपित्तहृत् ॥ राजिवस्तुगुणैर्ज्ञेयः पृषतेनसमोजनैः ॥ २४ ॥

बारहसिंहा के गुण ॥

बारहसिंहाका मांस मधुर हलका बलकारी वीर्य वर्द्धक और त्रिदोष नाशक होताहै २३(सावरके गुण)सावर का मांस स्निग्ध शीतल भारी रसतथा पाकमें मधुर कफ कारक और रक्त पित्त नाशक होताहै राजीव में चित्तर के समान गुण होते हैं ॥ २४ ॥

अथ पीठी ॥

मुण्डीतुज्वरकासाम्ल क्षयश्वासापहोहिमः २५ (अथ विलेशयेषु तत्रशशःस्यात्) लम्बकर्णःशशःशूली लोमकर्णोविलेशयः । शशःशीतोलघुर्ग्राही रूक्षस्वादुःसदा हितः ॥ वह्निकृत्कफवातघ्नो वातसाधारणःस्मृतः । ज्वरातीसारशोषास्रश्वासामय हरश्चसः ॥ २६ ॥

मुंडी मृगके गुण ॥

मुंडी का मांस ज्वर खांसी रक्त क्षय तथा श्वास नाशक और शीतल होता है २५ (विलेशयोंमें से खरगोशके नामगुण) लंबकर्ण शशशूली लोमकर्ण और बिलेशय यह खरगोश के नाम हैं खरगोशका मांस शीतल हलका ग्राही रूखा मधुर सदैवहितकारी दीपन बातको ठीक करनेवाला और कफ पित्त ज्वर अतीसार शोषरक्त दोष तथा श्वास नाशक होताहै ॥ २६ ॥

अथ साही ॥

सेधातुशल्यकःश्वावित्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ।शल्यकःश्वासकासास्रशोषदोषत्रयापहः२७॥

सेई के नाम गुण ॥

सेधा शल्यक और श्वावित् यह सेई के नाम हैं सेई का मांस श्वास खांसी रक्त दोष शोषतथा त्रिदोष नाशक होता है ॥ २७ ॥

अथ पक्षिणांनामानि गुणाश्च ॥

पक्षीखगोविहङ्गश्च विहगश्चविहङ्गमः । शकुनिर्विःपतत्रीच विष्किरोविकिरोऽण्ड जः ॥ धान्याःकूलेचरायेऽत्र तेषांमांसंलघूत्तमम् । आनूपंबलकृन्मांसं स्निग्धंगुरुतरं स्मृतम् ॥ २८ ॥

पक्षियों के नाम और गुण ॥

पक्षी खग विहंग विहग विहंगम शकुनि विपतात्रि विष्किरविकिर और अंडज यहपक्षियोंके नामहैं इनमें से कूलेचर पक्षियों का मांसश्रेष्ठ और हलका होता है अनूप देशमें उत्पन्न होनेवाले पक्षियों का मांस बलकारक स्निग्ध और भारी होता है ॥ २८ ॥

तेषुविष्किरेषुवटेरवटइ ॥

वर्त्तीकोवर्त्तकश्चित्रस्ततोऽन्यावर्त्तकाःस्मृताः । वर्त्तकोऽग्निकरःशीतो ज्वरदोषत्रयापहः ॥ सुरुच्यःशुक्रदोवल्यो वर्त्तकाल्पगुणास्ततः ॥ २९ ॥

बटेर के नाम गुण ॥

बर्त्तीक बर्त्तक और चित्र यह बटेर के नाम हैं एकप्रकार की दूसरी बटेरको वर्त्तका कहते हैं बटेर दीपन शीतल ज्वरघ्न त्रिदोष नाशक रुचिकारी वीर्य बर्द्धक और बलकारक होता है और वर्त्तका में इससे कम गुण होते हैं ॥ २९ ॥ अथ लावा ॥

लावाविष्किरवर्गेषु तेचतुर्धामताबुधैः । पांशुलोगौरकोऽन्यस्तु पौण्डरीकोदरस्तथा ॥ लावावह्निकराःस्निग्धा गरघ्नाग्राहिकाहिताः । पांशुलःश्लेष्मलस्तेषु वीर्य्योह्यनिलनाशनः ॥ गौरोलघुतरोरूक्षो वह्निकारीत्रिदोषजित् । पौण्ड्रकःपित्तकृत्किंचिल्लघुवातकफापहः ॥ दर्भरोरक्तपित्तघ्नो हृदामयहरोहिमः ॥ ३० ॥

लवा के नाम गुण ॥

विष्किरों में से लवाचार प्रकार का होता है पांशुल गौरक पौंड्रक और दर्भर लवाका मांस अग्निकारक स्निग्ध विषदोष नाशक ग्राही और हितकारी होता है पांशुलका मांस कफकारी उष्ण तथा बात नाशक गौरक का मांस बहुत हलका रूखादीपन तथा त्रिदोष नाशक पौंड्रकका मांस पित्त बर्द्धक कुछहलका तथा बात कफ नाशक और दर्भरका मांस रक्त पित्तघ्न हृदय रोग नाशक तथा शीतल होता है ॥ ३० ॥ अथ बगेरा ॥

वालीकोवार्त्तिचटकोवार्त्तीकश्चैवसस्मृतः ।वालीकोमधुरःशीतोरूक्षश्चकफपित्तनुत् ३१॥

बगेराके नाम गुण ॥

वालीक बात चटक और बर्तीक यह बगेराके नाम हैं बगेरा शीतल मधुर रूखा और कफ पित्त नाशक होता है ॥ ३१ ॥ अथ कृष्णतित्तिरि गौरतित्तिरी ॥

तित्तिरिःकृष्णवर्णःस्याच्चित्रोऽन्योगौरतित्तिरिः । तित्तिरिर्बलदोग्राही हिक्कादोषत्रयापहः ॥ श्वासकासज्वरहरस्तस्माद्गौराधिकोगुणैः ॥ ३२ ॥

काले और गोरेतीतरके नाम गुण ॥

काले तीतर को कृष्ण तित्तिर और चित्र बर्णवाले तीत्तरको गौर तित्तिर कहते हैं तीतर बलकारी ग्राही और हिचकी त्रिदोष श्वास खांसी तथा ज्वरनाशक होताहै गौरे तित्तिर में इससे अधिक गुण होते हैं ॥ ३२ ॥ अथ गवरैआ ॥

चटकःकलविंकःस्यात् कुलिङ्गःकालकण्ठकः । कुलिंगःशीतलःस्निग्धः स्वादुःशुक्रकफप्रदः ॥ सन्निपातहरोवेश्म चटकश्चातिशुक्रलः ॥ ३३ ॥

गौरैया के नाम गुण ॥

चटक कलविंक कुलिंग और काल कंटक यह गौरैया के नाम हैं गौरैया शीतल स्निग्ध मधुर वीर्य बर्द्धक कफकारी और सन्निपात नाशक होती है घरकी गौरैया बहुत वीर्य बर्द्धक होती हैं ॥ ३३ ॥

कुक्कुटोवन कुक्कुटः ॥

कुक्कुटःकृकवाकुःस्यात् कलयश्चरणायुधः । ताम्रचूडस्तथादक्षो पातण्यादीशिखण्डिकः ॥ कुक्कुटोवृंहणःस्निग्धो वीर्य्योष्णोऽनिलहद्गुरुः । चक्षुष्यःशुक्रकफकृत् बल्योवृष्य कषायकः ॥ आरण्यकुक्कुटःस्निग्धो वृंहण श्लेष्मलोगुरुः । वात पित्त क्षय वमि विषम ज्वर नाशनः ॥ ३४ ॥ मुर्ग्गा और बनमुर्ग के नाम गुण ॥

कुक्कुट कृकवाकु कालज चरणायुध ताम्रचूड दक्ष पातण्यादी और शिखंडिक यह मुर्गेके नाम हैं मुर्गा धातु वर्द्धक स्निग्ध उष्ण बातनाशक भारी नेत्रोंको हित कफकारक बलकारी पोषक और कषैला होता है बनमुर्ग्गा स्निग्ध धातु बर्द्धक कफकारक भारी और बात पित्त क्षय छर्दि तथा विषम ज्वर नाशक होता है ॥ ३४ ॥ प्रतुदेषुहारीतस्य ॥

हारीतोरक्तपीतःस्याद्धरितोऽपिसकथ्यते । हारीतोहारीलइति लोके ॥ हारीतोरूक्षउष्णश्चरक्तपित्तकफापहः ॥ स्वेदस्वरकरःप्रोक्त ईषद्घातकरश्चसः ॥ ३५ ॥

प्रतुदों में हारिल के नाम गुण ॥

हारीत (हारिल) रक्तथा पीतबर्ण होता है इसको हारित भी कहते हैं हारिल रूखा उष्ण रक्त पित्त नाशक कफघ्न श्वेतकारी स्वर को हित और कुछ बादी होता है ॥ ३५ ॥

पाण्डुधवलपाण्डू ॥

पाण्डुस्तुद्विविधोज्ञेयश्चित्रपक्षःकलध्वनिः ।द्वितीयोधवलःप्रोक्तःसकपोतस्फुटस्वनः ॥ चित्रपक्षःपित्तरोषा इतिलोके॥ चित्रपक्षःकफहरोवातघ्नोग्रहणीप्रणुत् ॥ धवलःपाण्डुरुद्दिष्टोरक्तपित्तहरोहिमः ॥ ३६ ॥ पांडु(पिंडकी)के नाम गुण ॥

पांडु दो प्रकारका होता है एकतो चित्र पक्षतथा कलध्वनि कहाता है और दूसरा धवल कपोत तथा स्फुटस्वन कहाता है पहला कफ बात तथा ग्रहणी नाशक और दूसरा रक्त पित्त नाशक तथा शीतल होता है ॥ ३६ ॥ अथ मयूरः ॥

मयूरश्चन्द्रकीकेकीमेघरावोभुजङ्गभुक् । शिखीशिखावलोवर्हीशिखण्डीनीलकण्ठकः ॥ शुक्लोपाङ्गःकलापीचमेघनादःकलाप्यपि । रसेपाकेचमधुरःसंग्राहीबातशान्तिकृत्॥ ३७ ॥

मयूर के नाम गुण ।

मयूर चन्द्रकी केकी मेघरव भुजंगभुक् शिखी शिखावर वही शिखंडी नीलकंठक शुक्लोपांग कपाली मेघनाद और कपाल यह मयूरकेनामहैं मयूर रस तथा पाकमें मधुरग्राही और बातनाशकहोतेहैं ३७ ॥

कबूतर परेवा ॥

पारावतःकलरवःकपोतोरक्तलोचनः । पारावतोगुरुःस्निग्धोरक्तपित्तानिलापहः ॥ संग्राहीशीतलस्तज्ज्ञैःकथितोवीर्य्यवर्द्धनः ॥ ३८ ॥

कबूतरकेनामगुण ॥

पारावत कलरव कपोत और रक्तलोचन यह कबूतर के नामहैं कबूतर भारी स्निग्ध रक्त पित्त नाशक बातघ्न ग्राही शीतल और वीर्यबर्द्धक होताहै ॥ ३८ ॥

अथ पक्ष्यण्डस्यगुणाः ॥

नातिस्निग्धानिवृष्याणिस्वादुपाकरसानिच । वातघ्न्यपिशुक्राणिगुरूण्यण्डानि पक्षिणाम् ॥ ३९ ॥ पक्षियोंकेअंडोंकेगुण॥

पक्षियोंके अंडे कुछ स्निग्ध पुष्टिकारक रस तथा पाकमें मधुर बातनाशक भारी और अत्यन्त वीर्य बर्द्धक होतेहैं॥ ३९ ॥ ग्राम्येषु छागस्य ॥

छागलोवर्करश्छागोवस्तोजःछेलकःस्तुभः। अजाछागीस्तुभाचापिछेलिकाचगलस्तनी॥छागमांसंलघुस्निग्धंस्वादुपाकंत्रिदोषनुत्। नातिशीतमदाहिस्यात्स्वादुपीनसनाशनम्॥ परंबलकरंरुच्यंवृंहणंवीर्य्यवर्द्धनम् । अजायाअप्रसूतायामांसंपीनसनाशनम्॥ शुष्ककासेऽरुचौशोषेहितमग्नेश्चदीपनम् । अजासुतस्यबालस्यमांसंलघुतरंस्मृतम्॥ हृद्यंज्वरहरंश्रेष्ठंसुखदंबलदंभृशम्। मांसंनिःकासिताण्डस्यछागस्यकफकृद्गुरु ॥ स्रोतःशुद्धकरंबल्यंमांसंवातपित्तनुत् । वृद्धस्यवातलंरूक्षंतथाव्याधिमृतस्यच ॥ ऊर्द्धजत्रुविकारघ्नंछागसण्डंरुचिप्रदम्॥ ४० ॥

ग्राम्योंमें बकरेकेनामगुण ॥

छागल बर्कर छाग वस्त अज छेलक और स्तुभ यह बकरे के नाम हैं अजा छागी स्तुभा छेलिका और गल स्तनी यह बकरीके नामहैं बकरेका मांस हलका स्निग्ध पाकमें मधुर त्रिदोष नाशक कुछ शीतल दाहरहित मधुर पीनस नाशक बलकारी रुचिकारी और धातु तथा वीर्य बर्द्धक होताहै बिनाब्याईहुई बकरीका मांस पीनश नाशक सूखी खांसी अरुचि तथा सूजन में हितकारी और दीपनहोता है बकरे के बच्चेका मांस बहुत हलका हृदयकोहित ज्वरनाशक सुखदायक और अत्यन्त बलवर्द्धक होताहै बधिया बकरेका मांस कफकारक भारी स्रोतों का शुद्ध करने वाला बलकारी मांस बर्द्धक और वात पित्तनाशक होताहै वृद्ध अवथा रोगसे मरेहुए बकरेका मांस बादी और रूखा होताहै बकरेका शिर जत्रु (हँसुआ)के ऊपरका रोगोंके नाशक और रुचिकारीहोताहै ॥ ४० ॥

अथ मेढ़ा ॥

मेढ्रोमेढ़ोहुड़ोमेषउरणोऽप्येडकोऽपिच। अविर्वृष्टिस्तथोर्णायुष्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ ॥ मेषस्यमांसंपुष्टोस्यात्पित्तश्लेष्मकरंगुरु। तस्यैवाण्डविहीनस्यमांसंकिञ्चिल्लघुस्मृतम्॥४१

मेढ़ेकेनामगुण ॥

मेढ्र मेढ़ हुड़ मेष उरण उरभ्र अवि वृष्णि और ऊर्णायु यह मेढ़ेके नामहैं मेढ़ेका मांस पोषक पित्त कारी कफवर्द्धक तथा भारी और बधिया मेढ़ेका मांस कुछ हलका होताहै ॥ ४१ ॥

अथ एड़िकादुम्बिका इतिलोके दुम्बा ॥

एडकःपृथुशृङ्गःस्यान्मेदःपुच्छस्तुदुम्बकः।एडकस्यपलंज्ञेयंमेषामिषसमंगुणैः॥ मेदःपुच्छोद्भवंमांसंहृद्यंतृष्यंश्रमापहम्। पित्तश्लेष्मकरंकिञ्चिद्वातव्याधिविनाशनम्॥ ४२ ॥

दुंबाके नामगुण ॥

एड़क पृथुशृंग मेदः पुच्छ और दुम्बक यह दुंबाके नामहैं इसके मांसमें मेढ़े के मांसके सदृश गुण

होतेहैं इसकी पूंछका मांस हृदयको हित वीर्यबर्द्धक काम नाशक कफ पित्त बर्द्धक और कुछ बात रोग नाशकहोताहै ॥ ४२ ॥ अथ वर्दगावः ॥

वलीवर्दस्तुवृषभऋषभश्चतथावृषः । अनड्वान्सौरभेयोल्पगोरुक्षाभद्रइत्यपि ॥ सुरभिःसौरभेयीचमाहेयीगौरुदाहृता । गोमांसन्तुगुरुस्निग्धंपित्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ वृंहणंबातहृद्बल्यमपथ्यंपीनसप्रणुत् ॥ ४३ ॥

बैलकेनामगुण ॥

बलीबर्द्द वृषभ ऋषभ वृप अनड्वान् सौरभेय गोउक्षा और भद्र यह बैलके नामहैं सुरभि सौरभेयी माहेयी और गो यह गौकेनामहैं गोमांस अत्यन्त भारी स्निग्ध पित्त तथा कफ वर्द्धक धातु बर्द्धक बातघ्न बलकारी अपथ्य और पीनस नाशकहोताहै ॥ ४३ ॥

अथ घोड़ा ॥

घोटकेपीजितुरगतुरङ्गाश्चतुरङ्गमः । बाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः ॥ अश्व मांसन्तुक्षुवरंवह्निकृत्कफपित्तलम् । बातहद्वृंहणंबल्यंचक्षुष्यंमधुरंलघु ॥ ४४ ॥

घोड़ेकेनामगुण ॥

घोटक बाजी तुरग तुरंग अश्व तुरंगम वाह अर्वन् गन्धर्व हय सैंधव और सप्ति यह घोड़ेकेनाम हैं घोड़ेका मांस लवण दीपन कफ पित्त कारक बातनाशक धातुबर्द्धक बलकारी नेत्रोंकोहित मधुर और हलका होताहै ॥ ४४ ॥ अथ कूलेचरेषुमहिषस्य ॥

महिषोघोटकारिःस्यात्कासरश्चरजस्वलः । पीनस्कन्धःकृष्णकायोलुलायोयमवाहनः ॥ महिषस्यामिषंस्वादुस्निग्धोष्णंबातनाशनम् । निद्राशुक्रप्रदंबल्यंतनुदार्ढ्यकरङ्गुरु ॥ वृष्यञ्चसृष्टविण्मूत्रंवातपित्तास्रनाशनम् ॥ ४५ ॥

कूलेचरोंमेंभैंसेकेनामगुण ॥

महिष घोटकादि कासर रजस्वल पीनस्कन्ध कृष्ण काय लुलाय और यमबाहन यह भैंसेकेनामहैं भैंसेका मांस मधुर स्निग्ध उष्ण वातनाशक निद्राकारक वीर्यबर्द्धक बलिष्ठ शरीरको दृढकरने वाला भारी पुष्टकारक मलमूत्र निस्सारक और बात पित्त तथा रक्त नाशकहोता है ॥ ४५ ॥

अथ मण्डूकः ॥

मण्डूकःप्लवगोभेकोबर्षाभूर्दर्दुरोहरिः । मण्डूकःश्लेष्मलोनातिपित्तलोबलकारकः ४६ ॥

मैढ़क के नाम गुण ॥

मंडूक प्लवग भेक बर्षाभू दर्दुर और हरि यह मेंढक के नाम हैं मेंढकका मांस कफ बर्द्धक कुछ पित्तकारक और बलकारी होता है ॥ ४६ ॥

अथ पादिषुकच्छ्वा ॥

कच्छपोगूढ़पात्कर्मःकमठोदृढ़पृष्ठकः । कच्छपोबलदोवातपित्तनुत्पुंस्त्वकारकः ४७ ॥

पादियों में से कच्छप के नाम गुण ॥

कच्छप गूढ़ पाद कूर्म कमठ और दृढपृष्ठक यह कछुए के नाम हैं कछुएका मांस बलकारक बात पित्त नाशक और पुंस्त्व वर्द्धक होता है ॥ ४७ ॥

अथ विशेषाः । अथसद्योहतस्यमांसस्यगुणाः ॥

सद्योहतस्यमांसंस्यात्व्याधिघातियथाऽमृतम् ॥ वयस्यंबृंहणंसात्म्यमन्यथातद्विवर्जयेत् । स्वयंमृतस्यमांसं ॥ स्वयंमृतस्यचाबल्यमतीसारकरंगुरु ॥ ४८ ॥

विशेषवर्णन । शीघ्रमारेहुएमांसकेगुण ॥

शीघ्र माराहुआ मांस अमृतके समान रोगनाशक अवस्थाकोहित धातुबर्द्धक और सात्म्य होता है और इससे विरुद्धको त्याग करना योग्यहै स्वयंमरेहुए जीवका मांस बलनाशक अतीसारकारक और भारी होताहै ॥ ४८ ॥

वृद्धबालमांसम् ॥

वृद्धानांदोषलंमांसंबालानांबलकृल्लघु । सर्पदष्टस्यमांसञ्चशुष्कमांसंत्रिदोषकृत् ॥ व्यालदष्टञ्चदुष्टञ्चशुष्कंशूलकरपरम् ॥ ४९ ॥

वृद्धऔरबच्चोंकेमांसकागुण ॥

वृद्धोंका मांस त्रिदोषकारी बच्चोंका मांस बलकारी और हलका सर्पादिकोंसे दूषित तथा सूखा मांस त्रिदोष तथा शूलकारक और भारी होताहै ॥ ४९ ॥

अथ विषादिमृतस्यमांसम् ॥

विषाम्बुरुङ्मृतस्यैतन्मृत्युदोषरुजाकरम्॥क्लिन्नमुत्क्लेशजनकंकृशवातप्रकोपनम् ॥ तोयपूर्णशिराजालंमृतमप्सुत्रिदोषकृत् ॥ ५० ॥

विषआदिसेमरेहुएजीवोंकेमांसकागुण ॥

बिष जल तथा रोगसे मरेहुये जीवका मांस त्रिदोष रोग और मृत्युकारक होताहै सडाहुआ मांस क्लेश कारक होता है दुर्बल जीवों का मांस बादी जल में डूब कर मरे हुये तथा जलसे भरी हुई नशों वाले जीव का मांस त्रिदोषकारी होता है ॥ ५० ॥

विहङ्गेषुपुमान्श्रेष्ठःस्त्रीचतुष्पदजातिषु । परार्द्धोलघुपुंसांस्यात्स्त्रीणांपूर्वार्द्धमादिशेत् ॥ देहमध्यंगुरुप्रायंसर्वेषांप्राणिनांस्मृतम् ॥ पक्षक्षेपाद्विहङ्गानांतदेवलघुकथ्यते । गुरूण्ययण्डानिसर्वेषांगुर्व्वीग्रीवाचपक्षिणाम् ॥ उरःस्कन्धोदरंकुक्षीपादौपाणीकटीतथा । पृष्ठत्वग यकृदन्त्राणिगुरूणीहयथोत्तरम् ॥ ५१ ॥

पक्षियोंमें नरोंका मांस और चौपायोंमें मादाओं का मांस श्रेष्ठ है नरोंका पिछला भाग और मादाओं का पहला भाग हलकाहोताहै संपूर्ण जीवोंके शरीरका मध्यभाग भारी होताहै परन्तु पक्षोंके चलाने से पक्षियोंका मांस हलकाहोताहै सब पक्षियोंके अंड तथा ग्रीवा भारी और छाती स्कन्ध उदर मस्तक पैर हाथ कमर पीठ त्वचा यकृत तथा आंते यह क्रमसे उत्तरोत्तर भारी होती हैं ॥ ५१ ॥

लघुवातकरंमांसंखगानांधान्यचारिणाम्।मत्स्याशिनांपित्तकरंवातघ्नंगुरुकीर्तितम् ॥ पलाशिनांश्लेष्मकरंलघुरूक्षमुदीरितम् । बृंहणंगुरुवातघ्नंतेषामेवंपलाशिनाम् । तुल्यजातिष्वल्पदेहामहादेहेषुपूजिताः । अल्पदेहेषुशस्यन्तेतथैवस्थूलदेहिनः ॥ ५२ ॥

जो पक्षी नाजखातेहैं उनका मांस हलका तथा वातनाशक मत्स्य खानेवाले पक्षियों का मांस पित्तवर्द्धक वातनाशक तथा भारी और मांसाहारी पक्षियोंका मांस कफकारी हलका तथा रूखा होताहै

तुल्य जातिवालोंमें बड़े शरीरवालों की अपेक्षा छोटे शरीरवालों का श्रेष्ठ और उनमें भी स्थूल शरीर वालोंका मांस श्रेष्ठ होताहै ॥ ५२ ॥ मत्स्येषुरोहितस्यं ॥

रक्तोदरोरक्तमुखोरक्ताक्षोरक्तपक्षतिः । कृष्णपुच्छोभृषश्रेष्ठोरोहितःकथितोबुधैः ॥ रोहितःसर्वमत्स्यानांवरोवृष्योऽर्दितार्तिजित् । कषायानुरसस्वादुर्वातघ्नोनातिपित्तकृत् ॥ ऊर्ध्वजत्रुगतान्रोगान्हन्याद्रोहितमुण्डकम् ॥ ५३ ॥

रोहू मछली के गुण ॥

लाल उदर लालमुख लालनेत्र लालपर और कालीपूंछवाली सब मछलियों में श्रेष्ठ रोहू मछली कहलातीहै रोहू मछली सब मछलियों में श्रेष्ठ वीर्यवर्द्धक अर्दित रोगनाशक कुछ कषैली मधुर वात नाशक और कुछ पित्तकारक होती है इसका शिर हसुए के ऊपर के रोगोंको नाश करताहै ॥ ५३ ॥

सिलन्धा ॥

सिलन्धःश्लेष्मलोबल्योविपाकेमधुरोगुरुः।वातपित्तहरोहृद्यमामवातकरश्चसः ॥ ५४ ॥

सिलन्धा मछली के गुण ॥

सिलन्धा मछली कफवर्द्धक बलकारी पाकमें मधुर भारी वात पित्तनाशक हृदयकोहित और आम वातकारक होती है ॥ ५४ ॥ अथ भाकुर ॥

भकुरोमधुरःशीतोवृष्यःश्लेष्मकरोगुरुः।विष्टम्भजनकश्चापिरक्तपित्तहरःस्मृतः ॥ ५५ ॥

भाकुर मछली के गुण ॥

भाकुर मधुर शीतल वीर्यवर्द्धक कफकारी भारी विष्टंभी और रक्तपित्तनाशक होतीहै ॥ ५५ ॥

मोचिका ॥

मोचिकावातहृद्बल्यावृंहणीमधुरागुरुः।पित्तहृत्कफकृद्रुच्यावृष्यादीप्ताग्नयेहिता ॥ ५६ ॥

मोचिकामछलीके गुण ॥

मोचिकामछली वातनाशक बलकारी धातुवर्द्धक मधुर भारी पित्तघ्न कफकारक रुचिकारी वीर्य्य वर्द्धक और बड़ी अग्निवाले पुरुषों को हित है ॥ ५६ ॥

मठनाचूआरीइतिचपोठियाबोरीइतिच ॥

पाठिनःश्लेष्मलोबल्योनिद्रालुःपेशिताशनः। दूषयेद्रुधिरंपित्तकुष्ठरोगंकरोतिच ॥ ५७

पाठीनके गुण ॥ ॥

पाठीन कफवर्द्धक बलिष्ठ निद्राकारक रुधिरदूषक और पित्त तथा कुष्ठरोगकारक होतीहै ॥ ५७ ॥

अथ सींगी ॥

शृंगीतुवातशमनीस्निग्धाश्लेष्मप्रकोपनी।रसेतिक्ताकषायाचलघ्वीरुच्यास्मृताबुधैः५८॥

सिंगीमछलीके गुण ॥

सिंगीमछली वातनाशक स्निग्ध कफको कुपित करनेवाली तिक्त कषैली हलकी और रुचिकारक होती है ५८ ॥ अथ हीलसा ॥

इल्ल सोमधुरःस्निग्धोरोचनोवह्निबर्द्धनः। पित्तहत्कफकृत्किञ्चिल्लघुर्वृष्योऽनिलापहः ॥५९॥

हिलसामछली के गुण ॥

हिलसा मधुर स्निग्ध रुचिकारक दीपन पित्त कफवर्द्धक कुछ हलकी वीर्यवर्द्धक और वातनाशक होती है ॥ ५९ ॥

अथ सौरी ॥

शष्कुलीग्राहिणीहृद्यामधुरातुवरास्मृता ६० (अथ गर्गरा) गर्गरःपित्तलःकिञ्चिद्वातजित्कफकोपनः ॥ ६१ ॥

सौरीमछलीके गुण ॥

सौरी ग्राही हृदयकोहित मधुर और कषैली होतीहै ६०(गर्गरामछलीके गुण) गर्गरा पित्तवर्द्धक कुछवातनाशक और कफको कुपितकरनेवाली होती है ॥ ६१ ॥

अथकवई ॥

कविकामधुरास्निग्धाकफघ्नारुचिकारिणी।किञ्चित्पित्तकरीवातनाशिनीवह्निवर्द्धिनी ६२॥

कवईमछलीके गुण ॥

कवई मधुर स्निग्ध कफनाशक रुचिकारक कुछ पित्तवर्द्धक वातनाशक और दीपनहोती है ॥ ६२ ॥

अथ ब्राम्बी ॥

वर्मिमत्स्योहरेद्वातंपित्तंरुचिकरोलघुः ६३ (अथ दण्डारी) दण्डमत्स्योरसेतिक्तः पित्तरक्तंकफंहरेत्।वातसाधारणःप्रोक्तःशुक्रलोबलवर्द्धनः ॥ ६४ ॥

बाबिमछलीके गुण ॥

बांबी वातनाशक पित्तवर्द्धक रुचिकारक और हलकी होती है ६३ (दण्डारीमछली के गुण) दंडारी तिक्त पित्त रक्त तथा कफनाशक वीर्यवर्द्धक बलकारक और वातको साधारण रखनेवाली होती है ॥ ६४ ॥

अथ अरङ्गी ॥

एरङ्गीमधुरःस्निग्धोविष्टम्भीशीतलोलघुः ६५ (अथ पपता) महासफरसंज्ञस्तु तिक्तःपित्तकफापहः । शिशिरोमधुरोरुच्योवातसाधारणःस्मृतः ॥ ६६ ॥

अरंगी मछली के गुण ॥

अरंगी मधुर स्निग्ध विष्टंभी शीतल और हलकी होती है ६५ (पपता मछली के गुण) पपता तिक्त मधुर पित्त कफ नाशक रुचिकारक शीतल और वातको साधारण रखनेवाली होती है ॥ ६६ ॥

अथ गरई ॥

गरघ्नीमधुरातिक्तातुवरावातपित्तहृत्।कफघ्नीरुचिकृल्लघ्वीदीपनीबलवीर्य्यकृत् ६७ ॥

गिरई मछली के गुण ॥

गिरई मधुर तिक्त कषैली वात पित्तनाशक कफघ्न रुचिकारक हलकी दीपन और बल वीर्य वर्द्धक होतीहै ॥ ६७ ॥

अथ मंगुरी ॥

मंगुरीवातहृद्बल्योवृष्यःकफकरोलघुः ६८ (अथ टेङ्गरा) सपादमत्स्योमेधाकृन्मेहक्षयकरश्चसः। वातपित्तकरश्चापिरुचिकृत्परमोमतः ॥६९॥

मंगुरी मछली के गुण ॥

मंगुरी वात नाशक बलकारी वीर्यवर्द्धक कफकारी और हलकी होती है ६८ (टेंगरा मछलीके गुण) टेंगरा मेधाकोहित मदनाशक बादी पित्त वर्द्धक और अत्यन्त रुचिकारक होतीहै ॥ ६९ ॥

अथ सफरीपोठीइतिच ॥

प्रोष्ठीतिक्ताकटुःस्वादुःशुक्रघ्नीकफवातजित् । स्निग्धास्यकण्ठरोगघ्नीरोचनीचलघुःस्मृतः ॥ ७० ॥

सफरी मछली के गुण ॥

सफरी तिक्त कटु मधुर वीर्य नाशक स्निग्ध रुचिकारी हलकी और कफ वात मुखरोग तथा कंठ रोगनाशक होतीहै ॥ ७० ॥

अथ क्षुद्रमत्स्याः ॥

क्षुद्रामत्स्याःस्वादुरसाःदोषत्रयविनाशनाः ।लघुपाकारुचिकराबलदास्तेहितामताः७१॥

छोटी मछलियों के गुण ॥

छोटी मछली मधुर त्रिदोषनाशक हलकी रुचिकारक बलकारी और सवप्रकारसे हितहोती हैं॥ ७१ ॥

अथातिक्षुद्रमत्स्याः ॥

अतिसूक्ष्माःपुंस्त्वहरारुच्याःकासानिलापहाः ७२ (अथ मत्स्याण्डा) मत्स्यगर्भो भृशंवृष्यःस्निग्धपुष्टिकरोलघुः। कफमेहःप्रदोबल्योग्लानिकृन्मेहनाशनः (अथ सूखठी) शुष्कमत्स्यानवाबल्यादुर्जराः विड्विबन्धिनः (अथ दग्धमत्स्याः) दग्धमत्स्योगुणैः श्रेष्ठःपुष्टिकृद्बलवर्द्धनः ॥ ७३ ॥

बहुत छोटी मछलियोंके गुण ॥

बहुत छोटी मछली रुचिकारक और पुंस्त्व खांसी तथा वात नाशक होतीहैं ७२ (मछलियों के अंडों के गुण)मछलियोंके अंडे अत्यन्त वीर्यवर्द्धक स्निग्ध पुष्टकारी हलके प्रमेहनाशक और कफ मेद बल तथा ग्लानिकारक होतेहैं सूखीमछली बलरहित कठिनतासे पचनेवाली और मलको बाँधनेवाली होतीहैं भूनीहुई मछलीगुणोंमें श्रेष्ठ पुष्टिकारक और बलवर्द्धक होतीहै ॥ ७३ ॥

अथ कूपजादिमत्स्यगुणाः ॥

कौपमत्स्याःशुक्रमूत्रकुष्ठश्लेष्मविवर्द्धनाः । सरोजामधुराःस्निग्धाबल्यावातविनाशनाः ॥ नादेयावृंहणामत्स्यागुरवोऽनिलनाशनाः । रक्तपित्तकरावृष्याःस्निग्धोष्णाःस्वल्पवर्चसः ॥ चौञ्जाःपित्तकराःस्निग्धामधुरालघवोहिमाः । ताडागागुरवोवृष्याःशीतलाः बलमूत्रदाः ॥ ताडागावक्षिप्तजाताःबलायुर्मतिदृक्कराः ॥ ७४ ॥

कूपादिमें उत्पन्न मछलियोंके गुण ॥

कुएंकी मछली वीर्य मूत्र कुष्ठ तथा कफवर्द्धक सरोवरकी मछली मधुर स्निग्ध बलकारी तथा बात पित्तनाशक नदीकी मछली धातुबर्द्धक भारी बातनाशक रक्तपित्तकारी वीर्यवर्द्धक स्निग्ध उष्ण तथा मलको स्वल्प करने वाली गढ्ढैया की मछली पित्त कारक स्निग्ध मधुर हलकी तथा शीतल तडाग की मछली भारी वीर्यवर्द्धक शीतल बलिष्ठ तथा मूत्रकारक और झिरने की मछली तडाग की मछली के समान गुणकारक बलिष्ठ आयुवर्द्धक बुद्धिदायक तथा दृष्टि वर्द्धक होती हैं ॥ ७४ ॥

अथर्त्तु विशेषेमत्स्यविशेषः ॥

हेमन्तेकूपजामत्स्याःशिशिरेसारसाहिताः । बसन्तेतेतुनादेयाग्रीष्मेचौऽजसमुद्भवाः॥तडागजातावर्षासुतास्वपथ्यानदीभवाःनैर्झराःशरदिश्रेष्ठाविशेषोऽयमुदाहृतः७५॥

इतिश्रीभावप्रकाशेमांसवर्गः ॥

ऋतुविशेष में मत्स्य बिशेष ॥

•हेमन्तमें कूएंकी शिशिरमें सरोवरकी बसन्तमें नदीकी ग्रीष्ममें गढ़ैयाकी वर्षामें तडागकी और शरद् ऋतु में झिरने की मछली श्रेष्ठ हैं वर्षा ऋतु में नदी की मछलियों का सेवन करनाअहितहै॥ ७५ ॥

इतिश्री भावप्रकाशस्य भाषानुवादे मांस वर्गः समाप्तः ॥

अथ कृतान्नवर्गः ॥

अत्रान्नानांसाधनप्रकारःसिद्धानांगुणाश्च । तत्रपरिभाषिता ॥

समवायिनिहेतौयेमुनिभिर्गणितागुणाः । कार्य्येऽपितेऽखिलाज्ञेयाःपरिभाषेतिभाषिता ॥ क्वचित्संस्कारभेदेनगुणभेदोभवेद्यतः । भक्तंलघुपुराणस्यशालेस्तच्चिपिटोगुरुः ॥ क्वचिद्योगप्रभावेनगुणान्तरमपेक्ष्यते । कदन्नंगुरुसर्पिश्चलघुक्तंसुहितंभवेत्॥ १ ॥

कियेहुए अन्नका वर्ग ॥

इसमें अन्नोंके बनानेकी रीति और कियेहुओंके गुण। परिभाषा ॥

मुनियोंने समवायिकारण (जिन पदार्थोंसे बस्तु बनाईजातीहै) में जो गुण कहेहैं वही सम्पूर्ण उनके कार्यमें भी होतेहैं यह परिभाषा कहीहै कहीं संस्कारके भेदसे गुणोंका भेद होजाताहै जैसे पुराने चांवलका भात तो हलका और उनके चिड़वे भारी होतेहैं कहीं संयोगके प्रभावसे गुणमें भेद होजातेहैं जैसे केला और घी यह दोनों भारी होतेहैं परन्तु यह दोनों मिलेहुए सुगमतासे परिपाकको प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥ अथ भक्तस्यनामानिसाधनंगुणाश्च ॥

भक्तमन्नंतथान्धश्चक्वचित्कूरश्चकीर्त्तितम् । ओदनोऽस्त्रीस्त्रियांभित्साहीदिविदःपुंसि भाषितः ॥ सुधौतास्तण्डुलाःस्फीतास्तोयेपञ्चगुणेपचेत् । तद्भक्तंप्रस्रुतंचोष्णंविशदंगुणवन्मतम् ॥ भक्तंवह्निकरंपथ्यंतर्पणंरोचनंलघुः।अधौतमश्रुतंशीतंगुर्वरुच्यंकफप्रदम् २ ॥

भातके नाम साधन और गुण ॥

भक्त अन्न अन्ध कूर ओदन भित्सा और दिवि यह भातके नामहैं अच्छे प्रकारसे धोयेहुए फूलेहुए चांवलों को पांचगुने जलमें पकावे फिर मांड़ निकलेहुए कुछ उष्ण चांवल वह भात कहलाते हैं वह भात गुणकारी होताहै भात अग्निवर्द्धक पथ्य तृप्तिकारक रुचिकारी और हलका होताहै बिनाधोयेहुए चांवलोंका बेमांड़ निकलाहुआ भात शीतल भारी अरुचिकारी और कफवर्द्धक होताहै ॥ २ ॥

अथ पहिति ॥

दलितन्तुशिम्बीधान्यंदालिर्दालीस्त्रियामुभे । दालीतुसलिलेसिद्धालवणार्द्रकहिंगु

भिः॥ संयुक्तासूपनाम्नीस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ। सूपोविष्टम्भकोरूक्षःशीतस्तुसविशेषतः॥ निस्तुषोभृष्टसंसिद्धःलाघवंसुतराव्रजेत् ॥ ३ ॥

दालकेनाम साधन और गुण ॥

दलाहुआ शमीधान्य दालि और दाली कहलाताहै जलमें पकीहुई और लवण अदरक तथा हींग युक्त दालको सूप कहतेहैं सूप (पकीहुई दाल) विष्टंभी रूखी और शीतलहोतीहै छिलके रहित और भुनीहुई दालपकानेसे अत्यन्त हलकी होती है ॥ ३ ॥

अथ खिचिरी ॥

तण्डुलादालिसंमिश्रालवणार्द्रकहिंगुभिः । संयुक्तासलिलेसिद्धाकृशराकथिताबुधैः ॥ कृशराशुक्रलाबल्यागुरुःपित्तकफप्रदा । दुर्जराबुद्धिविष्टम्भ मलमूत्रकरास्मृता ॥ ४ ॥

खिचड़ीके नाम साधन और गुण ॥

लवण अदरक तथा हींग युक्त दाल चांवल जल में पाक कियेहुए कृशरा कहेजाते हैं खिचड़ी वीर्य्यवर्द्धक बलकारक भारी पित्त कफकारक कठिनतासे पचनेवाली बुद्धिकारक विष्टंभी और मल मूत्रकारी होतीहै ॥ ४ ॥

अथ तापहारी। ताताहरीतिलोके ॥

घृतेहरिद्रासंयुक्तेमाषजाम्भर्ज्जयेद्वटीम्।तण्डुलांश्चापिनिर्धौतान्सहैवपरिभर्जयेत् ॥ सिद्धयोग्यंजलंतत्रप्रक्षिप्यकुशलःपचेत् । लवणार्द्रकहिंगूनिमात्रायातत्रनिःक्षिपेत् ॥ एषासिद्धिःसमानज्ञाप्रोक्तातापहरीबुधैः । भवेत्तापहरीबल्यावृष्याश्लेष्मानमाचरेत् ॥ वृंहणीतर्पणीरुच्यागुर्व्वीपित्तहरास्मृता ॥ ५ ॥

ताहरीके नाम साधन और गुण ॥

हल्दीके सहित घृतमें चांवल और उड़दकी बड़ियोंको भूने फिर परिपाक होने योग्य जलमें पकावे और प्रमाणके अनुसार उसमें लवण अदरक तथा हींग छोड़े यह परिपाकहोनेपर तापहरी (ताहरी) कहलातीहै ताहरी बलकारी वीर्यवर्द्धक कफकारी धातुवर्द्धक तृप्ति तथा रुचिकारक भारी और अपने कारणके समान गुणवालीहोतीहै ॥ ५ ॥ अथ खीर ॥

पायसंपरमान्नंस्यात् क्षीरिकापितदुच्यते । शुद्धेऽर्द्धपक्केदुग्धेतु घृताक्तांस्तण्डुलान्पचेत् ॥ तेसिद्धाक्षीरिकाख्याता ससिताज्ययुतोत्तमाः । क्षीरिकादुर्जराप्रोक्ता वृंहणीबलवर्द्धिनी ॥ नालिकेरन्तनुकृत्यच्छिन्नंपयसिगोःक्षिपेत् । सितागव्याज्यसंयुक्ते तत्पचेन्मृदुनाऽग्निना ॥ नारीकेरोद्भवाक्षीरी स्निग्धाशीतातिपुष्टिदा । गुर्वीसुमधुराबृष्या रक्तपित्तानिलापहा ॥ ६ ॥

खीरके नाम साधन और गुण ॥

पायस परमान्न और क्षीरिका यह खीरके नाम हैं शुद्ध तथा अर्द्धपक्व दुग्धमें घृतयुक्त पकेहुए चांवलोंको पकाकर शर्करा तथा घृतसे युक्तकरे वह खीर कहातीहै खीर कठिनतासे पचनेवाली धातु बलवर्द्धक विष्टंभी और पित्त रक्तपित्त जठराग्नि तथा बातनाशक होतीहै नारियल बारीक कटेहुए गोलेको गौके दूधमेंछोड़कर शक्कर और गौके घृतसमेत मन्दाग्निसे पकावे यहनारियलकी खीर स्निग्ध शीतल अत्यन्त पुष्टकारक भारी मधुर वीर्यवर्द्धक और रक्तपित्त तथा बातनाशक होतीहै ॥ ६ ॥

अथ सेवई ॥

समितांवर्त्तिकांकृत्वा सूक्ष्मांतुयवसन्निभाम् । शुष्काक्षीरेणसंसाध्या भोज्याघृतासिता न्विता ॥ सेविकातर्पणीबल्या गुर्वीपित्तानिलापहा । ग्राहिणीसन्धिकृद्रुच्या तांखादेन्नाति मात्रया ॥ ७ ॥

सेवईकेसाधन और गुण ॥

जौके समान मैदाकी अत्यन्त पतली बत्तियोंको बनाकर धूपमें सुखावे फिर उनको दूधमें पकाकर घृतशर्करा मिलाकर खाय सेवई तृप्ति कारक बलकारी भारी बात पित्त नाशक ग्राही टूटेको जोड़ने वाली और रुचिकारक होतीहैं इनको अधिकन खाय ॥ ७ ॥

अथ मण्डा ॥

गोधूमाधवलाधौताः कुट्टिताःशोषितास्ततः । प्रोक्षितायंत्रनिष्पिष्टाश्चालिता समिताःस्मृताः ॥ वारिणाकोमलांकृत्वा समितासाधुमर्द्दयेत् । हस्तलालनयातस्या लोप्त्रीं सम्यक्प्रसारयेत् ॥ अधोमुखघटस्यैतत् विस्तृतंप्रक्षिपेद्बहिः । मृदुनावह्निनासाध्यः सिद्धोमण्डकउच्यते (लोप्त्रीलोइ इतिलोके) दुग्धेनसाज्यखंडेन मंडकंभक्षयेन्नरः ॥ अथ वासिद्धमांसेन सतक्रवटकेनवा । मण्डकोवृंहणोवृष्यो बल्योरुचिकरोभृशम् ॥ पाकेऽपि मधुरोग्राही लघुर्दोषत्रयापहः ॥ ८ ॥

मंडेकेसाधनऔरगुण ॥

श्वेत धोयेहुए कूटेहुए और सुखायेहुए गेहुओंको पीसकर चालनेसे समिता (मैदा) कहलातीहै मैदाको जलसे सानकर खूब उसने और हाथों से उसकी लोईको खूबफैलावै उसफैलीहुई लोईको औंधेघड़ेके ऊपरडाले फिर मंदाग्नि से उसको पकावे इसपकीहुई रोटीको मंडा कहतेहैं मंडेको दूध घी तथा खांडके साथ अथवा मांस और दही बड़ेके साथ खाय तो धातुओंकी पुष्टता वीर्यकी वृद्धि और रुचिहोतीहै मंडा पाकमें मधुर ग्राही हलका और त्रिदोष नाशकहोताहै ॥ ८ ॥

अथ पोरीकुत्रापिदुनौरी इतिच ॥

कुर्य्यात्समितयाऽतीवतन्वीपर्प्पटिकाततः । स्वेदयेत्तप्तकेतान्तुपोलिकाजगदुर्बुधाः ॥ तांखादेल्लप्सिकायुक्तां तस्यामंडकवद्गुणाः । तप्तकंत वा इतिलोके ॥ ९ ॥

पोरीकासाधनऔरगुण ॥

मैदेकी बहुत पतली पपड़ीको तवेके ऊपर पकावे यह पोलिका कहलातीहै इसको हलुएके संग खाय इसमें मंडेके समानगुणहोतेहैं ॥ ९ ॥

अथ प्रसंगाल्लप्सी ॥

समितांसर्पिषाभृष्टां शर्करांपयासिक्षिपेत् । तस्मिन्घनीकृतेन्यस्ये लवङ्गंमरिचादिकम् ॥ सिद्धैषालप्सिकाख्याता गुणास्तस्यावदाम्यहम् । लप्सिकाबृंहणीवृष्या बल्यापित्तानिलापहा ॥ स्निग्धाश्लेष्मकरीगुर्वी रोचनीतर्पणीपरम् ॥ १० ॥

लप्सीकासाधन और गुण ॥

घृतमें भूनीहुई मैदाको शक्कर समेत दूधमें छोंड़े और ओटनेसे गाढ़ेहोजानेपर लौंग और मिर्च

आदिक छोंड़े यह पकहिुई लप्सी कहलाती है लप्सी धातु और वीर्यबर्द्धक बलकारी बात पित्त नाशक स्निग्ध कफकारी भारी और रुचितथा तृप्तिकारीहोतीहै ॥ १० ॥

अथ रोटी ॥

शुष्कगोधूमचूर्णेन किञ्चित्पुष्टाञ्चपोलिकाम् । तप्तकेस्वेदयेत्कृत्वा भूर्य्यंगारेऽपितां पचेत् ॥ सिद्धैषारोटिकाप्रोक्ता गुणंतस्याःप्रचक्ष्महे । रोटिकाबलकृद्रुच्या बृंहणीधातुवर्द्धनी ॥ वातघ्नीकफकृद्रुच्यी दीप्ताग्नीनांप्रपूजिता ॥ ११ ॥

रोटीकासाधन और गुण ॥

सूखे गेहुओंके आटेकी रोटी बनाकर तवेपर सेंककर फिर अंगारोंपर सेंके इसको रोटिका (रोटी) कहतेहैं रोटी बलतथा रुचिकारक पोषक धातुबर्द्धक बात नाशक कफकारी भारी और दीप्ताग्नियोंको हितकारी होतीहै ॥ ११ ॥

अथ लीट्टी ॥

शुष्कगोधूमचूर्णंतु साम्बुगाढंविमर्द्दयेत् । विधायवटकाकारं निर्धूमेऽग्नौशनैःपचेत् ॥ अंगारकर्कटीह्येषाबृंहणीशुक्रलालघुः । दीपनीकफकृद्बल्यापीनसश्वासकासजित् १२॥

बाटीकासाधन और गुण

सूखे गेहुओं के आटेको जलसे कड़ा उसनकर बटिकाकार बाटी बनावे इनको निर्धूम अग्निमें धीरे २ पकावे इसको अंगार कर्कटी कहते हैं यह धातुबर्द्धक बीर्यबर्द्धक हलकी दीपन कफ कारक बलकारी और पीनस श्वास तथा खांसी नाशकहोतीहै ॥ १२ ॥

अथ यवरोटी ॥

यवजारोटिकारुच्यामधुराविशदालघुः । मलशुक्रानिलकरीबल्याहन्ति कफामयान् ॥ पीनसश्वासकासांश्च मेदोमेहगलामयान् ॥ १३ ॥

जौकीरोटीकेगुण ॥

जौकीरोटी रुचिकारी मधुर विशद हलकी मलवर्द्धक वीर्यकारक बादी बलिष्ठ और कफ रोग पीनस श्वास खांसी मेद प्रमेह तथा गलेके रोगोंकी नाशकहोतीहै ॥ १३ ॥

अथ माषरोटिका ॥

चूर्णीयच्छुष्कमाषाणां चमसीसाभिधीयते । चमसीरचितारोटी कथ्यतेवलभद्रिका ॥ रूक्षोष्णावातलाबल्या दीप्ताग्नीनांप्रपूजिता । माषानांदालयस्तोये स्थापितास्त्यक्तकञ्चुकाः ॥ आतपेशोषितायन्त्रे पिष्टास्ताधूमसीस्मृता । धूमसीरचिताचैव प्रोक्ताभर्भरिकाबुधैः ॥ भर्भरीकफपित्तघ्नी किञ्चिद्वातकरीस्मृता ॥ १४ ॥

उर्दकीरोटीकेगुण ॥

सूखे उर्दोंके आटेको चौंसी कहतेहैं चौंसीकी रोटीको बलभद्रिका कहतेहैं यह रूखी उष्ण बादी बलकारी और दीप्ताग्नियोंको हितहोतीहै उर्दोंकी दाल पानीमें भिगोकर छिलकेको निकालकरधूपमें सुखाके पीसीहुई धमसी कहलातीहै धूमसीकी रोटीको भर्भरिका कहतेहैं यह कफ पित्त नाशक और कुछबादी होतीहै ॥ १४ ॥

अथ चणकरोटिका ॥

चणक्यारोटिकारूक्षाश्लेष्मपित्तास्रनुद्गुरुः । विष्टम्भिनीनचक्षुष्यातद्वृणाचातिशुष्कली ॥ १५ ॥

चनेकी की रोटीके गुण ॥

चनेकी रोटी रूखी कफ तथा रक्त पित्त नाशक भारी विष्टंभी और नेत्रों कोअहित होती है तिल की रोटी में भी इसीके समान गुण होते हैं ॥ १५ ॥

अथ पिष्टिका ॥

दालिःसंस्थापितातोयेततोऽपहृतकञ्चुका । शिलायांसाधुसम्पिष्टापिष्टिकाकथिताबुधैः ॥ १६ ॥

पिट्ठी का लक्षण ॥

दाल को जल में भिजो कर छिल के निकाल के सिल पर पीसने से पिष्टिका कहलाती है ॥ १६ ॥

अथ बेढ़ई ॥

माषपिष्टिकयापूर्णं गर्भागोधूमचूर्णतः । रचितारोटिकासैव प्रोक्तावेढमिकाबुधैः ॥ भवेद्वेढ़मिकाबल्या वृष्यारुच्याऽनिलापहा । उष्मसन्तर्पणीगुर्वी बृंहणीशुक्रलापरम् ॥ भिन्नमूत्रमलास्तन्यमेदःपित्तकफप्रदा।गुदकीलार्दितःश्वासंपङ्क्तिशूलानिनाशयेत् १७॥

बेढ़ईके गुण ॥

उर्दकी पिट्टी से भरी हुई गेहूं की रोटीको वेष्टनिका कहतेहैं बेढ़ई बल कारक पुष्टता करने वाली रुचि कारीं बात नाशक उष्ण तृप्ति कारक भारी धातु वर्द्धक वीर्य वर्द्धक मल मूत्र को भिन्न करने वाली दुग्ध कारक मेद वर्द्धक कफ पित्तकारक और और गुदकील अर्दित श्वास तथा परिणाम शूल नाशक होती है ॥ १७ ॥

अथ पापर ॥

धूमसीरचिताहिङ्गुहरिद्रालवणैर्युताः । जीरकस्वार्जिकाभ्याञ्चतनूकृत्यचवेल्लिताः॥ पर्प्पटास्तेसदांङ्गारभृष्टाःपरमरोचकाः । दीपनाःपाचनारुक्षागुरवःकिञ्चिदीरिताः॥ मौद्गाश्चतद्वृणाःप्रोक्ताबिशेषाल्लघवोहिताः।चणकस्यगुणैर्युक्तःपर्प्पटाश्चणकोद्भवाःस्नेहभृष्टास्तुतेसर्वेभवेयुर्मध्यमागुणैः ॥ १८ ॥

पापड़ की विधि ॥

हींग हल्दी लौंग जीरा और सज्जी सहित धुआंस बहुत पतली करके वेली गई और अंगारोंपर भूनी गई इसको परपट कहते हैं पापड़ अत्यन्त रुचिकारी दीपन पाचन रूखे और कुछ भारीहोतेहैं मूंग के पापड बहुत हलके और इन्ही के समान गुण वाले होते हैं चने के पापड़ों में चनेके समानगुण होते हैं और सम्पूर्ण पापड घृतादि में भूनेहुये गुणों में मध्यम होते हैं ॥ १८ ॥

अथ पूरी ॥

माषाणांपिष्टिकांपूज्याल्लवणार्द्रकहिंगुभिः । तयापिष्टिकयापूर्णांस मिताकृतपोलिका ॥ ततस्तैलेनपक्कासापूरीकाकथिताबुधैः । रुच्यास्वाद्वीगुरुः स्निग्धाबल्या पित्तास्रदूषिका ॥ चक्षुस्तेजोहरीचोष्णापाकेवातविनाशिनी । तथैवघृतपक्कापिचक्षुष्या रक्तपित्तहृत् ॥ १९ ॥

पूरी के गुण ॥

मैदामें लौंग अदरक और हींग समेत उर्दकी पीठी को भरकर बेली गई फिर तेल में पकाई गई पूरिका कहलाती है पूरी रुचि कारक सुस्वादु भारी स्निग्ध बलवर्द्धक रक्त पित्त कारक पाक में उष्ण बात नाशक और दृष्टि कोहरने वाली होतीहैं घीकी पूरी रक्त पित्त नाशक नेत्रों कोहित और इसी के समान गुण वाली होती है ॥ १९ ॥ अथवरा ॥

माषाणांपिष्टिकायुक्तालवणार्द्रकहिङ्गुभिःकृत्वाविदध्याद्वटकास्तास्तैलेषुपचेच्छनैः॥ विशुष्कावटकाबल्यावृंहणावीर्य्यवर्द्धनी॥बातामयहरीरुच्याविशेषादर्दितापहा । विबन्ध भेदिनीश्लेष्मकारिणीऽत्यग्निपूजिता ॥ संचूर्ण्यनिक्षिपेत्तत्रकेभृष्टंजीरकहिङ्गुभिः । लवणं तत्रवटकान्सकलानापिमज्जयेत् ॥ शुक्लस्तत्रबटकोबलकृद्रोचनोगुरुः । बिबन्धहृद्दाहीचश्लेष्मलःपवनापहः ॥ राज्यक्तपातिनोवान्यानूपाचनांस्तांस्तुभक्षयेत् । राज्यक्ता राइताइतिलोके ॥ २० ॥ बड़ों की बिधि ॥

उर्दकी पिट्ठी में नोन अदरक और हींग मिलाकर बड़े बनावे और उनको तेलमें धीरे २ पकावे सूखे बड़े बलकारी धातु वर्द्धक वीर्य वर्द्धक बात रोग नाशक रुचिकारक अर्दित तथा बिबंध नाशक कफकारी और तीक्ष्ण अग्नि वालोंको हित होते हैं जीरा हींग और नोन को मट्ठे में मिलाकर उसमें बड़े भिजोवे यह बड़े वीर्य बर्द्धक बलतथा रुचिकारी भारी बिबन्धनाशक बिदाही कफकारी और बातनाशक होते हैं रायते के बड़े अत्यन्त रुचिकारी और पाचक होते हैं यह खानेचाहिये २० ॥

अथ काञ्जीवरा ॥

मन्थनीनूतनाधार्य्याकटुतैलेनलेपिता । निर्मलेनाम्बुनापूर्य्यतस्यांचूर्णंविनिःक्षिपेत्॥ राजिकाजीरलवणहिङ्गुशुण्ठीनिशाकृतम्।निःक्षिपेद्वटकांस्तत्रभाण्डस्यास्यञ्चमुद्रयेत्॥ ततोदिनंत्रयादूर्द्ध्वमम्लाःस्युर्वटकाध्रुवम्।काञ्जिकोबटकोरुच्योबातघ्नःश्लेष्मकारकः॥ शीतोदाहंशूलमजीर्णंहरतेदृगामयेष्वहितः ॥ २१ ॥

कांजीके बड़ोंकी विधि ॥

नवीन हांड़ीको कटु तेलसे लेपकर निर्म्मल जलसे भरे उसमें जीरा राई लौंग हींग सोंठ और हल्दी पीसकर छोंड़े और इसमें बड़ोंको भिगोकर पात्र के मुखको बन्दकरदे फिर तीनदिन के उपरान्त बड़े अवश्य खट्टे होजांयगे कांजीके बड़े रुचिकारक बात नाशक कफकारी और शूल अजीर्ण तथा दाह नाशक होते हैं यह नेत्र रोग में हित नहींहोते ॥ २१ ॥

ऊरी बड़ारा ॥

आम्लिकांस्वेदयित्वातुजलेनसहमर्दयेत् । तन्नीरेकृतसंस्कारेबटकान्मज्जयेज्जनः ॥ आम्लिकावटकास्तेतुरुच्यावह्निप्रदीपनाः । बटकस्यगुणैःपूर्वैरेषोऽपिचसमन्वितः २२॥

इमलीके बड़े ॥

इमली को जलमें भिगोकर मले और संस्कार युक्त उसी पानी में बड़ोंको भिगोवे इमली के बड़े रुचिकारी दीपन और कांजीके बड़ोंके समान गुणवाले होते हैं ॥ २२ ॥

अथ मूंगबरा ॥

मुद्गानांवटकास्तक्रेभर्जितालघवोहिमाः। संस्कारजप्रभावेनत्रिदोषशमनाहिताः २३ ॥

मूंगके बड़े ॥

मट्ठे के साथ पकाये हुए मूंगके बड़े हलके शीतल और संस्कार के प्रभाव से त्रिदोष नाशक तथा हितकारी होतेहैं ॥ २३ ॥ अथ माषबटी ॥

माषाणांपिष्टिकाहिङ्गुलवणार्द्रकसंस्कृताःतयाविरचितावस्त्रेवटिकाःसाधुशोषिताः ॥ भर्जितास्ततस्तैलैस्ताअथवाम्बुप्रयोगतः। बटकस्यगुणैर्युक्ताज्ञातव्यारुचिदाभृशम्२४॥

उर्दकी बाड़ियां ॥

हींग नोन और अदरक समेत उर्दकी पिट्ठीसे बड़ियां बनाकर बस्त्रपर अच्छेप्रकारसे सुखावे फिर उनको तेलमें भूनकर जलमें पकावे बड़ियोंमें बड़ोंकेही समान गुणहोते हैं और यह अत्यन्त रुचि कारक होती हैं ॥ २४ ॥ अथ कोहडौरी ॥

कूष्माण्डबटीज्ञेयापूर्वोक्तवाटिकागुणा। विशेषात्पित्तरक्तघ्नीलघ्वीचकथितावुधैः॥ २५ ॥

कुंभड़ौरीके गुण ॥

कुम्भड़ौरीमें बड़ियोंकेसमान गुणहोतेहैं और यह विशेषकरके हलकी तथा रक्तपित्तनाशक होतीहै २५

अथ मुद्गवटी ॥

मुद्गानांवटिकातद्वद्रचितासाधितातथा । पथ्यारुच्यातथालघ्वीमुद्गसूपगुणास्मृता२६॥

मूंगकी बड़ियां ॥

उर्दकी बड़ियोंके समान बनाईगई मूंगकी बड़ीहित पथ्य रुचिकारक हलकी और मूंगकी दालके समान गुणवाली होती हैं ॥ २६ ॥ क्षरिकवच्छ ॥

* माषपिष्टिकयालिप्तंनागवल्लीदलंमहत् । तत्तुसंस्वेदयेत्युक्त्यास्थाल्यामास्तार कोपरि ॥ ततोनिष्काश्यतंषण्ड्यंततस्तैलेनभर्जयेत् । षण्ड्यंषण्डेनयोग्यमितियावत् ॥ अलीकमत्स्यउक्तोऽयंप्रकारःपाकपण्डितैः । तंवृन्ताकभटित्रेणवास्तूकेनचभक्षयेत्२७॥

पानके सेंढेकी बिधि ॥

बड़े पानपर उर्दकी पिट्ठीको लपेटकर बटोहीमें कपड़ेपर रख युक्ति पूर्वकउवाले फिर निकालकर टुकड़े करके तेलमें भूने उसको पंडितलोग अलीकमत्स्य कहतेहैं इसको बैंगनके भर्त्ते और बथुई के सागकेसंगखाय ॥ २७ ॥ अथकटी ॥

स्थाल्यांघृतेवातैलेवाहरिद्राहिंगुभर्जयेत् । अवलेहनसंयुक्तंतक्रन्तत्रैवनिक्षिपेत्॥एषा सिद्धासमरीचाकथिताकथिताबुधैः।अवलेहनम् अरिहनइतिलोके।कथितापाचनीरुच्या लघ्वीवह्निप्रदीपनी॥कफानिलविबन्धघ्नीकिञ्चित्पित्तप्रकोपिणी।अलीकमत्स्याःशुष्कावा किंवाकथितयापुनः ॥ वृंहणारोचनावृष्यावल्यावातगदापहाः । कोष्ठशुद्धिकराःशुक्त्या किञ्चित्पित्तप्रकोपनाः ॥ अर्दितेसहनुस्तम्भेविशेषेणहिताः स्मृताः ॥ २८ ॥

कढ़ीकीविधि और गुण ॥

पात्रमें घृत अथवा तेल डालकर हल्दी और हींगको भूने फिर उसमें अरिहन वेसनआदि जिस चीजकीकढ़ी बनानीहो उससे मिलाहुआमट्ठा छोड़े और निमक मिर्च डालकर पकावे उसको कथिता कहतेहैं कढ़ी पाचक रुचिकारक हल्की दीपन कफवात नाशक विबंधनाशक और कुछ पित्तकाकोप करने वालीहोती है सेंढ़े सूखे अथवा कढ़ीमें भिगोयेहुए धातुवर्द्धक रुचिकारक वीर्य और बलवर्द्धक और बातनाशकहोतेहैं सूखे सेंढ़ेकोष्ठको शुद्ध करनेवाले और अर्दित तथा जावड़ोंके जकड़नेमें विशेष करके हितकारी होतेहैं और कुछ पित्तको कुपितकरते हैं ॥ २७ ॥

अथ अदवरा ॥

मुद्गपिष्टाविरचितान्वटांस्तैलेनपाचितान् । हस्तेनचूर्णयेत्सम्यक्तस्मिंश्चूर्णैर्विनिःक्षिपेत् ॥ भृष्टंहिङ्ग्वार्द्रकंसूक्ष्ममंमरीचंजीरकंतथा । निम्बूरसंजदानींचयुक्त्यासर्वंविमिश्रयेत् ॥ मुद्गपिष्ठंपचेत्सम्यक्स्थाल्यामास्तारकोपरि । तस्यास्तुगोलकंकुर्य्यात्तन्मध्ये पूरणंक्षिपेत् ॥ तैलेतान्गोलकान्पक्त्वाक्थितायांनिमज्जयेत् । गोलकाःपाचकाःप्रोक्तास्तेत्वार्द्रकवटाअपि ॥ मुद्गार्द्रकवटारुच्यालघवोबलकारकाः । दीपनास्तर्पणाःपथ्यास्त्रिषुदोषेषुपूजिताः ॥ २९ ॥

अदवरा मूंगकी डुबकी की विधि ॥

तेलमें पकेहुए मूंगके बड़ोंको चूर्ण करके उसमें भुनी हींग अदरक मिर्च जीरा नींबूकारस इलायची और अजवाइन मिलावे और मूंगकी पीठीको किसी पात्रमें रख अच्छी तरह पकाले उसके गोलेमें पूर्वोक्त मसाले समेतमूंगकेचूर्णको भरकरतेलमेंपकावे फिर इनगोलोंको कढ़ीमें भिगोवे इनकोआर्द्रक वड़ा कहते हैं यह रुचिकारक हलके बलकारी दीपन तृप्ति कारक पथ्य और त्रिदोषमें हितहोतेहैं २९॥

अथ पकोरी ॥

दालयश्चणकानान्तुनिस्तुषायन्त्रपेषिताः । तच्चूर्णंबेशनंप्रोक्तंपाकशास्त्रविशारदैः* ॥ वटिकावेशनस्यापिक्कथितायांनिभर्जिताः । रुच्याविष्टम्भजननीबल्यापुष्टिकरीस्मृता ॥ एवमन्येऽपिवेशनभवाःप्रकाराःषण्डनषण्डप्रभृतयोवोद्धव्याः ॥ ३० ॥

पकौड़ी की बिधि और गुण ॥

बिन छिलके की पिसीहुई चनेकी दालको बेसन कहतेहैं कढ़ीमें भिगोई हुई बेसनकी पकौडी रुचिकारक विष्टंभी वलवर्द्धक और पुष्टिकारक होतीहै इसी प्रकार और भी बेसनके बनेहुए खंड आदिक पदार्थ जानने चाहिये ॥ ३० ॥

अथ मांसस्यप्रकाराः तत्शुद्धमांसम्सुधवासुइतिलोके ॥

पाकपात्रेघृतंदद्यात्तैलञ्चतदभावतः । तत्रहिंगुहरिद्रांचभर्जयेत्तदनन्तरम् ॥ छागादेरस्थिरहितंमांसंतत्खण्डितंध्रुवम् । धौतंनिर्गालितंतस्मिन्घृतेतद्भर्जयेच्छनैः ॥ सिद्धयोग्यंजलंदत्वालवणन्तुपचेत्ततः । सिद्धजलेनसम्पिष्यवेशवारंपरिक्षिपेत् ॥ वेशवारःवैगर इतिलोके । द्रव्याणिवेशवारस्यनागबल्लीदलानिच । तण्डुलाश्चलवंगानिमरिचानिसमा

सतः ॥ अनेनविधिनासिद्धंशुद्धंमांसामितिस्मृतम् ॥ शुद्धमांसंपरंवृष्यंबल्यंरुच्यञ्चबृंहणम्। त्रिदोषशमकंश्रेष्ठंदीपनंधातुवर्द्धनम् ॥ ३१ ॥

मांस के प्रकार शुद्ध मांस (सुधवास) की बिधि और गुण ॥

पकाने केपात्र में घृत अथवा अभाव में तेलडाल करउसमें हींग और हल्दीको भूने फिर अस्थिर हितबकरे आदिके मांस को टुकड़े २ करके और धोके साफ कर उसी घृतमें धीरे२ भूने फिर उसमें परि पाक के अनुमान जल और निमक डाले पकजाने पर जल से पीसकर बेसवार (पान चावल लौंग और मिर्च यह संक्षेप बिधिहै) डाले इस प्रकार से बनेहुए मांस को शुद्ध मांस कहतेहैं यह अत्यन्त वीर्यवर्द्धक बलकारी रुचिकारक पोषक त्रिदोष नाशक दीपन और धातु वर्द्धक होताहै ॥ ३१ ॥

अथ सेहुडक। सहवासुइतिलोके ॥

छागादेर्मांसमूर्वादेःकुट्टितंखण्डितंपुनः। शुद्धमांसविधानेनपचेदेतत्सहद्रकम् ॥ सहद्रकंगुणैर्ग्रन्थेशुद्धमांसगुणैस्मृतम् ॥ ३२ ॥

सेहुड़क (सहवासु) की बिधि और गुण ॥

बकरे आदि की जंघा आदिकों का मांस कूटकरके काटा गया और शुद्ध मांस की बिधिसे पकाया हुआ सहद्रक कहाताहै इसमें शुद्ध मांस के समान गुण होते हैं ॥ ३२ ॥

अथ अखनी ॥

पाकपात्रेघृतंदत्वाहरिद्राहिङ्गुभर्जयेत्। छागादेसकलस्यापिखण्डान्यपिचभर्जयेत् ॥ सिद्धयोग्यंजलंदत्वापचेन्मृदुतरंयथा। जीरकादियुतेतक्रेमांसखण्डानितारयेत् ॥ तक्रमांसन्तुवातघ्नंलघुरुच्यंबलप्रदम्। कफघ्नोपित्तलःकिञ्चित्सर्वाहारस्यपाचनम् ॥ तक्रमांसम्अखनीइतिलोके ॥ ३३ ॥

अखनी की बिधि और गुण ॥

पकाने के पात्र में घृतडालकर हल्दी और हींग को भूने फिर उसी में बकरी आदिके मांस के टुकड़ों को भूने इसके उपरान्त परि पाक के अनुसार धीमी अग्निमें पकावे फिर जीरा आदि मसालोंसे युक्त मट्ठे में उन मांस के टुकड़ों को छोड़े इसको तक्रमांस कहते हैं यह बात नाशक हलका रुचिकारी बलिष्ठ कफनाशक कछु पित्त बर्द्धक और सम्पूर्ण भोजन के पदार्थों का पचाने वाला होता है ॥ ३३ ॥

अथआस ॥

पाकपात्रेतुबृहतीमांसखण्डानिनिःक्षिपेत्। पानीयप्रचुरंसर्पिःप्रभूतंहिंगुजीरकम् ॥ हरिद्रामार्द्रकंशुण्ठीलवणंमारिचानिच। तण्डुलांश्चापिगोधूमान्जम्बीराणांरसान्बहून् ॥ यथासर्वाणिवस्तूनिसुपक्वानिभवन्तिहि। तथापचेत्तुनिपुणोबहुमांसंक्षितिर्यथा ॥ एषाहरीसाबलकृत्वातापित्तापहागुरुः। शीतोष्णाशुक्रदास्निग्धासरासंधानकारिणी ॥ ३४ ॥

आसकी बिधि और गुण ॥

पकाने के बड़े पात्र में मांस के टुकडे डाले उसमें अधिक जल घी हींग जीरा हल्दी अदरक सोंठ निमक मिरच चांवल गेहूं और जंभीरी नींबूका रस यह सब बस्तु डाले इनसब बस्तुओं को अच्छे प्रकार से पकावे फिर जबमांड़ के समान होजाय तब उतारे इसको हरीसा कहते हैं हरीसा बलकारी

बात पित्त नाशक भारी शीतोष्ण वीर्य वर्द्धक स्निग्ध दस्तावर और टूटे हुये को जोड़ने वाली होती है ॥ ३४ ॥

अथ तलितमांसम् ॥

शुद्धमांसविधानेनमांसंसम्यक्प्रसाधितम्। पुनस्तदाज्येसम्भृष्टंतलितंप्रोच्यतेबुधैः॥ तलितंबलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवृद्धिकृत्। तर्पणंलघुमुस्निग्धरोचनंदृढ़ताकरम्॥३५॥

तले हुये मांस की विधि और गुण ॥

शुद्ध मांस की रीति से पके हुये मांस को फिर घीमें भूने यह तलित कहलाता है तला हुआमांस बल मेधा अग्नि मांस ओज तथा वीर्य वर्द्धक तृप्ति कारक हलका स्निग्ध रुचि कारी और पुष्टि-कारकहोता है ॥ ३५ ॥

अथ सींख ॥

कालखण्डादिमांसानिग्रन्थितानिशलाकया । घृतंसलवणंदत्वानिर्धूमेवह्नेपचेत् ॥ तत्तुशूल्यमिदंप्रोक्तंपाककर्मविचक्षणैः । शूल्यंपलंसुधातुल्यंरुच्यंवह्निकरंलघुः ॥ कफ बातहरंबल्यंकिञ्चित्पित्तकरंहितत् ॥ ३६ ॥

सींककी विधि और गुण ॥

बकरे आदिके यकृतआदिके मांसकोघी और निमक मिलाकर शलाकामें पोवे फिरधूम रहित अग्नि में पकावे इसको शूल्य कहतेहैं यह अमृतके तुल्य रुचिकारी अग्नि बर्द्धक हलका कफ वात नाशक और कुछ पित्त वर्द्धक होताहै ॥ ३६ ॥

मांस शृंगाटकम् ॥

शुद्धमांसंतनूकृत्यकर्त्तितंस्वेदितंजले। लवङ्गहिङ्गुलवणमरिचार्द्रकसंयुतम् ॥ एला जीरकधान्याकनिम्बूरससमन्वितम् । घृतेसुगन्धेतद्भृष्टंमांसंशृंगाटकोच्यते ॥ मांसंशृंगाटकंरुच्यंबृंहणंबलकृद्गुरु । बातपित्तहरंवृष्यंकफघ्नंवीर्य्यवर्द्धनम् ॥ ३७ ॥

मांस शृंगाट ककीविधि औरगुण ॥

शुद्धमांस के सूक्ष्म टुकड़े करके जलमें उबाले फिर लौंग हींग निमक मिर्च अदरक इलायची जीरा धनियां और नींबूके रसको मिलाके और सुगन्धित घृत में भूने यह पूरण कहलाता है मैदा के बनेहुए सिंघाड़े में पूरनभरके फिर घृत में भूननेसे मांस शृंगाटक कहलाता है यह रुचिकारक धातु बर्द्धक बलकारी भारी बात पित्त नाशक पुष्टिकारक कफघ्न और बीर्य बर्द्धक होता है ॥ ३७ ॥

अथ मांसरसा ॥

सिद्धमांसरसोरुच्यःश्रमश्वासक्षयापहः । प्रीणनोबातपित्तघ्नः क्षीणानामल्परेतसाम् ॥ विश्लिष्टभग्नसन्धीनांशुद्धानांशुद्धिकाङ्क्षिणाम् । स्मृत्योजोबलहीनानांज्वरक्षीणक्षतोरसाम् ॥ शस्यतेस्वरहीनानांदृष्ट्यायुःश्रवणार्थिनाम् प्रकाराःकथिताःसन्तिबहवोमांससम्भवाः ॥ ग्रन्थविस्तारभीतेस्तेमयानात्रप्रकीर्त्तिताः ॥ ३८ ॥

मांसके रसके गुण ॥

पकेहुए मांसका रस रुचिकारी प्रसन्नता कारक और श्रम श्वास क्षय बात तथा पित्त नाशक होता है यह क्षीण अल्पवीर्य वाले भग्नहुई संधिवाले बमनादिकों से शुद्ध अथवा शुद्धताके चाहने वाले स्मरण तथा ओज रहित निर्बल ज्वर से क्षीण उरक्षत रोगयुक्त स्वरहीन और दृष्टि श्रवण

शक्ति तथा आयुके चाहने वालोंको श्रेष्ठ होता है मांसके बहुत से प्रकार प्राचीन लोगोंने कहे हैं परन्तु ग्रन्थ के विस्तारके भयसे मैंने यहां नहीं लिखे हैं ॥ ३८ ॥

शाकपाक विधिः ॥

हिङ्गुजीरयुतेतैलेक्षिपेच्छाकंसुखण्डितम् । लवणंचाम्लचूर्णादिसिद्धेहिङ्गूदकंक्षिपेत् ॥ इत्येवंसर्वशाकानांसाधनोऽभिहितोविधिः ॥ ३९ ॥

शाक बनाने की विधि ॥

शाकको टुकड़े २ करके हींग और जीरा युक्त तेलमें छोड़े फिर पकजानेपर निमक अमचूर आदिक मसाले और हींग युक्तजल छोड़े यह संपूर्ण शाकोंके बनानेकी विधिकही गई है ॥ ३९ ॥

तत्र मण्ठकंमाठइतिलोके ॥

समितामर्द्दयेदन्यजलेनापिचसन्नयेत् । तस्यास्तुवटिकाकृत्वापचेत्सर्पिषिनीरसम् ॥ एलालवंगकर्पूरमरीचाद्यैरलंकृते । मज्जयित्वासितापाकेततस्तञ्चसमुद्धरेत् ॥ अयं प्रकारःसंसिद्धोमठइत्यभिधीयते । सन्नयेत्मर्द्दयेत् ॥ मठस्तुबृंहणोवृष्योबल्यःसुमधुरोगुरुः । पित्तानिलहरोरुच्योदीप्ताग्नीनांसुपूजितः ॥ समिताःशर्करासर्पिर्निर्मिताअपरेऽपिये । प्रकाराअमुनातुल्यास्तेऽपिचेत्तद्गुणाःस्मृताः ॥ ४० ॥

पक्कान्नबनाने के प्रकार मांठ (बालूसाई) की विधि और गुण ॥

पहले मैदाको घीसे मले फिर जलसे उसने उसको बटिका बनाकर बिनाजलके घृतमें पकावे फिर इलायची लौंग कपूर और मिर्च आदि मसालोंसे युक्त शक्करके पागमें भिगोकर निकाले इसको मंड (बालूसाई) कहते हैं यह धातु बर्द्धक वीर्य वर्द्धक बलकारी सुन्दर मधुर भारी बात पित्त नाशक रुचिकारक और दीप्ताग्नि पुरुषों कोहित होतेहैं मैदा शक्कर और घृतके द्वारा इसी प्रकार बनेहुए अन्य पदार्थों में भी इसी प्रकारके गुण होतेहैं ॥४०॥

अथ सम्पावपेराक ॥

पर्प्पट्यःसाज्यसमितानिर्मिताघृतभर्जिताः । कुट्टिताश्चालिताःशुद्धशर्कराभिर्विमर्द्दिताः ॥ तत्रचूर्णंक्षिपेदेलालवङ्गमरिचानिच । नालिकेरंसकर्पूरञ्चारबीजान्यनेकधा ॥ घृताक्तसमितापुष्टरोटिकारचितातताः । तस्यान्तःपूरणंतस्यकुर्य्यान्मुद्रांदृढांसुधीः ॥ सर्पिषिप्रचुरेतान्तुसुपचेन्निपुणोजनः । प्रकारज्ञैःप्रकारोऽयंसम्पावइतिकीर्त्तितम् ॥ ४१ ॥

पिरांक गूंझा की बिधि ॥

घृत युक्त मैदाकी रोटी को घीमें से के फिर उसको कूटकर छानले उसमें सफेद शक्कर मिला के इलायची लौंग मिर्च नारियलकीगिरी कपूर और चार दाना आदिक मसाले छोड़े फिर घृतयुक्त मैदा के पुष्टरोटबनावे उसमें पहले कहेहुए पूरको भरकर दृढतासे उसके मुखको बन्दकरके गोठन लगादे फिर बहुतसे घीमें उसको अच्छे प्रकार से पकावे इसको संपाव (गूंझा)कहते हैं इसमें माठके समान गुण होतेहैं ॥ ४१ ॥

अथ कर्पूरनालि ॥

घृताढ्यासमितयालम्बंकृत्वापुटंततः । लवङ्गोल्वणकर्पूरयुतयासितयाऽन्वितम् ॥
पचेदाज्येनसिद्धैषाज्ञेयाकर्पूरनालिका । सम्पाघसदृशीज्ञेयागुणैःकर्पूरनालिका ॥ ४२ ॥

कर्पूर नालिकी बिधि ॥

घृत युक्त मैदासे लंबा दोनासा बनाकर उसमें लौंग मिर्च और कर्पूर युक्त शक्कर भरकर घृतमें पकावे इसको कर्पूर नालिका कहतेहैं इसमें पिरांक के समान गुण होतेहैं ॥ ४२ ॥

फेनिका फेनी ॥

समितायाघृताढ्यायावर्त्तिंदीर्घांसमाचरेत् । तास्तुसन्निहितादीर्घाःपीठस्योपरिधारयेत् ॥ वेल्लयेद्वेल्लनेनैतायथैकापर्प्पटीभवेत् ।ततश्छुरिकयातान्तुसलग्नामेवकर्त्तयेत् ॥ ततस्तुवेल्लयेद्भूयःसट्टकेनचलेपयेत् । शालिचूर्णंघृतंतोयंमिश्रितंदशकंवदेत् ॥ ततः संवृत्यतल्लोप्त्रींविदधीतपृथक्पृथक् । पुनस्तांवेल्लयेल्लोप्त्रींयथास्यान्मण्डलाकृतिः॥ ततस्तांसुपचेदाज्येभवेयुश्चपुठाःस्पुटाः । सुगन्धयाशर्करयातदुद्वूलनमाचरेत् ॥ सिद्धैषाफेनिकानाम्नीमण्डकेनसमागुणैः । ततःकिञ्चिल्लघुरियंविशेषोऽयमुदाहृतः ॥ वेल्लयेत् प्रसारयेत्बेल्लनः बेलनइतिलोके ॥ पर्प्पटीरोटी । लोप्त्रींलोईइतिलोके ॥ ४३ ॥

फेनी की बिधि ॥

घृत युक्त मैदाकी लंबी बत्ती बनावे फिर उनको निकट रखकर बेलनसे बेले फिर एकरोटी सीबन जानेपर चक्कूसे मिलीहुई को चीरे इसके पीछे सट्टक) चावलों का आटा घी और जल (यह तीनों मिलेहुये सट्टक कहलातेहैं)को उस पर लेपकरके फिर उन चिरीहुई पट्टियोंको लपेटकर अलग२ करले और उनको मंडलाकार बनाके बेले और घीमें पकाले तब तार २ अलग होजायँगे इसको सुगन्धि युक्त शक्कर में लपेटे यह फेनिका कहलाती है इसमें मांठ (बालूसाई) के समान गुण होते हैं और विशेष करके कुछ हलकापन भी होताहै ॥ ४३ ॥

अथ शष्कुलीसोहाली इतिलोके ॥

समितायाघृताक्तायालोप्त्रींकृत्वाचवेल्लयेत् । आज्येतांभर्जयेत्सिद्धांशष्कुलीफेनिका गुणा॥४४॥

सुहालीकी बिधि ॥

घृतयुक्त मैदाकी लोईको बेलकरघीमें पकानेसे शष्कुली कहलाती है इसमें फेनीकेसमानगुण होतेहैं ४४

अथ सेवीकामोदकसेवकालाडू ॥

घृताढ्यासमितयाकृत्वासूत्राणितानितु। निपुणोभर्जयेदाज्येखण्डपाकेनयोजयेत् ॥ युक्तेनमोदकान्कुर्य्यात्तेगुणैर्मण्डकायथा ॥ ४५ ॥

सेवके लड्डुओंकी विधि ॥

घृत युक्त मैदाके सूत्रोंको घीमें पकाकर फिर खांड़के पाकमें लड्डूबनावे इन में मांठके समान गुण होते हैं ॥ ४५ ॥

अथ मुक्तामोदका मोतिलाडू ॥

मुद्गानांधूमसीसम्यक् घोलयेन्निर्मलाऽम्बुना । कटाहस्यघृतेरूर्द्धंझर्झरंस्थापयेत्ततः ॥ धूमसीन्तुद्रवीभूतां प्रक्षिपेत्झर्झरोपरि । पतंतिविंदवस्तस्मात्तान्सुपक्वान्समुद्धरेत् ॥ सितापाकेनसंयोज्य कुर्य्याद्धस्तेनमोदकान् ॥ झर्झरंझर्झराइतिलोके । लघुर्ग्राहीत्रिदोषघ्नः स्वादुःशीतोरुचिप्रदः ॥ चक्षुष्योज्वरहृद्बल्यस्तर्पणोमुद्गमोदकः ॥ ४६ ॥

मूंगके मोती चूरके लडू ॥

मूंगकी धुआंसको जल में घोलकर कढ़ाई के किनारे पर रक्खे हुए झरने में उसको छोड़े उससे बुंदें गिरतीहैं उनको पकाकर निकालले फिर शक्कर के पाक में उनके लडू बनाले मूंगके लडू हलके ग्राही त्रिदोषनाशक मधुरशीतल रुचिकारी नेत्रोंकोहित ज्वरघ्न बलकारी और तृप्तिकारक होते हैं४६ ॥

अथ सेवनमोदकः । सेवका लडुआ ॥

एवमेवप्रकारेण कार्य्याःसेवनमोदकाः । तेबल्यालघवःशीताःकिञ्चिद्वातकरास्तथा ॥ विष्टम्भिनोज्वरघ्नाश्च पित्तरक्तकफापहाः ॥ ४७ ॥

बेसन की बूंदीके लड्डू ॥

बेसनके लडूभी मूंगकेही लडुओंके समान करने चाहिये यह बलकारक हलके शीतल कुछ बादी विष्टंभी और ज्वर रक्त पित्त तथा कफनाशक होते हैं ॥ ४७ ॥

दुग्ध कूपिका ॥

तण्डुलचूर्णविमिश्रितनष्टक्षीरेणसान्द्रपिष्टेन । दृढ़कूपिकांविदध्यात्ताञ्चपचेत्सर्पिषा सम्यक् ॥ अथतांकोरितमध्यांघनंपयसापूर्णगर्भाञ्च । शष्टकमुद्रितवदनांसर्पिषिसपक्कवदनाञ्च ॥ अथपाण्डुखण्डपाकेस्नापयेत्कर्पूरवासितेकुशलः । अथदुग्धकूपीसाबल्यापित्तानिलापहा ॥ तृष्यासीतागुर्वीशुक्रकरीतृंहणीरुच्या । विदधातिकायपुष्टिंदृष्टिंदूरप्रसारिणींसुचिरम् ॥ ४८ ॥

दुग्ध कूपिका की विधि और गुण ॥

फटे दूध में चावल के आटे को मिलाके उसको अच्छेप्रकार से पीसले फिर उसकी दृढ़ कुप्पी बनाकर घीमें अच्छी तरह सेंकले इसके उपरान्त इसमें गाढ़ादूध भरके ऊपर कहेहुए फटेदूधमें पीसेहुए चावल के चूरेसे उसके मुखको बंद करके घीमें पकाले फिर उसे कपूर युक्त श्वेत शक्करकी चासनी में पागले उसको दुग्ध कूपिका कहते हैं यह बलकारक बात पित्त नाशक शीतल भारीवीर्य वर्द्धक तृप्ति तथा रुचिकारी शरीर को पुष्ट करने वाली और दृष्टि बर्द्धक होती है ॥ ४८ ॥

कुण्डलिनीजलेबी ॥

नूतनंघटमानीयतस्यान्तःकुशलोजनः । प्रस्थार्द्धपरिमाणेनदध्नाऽम्लेनप्रलेपयेत् ॥ द्विप्रस्थांसमितांतत्रदध्यम्लंप्रस्थसम्मितम् । घृतमर्द्धसरावञ्चघोलयित्वाघृतेक्षिपेत् ॥ आतपेस्थापयेत्तावद्यावद्यातितदम्लताम् । ततस्तत्प्रक्षिपेत्पात्रेसच्छिद्रेभाजनेतुतत् ॥ परिभ्राम्यपरिभ्राम्यतत्सन्तप्तेघृतेक्षिपेत् । पुनःपुनस्तदावृत्यावेदध्यान्मण्डलाकृतिम् ॥

तांसुपक्कांघृतान्नीत्वाासितापाकेतनुद्रवे । कर्पूरादिसुगन्धञ्चस्नापयित्वोद्धरेत्ततः ॥ एषा कुण्डलिनीनाम्नापुष्टिकान्तिबलप्रदा । धातुवृद्धिकरीवृष्यारुच्याचक्षिप्रतर्पणी॥ ४९ ॥

जलेबी की बिधि और गुण ॥

नवीन घटलाकर उसमें आधसेर खट्टे दहीका लेपकरे फिर दोसेर मैदा एकसेर खट्टादही और पावभर घी घोलकर उसमें छोडे यह छोडकर जबतक खट्टा नहोजाय तबतक धूपमें रक्खे फिर उसको छिद्रयुक्त पात्रमें लेकर तपेहुए घीमें बारम्बार घुमा २ कर मंडलाकार बनाकर पकजाने पर कर्पूरादिकोंसे सुगन्धित शक्कर की चासनी में डुबोवे इसको कुंडलिनी कहते हैं यह पुष्टिकारककान्तिबर्द्धक बलिष्ठ धातु तथा बीर्य बर्द्धक रुचिकारी और इन्द्रियोंको तृप्ति करनेवाली होतीहै ॥ ४९ ॥

अथ पञ्चात्परिवेश्याणि सिखरिणी ॥

आदौमाहिषमम्लमम्बुरहितंदध्याढकंशर्कराम् । शुभ्रांप्रस्थयुगोन्मितांशुचिपटेकिञ्चिच्चकिञ्चित्क्षिपेत् ॥ दुग्धेनार्द्धघटेनमृण्मयनवस्थाल्यांदृढंस्रावयेत् । एलावीजलवंगचन्द्रमरिचैर्योग्यैश्चतद्योजयेत् ॥ भीमेनप्रियभोजनेनरचितानाम्नारसालास्वयम् । श्रीकृष्णेनपुरापुनःपुनरियंप्रीत्यासमास्वादिता॥एषायेनवसन्तवर्जितदिनेसंसेव्यतेनित्यशः । तस्यस्यादतिवीर्य्यवृद्धिरनिशंसर्वेन्द्रियाणांबलम् ॥ ग्रीष्मेतथाशरदियेरविशोषिताङ्गाःयेचप्रमत्तवनितासुरतातिखिन्नाः । येचापिमार्गपरिसर्पणशीर्णगात्रास्तेषामियंवपुषि पोषणमाशुकुर्य्यात् ॥ रसालाशुक्रलाबल्यारोचिनीवातापित्तजित् दीपिनीबृंहणीस्निग्धामधुराशिशिरासरा । रक्तपित्तंतृषादाहप्रतिश्यायंविनाशयेत् ॥ ५० ॥

भोजन के पीछे परोसने की बस्तु । शिखरन की विधि और गुण ॥

पहले जलरहित भैंसके १६ सेर खट्टे दही और आठसेर शक्करको श्वेत वस्त्र में थोड़ी २ छोड़े फिर आधे घड़े दूध से नये मृत्तिकाके पात्र में छानलेवे और इसमें यथा योग्य इलायची लौंग कपूर और मिर्च डाले यह भोजन प्रिय भीमसेन से बनाई गई रसाला कहलाती है पूर्व्व कालमें श्री कृष्ण जीने प्रीति पूर्वक बारम्बार इसका स्वादु लियाथा जो मनुष्य बसन्त ऋतुको छोड़कर नित्य इसका सेवन करते हैं उनके अत्यन्त वीर्यकी वृद्धिऔर इन्द्रियों में बलहोता है जो मनुष्य ग्रीष्म तथा शरदऋतुकी धूपसे अत्यन्त संतप्त अथवा मदोन्मत्त स्त्रियोंके साथ भोग करने से अत्यन्त खिन्न और मार्गमें चलने से जिनके अंग शिथिल होगये हैं उनके शरीर में यह शिखरन अत्यन्त शीघ्र पुष्टता को करती है शिखरन वीर्य बर्द्धक बलकारी रुचिकारी बात पित्त नाशक दीपन धातु बर्द्धक स्निग्ध मधुर शीतल दस्तावर और रक्त पित्त तृषा दाहतथा पीनस नाशक होती है ॥ ५० ॥

शर्करोदकसरवत ॥

जलेनशीतलेनैवघोलिताशुभ्रशर्करा । एलालवंगकर्पूरमरिचैश्चसमन्विता ॥ शर्करोदकनाम्नातत्प्रसिद्धंविदुषांमुखे । शर्करोदकमाख्यातंशुक्रलंशिशिरंसरम् ॥ बल्यं रुच्यंलघुस्वादुवातपित्तप्रणाशनम् । मूर्च्छाछर्दितृषादाहज्वरशान्तिकरम्परम् ॥ ५१ ॥

सर्बत की विधि और गुण ॥

शीतल जलसे श्वेत शक्कर को घोलके इसमें इलायची लौंग कपूर और मिर्च मिलावे इसको

शर्करोदक कहते हैं सर्वत वीर्य बर्द्धक शीतल दस्तावर बलिष्ठ रुचिकारक हलका मधुर वातघ्न रक्त पित्त नाशक और मूर्च्छा छर्दि तृषा दाह तथा ज्वर के नाश करने में श्रेष्ठ होताहै ॥ ५१ ॥

अथ प्रपानकंपन्ना ॥

तत्रआम्रफलप्रपानकम्॥ आम्रमामंजलेस्विन्नंमर्द्दितंदृढ़पाणिना। सिताशीताम्बुसंयुक्तंकर्पूरमरिचान्वितम् ॥ प्रपानकमिदंश्रेष्ठंभीमसेननिर्मितम्। सद्योरुचिकरंबल्यंशीघ्रमिन्द्रियतर्पणम् ॥ ५२ ॥ पन्नाकीविधि ॥ आमकापन्ना ॥

कच्चे आमको पानीमें उबालकर हाथसे खूबमले फिर उसमें शक्कर शीतल जल कपूर और मिर्च मिलावे यह भीमसेनका बनायाहुआ पन्ना बहुत श्रेष्ठहोताहै आमका पन्ना शीघ्ररुचिकारक बलकारी और शीघ्र इन्द्रियों को तृप्त करने वालाहोताहै ॥ ५२ ॥

अथाम्लिकाफलपानकम् ॥

अम्लिकायाःफलंपक्वंमर्द्दितंवारिणादृढ़म्। शर्करामरिचैर्मिश्रंलवंगेन्दुसुवासितम्। अम्लिकाफलसम्भूतंपानकंवातनाशनम् । पित्तश्लेष्मकरंकिञ्चित् सुरुच्यं वह्निवोधनम् ॥ ५३ ॥ इम्लीकापन्ना ॥

पक्की इमलीको जलमें मलकर शक्कर मिर्च लौंग और कपूर मिलावे यह इम्लीका पन्ना बात नाशक कुछ कफ पित्त नाशक अत्यन्त रुचिकारी और दीपनहोताहै ॥ ५३ ॥

निम्बूक फल पानकम् ॥

भागैकंनिम्बुजंतोयंषड्भागंशर्करोदकम् । लवंगमरिचैर्मिश्रंपानंपानकमुत्तमम् ॥ निम्बूफलभवंपानमत्यम्लंवातनाशनम्। वन्हिदीप्तिकरंरुच्यंसमस्ताहारपाचकम् ५४॥

नींबूकापन्ना ॥

एकभाग नींबूकारस और छः भाग सर्व्वत मिलाकर लौंग और मिर्च छोड़े नींबूका पन्ना बहुत खट्टा बात नाशक दीपन रुचिकारक और संपूर्ण आहारका पचानेवाला होता है ॥ ५४ ॥

धान्याकपानकं ॥

शिलायांसाधुसम्पिष्टंधान्याकंबस्त्रगालितम्। शर्करोदकसंयुक्तंकर्पूरादिसुसंस्कृतम्॥ नूतनेम्मृण्मयेपात्रेस्थितंपित्तहरंपरम् ॥ ५५ ॥

धनियेकापन्ना ॥

शिलपर अच्छे प्रकार से धनियेको पीसकर सर्वत मिलाके बस्त्रमें छाने फिर कपूर आदिक सुगन्धित बस्तु मिलाके मृत्तिका के नवीन पात्रमेंरक्खे यहपन्ना पित्तका अत्यन्त नाशकहोताहै॥५५॥

अथ काञ्जी ॥

काञ्जीविधिर्बटकावसरेलिखितःकाञ्जीकंरोचनंरुच्यंपाचनंवह्निदीपनम् । शूलजीर्ण विबन्धघ्नंकोष्ठशुद्धिकरंपरम्॥ नभवेत्काञ्जिकंयत्रतत्रजालिःप्रदीयते ॥ ५६ ॥

कांजीके गुण ॥

कांजी बनानेकी बिधि बड़ोंके साथमें लिखी गई है कांजी रुचियुक्त और अन्यवस्तुमें भी रुचि का

रक पाचक दीपन कोष्ठ शोधक और शूल अजीर्ण तथा विवन्ध नाशक होतीहै जहांकांजी न मिले वहां जालिका व्यवहार करतेहैं ॥ ५६ ॥

अथ जारी ॥

आममाम्रफलंपिष्ट्वराजिकालवणान्वितम्। भृष्टहिंगुयुतंपूतंघोलितंजालिरुच्यते ॥ जालिर्हरतिजिह्वायाःकुण्ठत्वंकण्ठशोधनी।मन्दमन्दन्तुपीतासारोचिनीवह्निबोधिनी५७॥

जालिकी बिधि ॥

कच्चे आमको पीसकर उसमें राई नोन और भूनी हींग मिलाकर घोले इसको जालिकहते हैं यह जिह्वाकी खुजलीको नाशक कंठशोधक और थोड़ी२ पीनेसे रुचिकारी तथा दीपनहोतीहै ॥५७॥

अथ तक्रं ॥

तूर्य्यांशेनजलेनसंयुतमतिस्थूलंसदम्लंदधि। प्रायोमाहिषमम्बुकेनविमलेमृद्भाजने मालयेत् ॥ भृष्टंहिंगुचजीरकञ्चलवणंराजीञ्चकिञ्चिन्मिताम्। पिष्टान्तत्रविमिश्रयेद्भवति तत्तक्रंनकस्यप्रियम् ॥ तक्रंरुचिकरंवह्निदीपनंपाचनंपरम् । उदरेयेगदास्तेषांनाशनं तृप्तिकारकम् ॥ ५८ ॥ मट्ठेकोविधि और गुण ॥

चौथाई जलसे युक्त बहुत गाढ़े भैंसकेखट्टे दहीको निर्मल मृत्तिकाके पात्रमें मथकर भुनीहींग जीरा नोन और राई पीसकर मिलावे यह मट्ठा सबको प्रियहोताहै मट्ठा रुचिकारक दीपन अत्यन्त पाचक तृप्तिकारक और उदरके संपूर्ण रोगोंका नाशकहोताहै ॥ ५८ ॥

अथ दुग्धम् ॥

विदाहीन्यन्नपानानियानिभुंक्तेहिमानवः । तद्विदाहप्रशान्त्यर्थंभोजनान्तेपयःपिबेत् ॥ दुग्धस्यापरेगुणाउक्ताएवदुग्धवर्गे ॥ ५९ ॥

दूध ॥

मनुष्य जिन दाहकारी बस्तुओंको भोजन करताहै उनके दाहके शान्त करनेको भोजनके अन्तमें दूध पीनाचाहिये दूधके और सबगुण दुग्ध वर्गमें कहेगयेहैं ॥ ५९ ॥

अथ शक्तवः ॥

धान्यानिभ्राष्ट्रभृष्टानियन्त्रपिष्टानिशक्तवः६० (तत्रयवशक्तवः) यवजाःशक्तवःशीता दीपनालघवःसराः। कफापित्तहरारूक्षालेखनाश्चप्रकीर्त्तिताः ॥तेपीताबलदावृष्यावृंहणा भेदनास्तथा। तर्पणामधुरारुच्याःपरिणामेबलापहाः ॥ कफपित्तश्रमक्षुत्तृट्वृद्धिनेत्राम यापहाः। प्रशस्ताघर्मदाहाढ्यव्यायामार्त्तशरीरिणाम् ॥ ६१ ॥

सत्तुओंकी बिधि ॥

भाड़में भुनेहुए और पिसेहुए धान्यको सक्तुकहते हैं ६० (जौंकेसत्तू) जौके सत्तू शीतल दीपन हलके दस्तावर कफ पित्त नाशक रूखे और लेखनहोतेहैं पान किएहुये सत्तू बलकारी वीर्य तथा धातु बर्द्धक दस्तावर तृप्तिकारक मधुर रुचिकारी परिणाममें बलकारक और कफ पित्त श्रम क्षुधा तृषा घाव तथा नेत्र रोग नाशकहोतेहैं यह धूप दाह मार्ग तथा व्यायाम सें पीड़ित शरीर वालों को उपकारी होतेहैं ॥ ६१ ॥

चणकयव शक्तवः ॥

निस्तुषैश्चणकैर्भृष्टैस्तुल्यांशैश्चयवैःकृताःशक्तवःशर्करासर्पिर्युक्ताग्रीष्मेतिपूजिता६२

जौचने के सत्तू ॥

बिनाछिलके के भूने हुये चने और सम भाग जौके सत्तू घीशक्करसे मिले हुये ग्रीष्म ऋतु में अत्यन्त उपकारी होते हैं ॥ ६२ ॥

शालिशक्तवः ॥

शक्तवःशालिसम्भूतावह्निदालघवोहिमाः । मधुराग्राहिणीरुच्यापथ्याश्चबलशुक्रदाः ॥ नभुक्त्वानरदैश्छित्त्वाननिशायांनवाबहून् । नजलान्तरितानतद्विशक्तूनाद्यान्नकेवलान् ॥पृथक्पानंपुनर्द्यानंआमिषंपयसानिशि । दन्तच्छेदनमुष्णञ्चसप्तशक्तुषुवर्जयेत्६३

चावल के सत्तू ॥

चावलके सत्तू दीपन हलके शीतल मधुर ग्राही रुचिकारक पथ्यऔर बलबीर्य दायक होते हैं भोजनके अन्त में दांतों से चबाकर रात्रि के समय बहुत जल रहित अथवा केवल जल से सत्तू न खाय सत्तुओं के साथ अलग जल न पिये एक बारसत्तू खाकर फिर दिये हुये सत्तू न खाय मांस सहित दुग्धयुक्त रात्रि के समय दांतों से काटकर और उष्ण सत्तू वर्जित हैं ॥ ६३ ॥

अथ बहुरी ॥

यवास्तुनिस्तुषाभृष्टाःस्मृताधानाइतिस्त्रियां । धानाःस्युर्दुर्जरारूक्षास्तृट्प्रदागुरवश्चताः॥ तथामेहकफच्छर्दिनाशिन्यःसम्प्रकीर्तिताः ॥ ६४ ॥

बौहरी की बिधि और गुण ॥

भूसी रहित भुने हुये जवों को बौहरी कहते हैं बौहरी कठिनता से पचने वाली रूखी तृषा नाशक भारी और प्रमेह कफ तथा छर्दि नाशक होतीहै ॥ ६४ ॥

अथ लाजा ॥

येषांस्युस्तण्डुलास्तानिधान्यानिसतुषाणिच । भृष्टानिस्फुटितान्याहुर्लाजानीतिमनीषिणः ॥ लाजाःस्युर्मधुराःशीतालघवोदीपनाश्चते । स्वल्पमूत्रमलारूक्षाबल्यापित्तकफच्छिदः॥ छर्यतीसारदाहास्त्रमेहमेदस्तृषापहाः ॥ ६५ ॥

खीलों की बिधि और गुण ॥

जिन धान्योंसे चावल निकलते हैं उनको भूसी समेत भूनने पर फूल कर जो बस्तु तैयार होतीहै उसे लाजा (खील) कहते हैं खील मधुर शीतल हलकी दीपन स्वल्पमल मूत्र कारी रूखी बलकारी और पित्त कफ छर्दि अतीसार दाह रक्त दोष प्रमेह मेद तथा तृषा नाशक होती है ॥ ६५ ॥

अथ चिड़वा ॥

शालयःसतुषाआर्द्राभृष्टाअस्फुटिताश्चतत् । कुट्टिताश्चिपिटाःप्रोक्तास्तेस्मृताःपृथुकाअपि ॥ पृथुकागुरवोवातनाशनाःश्लेष्मलाअपि । सक्षीरावृंहणाबृष्यबल्याभिन्नमलाश्चते ॥ ६६ ॥

चिड़ों की बिधि और गुण ॥

छिलके सहित भिगोये हुये धान्य भूने गये और बिना खिले हुये कूटे गये चिपिट और पृथुक (चिड़वे) कहलाते हैं चिड़वे भारी बात नाशक और कफकारी होते हैं दूध सहित चिड़वे धातु तथा वीर्यवर्द्धक बलकारी और मल भेदक होते हैं ॥ ६६ ॥

अथ होरहा ॥

अर्द्धपक्वैःशमीधान्यैस्तृगाभृष्टैश्चहोलकः । होलकोऽल्पानिलोमेदःकफदोषत्रयापहः॥ भवेद्योहोलकांयस्यसचतत्तद्गुणोभवेत् ॥ ६७ ॥

होलोंकी बिधि और गुण ॥

आधे पके हुए चने आदिक शमी धान्य तृण से भूने हुए होलक (होले) कहलाते हैं होले कुछ वादी और मेद कफ तथा त्रिदोष नाशक होते हैं जिस शमीधान्य का होला होता है उसी के समान गुण होता है ॥ ६७ ॥

अथ ऊंबी ॥

मञ्जरीत्वर्द्धपक्वाया यवगोधूमयोर्भवेत् । तृणानलेनसंभृष्टा बुधैरूवीतिसास्मृता ॥ (उमियाइतिलोके) ऊवीकफप्रदाबल्यालघ्वीपित्तानिलापहा ॥ ६८ ॥

ऊंबीकी बिधि और गुण ॥

जौ और गेहूं की आधी पकी हुई बाली तृण की अग्नि से भूनी हुई ऊंबी कहाती है यह ऊंबीकफवर्द्धक बलकारी हलकी और बात पित्त नाशक होती है ॥ ६८ ॥

अथ घुघुरी ॥

अर्द्धस्विन्नास्तुगोधूमाअन्येऽपिचणकादयः । कुल्माषाइतिकथ्यन्तेशब्दशास्त्रेषुपण्डितैः ॥ कुल्माषागुरवोरूक्षावातलाभिन्नवर्चसः ॥ ६९ ॥

घुघुरी की बिधि और गुण ॥

आधे भीगे हुये गेहूं तथा चने आदिक अनाज को कुल्माष (घुघुरी) कहते हैं घुघुरी भारी रूखी वादी और मलभेदक होतीहै ॥ ६९ ॥

अथ तिलकुट ॥

पललन्तुसमाख्यातंसैक्षवन्तिलपिष्टकम् । पललंमलकृद्वृष्यंवातघ्नंकफपित्तकृत् ॥ बृंहणञ्चगुरुस्निग्धंमूत्राधिक्यनिवर्त्तकम् ॥ ७० ॥

तिलकुटकी बिधि और गुण ॥

गुड़ आदिकों से युक्त कुटे हुये तिलोंको पालल (तिलकुट) कहते हैं पालल मल वर्द्धक वीर्यकारक बातघ्न कफ पित्तकारी धातुवर्द्धक भारी स्निग्ध और मूत्रको स्वल्प करनेवाला होता है ॥ ७० ॥

अथ पीना ॥

तिलकिट्टन्तुपिन्याकंस्तथातिलखलिःस्मृता।पिण्याकोलेखनोरूक्षोविष्टंभीदृष्टिदूषणः ७१

खलीके गुण ॥

तिलके फोकको पिण्याक और तिलखलि बोलते हैं खली लेखन रूखी विष्टंभी और दृष्टिदूषक होतीहै ॥ ७१ ॥

अथ चाउर ॥

तण्डुलोमेहजन्तुघ्नःसनवस्त्वतिदुर्जरः ॥ ७२ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेकृतान्नवर्गः ॥

चावलों के गुण ॥

चावल प्रमेह तथा कृमिनाशक और नये चावल अत्यन्त कठिनतासे पचनेवालेहोतेहैं ॥ ७२ ॥

इतिश्री भावप्रकाशस्य भाषानुवादे कृतान्नवर्गः समाप्तः ॥

अथ वारिवर्गः । तत्रपानीयनामानिगुणाश्च ॥

पानीयंसलिलंनीरंकीलालञ्जलमम्बुच ।आपोवार्व्वारिकन्तोयंपयःपाथस्तथोदकम्॥ जीवनंवनमम्भोऽर्णोऽमृतंघनरसोऽपिच । पानीयंश्रमनाशनंक्लमहरंमूर्च्छापिपासापहं तन्द्राछर्दिविबन्धहृद्बलकरंनिद्राहरंतर्पणम् । हृद्यंगुप्तरसंह्यजीर्णशमकंनित्यंहितंशीतलं लघ्वच्छंरसकारणंतुनिगतेपीयूषवज्जीविनाम् ॥ १ ॥

अथ वारिवर्गः ॥ पानीके नाम गुण ॥

पानीय सलिल नीर कीलाल जल अम्बु अप वारि बार तोय पयस पाथ उदक जीवन वन अम्भ अर्ण अमृत और घनरस यहपानी के नाम हैं पानी भ्रम ग्लानि मूर्च्छा तृषा तन्द्रा छर्दि विबन्धत था निद्रा नाशक बलवर्द्धक तृप्तिकारी हृदयको हित अप्रकटरस अजीर्ण नाशक सदैव हित शीतल-हलका रसोंकाकारण और प्राणियोंको अमृतके समान होताहै ॥ १ ॥

तस्यभेदाः ॥

पानीयंमुनिभिःप्रोक्तंदिव्यंभौममितिद्विधा ॥ दिव्यंचतुर्विधंप्रोक्तंधाराजंकरकाभवम्॥ तौषारञ्चतथाहैमन्तेषुधारंगुणाधिकम् ॥ २ ॥

पानीके भेद ॥

मुनि लोगोंने दिव्य और भौम दोप्रकारका जल कहाहै इसमें से दिव्य जल चारप्रकारकाहै धाराका ओलोंका ओसका और बरफका ॥ २ ॥

तत्रधारस्यलक्षणं गुणाश्च ॥

धाराभिःपतितंतोयंगृहीतंस्फीतवाससा । शिलायांवासुधायांवाधौतायांपतितञ्चतत् ॥ सौवर्णैराजतेताम्रेस्फाटिकेकाचनिर्मिते । भाजनेमृण्मयेवापिस्थापितंधारमुच्यते ॥ धारं नीरंत्रिदोषघ्नमनिर्देश्यरसंलघु । सौम्यंरसायनंबल्यंतर्पणंह्लादिजीवनम् ॥ पाचनंमतिकृन्मूर्च्छातन्द्रादाहश्रमक्लमान् । तृष्णांहरतिनात्यर्थंविशेषात्प्रावृषिस्थितम् ॥ ३ ॥

धारा के जलके लक्षण और गुण ॥

धाराओंसे गिराहुआ सुन्दर वस्त्र शिला तथा पृथ्वीमें पड़ाहुआ सुवर्ण चाँदी तांबा स्फटिक काच अवथा मृत्तिका के पात्रमें रक्खागया धाराकाजल कहलाता है धाराकाजल त्रिदोष नाशक गुप्तरस हलका सौम्य रसायन बलकारी तृप्तिकारक आनन्ददायक जीवनरूप पाचक बुद्धिवर्द्धक और मूर्च्छा तन्द्रा दाह श्राम ग्लानि तथा तृषानाशक होताहै यह वर्षा ऋतुमें बिशेष हितकारी होता है ॥ ३ ॥

अथ धाराजलस्यभेदाः ॥

धाराजलञ्चद्विविधंगंगासामुद्रभेदतः ४ (तत्रगंगासामुद्रयोर्लक्षणंगुणाश्च) आकाशगंगासम्बन्धिजलमादायदिग्गजाः ॥ मेघैरन्तरितावृष्टिंकुर्वन्तीतिवचःसताम्॥ गांगमाश्वयुजेमासिप्रायोवर्षतिवारिदः । सर्वथातज्जलन्देयं तथैवचरकेवचः ॥ स्था पितंहैमजेपात्रेराजतेमृण्मयेऽपिवा । शाल्यन्नंयेनसंसिक्तंभवेदक्लेदिवर्णवत् ॥ तद्गांगं सर्वदोषघ्नंज्ञेयंसामुद्रमन्यथा । तत्तुसक्षारलवणंशुक्रदृष्टिबलापहम् ॥ विस्रञ्चदोषलन्ती क्ष्णंसर्वकर्मसमाहितम् । सामुद्रन्त्वाश्विनेमासिगुणैर्गांगवदादिशेत् ॥ यतोऽगस्त्यस्यदि ट्यर्षेरुदयात्सकलंजलम्।निर्मलंनिर्विषंस्वादुशुक्रलंस्याददोषलम्॥ अतएवाह। फूत्का रविषवातेननागानांव्योमचारिणाम् । वर्षासुसविषंतोयंदिव्यमय्याश्विनंविना ॥ ५ ॥

धाराके जलके भेद ॥

गंगा और समुद्रके भेदसे धाराकाजल दोप्रकारका होताहै ४(गंगा और समुद्रके जलके लक्षण और गुण)दिग्गज आकाशगंगाके जलको लेकर मेघोंसे छिपेहुये बरसातेहैं यह सज्जनोंकाबचनहै प्रायः आ-श्विन मास में मेघ गंगाका जल बरसाते हैं यह जल सदैव देना सबको उचितहै क्योंकि चरकमेंभी ऐसाही बचनहै सुबर्ण चांदी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें रक्खे हुये चांवल जिस बर्षा के जलसे भिगोये हुये गीले अथवा रूपान्तर नहों उसको गंगाका जल कहते हैं यह संपूर्ण दोषों का नाशक हो-ताहै इससे बिपरीत होय तो समुद्र का जल जानना चाहिये समुद्र का जल खारी निमकीन वीर्य नाशक दृष्टि को हानि करने वाला दुर्गन्धियुक्त दोषकारी और तीक्ष्ण होता है यह सब कार्यों में अहितहै समुद्र का जल आश्विन मासमें गंगाजल के समान गुणकारी होता है क्योंकि महर्षि अगस्त जीके उदय से संपूर्ण जल निर्मल बिष रहित स्वादिष्ट बीर्यबर्द्धक और दोष रहित होता है ग्रंथान्तर में कहाहुआहै कि आकाश में घूमने वाले सर्पोंके फूत्कार के द्वारा विष युक्त बायु के स्पर्श से गिरा हुआ बर्षाका संपूर्ण जल आश्विन मासको छोडकर बिष युक्त होता है ५ ॥

अथानार्त्तवाणांगुणाः ॥

अनार्त्तवंप्रमुञ्चन्तिवारिवारिधरास्तुयत् । तत्त्रिदोषायसर्वेषांदेहिनांपरिकीर्त्तितम् ॥ अनार्त्तवम्पौषादिमासचतुष्टयविषयम् ॥ ६ ॥

विनाऋतुके जल के गुण ॥

मेघ अकाल [पूषादिक चारमहीने] में जो जल बरसाते हैं वह संपूर्ण प्राणियों को त्रिदोष कारीहोता है ॥ ६ ॥

अथकरकाजलस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

दिव्यवाय्वग्निसंयोगात्संहताःखात्पतन्तियाः । पाषाणखण्डवच्चापस्ताः कारिक्यो ऽमृतोपमाः ॥ करकाजञ्चलंरूक्षंविशदंगुरुचास्थिरम् । दारुणंशीतलंसान्द्रंपित्तहृत्कफ वातकृत् ॥ ७ ॥

ओलोंके जलका लक्षण और गुण ॥

दिव्य बायु और अग्निके संयोग से इकट्ठाहुआ पाषाणके खंडों के समान जो जल आकाश से

गिरताहै उसको करका कहते हैं यह अमृत समान होता है ओलोंका जल रूखी विशद भारी स्थिर अत्यन्त शीतल कठिन पित्तनाशक और कफवात बर्द्धक होताहै ॥ ७ ॥

तौषारलक्षणंगुणाश्च ॥

अपिनद्याःसमुद्रान्तेवह्निरापस्तदुद्भवाः । धूमावयवनिर्मुक्तास्तुषारास्त्र्यास्तुताःस्मृताः ॥ अपिनद्याःसमुद्रान्तेवह्निर्नदीमारभ्यसमुद्रपर्य्यन्तेवह्निरास्तेतदुद्भवाः । वह्निभवाधूमावयवनिर्मुक्ताःधूमांशरहिताः । आपस्तुषारास्त्र्याः । तुषइति लोके । तुषार इति च । अपथ्याःप्राणिनांप्रायः भूरुहांणान्तुनाहिताः ॥ तुषाराम्बुहिमंरूक्षं स्याद्वातलमपित्तलम् । कफोरुस्तम्भकण्ठाग्नि मेहगण्डादिरोगनुत् ॥ ८ ॥

पालेके जलके लक्षण और गुण ॥

नदियों से समुद्र पर्य्यन्त जलों में रहने वाली अग्नि से उत्पन्न हुये धुयें के अंशसे रहित भाफ के समान उड़कर गिरेहुए जल को तुषार कहते हैं यह प्रायः प्राणियों को अहित और वृक्षोंको हित कारी होताहै पाले का जल शीतल रूखा बादी पित्त का नं बढ़ानेवाला और कफ उरुस्तंभ कंठरोग मंदाग्नि प्रमेह तथा गलगंड आदि रोगोंका नाशक होताहै ॥ ८ ॥

अथ हिमजलस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

हिमवच्छिखरादिभ्यो द्रवीभूयाभिवर्षति । यत्तदेवंहिमंहैमं जलमाहुर्मनीषिणः ॥ हिमाम्बुशीतंपित्तघ्नं गुरुवातविवर्द्धनम् । हैमंजलम् । कुहेसजलम् । अन्येतु । और्वानल धूमेरितमम्बुसमुद्रस्य यत्घनीभूतम् । पवनानीतमुदीच्यान्तद्धिममिति कथ्यतेसद्भिः । हिमंकुहेसइतिलोके । हिमन्तुशीतलंरूक्षं दारुणंसूक्ष्ममित्यपि । नतद्दूषयतेवातंनचपित्तंनवाकफम् ॥ ९ ॥

बरफके जलके लक्षण और गुण ॥

हिमालयके शिखरआदि स्थानोंसे द्रवीभूत होकर जो जल गिरताहै उसको हिम अथवा हैम जल कहतेहैं यह शीतल पित्तनाशक भारी और बादी होता है और कहतेहैं कि बडवानलके धुयेंके द्वारा प्रेरित होकर घना हुआ समुद्रका जल बायुसे उत्तर दिशामें लायागया हिम कहलाताहै हिम शीतल रूखा बहुत सूक्ष्म और बात पित्त तथा कफ का नहीं दूषित करने वाला होता है ॥ ९ ॥

भौमंजलंतद्भेदाश्च ॥

भौममम्भोनिगदितंप्रथमंत्रिविधंबुधैः । जांगलंपरमानूपंततःसाधारणंक्रमात् ॥ १० ॥

भूमिका जल और उसके भेद ॥

पंडित लोग जांगल आनूप और साधारण यह तीन प्रकार का भौम जलबर्णन करते हैं ॥ १० ॥

तेषांलक्षणानि गुणाश्च ॥

अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्च पित्तरक्तामयान्वितः । ज्ञातव्योजांगलोदेशस्तत्रत्यञ्जांगलं जलम् ॥ बह्वम्बुर्बहुवृक्षश्च वातश्लेष्मामयान्वितः । देशोऽनूपइतिख्यात आनूपंतद्भवं जलम् ॥ मिश्रचिह्नस्तुयोदेशः सहिसाधारणःस्मृतः । तस्मिन्देशेयदुदकं तत्तुसाधारणं

स्मृतम् ॥ जांगलंसलिलंरूक्षं लवणंलघुपित्तनुत् । वह्निकृत्कफकृत्पथ्यं विकारान्हरते बहून् ॥ आनूपंवार्य्यभिष्यन्दिस्वादुस्निग्धंघनंगुरु । वह्निकृत्कफकृत्हृद्यंविकारानूहरतेबहून् ॥ साधारणन्तुमधुरंदीपनंशीतलंलघु । तर्पणंरोचनंतृष्णांदाहदोषत्रयप्रणुत् ११

इनके लक्षण और गुण ॥

जिसदेश में थोड़ाजल थोडे वृक्ष और रक्तपित्त का कोपहो उसको जांगल कहते हैं और वहां के जल को जांगल जल कहते हैं जिस देश में बहुत जल बहुत वृक्ष और कफ बातके रोगहों उसको अनूप कहते हैं और वहां के जल को आनूपकहते हैं जिसदेशमें इनदोनोंके लक्षण मिलतेहों उसको साधारण और वहां के जलको साधारण जल कहते हैं जांगल जल रूखा नमकीन हलका पित्तघ्न अग्नि बर्द्धक कफकारी पथ्य और बहुत बिकारों का नाशक होता है आनूप जल अभिष्यन्दी मधुर स्निग्ध गाढ़ा भारी अग्नि बर्द्धक कफ कारी हृदय को हित और बहुत से रोगों का नाशक होता है साधारण जल मधुर दीपन शीतल हलका पित्त और रुचिकारक और दाहतृषा तथा त्रिदोष नाशक होता है ॥ ११ ॥

अथ भौमानामेवनादेयादीनां लक्षणानिगुणाश्च ॥
तत्रनादेयस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

नद्यानदस्यवानीरंनादेयमितिकीर्तितम् । नादेयमुदकंरूक्षंवातलंलघुदीपनम् ॥ अनभिष्यन्दिविशदंकटुकंकफपित्तनुत् । नद्यःशीघ्रवहाःलघ्व्यःसर्वायाश्चामलोदकाः ॥ गुर्व्यःशैवलसञ्छन्नामन्दगाःकलुषाश्चयाः । हिमवत्प्रभवाःपथ्योनद्योऽश्माहतपाथसः ॥ गंगाशतद्रूसरयूयमुनाद्यागुणोत्तमाः । सह्यशैलभवानद्योवेणागोदावरीमुखाः ॥ कुर्वन्ति प्रायशःकुष्ठमीषद्वातकफावहाः ॥ नदीसरस्तड़ागस्थेकूपप्रस्रवणादिजे । उदकेदेशभेदेन गुणानदोषांश्चलक्षयेत् ॥ १२ ॥

भूमिसंबंधी नदीआदिके जलोंके लक्षण गुण ॥
नादेयके लक्षण और गुण ॥

नदी अथवा नद के जलको नादेय कहतेहैं यह रूखा बादी हलका दीपन अभिष्यन्दरहित बिशद कटु और कफ पित्तनाशक होताहै जिन नदियों का जल निर्मल प्रबल प्रवाहवाला होताहै वह हलकाहै मंद प्रबाह शिवार ढकीहुई और गंदले जलवाली नदियोंका जल भारी होताहै हिमालय से उत्पन्न पाषाणों से टकराये हुए जलवाली गंगा सतलज सरयू और यमुना का जल पथ्य तथा उत्तम गुणवाला होताहै सह्य पर्व्वत से उत्पन्न बेणा और गोदावरी आदिक नदियों का जल पुष्ट और कुछ कफ तथा बात को उत्पन्न करता है नदी सरोवर कूप और झरना आदि के जल के दोष गुण देशके भेदसे जाननेचाहिये ॥ १२ ॥

अथौद्भिदस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

विदार्य्यभूमिंनिम्नायमहत्याधारयास्रवेत् । तत्तोयमौद्भिदंनामबदन्तीतिमहर्षयः ॥ औद्भिदंवारिपित्तघ्नमविदाह्यतिशीतलम् । प्रीणनंमधुरंबल्यमीषद्वातकरंलघु ॥ १३ ॥

औद्भिज जलके लक्षण और गुण ॥

पृथ्वीको खोदकर गहरे स्थानसे जो जल बडी धाराके साथ निकलताहै उसको औद्भिज कहतेहैं यह पित्तनाशक बिदाह रहित अत्यन्त शीतल प्रसन्नता कारक मधुर बलकारी कुछ बादी और हलका होताहै ॥ १३ ॥

नैर्झरस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

शैलसानुस्रवद्वारिप्रवाहेनिर्झरोझरः । सतुप्रस्रवणश्चापितत्रत्यंनैर्झरंजलम् ॥ नैर्झरंरुचिकृन्नीरंकफघ्नंदीपनंलघु । मधुरंकटुपाकञ्चवातंस्यादपित्तलम् ॥ १४ ॥

झरने के जलके लक्षण और गुण ॥

पर्व्वत के शिखरसे निकले हुए जल के प्रवाहको निर्झर झर तथा प्रस्रवण और उसके जलको नैर्झर कहतेहैं झरने का जल रुचिकारी कफघ्न दीपन हलका मधुर पाकमें कटु बादी और पित्तनाशक होताहै ॥ १४ ॥

अथ सारसस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

नद्याःशैलादिरुद्धायायत्रसंश्रुत्यतिष्ठति । तत्सरोजलसञ्ज्ञंतदम्भःसारसंस्मृतम् ॥ सारसंसलिलंबल्यंतृष्णाघ्नंमधुरंलघु । रोचनन्तुवरंरूक्षंबद्धमूत्रमलंस्मृतम् ॥ १५ ॥

पर्व्वत आदिसे रुकीहुई नदीका जल जिस स्थानमें ठहरताहै उस जल से युक्त स्थानको सर और वहांके जल को सारस कहतेहैं सरोवर का जल बलकारी तृषानाशक मधुर हलका रुचिकारी कषैला रूखा और मलमूत्र रोधक होताहै ॥ १५ ॥

अथ ताडागस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

प्रशस्तभूमिभागस्थोबहुसंवत्सरोषितः । जलाशयस्तडागःस्यात्ताडागंतज्जलंस्मृतम् ॥ ताड़ागमुदकंस्वादुकषायंकटुपाकिचावातलंबद्धविण्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् १६ ॥

तड़ाग के जलका लक्षण और गुण ॥

बहुत दिनसे उत्तम पृथ्वी के भागमें स्थित बडे जलाशयको तड़ाग और वहां के जलको ताड़ाग कहतेहैं तड़ागका जल मधुर कषैला पाकमें कटुबादी मलमूत्र रोधक और रक्तपित्त तथा कफका नाशक होताहै ॥ १६ ॥

वाप्यलक्षणंगुणाश्च ॥

पाषाणैरिष्टकाभिर्वाबद्धःकूपोबृहत्तरः । ससोपानाभवेद्वापीतज्जलंवाप्यमुच्यते ॥ वाप्यंवारियदिक्षारंपित्तकृत्कफवातहृत् । तदेवमिष्टंकफकृत्वातपित्तहरंभवेत् ॥ १७ ॥

बावड़ी के जलका लक्षण और गुण ॥

पाषाण अथवा ईटोंसे बंधेहुये सीढ़ियों समेत बड़े कुएंको बापी और उसके जलको बाप्य कहते हैं बावड़ीका जल खारी होयतो पित्तवर्द्धक तथा कफ बात नाशक और मधुर होय तो कफकारी तथा बात पित्त नाशक होताहै ॥ १७ ॥

अथकौपस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

भूमौखातोऽल्पविस्तारोगम्भीरोमण्डलाकृतिः । बद्धोऽबद्धसकूपंस्यात्तदम्भःकौपमुच्यते ॥ कौपंपयोयदिस्वादुस्त्रिदोषघ्नंहितंलघु । तत्क्षारंकफवातघ्नंदीपनंपित्तकृत्परम् ॥१८॥

कुएंके जलका लक्षण और गुण ॥

पृथ्वीमें खुदे हुये थोड़े विस्तारवाले गोलाकार गंभीर ईंट आदि से बंधे हुये अथवा बिना बँधेहुये

जलाशयको कूप और वहाँके जलको कौप कहतेहैं कुएंका जलजो मधुर होय तो त्रिदोष नाशक हि तकारी तथा हलका और खारी होयतो कफ बातनाशक दीपन तथा अत्यन्त पित्तवर्द्धक होताहै ॥१८॥

अथ चौञ्जस्यलक्षणं गुणाश्च

शिलाकीर्णस्वयंश्वभ्रनीलाञ्जनसमोदकम्।लताविताससंछन्नंचौञ्ज्यमित्यभिधीयते॥ अश्मादिभिरबद्धंयत्तच्चौञ्ज्यमितिवापरे। तत्रत्यमुदकंचौञ्ज्यंमुनिभिस्तदुदाहृतम् ॥ चौञ्ज्यंबह्निकरंनीरंरूक्षंकफहरंलघु। मधुरंपित्तनुद्रुच्यंपाचनंविशदंस्मृतम् ॥ १९ ॥

चौंज्य जलके लक्षण और गुण ॥

चारोंओर शिलाओंसे घिराहुआ लताओंके समूहोंसे आच्छादित स्वच्छ और नीलवर्ण जलसे युक्त स्वयं उत्पन्न हुआ जलाशय चुंज कहलाताहै और उसके जलको चौंज कहतेहैं कोई कोई लोग जो शिलाओंसे बंधा हुआ नहो उसको चुंज कहतेहैं चुंजकाज़ल दीपन रूखाकफ नाशक हलका मधुर पित्तघ्न रुचिकारी पाचक और विशद होताहै ॥ १९ ॥

अथ पल्वलस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

अल्पंसरःपल्वलंस्याद्यत्रचन्द्रर्क्षगेरवौ। रवौसूर्य्येचन्द्रर्क्षगेकर्कराशिस्थेश्रावणेमासि इतियावत् ॥ चन्द्रर्क्षंमृगशिरस्तत्रगेमुख्यपाठः। नतिष्ठतिजलंकिञ्चित्तत्रत्यंवारिपाल्वलम् ॥ पाल्वलंवार्य्यभिष्यन्दिगुरुस्वादुत्रिदोषकृत् ॥ २० ॥

पल्वल का लक्षण और गुण ॥

जिस छोटे सरोवरमें बर्षा ऋतु में कुछ जलरहै और फिर क्रमसे सूखजाय उसको पल्वल और उस के जलको पाल्वल कहतेहैं पल्वल का जल अभिष्यन्दी भारी मधुर और त्रिदोषकारी होताहै॥२०॥

अथ चिकिरस्यजलस्यलक्षणं गुणाश्च ॥

नद्यादिनिकटेभूमिर्यांभवेद्बालुकामयी। उद्धार्य्यतेततोयंतुतज्जलंचिकिरंविदुः॥ चिकिरंशीतलंस्वच्छंनिर्दोषंलघुचस्मृतम्। तुवरंस्वादुपित्तघ्नंक्षारंतत्पित्तलंमनाक् ॥ २१ ॥

चिकिरजल का लक्षण और गुण ॥

नदी आदिके किनारे बालुका समेत पृथ्वी से जो जल निकाला जाताहै उसको चिकिर (चोआ) कहतेहैं यह शीतल स्वच्छ दोष रहित हलका मधुर कषैला तथा पित्त नाशक और खारी होयतो कुछ पित्त वर्द्धक होताहै ॥ २१ ॥

अथ कैदारस्यजलस्यलक्षणं गुणाश्च ॥

केदारंक्षेत्रमुद्दिष्टंकैदारंतज्जलंस्मृतम् । कैदारंवार्य्यभिष्यन्दिमधुरंगुरुदोषकृत् २२

खेतके जलका लक्षण और गुण ॥

खेत को केदार और उसके जल को कैदार कहते हैं यह अभिष्यन्दी भारी मधुर और दोषकारी होता है ॥ २२ ॥

अथ वृष्टिजलस्यलक्षणं गुणाश्च ॥

वार्षिकंतदहर्दृष्टंभूमिस्थमहितंजलम् । त्रिरात्रमुषितंतत्तुप्रसन्नममृतोपमम् ॥ २३ ॥

वर्षा के जल के लक्षण और गुण ॥

उसी दिन का बरसा हुआ भूमि में स्थित [कीचड़ युक्त] बर्सातो जल अहितकारी होता है परन्तु तीन दिनका बासी निर्मल वह जल अमृत समान होताहै ॥ २३ ॥

अथ हेमन्तादिकालविरोधेविहित जलविशेषः ॥

हेमन्तेसारसन्तोयंताड़ागंवाहितंस्मृतम् । हेमन्तेविहितंतोयं शिशिरेऽपिप्रशस्यते ॥ वसन्तग्रीष्मयोःकौपं वाप्यंवानैर्झरंजलम् । नादेयंवारिनादेयंवसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः ॥ विषवद्वनवृक्षाणां पत्राद्यैर्दूषितंयतः । औद्भिदंवांतरीक्षंवा कौपंवाप्रावृषिस्मृतम् ॥ शस्तं शरदिनादेयं नीरमंशूदकंपरम् । दिवारविकरैर्जुष्टं निशिशीतकरांशुभिः ॥ ज्ञेयमंशूदक न्नाम स्निग्धंदोषत्रयापहम् । अनभिष्यंदिनिर्दोष मांतरीक्षंजलोपमम् ॥ बल्यंरसायनंमे ध्यं शीतंलघुसुधासमम् । रविकरैर्जुष्टमित्युक्ते दिवापदं समस्त दिवसप्राप्त्यर्थं शीतकरां शु भिर्जुष्टमित्युक्ते निशीथिपदं समस्तरात्रिप्राप्त्यर्थम् अन्यच्च शरदि, स्वच्छमुदयाद गस्त्यस्याखिलं हितम् । वृद्धसुश्रुतस्तु ॥ पौषेवारिसरोजातं माघेतत्तुतड़ागजम् । फा लगुनेकूपसम्भूतं चैत्रेचौंड्याहितंमतम् ॥ वैशाखेनैर्झरंनीरं ज्येष्ठेशस्तन्तथौद्भिदम् । आ षाढेशस्यतेकौपं श्रावणेदिव्यमेवच ॥ भाद्रेकौप्यंपयःशस्तं आश्विनेचौण्ड्यमेवच । कार्त्तिकेमार्गशीर्षेच जलमात्रं प्रशस्यते ॥ २४ ॥

हेमन्तादि ऋतुओं में विहित जल विशेष ॥

हेमन्त और शिशिर ऋतु में सरोवर अथवा तड़ाग का जल हितकारी होता है वसन्त और ग्रीष्म ऋतु में कुआँ वाबड़ी अथवा झरनेकाजल हित होताहै और इन्हीं ऋतुओं में नदीका जल कभी ग्रहण न करना चाहिये क्योंकि उस समय विषयुक्त वनके पत्रादिकों से जल दूषित होजाता है वर्षाकाल में औद्भिज आन्तरिक्ष और कुएंकाजल हितकारी है शरद ऋतु में नदी का जल और अंशूदक विशेष हितकारी है जो जल दिनभर सूर्य्य की किरणों से तपाहुआ और रात्रि भर चन्द्रमा की किरणों से युक्तहुआ वह अंशूदक कहलाताहै अंशूदक स्निग्ध त्रिदोष नाशक अभिष्यन्दरहित नि. र्दोष आन्तरिक्ष जलके समान उपकारी बलकारी रसायन मेदाको हित शीतल हलका और अमृत के समान गुणकारी होता है कोई २ कहते हैं कि शरद ऋतु में अगस्त्य के उदय से स्वच्छ हुआ सम्पूर्ण जल हितकारी है वृद्धसुश्रुत ने कहाहै कि पूष में सरोवर का माघ में तड़ागका फागुनमें कुएं का चैत्र में चुंडका बैशाष में झरने का जेष्ठमें उद्भिज आषाढ़ में कुएं का श्रावण में दिव्य भादोंमें कुंएका आश्विन में चुंडका और कार्तिक तथा मार्गशीर्ष में सम्पूर्ण जल श्रेष्ठ हैं ॥ २४ ॥

जल ग्रहणकालः ॥

भौमानामम्भसाम्प्रायोग्रहणंप्रातरिष्यते।शीतत्वंनिर्मलत्वञ्चयतस्तेषांमतोगुणः२५॥

जलके ग्रहण करनेका समय ॥

भूमिका जल प्रातःकाल ग्रहण करना चाहिये क्योंकि उससमय का जल शीतल और निर्मल होता है और यही जलके परमगुण हैं ॥ २५ ॥

अथ जलस्यपानविधिः ॥

अत्यम्बुपानान्नविपच्यतेऽन्नं निरम्बुपानाच्चसएवदोषः । तस्मान्नरोवह्निविवर्द्धनायमु हुर्मुहुर्वारिपिवेदभूरि ॥ २६ ॥ जलपान की विधि ॥

अत्यन्त जलपीने से और अत्यन्तही न पीने से अन्न नहीं पचता इससे मनुष्य अग्नि बढ़ने के लिये बारंबार थोड़ा २ जल पिये ॥ २६ ॥

अथ शीतलजलपानस्यविषयाः ॥

मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषुविषेरक्तेमदात्ययेश्रमेभ्रमेविदग्धेऽन्नेतमकेवमथौतथा॥ऊर्द्ध्व गेरक्तपित्तेचशीतमम्बुप्रशस्यते ॥ २७ ॥

शीतल जलपीने के विषय ॥

मूर्च्छा पित्त उष्णता दाह विष रक्तदोष मदात्यय श्रम भ्रम अन्नकी विदग्धता तमक श्वास छर्दि और ऊर्ध्वगत रक्त पित्त में शीतलजल श्रेष्ठ है ॥ २७ ॥

अथ तन्निषेधः ॥

पार्श्वशूलेप्रतिश्यायेवातरोगेगलग्रहे ॥ आध्मानेस्तिमितेकोष्ठेसद्यःशुद्धौनवज्वरे ॥ अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्रधौ । हिक्कायांस्नेहपानेचशीताम्बुपरिवर्जयेत् २८ ॥

शीतल जलका निषेध ॥

पार्श्व शूल पीनस बातरोग गलरोग आध्मान आर्द्रकोष्ठ बमनादि के द्वारा शीघ्रहुई शुद्धता नवीन ज्वर हिचकी अरुचि ग्रहणी गुल्म श्वास खांसी विद्रधि और स्नेह पान में शीतल जलका ग्रहण नहीं करे ॥ २८ ॥ अथाल्पजलपानस्यविषयः ॥

अरोचकेप्रतिश्यायेमन्देऽग्नौश्वयथौक्षये । मुखप्रसेकेजठरे कुष्ठेनेत्रामयेज्वरे ॥ व्रणे चमधुमेहेच पिवेत्पानीयमल्पकम् ॥ २९ ॥

थोड़ा जलपीनेका विषय ॥

अरुचि पीनस मंदाग्नि सूजन क्षय मुख श्राव उदर कुष्ठ नेत्र रोग ज्वर घाव और मधु प्रमेह में थोड़ा जल पिये ॥ २९ ॥ जलपानस्यावश्यकता ॥

जीवनंजीविनांजीवोजगत्सर्वन्तुतन्मयम् । अतोऽत्यन्तनिषेधेनंकदाचिद्धारिवार्य्यते ॥ हारीतश्च । तृष्णागरीयसीघोरासद्यःप्राणविनाशिनी । तस्माद्देयंतृषार्त्तायपानीयंप्राणधा णम् ॥ तृषितोमोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुञ्चति । अतःसर्वास्ववस्थासु नक्वचि द्वारिवर्जयेत् ॥ ३० ॥ जलपीनेकी आवश्यकता ॥

जल प्राणियों का जीवनस्वरूप और संपूर्ण जगत् जलमय है इससे बुद्धिमान् पुरुष जलपीने का अत्यन्त निषेध कभी न करे हारीत मुनिनेभी कहाहै कि तृषा अत्यन्त भयानक और शीघ्र प्राणनाशक होतीहै इससे तृषासे व्याकुल पुरुषको प्राण धारण करनेकेलिये जलदेनाउचितहै तृषा से व्याकुल पुरुष जल न मिलने से मोहको प्राप्तहोताहै और मोहसे प्राणोंको भी त्यागकरता है इससे संपूर्ण अवस्थाओंमें जलका अत्यन्त निषेध कहींभी न करना चाहिये ॥ ३० ॥

अथ प्रस्तंजलम् ॥

अगन्धमव्यक्तरसंसुशीतंतर्षनाशनम्॥स्वच्छंलघुचहृद्यञ्चतोयंगुणवदुच्यते॥३१॥

श्रेष्ट जलके लक्षण ॥

गंधरहित गुप्तरस अत्यन्त शीतल तृषानाशक निर्मल हलका और हृदयको हित जल गुणदायक होता है ॥ ३१

अथ निन्दितजलम् ॥

पिच्छिलंकृमिलांक्लिन्नंपर्णशैवालकर्दमैः॥ विवर्णंविरसंसान्द्रंदुर्गन्धांनिहितंजलम् ॥ कलुषंछन्नमम्भोजपर्णनीलीतृणादिभिः । दुःस्पर्शनमसंस्पृष्टंसौरचान्द्रमरीचिभिः ॥अनातवंधार्षिकन्तुप्रथमंतच्चभूमिगम्।व्यापन्नंपरिहर्त्तव्यंसर्वदोषप्रकोपणम् ॥तत्कुर्य्यात्स्नानपानाभ्यांतृष्णाध्मानचिरज्वरान् । कासाग्निमान्द्याभिष्यन्दकण्डुगण्डादिकंतथा३२॥

निन्दितजलके लक्षण ॥

पिच्छिल कीड़ोंसे युक्त पत्ते शिवार तथा कीचड़ आदि से सड़ाहुआ विवर्ण विरस घना दुर्गन्धियुक्त गदला कमल के पत्ते तथा नील के तृण आदिकों से ढकाहुआ कुत्सित स्थान में उत्पन्न हुआ सूर्य तथा चन्द्रमा की किरणों से नहीं स्पर्श किया अकाल में बरसा हुआ शीघ्रही पृथ्वी पर पड़ा हुआ और रोग युक्त जल त्याग करना चाहिये क्योंकि इस्से सम्पूर्ण दोषोंका कोप होता है यहजल स्नान अथवा पान करने से तृषा आध्मान उदर ज्वर खांसी मंदाग्नि अभिष्यन्द खुजली और गल गण्ड आदि रोगोंको उत्पन्न करता है ॥ ३२ ॥

अथ दुष्टजलस्यनिर्दोषीकरणोपायः ॥

निन्दितञ्चापिपानीयंक्वथितंसूर्य्यतापितम् । सुवर्णरजतंलौहंपाषाणंसिकतामपि ॥ भृशंसन्तप्याप्यनिर्वाप्यसप्तधासाधितंतथा । कर्पूरजातिपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ॥ शुचिसान्द्रपटश्राविक्षुद्रजन्तुविवर्जितम् । स्वच्छंकनकमुक्ताद्यैःशुद्धंस्याद्दोषवर्जितम् ॥ पर्णमूलविषग्रन्थिमुक्ताकनकशैवलैः । गोमेदेनचवस्त्रेणकुर्य्यादम्बुप्रसादनम् ॥ ३३ ॥

बुरेजलके निर्दोष करने के उपाय ॥

अग्नि में गरम किया गया धूपमें तपाया गया अत्यन्त तपाये हुये सुवर्ण चांदी लोहा पत्थर बालू अथवा मृतिका से सातबार बुझाय कर कपूर चंमेली श्वेत कमल और पाटल आदिकों से सुगंधित किया गया पवित्र तथा गाढ़े कपड़े से छानकर छोटे२ कीड़ोंसे रहित किया गया अथवा सुवर्ण तथा मोती आदिकोंसे निर्म्मल कियागया शुद्ध जल दोष रहित होताहै पत्ता जड़ मृणालकी गांठ मोती सोना शिवार गोमेद और बस्त्रके द्वारा जलको निर्म्मलकरे ॥ ३३ ॥

अथ पीतस्यजलस्यपाकविधिः ॥

पीतंजलंजीर्य्यतियामयुग्मात्यामैकमात्रात्शृतशीतलञ्च। तदूर्ध्वमात्रेणशृतंकदुष्णं पयःप्रपाकेत्रयएवकालाः ॥ ३४ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेवारिवर्गः ॥

पियेहुए जलके परिपाककी विधि ॥

जलके परिपाकके तीन कालहैं कच्चा जल एक प्रहरमें गरमकरके ठंढा कियाहुआ आधेपहरमें और गरम कुछ उष्ण रहनेपर चौथाईपहरमें परिपाकको प्राप्तहोताहै ॥ ३४ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेवारिवर्गः ॥

अथ दुग्धवर्गः । दुग्धस्यनामगुणाः ॥

दुग्धंक्षीरंपयःस्तन्यंबालजीवनमित्यपि । दुग्धंसुमधुरंस्निग्धंवातपित्तहरंसरम् ॥ सद्यःशुक्रकरंशीतंसात्म्यंसर्वशरीरिणाम् । जीवनंबृंहणंबल्यंमेध्यंवाजिकरंपरम् ॥ वयःस्थापनमायुष्यंसन्धिकारिरसायनम् ॥ विरेकवान्तिवस्तीनांतुल्यमोजोविवर्द्धनम् ॥ जीर्णज्वरेमनोरोगेशोषमूर्च्छाभ्रमेषुच । ग्रहण्यांपाण्डुरोगेचदाहेतृष्हृदामये ॥ शूलोदावर्त्तगुल्मेषुवस्तिरोगेगुदाङ्कुरे । रक्तपित्तेऽतिसारेचयोनिरोगेश्रमेक्लमे ॥ गर्भस्रावेचसततंहितंमुनिवरैःस्मृतम् । बालवृद्धक्षतक्षीणाःक्षुद्व्यवायकृशाश्चये ॥ तेभ्यःसदातिशयितंहितमेतदुदाहृतम् ॥ १ ॥

अथ दुग्ध वर्ग । दूधकेनाम और गुण ॥

दुग्ध क्षीर पयस् स्तन्य और बालजीवन यह दूधकेनाम हैं दूध मधुर स्निग्ध वात पित्तनाशक शीघ्र वीर्यकारी शीतल सब प्राणियोंको स्वात्म्य जीवनरूप धातुवर्द्धक बलकारी मेधाकोहित अत्यन्त बाजीकरण अवस्थाका स्थापक आयुकोहित टूटेहुएका जोड़नेवाला रसायन वमन विवेचन तथा वस्ति क्रियाके तुल्य गुणकारी और जीर्णज्वर मनकेरोग शोष मूर्च्छा श्रम ग्रहणी पांडुरोग दाह तृषा हृदय के रोग शूल उदावर्त्त गुल्म मूत्राशयके रोग गुदांकुर रक्तपित्त अतीसार योनिरोग श्रम ग्लानि तथा गर्भ स्रावमें सदैवहितकारी होताहै बालक वृद्ध क्षतसे क्षीण और क्षुधा तथा मैथुनसे कृश मनुष्योंको दुग्ध सदैव अत्यन्त हितकारी होताहै ॥ १ ॥

अथ गोदुग्धस्यगुणाः ॥

गव्यंदुग्धंविशेषेणमधुरंरसपाकयोः । शीतलंस्तन्यकृत्स्निग्धंवातपित्तास्रनाशनम् ॥ दोषधातुमलस्रोतःकिञ्चित्क्लेदकरंगुरु । जरासमस्तरोगाणांशान्तिकृत्सेविनांसदा २ ॥

गौदूधके गुण ॥

गौकादूध रस तथा पाकमें विशेष करके मधुर शीतल दुग्धवर्द्धक स्निग्ध वात तथा रक्त पित्तकानाशक दोष धातु मल तथा श्रोतोंका कुछ आर्द्रकरनेवाला भारी और सदैव सेवनसे वृद्धावस्था तथा सम्पूर्ण रोगोंका नाशक होताहै ॥ २ ॥

वर्णविशेषेगुणविशेषाः ॥

कृष्णायागोर्भवंदुग्धंवातहारिगुणाधिकम् । पीतायाहरतेपित्तंतथावातहरंभवेत् ॥ श्लेष्मलंगुरुशुक्लायारक्तचित्राचवातहृत् (अथधेनोर्विवत्सायाश्चगुणाः) बालवत्सविवत्सानां गवांदुग्धंत्रिदोषकृत् (बकेनीगोगुणाः) वष्कपिण्यास्त्रिदोषघ्नंतर्पणंबलकृत्पयः ॥ ३ ॥

वर्णविशेषसे गुण विशेष ॥

काली गौका दूध बातनाशक अत्यन्त गुणकारी पीली गौका दूध पित्त तथा बातनाशक श्वेत गौ का दूध कफकारी तथा भारी और लाल तथा अनेकप्रकारके वर्ण वाली गौकादूध बातनाशक होता है छोटेबछड़ेवाली और बछड़े से रहित गौका दूध त्रिदोषकारी होताहै बकेनी (बाखरी) गौकादूध त्रिदोषनाशक तृप्तिकारक और अत्यन्त बलकारी होताहै ॥ ३ ॥

अथ देशविशेषेणगुणविशेषः ॥

जाङ्गलोनूपशैलेषुचरन्तीनांयथोत्तरम् । पयोगुरुतरंस्नेहोयथाहारंप्रवर्त्तते ॥ ४ ॥

देशविशेषसे गुण विशेष ॥

जांगलदेश अनूपदेश और पर्वतीयदेशोंमें चरनेवाली गौकादूध क्रमसे भारी होताहै और घीआहार के अनुसार निकलताहै ॥ ४ ॥

अथाहारविशेषेगुणविशेषः ॥

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातंक्षीरंगुरुकफप्रदम् । तत्तुबल्यंपरंवृष्यंस्वस्थानांगुणदायकम् ॥ पलालतृणकार्पासवाजिजातंगुणैर्हितम् ॥ ५ ॥

आहारविशेषसे गुण विशेष ॥

थोड़ा अन्न खानेवाली गौकादूध भारी कफकारक बलिष्ठ अत्यन्त वीर्यवर्द्धक और स्वस्थ पुरुषों को गुणदायक होताहै पयार तृण और बिनौले खानेवाली गौओंका दूध रोगियोंको हितहोताहै ॥ ५ ॥

अथ महिषीदुग्धस्यगुणाः ॥

माहिषंमधुरङ्गव्यान्स्निग्धंशुक्रकरंगुरु । निद्राकरमभिष्पन्दिक्षुधाधिक्यकरंहिमम् ॥ ६ ॥

भैंसके दूधकेगुण ॥

भैंसकादूध मधुर वीर्यवर्द्धक भारी निद्राकारी अभिष्पन्दी क्षुधाका बढ़ानेवाला और गौके दूध से अधिक घृतयुक्त होताहै ॥ ६ ॥

छागी दुग्धस्यगुणाः ॥

छागंकषायंमधुरंशीतंग्राहितथालघु । रक्तपित्तातिसारघ्नंक्षयकासज्वरापहम् ॥ अजानामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् । स्तोकाम्बुपानाद्यामात्सर्वरोगापहंपयः ॥ ७ ॥

बकरीके दूधकेगुण ॥

बकरीकादूध कषैला मधुर शीतल ग्राही हलका और रक्तपित्त अतीसार क्षय खांसी तथा ज्वरका नाशक होताहै शरीरके हलकेपनसे कटु तिक्त आदि वस्तुओंके भोजनसे थोड़ा जलपानेसे और व्यायाम करनेसे बकरियोंकादूध सम्पूर्ण रोगोंका नाशक होताहै ॥ ७ ॥

मृगादिदुग्धस्यगुणाः ॥

मृगीनांजांगलोत्थानांअजाक्षीरगुणंपयः ८ (भेड़ीदुग्धगुणाः) आविकंलवणंस्वादुस्निग्धोष्णञ्चाश्मरीप्रणुत् । अहृद्यंतर्पणंवृष्यंशुक्रपित्तकफप्रदम् ॥ गुरुकासेऽनिलोद्भूतेकेवलेचानिलेवरम् ॥ ९ ॥

मृगी आदिके दूधका गुण॥

मृगी आदिक जंगली पशुओंकादूध बकरीके दूधके समान गुणकारी होताहै ८(भेड़ीके दूधका गुण) भेड़ीकादूध नमकीन मधुर स्निग्ध उष्ण पथरीनाशक हृदयको अहित तृप्तिकारक केशोंको हित वीर्य वर्द्धक कफपित्तकारक भारी और बायुकी खांसी तथा केवल बातरोगोंमेंहित होताहै॥ ९॥

अथ घोड़ीदुग्धं॥

रूक्षोष्णंवडवाक्षीरंबल्यंशोषानिलापहम्।अम्लंपटुलघुस्वादुसर्वमेकशफंतथा॥१०॥

घोड़ीके दूधके गुण॥

घोड़ीका और संपूर्णएक खुरवाले पशुओंका दूध रूखा उष्ण बलकारी खट्टा नमकीन मधुर हलका और शोष तथा बातनाशक होताहै॥ १०॥

अथ उष्ट्रीदुग्धं॥

औष्ट्रंदुग्धंलघुस्वादुलवणंदीपनंतथा। कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरंसरम्॥ ११॥

ऊंटनी का दूध॥

ऊंटनी का दूध हलका मधुर नमकीन दीपन दस्तावर और कृमि कुष्ठ कफ आनाह सूजन तथा उदर रोग नाशक होता है॥ ११॥

हस्तिनीदुग्धं॥

बृंहणंहस्तिनीदुग्धंमधुरंतुवरंगुरु। वृष्यंबल्यंहिमंस्निग्धंचक्षुष्यंस्थिरताकरम्॥१२॥

हथिनी का दूध॥

हथिनी का दूध धातुवर्द्धक मधुर कषैला भारी बलवीर्य्यवर्द्धक शीतल स्निग्ध नेत्रोंको हित और स्थिरता करने वाला होता है॥ १२॥

अथ नारीदुग्धं॥

नार्य्यालघुपयःशीतंदीपनंवातपित्तजित्॥चक्षुःशूलाभिघातघ्नंतस्याश्चोतनयोर्वरम्१३

नारीका दूध॥

नारीका दूध हलका शीतल दीपन बात पित्त तथा नेत्रकी पीड़ा नाशक और नासलेनेमें तथा नेत्रों के भरने में श्रेष्ठहै॥ १३॥ अथाधारोष्णादिगुणाः॥

धारोष्णंगोपयोबल्यंलघुशीतंसुधासमम्। दीपनंचत्रिदोषघ्नंतद्धाराशिशिरंत्यजेत्। धारोष्णंशस्यतेगव्यंधाराशीतंतुमाहिषम्। श्रृतोष्णमाविकंपथ्यंश्रृतशीतमजापयः॥ आमंक्षीरमभिष्यंदिगुरुश्लेष्मामवर्द्धनम्। ज्ञेयंसर्वमपथ्यंतुगव्यमाहिषवर्जितम्॥ नारीक्षीरंत्वाममेवहितंनतुश्रृतंहितम्। श्रृतोष्णंकफवातघ्नंश्रृतंशीतंतुपित्तनुत्॥ अर्द्धोदकंक्षीरशिष्टमामाल्लघुतरंपयः। जलेनरहितंदुग्धमतिपक्वंयथायथा॥ तथातथागुरुस्निग्धं वृष्यंबलविवर्द्धनम्॥ १४॥

धारोष्ण आदिक दूधके गुण॥

धारोष्ण गऊकादूध बलकारी हलका शीतल अमृत समान दीपन और त्रिदोषनाशक होताहै परन्तु धारा शीतल दूधको ग्रहण न करै गौका दूध धारोष्ण भैंसका दूधधारा शीतल भेड़ीका दूध अग्निसे

गरम किया हुआ और बकरी का दूध गरम करके शीतल किया हुआ गुणकारी होताहै गौ औ भैंसके दूधको छोड़कर संपूर्ण कच्चादूध अभिष्पन्दी भारी कफवर्द्धक आमकारी और अपथ्य होता है नारी का दूध कच्चाही हितकारी होताहै पक्कानहीं होता दूधको पकाकर गरम २ पीनेसे कफ बात और ठंढाकरके पीनेसे पित्तकानाश होताहै दूधमें आधापानी मिलाकर औटानेसे जब सब पानीजलकर केवल दूध रहजाय वह कच्चे दूधसे हलका होताहै जल रहित दूध जितना अधिक औटाया जाय उतनाही अधिक भारी स्निग्ध वर्य्यवर्द्धक और बलकारी होताहै ॥ १४ ॥

अथ पियूषकिलाटक्षीरशाकःतक्रपिण्डमोरटानांलक्षणानिगुणाश्च ॥

क्षीरंतत्कालसूतायाघनपेयूषमुच्यते । पेयूषंपेवसइतिलोके ॥ नष्टदुग्धस्यपक्वस्यपि ण्डःप्रोक्तःकिलाटकः । किलाटकःगिजिरीइतिलोके ॥ अपक्वमेवयन्नष्टंक्षीरशाकंहितत्प यः । क्षीरशाकंतुषिभराइतिलोके ॥ दध्नातक्रेणवानष्टंदुग्धंबद्धंसुवाससा । द्रवभावेनस हितंतक्रपिण्डःसउच्यते ॥ नष्टदुग्धंभवन्नीरंमोरटंजेज्जटोऽब्रवीत् । पेयूषंचकिलाटश्च क्षीरशाकंतथैवच ॥ तक्रपिण्डइमेतृष्याबृंहणाबलबर्द्धनाः । गुरवःश्लेष्मलाहृद्याबात पित्तविनाशनाः ॥ दीप्ताग्नीनांविनिद्राणांविद्रधौचाभिपूजिताः । मुखशोषतृषादाहरक्त पित्तज्वरप्रणुत् ॥ लघुर्बलकरोरुच्योमोरटःस्यात्सितायुतः । सन्तानिकागुणाः ॥ १५ ॥

पेवसी गिजरी खरिसा तक्रपिंड और मोरटके लक्षण गुण ॥

शीघ्र्यानेवाली गौके गाढ़ेहोनेवाले दूधको पेयूष (पेवसी) फटेहुये दूधको पकाकर उससे बनाये हुये पिंडको किलाटक(गिजरी) बिना पकाये फटेहुये दूधको क्षीरशाक (खरिसा) दही अथवा मट्ठेके द्वारा दूधको फाडकर और बांधके उसके जलको निकालके जो रूप बनताहै उसे तक्रपिंड और जेज्जट कहतेहैं कि फटेहुये दूधके पानीको मोरट कहतेहैं पेवसी गिजरी खरिसा और तक्रपिंड यहसब धातु बल तथा बीर्य्य वर्द्धक भारी हृदयको हित बात पित्त नाशक और दीप्ताग्नि निद्रा रहित और मैथुन करनेवाले पुरुषोंको अत्यन्त हितकारी होताहै शक्कर युक्त मोरट हलका बलकारी रुचिकारक और मुखका सूखना तृषा दाह रक्त पित्त तथा ज्वरका नाशक होता है ॥ १५ ॥

सन्तानिकासाठी ॥

सन्तानिकागुरुःशीतावृष्यापित्तस्त्रवातनुत्तर्पणीबृंहणीस्निग्धाबलासबलशुक्रला १६

मलाई के गुण ॥

मलाई भारी पुष्टिकारी शीतल रक्त पित्त तथा बातनाशक तृप्ति कारक धातुवर्द्धक स्निग्ध और कफ बल तथा वीर्य वर्द्धक होती है ॥ १६ ॥

अथ खण्डादियुक्त दुग्धगुणाः ॥

खण्डेनसहितंदुग्धंकफकृत्पवनापहम् । सितासितोपलायुक्तंशुक्रलंत्रिमलापहम् ॥ सगुड़ंमूत्रकृच्छ्रघ्नंपित्तश्लेष्मकरंपरम् ॥ १७ ॥

खांड़ आदि से युक्त दूधके गुण ॥

खांड़युक्तदूध कफकारी तथा बात नाशक सफेद मिश्रीयुक्त दूध वीर्यवर्द्धक और त्रिदोष नाशक और गुड़युक्त दूध मूत्रकृच्छ्र नाशक तथा कफ पित्तका अधिक करनेवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ प्रभातादिभव दुग्धगुणाः ॥

रात्रौचन्द्रगुणाधिक्याद्व्यायामाकरणात्तथा । प्रभातिकंतदाप्रायःप्रादोषाद्गुरु शीतलम् ॥ दिवाकरकराघातात्व्यायामानलसेवनात् । प्राभातिकात्तुप्रादोषंलघुवात कफापहम् ॥ १८ ॥

प्रातःकाल के दूध के गुण ॥

रात्रि में चन्द्रमा के गुणकी अधिकता से और व्यायाम आदिक शरीर संबंधी क्रियाओं के नहोने से प्रायः प्रातःकालका दूध सायंकाल के दूधसे भारी और शीतल होताहै दिनमें सूर्य्य की किरणों के लगने से और व्यायाम आदि शारीरक क्रियाओं तथा अग्निके सेवन से सायंकालका दूध प्रातःकालके दूधकी अपेक्षा हलका और कफ बात नाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथ दुग्धसेवनसमय विशेषगुणमाह ॥

तृष्यंबृंहणमग्निदीपनकरंपूर्वाह्णेकालेपयो मध्याह्नेतुबलावहंकफहरंपित्तापहंदीपनम् ॥ बालेवृद्धिकरंक्षयेक्षयकरंबद्धेषुरेतोवहम् । रात्रौपथ्यमनेकदोषशमनंक्षीरंसदासेव्यते ॥ वदन्तिपेयांनिशिकेवलंपयोभोज्यंनतेनेहसहौदनादिकम् ॥ भवत्यजीर्णेनिशिपीत शर्कराक्षीरालपपानस्यतुशेषमुत्सृजेत् । विदाहीन्यन्यपानानिदिवाभुङ्क्तेहियन्नरः ॥ तद्विदाहप्रशान्त्यर्थंरात्रौक्षीरंसदापिवेत् । दीप्तानलेकृशेपुंसिबालवृद्धेपयःप्रिये ॥ मतंहिततमं पथ्यंसद्यःशुक्रकरंयतः ॥ १९ ॥

दूधके सेवन के समय २ के गुण ॥

प्रातःकाल पियाहुआ दूध पुष्टिकारक धातुवर्द्धक तथा दीपनमध्याह्न समयमें पियाहुआ दूध बलकारी कफपित्त नाशक तथा दीपन बालअवस्था में पियाहुआदूध शरीरवर्द्धक क्षीणतामें पियाहुआदूध क्षयनाशक वृद्धावस्था में पियाहुआ दूध वीर्यवर्द्धक और रात्रि समयमें पियाहुआदूध पथ्य अनेक दोषनाशक तथा नेत्रोंकोहित होता है कहागया है कि रात्रिमें चावल आदिके साथ दूध न पिये परन्तु केवल दूधपिये क्योंकि चावल आदिके साथ दूधपीने से अजीर्ण होताहै और दूध पीकर उच्छिष्टन छोड़ना चाहिये मनुष्य दिनमें जिन विदाहकारी अन्न पानादिकोंका सेवन करता है उनके दाह के शान्तिके लिये रात्रिमें सदैव दूधपीना चाहिये कृशपुरुष बालक वृद्ध दुग्धप्रिय और दीप्ताग्नि वाले पुरुषको दूध अत्यन्त पथ्यहै क्योंकि यह शीघ्रही वीर्य्यको उत्पन्न करताहै ॥ १९ ॥

अथ मथितस्य दुग्धस्यगुणाः ॥

क्षीरंगव्यमथाजम्बाकोष्णंदण्डाहतंपिवेत्।लघुवृष्यंज्वरहरंवातपित्तकफापहम्॥२० ॥

मथेहुएदूधके गुण

गौ अथवा बकरी का मथाहुआ कुछ उष्ण दूध पीने से हलका वीर्यवर्द्धक और ज्वर बात पित्त तथा कफ नाशक होताहै ॥ २० ॥

अथ गोजगुणाः ॥

गोदुग्धप्रभवंकिंवाछागीदुग्धसमुद्भवम् । भवेदेतत्त्रिदोषघ्नंरोचनंबलबर्द्धनम् ॥ वह्निवृद्धिकरंवृष्यंसद्यस्तृप्तिकरंलघुः । अतीसारेऽग्निमान्द्येचज्वरेजीर्णेप्रशस्यते ॥ २१ ॥

दूधके फेनोंके गुण ॥

गौ अथवा बकरी के दूधका फेन त्रिदोष नाशक रुचिकारी बलबर्द्धक अग्निबर्द्धक पथ्य शीघ्रतृप्तिकारी हलका और अतीसार मंदाग्नि तथा जीर्ण ज्वर में श्रेष्ठ होताहै ॥ २१ ॥

निन्दितं दुग्धं ॥

विवर्णंविरसंचाम्लंदुर्गन्धंग्रथितंपयः । वर्ज्जयेदम्ललवणयुक्तंबुद्ध्यादिहृद्यतः॥२२॥

इतिश्रीभावप्रकाशेदुग्धवर्गः ॥

निंदित दूध के लक्षण ॥

विवर्ण विरस खट्टा दुर्गन्धियुक्त फटाहुआ और खटाई तथा लवणसेयुक्त दूध त्यागकरने के योग्य है क्योंकि इससे कुष्ठ आदिक रोग उत्पन्न होते हैं ॥ २२ ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेदुग्धवर्गःसमाप्तः ॥

अथ दधिवर्गः । तत्रदध्नो गुणाः ॥

दध्युष्णंदीपनंस्निग्धंकषायानुरसंगुरु । पाकेऽम्लंश्वासपित्तास्रशोथमेदःकफप्रदम् ॥
मूत्रकृच्छ्रप्रतिश्यायेशीतगेविषमज्वरे । अतीसारेऽरुचौकार्श्येशस्यतेबलशुक्रकृत्॥ १॥

अथ दधिवर्गः । दहीके गुण ॥

दही उष्ण दीपन स्निग्ध कषैला भारी पाक में खट्टा ग्राही रक्तपित्त कारी सूजन तथामेद बर्द्धक कफकारी बलवीर्य बर्द्धक और मूत्रकृच्छ्र पीनस शीतक नाम बिषम ज्वर अतीसार अरुचि तथा कृशतामें हितकारी होताहै ॥ १ ॥

अथ दधिभेदः ॥

आद्यौमन्दंततःस्वादुस्वाद्वम्लञ्चततःपरम्। अम्लञ्चतुर्थमत्यम्लंपञ्चमंदधिपञ्चधा २

दहीके भेद ॥

मंद मधुर मधुराम्ल अम्ल और अत्यम्ल यह पांच प्रकार का दही होता है ॥ २ ॥

अथ मन्दादीनाम् लक्षणंगुणाश्च ॥

मन्दंदुग्धंयदव्यक्तंरसंकिञ्चिद्घनंभवेत्। मन्दंस्यात्सृष्टविण्मूत्रदोषत्रयविदाहकृत् ॥
यत्सम्यग्घनतांयातंव्यक्तस्वादुरसंभवेत् । अव्यक्ताम्लरसंतत्तुस्वादुविज्ञैरुदाहृतम् ॥
स्वादुस्यादत्यभिष्यन्दितृष्यंमेदःकफावहम् । वातघ्नंमधुरंपाकेरक्तपित्तप्रसादनम् । स्वा
द्वम्लसान्द्रंमधुरंकषायानुरसंभवेत् ॥ स्वाद्वम्लस्यगुणाज्ञेयासामान्यदधिवर्जनैः । यत्ति
रोहितमाधुर्य्यंव्यक्ताम्लत्वंतदम्लकम् । अम्लन्तुदीपनंपित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥
तदत्यम्लंदन्तरोमहर्षकण्ठादिदाहकृत् । अत्यम्लंदीपनंरक्तवातपित्तकरंपरम् ॥ ३ ॥

मन्दादिकों के लक्षण और गुण ॥

जो दूध कुछ गाढ़ाहोकर गुप्तरस होजाताहै उसको मंद दही कहतेहैं यह मल तथा मूत्र निस्सारक त्रिदोषकारी और विदाही होता है जो दही खूबगाढ़ा मधुर और खटाई से रहित हो उसको स्वादु

कहते हैं यह अत्यन्त अभिष्पन्दी बीर्यबर्द्धक मेद तथा कफ कारक बात नाशक पाक में मधुर और रक्त पित्त नाशक होताहै जो दही खूबगाढ़ा कुछ कषैला और मधुर होता है उसको स्वाद्वम्ल कहते हैं इसमें दहीके सामान्यगुण होते हैं जो दही मधुरतासे रहित हो और जिसमें खटाई प्रकट होती हो वह अम्ल कहाता है यह दीपन और रक्त पित्त तथा कफ बर्द्धक होता है जिस दही के खानेसे दन्तहर्ष रोमहर्ष तथा कंठादिकों में दाहउत्पन्नहो वह अत्यम्ल कहलाताहै यह दीपन और बात तथा रक्त पित्त कारक होता है ॥ ३ ॥ गोदधिगुणाः ॥

गव्यंदधिविशेषेणस्वाद्वम्लञ्चरुचिप्रदम् । पवित्रंदीपनंहृद्यंपुष्टिकृत्पवनापहम् ॥
उक्तंदध्नामशेषाणांमध्येगव्यंगुणाधिकम् ॥ ४ ॥

गौके दही के गुण ॥

गौकादही बिशेष करके मधुर बलकारी रुचिकारी पवित्र दीपन स्निग्ध पुष्टिकारक बातनाशक और संपूर्ण दहियों में अधिक गुण वाला होता है ॥ ४ ॥

माहिषदधिगुणाः ॥

माहिषंदधिसुस्निग्धंश्लेष्मलंवातापित्तनुत्।स्वादुपाकमभिष्पन्दिबृष्यंगुर्व्यस्रदूषकम्॥५॥

भैंसके दहीके गुण ॥

भैंसका दही अत्यन्त स्निग्ध कफकारी बात पित्त नाशक पाक में मधुर अभिष्पन्दी भारी वीर्य बर्द्धक और रक्त दूषक होता है ॥ ५ ॥

छागीदधिगुणाः ॥

आजन्दध्युत्तमंग्राहिलघुदोषत्रयापहम् । शस्यतेश्वासकासार्शःक्षयकार्शेषुदीपनम् ॥६॥

बकरीके दहीके गुण ॥

बकरीका दही अत्यन्त ग्राही त्रिदोष नाशक दीपन और श्वास खांसी बवासीर क्षय तथा कृशता में हितकारी होता है ॥ ६ ॥

पक्वदुग्धदधिगुणाः ॥

पक्वंदुग्धभवंरुच्यंदधिस्निग्धगुणोत्तमम् । पित्तानिलापहंसर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥७॥

पक्के दूधके दहीके गुण ॥

पक्के दूधका दही रुचिकारक स्निग्ध गुणोंमें श्रेष्ठ बात पित्त नाशक और सम्पूर्ण धातु अग्नि तथा बलका बर्द्धक होता है ॥ ७ ॥

निःसरदुग्धदधिगुणाः ॥

असारंदधिसंग्राहिशीतलंवातलंलघु । विष्टम्भिदीपनंरुच्यंग्रहणीरोगनाशनम् ॥ ८ ॥

सार रहित दूधके दहीका गुण ॥

मक्खन निकले हुए दूधका दही ग्राही शीतल बादी हलका विष्टंभी दीपन रुचिकारी और ग्रहणी रोगका नाशक होताहै ॥ ८ ॥

बाधीदधिगुणाः ॥

गालितंदधिसुस्निग्धंवातघ्नंकफकृद्गुरु । बलपुष्टिकरंरुच्यंमधुरंनातिपित्तकृत्॥९॥

निचोड़े हुए दहीका गुण ॥

निचोडा हुआ दही अत्यन्त स्निग्ध बातनाशक कफकारी भारी बलकारी पुष्टि कारक रुचिकारी मधुर और कुछ पित्तकारी होता है ॥ ९ ॥

शर्करादिसहितदधिगुणाः ॥

सशर्करंदधिश्रेष्ठंतृष्णापित्तास्रदाहजित् । सगुड़ंवातनुद्बृष्यंवृंहणंतर्पणंगुरु ॥ १० ॥

शर्करादि युक्त दही के गुण ॥

शर्करा युक्त दही श्रेष्ठ गुणदायक और तृषा रक्त पित्त तथा दाह नाशक होता है गुड युक्त दही बातनाशक बीज तथा धातु बर्द्धक तृप्तिकारी और भारी होता है ॥ १० ॥

अथ रात्रौदधिभोजननिषेधः ॥

ननक्तंदधिभुञ्जीतनचाप्यघृतशर्करम् । नामुद्गसूपंनाक्षौद्रंनोष्णनामलकैर्विना ॥ अथ मर्थःरात्रौदधिनभुञ्जीत्भुञ्जीत्चेत्तदाऽघृतशर्करतामुद्गसूपंक्षौद्रमुष्णंविनामलकैश्चद धिनभुञ्जीत् । तेनघृतशर्करादियुक्तंदधिरात्रावपिभुञ्जीतेत्यर्थःतथाचशस्यतेदधिनोरात्रौशस्तञ्चाम्बुघृतान्वितम् ॥ रक्तपित्तकफोत्थेषुविकारेषुतुनैवतत् । तदम्बुघृतान्वितमपि ॥ ११ ॥

रात्रि में दही खानेका निषेध ॥

रात्रिको दही नहीं खाना चाहिये और जो खाय तो जल घी शक्कर मूंगकी दाल सहत अथवा आमले मिलाकर खाय रात्रि में भी घी शक्कर आदिसे युक्त और उष्ण दही भोजन करना चाहिये कहाभी गयाहै कि रात्रि में दही श्रेष्ठ नहीं होता परन्तु घी शक्कर अथवा जलसे युक्त दोषकारी नहीं मानते परन्तु रक्त पित्त और कफ जनित बिकारों में जल अथवा घृत युक्त दही भी विकारी है ॥११॥

अथर्त्तुविशेषेणविधिनिषेधौ ॥

हेमन्तेशिशिरेचापिवर्षासुदधिशस्यते।शरद्ग्रीष्मवसन्तेषुप्रायशस्तद्धिगर्हितम् १२॥

ऋतु विशेषमें विधि और निषेध ॥

हेमन्त शिशिर और वर्षाऋतुमें दहीखाना श्रेष्ठहै शरद ग्रीष्म और बसन्त ऋतुमें प्रायः दही खाना अहितहै ॥ १२ ॥

अथा विधिनादधिसेवनेदोषमाह ॥

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्ड्वामयभ्रमान् । प्राप्नुयात्कामलाञ्चोग्रांविधिंहित्वा दधिप्रियः ॥ १३ ॥

बिनाबिधिके दहीखानेमेंदोष ॥

जो बिना बिधिके दही खाताहै वह ज्वर रक्त पित्त वीसर्प कुष्ठ पांडु भ्रम और उग्र कामला रोगसे ग्रसित होताहै ॥ १३ ॥

अथ सरस्यमस्तुनश्चलक्षणंगुणाश्च ॥

दध्नस्तुपरियोभागोघनःस्नेहसमन्वितः । सलोकेसरइत्युक्तोदध्नोमण्डस्तमस्त्विति ॥
सरःस्वादुर्गुरुर्वृष्योवातवह्निप्रणाशनः । साम्लोवस्तिप्रशमनःपित्तश्लेष्मविवर्द्धनः ॥

मस्तुकुमहरंबल्यंलघुभक्ताभिलाषकृत्। स्रोतोविशोधनंह्लादिकफतृष्णनिलापहम्॥ अदृष्यंप्रीणनंशीघ्रंभिनत्तिमलसञ्चयम् ॥ १४ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेदधिवर्गः ॥

दहीकीमलाई और दहीकेतोड़केगुण ॥

दहीके ऊपर जो घृतयुक्त गाढ़ाभाग (मलाई) होताहै उसको लोकमें सरकहते हैं और दही के तोड़को मस्तु कहतेहैं दही की मलाई मधुर भारी वीर्य बर्द्धक बात तथा अग्निनाशक और जो खट्टी होय तो वस्ति शोधक और कफ पित्त बर्द्धक होतीहै दहीका तोड़ ग्लानिनाशक बलकारक हलका अन्नमें रुचि कराने वाला श्रोतोंका शोधक आनन्ददायी कफघ्न तृषानाशक बातघ्न वीर्यको न करने वाला प्रीतिकारी और शीघ्र संचित मलका निकालनेवालाहोताहै ॥ १४ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेदधिवर्गःसमाप्तः ॥

अथ तक्रवर्गः तत्रतक्रस्यभिन्नानिनामानिलक्षणानिगुणाश्च ॥

घोलन्तुमथितंतक्रमुदश्विच्छच्छिकापिच। ससरंनिर्जलंघोलंमथितन्त्वसरोदकम्॥ तक्रंपादजलंप्रोक्तमुदश्वित्वर्द्धवारिकम्। छच्छिकासारहीनास्यात्स्वच्छाप्रचुरवारिका॥ घोलंतुशर्करायुक्तंगुणैर्ज्ञेयंरसालवत् । मथितंमहुपाइतिलोके । छच्छिकाछाच्छइतिलोके॥ वातपित्तहरंह्लादिमथितंकफपित्तनुत् । तक्रंग्राहिकषायाम्लंस्वादुपाकरसंलघुः॥ वीर्य्योष्णंदीपनंतृष्यंप्रीणनंवातनाशनम् । ग्रहण्यादिमतांपथ्यंभवेत्संग्राहिलाघवात्॥ किञ्चस्वादुविपाकित्वान्नचपित्तप्रकोपणम् । कषायोष्णंदीपनंतृष्यंप्रीणनंवातनाशनम्॥ कषायोष्णाविपाकित्वाद्रौक्ष्याच्चापिकफापहम्। नतक्रसेवीव्यथतेकदाचित्नतक्रदग्धाःप्रभवन्तिरोगाः । यथासुराणांअमृतंसुखायतथानराणांभुवितक्रमाहुः ॥ उदश्वित्कफकृद्वल्यंआमघ्नंपरममतम्। छच्छिकाशीतलालघ्वीपित्तश्रमतृषाहरी॥ वातनुत्कफकृत्सातुदीपनीलवणान्विता॥ १ ॥

अथतक्रवर्गः । मट्ठेके अलग २ नामलक्षण और गुण ॥

घोल मथित तक्र उदश्वित और छच्छिका यह मट्ठेके भेदोंके नामहैं मलाई सहित और निर्जल मट्ठेको घोल मलाई रहित जलयुक्त मट्ठेको मथित चतुर्थांश जल सहित मट्ठेको तक्र अर्द्धांश जल सहित मट्ठेको उदश्वित और बहुत जलयुक्त मक्खन निकलेहुए मट्ठेको छच्छिका (छांछ) कहतेहैं शक्करयुक्त घोल शिखरन के समान गुणकारीहोताहै घोल बात पित्त नाशक मथित कफ पित्त नाशक तक्रग्राही कषैला खट्टा पाकमें मधुर हलका उष्ण दीपन वीर्यबर्द्धक प्रीतिकारी बातनाशक ग्रहणी आदिक रोगवाले पुरुषोंको पथ्य और हलके पनेसे ग्राही पाकमें मधुरहोनेसे पित्तकाकोप न करनेवालाऔर कषैलेपनसे उष्णतासे तथारूक्षतासे कफकानाशकहोताहै तक्रसेवनकरनेवाला पुरुष कभी व्यथाको नहीं प्राप्तहोताहै और उसको किसी प्रकारका रोगनहींहोता है जैसे देवता लोगोंको

अमृत सुखकारीहोताहै इसी प्रकार मनुष्योंको मट्ठा हितकारीहै उदास्वित कफवर्द्धकबलकारी और श्रमका अत्यन्त नाशकहोताहै छाछ शीतल हलकी कफकारी और पित्त श्रम तृषा तथा वातनाश-कहोतीहै और लवणयुक्त छाछ अग्निकोदीपन करतीहै ॥ १ ॥

अथोद्धृतघृतस्तोकोद्धृतानुद्धृतघृतानांतक्राणांगुणाः ॥

समुद्धृतंघृतंतक्रंपथ्यंलघुविशेषतः । स्तोकोद्धृतघृतंतस्माद्गुरुवृष्यंकफावहम् ॥ अनुद्धृतघृतंसान्द्रंगुरुपुष्टिकफप्रदम् ॥ २ ॥

घृतनिकलेहुए अल्पघृतनिकलेहुए और नहींघृत निकलेहुए मट्ठोंके गुण ॥

घी निकलाहुआमट्ठा पथ्य तथाअत्यन्त हलका कुछवी निकला हुआ मट्ठा इसकी अपेक्षा कुछ भारी पुष्ट तथा कफकारी और बिनघी निकला हुआ मट्ठा गाढ़ा भारी और पुष्टि तथा कफकारी होताहै ॥ २ ॥

अथ दोषविशेषेव्याधिविशेषेतक्रविशेषाः ॥

वातेऽम्लंशस्यतेतक्रंशुण्ठीसैन्धवसंयुतम् । पित्तेस्वादुसितायुक्तंसव्योषमधिकेकफे ॥ हिङ्गुजीरयुतंघोलंसैन्धवेनचसंयुतम् । भवेदतीववातघ्नमर्शोऽतीसारहृत्परम् ॥ रुचिदंपुष्टिदंबल्यंवस्तिशूलविनाशनम् । मूत्रकृच्छ्रेतुसगुड़ंपाण्डुरोगेसचित्रकम् ॥ ३ ॥

दोष विशेष और रोग विशेष में तक्र बिशेष ॥

वातमें सोंठि तथा सैंधवयुक्त खट्टा मट्ठा श्रेष्ठहै पित्तमें मीश्रीयुक्त मधुर मट्ठा श्रेष्ठहै कफमें त्रिकटु युक्त मट्ठा श्रेष्ठहै हींग जीरा और सैंधव युक्तघोल अत्यन्त वात नाशक रुचिकारी पुष्ट तथा बल-कारी वस्तिकी पीडा नाशक और बवासीर तथा अतीसार नाश करने में श्रेष्ठ होताहै गुड़युक्त घोल मूत्रकृच्छ्रमें हितहै और चीतायुक्त घोल पांडुरोगमें हितकारी होताहै ॥ ३ ॥

अथामपक्वतक्रगुणाः ॥

तक्रमामंकफंकोष्ठहन्तिकण्ठेकरोतिच । पीनसश्वासकासादौपक्वमेवप्रयुज्यते ॥ ४ ॥

कच्चे और पक्के मट्ठे केगुण ॥

कच्चा मट्ठा कोष्ठ के कफ का नाशक और कंठ में कफका करने वाला होता है पक्का मट्ठापीनस श्वास तथा खांसी आदिरोगों में व्यवहार करना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ तक्रसेवननिमित्तानि ॥

शीतकालेऽग्निमान्द्येचतथावातामयेषुच । अरुचौस्रोतसांरोधेतक्रंस्यादमृतोपमम् ॥ तत्तुहन्तिगरच्छर्दिंप्रसेकविषमज्वरान् । पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ॥ मेहंगुल्ममतीसारंशूलप्लीहोदरारुचीः । श्वित्रकोठगतव्याधीन्कुष्ठशोथतृषाकृमीन् ॥ ५ ॥

मट्ठे के सेवनके प्रयोजन ॥

शीतकाल मंदाग्नि बातरोग अरुचि और श्रोतों के रुकनेमें मट्ठा अमृत के समान हितहोता है मट्ठा गरदोष छर्दिप्रसेक बिषमज्वर पांडु मेद ग्रहणी बवासीर मूत्राघात भगन्दर प्रमेह गुल्म अतीसार शूल प्लीहा अरुचि उदर श्वेतकुष्ठ कोष्ठकेरोग कुष्ठ सूजन तृषा तथा कृमि नाशक होताहै ॥ ५ ॥

तक्रस्याविषयाः ॥

नैवतक्रंक्षतेदद्यात्नोष्णकालेनदुर्बले । नमूर्च्छाभ्रमदाहेषुनरोगेरक्तपित्तजे ॥ ६ ॥

मट्ठा नहीं देने के स्थान ॥

घाव ग्रीष्मऋतु दुर्बल पुरुष मूर्च्छा भ्रम दाह और रक्त पित्त में मट्ठा हितकारी नहींहोताहै ॥ ६ ॥

अथ गव्यादीनांतक्राणांविशिष्टागुणाः ॥

यान्युक्तानिदधीन्यष्टौतद्गुणंतक्रमादिशेत् ॥ ७ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेतक्रवर्गः ॥

गौआदि के मट्ठेके विशेष गुण ॥

जो आठ प्रकार के दही कहे गये हैं उसी प्रकार उनके मट्ठे भी जानने चाहियें ॥ ७ ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेतक्रवर्गः समाप्तः ॥

अथनवनीतवर्गः ॥ तत्र नवनीतस्यनामानिगुणाश्च ॥

मृक्षणंसरजंहैयङ्गवीनंनवनीतकम् । नवनीतंहितंगव्यंवृष्यंवर्णबलाग्निकृत् ॥ संग्राहिवातपित्तासृक्क्षयार्शोऽर्दितकासहृत् । तद्धितंबालकेवृद्धेविशेषादमृतंशिशोः ॥ १ ॥

अथनवनीत वर्गः ॥ मक्खन के नामऔर गुण ॥

मृक्षण सरज हैयंगवीन और नवनीत यह मक्खन के नामहैं गौका मक्खन हितकारी वीर्य वर्द्धक वर्णतथा बलकारी दीपन ग्राही और वातरक्त पित्त और क्षय बवासीर अर्दित बात तथा खांसी का नाशक होता है मक्खन बालक तथा वृद्ध सभीको हितहै छोटे लड़कोंको अमृत के समान होताहै ॥ १ ॥

माहिषस्यगुणाः ॥

नवनीतंमहिष्यास्तुवातश्लेष्मकरंगुरु । दाहपित्तश्रमहरंमेदःशुक्रविवर्द्धनम् ॥ २ ॥

भैंसके मक्खन के गुण ॥

भैंसका मक्खन बादी कफकारी भारी मेदवर्द्धक बीर्यवर्द्धक और दाहपित्त तथा श्रमनाशकहोताहै २

अथ पयसोनवनीतस्यगुणाः ॥

दुग्धोत्थंनवनीतंतुचक्षुष्यंरक्तपित्तनुत्॥वृष्यंबल्यमतिस्निग्धंमधुरंग्राहिशीतलम् ३॥

दूधके मक्खन के गुण ॥

दूध से निकला हुआ मक्खन नेत्रों को हित रक्त पित्त नाशक बीर्य वर्द्धक बलकारी अत्यन्त स्निग्ध मधुर ग्राही और शीतल होता है ॥ ३ ॥

अथ सद्यःसमुद्धृतनवनीतगुणाः ॥

नवनीतन्तुसद्यस्कंस्वादुग्राहिहिमंलघु।मेध्यंकिञ्चित्कषायाम्लभीषत्तक्रांशसंक्रमात् ४

ताजेमक्खन के गुण ॥

शीघ्र निकला हुआ मक्खन मधुर ग्राही शीतल हलका मेधाको हित और मट्ठे के संयोगसे कुछ कषैला तथा खट्टा होता है ॥ ४ ॥

अथ चिरन्तननवनीतगुणाः ॥
सक्षारकटुकाम्लत्वाच्छर्द्यर्शःकुष्ठकारकम्। श्लेष्मलंगुरुमेदस्यंनवनीतंचिरन्तनम्५॥
इतिश्रीभावप्रकाशे नवनातवगः ॥

पुराने मक्खन के गुण ॥

पुराना मक्खन क्षार कटु तथा अम्ल होने के कारण छर्दि बवासीर कुष्ठ कफ तथा मेदको करता है और भारी होताहै ॥ ५ ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेनवनीतवर्गः समाप्तः ॥

अथ घृतवर्गः । तत्रघृतस्यनामानिगुणाश्च ॥
घृतमाज्यंहविःसर्पिःकथ्यन्तेतद्गुणाअथ। घृतंरसायनंस्वादुचक्षुष्यंवह्निदीपनम्॥ शीतवीर्य्यविषालक्ष्मीपापपित्तानिलापहम् ॥ अल्पाभिष्यन्दिकान्त्योजस्तेजोलावण्यबुद्धिकृत् ॥ स्वरस्मृतिकरंमेध्यमायुष्यंबलकृद्गुरु । उदावर्त्तज्वरोन्मादशूलानाहव्रणान्हरेत् ॥ स्निग्धंकफकरंरक्षःक्षयवीसर्परक्तनुत् ॥ १ ॥

अथघृतवर्गः ॥ घीकेनाम और गुण ॥

घृत आज्य हविष् और सर्पिष् यह घीके नाम हैं घी रसायन मधुर नेत्रों को हित दीपन वीर्य में शीतल कुछ अभिष्यन्दी कान्तिकारक ओजवर्द्धक तेजकारी शोभा तथा बुद्धिवर्द्धक स्वरतथा स्मृति कारी मेधातथा आयुकोहित बलकारी भारी स्निग्ध कफ कारी राक्षसों के दोषका नाशक और बिष अलक्ष्मी पाप पित्त बात उदावर्त्त ज्वर उन्माद शूल आनाह घाव क्षय वीसर्प तथा रक्त दोष नाशक होताहै ॥ १ ॥

गव्यस्यघृतस्य गुणाः ॥
गव्यंघृतंविशेषेणचक्षुष्यंवृष्यमग्निकृत् । स्वादुपाककरंशीतंवातपित्तंकफापहम् ॥ मेधालावण्यकान्त्योजस्तेजोवृद्धिकरंपरम् । अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नंवयसःस्थापकंगुरु ॥ बल्यंपवित्रमायुष्यंसुमङ्गल्यंरसायनम् । सुगन्धंरोचकंचारुसर्वाज्येषुगुणाधिकम् ॥ २ ॥

गौकेघीके गुण ॥

गौका घी नेत्रोंको अत्यन्तहित वीर्यवर्द्धक दीपन रस तथा पाकमें मधुर बातादि त्रिदोष नाशक मेधाकारी शोभा तथा कान्तिवर्द्धक ओज तथा तेजकारक दुर्भाग्यनाशक पातक तथा राक्षस दोषनाशक अवस्थाका स्थित रखनेवाला भारी बलिष्ठ पवित्र आयुकोहित मंगलरूप रसायन सुगन्धियुक्त रुचिकारी और सुन्दर होताहै यह सम्पूर्ण घृतोंमें अधिक गुणवालाहै ॥ २ ॥

माहिषस्य गुणाः ॥
माहिषन्तुघृतंस्वादुपित्तरक्तानिलापहम् । शीतलंश्लेष्मलंवृष्यंगुरुस्वादुविपच्यते ३ ॥

भैंसकेघीके गुण ॥

भैंसकाघी मधुर रक्त पित्त तथा बातनाशक शीतल कफकारी वीर्यबर्द्धक भारी और पाकमें मधुर होता है ॥ ३ ॥

छागस्य गुणाः ॥

आजमाज्यङ्कफरोत्याग्निंचक्षुष्यंबलवर्द्धनम् । कासेश्वासेक्षयेचापिहितंपाकेभवेत्कटु॥४॥

बकरीके घीके गुण ॥

बकरीका घी दीपन नेत्रोंकोहित बलवर्द्धक पाकमेंकटु और खांसी श्वास तथा राजयक्ष्मा रोग में हितकारी होताहै ॥ ४ ॥

अथ उष्ट्रीघृतम् ॥

औष्ट्रंकटुघृतंपाकेशोषंकृमिविषापहम् । दीपनंकफवातघ्नंकुष्ठगुल्मोदरापहम् ॥ ५ ॥

उँटनी के घीके गुण ॥

उँटनी का घी पाकमें कटु दीपन और सूजन बिष कृमि कफ वात कुष्ठ गुल्म तथा उदर रोग नाशक होताहै ॥ ५ ॥

अथ आविकंघृतम् ॥

पाकेलघ्वाविकंसर्पिःसर्वरोगविनाशनम् । बृद्धिंकरोतिचास्थीनामश्मरीशर्करापहम् ॥ चक्षुष्यमग्निध्युषणंवातदोषनिवारणम् ॥ ६ ॥

भेड़ के घीके गुण ॥

भेड़का घी पाकमें हलका सर्वरोग नाशक हड्डियों का बढ़ाने वाला नेत्रोंकोहित दीपन और पथरी तथा वातरोग नाशक होताहै ॥ ६ ॥

अथ नारीघृतम् ॥

कफेऽनिलेयोनिदोषेपित्तेरक्तेचतद्धितम् । चक्षुष्यमाज्यंस्त्रीणांवासर्पिःस्यादमृतोपमम् ७।

नारीके घीके गुण ॥

नारीका घी नेत्रोंको हित और कफ वात योनिरोग पित्त रक्तमें अमृतके समान गुणकारी होताहै ॥ ७ ॥

अथाश्वीघृतम् ॥

वृद्धिंकरोतिदेहाग्नेर्लघुपाकेविषापहम् । तर्पणंनेत्ररोगघ्नंदाहनुद्वडवाघृतम् ॥ ८ ॥

घोड़ीके घृतके गुण ॥

घोड़ीका घी देहकी अग्निका बढ़ाने वाला पाकमें हलका तृप्तिकारी और बिष दोष नेत्ररोग तथा दाह नाशक होताहै ॥ ८ ॥

दुग्धघृतस्यगुणाः ॥

घृतंदुग्धभवंग्राहिशीतलंनेत्ररोगहृत् । निहन्तिपित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान् ॥ ९ ॥

दूधके घीके गुण ॥

दूधसे निकाला हुआघी ग्राही शीतल और नेत्ररोग पित्त दाह रक्त दोष मंद मूर्च्छा भ्रम तथावात नाशक होताहै ॥ ९ ॥

अथह्यस्तनदधिजघृतगुणाः ॥

हविर्ह्यस्तनदुग्धोत्थंतत्स्याद्धेयङ्गवीनकम् । हेयङ्गवीनंचक्षुष्यंदीपनंरुचिकृत्परम् ॥ बलकृद्बृंहणंवृष्यंविशेषात्तुज्वरनाशनम् ॥ १० ॥

एकदिनके जमेहुए दहीके घीके गुण ॥

एकदिनके जमेहुये दहीसे निकले हुये घी कोहैयंगवीन कहतेहैं यह नेत्रोंको हित दीपन अत्यन्त रुचिकारी बल तथा धातुवर्द्धक वीर्यवर्द्धक और विशेष करके ज्वरनाशक होताहै ॥ १० ॥

पुराणघृतस्यगुणाः ॥

वर्षादूर्ध्वंभवेदाज्यंपुराणंतत्त्रिदोषनुत्। मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम् ॥ य थायथाऽखिलंसर्पिःपुराणमधिकंभवेत्। तथातथाऽगुणैःस्वैःस्वैरधिकंतदुदाहृतम्॥ ११॥

पुराने घीके गुण ॥

एकबर्षके रक्खेहुये घीको पुरानघृतकहतेहैं यह त्रिदोषनाशक और मूर्च्छा कुष्ठविष उन्माद मृगीतथा तिमिर नाशकहोता है संपूर्णघी जैसे २ पुराने होतेहैं वैसेही वैसे अपने २ गुणोंमें अधिकहोते हैं ११ ॥

अथनूतनस्यघृतस्यविषयाः ॥

योंजयेन्नवमेवाज्यंभोजनेतर्पणेश्रमे। बलक्षयेपाण्डुरोगेकामलानेत्ररोगयोः ॥ १२ ॥

नवीन घीके विषय ॥

भोजन तृप्ति श्रम बलकानाश पांडुरोग कामला तथा नेत्ररोग में नवीन घृतको काम में लाना चाहिये ॥ १२ ॥

घृतप्रयोगस्याविषयाः ॥

राजयक्ष्मणिबालेचवृद्धेश्लेष्मकृतेगदे । रोगेसामेविसूच्याञ्चविबन्धेचमदात्यये ॥ ज्वरेचदहनेमन्देनसर्पिर्बहुमन्यते ॥ १३ ॥

इतिश्रीभावप्रकशेघृतवर्गः ॥

घीदेनेमें निषेध कियेहुये स्थान ॥

राजयक्ष्मा कफरोग आमयुक्तरोग विसूचिका विबन्ध मदात्यय ज्वर तथामन्दाग्निमें और बालक तथा वृद्धोंको बहुत घी उपकारी नहीं है ॥ १३ ॥

इति भावप्रकाशस्यभाषानुवादे घृतवर्गः समाप्तः ॥

अथ मूत्रवर्गः। तत्रगोमूत्रगुणाः ॥

गोमूत्रंकटुतीक्ष्णोष्णंक्षारंतिक्तकषायकम्। लघ्वग्निदीपनंमेध्यंपित्तकृत्कफवातहृत् ॥ शूलगुल्मोदरानाहकण्ड्वक्षिमुखरोगजित्। किलासगदवातामवस्तिरुक्कुष्ठनाशनम् ॥ कासश्वासापहंशोथकामलापाण्डुरोगहृत्।कण्डूकिलासगदशूलमुखाक्षिरोगान् गुल्मातिसारमरुदामयमूत्ररोधान्॥ कासंसकुष्ठजठरकृमिपाण्डुरोगान् गोमूत्रमेकमपिपीतमपाकरोति ॥ सर्वेष्वपिचमूत्रेषुगोमूत्रंगुणतोऽधिकम्। अतोऽविशेषात्कथनेमूत्रंगोमूत्रमुच्यते॥ प्लीहोदरश्वासकासेशाथवर्चोग्रहापहम् । शूलगुल्मरुजानाहकामलापाण्डुरोगहृत् ॥ कैषायंतिक्ततीक्ष्णञ्चपूरणात्कर्णशूलनुत् ॥ १ ॥

अथमूत्रवर्गः। गोमूत्र के गुण ॥

गोमूत्र कटु तीक्ष्ण उष्ण क्षार तिक्त कषैला हलका दीपन मेधाकोहित पित्तकारी और कफवात शूल गुल्म उदर आनाह खुजली नेत्ररोग मुखरोग किलास आमवात वस्तिरोग कुष्ठ खांसी श्वास सूजन कामला तथा पांडुरोग नाशक होताहै ग्रन्थान्तर में कहा हुआ है कि एक गोमूत्र पान करने से खुजली किलास शूल मुखरोग नेत्ररोग गुल्म अतीसार वातरोग मूत्राघात खांसी कुष्ठउदर कृमि

और पांडु इन सब रोगोंको नाशकरताहै सम्पूर्ण मूत्रोंमें गोमूत्र अधिक गुणवाला होताहै इसीकारण से जहां सामान्यतासे मूत्र कहाहो वहां गोमूत्रही का व्यवहार करना चाहिये गोमूत्र कफैला तिक्त तीक्ष्ण और प्लीहा उदर श्वास खांसी सूजन मलका रुकना शूल गुल्म आनाह कामला तथा पांडु रोगनाशक और कानोंमें भरनेसे कानकी पीड़ाका नाश होताहै ॥ १ ॥

मानुषमूत्रगुणाः ॥

नरमूत्रंगरंहन्तिसेवितन्तद्रसायनम् । रक्तपामाहरंतीक्ष्णंसक्षारलवणंस्मृतम् ॥ गो जाविमहिषीणांतुस्त्रीणांमूत्रंप्रशस्यते । खरोष्ट्रभनराश्वानांपुंसांमूत्रंहितंस्मृतम् ॥ २ ॥

इतिश्री भावप्रकाशेमूत्रवर्गः ॥

मनुष्यके मूत्रके गुण ॥

मनुष्यका मूत्र गरदोषनाशक रसायन रक्तदोष तथा खुजलीनाशक तीक्ष्ण क्षार और नमकीनहो ताहै गौ बकरी भेड़ और भैंस इनमें स्त्रीजाति (मादा) कामूत्र श्रेष्ठहै गदहा ऊंट हाथी मनुष्य और घोड़ा इनमें नरजातिकामूत्र श्रेष्ठहै ॥ २ ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेमूत्रवर्गः समाप्तः ॥

अथ तैलवर्गः । तत्रतैलस्यस्वरूपनिरूपणम् ॥

तिलादिस्निग्धवस्तूनांस्नेहस्तैलमुदाहृतम् ।तन्तुवातहरंसर्वविशेषात्तिलसम्भवम्॥१ ॥

अथ तैल वर्गः ॥ तेलके स्वरूपका वर्णन ॥

तिल आदिक स्निग्ध बस्तुओंके स्नेहको तैल कहतेहैं सम्पूर्ण तेल वातनाशक होते हैं और तिल का तेल विशेष करके ॥ १ ॥

अथ तिलतैलगुणाः ॥

तिलतैलंगुरुस्थैर्य्यबलवर्णकरंसरम् । वृष्यंविकाशिविषदंमधुरंरसपाकयोः॥सूक्ष्मंकषा यानुरसंतिक्तंवातकफापहम् । वीर्येणोष्णंहिमंस्पर्शेबृंहणंरक्तपित्तकृत् ॥ लेखनंबद्धविएमू त्रंगर्भाशयविशोधनम् । दीपनंबुद्धिदंमेध्यंव्यवायिव्रणमेहनुत् ॥ श्रोत्रयोनिशिरःशूल नाशनंलघुताकरम् । त्वच्यंकेश्यञ्चचक्षुष्यमभ्यङ्गेभोजनेऽन्यथा ॥ छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्ट मथितक्षतपिच्छिते । भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धविश्लिष्टदारिते ॥ तथाभिहतानिर्भुग्नम्मृ गव्याधादिविक्षते । वस्तौपानेऽन्नसंस्कारेनस्येकर्णाक्षिपूरणे ॥ सेकाभ्यङ्गावगाहेषुतिलतै लंप्रशस्यते । ननुबृंहणलेखनयोःकथंसामानाधिकरण्यमित्याह । रूक्षादिदुष्टःपवनःस्रो तःसङ्कोचयेद्यदा । रसोसम्यग्वहन्काश्र्यंकुर्य्याद्रक्तादिवर्द्धयन् ॥ तेषुप्रवेष्टुंसरतसौक्ष्म्य स्निग्धत्वमार्दवैः । तैलंक्षमंरसंनेतुंकृशानांतेनबृंहणम् ॥ व्यवायिसूक्ष्मतीक्ष्णोष्णसर त्वैर्मेदसःक्षयम् । शनैःप्रकुरुतेतैलंतेनलेखनमीरितम् ॥ द्रुतंपुरीषंबध्नातिस्खलितंतत्प्र वर्त्तयेत् । ग्राहकंसारकञ्चापितेनतैलमुदीरितम् ॥ घृतमब्दात्परंपक्वंहीनवीर्यंप्रजायते । तैलपक्वमपक्वंवाचिरस्थायिगुणाधिकम् ॥ २ ॥

तिलके तेलके गुण ॥

तिलका तेल भारी स्थिरताकारक बल तथा वर्णवर्द्धक दस्तावर पुष्टिकारक विकाशी विशद रस तथा पाकमें मधुर सूक्ष्म कुछ कषैला तिक्त बातघ्न कफनाशक वीर्यमें उष्ण स्पर्शमें शीतल धातु वर्द्धक रक्तपित्तकारी कृशताकारी मलमूत्र रोधक गर्भाशय शोधक दीपन बुद्धिदायक मेधाको हित व्यवायि घावनाशक प्रमेहनाशक बर्ण तथा योनि शूलनाशक शिरकी पीड़ाका दूरकरनेवाला शरीरको हलका करनेवाला और शरीरमें लगानेसे त्वचा केश तथा नेत्रोंकोहित परन्तु खानेसे त्वचा आदिकों को अहित होताहै यह छिन्न भिन्न च्युत मथित उत्पिष्ट क्षत पिच्चिटभग्न स्फुटित विद्ध अग्निदग्ध वि- श्लिष्ट विदारित अभिहत निर्भुग्न मृग तथा व्याघ्र आदिकोंसेविक्षत (इन शब्दोंका विशेष अर्थ भग्न निदानमें कियाहै) पुरुषोंको वस्ति क्रियामें पानकरने में अन्नके संस्कार में नासलेने में कान तथा नेत्रोंके भरनेमें परिषेक में अभ्यंगमें और अवगाहमें श्रेष्ठ होताहै यहांपर यह सन्देह होसक्ताहै कि एकही बस्तुमें लेखन (कृशताकरना) और बृंहण(धातुओंका बढ़ना)यह दोनों गुण कैसे होसक्ते हैं इसका उत्तर यहहै कि जिससमय रुक्षादि बस्तुओंके सेवनसे दूषित बायु श्रोतोंको संकुचित करताहै तब रस अच्छेप्रकारसे बह नहीं सक्ताहै इस्से रुधिरादिकोंकी वृद्धि नहोने से कृशता होती है सर सूक्ष्मता स्निग्धता और मृदुतासे तेल रस केलेजानेको समर्थ होताहै इसीसे कृश पुरुषोंकेलिये धातु वर्द्धक होताहै व्यवाई सूक्ष्म तीक्ष्ण उष्ण और सर इन गुणोंके द्वारा तेल धीरे २ मेद धातुको क्षयकर ताहै इसलिये पुष्टताकारक कहलाताहै तेल पतले मलको बांधताहै इस्से ग्राही और स्खलित मल को निकालताहै इस्से दस्तावर कहलाताहै एकबर्षका पुराना पकाहुआघी हीन वीर्य होजाताहै परंतु तेल कच्चाहो वा पक्का जितना पुरानाहोगा उतनाही अधिक गणकारीहोगा ॥ २ ॥

सरिसवराईतैलगुणाः ॥

दीपनंसार्षपंतैलंकटुपाकरसंलघु । लेखनंस्पर्शवीर्य्योष्णंतीक्ष्णपित्तास्रदूषकम् ॥ कफ मेदोऽनिलार्शोघ्नंशिरःकर्णामयापहम् । कण्डूकुष्ठकृमिश्वित्रकोठदुष्टकृमिप्रणुत् ॥ तद्वद्रा जिकयोस्तैलंविशेषान्मूत्रकृच्छ्रकृत् । राजिकयोःकृष्णराईआरक्तराईद्वयोः ॥ ३ ॥

सरसों और राईके तेलके गुण ॥

सरसोंका तेल दीपन रस तथा पाकमें कटु हलका कृशताकारक स्पर्श तथा वीर्य में उष्ण तीक्ष्ण रक्तपित्त दूषक और कफ मेद बात बवासीर शिरके रोग कानके रोग खुजली कुष्ठ कृमि श्वेत कुष्ठ कोठ तथा दुष्ट घावनाशकहोताहै कृष्ण तथा लाल राईका तेलभी इसी के समान गुणकारी होताहै और विशेषकरके मूत्र कृच्छ्रकारी होताहै ॥ ३ ॥

तोरीतैलगुणाः ॥

तीक्ष्णोष्णंतुवरीतैलंलघुग्राहिकफास्रजित् । वह्निकृद्विषहत्कण्डूकुष्ठकोठकृमिप्रणुत् ॥ मेदोदोषापहञ्चापिव्रणशोथहरंपरम् ॥ ४ ॥

तुबरीतेलके गुण ॥

तुबरीका तेल तीक्ष्ण उष्ण हलका ग्राही दीपन और कफ रक्तदोष विष खुजली कुष्ठ कोठ कृमि मेददोष घाव तथा सूजनका अत्यन्त नाशक होताहै ॥ ४ ॥

अथ अतसीतैलगुणाः ॥

अतसीतैलमाग्नेयंस्निग्धोष्णंकफपित्तकृत् । कटुपाकमचक्षुष्यंबल्यंवातहरंगुरु ॥ म लक्रद्रसतःस्वादुग्राहित्वग्दोषहद्घनम् । वस्तौपानेतथाभ्यङ्गेनस्येकर्णस्यपूरणे ॥ अनु पानविधौचापिप्रयोज्यंवातशान्तये ॥ ५ ॥

अलसीके तेलके गुण ॥

अलसीका तेल अग्निके गुणवाला स्निग्ध उष्ण कफ तथा पित्तवर्द्धक पाकमें कटु नेत्रोंको अहित बलकारी वात नाशक भारी मल वर्द्धक मधुर ग्राही त्वचाके दोषों का नाशक और घनाहोताहै वस्ति क्रिया पान अभ्यंग (तेल लगाना) नास कानोंका भरना अनुपान और बातकी शान्ति करनेकेलिये अलसीका तेल श्रेष्ठहै ॥ ५॥

वररेतैलगुणाः ॥

कुसुम्भतैलमम्लंस्यादुष्णंगुरुविदाहिच ॥ चतुर्भ्यामहितंबल्यंरक्तपित्तकफप्रदम् ६॥

कुसुमके तेलके गुण ॥

कुसुमका तेल खट्टा उष्ण भारी विदाही नेत्रोंको अहित बलकारी और रक्तपित्त तथा कफकारक होता है ॥६ ॥

अथ खाखसबीजतैलस्यगुणाः ॥

तैलंतुखसबीजानांबल्यंवृष्यंगुरुस्मृतम् । वातहृत्कफहच्छीतंस्वादुपाकरसंचतत् ७॥

खसखसके तेलके गुण ॥

खसखसका तेल बलकारी पुष्टिदायक भारी बातनाशक कफघ्न शीतल और रस तथा पाक में मधुर होताहै ॥ ७ ॥

एरण्डतैलगुणाः ॥

एरण्डतैलंतीक्ष्णोष्णंदीपनंपिच्छिलंगुरु ॥ वृष्यंत्वच्यंवयःस्थापिमेधाकान्तिबलप्र दम् ॥ कषायानुरसंसूक्ष्मंयोनिशुक्रविशोधनम् । विस्रंस्वादुरसेपाकेसतिक्तंकटुकंसरम् ॥ विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत् । हन्तिवातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ॥ वात शोणितविड्बन्धव्रध्मशोथामविद्रधीन् ॥ आमवातगजेंद्रस्यशरीरवनचारिणः ॥ एकएव निहन्तायमेरण्डस्नेहकेशरी ॥ ८ ॥

रेंड़ीके तेलके गुण ॥

रेंड़ीका तेल तीक्ष्ण उष्ण दीपन पिच्छिल भारी पुष्टिकारक त्वचाकोहित अवस्थाको स्थिररख नेवाला मेधाकारी कान्ति तथा बलकारी कुछ कषैला सूक्ष्म योनि तथा वीर्यशोधक दुर्गन्धियुक्त रस तथा पाक में मधुर तिक्त कटु दस्तावर और विषमज्वर हृदयरोग पीठकी पीड़ा गुह्यका शूल वात उदर आनाह गुल्म अष्टीला कटिग्रह बातरक्त मलका रुकना बद सूजन आम तथा विद्रधिनाशक होताहै शरीररूपी वनमें विचरते हुए आम बातरूपी हाथीको मारने वाला केवल सिंहरूप रेंडीका तेलही है ॥ ८ ॥

रालतैलगुणाः ॥

तैलंसर्जरसोद्भूतंविस्फोटव्रणनाशनम् । कुष्ठपामाकृमिहरंवातश्लेष्मामयापहम् ९ ॥

रालके तेलके गुण ॥

रालकातेल विस्फोट घाव कुष्ठ खुजली कृमि और बात कफके रोगोंका नाशक होताहै ॥ ९ ॥

सर्वतैलगुणाः ॥

तैलंस्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलंमतम्॥अतःशेषस्यतैलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिवत् १०

इतिश्रीभावप्रकाशेतैलवर्गः ॥

संपूर्ण तेलोंके गुण ॥

वाग्भटने कहाहैकि जिस बस्तुका तेल होताहै उसमें उसीके समान गुण होतेहैं इस्से जो तेल नहीं लिखेगयेहैं उनमें उनके कारण के समान गुण जानने चाहिये ॥ १० ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेतैलवर्गःसमाप्तः ॥

अथ सन्धानवर्गः । तत्रकाञ्जिकस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

सन्धितंधान्यमण्डादिकाञ्जिकंकथ्यतेजनैः । काञ्जिकंभेदितीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनं लघु ॥ दाहज्वरहरंस्पर्शात्पानाद्वातकफापहम् । माषादिवटकैर्यत्तुक्रियतेतद्गुणाधिकम् ॥ लघुवातहरन्तत्तुरोचनंपाचनंपरम् । शूलाजीर्णविबन्धाननाशनंवस्तिशोधनम् ॥ शोष मूर्च्छाश्रमार्त्तानांमदकण्डूविशोषिणाम्। कुष्ठिनांरक्तपित्तीनांकाञ्जिकंनप्रशस्यते ॥ पाण्डु रोगेयक्ष्मणिचतथाशोषातुरेषुच । क्षतक्षीणेतथाश्रान्ते मन्दज्वरनिपीड़िते ॥ एतेषान्तुहि तंप्रोक्तंकाञ्जिकंदोषकारकम् ॥ १ ॥

अथसंधान (अचार) वर्ग । कांजीके लक्षण और गुण ॥

संधान कियेहुए धान्य के मंड आदिको कांजिक कहते हैं कांजी भेदक तीक्ष्ण उष्ण रुचिकारी पाचक और हलकी होती है इसके स्पर्श करने से दाह तथा ज्वर का नाश होताहै और पान करने से बात और कफ का नाश होताहै उर्द आदिके बड़ों से जो कांजी बनती है वह अधिक गुणवाली हलकी वात नाशक रुचिकारी अत्यन्त पाचक वस्तिशोधक और शूल अजीर्ण विबन्ध तथा आमदोष नाशक होतीहै शोष मूर्च्छा भ्रम मदरोग खुजली कुष्ठतथा रक्त पित्त रोगवाले पुरुषोंको कांजी हितकारी नहीं है पांडुरोग राजयक्ष्मा शोषरोग क्षतक्षीण श्रम और मन्द ज्वर में कांजी दोषकारी होती है ॥ १ ॥

अथ तुषोदकस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

तुषोदकंयवैरामैःसतुषैःशकलीकृतैः । यवैःउदकेसंहितैःसन्धानवर्गोक्तत्वात् ॥ तुषाम्बु दीपनंहृद्यंपाण्डुकृमिगदापहम् । तीक्ष्णोष्णंपाचनंपित्तरक्तकृद्वस्तिशूलनुत् ॥ २ ॥

तुषोदक के लक्षण और गुण ॥

भूसी समेत कच्चे जवोंको कूटकर जो कांजीबनाई जाती है उसको तुषोदक कहतेहैं तुषोदक दीपन हृदय कोहित तीक्ष्ण उष्ण पाचक रक्तपित्तकारी और पांडु कृमि तथा वस्तिशूल नाशक होताहै ॥ २॥

अथ सौवीरस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

सौवीरन्तुयवैरामैःपक्वैर्वानिस्तुषैःकृतम् । गोधूमैरपिसौवीरमाचार्य्याःकेचिदूचिरे ॥सौ वीरन्तुग्रहण्यर्शःकफघ्नंभेदिदीपनम् । उदावर्त्ताङ्गमर्दास्थिशूलानाहेषुशस्यते ॥ ३ ॥

सौवीरके लक्षण और गुण ॥

भूसीविना पके अथवा कच्चे जवोंको कूटकर जो संधान किया जाताहै उसको सौवीर कहते हैं कोई कोई आचार्य गेहुंओंकोभी सौवीर कहतेहैं सौवीर ग्रहणी तथा बवासीर नाशक कफघ्न भेदक दीपन और उदावर्त्त अंगमर्द हड्डियोंकी पीड़ा तथा आनाह नाशक होताहै ॥ ३ ॥

अथारनालस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

आरनालन्तुगोधूमैरामैःस्यान्निस्तुषीकृतैः । पक्वैर्वासन्धितैस्तत्तुसौवीरसदृशंगुणैः ॥ ४ ॥

आरनाल के लक्षण और गुण ॥

विना भूसीके कच्चे अथवा पके गेंहुओं के संधान को आरनाल कहतेहैं इसमें सौ वीर के समान गुण होतेहैं ॥ ४ ॥ अथ धान्याम्लस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

धान्याम्लशालिचूर्णैश्चकोद्रवादिकृतंभवेत् । धान्याम्लंधान्ययोनित्वात्प्रीणनंलघुदीपनम् ॥ अरुचीवातरोगेषुसर्वेष्वास्थापनेहितम् ॥ ५ ॥

धान्याम्ल के लक्षण और गुण ॥

शालिचूर्ण और कोदों आदिकों के द्वारा जो संधान होताहै उसको धान्याम्ल कहते हैं धान्याम्ल धान्यसे उत्पन्न होनेके कारण प्रीतिकारक हलका दीपन और अरुचि संपूर्ण वात रोग तथा आस्थापन में हितकारी होताहै ॥ ५ ॥ अथ शिण्डाक्यालक्षणंगुणाश्च ॥

शिण्डाकीराजिकायुक्तैःस्यान्मूलकदलद्रवैः । सर्षपस्वरसैर्वापिशालिपिष्टकसंयुतैः॥ सन्धितैरितिशेषः । शिण्डाकीरोचनीगुर्वीपित्तश्लेष्मकरीस्मृता ॥ ६ ॥

शिंडाकी के लक्षण और गुण ॥

राई समेत मूली के पत्तोंके रससे अथवा चावल की पिट्ठी समेत सरसों के रससे जो संधान बनता है उसको शिंडाकी कहतेहैं शिंडाकी रुचिकारक भारी और कफ पित्तवर्द्धक होता है ॥ ६ ॥

अथ शुक्तस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

कन्दमूलफलादीनिसस्नेहलवणानिच । यत्रद्रव्येऽभिषूयन्तेतच्छुक्तमभिधीयते ॥ शुक्तंकफघ्नंतीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनंलघु । पाण्डुकृमिहरंरूक्षंभेदनंरक्तपित्तकृत् ॥ ७ ॥

जिस द्रव पदार्थ में तेल और लवण युक्त कन्द मूल और फलादिक छोड़ेजांय उसको शुक्त कहते हैं शुक्त कफनाशक तीक्ष्ण उष्ण रुचिकारी पाचक हलका पांडुतथा कृमिनाशक रूखा भेदक और रक्त पित्तकारी होताहै ॥ ७ ॥

अथ सन्धानस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

कन्दमूलफलाढ्यंयत्तत्तुविज्ञेयमासुतम् । तद्रुच्यंपाचनंवातहरंलघुविशेषतः ॥ ८ ॥

संधान के लक्षण और गुण ॥

अधिक कन्दमूल और फलों करके युक्त संधान कियेहुए द्रव पदार्थको आसुत कहते हैं आसुत रुचिकारी पाचक वातनाशक और हलका होताहै ॥ ८ ॥

अथ मद्यस्यनामानिलक्षणंगुणाश्च ॥

मद्यन्तुसीधुर्मैरेयमिराचमदिरासुरा । कादम्बरीवारुणीचहालापिबलबल्लभा ॥ पेयंय

दकंलोकेतन्मद्यमभिधीयते । यथारिष्टंसुरासीधुरासवाद्यमनेकधा ॥ मद्यंसर्वंभवेदुष्णं पित्तकृद्वातनाशनम् । भेदनंशीघ्रपाकञ्चरूक्षंकफहरंपरम् ॥ अम्लञ्चदीपनंरुच्यंपाचनंचाशुकरिच । तीक्ष्णंसूक्ष्मञ्चविशदंव्यवायिचविकाशिच ॥ ९ ॥

मद्य के नाम लक्षण और गुण ॥

मद्य सीधु मैरेय मिरा मदिरा सुरा कादम्बरी वारुणी हाला और वलवल्लभा यह मद्यके नामहैं लोक में मदकारी पीने के पदार्थों को मद्य कहतेहैं जैसे अरिष्ट सुरासीधु और आसवादिक अनेक प्रकार हैं सब प्रकार के मद्य उष्ण पित्तवर्द्धक वातनाशक भेदक शीघ्र पचनेवाले रूखे अत्यन्त कफ नाशक खट्टे दीपन रुचिकारी पाचक शीघ्रताकारी तीक्ष्ण सूक्ष्म विशद व्यवायी और विकाशी होतेहैं ॥ ९ ॥

अथा रिष्टस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

पक्वौषधाम्बुसिद्धंयन्मद्यंतत्स्यादरिष्टकम् । अरिष्टंमद्यमितिलोके ॥ यथाद्राक्षारिष्टम् । दशमूलारिष्टम् ॥ वव्वूलारिष्टमिति अरिष्टंलघुपाकेनसर्वतश्चगुणाधिकम् । अरिष्टस्यगुणाज्ञेयाबीजद्रव्यगुणैःसमाः ॥ १० ॥

अरिष्ट के लक्षण और गुण ॥

औषध और जलको पकाकर जो मद्य बनताहै उसको अरिष्ट कहतेहैं अरिष्ट संपूर्ण मद्योंमें अधिक गुणकारी हलका और जिस बस्तु से बनाहो उसके समान गुणकारी होताहै द्राक्षारिष्ट दशमूलारिष्ट और बव्वूलारिष्ट इत्यादि ॥ १० ॥

अथ सुरापानलक्षणंगुणाश्च ॥

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतंमद्यंसुरास्मृता ॥ सुरागुर्वीबलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा ॥ ग्राहिशोथञ्चगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ॥ ११ ॥

सुराके लक्षण और गुण ॥

धान और साठी आदिकी पीठीसे जो मद्य बनताहै उसको सुरा कहतेहैं सुरा भारी बलकारी दुग्धवर्द्धक शरीरको पुष्टकरने वाली मेद और कफकारी ग्राही और सूजन गुल्म बवासीर ग्रहणी तथा मूत्रकृच्छ्र नाशक होतीहै ॥ ११ ॥

अथसुराभेदोवारुणीतस्यालक्षणंगुणाश्च ।

पुनर्नवाशिलापिष्टैर्वारुणीविहितास्मृता । संहितैस्तालखर्जूररसैर्यासापिवारुणी॥सुरावद्वारुणीलघ्वीपीनसाध्मानशूलनुत् । सुरातोभेदार्थलघ्वीति ॥ १२ ॥

सुराभेद बारुणी के लक्षण और गुण ॥

सिलपर पीसीहुई पुनर्नवासे जो मद्य बनती है उसको बारुणी कहतेहैं खजूर और तालके रसको संधान करके जो मद्य बनतीहै उसको भी वारुणी कहतेहैं वारुणी सुराके समान गुणकारी अत्यन्त हलकी और पीनस आध्मान तथा शूलनाशक होतीहै ॥ १२ ॥

अथ सीधुद्वयस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

इक्षोःपक्वैःरसैःसिद्धःसीधुःपक्वरसश्चसः । आमैस्तैरेवयःसीधुःसचशीतरसःस्मृतः ॥

सीधुःपक्करसैःश्रेष्ठःस्वराग्निबलवर्णकृत् । वातपित्तकरःसद्यःस्नेहनोरोचनोहरेत् ॥ विबन्धमेदःशोफार्शःशोफोदरकफामयान् । तस्मादल्पगुणःशीतःरससंलेखनःस्मृतः॥१३॥

दोप्रकारके सीधुके लक्षण और गुण ॥

ईख के पक्के रससे जो मद्य बनतीहै उसको पक्करस सीधु और कच्चे रससे जो बनतीहै उसको शीत रस सीधु कहतेहैं पक्केरसका सीधु श्रेष्ठ गुणकारी स्वर तथा वर्णकोहित अग्नि तथा बलकारी बादी पित्तवर्द्धक शीघ्र स्निग्ध करनेवाली रुचिकारी और विबन्ध मेद शोष बवासीर सूजन उदर तथा कफ रोग नाशक होतीहै कच्चे रसकी सीधुमें इससे कम गुण होतेहैं और लेखन होती है ॥ १३ ॥

अथा सवस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

यदपक्वौषधाम्बुभ्यांसिद्धंमद्यंसआसवः । यथालोहासवादिःआसवस्यगुणाज्ञेयावीजद्रव्यगुणैःसमाः ॥ १४ ॥

आसव के लक्षण और गुण ॥

कच्ची औषधि और जल से जो मद्य बनती है उसको आसव कहते हैं यह जिस बस्तु से बनती है उसीके समान गुण करतीहै ॥ १४ ॥

अथ नवपुराणमद्यगुणाः ॥

मद्यंनवमभिष्यन्दित्रिदोषजनकंसरम् । अहृद्यंबृंहणन्दाहिदुर्गंधंविशदंगुरु ॥ जीर्णन्तदेवरोचिष्णुकृमिश्लेष्मानिलापहम् । हृद्यंसुगन्धिगुणवल्लघुस्रोतोविशोधनम् १५ ॥

नवीन और पुरानी मद्य के गुण ॥

नवीनमद्य अभिष्यन्दी त्रिदोषकारी दस्तावर हृदयको अहित धातुवर्द्धक दाहकारी दुर्गन्धि युक्त विशद और भारी होतीहै प्राचीन मद्य रुचिकारी कृमिनाशक कफघ्न वातनाशक हृदयको हित सुगंधि युक्त हलकी और श्रोतोंको शुद्ध करनेवाली होती है इसीमें विशेष गुण होते हैं ॥ १५ ॥

अथ सात्विकानांमद्यंपिवतांचेष्टाविशेषाः ॥

सात्विकेगीतहास्यादिराजसेसाहसादिकम् ॥ तामसेनिन्द्यकर्माणिनिद्राञ्चमदिराचरेत् । आचरेत्कुर्य्यात् ॥ १६ ॥

सात्विक आदि पुरुषोंकी मद्य पीनेकी चेष्टा ॥

सात्विक पुरुषमद्य पीने से गीततथा हास्यादिक राजसी पुरुष मद्य पीनेसे साहस आदिकार्य और तामसी पुरुषमद्यपीने से निन्दितकार्य्य तथा निद्राको प्राप्त होताहै ॥ १६ ॥

विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नैर्यथाबलम् । प्रहृष्टोयःपिवेन्मद्यंतस्यस्यादमृतंयथा ॥ किन्तुमद्यंस्वभावेनयथैवान्नंतथास्मृतम् । अयुक्तियुक्तंरोगायययुक्तियुक्तंयथामृतम् ॥ १७ ॥

जो पुरुषविधि पूर्वक समयपर मात्राके अनुसार हितकारी द्रव्योंकेसाथ बलके अनुसारमद्य पीताहै उसको वह मद्य अमृतके समान गुणकारी होतीहै मद्य स्वभावहीसे अन्नके समान होतीहै जैसेयुक्ति पूर्वक सेवन कियाहुआ अन्न अमृतके समान गुणकारी होता है और विना युक्तिके रोगों को उत्पन्न करताहै इसीप्रकार मद्य कोभी जानना चाहिये ॥ १७ ॥

अथ मद्यानांगन्धनाशनोपायः ॥

मुस्तैलबालगदजीरकधान्यकैल यश्चर्वयन्सदसिवाचमभिव्यनक्ति ॥ स्वाभाविकं मुखजभुजभ्रुतिपूतिगन्धंगन्धञ्चमद्यलशुनादिभवञ्चनूनम् ॥ १८ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेसन्धानवर्गः ॥

मद्यकी दुर्गन्धि नाशकरनेका उपाय ॥

नागरमोथा एलवालुक कूट जीरा धानियां और इलायची इनसबको चाबकर जो सभामें बोल चालकरताहै उसके मुखकी स्वाभाविक दुर्गन्धि और मद्य तथा लहसन आदिकीभी दुर्गन्धि मिट जाती है ॥ १८ ॥ इतिश्री भावप्रकाशस्य भाषानुवादे संधानवर्गः समाप्तः ॥

अथ मधुवर्गःतत्रमधुनोनामानिगुणाश्च ॥

मधुमाक्षीकमाध्वीकक्षौद्रसारघ्यमीरितम् । मक्षिकावरटीभृङ्गवान्तपुष्परसोद्भवम् ॥ मधुशीतंलघुस्वादुरूक्षंग्राहिविलेखनम् । चक्षुष्यन्दीपनंस्वर्य्यव्रणशोधनरोपणम् ॥ सौकुमार्य्यकरंसूक्ष्मंपरंश्रोतोविशोधनम् । कषायानुरसंह्लादिप्रसादजनकंपरम् ॥ वर्ण्यंमेधाकरंवृष्यंविशदंरोचनंहरेत् । कुष्ठार्शःकासपित्तास्रकफमेहक्लमकृमीन् ॥मेदस्तृष्णावमिश्वासहिक्कातीसारविड्ग्रहान् । दाहक्षतक्षयांस्तत्तुयोगवाह्यल्पवातलम् ॥ १ ॥

अथ मधुवर्गः सहतकेनाम और गुण ॥

मधु माक्षीक माध्वीक क्षौद्र सारघ्य मक्षिकावान्त वर्टीवान्तभृंगवान्त और पुष्परसोद्भव यहसहतके नामहैं सहत शीतल हलका मधुर रूखा ग्राही कृशताकारक नेत्रोंकोहित दीपनस्वरकोहित घावकाशुद्ध करनेवाला और भरनेवाला सुकुमारकारी सूक्ष्म श्रोतोंकाशोधक कुछकषैला आनन्ददायक प्रसन्नताकारी वर्णकोहित मेधाकारी वीर्यवर्द्धक बिशद रुचिकारी योगवाही कुछबादी और कुष्ठ बवासीर खांसी रक्त पित्त कफ प्रमेह ग्लानि कृमि मेद तृषा छर्दि श्वास हिचकी अतीसार मलका रुकना दाह क्षत तथा क्षयनाशक होताहै ॥ १ ॥ अथ मधुभेदाः ॥

माक्षिकंभ्रामरंक्षौद्रंपैत्तिकंछात्रमित्यपि । आर्घ्यमौद्दालकंदालमित्यष्टौमधुजातयः २॥

सहतके भेद ॥

माक्षिक भ्रामर क्षौद्र पैत्तिक छात्र आर्घ्यऔद्दालक और दाल यह आठप्रकारका सहतहोताहै ॥२॥

अथ तेषांलक्षणंगुणाश्च । तत्रमाक्षिकस्यलक्षणम् ॥

माक्षिकाःपिंगवर्णास्तुमहत्योमधुमक्षिका । ताभिःकृतंतैलवर्णंमाक्षिकंपरिकीर्तितम् ॥ माक्षिकंमधुषुश्रेष्ठंनेत्रामयहरंलघु । कामलार्शःक्षतश्वासकासक्षयविनाशनम् ॥ ३ ॥

इनके लक्षण और गुण इनमेंसेमाक्षिक के लक्षण और गुण ॥

पिंगल वर्ण वाली बडी मधु मक्षिकाओंको मक्षिका कहते हैं इनके कियेहुये तेलके समान वर्ण

वाले सहतको माक्षिक कहतेहैं यह संपूर्ण सहतोंमें श्रेष्ठ हलका और नेत्ररोग कामला बवासीर घाव श्वास खांसी तथा क्षयनाशक होताहै ॥ ३ ॥

अथ भ्रामरस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

किञ्चित्सूक्ष्मैःप्रसिद्धेभ्यःषट्पदेभ्योऽलिभिश्चितम् । निर्मलंस्फटिकाभंयत्तन्मधुभ्रामरंस्मृतम् ॥ भ्रामरंरक्तपित्तघ्नंमूत्रजाड्यकरंगुरु ॥ स्वादुपाकमभिष्यन्दिविशेषात्पिच्छिलंहिमम् ॥ ४ ॥

भ्रामर के लक्षण और गुण ॥

प्रसिद्ध भ्रमरोंसे कुछ छोटे भ्रमरों के द्वारा इकट्ठे किये गये स्फाटिकके समान निर्मल सहतको भ्रामर कहतेहैं यह रक्त पित्त नाशक मूत्ररोधक भारी पाकमेंमधुर अभिष्यन्दी अत्यन्त पिच्छिलऔर शीतल होताहै ॥ ४ ॥

अथ क्षौद्रस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

मक्षिकाःकपिलाःसूक्ष्माःक्षुद्रास्त्र्यास्तत्कृतंमधु । मुनिभिःक्षौद्रमित्युक्तंतद्वर्णात्कपिलंभवेत् । गुणैर्माक्षिकवत्क्षौद्रंविशेषान्मेहनाशनम् ॥ ५ ॥

क्षौद्रके लक्षण और गुण ॥

कपिल वर्णवाली छोटी मक्खियोंके द्वारा इकट्ठेकियेगये कपिलवर्णकेसहतको क्षौद्रकहतेहैं-यहमाक्षिकके समान गुणवाला और विशेष करके प्रमेहनाशक होताहै ॥ ५ ॥

अथ पौत्तिकस्यलक्षणंगुणाः ॥

कृष्णायामशकोपमालघुतराप्रायोमहापीडिका वृद्धानांतरुकोटरान्तरगताःपुष्पासवंकुर्वते । तास्तज्ज्ञैरिहपूतिकानिगदितास्ताभिःकृतंसर्पिषातुल्यंयत्मधुतद्वनेचरजनैःसंकीर्त्तितंपौतिकम् ॥ पौतिकंमधुरूक्षोष्णंपित्तदाहास्रवातकृत्विदाहिमेहकृच्छ्रघ्नंग्रन्थ्यादिक्षतशोषिच ॥ ६ ॥

पौत्तिकके लक्षण और गुण ॥

कृणबर्ण वाली मच्छरके समानछोटी अत्यन्त पीड़ा देनेवाली और बड़े वृक्षोंके खोखलोंमें सहत को इकट्ठा करनेवाली मधुमक्षिकाओंको पुत्तिका कहते हैं इनके कियेहुये घृततुल्य सहतको पौत्तिक कहतेहैं यह रूखा पित्तवर्द्धक दाहकारी रक्तदूषक बादी प्रमेह तथा मूत्रकृच्छ्रनाशक और ग्रंथिआदि घावोंका नाशक होताहै ॥ ६ ॥

छात्रस्यलक्षणंगुणाः ॥

वरटाःकपिलाःपीताःप्रायोहिमवतोवने । कुर्वन्तिछत्रकाकारंतज्जंछात्रंमधुस्मृतम् ॥ छात्रंकपिलपीतंस्यात्पिच्छिलंशीतलंगुरु ॥ स्वादुपाकंकृमिश्वित्ररक्तपित्तप्रमेहनित् । भ्रमतृण्मोहविषहृत्तर्पणञ्चगुणाधिकम् ॥ ७ ॥

छात्रके लक्षण और गुण ॥

कपिल और पीतवर्णकी मधुमक्षिका प्रायःहिमालयके बनोंमें छत्तालगातीहैं इनके सहतको छात्र कहतेहैं यह कपिल तथा पीतवर्ण पिच्छिल शीतल भारी पाकमें मधुर तृप्ति कारक अधिक गुणकारी और कृमि श्वेत कुष्ठ रक्त पित्त प्रमेह भ्रम तृषामोह तथा बिषनाशक होताहै ॥ ७ ॥

अथार्घ्यस्य लक्षणंगुणाः ॥

मधूकवृक्षनिर्य्यासंजरत्कार्वाश्रमोद्भवम् । स्रवन्त्यार्घ्यन्तदाख्यातंश्वेतकंमालवेपुनः॥ तीक्ष्णतुण्डास्तुयापीतामक्षिकाः षट्पदोमाःआर्घ्यास्तास्तत्कृतंयत्तदार्घ्यमित्यपरेजगुः ॥ आर्घ्यंमध्वतिचक्षुष्यंकफपित्तहरंपरम् । कषायंकटुकंपाकेतिक्तञ्चबलपुष्टिकृत् ॥ ८ ॥

आर्घ्यके लक्षण और गुण ॥

जरत्कारु मुनिके आश्रमके महुओंके वृक्षोंके गोंदको आर्घ्य और इसको मालवदेशमें श्वेतकहते हैं कोई आचार्य्य कहते हैं कि तीक्ष्ण चोंचवाली भ्रमरों के समान पीतवर्णवाली मधुमक्षिकाओं को आर्घ्य कहतेहैं और इनके सहतकोभी आर्घ्य कहतेहैं यह अत्यन्त नेत्रोंको हित कषैला पाक में कटु तिक्त बल और पुष्टिकारी तथा कफ पित्त का अत्यन्त नाशक होताहै ॥ ८ ॥

अथौद्दालकस्यलक्षणंगुणाः ॥

प्रायोवल्लीकमध्यस्थाःकपिलाःस्वल्पकीटकाः । कुर्वन्तिकपिलंस्वल्पंतस्थादौद्दालकंमधु ॥ औद्दालकंरुचिकरंस्वर्य्यंकुष्ठविषापहम् । कषायमुष्णमम्लञ्चकटुपाकञ्च पित्तकृत् ॥ ९ ॥

औद्दालक के लक्षण और गुण ॥

कपिल वर्णवाले प्रायःवामीमें रहनेवाले एकप्रकारके छोटे कीड़े जो थोड़ासा कपिल वर्णकासहत इकट्ठा करतेहैं उसको औद्दालक कहतेहैं यह रुचिकारी स्वरवर्द्धक कुष्ठ तथा बिषनाशक कषैलाउष्ण खट्टा पाकमें कटु और पित्तवर्द्धक होताहै ॥ ९ ॥

अथ दालस्यलक्षणंगुणाः ॥

संस्रुत्यपतितंपुष्पाद्यत्तुपत्रांपरिस्थितम् । मधुराम्लकषायञ्चतद्दालंमधुकीर्त्तितम् ॥ दालंमधुलघुप्रोक्तंदीपनीयंकफापहम् । कषायानुरसंरूक्षंरुच्यंछर्दिप्रमेहजित् ॥ अधिकंमधुरंस्निग्धंवृंहणंगुरुभारिकम् । लघुपाकेगुरुभारिकंतुलितम् ॥ १० ॥

दालके लक्षण और गुण ॥

पुष्पोंसे टपककर पत्तोंपर इकट्ठेहुए सहतको दाल कहतेहैं यह मधुर खट्टा कुछकषैला पाकमेंलघु दीपन कफनाशक रूखा रुचिकारी छर्दितथा प्रमेह नाशक स्निग्ध धातुवर्द्धक और तौल में भारी होताहै॥१०॥

अथ नवपुराणमधुगुणाः ॥

नवंमधुभवेत्पुष्ट्यैनातिश्लेष्महरंसरम् । पुराणंग्राहकंरूक्षंमेदोघ्नमतिलेखनम् ॥ मधुनःशर्करायाश्चगुड़स्यापिविशेषतः । एकसंवत्सरेत्वार्तिपुराणत्वंस्मृतंबुधः ॥ ११ ॥

नये पुराने सहतके गुण ॥

नवीन सहत पुष्टिकारी दस्तावर और अत्यन्त कफ नाशक नहीं होताहै पुरानासहत ग्राही रूखा मेद नाशक और अत्यन्त कृशता कारक होताहै पंडितलोग कहते हैं कि सहत शक्कर और गुड़ एक बर्ष केव्यतीतहोनेपर पुराने होतेहैं ॥ ११ ॥

अथ मधुनःशीतस्यगुणाधिक्यमुष्णतायांनिषेधः ॥

विषपुष्पादपिरसंसविषाभ्रमरादयः । गृहीत्वामधुकुर्वन्तितच्छीतंगुणवन्मधु ॥ विषा

न्वयात्तदुपदन्तुद्रव्येणोष्णोनवासह । उष्णार्त्तस्योष्णकालेचस्मृतंविषसमंमधु ॥ १२ ॥

शीतल सहतकी गुणमें अधिकता और उष्णता का निषेध ॥

बिषयुक्त भ्रमरादिक बिषयुक्त पुष्पोंसे भी रसको लाकर सहत बनाते हैं इसलिये शीतल सहत गुणकारी होताहै और बिषयुक्त होनेके कारण उष्ण अथवा उष्ण वस्तुओं के साथ उष्णता से व्याकुल पुरुषको अथवा उष्णकाल में सहत बिषके समान होताहै ॥ १२ ॥

अथ मयनम्

मयनन्तुमधुच्छिष्टंमधुशेषञ्चासिक्थकम् । मध्वाधारोमदनकंमधूषितमपिस्मृतम् ॥ मदनंमृदुसुस्निग्धंभूतघ्नंव्रणरोपणम् । भग्नसन्धानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् १३ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेमधुवर्गः ॥

मोम के नाम और गुण ॥

मयन मधुच्छिष्ट मधुशेष सिक्थक मध्वाधार मदनक और मधूषित यह मोमके नाम हैं मोम कोमल स्निग्ध भूतनाशक घावका भरनेवाला टूटेको जोड़नेवाला और बात कुष्ठ बीसर्प तथा रक्त दोषनाशक होताहै ॥ १३ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेमधुवर्गःसमाप्तः ॥

अथेक्षुवर्गः तत्रादौइक्षोर्नामानिगुणाश्च ॥

इक्षुदीर्घच्छदःप्रोक्तस्तथाभूमिरसोऽपिच । गुड़मूलोऽसिपत्रश्चतथामधुतृणःस्मृतः॥ इक्षवोरक्तपित्तघ्नाबल्यावृष्याकफप्रदाः । स्वादुपाकरसाःस्निग्धागुरवोमूत्रलाहिमा॥ १॥

अथ इक्षु वर्गः । ईखके नाम और गुण ॥

इक्षु दीर्घच्छद भूमिरस गुड़मूल असिपत्र और मधुतृण यह ईखके नामहैं ईख रक्तपित्तनाशक बलकारी पुष्टिकारक कफवर्द्धक रसतथा पाक में मधुर स्निग्ध भारी मूत्रवर्द्धक और शीतल होतीहै १॥

अथेक्षुभेदाः

पौण्ड्रकोभीरुकश्चापिवंशकःशतपोरकः । कान्तारस्तापसेक्षुश्चकाण्डेक्षुःसूचिपत्रकः॥नैपालोदीर्घपत्रश्चनीलपोरोऽथकोशकःइत्येताजातयस्तेषांकथयामिगुणानपि॥ २॥

ईख के भेद ॥

पौण्ड्रक भीरुक वंशक शतपोरक कान्तार तापसेक्षु काण्डेक्षु शुत्रिपत्रक नैपाल दीर्घपत्र नीलपोर और कोशक यह बारह ईखके भेदहैं अब इनके गुण कहेजांयगे ॥ २ ॥

अथ श्वेतपौण्ड्राभौरीगुणाः ॥

वातपित्तप्रशमनोमधुरोरसपाकयोः । सुशीतोवृंहणोबल्यःपौण्ड्रकोभीरुकस्तथा॥३ ॥

श्वेत पौंड़ा और भौंरीके गुण ॥

पौंड़ा और भीरुक यह दोनों बातपित्तनाशक रसतथा पाकमें मधुर अत्यन्त शीतल धातुवर्द्धक और बलकारी होतेहैं ॥ ३ ॥

अथ कारियाकुशिआरगुणाः ॥

कोशकारोगुरुःशीतोरक्तपित्तक्षयापहः ४ (कान्तारेक्षुगुणः) कान्तारेक्षुर्गुरुर्वृष्यः श्लेष्मलोवृंहणःसरः ५ ॥ कोशकारके गुण ॥

कोशकार भारी शीतल और रक्तपित्त तथा क्षय नाशक होते हैं ४ (कान्तार के गुण) कान्तार भारी वीर्यवर्द्धक कफकारी धातुवर्द्धक और दस्तावर होताहै ॥ ५ ॥

वंशगुणाः ॥

दीर्घपोरःसुकठिनःसक्षारोवंशकःस्मृतः ६ (शतपोरकगुणाः) शतपर्वाभवेत्किञ्चित्को शकारगुणान्वितः । विशेषात्किञ्चिदुष्णश्चसक्षारःपवनापहः ।

वंशक(बड़ौखा) ईखके गुण ॥

बड़े पोरवाली कठिन और क्षारयुक्त ईखको बंशककहते हैं ६ (शतपोरकके गुण) शतपोरक कुछ कोशकारकेसमान गुणवाला और विशेषकरके कुछउष्ण क्षारयुक्त तथा वातनाशक होताहै ७ ॥

तापसेक्षुगुणाः ॥

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वीमधुराश्लेष्मकोपनी। तर्पणीरुचिकृच्चापितृष्याचबलकारिणी॥ ८॥

तापसेक्षुके गुण ॥

तापसेक्षु कोमल मधुर कफकोकुपित करनेवाली तृप्ति और रुचिकारक वीर्यवर्द्धक तथा बलकारी होतीहै ॥ ८ ॥ काण्डेक्षुगुणाः ॥

एवंगुणैस्तुकाण्डेक्षुःसतुवातप्रकोपणः ९ (अथसूचीतत्रनैपालीदीर्घपत्रनीलपो राणांगुणाः) सूचीपत्रोनीलपोरोनैपालोदीर्घपत्रकः । वातलाःकफपित्तघ्नाःसकषायावि दाहिनः ॥ १० ॥ कांडेक्षुके गुण ॥

कांड़ेक्षु तापसेक्षुके समानगुणवाली और विशेषकरके बातको कुपितकरतीहै ९ (शूचीपत्र नैपाली दीर्घपत्र और नीलपोरके गुण) शूचीपत्र नीलपोर नैपाली और दीर्घपत्र नामईखबादी कफपित्तनाशक कषैली और बिदाहीहोतीहै १० ॥

मनोगुप्तागुणाः ॥

मनोगुप्तावातहरीतृष्णामयविनाशिनी । सुशीतामधुरातीवरक्तपित्तप्रणाशिनी ॥ ११ ॥

मनोगुप्ताके गुण ॥

मनोगुप्ता नामईख शीतल मधुर और बायु तृषा तथा रक्त पित्त नाशक होती है ॥ ११ ॥

अथबालयुववृद्धेक्षुगुणाः ॥

बालइक्षुःकफंकुर्य्यान्मेदोमेहकरश्चसः । युवातुवातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्चपित्तनुत् ॥ रक्तपित्तहरोवृद्धःक्षतहृद्बलवीर्य्यकृत् ॥ १२ ॥

छोटी बड़ी और पकीहुई ईखके गुण ॥

छोटी ईख कफकारी मेदवर्द्धक तथा प्रमेहकारी मध्यम ईख वातनाशक मधुर कुछ तीक्ष्ण तथा पित्तनाशक और खूबपकी हुई ईख बलवीर्यबर्द्धक घावनाशक तथा रक्त पित्तनाशकहोतीहै ॥ १२ ॥

अथाङ्गभेदेनभेदः ॥

मूलेतुमधुरोऽत्यर्थंमध्येऽपिमधुरःस्मृतः । अग्रेग्रन्थिषुविज्ञेयइक्षुःपटुरसोजनैः॥१३॥

अंग के भेदसे गुण के भेद ॥

ईखकी जड़ अत्यन्त मधुर मध्यमें मधुर और अग्रभाग तथा ग्रन्थिमें लवण रस होताहै ॥ १३ ॥

अथदन्तपीडितेक्षुरसस्यगुणाः ॥

दन्तानिष्पीडितस्येक्षोरसःपित्तास्रनाशनः।शर्करासमवीर्य्यःस्यादविदाहीकफप्रदः॥१४॥

दांतोंसे चूसेहुए ईखके गुण ॥

दांतसे चूसाहुआ ईखकारस रक्तपित्तनाशक शक्कर के समान वीर्यवाला बिदाह रहित और कफकारी होताहै ॥ १४ ॥ अथ यन्त्रपीडितेक्षुरसस्यगुणाः ॥

मूलाग्रजन्तुग्रन्थ्यादिपीडनान्मलसङ्करात् । किञ्चित्कालविधृत्याचविकृतिंयाति यान्त्रिकः ॥ तस्माद्विदाहीविष्टम्भीगुरुःस्याद्यान्त्रिकोरसः ॥ १५ ॥

यंत्रसे निकाले हुए ईखके रसके गुण ॥

यन्त्रके द्वारा निकालाहुआ ईखकारस मूल अग्रभाग तथा ग्रन्थि आदिके एक साथ निचोड़ने के द्वारा मलके मिलजाने से और कुछदेर रखने से विकारयुक्त होजाताहै इसीसे यह बिदाही बिष्ठंभी और भारी होताहै ॥ १५ ॥ अथ पर्युषितेक्षुरसस्यगुणाः ॥

रसःपर्युषितोनेष्टश्चाम्लोवातापहोगुरुः । कफपित्तकरःशोषीभेदनश्चातिमूत्रलः॥१६॥

रक्खेहुएरसकेगुण ॥

ईखका बासीरस अहितकारी खट्टा वातनाशक भारी कफ पित्तवर्द्धक शोषकारी भेदक और अत्यन्त मूत्रवर्द्धकहोताहै॥१६॥ अथ पक्वस्येक्षुरसस्यगुणाः ॥

पक्वोरसोगुरुःस्निग्धःसुतीक्ष्णःकंफवातनुत्।गुल्मानाहप्रशमनःकिञ्चित्पित्तकरःस्मृतः१७

ईखकेपकेहुएरसकेगुण ॥

ईखका पकाहुआ रस भारी स्निग्ध अत्यन्त तीक्ष्ण कफ वातनाशक गुल्म तथा आनाह नाशक और कुछ पित्तकारीहोताहै ॥ १७ ॥

अथेक्षुरसस्यविकाराणांगुणाः ॥

इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमूर्च्छापित्तास्रनाशनाः । गुरवोमधुराबल्याःस्निग्धावातहराःसराः ॥ तृष्यामोहहराःशीतावृंहणाविषहारिणः ॥ १८ ॥

ईखकेरसके विकारोंकेगुण ॥

ईखके रसके विकार तृषा दाह मूर्च्छा रक्त पित्तवातमोह तथा विषदोषनाशक भारीमधुरबलकारी स्निग्ध दस्तावर वीर्यवर्द्धक शीतल और धातुवर्द्धक होतेहैं ॥ १८ ॥

अथ फाणित । ढरकारावच्छोवाइतिलोके तस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

इक्षोःरसस्तुयःपक्वःकिञ्चिद्गाढोबहुद्रवः । सरावेक्षुविकारेषुख्यातःफाणितसंज्ञया ॥ फाणितंगुर्वभिष्यन्दिवृंहणंकफशुक्रकृत् । वातपित्तश्रमान्हन्तिमूत्रवास्तिविशोधनम्॥१९॥

फाणित [राबके] के लक्षण और गुण ॥

ईखका पकाहुआ रस कुछगाढा और बहुत पतला फाणित कहलाता है राबभारी अभिष्यन्दीपुष्ट कफ तथा वीर्यवर्द्धक वातघ्न पित्त तथा श्रमनाशक और मूत्र तथा वस्ति शोधक होती है ॥ १९ ॥

अथ मत्स्यण्डी राबकाकवखण्डरावइतिलोके। तस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

इक्षोरसोयःसम्पक्कोघनःकिञ्चिद्द्रवान्वितः । मन्दंयत्स्यन्दतेतस्मात्तन्मत्स्यण्डीनिगद्यते। मत्स्यण्डीभेदिनीबल्यालघ्वीपित्तानिलापहा ॥ मधुराबृंहणीवृष्यारक्तदोषापहा स्मृता ॥ २० ॥

मत्स्यंडी [खड़रफ] के लक्षण और गुण ॥

कुछपतला बहुतगाढा पकाहुआ ईखका रस किसी पात्रमें थोडा २ करके टपकायागया मत्स्यंडी कहाता है मत्स्यंडी भेदक बलकारी हलकी वात पित्तनाशक मधुर धातुवर्द्धक पुष्टिकारक और रक्त दोषनाशकहोती हैं ॥ २० ॥

अथ गुडस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

इक्षोरसोयःसम्पक्कोजायतेलोष्टवद्दृढः।सगुडोगौडदेशेतुमत्स्यण्ड्येवगुडोमतः। गुडो वृष्योगुरुःस्निग्धोवातघ्नोमूत्रशोधनः । नातिपित्तहरोमेदःकफकृमिबलप्रदः ॥ २१ ॥

गुड़के लक्षण और गुण ॥

ईखका पकाहुआ रस ढेलेके समान दृढ होजाताहै उसे गुड कहते हैं गौड़देशमें मत्स्यंडीकोहीगुड़ कहते हैं गुड़ वीर्यवर्द्धक भारी स्निग्ध वातनाशक मूत्रशोधक कुछ पित्तनाशक और मेद कफ कृमि तथा बलवर्द्धक होताहै ॥ २१ ॥

अथ पुराणगुडस्यगुणाः ॥

गुडोजीर्णोलघुःपथ्योऽनभिष्यन्द्यग्निपुष्टिकृत् । पित्तघ्नोमधुरोवृष्योवातघ्नोऽसृक्प्रसादनः ॥ २२ ॥

पुरानेगुड़केगुण ॥

पुरानागुड़ हलका पथ्य अभिष्यन्दरहित दीपन पुष्टिकारी पित्तघ्न मधुर वीर्यबर्द्धक वातनाशक और रुधिरको उत्तम करनेवाला होताहै ॥ २२ ॥

नवीनगुडस्यगुणाः ॥

गुडोनवःकफश्वासकासकृमिकरोऽग्निकृत् । श्लेष्माणमाशुविनिहन्तिसदार्द्रकेणपित्तंनिहन्तिचतदेवहरीतकीभिः । शुण्ठ्यासमंहरतिवातमशेषमित्थंदोषत्रयक्षयकरायनमोगुडाय ॥ २२ ॥

नवीनगुडकेगुण ॥

नवीन गुड़ कफ स्वास खांसी कृमि और अग्निको बढ़ातीहै अदरकयुक्त गुड़ कफनाशक हड़ सहित गुड़ पित्तनाशक और सोंठ सहित गुड़ संपूर्ण वातरोगनाशक होताहै इसप्रकार त्रिदोषनाशक गुड़ धन्यहै ॥ २३ ॥

अथ खांडगुणाः ॥

खण्डन्तुमधुरंवृष्यंचक्षुष्यंबृंहणंहिमम् ॥ वातपित्तहरंस्निग्धंबल्यंवान्तिहरंपरम् । खण्डमतिप्रसिद्धम् ॥ २४ ॥

खांडकेगुण ॥

खांड़ मधुर वीर्यवर्द्धक नेत्रोंको हित धातुवर्द्धक शीतल वात पित्तनाशक स्निग्ध बलकारी और अत्यन्त छर्दिनाशकहोती है ॥ २४ ॥

अथ सिता चीनीइतिलोकेप्रसिद्धा। तस्यलक्षणंगुणाः ॥

खण्डन्तुसिकतारूपंसुश्वेतंशर्करासिता। सितासुमधुरारुच्यावातपित्तास्रदाहहृत् ॥
मूर्च्छाछर्दिज्वरान्हन्तिसुशीताशुक्रकारिणी २५ ॥

चीनीकेलक्षण और गुण ॥

अत्यन्त श्वेत और बालूके समान खांड़को सिता और शर्करा कहतेहैं चीनी अत्यन्त मधुर रुचिकारी अत्यन्त शीतल वीर्यबर्द्धक और बात रक्त पित्त दाह मूर्च्छा छर्दि तथा ज्वरनाशकहोतीहै॥२५॥

अथ गुड़शर्करामिश्रीद्वयोर्गुणाः ॥

भवेत्पुष्पसिताशीतारक्तपित्तहरीलघुः।सितोपलासरालघ्वीवातपित्तहरीहिमा ॥२६॥

गुड़शर्करा और मिश्रीकेगुण ॥

पुष्प सिता (गुलशक्कर) शीतल रक्त पित्तनाशक और हलकी होतीहै मिश्री दस्तावर हलकी बात पित्तनाशक और शीतलहोती है ॥ २६ ॥

मधु खण्डगुणाः ॥

मधुजाशर्करारूक्षाकफापित्तहरीगुरुः ॥ छर्द्यतीसारतृड्दाहरक्तहृत्तुवराहिमा ॥ २७ ॥

सहतकीशक्करकेगुण ॥

सहतकी शक्कर रूखी कफ पित्तनाशक भारी कषैली शीतल और छर्दि अतीसार तृषा दाह तथा रक्त दोष नाशकहोतीहै ॥ २७ ॥

यथायथैषानैर्मल्यं मधुरत्वंतथातथा ॥ स्नेहलाघवशैत्यादिसरत्वञ्चतथातथा॥ २८ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेइक्षुवर्गः समाप्तोद्रववर्गः ॥

यह संपूर्ण जैसीर्निमलहोंगी उतनीही अधिक मधुर स्निग्ध हलकी शीतल और दस्तावरहोंगी२८॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेइक्षुवर्गःद्रववर्गस्समाप्तः ॥

अथानेकार्थनामवर्गः तत्रद्व्यर्थानिनामानि ॥

यथाअश्मन्तकःअम्ललोणिकाकोविदारश्चकठिल्लकः । कारवेल्लोरक्तपुनर्नवाचकुलकः ॥ पटोलःकुपीलुश्चकुचिलाइतिलोकेप्रसिद्धः । कोशातकीमहाकोशातकीराजकोशातकीचदीप्यकः ॥ यवान्यजमोदाचमरुचकःफणिञ्जकःपिण्डीतकः। मरुवकःमरुषाइतिलोकेपिण्डीतकः ॥ मयनफरइतिलोकेमधूलिकः । मूर्वाजलयष्टीचरुचकम्सौवर्चलंवीजपूरकञ्च ॥ लोणिकालोणिशाकञ्चाङ्गेरीशाकञ्चवसुकः । क्षारलवणश्चबाह्लीकम्कुंकुमहिंगुचवित्तुन्नकम्॥धान्यकंतुत्थुञ्चस्वादुकण्टकःगोक्षुरोविकङ्कतश्च । अग्निमुखीभल्लातकीलाङ्गलीचअग्निशिखम्कुंकुमंकुसुम्भश्च । अजशृङ्गीमेषशृङ्गीचप्रियंगुःफलिनीकंगूश्चभृङ्गःभृङ्गराजस्त्वक्च ॥ समङ्गामञ्जिष्ठालज्जालूश्चअमोघाविडङ्गंपाटलाचमोचाकदली । शाल्मलिश्चकुटन्नटःश्योनाकःकैवर्त्तीमुस्तञ्चकुनटी ॥ धानिकामनःशिलाचं

घोण्टा। पूगोवदरीच। त्रिपुटा। त्रिवृत्सूक्ष्मैलाच। शटी। कचूरोगन्धपलाशीच। दन्त शठः। जम्बीरःकपित्थश्च। दन्तशटा। अम्लिकाचांगेरीच। अरुणम्। मञ्जिष्ठाअति विषाच। कणा। पिप्पलीजीरकञ्च। तालपर्णी। मुशलीमुराच। पीलुपर्णी। मूर्वावि म्बीच। ब्राह्मणी। भार्ङ्गीस्पृक्काच। अपराजिता। विष्णुक्रान्ताशालिपर्णीच। आस्फो ता। अपराजितासारिवाच। पारावतपदी। ज्योतिष्मताकाकजङ्घाच। शारदी। सारि वाजलपिप्पलीच। उग्रगन्धा। वचायवानीच। परिव्याधः। कर्णिकारोजलवेतसश्च। अञ्जनम्। स्रोतोऽञ्जनंसौवीरञ्च। अग्निचित्रकोभल्लातश्च। कृमिघ्नः। विडंगोह रिद्राच। तेजनः। शरेवेणुश्च। तेजनो। तेजवतीमूर्वाच। रोचनः। कम्पिल्यःरोचना च। रोचना। गोरोचना। राजादनम्। क्षीरिकाप्रियालश्च। शकुलादनी। कटुकाजल पिप्पलीच। गोलोमी। श्वेतदूर्वावचा। पद्मा। पद्मचारिणी भार्ङ्गीच। श्यामा। सारिवा प्रियंगुश्च। धान्यम्। धान्याकंशाल्यादिच। सहदीर्घ्या। नीलदूर्वामहाशतावरीच। से व्यम्। उशीरंलामज्जकञ्च। उदुम्बरः। जन्तुफलंताम्रञ्च। ऐन्द्री। इन्द्रवारुणीइन्द्राणी च। कटम्भरा। कटुकाश्योनाकञ्च। क्षारः। यवक्षारःस्वर्जिकाच। गण्डीरः। शाकविशेषो गण्डीर्नातिलोकेगण्डारीमञ्जिष्ठाच। गन्धारी। दुरालभा। गन्धपलाशीच। चित्रा। इन्द्र वारुणीबृहद्दन्तीच। तुण्डिकेरी। कार्पासीविम्बीच। धारा। गुडूचीक्षीरकाकोलीच। बालपत्रः। खदिरोयवासश्च। वारि। बालकमुदकञ्च। अङ्गारवल्ली। भार्गीमुञ्जाच। अ मृणालम्। लामज्जकमुउशीरञ्च। कुण्डली। गुडूचीकोवदारश्च। गन्धफली। प्रियं गुश्चम्पककलिकाच। दीर्घमूलः। यवासःशालिपर्णीच। पिच्छिलाशाल्मलीशिंशिपाच। पुष्पफलः। कपित्थःकूष्माण्डश्च। पोटगलः। नलःकाशश्च। यवफलः। कुटजोवंशश्च। देवी। मूर्वास्पृक्काचविश्वा। शुण्ठ्यतिविषाच। शीतशिवम्। सैन्धवंमिश्रेयाच। कर्कशः। कांपिल्यःकासमर्दश्च। चर्मकषा। शातला मांसरोहिणीच। नान्दिवृक्षः। अश्वत्थभेदोगो मुखपत्रशाखः वेलियापीपर इतिलोके। तुण्डिश्च। पयःक्षीरमुदकश्च। रुहा। दूर्वामांस रोहिणीच। सिंही। बृहतीवासाच॥ १॥

अथअनेकार्थनामवर्गः॥ दोअर्थवाचीनाम॥

अश्मन्तक (लौनियासाग और कचनार) कठिल्लक (करेला और लाल गदापूरना) कुलक (पर्वल और कुचला) कोशातकी (दोनोंतुरई) दीप्यक (अजवाइन अजमोद) मरुवक (मसामैन फल) मधूलिक (मरोरफली मुलहटी) रुचक (कालानिमक बिजौरानींबू) लोणिका (लोनियां औवू काकासाग) वसुक (लालआक औरखारीनिमक) वाह्लीक (केशर और हींग) वितुन्नक (धनियांऔर तूतिया) स्वादुकंटक (गोखरू और शमि) अग्निमुखी (भिलावां और करिहारी) अग्निशिख (केशर और कुसुम) अजशृंगी (काकडासिंगी और मेढासिंगी) प्रियंगु (मालकंगनी और काकुन) भृंग (भंगरा और दालचीनी) समंगा (मजीठ और छुईमुई) अमोघा (बायबिडंग और पाटला) मोचा (केला

और सेमर] कुटन्नट [सोनापाठा और जलमोथा] कुनटी धनियां और मैनसिल]घोंटा [सुपारी और वेर]त्रिपुटा [निशोत और छोटीइलायची]शटी [कपूरऔर कपूर कचरी] दन्तशठ [जंबीरी नींबू और कैथा]दन्तशटा [इमलीऔर चूका] अरुण [मजीठ और अतीस] कणा [पीपल औरजीरा] तालपर्णी [मुसलीऔर मुरामांसी]पलिपर्णी [मरोडफली और कुंदरू] ब्राह्मणी [भारंगीऔर स्फटका नामएकप्रकारकी बूटी]अपराजिता [विष्णुक्रान्ता और शालपर्णी] आस्फोता [विष्णुक्रान्ता और सारिवा] पारावतपदी [मालकंगनी औरकाकजंघा] शारदी [अनन्तमूल और जल पीपल] उग्रगन्धा [बच और अजवाइन] परिव्याध [अमलतासऔरबेतस] अंजन [श्वेतऔर कालासुरमा] अग्नि [चीता और भिलावा] कृमिघ्न [बायबिडंग औरहलदी] तेजन [सर और बांस] तेजनी[मालकंगनी और मरोर फली] रोचन [कपीला और गोरोचन] रोचना [गोरोचनऔर हल्दी]राजादन [खिन्नी और चिरोंजी] शकुलादनी [कुटकी और जलपीपल] गोलोमी [श्वेतदूब औरवच] पद्मा [पद्मचारिणी और भारंगी] श्यामा [अनन्तमूल और मालकाँगनी] धान्य [धनियां और अन्न] सहदेवीरिया [नीलीदूब और बडी सतावर] सेव्य [खस और पीलीखस] उदुम्बर [गूलर और तांबा] ऐन्द्री] इन्द्रायन और बड़ीदन्ती] कटंभरा [कुटकी और सोनापाठा] क्षार [जवाखार और सज्जी] गंडीर [गांडर और मजीठ] गन्धारी [जवासा और गन्धपलासी] चित्रा [इन्द्रायण और बडीदन्ती] तुंडकेरी [कपास और कुंदरू] धारा [गिलोय और क्षीरिकाकोली] वालपत्र [कत्था और जवासा] वारि [सुगन्धबाला और जल] अंगारवल्ली [भारंगी और मूंग] अमृणाल [खस और पीलीखस] कुंडली [गिलोय और कचनार] गन्धफली [मालकंगनी और चंपेकीकली] दीर्घमूल [जवासा और शालिपर्णी] पिच्छिला [सेमर और सीसम] पुष्पफल [कैथा और कुम्हड़ा] पोटगल (नलऔर कास] यवफल [कुरैया और बांस] देवी [मरोरफली और स्फटका] विश्वा [सोंठ औरअतीस]शीतशिव [सेंधानोन और सौंफ] कर्कश [कपीला और कसौंदी] चर्मकशा [लालला और मासरोहिणी] नंदिवृक्ष [बेलिया पीपल औरतुन] पय [दूध औरजल] रुहा [दूबऔर मांसरोहिणी] सिंही [कटेली औरवासा] ॥ १ ॥

अथ त्र्यर्थानिनामानि ॥

क्रमुकः । पूगस्तूदः पट्टिकालोध्रश्च । क्षुरकः । कोकिलाक्षोगोक्षुरस्तिलकनाम पुष्पविशेषश्च । प्रियकः । प्रियंगुकदम्बोऽसनश्च । पृथ्वीका । कालाजाजीबृहदेलाहिंगुपत्रीच । भूतीकम् । भूनिम्बकतृणभूस्तृणश्च । सोमवल्कः । कह्यलःश्वेतखदिरोघृतपूर्णकरञ्जश्च । सौगन्धिकंकह्लारंकृतृणंगन्धकञ्च । भृङ्गः । भृङ्गरास्त्वंगभ्रमरश्च । अरिष्टः। निम्बोरसोनंमद्यञ्च । मर्कटीकपिकच्छुरपामार्गःकरञ्जीच। अम्बष्ठ ।पाठाचांगरीमाचिकाच । कृष्णा । पिप्पलीकालाजाजीनिलीच । क्षीरिणी । दुग्धिकाक्षीरकाकोलीश्वेतसारिवाच । मधुपर्णी । गुडूचीगम्भारीनीलाच । मण्डूकपर्णःस्योनाकःसःस्त्रियांतुमञ्जिष्ठा । ब्रह्ममण्डूकीच । श्रीपर्णी । गम्भारीगणिकारिकाकट्फलञ्च । अमृता । गुडूची । हरीतकीधात्रीच । अनन्ता । दुरालभानीलदूर्वालाङ्गलीच । ऋष्यप्रोक्ता । अतिबलामहाशतावरीकपिकच्छुश्च । कृष्णवृन्ता । पाटलीगम्भारीमाषपर्णीच । जीवन्ती । गुडूचीशाकवि

शेषोवन्दाच । लता । सारिवाप्रियंगुर्ज्योतिष्मतीच । समुद्रान्ता । दुरालभाकार्पासीस्पृक्काच । हैमवती । हरीतकीश्वेतवचापीतदुग्धःसेहुण्डःयस्यमूलश्लोकइतिप्रसिद्धम् । अव्यथा हरीतकी । महाश्रावणीपद्मचारिणीच । षड्ग्रन्था । बचगन्धपलाशीकरञ्जीश्च । वरदा । सुवर्चलाहुरहुरइतिलोकेअश्वगन्धाबाराहीगेंठीतिलोके । इक्षुगन्धाः । काशःकोकिलाक्षीगोक्षुरक्षीरविदारीच । कालस्कन्धः । तमालस्तिन्दुकंकालखदिरश्च । महौषधम् शुण्ठीरसोनोविषञ्च । मधु । क्षौद्रंपुष्परसोमद्यञ्च । कपीतनः । आम्रातकःशिरीषीगन्धभाण्डश्च । मदनः । पिण्डीतकोधत्तूरःसिक्थकञ्च । शतपर्वा । वंशोदूर्वावचाचासहस्रवेधीअम्लवेतसोमृगमदाहिंगुच । ताम्रपुष्पी । घातकीपाटलाश्यामात्रिवृच्चासदापुष्पाः । श्वेतार्कोरक्तार्कःकुन्दश्चामुरभीमल्लकीमुरैलवालुकम्लक्ष्मीः । ऋद्धिर्वृद्धिःशमीच । कालानुसार्य्यम् । कालीयकंतगरंशैलेयञ्च । चाम्पेयः । चम्पकोनागकेसरःपद्मकेसरश्च । नादेयी । गणिकारिकाजलजम्बूर्जलवेतसीच । पाक्यम् । विडंसौवर्चलंयवक्षारश्च । विशल्या । लाङ्गलीगुडूचीलघुदन्तीच । इन्द्रद्रुः । ककुभोदेवदारुःकुटजश्च । काश्मीरम् । कुंकुमंपुष्करमूलंकाश्मीरीगम्भारीच । गुन्द्रःपटेरकःशरश्च । गुन्द्रा । प्रियंगुर्भद्रमुस्तकश्च । चुक्रम् । चुक्रमम्लवेतसंवृक्षाम्लश्चपारिभद्राः । निम्बःपारिजातोदेवदारुश्च । पीतदारु । हरिद्रादेवदारुसरलश्च । वीरः । ककुभोवीरणंकाकोलीचवीरतरुः । ककुभोवीरणंशरश्च । मयूरः । अपामार्गोऽजमोदातुत्थञ्च । रक्तसारः । रक्तचन्दनंपतंगंखदिरश्च । बदरा । सुवर्चलाअश्वगन्धावाराहीच । वसिरः । रक्तापामार्गोगजपिप्पलीसमुद्रलवणञ्च । सौवीरम् । अञ्जनभेदोबदरसन्धानभेदश्च । वञ्जुलःअशोकोवेतसस्तिनिशश्च । शिला । मनःशिलाजतुगैरिकञ्चासोमवल्ली । वाकुची गुडूचीब्राह्मीच । अक्षीवः । शोभाञ्जनोमहानिम्बःसमुद्रलवणञ्च । कारवी । कालाजाजीशताह्वाजमोदाच । धामार्गवः । रक्तापामार्गोराजकोशातकीमहाकोशातकीच । दुःस्पर्शः । यवासःकपिकच्छूःकण्टकारीच । पलाशः । किंशुकोगन्धपलाशीपत्रञ्च । कालमेषी । मञ्जिष्ठावाकुचीश्यामात्रिवृच्चापलंकषागुग्गुलुगोक्षुरोलाक्षाचामधुरसाद्राक्षामूर्वागम्भारीच । रसारास्नाशल्लकीपाठाच । श्रेयसी । हरीतकीरास्नागजपिप्पलीच । लाहम् । अयःकांस्यमगरुच । सहा । मुद्गपर्णी । बलाभेदःककहीइतिलोके । शतपत्री । सेवतीगुलाबइतिलोके । रास्नानाकुलीनीलपुष्पः । सिन्दुवारः ॥ २ ॥

तीनअर्थवाले शब्द ॥

क्रमुक [सुपारी ब्रह्मदारु और पठानीलोध] क्षुरक [तालमखाना गोखुरू और तिलकनामपुष्प विशेष] प्रियक [मालकंगनी कदम्ब औरआसन] पृथ्वीका [कालाजीरा बडी इलायची और हिंगुपत्री] भृतीक [चिरायता कतृण और भूतृण] सोमवल्क [कायफल श्वेतकत्था और घृतपूर्णकंजुआ] सौगन्धिक [कहलार कतृण और गन्धक] भृंग [भंगरा दालचीनी और भ्रमर] अरिष्ट [नीम

लहसन और मद्य] मर्कटी [किवांच लटजीरा और करंजुआ] अम्बष्ठा [पाढल चूका और मोचिका] कृष्णा [पीपल कालाजीरा और नील] क्षीरिणी [दूधी क्षीरकाकोली और सफेदअनन्तमूल] मधुपर्णी [गिलोयगंभारी औरनील]मंडूकपर्णी[सोनापाठास्त्रीलिंगमेंमंजीठऔरब्राह्मणी]श्रीपर्णी[गंभारी गणकारिका और कायफल] अमृता [गिलोय हड़ और आमला] अनन्ता [जवासा नीलीदूब और लांगली] ऋष्यप्रोक्ता [अतिबला बडीसतावर और किवांच] कृष्णवृन्ता[पाटली गंभारीऔर माषपर्णी] जीवन्ती [गिलोय शाकविशेष औरबन्दा] लता [अनन्तमूल प्रियंगुऔर मालकांगिनी] समुद्रान्ता [जवासा कपास और स्पृक्का] हेमवती [हड सफेदबच और पीलेदूधकासेंहुड़ा] अव्यथा [हड़ मवडी मुंडी और पद्मचारिणी] षट्ग्रन्था [बच कपूरकचरी औरकरंजुआ] वरदा [हुरहुर असगन्ध औरगेंठी] इक्षुगन्धा [तालमखाना गोखुरू और क्षीरबिदारी] कालस्कंध [तमाल तेंदू और कालाकत्था] महौषधि [सोंठ लहसन और बिष] मधु [सहत पुष्परस और मद्य] कपीतन [आमरासिरस औरगर्दभाण्ड] मदन [मैनफल धतूरा और मोम] शतपर्व्वा [बांस दूब और वच] सहस्रवेधी [अमलवेत कस्तूरी और हींग] ताम्रपुष्पी [पाढल धाई और कालानिशोत] सदापुष्प [सफेदमदार कालामदार औरकुन्द] सुरभी [सनई मरोरफली और एलवालू] लक्ष्मी [ऋद्धि वृद्धि औरसमी] कालानुसार्यम् [कालीयक तगर और शैलेय] चांपेय [चम्पा नागकेशर और पद्मकेशर] नादेयी [गणकारिकाजलजामुन और जलवेत] पाक्य [बिड़ कालानोन और जवाखार बिशल्या [करिहारी गिलोय और छोटीदन्ती] इन्द्रद्रु [अर्जुन देवदारु और कुरैया] काश्मीर [केशर पुष्करमूल औरगंभारी] गुन्द्र [पटेरकसर्प] गुन्द्रा [प्रियंगु और भद्रमोथा] चुक्र [चूका अमलवेत और वृक्षाम्ल] पारिभद्र [नींब पारिजात और देवदारु] पीतदारु [हल्दी देवदारु और सरल [बीर [अर्जुनबीरन और काकोली] बीरतरु [अर्जुन बीरन और सर] मयूर [लटजीरा अजमोद और तूतिया]रक्तसार [रक्तचंदन पतंग और कत्था] बदरा [सौवर्चल असगंध और वाराहीकन्द] वसिर [लाललटजीरा गजपीपल औरसमुद्रकानोन] सौबीर [अंजनभेद वेर और संधानभेद] वजुल [अशोकवेत और तिनिश] शिला [मैनसिल सिलाजीतऔरगेरू] सोमबल्ली [बकुची गिलोय और ब्राह्मी] अक्षीव [सहजन महानिंब और समुद्रलवण] कारवी [कालाजीरा सौंफ और अजमोद] धामार्गव [लाललटजीरा और दोनोंतोरई] दुष्पर्श [जवासा किवांच और भटकटैया] पलाश [टेसू कपूरकचरी और पत्ता] कालेमेषी [मजीठ बाकुची और कालानिशोत] पलंकशा [गूगल गोखुरू और लाख] मधुरसा [दाख मरोरफली और गंभारी] रसा [रास्ना सल्लकी और पाठा] श्रेयसी [हड रास्ना और गजपीपल] लोह [लोहा कांसा और अगर] सहा [मुद्गपर्णी ककही और सेवती गुलाब] सुबहा[रास्ना नाकुली औरनीलेपुष्पकासिंदुवार]२ ॥

अथ बङ्कर्थानिनामानि ॥

अक्षशब्दःस्मृतोऽष्टासुसौवर्चलविभीतके । कर्षपद्माक्षशकटेन्द्रियपाशके । ककारख्यः काकमाचीचकाकोलीकाकणान्तिका ॥ काकजंघाकाकनासाकाकोदुम्बरिकापिच । सप्तस्वर्थेषुकथितःकाकशब्दोविचक्षणैः॥सर्पद्विरदमेषेषुसीसकेनागकेसरे । नागबल्ल्यानागदन्त्यानागशब्दःप्रयुज्यते ॥ मांसेद्रवेचेक्षुरसेपारदेमधुरादिषु । बालरोगेविषेनीरेरसोनवसुवर्त्तते ॥ ३ ॥ इतिश्रीभावप्रकाशेहरीतक्यादिद्रव्याणांनामानिगुणाश्च ॥

अनेकार्थक नाम ॥

अक्ष (कालानिमक बहेड़ाकर्ष पद्माक्ष रुद्राक्ष शकट इन्द्री और पाशा) काक (काकमाची काकोली घोंघची काकजंघा काकनासा काकोदुम्बरिका और काकाक्ष्य)नाग (सर्प हाथी मेढ़ा सीसा नागकेसर नागबल्ली और नागदन्ती) रस (मांसरस ईखकारसपारा मधुरादिकछः रस बालरोगविष औजल ३ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेहरीतकीआदिद्रव्योंके नामऔरगुण समाप्त ॥

अथमानपरिभाषा ॥

नमानेनविनायुक्तिर्द्रव्याणांजायतेक्वचित् । अतःप्रयोगकार्यार्थमानमत्रोच्यतेमया ॥ चरकस्यमतंबैद्यैराद्यैर्यस्मान्मतंततः । विहायससर्वनामानि मागधंमानमुच्यते ॥ १ ॥

अथमानपरिभाषा ॥

तोलके बिना किसी द्रव्यकी युक्तिकहीं ठीक नहीं होती इस कारण से व्यवहार की सुगमताके लिये यहांपर मानका बर्णन करते हैं प्राचीन बैद्यलोगों ने चरक कोहीमत मानाहै इसलिये सम्पूर्ण मानोंको छोड़कर मागध मान कहतेहैं ॥ १ ॥

त्रसरेणुबुधैःप्रोक्तस्त्रिंशतापरमाणुभिः । त्रसरेणुस्तुपर्य्यायैर्नाम्नावंशीनिगद्यते ॥ जालान्तरगतैःसूर्य्यकरैर्वंशीविलोक्यते । षड्वंशीभिमरीचिःस्यात्ताभिःषड्भिश्चराजिका ॥ तिसृभीराजिकाभिश्चःसर्षपःप्रोच्यतेबुधैः । यवोष्टसर्षपैःप्रोक्तोगुञ्जास्यात्तच्चतुष्टयम्॥ षड्भिस्तुरक्तिकाभिस्यान्माषकोहेमधानकौ । माषैश्चतुर्भिःशाणःस्याद्धरणःसनिगद्यते ॥ टङ्कःसएवकथितस्तद्वयंकोलउच्यते । क्षुद्रकोवटकश्चैवद्रङ्क्षणःसनिगद्यते ॥ कोलद्वयन्तुकर्षःस्यात्सप्रोक्तःपाणिमानिका । अक्षःपिचुःपाणितलंकिञ्चित्पाणिश्चतिन्दुकम् ॥ विडालपदकंचैवतथाषोड़शिकामता । करमध्योहंसपदंसुवर्णकवलग्रहः ॥ उदुम्बरश्चपर्य्यायैःकर्षमेवनिगद्यते । स्यात्कर्षाभ्यामर्द्धपलंशुक्तिरष्टमिकातथा ॥ शुक्तिभ्याञ्चपलंज्ञेयंमुष्टिराद्यश्चतुर्थिका । प्रकुञ्चःषोड़शीविल्वंपलमेवात्रकीर्त्यते ॥ पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृताञ्च निगद्यते । प्रसृतिभ्यामञ्जलिःस्यात्कुडवोर्द्धशरावकः ॥ अष्टमानञ्चसज्ञेयःकुडवाभ्याञ्च मानिका । शरावोऽष्टपलंतद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः ॥ शरावाभ्यांभवेत्प्रस्थःचतुःप्रस्थैस्तथाढकः । भाजनंकांस्यपात्रंचचतुःषष्टिपलश्चसः ॥ चतुर्भिराढकैर्द्रोणःकलशोनल्वणोऽर्मणः ।उन्मानश्चघटोराशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञितः ॥ द्रोणाभ्यांसूर्य्यकम्भौचचतुःषष्टिशरावकः । सूर्य्याभ्याञ्चभवेद्रोणीवाहोगोणीचसास्मृता॥ द्रोणीचतुष्टयंखारीकथितासूक्ष्मबुद्धिभिः । चतुस्सहस्रपलिकायन्नवत्यधिकाचसा॥ पलानांद्विसहस्रञ्चभारएकप्रकीर्त्तितः। तुलापलशतंज्ञेसंसर्वत्रैवैषनिश्चय ॥ माषटङ्काक्षविल्वानिकुडवप्रस्थमाढकम् । राशिर्गोणीखारिकेतियथोत्तरचतुर्गुणम्॥ मागधपरिभाषायाषड्रत्तिकोमाषश्चतुर्विंशतिरत्तिकष्टङ्कः षण्णवतिरत्तिकःकर्षः । आयञ्चरकसम्मतः । सुश्रुतमते । पञ्चरत्तिकोमाषोविंशतिरत्ति

कष्टङ्कोऽशीतिरत्तिकःकर्षः । अयमेवकालिंगपरिभाषायामपि । यतस्तत्राष्टरत्तिकोमाषो द्वात्रिंशद्रत्तिकष्टङ्कस्तद्द्वयमितःकर्षः ॥ २ ॥

तीस परमाणु का एक त्रसरेणु अथवा बंशी कहतेहैं झरोखे आदि मेंसे आईहुई सूर्य्यकी किरणों से जोसूक्ष्म पदार्थ दिखाई देते हैं उनको त्रसरेणु और बंशी कहते हैं छः बंशीकी एकमरीचि छःमरीचि की राई तीन राई की सरसों आठ सरसोंकाजव चारजवकी रत्ती छःरत्ती का मासा इसको हेम और धामक भी कहते हैं चार मासे का शाण इसको धरण और टंकभी कहते हैं दोशाणकाकोल इसको क्षुद्र बटक और द्रंक्षण कहते हैं दोकोल का कर्ष इसको पाणिमानिक अक्ष पिचु पाणि तल किंचित् पाणि तिंदुक बिड़ाल पदक षोड़शिका कर मध्या हंसपद सुवर्ण कवलग्रह और उदुम्बर कहते हैं दो कर्षका अर्द्धपल इसको शुक्ति और अष्टमिका कहते हैं दोशुक्ति काएकपल इसको मुष्टि मात्र चतुर्थिका प्रकुंच षोड़शी और बिल्व कहते हैं दोपलकी प्रसृति इसको प्रसृत भी कहते हैं दोप्रसृति की अंजली इसको कुड़व अर्द्ध शराव और अ-टमान दोकुड़वकी एकमानिका इसको शराव और अष्टपंद दोशराव काप्रस्थ चारप्रस्थ का आढ़क इसको भाजन कांस्यपात्र और चतुष्पाटि पल कहतेहैं चार आढ़कका द्रोण इसको कलश नल्वण अर्मन उन्मान घटऔर राशिकहतेहैं दो द्रोणका सूर्य इसकोकुंभभी कहतेहैं यह चौंसठ शरवाका होता है दोसूर्पकी द्रोणी इसको वाह और गोणी कहते हैं चार द्रोणीकी एक खारी यह चार हजार छयानबे पलकी होती है दोहजार पलका एकभार होता है एकसौ पलकी एकतुलाहोती है मासाटंक अक्ष बिल्व कुड़व प्रस्थ आढकराशि गोणी और खारी यहसब क्रमसे उत्तरोत्तर चौगुने हैं जैसे मासे से चौगुना टंक इत्यादि मागध परि भाषा में छः रत्ती का मासा चौबीस रत्तीका टंक और छयानबे रत्तीका कर्ष यह चरक का मत है सुश्रुतके मत में ५ रत्ती का मासा २० रत्तीकाटंक और अस्सी ८० रत्ती का कर्ष और इसी प्रकार से कालिङ्ग परिभाषा में भी आठरत्ती का मासा बत्तीस रत्ती काटंक और ढाई टंकका कर्ष होताहै ॥ २ ॥

गुञ्जादिमानमारभ्ययावत्स्यात्कुडवस्थितिः । द्रवार्द्रशुष्कद्रव्याणांतावन्मानंसमंमतम् ॥ प्रस्थादिमानमारभ्यद्विगुणंतद्द्रवाद्रयोः । मानन्तथातुलायास्तुद्विगुणंनक्वचित्स्मृतम् ॥ मृद्वृक्षवेणुलोहादेर्भाण्डंयच्चतुरंगुलम् । विस्तीर्णोच्चतथोच्चश्चतन्मानंकुडवंवदेत् ॥ इतिमागधमानम् ॥ ३ ॥

रत्तीआदिसे लेकर कुड़ व पर्य्यन्त द्रवआर्द्र और शुष्क द्रव्योंकामान तुल्यहोताहै प्रस्थसे आदिले कर संपूर्ण द्रव और आर्द्र पदार्थोंका प्रमाण दूनाग्रहण करना चाहिये और तुलाका मान द्विगुण कभी नहींहोता मृत्तिका वृक्ष बांस और लोहा आदिके पात्र जो चार अंगुल लंबे चारअंगुलचौंड़े और चार हीअंगुल गहरे होतेहैं उनमें जितना पदार्थ माताहै उसे कुड़व कहतेहैं इतिमागधमानं (३) ॥

कालिंगमानम् ॥

यतोमन्दाग्नयोह्रस्वाहीनसत्त्वानराःकलौ । अतस्तुमात्रातद्योग्याप्रोच्यतेसुज्ञसम्मता ॥ यवोद्वादशभिर्गोरसर्षपैःप्रोच्यतेबुधैः । यवद्वयेनगुञ्जास्यात्त्रिगुञ्जोबल्लउच्यते माषोगुञ्जाभिरष्टाभिःसप्तभिर्वाभवेत्क्वचित् । चतुर्भिर्माषकैःशाणःसनिष्कष्टङ्कएवच ॥ गद्याणोमाषकैःषड्भिःकर्षःस्याद्दशमाषिकः।चतुःकर्षैःपलंप्रोक्तंदशशाणमितंबुधैः॥चतुः

पलैश्चकुडवःप्रस्थाद्याःपूर्ववन्मताः । स्थितिर्नास्त्येवमात्रायाःकालामग्निंवयोबलम् ॥ प्रकृतिंदोषदेशौचदृष्ट्वामात्रांप्रकल्पयेत् । नाल्पंहन्त्यौषधंव्याधिंयथाम्भोऽल्पंमहानलम् ॥ अतिमात्रंचदोषायशस्योप्तस्थेबहूदकम् । इतिमानपरिभाषा ॥ ४ ॥

अथकलिंगमानम् ॥

कलियुगमें मंदाग्नि ह्रस्व और सत्व से हीन पुरुष होतेहैं इससे उनके योग्य मात्राकही जाती है बारहसफेद सरसोंका जव दो जवोंकी एकरत्ती तीन रत्तीका बल्ल आठ अथवा सातरत्ती का मासा चारमासेका शाण इसको निष्क और टंककहतेहैं छः मासेका गद्याण दशमासेका कर्ष चारकर्षका अथवा दशशाणका पल चारपलका कुड़व और प्रस्थादिक पूर्वके समान होतेहैं मात्राका कोई नियम नहीं है काल अग्नि बल अवस्था प्रकृति दोष और देश इनको विचारकर मात्राकी कल्पना करनी चाहिये जैसे थोड़ासा जल बहुतसी अग्निको नहीं बुझासक्ताहै इसी प्रकार बड़े रोगको थोडी औषधि नहीं नाशकरतीहै और जैसे बहुत जल खेतमें अन्नकी हानिकरताहै इसीप्रकार बहुत औषधिभी दोषों को करती है इससे योग्यही मात्रादेनी चाहिये इतिमानपरिभाषा ॥ ४ ॥

अथ भेषजानांविधानानि ॥

स्वरसश्चतथाकल्कःक्वाथश्चहिमफाण्टकौ । ज्ञेयाःकषायाःपञ्चैतेलघुवः स्युर्यथोत्तरम्॥५॥

औषधोंकीविधि ॥

स्वरस कल्क क्वाथ हिम और फांट यह पांचप्रकार के कषाय उत्तरोत्तर हलके होतेहैं ॥ ५ ॥

तत्रादौस्वरसविधिः ॥

आहतात्ततक्षणात्कृष्टाद्व्यात्क्षुण्णात्समुद्भवेत् । वस्त्रनिष्पीडितोयश्चस्वरसोरसउच्यते ॥ आहतात्शीताग्निकीटादिभिरनुपहतात् । क्षुण्णात् । संपिष्टात्कुडवञ्चूर्णितंद्रव्यंक्षिप्तञ्चद्विगुणेजले । अहोरात्रंस्थितंतस्माद्भवेद्वारसउत्तमः ॥ चूर्णितञ्चूर्णीकृतं । आदायशुष्कद्रव्यंवास्वरसानामसम्भवे । जलेऽष्टगुणितेसाध्यंपादशिष्टंचगृह्यते ॥ स्वरसस्यगुरुत्वाच्चपलमर्द्धप्रयोजयेत् । निशोषितञ्चाग्निसिद्धंपलमात्रंरसंपिवेत् ॥ निशोषितंनिशायामुषितंसितामधुगुड़क्षारान्जीरकंलवणंतथा । घृतंतैलञ्चचूर्णादीन्कोलमात्रान्रसेक्षिपेत् ॥ कोलष्टङ्कद्वयंच ॥ ६ ॥

स्वरसकीविधि ॥

पाला अग्नि तथा कीट आदिकोंसे नहीं बिगड़ीहुई औषधको लाकर उसी क्षण कूटकरजोवस्त्रके द्वारा अर्क निकाला जाताहै उसको स्वरस कहते हैं अथवा १२ तोले चारमासे औषधको कूटकर दूने जलमें एकदिन रात भिगोवे फिर छानले यह उत्तम रस होताहै अथवा सूखी औषधोंका जबरस न निकलसके तव अठगुने पानीमेंपकावे और चौथाई रहजानेपर छानले स्वरसके भारीहोनेसे १ तोला ८ मासे पीना चाहिये जलमें भिगोयके और आगमें औटाकर निकलाहुआ रस तीनतोला चारमासे पीनाचाहिये चीनी सहत गुड़ क्षार जीरा नौन तेल और चूर्णादिक आठमासे स्वरसमें छोड़नेचाहिये ६।

तण्डुलजलविधिः ॥

कण्डितंतण्डुलपलञ्जलेऽष्टगुणितेक्षिपेत् । भावयित्वाजलंग्राह्यंदेयंसर्वत्रकर्मसु ॥ भावयित्वाकोमलीकृत्य ॥ ७ ॥ चावलके पानीकी बिधि ॥

कूटेहुये चारतोले चावल अठगुने जलमें भिगोवे और भीजजाने पर जल छानले इसकोसब कार्यों में व्यवहार करे ॥ ७ ॥

अथ हिमविधिः ॥

क्षुण्णंद्रव्यंपलंसम्यक्षड्भिर्नीरपलैःप्लुतम्।निशोषितंहिमःसस्यात्तथाशीतकषायकः॥ तस्यमानंमतंपानेपलद्वयमितंबुधैः । क्षुण्णंचूर्णीकृतं ॥ ८ ॥

इनकी बिधि ॥

चारतोले औषध को खूबकूट कर छः गुने जल में भिगोवे और रात्रिभरभीज जाने पर छानले इस को हिम और शीतकषाय कहते हैं यहआठ तोले पीना चाहिये ॥ ८ ॥

अथ मंथविधिः ॥

जलेचतुःपलेशीतेक्षुण्णंद्रव्यपलंक्षिपेत् । मृत्पात्रेमन्थयेत्सम्यक्तस्माच्चद्विपलंपिबेत् ॥ क्षुण्णंचूर्णीकृतम्मन्थयेत्मथ्नीयात् ॥ ९ ॥

मन्थकी बिधि ॥

कूटी हुई चारतोले औषध को सोलह तोले ठंढे जलमें भिगोकर मृत्तिका के पात्र में अच्छेप्रकार से मथले इसको मंथ कहते हैं यह आठतोले पीना चाहिये ॥ ९ ॥

अथफाण्टविधिः ॥

क्षुण्णेद्रव्यपलेसम्यक्जलमुष्णंविनिःक्षिपेत्।मृत्पात्रेकुडवोन्मानंततस्तुस्रावयेत्सटात् ॥ सस्याच्चूर्णद्रवःफाण्टस्तन्मानंद्विपलोन्मितम् । क्षौद्रंसितागुडादींस्तुकर्षमात्रान्विनिःक्षिपेत् ॥ क्षुण्णेचूर्णीकृतेसचूर्णद्रवःफाण्टःस्यादित्यन्वयः ॥ १० ॥

फांटकी बिधि ॥

कूटी हुई चारतोले औषध को सोलह तोले गरम जल डालकर मट्टी के पात्रमें रक्खे फिर कपडे में छानले इसको फांट कहते हैं इसकी मात्रा आठतोले की है इसमें सहत चीनी और गुड़ आदिक तोले भरमिलावे ॥ १० ॥

अथ कल्कविधिः ॥

द्रव्यमार्द्रंशिलापिष्टंशुष्कंवासजलंभवेत् । प्रक्षिप्यगालयेद्वस्त्रेतन्मानंकर्षसंमितम् ॥ कल्केमधुघृतंतैलंदेयंद्विगुणमात्रया । सितागुडसमन्दद्याद्रवोदेयश्चतुर्गुणः ॥ ११ ॥

कल्ककी बिधि ॥

गीली औषधको अथवा सूखी औषधको जलसे शिलपर पीसकर छानले इसकी मात्रा एकतोले कीहै इसमें सहत घी और तेल दूना छोड़ना चाहिये चीनी तथा गुड़ समभाग और अन्य गीली बस्तु चौगुनी छोड़नी चाहिये ॥ ११ ॥

अथ चूर्णविधिः ॥

अत्यन्तशुष्कंयद्द्रव्यंसुपिष्टंवस्त्रगालितम्।तत्स्याच्चूर्णरजःक्षोदस्तन्मात्राकर्षसंमिता॥

चूर्णेगुड़ःसमोदेयःशर्कराद्विगुणामता । चूर्णेषुभर्जितंहिंगुदेयंनोत्क्लेदकृद्भवेत् ॥ लिहेच्चूर्णं द्रवैःसर्वैर्घृताद्यैर्द्विगुणोन्मितैः । पिबेच्चतुर्गुणैरेवंचूर्णमालोडितंद्रवैः ॥ १२ ॥

चूर्णकीविधि ॥

अत्यन्त सूखीहुई औषधको खूबपीसकर कपड़े से छानले इसको चूर्णरज और क्षोदकहते हैं इसकीमात्रा तोलेभरकीहै चूर्ण में गुड़ बराबरऔर चीनी दूनीडालनी चाहिये चूर्ण में हींगमिलानीहोय तो भूनके मिलावे जो चूर्ण को चाटे तो घृतआदिक गीलेपदार्थ दूने मिलाने चाहिये और जो घोल करपिये तो चौगुनीड़ाले ॥ १२ ॥

चूर्णावलेहगुटिकाकल्कानामनुपानकम् । पित्तवातकफातङ्कत्रिद्वयेकपलमाहरेत् ॥ यथा तैलंजलेप्राप्तंक्षणेनैवविसर्पति । अनुपानबलादंगेतथासर्पतिभेषजम् ॥ १३ ॥

चूर्ण अवलेह गुटिका और कल्कका अनुपान पित्त बात और कफकेरोग में क्रमसे बारहतोले आठ तोले और चारतोले होने चाहिये जैसेजल में तेलछोड़ने से बहुतजल्दी फैलजाताहै उसी प्रकार औषधभी अनुपानके बलसे शरीर में फैलतीहै ॥ १३ ॥

भावनाविधिः ॥

द्रवेणयावतासम्यक्चूर्णंसर्वंप्लुतम्भवेत् । भावनायाःप्रमाणंतुचूर्णेप्रोक्तंभिषग्वरैः ॥ १४ ॥

भावनाकी विधि ॥

श्रेष्ठवैद्योंने कहाहै कि चूर्ण जितनी गीलीबस्तुके छोड़नेसे डूबजावे उतनीहीछोड़नीचाहिये ॥ १४ ॥

अथ पुटपाकविधिः ॥

पुटपाकस्यकल्कस्यस्वरसोगृह्यतेयतः । अतस्तुपुटपाकानांयुक्तिरत्रोच्यतेमया ॥ पुटपाकस्यपाकोऽयंलेपस्यांगारवर्णता । लेपंचद्व्यंगुलंस्थूलंकुर्य्याद्व्यंगुलमात्रकम् ॥ काश्मरीवटजम्ब्वादिपत्रैर्वेष्टनमुत्तमम् । पलमात्रोरसोग्राह्यःकर्षमात्रंमधुक्षिपेत् ॥ कल्कचूर्णद्रवाद्यास्तुदेयाःकोलमितावुधैः ॥ १५ ॥

पुटपाककी बिधि ॥

पुटपाककरके कल्कका स्वरस लियाजाताहै इसलिये यहां पुटपाकको बिधि कहतेहैं गंभारी बरगद और जामनआदि के पत्तोंसे लपेटकर दोअंगुल अथवा एकअंगुलका मट्टीका लेपकरे फिरजबतक लेप रक्तबर्णनहोय तबतक अग्निमें पकावे इसका चारतोलेरसलेनाचाहिये सहततोलेभर कल्कचूर्ण तथाअन्यकोई गीलीबस्तु आठमासे छोड़नीचाहिये ॥ १५ ॥

उष्णोदकविधिः ॥

अष्टमेनांशशेषेणचतुर्थेनार्द्धकेनवा । अथवाक्वथनेनैवसिद्धमुष्णोदकंभवेत् ॥ श्लेष्मामवातमेदोघ्नंवस्तिशोधनदीपनम् । कासश्वासज्वरान् हन्तिपीतमुष्णोदकंनिशि ॥ उष्णोदकंमुद्गवटाइतिलोके ॥ १६ ॥ गरमजलकी बिधि ॥

जल अग्निमें औटानेसे अष्टमांश चतुर्थांश या अर्द्धांश रहजानेपर लेनाचाहिये अथवा केवलउबाल हुवे गरमजल रात्रिमें पीने से कफऔरमेद आमवात खांसी श्वास तथा ज्वरका नाशक मूत्राशय काशोधक और दीपनहोताहै ॥ १६ ॥

क्षीरपाकविधिः ॥

क्षीरमष्टगुणंद्रव्यात्क्षीरान्नीरंचतुर्गुणम् । क्षीरावशेषंतत्पीतंशूलमामोद्भवंजयेत् ॥ १७ ॥

क्षीरपाकविधि ॥

जिस बस्तुके साथदूध औटानाहो उसका अठगुना दूध दूधका चौगुना जल मिलाके औटावे जब केवल दूध बाकीरहै तब उसको पिये इससे आमका शूल नष्ट होताहै ॥ १७ ॥

क्वाथविधिः ॥

पानीयंषोड़शगुणंक्षुण्णोद्रव्यपलेक्षिपेत् । मृत्पात्रेक्वाथयेद्ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् ॥ कर्षादौतुपलंयावद्द्यात्षोड़शकंजलम् । तत्तस्तुकुड़वंयावत्तोयमष्टगुणंभवेत् ॥ चतुर्गुणमतश्चोर्द्ध्वंयावत्प्रस्थादिकंजलम्।षोड़शिकंषोड़शगुणम्॥ तज्जलंपाययेद्धीमान्कोष्णं मृद्वग्निसाधितम् । श्रृतःक्वाथःकषायश्चनिर्यूहःसनिगद्यते ॥ १८ ॥

क्वाथकीविधि ॥

चार तोले कुटीहुई औषध सोलह गुने जलके साथ मृत्तिका के पात्रमें औटावे जब आठभागका एक भाग रहजाय तब छानले एक तोले से चारतोलेतक औषधमें सोलहगुना जल चारतोले से सोलह तोलेतक अठगुना जल और सोलह तोलेसे चौंसठ तोलेतक चौगुना जल क्वाथबनाने में छोड़नाचाहिये बुद्धिमान् पुरुष मन्द अग्निमें पकेहुए जलको कुछ उष्णपिलवावे इसको श्रित क्वाथ कषाय और निर्यूहकहतेहैं ॥ १८ ॥ क्वाथपानमात्रामाह ॥

मात्रोत्तमापलेतत्स्यात्त्रिभिरक्षैस्तुमध्यमा । जघन्याचपलार्द्धेनस्नेहक्वाथौषधेषुच॥ तन्त्रान्तरे ।क्वाथ्यद्रव्यपलेवारिद्विरष्टगुणमिष्यते।चतुर्भागावशिष्टन्तुपेयंपलचतुष्टयम्॥ दीप्तानलंमहाकायंपाययेदञ्जलिंजलम् । अन्येत्वर्द्धंपरित्यज्य प्रसितिंतुचिकित्सिकाः॥ क्वाथत्यागमनिच्छन्तस्त्वष्टभागावशेषितम् । पारम्पर्योपदेशेन वृद्धवैद्याःपलद्वयम् ॥ अष्टभागावशेषितस्य चतुर्भागावशिष्टापेक्षयागुरुत्वात् दीप्तानलंमहाकायंपलद्वयंपाययेन्मध्यमाग्निमल्पकायंपलमात्रंपाययेत् मात्रोत्तमापलेनस्यादित्यादिवचनात् ॥ क्वाथे क्षिपेत्सितामंशैश्चतुर्थाष्टमषोड़शैः । वातपित्तकफातङ्केविपरीतंमधुस्मृतम् ॥ जीरकं गुग्गुलंक्षारं लवणंचशिलाजतु । हिंगुत्रिकटुकंचैव क्वथिशाणोन्मितंक्षिपेत् ॥ क्षीरं घृतंगुड़ंतैलंमूत्रंचान्यद्द्रवंतथा । कल्कंचूर्णादिकंक्वाथे निक्षिपेत्कर्षसंमितम् ॥ तत्रोपविश्यविश्रान्तः प्रसन्नवदनेक्षणः । औषधंहेमरजतं मृद्भाजनपरिस्थितम् ॥ पिबेत्प्रसन्नहृदयः पीत्वापात्रंमधोमुखम् । विधायाचम्यसलिलं ताम्बूलाद्युपयोजयेत् ॥ १९ ॥

क्वाथपीनेकीमात्रा ॥

चारतोलेकी उत्तम तीन तोलेकी मध्यम और दो तोलेकी निकृष्टमात्रा होती है स्नेह क्वाथ और औषधोंकी यह मात्राहै तंत्रान्तरमें कहागया है कि चारतोले क्वाथकी औषधमें सोलह गुनापानी डालकर गरम करने में जब चौथाई बाकीरहै तबउस सोलह तोले जलकोपिये दीप्ताग्नि और बड़े शरीर वाले पुरुषको सोलह तोलेक्वाथ पिलावे और जो मन्दाग्नि तथा छोटे शरीर वालेहों उनके

आधात्यागकर आधापिलाना चाहिये और जो क्काथको त्याग न करना चाहते हों वह अष्टमांशबाकी रहै तबपियें यहवृद्ध वैद्योंका संमतहै चतुर्थान्श क्काथकी अपेक्षा अष्टमांश बचाहुआ क्काथभारीहोताहै इसलिये दीप्ताग्नि और बड़े शरीर वाले पुरुषोंको आठतोले और मध्यमाग्नि तथा छोटे शरीर वाले पुरुषोंको चारतोले क्काथ पिलाना चाहिये क्योंकि उत्तममात्रा चार तोलेकी होती है इत्यादिक वचन कहेगये हैं क्काथमें जो चीनी छोड़नीहोय तो बातपित्त तथा कफके रोगोंके क्रमसे चतुर्थान्श अष्टमांश और षोड़शांश छोड़दे परन्तु सहतकी मात्रा इस्से विपरीत है जैसे बात रोगमें षोड़शांश इत्यादि जीरा गूगल जवाखार सैंधव शिलाजीत हींग सोंठ पीपल और मिरच यहसब वस्तु मिलानीहोंय तो चारमासे मिलावे दूध घृत गुड़ तेल मूत्र अथवा अन्यकोई गीलापदार्थ और कल्क तथा चूर्ण आदिक क्काथमें एक तोलेभर मिलावे अच्छे प्रकारसे बैठकर प्रसन्नमुख नेत्रवाला पुरुष सुवर्ण चांदी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें रक्खीहुई औषधको खुशीमनसे पीकर पात्रको औंधादे फिरजलसे मुखको धोकर तांबूल आदिको खाय ॥ १९ ॥

अवलेहविधिः ॥

क्काथंदेर्यत्पुनःपाकाद्घनत्वंसारसक्रिया । सोऽवलेहश्चलेहश्चतन्मात्रास्यात्पलोन्मिता ॥ सिताचतुर्गुणाकार्य्या चूर्णाच्चद्विगुणोगुड़ः । द्रवंचतुर्गुणंदद्यादितिसर्वत्रनिश्चयः ॥ सुपक्केतन्तुमत्त्वंस्यादवलेहेऽप्सुमज्जनम् ॥ स्थिरत्वपीडितेमुद्रांगन्धवर्णरसोद्भवः ॥ दुग्धमिक्षुरसंयूषंपञ्चमूलकषायजम् । वासाक्काथंयथायोग्यमनुपानंप्रशस्यते ॥ २० ॥

अवलेहचटनी की विधि ॥

ऊपरके कहेहुए क्काथ आदिकों को फिर औटाकर गाढ़ाहोने से अवलेह अथवा लेहकहा जाताहै इसकी मात्राचार तोलेकीहै अवलेह बनानेमें औषधके चूर्णसे चौगुनी शक्कर दूनागुड़ और चौगुनेही सब द्रवपदार्थ छोडे पकेहुए अवलेहकी यह परीक्षाहै कि जलमें छोड़नेसे डूबजाय तारसेछूटे दबाने से स्थिर बनारहै सुगन्धआवे और वर्णतथा रसठीकहो अवलेह खानेके पीछेदूध ईषकारस पंचमूलका काढ़ा अथवा वासाका काढ़ा इनमेंसे किसी को उचित समझकर पिये ॥ २० ॥

वटकाविधिः ॥

वटकाश्चथकथ्यन्तेतन्नामगुटिकावटी । मोदकोवटिकापिण्डीगुड़ोवर्त्तिस्तथोच्यते ॥ लेहवत्साध्यतेवह्नौगुड़ोवाशर्करायवा । गुग्गुलुर्वाक्षिपेत्तत्रचूर्णंतन्निर्मितावटी ॥ तत्रवह्निसिद्धेगुड़ादौ । कुर्याद्वह्निसिद्धेनक्वचिद्गुग्गुलुनावटी द्रवेणमधुनावापिगुटिकांकारयेद्बुधः ॥ सिताचतुर्गुणादेयावटीषुद्विगुणोगुड़ः । चूर्णोचूर्णसमःकार्य्यो गुग्गुलुः मधुतत्सममम् ॥ (तत्सममम् । चूर्णसममम्) द्रवंतुद्विगुणंदेयंमोदकेषुभिषग्वरैः ॥ द्रवंद्रवरूपद्रव्यं कर्षप्रमाणंतन्मात्राबलंदृष्ट्वाप्रयुज्यते । बलमितिकालादेरप्युपलक्षणम् ॥ २१ ॥

गोलीकीविधि ॥

वटक गुटिका वटी मोदक वटिका पिंडी गुड़ और वर्त्ति यह गोली के नाम हैं गुड़ चीनी अथवा गूगलको अवलेह के समान अग्निमें पकाकर औषधियोंके चूर्ण मिलानेसे गोली बनतीहै कहींर

अग्निमें विना पकाये गूगल अथवा सहत आदिक गीली वस्तुसे गोली बनाई जातीहै मोदक बनाने में जो चीनी छोडनीहोवे तो चौगुनी गुड़दूना और चूर्ण गूगल तथा सहत औषधियों के चूर्णके बराबर डालने चाहिये और जो गीली वस्तु डालनीहोतो दूनी छोड़े इसकी मात्रा एकतोलेकीहै अथवा बल देश तथा काल अवस्था आदि विचारकर मात्रादेनी चाहिये ॥ २१ ॥

घृततैलयोर्विधिः ॥

कल्काच्चतुर्गुणीकृत्यघृतंवातैलमेवच । चतुर्गुणद्रवेसाध्यंतस्यमात्रापलोन्मिता ॥ मात्रापलोन्मिता । भक्षणाय ॥ निक्षिप्यक्काथयेत्तोयंक्काथ्यद्रव्याच्चतुर्गुणम् । पादशिष्टंगृहीत्वातुस्नेहस्तेनैवसाधयेत् ॥ चतुर्गुणंमृदुद्रव्येकठिनेऽष्टगुणंजलम् । मृद्वादिक्काथ्यसंघातेदद्यादष्टगुणंपयः॥ अत्यन्तकठिनेद्रव्येनीरंषोड़शिकंमतम्। मृदुद्रव्येआर्द्रद्रव्येगुडूच्यादौ ॥ कठिनेशुष्कद्रव्येशुंठ्यादौअत्यन्तकठिने । चिरशुष्केदेवदार्व्यादौ ॥ कर्षादितः पलंयावत्क्षिपेत्षोड़शिकंजलम् । तद्दूर्ध्वंकुडवंयावत्भवेदष्टगुणंपयः॥ प्रस्थादितःक्षिपेन्नीरंखारीयावच्चतुर्गुणम् । पूर्वंचतुर्गुणमृदुद्रव्यइत्यादिनाक्काथ्यद्रव्यंतन्मृदुत्वादिगुणभेदेनजलगतपरिमाणमुक्तम् ॥ इदानींकेचिदाचार्याःकर्षादितःपलंयावदित्यादिवचनेक्काथ्यंद्रव्यगतपरिमाणभेदेनजलगतपरिमाणंमन्यन्ते। अम्बुक्काथरसैर्यत्रपृथक्स्नेहस्यसाधनम् ॥ कल्कस्यांशन्तत्रदद्याच्चतुर्थंषष्ठमष्टमम्।अस्यायमर्थः॥अम्बुनास्नेहसाधनेकल्कंस्नेहस्यचतुर्थमंशंदद्यात्।क्काथेनस्नेहसाधनेस्नेहस्यषष्ठभागंकल्कंदद्यात्॥स्वरसैःस्नेहसाधनेस्नेहस्याष्टमभागंकल्कंदद्यात्। पुनर्विशेषमाह॥ दुग्धेदधिरसेत्रक्केकल्कोदेयोऽष्टमांशिकः । कल्काच्चसम्यक्पाकार्थंतोयसत्रचतुर्गुणम् ॥ कल्कात् । कल्कद्रव्यात् ॥ चतुर्गुणंतोयंपेषणार्थम्। द्रवाणियत्रस्नेहेषुपञ्चादीनिभवन्तिहि॥तत्रस्नेहसमान्याहुर्यथापूर्वञ्चतुर्गुणम् ॥ अस्यायमर्थः । यत्रस्नेहेषुआदीनिपञ्चद्रव्याणिदुग्धदधिस्वरसतक्रकल्कोपयुक्तजलानिप्रत्येकंस्नेहसमानिवोढव्यानियथापूर्वम् । दुग्धदधिस्वरसतक्रंसमुदितंस्नेहाच्चतुर्गुणंभवति । द्रव्येणकेवलेनैवस्नेहपाकोभवेद्यदि ॥ तत्राम्बुपिष्टःकल्कःस्याज्जलञ्चात्रचतुर्गुणम् ॥ अत्रकल्कद्रव्ये । क्काथेनकेवलेनैवपाकोयत्रोदितःक्वचित् क्काथ्यद्रव्यस्यकल्कोऽपितत्रस्नेहेप्रयुज्यते ॥ कल्कहीनस्तुयःस्नेहःससाध्यःकेवलेद्रवे । केवलेद्रवे ॥ क्काथेतरस्मिन्स्वरसादिरूपे । पुष्पकल्कस्तुयःस्नेहस्तत्रतोयंचतुर्गुणम् ॥ स्नेहात्स्नेहाष्टमांशश्चपुष्पकल्कःप्रयुज्यते ॥ वर्त्तिवत्स्नेहकल्कःस्याद्यदांगुल्याविवार्त्तितः । शब्दहीनोऽग्निनिक्षिप्तःस्नेहःसिद्धोभवेत्तदा ॥ यदाफेनोद्गमेतैलेफेनशान्तिश्चसर्पिषि । वर्णगन्धरसोत्पत्तिःस्नेहःसिद्धोभवेत्तदा ॥ स्नेहपाकस्त्रिधाप्रोक्तोमृदुर्मध्यंखरस्तथा । ईषत्सरसकल्कस्तुस्नेहपाकोमृदुर्भवेत् । मध्यपाकस्यसिद्धिश्चकल्केनीरसकोमले ईषत्काठिनकल्कश्चस्नेहपाकोभवेत्वरः॥ तदूर्द्ध्वंदग्धपाकःस्याद्दाहकृन्निःप्रयोजनः।अामपक्वश्चनिर्वीर्योवह्निमान्द्यकरोगुरुः ॥ तस्यार्थस्यान्मृदुःपाकोमध्यमःसर्वकर्मसु ।

अभ्यङ्गार्थःखरःप्रोक्तोयुञ्ज्यादेवंयथोचितम्॥ घृततैलगुड़ादींश्चसाधयेन्नैकवासरे। प्रकुर्वन्त्युषितास्त्वेतेविशेषाद्गुणसञ्चयम्॥ २२॥

घृत और तैलकी विधि॥

कल्कका चौगुना घी अथवा तेल चौगुने पतले पदार्थ में मिलाकर पाककरे इसके पीनेकी मात्रा चारतोलेकी है क्वाथकी औषधियोंको चौगुने जलमें औटावे फिर चौथाई रहजानेपर उसी में घृत आदिको मिलाकर पकावे क्वाथकी वस्तु जो कोमल गिलोय आदिक होयतो चौगुनाजल और सोंठ आदिक कठिन वस्तुहोंयतो अठगुना जल और सूखेदेवदारु आदिक अतिकठोरपदार्थहोंय तो सोलह गुना जलहोना चाहिये और जो कोमल और कठोर दोनों मिली वस्तुहोंय तो अठगुना जलडालना चाहिये चारमासे से चारतोलेतक औषधमें सोलह गुना जल चारतोलेसे सोलह तोलेतक अठगुना और सोलह तोले से आधिक होय तो चौगुना जल छोड़नाचाहिये जल क्वाथ अथवा स्वरसकेद्वारा अलग तैल आदिक बनानेकी विधि जहांकहींहोवे वहां क्रमसे कल्क स्नेहका चतुर्थान्श षष्ठान्श और अष्ठमांश लेनाचाहिये अर्थात् जलके द्वारा स्नेह बनाने में कल्क स्नेहका चौथाई क्वाथके साथ स्नेह बनानेमें कल्क स्नेहका छठाभाग औरस्वरसकेसाथ स्नेहबनानेमेंस्नेहका आठवांहिस्साकल्कलेनाचाहिये फिर विशेष कहतेहैं कि दूधदही स्वरस और मट्ठेके द्वारा स्नेहबनानेमेंआठवांभागकंल्क लेना चाहिये और इस कल्कके अच्छेप्रकार परिपाक होने के लिये चौगुना जलपीसने में मिलाना चाहिये जिस स्नेहके बनानेमें प्रथम कहीहुई दूध दही स्वरस मट्ठा और कल्क यह पांचोंद्रवबस्तु मिलानी कही हो वहां इनहर एक का प्रमाण स्नेह के समान होना चाहिये जैसे पहले दूधदही स्वरस मट्ठा यह सब मिल करके स्नेहके चौगुने होतेहैं स्नेहके बनानेमें जो केवल द्रव्यही कहाहो तो उसमें जलसे पीसा हुआ कल्क और जल चौगुना मिलाना चाहिये जहां केवल क्वाथहीसे स्नेहका पाक करना लिखाहो वहां क्वाथकी औषधियोंका कल्क भी व्यवहार कियाजाता है और जहां कल्क रहित स्नेह बनाना लिखाहो वहां केवल स्वरस आदि द्रव पदार्थों से पाक करे जो स्नेह पुष्पोंके कल्कसे बनाना लिखाहो वहां स्नेहसे चौगुना जल और स्नेहका आठवां भाग पुष्पका कल्क मिलाना चाहिये स्नेह का कल्क जो उंगलीके द्वारा दबानेसे बत्तीके समान होजाय और अग्निमें डालने से शब्द न हो तब स्नेहको ठीक हुआ जानना चाहिये जब तेलमें फेना उठनेलगे घीका फेना फटजाय और यथायोग्य बर्ण सुगन्धि तथा रसकी उत्पत्तिहो तब स्नेह सिद्धहुआ जानना चाहिये स्नेहका पाक तीनप्रकारका होताहै मृदु मध्य और खर इनमेंसे जिस स्नेहका कल्क कुछ रसयुक्तहो वह मृदु पाक जिसका कल्क नीरस तथा कोमलहो उसको मध्य पाक और जिसका कल्क कुछ कठोर होजाय उसको खरपाक कहतेहैं इस्से भी अधिक पाक करनेमें गन्धपाक कहलाताहै यह दाहकारी और निष्प्रयोजन होताहै और पाकमें कच्चा रहाहुआ स्नेह वीर्यरहित मन्दाग्निकारी और भारी होताहै नासलेनेमें मृदुपाक अन्य सम्पूर्ण कार्योंमें मध्यपाक और शरीरमें लगानेके लिये खरपाक कहागया है घी तेल और गुड आदिको एकही दिनमें पाकनकरे क्योंकि बासी होनेसे गुणकी विशेषता होतीहै॥ २२॥

अथ सन्धानविधिः॥

द्रवेषुचिरकालस्थंद्रव्यंयत्सन्धितम्भवेत्। आसवारिष्टभेदैस्तुप्रोच्यतेभेषजोचितम्॥ भेषजेषुयचितंतद्भेषजोचितम्॥ २३॥

संधानकी विधि ॥

पतले पदार्थमें बहुतदिनतक औषधको भिगोनेसे जो आसव और अरिष्ट आदिक भेद बनतेहैं उनको संधान कहतेहैं ॥ २३ ॥ तत्रआसवारिष्टयोर्लक्षणमाह ॥

यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धंमद्यंसआसवः । अरिष्टःक्वाथसाध्यःस्यात्तयोर्मानंपलोन्मितम् ॥ (सामान्यतोऽरिष्टविधिः) अनुक्तमानारिष्टेषुद्रवाद्द्रोणगुड़ातुलम् । क्षौद्रक्षिपेद्गुड़ादर्द्धं प्रक्षेपंदशमांशिकम् ॥ दशमांशिकम् । गुड़स्यैवदशमांशं ॥ २४ ॥

आसव और अरिष्टके लक्षण ॥

कच्ची औषधि और जलके द्वारा जो मद्य बनतीहै उसको आसव कहतेहैं और क्वाथकरके जो मद्य बनतीहै उसको अरिष्ट कहतेहैं इनदोनोंकी मात्रा चारतोलेकीहै जहां अरिष्ट बनानेका प्रमाण न लिखाहो वहां जल एक द्रोण गुड़ ४०० तोले सहत २०० तोले और औषधि गुड़का दशांश डालना चाहिये ॥ २४ ॥ द्विविधंसीधुमाह ॥

ज्ञेयःशीतरसः सीधुरपक्वमधुरद्रवैः (मधुरद्रवैरिक्षुरसादिभिः) सिद्धःपक्वरसःसीधुःसम्पक्वमधुरद्रवैः । परिपक्वान्नसन्धानात् समुत्पन्नांसुराञ्जगुः ॥ सुरामण्डः प्रसन्नास्यात्ततःकादम्बरीघना । तदधोजगलोज्ञेयोमेदकोजगलाद्घनः ॥ २५ ॥

दोप्रकारके सीधुके लक्षण ॥

बिना पकाये हुए मधुर रसयुक्त ईखके रस आदि पतले पदार्थोंसे जो मद्य बनताहै उसको शीत रस सीधु कहतेहैं और मधुर रसयुक्त पतले पदार्थोंको पकाय करके जो मद्य बनता है उसको पक्व रस सीधु कहतेहैं अन्नको पकाकर उसके संधानकरनेसे जो मद्य बनताहै उसको सुरा कहतेहैं मद्यके ऊपर के निर्मल अंशको प्रसन्ना उससे कुछ घनेको कादंबरी कादंवरी के नीचेके अंशको जगल और जगलसेभी घने अंशको मेदक कहतेहैं ॥ २५ ॥

वक्कसोहतसारःस्यात्सुरावीजंचकिण्वकम् । सुरावीजम् ॥ यवगोधूमतण्डूलादियत्तालखर्जूररसैःसन्धितासाहिवारुणी ॥ कन्दमूलफलादीनिसस्नेहलवणानिच । विनष्टंसन्धितोयस्तुतच्छुक्तमभिधीयते ॥ अभिषूयन्ते । द्रवेणाह्राव्यसन्धीयन्तें ॥ विनष्टमम्लतांयातंमद्यंवामधुरद्रवः । विनष्टंसन्धितोयस्तुतच्छुक्तमभिधीयते ॥ गुडाम्बुजासतैलेनकन्दशाकफलैस्तथा । सन्धितञ्चाम्लतांयातंगुड़चुक्रंप्रचक्षते ॥ एवमेवहिशुक्तस्यान्मृद्वीकासम्भवंतथा । तुषाम्बुसन्धितंज्ञेयमामैर्विदलितैर्यवैः ॥ यवैस्तुनिस्तुषैःपक्वैःसौवीरंसाधितंभवेत् । आरनालन्तुगोधूमैरामैःस्यान्निस्तुषीकृतैः ॥ पक्वैर्वासंहितैस्तत्तुसौवीरसदृशंगुणैः । कलमाषधान्यंमण्डादिसंहितंकांजिकंविदुः ॥ शिण्डाकिसहिताज्ञेयामूलकैःसर्षपादिभिः ॥ २६ ॥

सारांश रहित मद्यको वक्कस जौ गेहूं और चावल आदि जिन वस्तुओंसे मद्य बनतीहै उनको किण्वव और ताड़केरस तथा खजूरके रसको संधान करके जो मद्य बनतीहै उसको बारुणी कहते हैं जिस पतले पदार्थमें तेल तथा लवणयुक्त कन्दमूल फल आदिक भिजोय करके संधान कियेजाते

हैं उसको शुक्त कहतेहैं मद्य अथवा मधुर रसयुक्त पतलीबस्तुको संधान करके स्वाभाविक रसनष्ट होजानेपर उसको शुक्त कहतेहैं और गुड़का शर्बत जल तेल कन्द शाक तथा फल इनको संधान करके खट्टे होजानेपर गुड़ शुक्त कहतेहैं इसीप्रकार मुनक्काको भी संधान करके शुक्त बनताहै कच्चे भूसी सहित जवोंको पीसकर संधान करनेसे तुषाम्बु बनताहै भूसी रहित जवोंको पकाकर संधान कियेहुएको सौबीर कहतेहैं कच्चे अथवा पक्के भूसीरहित गेहुओंको संधान करके जो बस्तु बनतीहै उस को आर्नाल कहतेहैं इसमें सौबीरके समान गुण होतेहैं नाजके मंडके साथ कुछ भीजेहुए गेहूं आदि को संधान करके कांजी बनतीहै मूली और सरसों आदिको संधानकरके संडाकी बनतीहै ॥ २६ ॥

अथ धातूनांशोधनमारणविधिः ॥

तत्रमारणाययोग्यंसुवर्णमाह । दाहेरलंसितच्छेदेनिकषेकुङ्कुमप्रभम् ॥ तारशुल्वो ज्झितंस्निग्धंकोमलंगुरुहेमसत् । सत् ॥ उत्तमं । तच्छेदेकठिनंरूक्षंविवर्णंसमलंदलम् । दाहेछेदेसितंश्वेतंकषेस्फुटलघुस्त्यजेत् ॥ २७ ॥

धातुओं के शोधन और मारण की बिधि मारने के योग्य सुवर्ण ॥

जो सुवर्ण तपाने में लाल काटने में श्वेत और कसने में केसर के समान होता है और जो रूपे अथवा तांबे के मेल से रहित स्निग्ध कोमल और भारी होताहै वह श्रेष्ठ है जो सुवर्ण श्वेत कठोर रूखा वर्ण रहित मलयुक्त दलसहित और तपाने में काटने में श्वेत चोट लगाने से फटनेवाला हलका तथा कस में श्वेत हो वह निकृष्ट है ॥ २७ ॥

शोधन विधिः ॥

पत्तलीकृतपत्राणिहेम्नावह्नौप्रतापयेत् । निषिञ्चेत्तप्ततप्तानितैलेतक्रेचकाञ्जिके ॥ गो मूत्रेचकुलत्थानांकषायेतुत्रिधात्रिधा । एवंहेम्नःपरेषाञ्चधातूनांशोधनंभवेत् ॥ २८ ॥

सुवर्ण के शोधने की विधि ॥

सुवर्ण के बहुत पतले पत्रों को आग में तपाकर तिलों का तेल मट्ठा कांजी गोमूत्र और कुलथी का काढ़ा इन सब में तीन तीन बार बुझावे इस रीति से सुवर्ण शुद्ध होता है और अन्य धातु भी शुद्ध होती हैं ॥ २८ ॥ अथाशुद्धस्यसुवर्णस्यदोषमाह ॥

बलंसवीर्यंहरतेनराणांरोगव्रजंपोषयतीहकाये । असौख्यकार्येचसदासुवर्णंशुद्धमेतन्म रणञ्चकुर्यात् ॥ २९ ॥

अशुद्ध सुवर्ण के दोष ॥

बिना शोधा हुआ सुवर्ण बलवीर्य का नाश रोगों की उत्पत्ति कार्य्य में अनुत्साह और मृत्यु को भी करता है ॥ २९ ॥

स्वर्णस्यमारणविधिः ॥

स्वर्णस्यद्विगुणंसूतंमम्लेनसहमर्दयेत् । तद्गोलकसमंगन्धंनिदध्यादधरोत्तरम् ॥ स्वर्णस्यअतितनूकृतपत्रस्यगन्धम् । गन्धकचूर्णम्गोलकञ्चततोरुध्वशरावदृढ़संपुटे॥ त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटान्येवचतुर्दश । निरुत्थंजायतेभस्मगन्धोदेयःपुनःपुनः ॥ रु ध्वासवस्त्रकुट्टितचिक्कणमृत्तिकयावनोपलः। गोइठाइतिलोकेनिरुत्थंयत्पुनर्नजीवति३०॥

सुवर्ण के मारण की विधि ॥

शुद्ध सुवर्ण को दूने पारे के साथ खटाई में घोटे फिर गोला बनाकर उसके ऊपर और नीचे गंधक

का चूरा रक्खे फिर उस गोले को सकोरों के मजबूत सम्पुट में रखकर वस्त्र युक्त कूटी हुई चिकनी मट्टी से बन्द कर दे फिर तीस विनवां के कण्डों से चौदह बार पुट पाक करे इस प्रकार बारम्बार गन्धक देकर पुट देने से सुवर्ण की निरुत्थ (जो फिर न जी सके) भस्म होती है ॥ ३० ॥

अथान्यप्रकारः ॥

काञ्चनेगलितेनाङ्गषोड़शांशेननिःक्षिपेत्। तूर्णयित्वातथाम्लेनधृष्ट्वाकृत्वातुगोलकम् ॥ गोलकेनसमंगन्धंदत्वाचैवाधरोत्तरम् । शरावसम्पुटेधृत्वापुटेद्विंशद्वनोपलैः एवं सप्तपुटैर्हेमनिरुत्थंभस्मजायते । अत्रापिपूर्ववद्बन्धः प्रदातव्या ॥ ३१ ॥

दूसरा प्रकार ॥

सुवर्ण को गलाकर उसका सोलहवां हिस्सा सीसा छोड़े फिर चूर्ण करके खटाई में पीस गोला बनावे और गोले के ऊपर नीचे गोले के समान गन्धक लपेटे इस प्रकार बारम्बार गन्धक देकरके बीस बीस बिनवां कण्डों से सात पुट देवे इस रीति से सुवर्ण की निरुत्थ भस्म होती है ॥ ३१ ॥

अन्यच्च ॥

काञ्चनाररसैर्घृष्ट्वासमसूतकगन्धयोः। कज्जलींहेमपत्राणि लेपयेत्समयातथा॥हेम पत्रसमया । काञ्चनारत्वचःकल्कैर्मूषायुग्मंप्रकल्पयेत् । धृत्वातत्सम्पुटेगोलं सृन्मूषा सम्पुटेचतत् ॥ निधायसन्धिरोधञ्चकृत्वासंशोष्यगोलकम्।वह्निंखरतरंकुर्यादेवंदत्वापुट त्रयम् ॥ निरुत्थंजायतेभस्मसर्वकर्मसुयोजयेत् । काञ्चनारप्रकारेणलाङ्गलीहन्तिकाञ्चनम् ॥ (लाङ्गलीकरिहारी) ज्वालासुखीतथाहन्यात् तथाहन्तिमनःशिला । शिलासिंदूरयोश्चूर्णसमयोरर्कदुग्धकैः ॥ सप्तधाभावनान्दद्याच्छोषयेच्चपुनःपुनः । ततस्तुगलितेहेम्निकल्कोऽयंदीयतेसमः ॥ पुनर्द्धमेदतितरांयथाकल्कोविलीयते । एवंवेलात्रयंदद्यात्कल्कंहेमम्रतिर्भवेत् ॥ ३२ ॥ तीसरी विधि ॥

सम भाग पारे और गन्धकको कजलीकरे फिर इसको कचनारके रसमें पीसकर समभाग सुवर्ण के पत्रोंपैलपेटै और गोला बनावे फिर कचनारकी छालको पीसकर दो घरिया बनावे उनमें गोलेको रक्खे फिर इन घरियाओंमें बन्दहुये सुवर्णको घरियासनेत मिट्टीके सकोरोंमें रक्खे और कपड़ों करके सुखावे फिर अत्यन्ततीक्ष्ण अग्निमें तीन पुटपाकदेवे इसप्रकारसे सुवर्णकी सब कामकेयोग्य निरुत्थ भस्म होजातीहै ऊपर कही हुई कचनार की विधि के अनुसार करिहारी अरनी अथवा मैनसिलसे सुवर्ण की भस्म होतीहै मैनासिल और सिन्दूर कासमभाग चूर्णकरके आकके दूधसे सातबार भावना देदेकर सुखावे फिर सुवर्णको गलाकर उसमें इसीचूर्णको समभाग छोड़े और अत्यन्त तीक्ष्ण अग्नि में ऐसी आंच देवे जिससे कि यह कल्क भस्महोकर लुप्तहो जाय तीनबार इस रीतिके करनेसे सुवर्ण की भस्म ठीक होती है ॥ ३२ ॥

एवंमारितस्यसुवर्णस्यगुणाः ॥

सुवर्णंशीतलंवृष्यंबल्यंगुरुरसायनम् । स्वादुतिक्तंचतुवरंपाकेचस्वादुपिच्छिलम् ॥ पवित्रंवृंहणंनेत्र्यंमेधास्मृतिमतिप्रदम् । हृद्यमायुष्करंकान्तिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत् ॥

विषहृयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् । वृष्यमृतृषायकामुकायहितम् ॥ असम्यङ्मारितंस्वर्णंबलंवीर्यञ्चनाशयेत् । करोतिरोगान्मृत्युञ्चतद्यत्नात्ततस्ततः ॥ ३३ ॥

सुवर्ण की भस्म के गुण ॥

सुवर्ण शीतल कामी लोगों को हित बलकारी भारी रसायन मधुर तिक्त कषैला पाक में मधुर पिच्छिल पवित्र धातुबर्द्धक नेत्रों को हित मेधाकारी स्मृति तथा बुद्धिदायक हृदय को हित आयुकारी कान्तिवर्द्धक बाणी का शोधक स्थिरताकारी और दोनों प्रकार के विष क्षय उन्माद त्रिदोष ज्वर तथा राजयक्ष्मा नाशक होता है अच्छे प्रकार से नहीं मरा हुआ सोना बल वीर्य्य की हानि रोगोंकी उत्पत्ति और मृत्युकोभी करता है इससे बड़े यत्नपूर्वक सुवर्णको भस्मकरनाचाहिये ॥३३॥

धात्वादिमारणोपयुक्तान्पुटप्रकारानाहरसप्रदीपे ॥

लोहादेरपुनर्भावस्तद्गुणत्वंगुणाढ्यता । सलिलेतरणञ्चापितत्सिद्धिःपुटनाद्भवेत् ॥ गम्भीरेविस्तृतेकुण्डेद्विहस्तेचतुरस्रके। वनोपलसहस्रेणपूरितंपुनरौषधम्॥कोष्ठेरुद्धेप्रयत्नेनगोविष्ठोपरिधारयेत् । वनोपलसहस्रार्द्धकोष्ठिकोपरिनिःक्षिपेत् ॥ वह्निंविनिक्षिपेत्तत्रमहापुटमितिस्मृतम् । कोष्ठंमृण्मूषा गोविष्ठागोइटा महापुटम् ॥ ३४ ॥

रसप्रदीप में कहेहुये धातुआदिकों के मारनेके योग्य पुटोंके प्रकार-महापुट ॥

भस्म किये हुये लोहा आदिक का फिर न जीना और जल में डालने से तैरना ठीक भस्महोने का और गुण युक्त होनेका चिह्नहै और यह चिह्न पुटपाकही से होतेहैं दीर्घ चौड़े और गंभीर दो हाथ के चौकोने कुंड में एकहजार अरने कंडे रक्ख कर मट्टीकी घरिया में रक्खी हुई औषधिको अच्छे प्रकार बन्द करके कंडोंपर रक्खे फिर पांच सौ कंडे उसके ऊपर रक्ख कर अग्नि लगादे यह महापुट कहलाता है ॥ ३४ ॥

सपादहस्तमानेनकुण्डेनिम्नेतथायते । वनोपलसहस्रेणपूर्णोमध्येविधारयेत् ॥ पुटनद्रव्यसंयुक्तांकोष्ठिकांमुद्रितांमुखे । अथार्द्धानिकरण्डानिअर्द्धान्युपरिनिक्षिपेत् । एतद्गजपुटंप्रोक्तंस्यातंसर्वपुटोत्तमम् ॥ हस्तैश्चतुर्विंशत्यंगुलप्रमाणःससपादःतेनत्रिंशदंगुलप्रमाणेनेत्यर्थःअतएवोक्तम्। साधारणनरांगुल्यात्रिंशदंगुलकोगजःइतिगजपुटम्॥ ३५ ॥

गजपुट का बर्णन ॥

सवाहाथ (तीसअंगुल) लंबे चौड़े कुंड में हजार अरने कंडे भरे फिर औषधि युक्त अच्छे प्रकारसे बन्द मट्टीकी घड़िया को उसपररक्खे फिर उसपर पांच सौ कंडे रखकर आगलगादे यह सम्पूर्ण पुटों में श्रेष्ठ गजपुट कहाताहै ऊपर कहेहुये सवाहाथ (तीसअंगुल) से एकगज समझना चाहिये क्योंकि ऐसाही कहा हुआ है कि मनुष्योंके साधारण तीसअंगुलका एक गजहोताहै ॥ ३५ ॥

अरत्निमात्रकेकुण्डेपुटंवाराहमुच्यते । वितस्तिमात्रकेखातेकथितंकौक्कुटंपुटम् ॥ अरत्निस्तुकनिष्ठनमुष्टिनेत्यमरः । निःसृतकनिष्ठयामुष्ट्योपलक्षितोहस्तोऽरत्निरित्यर्थः ॥ षोडशांगुलकेखातेकस्यचित्कौक्कुटंपुटम् ॥ ३६ ॥

फैली हुई कनिष्ठिका उंगली समेत मुट्ठी युक्त हाथभरके गहरे चौड़े कुंड में पुटदेनेको वाराहपुट

और बिलस्त भर के गहरे चौड़े कुंड में पुट देनेको कुक्कुट पुट कहते हैं कोई२ लोग सोलह उंगलके लंबे चौड़े गहरेकुंड में पुट देने को कुक्कुट पुट कहते हैं ॥ ३६ ॥

यत्पुटंदीयतेखातेऽष्टसंख्यैर्वनोपलैः । कपोतपुटमेतन्तुकथितंपुटपाण्डितैः ॥ गोष्ठा न्तर्गोखुरक्षुण्णशुष्कंचूर्णितगोमयम् । गोवरंतत्समाख्यातंवरिष्ठंरससाधने ॥ बृहद्भाण्ड स्थितैर्यत्रगोवरैर्दीयतेपुटम् ॥ तद्गोवरपुटंप्रोक्तंभिषग्भिःसूतभस्मनि । बृहद्भाण्डेतुषैःपू र्णेमध्येमूषांविधारयेत् । क्षिप्त्वाग्निंमुद्रयेत्भाण्डंतद्भाण्डंपुटमुच्यते ॥ ३७ ॥

आठकंडे भरने वाले कुंड में जो पुटपाक दिया जाता है उसको कपोत पुट कहते हैं गोशालाओंमें गौओं के खुरोंसे पिसे हुये गौओंके मलको गोबर कहते हैं यह पारेके साधन करने में श्रेष्ठ है बड़े पात्र में स्थित गोबर के द्वाराजहाँ पुट दिया जाता है उसको गोबर पुट कहते हैं इस्से पाराभस्म होताहै भूसी से भरे हुये किसी बड़े पात्रके बीचमें औषध युक्त घड़ियाको रक्खे और अग्नि लगाकर पात्रको बन्द करदे यह भांडपुट कहलाताहै ॥ ३७ ॥

अथ यन्त्रप्रकारानाहतत्रैव ॥

भाण्डेवितस्तिगम्भीरेमध्येनिहितकूपिका । कूपिकाकण्ठपर्यन्तंवालुकाभिश्चपूरिते ॥ भेषजंकूपिकासंस्थंवह्निनायत्रपच्यते । वालुकायन्त्रमेतद्धियन्त्रंतत्रबुधैःस्मृतम् ॥ वालु कायन्त्रम् ॥ ३८ ॥

यंत्रोंके प्रकार । बालुकायंत्र ॥

एकबिलस्त गहरे पात्रके बीच में औषध युक्त सीसीको रक्खे और सीसी के गले तक बालूभरदे फिर अग्नि के द्वारा औषध को पकावे यह बालुका यंत्र कहलाता है ॥ ३८ ॥

निवद्धमौषधंसूतंभूर्जेतत्त्रिगुणंवरे । रसपोटलिकाकाष्ठेदृढंबध्वागुणेनहि ॥ सन्धान पूर्णकुम्भान्तःखावलंबनसंस्थितम् । अधस्तात्ज्वालयेदग्निंतत्तदुक्तक्रमेणहि ॥ दोला यन्त्रमिदंप्रोक्तंस्वेदनाख्यंतदेवहि । दोलायन्त्रम्सन्धानंकाञ्जिकादि ॥ ३९ ॥

दोलायंत्र ॥

पारेसमेत औषधि को भोजपत्र में लपेट कर तीनतहकी पोटली बनावे फिर उस पोटली को किसी काठके टुकड़े में बांधकर काँजी आदिसे भरे हुये पात्र में पैंदीको न छूतीहुई लटकावे और उसपात्र के नीचे आगबलाकर क्रमसे अग्निदे इसको दोलायंत्र अथवा स्वेदन यंत्र कहते हैं ॥ ३९ ॥

साम्बुस्थालीमुखेबद्धेवस्त्रेस्वेद्यंनिधायच । पिधायपच्यतेयन्त्रंतद्यन्त्रंस्वेदनंस्मृतम् ॥ स्वेदनंयन्त्रं ॥ ४० ॥

जलसे भरी हुई बटलोई के मुखपर बंधे हुये कपड़े में उबालने की औषध को रक्ख कर उसका मुखबन्दकरदे और पाक करे इसको स्वेदन यंत्र कहते हैं ॥ ४० ॥

अथस्थाल्यांरसंक्षिप्त्वानिदध्यात्तन्मुखोपरि । स्थालीमूर्ध्वमुखींसम्यङ्निरुध्यमृदुमृत्स्नया ॥ ऊर्ध्वंस्थाल्यांजलंक्षिप्त्वाचुल्ल्यांमारोप्ययत्नतः । अधस्ताज्ज्वालयेदग्निंयाव त्प्रहरपञ्चकम् ॥ स्वांगशीतंततोयन्त्राद्गृह्णीयाद्रसमुत्तमम् । विद्याधराभिधंयन्त्रमत त्तज्ज्ञैरुदाहृतम् ॥ विद्याधरयन्त्रम् ॥ ४१ ॥

विद्याधर यंत्र ॥

एकपात्र में पारा छोड़कर उसकेऊपर एक ऊर्ध्वमुख दूसरा पात्र रक्खे और उसकी संधिकोगीली मट्टीसे बन्द करदे फिर ऊपर के पात्र में जलभर के चूल्हे पर चढ़ावे और नीचे पांच पहर तक आगबलावे फिरअच्छे प्रकारसे शीतल होजानेपर पारेको निकाललेइसको विद्याधर यंत्रकहतेहैं ४१॥

वालुकाभिःसमस्ताङ्गर्तेमूषांरसान्विताम् । दीप्तोपलैःसंवृणुयाद्यन्त्रंभूधरनामकम् ॥ भूधरयन्त्रम् ॥ ४२ ॥ भूधर यंत्र ॥

पारे समेत घड़िया को बालूसे अच्छे प्रकार ढककरके सब ओर से जलते हुये कंडों की आंचदे इसको भूधरयंत्र कहते हैं ॥ ४२ ॥

यन्त्रंडमरुसंज्ञंस्यात्तत्स्थाल्योर्मुद्रितेमुखे । डमरुयन्त्रम् ॥ ४३ ॥

डमरूयंत्र ॥

दोपटलों के मुखोंको परस्पर संपुट जोड़कर जो यंत्र बनताहै उसको डमरू यंत्र कहतेहैं ॥ ४३ ॥

अथ मारणाययोग्यंरूप्यमाह ॥

गुरुस्निग्धंमृदुश्वेतंदाहच्छेदघनक्षमम् । स्वर्णादिरहितंस्वच्छंतारंनवगुणंशुभम् ॥ (अथायोग्यम्)कठिनंकृत्रिमंरूक्षंरक्तंपीतदलंलघु।दाहच्छेदघनैर्नष्टंरूप्यंदुष्टंप्रकीर्तितम्॥४४

मारनेके योग्य चांदी ॥

जो चांदीभारी स्निग्ध कोमल तपाने वा काटने से श्वेत चोटकी सहने वाली सुवर्णादि धातुओं के मेलसे रहित और निर्मल होती है वहउत्तम है और जो चांदी कठोर कृत्रिम रूखी लाल पीतदल युक्त हलकी और तपाने से काटने से अथवा घनकी चोटसे नष्टहोजाती है वह दोषयुक्त है ॥ ४४ ॥

अथशोधनविधिः ॥

पत्तलीकृतपत्राणितारस्याग्नौप्रतापयेत् ।निषिञ्चेत्तप्ततप्तानितैलेतक्रेचकाञ्जिके ॥ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेचत्रिधात्रिधा । एवंरजतपत्राणांविशुद्धिःसम्प्रजायते ॥ ४५ ॥

चांदीके शुद्धकरने की बिधि ॥

चांदीके पतले पत्रोंको अग्निमें तपा२ कर क्रमसे तेल मट्ठा काँजी गोमूत्र और कुलथी के काढ़े में तीन२ बार बुझावे इसप्रकार से चाँदी शुद्ध होतीहै ॥ ४५ ॥

अथाशुद्धस्यरूप्यस्यदोषमाह ॥

रूप्यंत्वशुद्धंप्रकरोतितापंविबन्धकंवीर्य्यबलक्षयञ्च॥ देहस्यपुष्टिंहरतेतनोतिरोगांस्ततःशोधनमस्यकुर्यात् ॥ ४६ ॥ अशुद्ध चाँदीके दोष ॥

अशुद्धचाँदी ताप बिबन्ध बीर्य बलका नाश देहकीपुष्टता का नाश और अनेक रोगोंको करतीहै ४६॥

अथरूप्यमारणविधिः ॥

भागैकंतालकंमर्द्दयाममम्लेनकेनचित् । तेनभागत्रयंतारपत्राणिपरिलेपयेत् ॥ धृत्वामूषांपुटेरुध्वापुटेत्त्रिंशद्वनोपलैः । समुद्धृत्यपुनस्तालंदत्त्वारुध्वापुटेपचेत् ॥ एवंच तुर्दशपुटैस्तारभस्मप्रजायते । अथान्यप्रकारः । स्नुहीक्षीरेणसंपिष्टंमाक्षिकंतेनलेपयेत् ।

तालकस्यप्रकारेणतारपत्रस्यबुद्धिमान् ॥ पुटेच्चतुर्दशपुटैस्तारम्भस्मप्रजायते ॥ ४७ ॥

चाँदीमारने की बिधि ॥

एकभाग हरताल को पहरभर किसी खटाई से मर्दन करे उसको तीनभाग चाँदीके पत्रोंपर लपेटे फिर उनपत्रों को घड़ियामें रखकर उसका मुखबन्द करदे और तीस कंडों में पुटपाक करे इसप्रकार बारंबार हरताल लेप करके चौदह पुट देनेसे चाँदीभस्म होती है-दूसरा प्रकार-थूहरके दूधमें सोना मक्खी को पीसकर हरिताल के समान चाँदीके पत्रोंपर लेपकरके पहले कहीहुई विधि से चौदह पुटदेनेसे चाँदी भस्म होती है ॥ ४७ ॥

एवंमारितस्यरूप्यस्यगुणः ॥

रौप्यंशीतंकषायञ्चस्वादुपाकरसंसरम् । वयसःस्थापनंस्निग्धलेखनंवातपित्तजित् ॥
प्रमेहादिकरोगांश्चनाशयत्यचिराद्ध्रुवम् ॥ ४८ ॥

चाँदी की भस्म के गुण ॥

चाँदी शीतल कषैली रस और पाक में मधुर दस्तावर अवस्थाको स्थित रखने वाली स्निग्ध लेखन बात पित्त नाशक और प्रमेहादिक रोगों की शीघ्र नाशक होती है ॥ ४८ ॥

अथमारणयोग्यंताम्रमाह ॥

जवाकुसुमसङ्काशंस्निग्धंगुरुघनक्षमम्।लोहनागोज्झितंताम्रंमारणायप्रशस्यते ॥४९ ॥

मारने के योग्य तांबा ॥

जोतांबा गुड़हर के समान लाल स्निग्ध कोमल घन का सहनेवाला और लोहे सीसे के मेल से रहित होताहै वह श्रेष्ठहै ॥ ४९ ॥ अथायोग्यताम्रमाह ॥

कृष्णंरूक्षंमतिस्वच्छंश्वेतंचापिघनासहम्।लोहनागयुतंचेतिशुल्वंदुष्टंप्रकीर्तितम्॥५० ॥

अयोग्य तांबा ॥

जो तांबा कालेरंग का रूखा बहुत स्वच्छ श्वेतबर्ण घन को नहीं सहने वाला और लोहे तथा सीसे से युक्त होता है वह दोषयुक्त होता है ॥ ५० ॥

अथशोधनविधिः ॥ पत्तलीकृतपत्राणितास्रस्याग्नौप्रतापयेत् । निषिञ्चेत्तप्ततप्तानि तैलेतक्रेचकाञ्जिके ॥ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेचविधात्रिधा । एवंताम्रस्यपत्राणांविशुद्धिःसंप्रजायते ॥ एकोदोषोविषेताम्रेत्वशुद्धेऽष्टौभ्रमोवमिः । विरेकःस्वेदउत्क्लेदोमूर्छादाहोऽरुचिस्तथा ॥ नविषंविषमित्याहुस्ताम्रन्तुविषमुच्यते । एकोदोषोविषेताम्रेत्वष्टौदोषाःप्रकीर्तिताः ॥ ५१ ॥ तांबा शुद्ध करने की बिधि ॥

तांबेकेसूक्ष्म पत्रोंको अग्निमें तपा २ कर तेल मट्ठा कांजी गोमूत्र और कुलथीके काढ़ेमें तीन २ बार बुझावे इस रीति से तांबा शुद्ध होता है बिष में एक दोष और अशुद्ध तांबे में भ्रम छर्दि दस्त स्वेद क्लेद मूर्च्छा दाह तथा अरुचि यह आठदोषहैं इसी कारणसे एक दोषयुक्त विषको विष न कहकर आठ दोष युक्त अशुद्ध तांबे को विष कहते हैं ॥ ५१ ॥

अथताम्रस्य मारणविधिः ॥

सूक्ष्माणितास्रपत्राणि कृत्वासंस्वेदयेद्बुधः । वासरत्रयमम्लेन ततः खल्वेविनिः

क्षिपेत् ॥ पादांशंसूतकंदत्त्वा याममम्लेनमर्दयेत्। ततउद्धृत्यपत्राणिलेपयेद्द्विगुणेनच ॥ गन्धकेनाम्लघृष्टेनतस्यकुर्याच्चगोलकम् । ततःपिष्ट्वाचमीनाक्षींचांगेरींवापुनर्नवाम् ॥ (चांगेरीचतुष्पत्राम्लालोनिकाभेदः) तत्कल्केनबहिर्गोलंलेपयेद्व्यंगुलोन्मितम्॥ धृत्वा तद्गोलकंभण्डेसरावेणचरोधयेत् । बालुकाभिःप्रपूर्य्याथविभूतिलवणाम्बुभिः ॥ दत्त्वाभाण्डमुखेमुद्रांततश्चुल्ल्यांविपाचयेत्। क्रमवृद्ध्याग्निनासम्यक्यावद्यामंचतुष्टयम् ॥ स्वाङ्गशीतंसमुद्धृत्यमर्दयेच्छूरणद्रवैः। यामैकंगोलकंतच्चनिःक्षिपेच्छूरणोदरे ॥ मृदालेपस्तु कर्त्तव्यःसर्वतोऽङ्गुष्ठमात्रकः। पाच्यंगजपुटेक्षिप्तंमृतंभवतिनिश्चितम्॥ वमनंचविरेकं चभ्रमंक्लममथारुचिम्। विदाहंस्वेदमुत्क्लेदंनकरोतिकदाचन ॥ ५२ ॥

तांबा मारने की विधि ॥

तांबेके बारीक पत्रोंको आगमें तपाकर तीन दिन खटाई में भिगोवे फिर चौथाई पारा मिलाकर खटाई समेत खरल में एक पहर मर्दन करे फिर खरल से निकालकर खटाई से पीसीहुई दूनी गन्धक से उन पत्रों पर लेप करके गोला बनावे और मकोय चूका अथवा पुनर्नवाको पीस कर गोले के ऊपर दो अंगुल का मोटा लेप करे फिर इस गोले को किसी पात्र में रखकर पात्रमें बालू भर के और उसे सकोरेसे बन्दकरके मट्टीनौन और जल इनसबको मिलाके उसकेमुखको बन्द करदे और चूल्हे पर चढ़ायके धीरे २ अग्नि को बढ़ाता हुआ चार पहर तक आगदेवे फिर अच्छे प्रकार शीतल होजानेपर उस गोले को निकाल के ज़िमींकन्द के रस में एकपहर खरलकरे और फिर गोलाबनाकर जिमींकन्दके बीचमें रक्खे और उस पर एक अंगुलका मोटा मट्टी का लेपकरके गज पुटमें पाक करे इसप्रकार से निस्सन्देह तांबेकी उत्तम भस्म होती है और यह तांबा वमन विरेचन भ्रम ग्लानि अरुचि विदाह स्वेद तथा क्लेदको नहीं करता है ॥ ५२ ॥

एवंमारितस्य ताम्रस्यगुणाः ॥

ताम्रंकषायंमधुरंसतिक्तमम्लञ्चपाकेकटुसारकञ्च। पित्तापहंश्लेष्महरञ्चशीतंतद्रोपणंस्याल्लघुलेखनञ्च ॥ पाण्डूदरार्शोज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम् । शोथंकृमिंशूलमपाकरोतिप्राहुर्बुधावृंहणमल्पमेतत् ॥ एकोदोषोविषेताम्रेत्वसम्यग्मारितेपुनः। दाहःस्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छाक्लेदोरेकोवमिर्भ्रमः ॥ रेकोविरेकः ५३॥

तांबे की भस्म के गुण ॥

तांबा कषैला मधुर तिक्त खट्टा पाकमें कटु दस्तावर कफ पित्तनाशक शीतलघावको भरनेवाला हलका लेखन कुछ धातुवर्द्धक और पांडु उदर बवासीर ज्वर कुष्ठ खांसी श्वास क्षय पीनस अम्ल पित्त सूजन कृमि तथा शूल नाशक होता है विषमें एक दोष और अच्छे प्रकारसे नहीं बने तांबेमें दाह स्वेद अरुचि मूर्च्छा क्लेद विरेचन छर्दि और भ्रम यह आठ दोष होते हैं ॥ ५३ ॥

अथ वङ्गस्यरूपनिरूपणम् ॥

वङ्गंचगिरिजंतच्चखुरकंमिश्रकंद्विधा । तयोस्तुखुरकंश्रेष्ठमिश्रकंत्वहितंमतम् ५४ ॥

बंगकास्वरूप ॥

बंग और जस्ता यहदोनों खुरक और मिश्रक भेदसे दोप्रकारकेहैं इनमें से खुरकश्रेष्ठ और मिश्रक अहित होताहै ॥ ५४ ॥ तस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

वङ्गंविधत्तेखलुशुद्धिहीनमाक्षेपकम्पौचकिलासगुल्मौ । कुष्ठानिशूलंकिलवातशोथं पाण्डुप्रमेहञ्चभगंदरञ्च ॥ विषोपमंरक्तविकारवृन्दंक्षयञ्चकृच्छ्राणिकफज्वरञ्च । मेहाश्मरीविद्रधिमुष्करोगान्नागोऽपिकुर्यात्कथितान्विकारान् ५५ ॥

अशुद्ध बंगके दोष ॥

अशुद्ध बंग आक्षेप कम्प किलास गुल्म कुष्ठ शूल बात सूजन पांडु प्रमेह भगंदर विषके समान रुधिर के विकार क्षय मूत्रकृच्छ्र कफ ज्वर मोह पथरी विद्रधि और अंडकोश के रोगोंको उत्पन्न करताहै ॥ ५५ ॥ तस्यशोधनमभिधीयते ॥

वङ्गनागौप्रतप्तौचगलितौतौनिषेचयेत् । त्रिधात्रिधाविशुद्धिःस्याद्रविदुग्धेऽपिचत्रिधा ॥ निषेचयेत्तैलतक्रकाञ्जिकगोमूत्रकुलत्थक्काथेषुप्रत्येकंत्रिधा त्रिधाततोऽर्कदुग्धेऽपित्रिधा ५६ ॥ बंगकेशोधनकी विधि ॥

बंग और सीसेको पिघलाकर तेल मट्ठा कांजी गोमूत्र कुलथीकाकाढ़ा और आकका दूधइनसबमें तीन २ बारक्रमसे बुझावे इसप्रकारसे सीसा और रांगा शुद्धहोताहै ॥ ५६ ॥

अथवङ्गस्यमारणविधिः ॥

मृतपात्रेद्रावितेवङ्गेचिञ्चाश्वत्थत्वचोरजः । क्षिप्त्वावङ्गचतुर्थांशमयोदर्व्याप्रचालयेत् । [illegible]ञ्चाऽमिली । रजश्चूर्णम्ऽयोदर्वीकरछुली । ततोद्वियाममात्रेणवङ्गंभस्मप्रजायते ॥ अथभस्मसमंतालंक्षिप्त्वाम्लेनविमर्दयेत् । ततोगजपुटेपक्त्वापुनरम्लेनमर्दयेत् ॥ तालेनदशमांशेनयाममेकंततःपुटेत् ॥ एवंदशपुटैःपक्वंवङ्गंभवतिमारितम् ५७ ॥

बंगमारनेकीविधि ॥

मिट्टीके पात्रमें बंगको गलाकर चतुर्थान्श इमली और पीपलकी छालका चूर्ण छोड़े और लोहे की कलछीसे चलावे इसरीति से दोपहरमें बंगभस्महोती है फिर भस्मके समान भाग हरताल मिलाकर खटाईमें घोटे और गजपुटमें पाककरे फिर दशमांश हरिताल मिलाकर एक पहरतक पुटपाककरे इसप्रकार दशबार पुट देनेसे बंगकी भस्महोतीहै ॥ ५७ ॥

एवंमारितस्यवङ्गस्यगुणाः ॥

वंगंलघुसरंरूक्षंकुष्ठंमेहकफकृमीन् । निहन्तिपाण्डुंसश्वासंनेत्र्यमीषत्तुपित्तलं ॥ सिंहोगजोघंतुयथानिहन्तितथैववंगोऽखिलमेहवर्गम् । देहस्यसौख्यंप्रबलेन्द्रियत्वंनरस्यपुष्टिंविदधातिनूनम् ॥ ५८ ॥ बंगकी भस्मके गुण ॥

बंग हल्की दस्तावर रूखी नेत्रोंकोहित कुछ पित्तकारी और कुष्ठ प्रमेह कफ कृमि पांडु तथा श्वास रोगकी नाशकहोतीहै जैसे सिंह हाथियोंके समूहको मारताहै उसी प्रकार बंग सब प्रकारके प्रमेहोंको नाशकरतीहै और यह सुख इन्द्रियोंमें सामर्थ्य और शरीरकी पुष्टताको बढ़ातीहै ॥ ५८ ॥

अथ यशदस्यस्वरूपं ॥

यशदंगिरिजंतस्यदोषाःशोधनमारणे । वंगस्येवहिवोद्दिष्टागुणांस्तुगणयाम्यथ ॥
यशदंवसरंतिक्तशीतलंकफपित्तहृत् । चक्षुष्यंपरमंमेहान्पाण्डुंश्वासञ्चनाशयेत् ॥ ५९ ॥

जस्तेकास्वरूप ॥

जस्तेके दोप शोधन और मारन बंगके समान हैं जस्ता कपैला तिक्त शीतल नेत्रोंको हित और कफ पित्त प्रमेह पांडु तथा श्वासनाशक होताहै ॥ ५९ ॥

अथ सीसकस्यशोधनम् ॥

तस्यसाहजिकादोषारङ्गस्येवनिदर्शिता । शोधनञ्चापितस्यैवाभिषग्भिर्गदितंपुरा ६० ॥

सीसेकाशोधन ॥

सीसेके स्वाभाविक दोष और शोधन बंगके समानकहेहैं ॥ ६० ॥

अथसीसस्यमारणविधिः ॥

ताम्बूलरससंपिष्टंशिलालेपात्पुनःपुनः। द्वात्रिंशद्भिःपुटैर्नागानिरुत्थंभस्मजायते ॥ शिलामनःशिलाः (अन्यच्च) अश्वत्थचिञ्चात्वक्चूर्णञ्चतुर्थांशेननिक्षिपेत् । मृत्पात्रे विद्रुतोनागोलोहदर्व्याप्रचालितः ॥ यामैकेनभवेद्भस्मतत्तुल्यास्यान्मनःशिला । काञ्जिकेनद्वयंपिष्ट्वापचेद्गजपुटेनच ॥ स्वाङ्गशीतंपुनःपिष्ट्वाशिलायाकाञ्जिकेनच । पुनःपचेत्सरावाभ्यामेवंयष्टिपुटैर्मृतिः ॥ ६१ ॥

सीसेकेमारणकीविधि ॥

पानके रसमें पिसीहुई मैनसिलका बारंबार लेपकरके बत्तीसंपुटमें सीसेकी निरुत्थ भस्महोती है (दूसरीविधि)मृत्तिकाके पात्रमें सीसेकोगलायकर पीपल और इमलीकीछालकाचूर्ण उसकाचतुर्थांश उसमें छोड़े और लोहेकी कलछीसे उसको चलावे इसप्रकार एक पहरमें भस्महोतीहै फिर भस्मके समान मैनसिल मिलायकर दूनी कांजीमें पीस गजपुटमें पाककरे फिर शीतल होजानेपर मैनसिल मिलाके कांजीमें पीस पुटपाककरे इसप्रकार सातपुटपाक करने से सीसेकी भस्महोतीहै ॥ ६१ ॥

एवंमारितस्यसीसस्यगुणाः ॥

सीसंरङ्गगुणंज्ञेयंविशेषान्मेहनाशनम् ॥ नागस्तुनागशततुल्यबलंददाति व्याधिञ्चनाशयतिजीवतमातनोति । वह्निंप्रदीपयतिकामबलंकरोति मृत्युञ्चनाशयतिसन्तसेवितःसः ॥६२॥

सीसेकीभस्मकेगुण ॥

सीसेमें बंगके समान गुणहोते हैं और विशेषकरके प्रमेहोंको नाशकरताहै सदैव सेवनकियागया सीसा सौहाथियों के समान बलदायक व्याधिनाशक आयुबर्द्धक दीपन काममें बलदायक और मृत्युकाभी नाशकहोताहै ॥ ६२ ॥

अथ लोहस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

खण्डत्वकुष्ठामयमृत्युकारीहृद्रोगशूलौकुरुतेऽश्मरीञ्च । नानारुजानांचतथाप्रकोपं कुर्याच्चिरञ्चासमशुद्धलोहम् ॥ अतस्तस्यदोषशान्तयेशोधनमभिधीयते । पत्तलीकृतपत्रा

णिलोहस्याग्नौप्रतापयेत्॥निषिञ्चेत्तप्ततप्तानितैलेतक्रेचकाञ्जिके॥गोमूत्रेचकुलत्थानां कषायंचत्रिधात्रिधा । एवंलोहस्यपत्राणांविशुद्धिःसंप्रजायते ॥ ६३ ॥

अशुद्धलोहेकेदोष ॥

अशुद्ध लोहा नपुंसकता कुष्ठ मृत्यु हृदयके रोग शूल पथरी मतली और अनेक प्रकारके रोगोंको उत्पन्न करताहै इससे उसके दोषोंकी शान्तिकेलिये लोहेका शोधन कहतेहैं लोहेके सूक्ष्म पत्रोंको अग्निमें तपा २ कर तेल मट्ठा कांजी गोमूत्र और कुलथीके काढ़ेमें तीन २ बारबुझावे इसरीतिसे लोहा शुद्ध होजाताहै ॥ ६३ ॥

अथ लोहस्य मारणविधिः ॥

शुद्धेलोहभवंचूर्णंपातालगरुडीरसैः । मर्दयित्वापुटेवह्नौ दद्यादेवंपुटत्रयम् ॥ पुटत्रयंकुमार्याश्च कुठारच्छिन्निकारसैः । पुटषटकंततोदद्यादेवं तीक्ष्णन्नतिर्भवेत् (अन्यच्च) क्षिपेद्दादशमांशेन दरदंतीक्ष्णचूर्णतः । मर्द्दयेत्कन्यकाद्रावैर्यामयुग्मंततःपुटेत् ॥ एवं सप्तपुटैर्मृत्युं लोहचूर्णमवाप्नुयात् ॥ ६४ ॥

लोहेके मारनेकी विधि ॥

शुद्धलोहे के चूर्णको पातालगरुड़ी (इन्द्रायण) के अर्कमें घोटकर तीनबारपुट पाककरे फिर घी कुवारके रसमें घोटकर तीनबार पुटपाककरे फिर कुरैयाके रस में घोटकर छःबार पुट पाककरे इस रीतिसे लोहा भस्महोताहै(दूसराप्रकार) लोहचूर्ण का दशमांश सिंगरफ मिलाके घीकुवारकेरस में घोटे दोपहरतक फिर पुटपाककरे इसप्रकार सातबार पुटपाक करनेसे लोहा भस्महोताहै ॥ ६४ ॥

सत्योऽनुभूतोयोगन्द्रैः क्रमोऽन्योलोहमारणे । कथ्यंतेरामराजेनकौतूहलधियाऽधुना॥ सूतकात्द्विगुणंगन्धंदत्त्वाकुर्य्याच्चकज्जलीम् । द्वयोःसमंलोहचूर्णंमर्द्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ यामयुग्मंततः पिण्डंकृत्वातास्रस्यपत्रके । धर्म्मेधृत्वारुवूकस्यपत्रैराछादयेद्बुधः ॥ यामद्वयाद्भवेदुष्णं धान्यराशौन्यसेत्ततः । दत्त्वोपरिसरावंतु त्रिदिनान्तेसमुद्धरेत् ॥ पिष्ट्वा चगालयेद्वस्त्रादेवंवारितरंभवेत् । दाड़िमस्यदलंपिष्ट्वातच्चतुर्गुणवारिणा ॥ तद्रसेनाय सञ्चूर्णंसन्नीयप्लावयेदिति । आतपेशोषयेत्तच्चपुटेदेवंपुनःपुनः ॥ एकविंशतिवारैस्तं म्रियतेनात्रसंशयः । एवंसर्वाणिलोहानि स्वर्णादीन्यपिमारयेत् ॥ ६५ ॥

योगी लोगों से अनुभव की हुई लोहे के मारने की अन्य बिधि कुतूहल पूर्वक राम राजा ने कही है कि पारे से दूनी गंधक लेकर कजली करे फिर कजली के समान लोहे का चूर्ण मिलाय घी कुआर के रस में दो पहर घोटि के गोला बनावे गोले को तांबे के पात्र में रखकर दो पहर रेंड़ी के पत्तों से ढककर धूप में रक्खे फिर गोलेके गरम होजाने पर सकोरेसे ढककर तीन दिन तक धान्य राशिमें रक्खे फिर तीन दिन के पीछे निकालकर कपड़े से छानले इस रीति से लोहा पानी में तैरने लगताहै फिर उससे चौगुने पानी में अनार की पत्ती को पीस कर उस के रस में लोहे को भिगोवे और धूपमें सुखावे और पुट पाक करे इस रीतिसे इक्कीस बार पुटपाक देने से निस्सन्देह लोहे की भस्म होती है ॥ ६५ ॥

एवंमारितस्य लोहस्यगुणाः ॥

लोहंतिक्तंसरंशीतंकषायंमधुरंगुरु । रूक्षंवयस्थंचक्षुष्यं लेखनंवातलंजयेत् ॥ कफं पित्तङ्गरंशूलंशोफार्शः प्लीहपाण्डुताः । मेदोमेहक्रिमीन्कुष्ठंतत्किट्टंतद्वदेवहि ॥ गुञ्जामेकां समारभ्य यावत्स्युर्नवरक्तिकाः । तावल्लोहंसमश्नीयाद्यथादोषानलंनरः ॥ कूष्माण्डं तिलतैलंच माषान्नंराजिकांतथा । मद्यमम्लरसञ्चैववर्जयेल्लोहसेवकः ॥ शिलागन्धार्क दुग्धाक्ताः स्वर्णाद्याःसर्वधातवः । म्रियन्तेद्वादशपुटैः सत्यंगुरुवचोयथा ॥ ६६ ॥

लोहे की भस्म के गुण ॥

लोहा तिक्त दस्तावर शीतल कषैला मधुर भारी रूखा अवस्था का रखने वाला नेत्रों को हित लेखन वादी और कफ पित्त गर दोष शूल सूजन बवासीर प्लीहा पांडु मेद प्रमेह कृमि तथा कुष्ठ रोग नाशक होताहै इसकी कीटीमें भी इसी के समान गुण होते हैं दोष और अग्नि के बल को विचार कर एक रत्ती से लेकर नौरत्ती तक लोहा खाना चाहिये लोह सेवन करने वाला पुरुष पेठा तिलों का तेल उर्द राई मद्य और खटाई को त्याग कर दे मैनसिल गन्धक और आकके दूध में भिगोई हुई संपूर्ण धातु बारह पुटों में भस्म होती हैं यह निस्सन्देह गुरू का वचनहै ॥ ६६ ॥

अथोपधातूनांमारणप्रकारमाह । तत्रस्वर्णमाक्षिकस्या शुद्धस्यदोषमाह ॥

मन्दानलत्वंबलहानिमुग्रांविष्टम्भितांनेत्रगदांशकुष्ठान् । मालांतथैवव्रणपूर्विकाञ्चकुर्यादशुद्धंखलुमाक्षिकञ्च ॥ अतस्तस्यदोषशान्तये शोधनमभिधीयते । माक्षिकस्यत्रयोभागाभागैकंसैन्धवस्यच । मातुलुंगद्रवैर्वाथजम्बीरस्यद्रवैःपचेत् ॥ चालयेल्लोहजेपात्रेयावत्पात्रंसुलोहितम् । भवेत्ततस्तुसंशुद्धिं स्वर्णमाक्षिकमृच्छति ॥ ६७ ॥

उपधातुओं के मारण का प्रकार अशुद्ध । सोना मक्खी के दोष ॥

अशुद्ध सोनामक्खी मन्दाग्नि बलहानि विष्टंभ नेत्र रोग कुष्ठ गंडमाला और घाव को करती है इससे उसके दोषोंकी शान्तिकेलिये शुद्धकरनेकी विधिकही जातीहै सोनामक्खी तीन भाग और सेंधानोन एक भाग मिलायकर बिजौरा अथवा जंभीरी नींबूके रसों से लोहेके पात्रमें पाककरे और जबतक पात्र लाल न होजाय तबतक चलातारहै इसरीतिसे सोनामक्खी शुद्धहोतीहै ॥ ६७ ॥

अथ मारणविधि ॥

कुलत्थस्यकषायेणघृष्ट्वातैलेनवापुटेत्।तक्रेणवाजमूत्रेणम्रियतेस्वर्णमाक्षिकम् ६८ ॥

सोनामक्खी मारनेकी विधि ॥

कुलथीके काढ़े में तेलमें मट्ठे में अथवा बकरेके मूत्रमें घोटकर पुटपाक करने से सोनामक्खी भस्म होती है ॥ ६८ ॥

अथ तारमाक्षिकस्यशोधनमाह ॥

सुवर्णमाक्षिकवद्दोषाविज्ञेयास्तारमाक्षिके । अतस्तद्दोषशान्त्यर्थंशोधनंतस्यकथ्यते ॥ कर्कोटीमेषशृंगुत्थै र्द्रवैर्जम्बीरजैर्दिनम् । भावयेदातपेतीव्रे विमलाशुद्ध्यतिध्रुवम् ॥ विमलातारमाक्षिकम् । कर्कोटीखेखसा ॥ मेषशृङ्गीमेढ़ाशृङ्गी ॥

रूपामक्खीका शोधन ॥

रूपामक्खीमें भी सोनामक्खीके समान दोषहोते हैं इससे उसके दोषों के शान्त करनेके लिये उसका शोधन लिखतेहैं खिखसा मेढासिंगी और जंभीरी नींबूके रससे तेज धूप में एकदिन भावना देनेसे रूपामक्खी शुद्धहोती है ॥ ६९ ॥

अथ मारणम् ॥

कुलत्थस्यकषायेणघृष्ट्वातैलेनवापुटेत्।तक्रेणवाजमूत्रेणतारमाक्षिकमृच्छति॥७० ॥

रूपामक्खीका मारण ॥

कुलथीका काढा तेल मट्ठा अथवा बकरेका मूत्र इनमें घोटकर पुटपाक करने से रूपामक्खी भस्महोतीहै ॥ ७० ॥ अथ तयोर्विशिष्टागुणाः ॥

नकेवलंस्वर्णरूप्य गुणास्तापीजयोर्मता । द्रव्यान्तरस्यसंसर्गात्सन्त्यन्येऽपिगुणास्त योः ॥माक्षिकंमधुरंतिक्तंस्वर्य्यंवृष्यंरसायनम्।चक्षुष्यंवस्तिरुक्कुष्ठंपाण्डुमेहविषोदरम् ॥ अर्शःशोफंक्षयंकण्डूत्रिदोषञ्चनियच्छति ॥ ७१

सोनामक्खी और रूपामक्खीके गुण ॥

सोनामक्खी और रूपामक्खीमें केवल सोने और चांदीकेही गुणनहींहोते किन्तु द्रव्यान्तरके संयोग से अन्य २ गुणभीहोतेहैं सोनामक्खी और रूपामक्खी मधुर तिक्त स्वरकोहित वीर्यवर्द्धक रसायन नेत्रोंकोहित और वस्तिकी पीडा कुष्ठ पांडु प्रमेह विष उदर बवासीर सूजन क्षय खुजली तथा त्रिदोषनाशक होतीहै ॥ ७१ ॥

अथ तुत्थस्यशोधनमाह ॥

विष्ठयामर्दयेत्तुत्थमाजारकपोतयोः । दशांशंटङ्कणंदत्त्वापचेल्लघुपुटेततः ॥ पुटंदद्या पुटंक्षौद्रैर्दैयंतुत्थविशुद्धये ॥ ७२ ॥

तूतियेका शोधन ॥

बिल्ली और कबूतरकी बिष्ठासे तूतियेको पीसे फिर दशांश सुहागा मिलाकर लघुपुट में पाककरे फिर दहीकेसाथ पुटपाककरे और सहतकेसाथ पुटपाककरे इसरीतिसे तूतिया शुद्धहोताहै ॥ ७२ ॥

एवं शुद्धस्यतुत्थस्यगुणाः ॥

तुत्थकंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु । लेखनंभेदनंशीतञ्चक्षुष्यंकफपित्तहृत् ॥ विषाश्म कुष्ठकण्डूघ्नंतद्गुणंखर्परमतम् ॥ ७३ ॥

शुद्धतूतियाके गुण ॥

शुद्धतूतिया कटुक्षार कषैला छर्दिकारी हलका लेखन भेदक शीतल नेत्रोंको हित और कफ पित्त विष पथरी कुष्ठ तथा खुजली नाशकहोताहै खपरियामें भी इसीके समान गुणहैं ॥ ७३ ॥

अथ कांस्यस्यरीतेश्चशोधनन्त्वभिधीयते । पत्तलेकृतपत्राणिकांस्यस्याग्नौप्रताप येत् । निषिञ्चेत्तप्ततप्तानि तैलेतक्रेचकाञ्जिके ॥ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेत्रित्रिधात्रि धा । एवंकांश्यस्यरीतेश्चविशुद्धिःसंप्रजायते ॥ ७४ ॥

कांसा और पतिलके शुद्ध करनेकी रीति ॥

कांसे और पीतलके बारीक पत्रोंको अग्निमें तपा २ कर तेल मट्ठा कांजी गोमूत्र और कुलथीके काढ़ेमें तीन २ बार बुझावे इससे कांसा और पीतल शुद्धहोताहै ॥ ७४ ॥

अथ मारणविधिः ॥

अर्कक्षीरेणसंपिष्टोगन्धकस्तेनलेपयेत् । समेनकांस्यपत्राणिशुद्धान्यम्लद्रवैर्मुहुः । तमोमूषापुटेधृत्वापचेद्गजपुटेनच । एवंपुटद्वयात्कांस्यरीतिश्चम्रियतेध्रुवम् ॥ ७५ ॥

कांसे और पीतलके मारनेकी विधि ॥

गंधकको आककेदूधमें पीसकर समभाग कांसे और पीतलके शुद्ध पत्रोंपर लेपकरे और खटाईमें बारम्बार शुद्धकरे फिर घड़ियामें रखकर गजपुटमें दोबार पाककरे इसप्रकारसे कांसे और पीतलकी भस्म होताहै ॥ ७५ ॥

एवंमारितयोःकांस्यस्यरीतेश्चगुणाः ॥

कास्यंकषायंतीक्ष्णोष्णंलेखनंबिशदंसरम् । रीतिकातुभवेद्रूक्षासतिक्तालवणारसे ॥ शोधिनीपाण्डुरोगघ्नी कृमिहृन्नातिलेखनी ॥ ७६ ॥

कांसे और पीतलकी भस्मके गुण ॥

कांसा कषैला तीक्ष्ण उष्ण लेखन विशद दस्तावर भारी नेत्रोंकोहित रूखा और कफ पित्तनाशक होताहै पीतल रूखी तिक्त नमकीन शोधक कुछलेखन और पांडु तथा कृमिनाशकहोतीहै ॥ ७६ ॥

अथ सिन्दूरस्यशोधनमाह ॥

दुग्धाम्लयोगतस्तस्यविशुद्धिर्गदितावुधैः । अथगुणाः ॥ सिन्दूरउष्णोवीसर्पकुष्ठ कण्डूविषापहः । भग्नसन्धानजननो व्रणशोधनरोपणम् ॥ ७७ ॥

सिंदूरका शोधन और गुण ॥

दूध और खटाई के संयोगसे सिंदूरशुद्ध होताहै शुद्धसिंदूर उष्ण टूटेको जोडनेवाला घावका शोधक और भरनेवाला और वीसर्प कुष्ठ खुजली तथा विष नाशकहोताहै ॥ ७७ ॥

अथ शिलाजतुनःशोधनमाह तत्रशोधनायोग्यशिलाजतुमाह ॥

गोमूत्रगन्धवत्कृष्णांस्निग्धंमृदुतथागुरु ॥ तिक्तंकषायंशीतञ्चसर्वश्रेष्ठतदायसम् । (आयसम्अयसउपधातुः) विन्ध्यादौबहुलंतन्तुतत्रलोहंयतोऽधिकम् । तच्छोधनमृतेव्यर्थमनेकमलमेलनात् । शिलाजतुसमानीयसूक्ष्मंखण्डंविधायच ॥ निक्षिप्यात्युष्णपानीयेयामैकंस्थापयेत्सुधीः । मर्दयित्वाततोनीरंगृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ॥ स्थापयित्वाच मृत्पात्रेधारयेदातपेबुधः । उपरिस्थंघनंयत्स्यात्तत्क्षिपेदन्यपात्रके । एवंपुनःपुननींतंद्विमासाभ्यांशिलाजतु ॥ भवेत्कार्य्यक्षमंवह्नौक्षिप्तंलिङ्गोपमम्भवेत् । निर्धूमञ्चततःशुद्धंसर्वकर्मसुयोजयेत् ॥ अथान्यप्रकारः । तत्रप्रथमतस्तस्यबहिर्मलमपाकर्त्तुंकेवलजलेनप्रक्षालनं कर्त्तव्यं । ततस्तदन्तर्गतमृत्तिकासिकतादिदोषदूरीकरणायवक्ष्यमाणक्वाथेनतत्रभावना देया (तदाहवाग्भटः) व्याधिव्याधितसात्म्यंसमनुसरन्भावयेदयःपात्रे । प्राक्केवल

लधौतंशुष्कंक्काथैस्ततोभाव्यम्॥तुल्यंगिरिजेनजलेवसुगुणितेभावनौषधंक्काथ्यम्। तत्का थेपादांशेपूतोष्णेप्राक्षिपेद्गिरिजम् । तत्समरसताज्ञातंसशुष्कंप्राक्षिपेद्रसे । भूयःस्वैःस्वैरेवं क्काथैर्भाव्यंवारान्भवेत्सप्त ॥ अथस्निग्धस्यशुद्धस्यघृतंतिक्तकसाधितम् । त्र्यहंयुञ्जीत गिरिजमेकैकेनतथात्र्यहम् ॥ फलत्रयस्ययूषेणपटोल्यांमधुकस्यच । शिलाजमेवंदेहस्य भवन्त्यत्युपकारकम् ॥ ७८ ॥

शिलाजीतका शोधन और शोधने के योग्य शिलाजीत ॥

गोमूत्र कीसी गन्धवाले कृष्णवर्ण स्निग्ध कोमल भारी तिक्त कषैला और शीतल शिलाजीत सब से श्रेष्ठ होताहै शिलाजीत विन्ध्य आदि पर्वतों में लोहेकी अधिकताके कारण बहुत उत्पन्न होताहै वह शोधन के विना व्यर्थ है क्योंकि उसमें अनेक मल मिले रहते हैं शिलाजीत के छोटे २ टुकडे करके एकपहरतक गरमजल में भिगोवे फिर मलकर उसपानी को कपड़े में छानले और मृत्तिका के पात्र में भरकर धूप में रक्खे उसके ऊपर जमेहुये घने भागको दूसरे पात्रमें रक्खे इसप्रकार दो महीने में बारम्बार करनेसे शिलाजीत शुद्धहोताहै शिलाजीत अग्निमें जलनेसे लिंगके समान और धूपरहित होयतो शुद्धजानकर सम्पूर्ण कार्योंमें व्यवहारकरे दूसराप्रकार शिलाजीत को बाहरके मल के दूरकरने के लिये प्रथम केवल जल से धोवे फिर उसके भीतरी मृत्तिका और बालू आदिदोषों के दूर करने को आगे कहेहुये क्काथसे भावनादे और वाग्भटनेभी ऐसाही कहाहै कि रोगीके सात्म्य [स्वभाव] को देखकर पहले शिलाजीत को केवल जलसे धोकर सुखावे और क्काथ के द्वारा लोहे के पात्र में भावना दे शिलाजीत के समानक्काथ की औषधों को लेकर अठगुने पानीमें पाककरे फिर चतुर्थांश रहजाने पर उसको छानकर उसमें शिलाजीत छोड़े फिर क्काथ में मिलजाने परसुखाके दूसरी बार रसमें छोडे इसप्रकार बारंबार संम्पूर्ण क्काथों से सात २ भावनादे फिरतिक्त वस्तुओंसे बनाये हुये घृत में तीनदिन भिजोवे इसके उपरांत तीनदिन त्रिफलाके क्काथ में तीन दिन परवल के क्काथमें और तीन दिन मुलहठीके क्काथमें भिगोवे इसप्रकारसे बनकर शिलाजीत शरीरको अत्यन्त उपकारी होता है ॥ ७८ ॥ क्काथद्रव्याणिभावानापलञ्चाहहारीतः ॥

लोहास्थितंनिम्बगुडूचिसर्पिर्यवैर्यथावत्परिभावयेत्तत् । सन्तानिकाकीटपतङ्गदंशदु ष्टौषधीदोषनिवारणाय॥ सन्तानिकातद्बहिःसंलग्नमृत्तिकादिमयी। एवंभावनांदत्त्वासं शोष्यकेवलेनजलेनशोधनंकर्त्तव्यम्॥ (तत्प्रकारमाहअग्निवेशः) उष्णेचकालेरवितापयु क्तेव्यभ्रेनिवातेसमभूमिभागे। चत्वारिपात्राण्यतितामसानिन्यस्यातपेतत्रकृतावधानः ॥ शिलाजतुश्रेष्ठमवाप्यपात्रेप्रक्षिप्यतस्माद्द्विगुणञ्चतोयम् । उष्णंतदर्द्धंक्थितञ्चदत्त्वावि शोधयेत्तंमृदितंयथावत् ॥ ततस्तुयत्कृष्णमुपैतिचोर्ध्वंसन्तानिकावद्रविरश्मितप्तम् । पा त्रेतदन्यत्रततोनिदध्यात्तत्रापरंकोष्णजलंक्षिपेच्च ॥ पुनश्चतस्मादपरत्रपात्रेपश्चाच्चपात्रा दपरत्रभूयः । यदाविशुद्धंजलमेवमूर्ध्वंकृष्णंसमस्तंमलमेत्यधस्तात् ॥ तदात्यजेत्तत्सालि लंमलञ्चशिलाजतुस्याज्जलशुद्धमेवम् ॥ ७९ ॥

हरीतकी कहीहुई क्काथकी वस्तु और भावना काफल ॥

नींब गिलोय और जवोंके क्काथसे शिलाजीतमें मृत्तिका आदिक बाहरके मैल कीट पतंगों केकाटने

से उत्पन्नहुये दोष और दोषयुक्त औषधियों के संयोग से उत्पन्न हुये दोष के निवृत्त करने के लिये भावना देकर सुखावे और फिर केवल जलसे धोवे अग्निवेशने कहा है कि मेघोंसे और वायु से रहित धूपयुक्त ग्रीष्म ऋतु के दिनोंमें चारकाले रंग वाले लोहे के पात्र समतल की पृथ्वीपर धूप में रक्खे फिर उत्तम शिलाजीत को लेकर एक पात्र में रक्खे उसमें दूना गरमजल और आधा भाग क्वाथ डालकर मल करके शुद्ध करे फिर धूप में धरे२ जबउसपर काली मलाई सी पड़जाय तोउसको दूसरे पात्र में रखदे और गरमजल छोड़ कर धूप में रखदे फिर उसीप्रकार मलाई सी पड़जानेपर अन्यपात्र में रक्खे इसप्रकार बारम्बार करने से जबऊपर निर्मल जल आजाय और सम्पूर्ण काला मैलनीचे बैठजाय तब उसजल और मैलको फेंकदे इस प्रकार शिलाजीत केवल जल से शुद्ध हो-जाती है ॥ ७९ ॥ एवंशोधितस्यशिलाजतुनोगुणानाह ॥

शिलाजतुस्मृतंतिक्तंकटूष्णंकटुपाकिच । रसायनंयोगवाहिश्लेष्ममेहाश्मशर्करा ॥
मूत्रकृच्छ्रंक्षयंश्वासंशोथमर्शोंसिपाण्डुताम् । वातरक्तंतथाकुष्ठमपस्मारोदरंहरेत् ॥ ८० ॥

शुद्ध शिलाजीत के गुण ॥

शुद्ध शिलाजीत तिक्त कटु उष्ण पाक में कटु रसायन योगवाही और कफ प्रमेह पथरी शर्करा मूत्रकृच्छ्र क्षय श्वास सूजन बवासीर पांडु वातरक्त कुष्ठ मृगी तथा उदरनाशक होती है ॥ ८० ॥

अथ रसस्यशोधनविधिः । तत्रस्वेदनम् ॥

नानाधान्यैर्यथाप्राप्तैस्तुषवर्जैर्जलान्वितैः । मृद्भाण्डंपूरितंरक्षेद्यावदम्लत्वमाप्नुयात् ॥
तन्मध्येभृङ्गरामुण्डीविष्णुक्रान्तापुनर्नवा । मीनाक्षीचैवसर्पाक्षीसहदेवीशतावरी ॥ त्रिफ
लागिरिकर्णीचहंसपादीचचित्रकम् । समूलंकुट्टयित्वातुयथालाभंविनिःक्षिपेत् ॥ पूर्वाम्ल
भाण्डमध्येतुधान्याम्लकमिदंस्मृतम् । स्वेनादिषुसर्वत्ररसराजस्ययोजयेत् ॥ विष्णुक्रा
न्तागिरिकर्णीचअपराजितैवश्वेतनीलपुष्पभेदात् । अत्यम्लमारनालंवातदभावेप्रयोज
येत् (तदभावेधान्याम्लाभावे) त्र्यूषणंलवणंजाजीरजनीत्रिफलार्द्रकम् । महाबलानाग
बलामेघनादःपुनर्नवा ॥ मेषश्रृङ्गीचित्रकञ्च नवसारंसमंसमम् । एतत्समस्तंवापूर्वाम्लै
र्नैवपेषयेत् ॥ प्रालेम्पेत्तेनकल्केनवस्त्रमंगुलमात्रकम् । तन्मध्येनिःक्षिपेत्सूतंबद्ध्वातत्रि
दिनंपचेत् ॥ दोलायन्त्रेऽम्लसंयुक्तेजायतेस्वेदितोरसः । मेघनादःचवराई शाक विशेषः ।
मेषश्रृङ्गी मेढ़ाश्रृंगी । तदलाभेकर्कट श्रृंगीग्राह्या । नवसारं । नवसादरं । अन्यच्च । मू
लकानलसिन्धूत्थत्र्यूषणार्द्रकराजिका । रसस्यषोड़शांशेनद्रव्ययुञ्ज्यात्पृथक्पृथक्द्रवे
ष्वनुक्तमानेषुमतंमानमितंबुधैः ॥ पट्टादुनेषुचैतेषुसूतंप्रक्षिप्यकाञ्जिके ॥ स्वेदयेद्दिनमे
कञ्चदोलायन्त्रेणबुद्धिमान् । स्वेदात्तीव्रोभवेत्सूतोमर्दनाच्चसुनिर्मलः ।. मूलकमुरईअनल
श्चित्रकम् ॥ त्र्यूषणंत्रिकटुराजिकाराई ॥ ८१ ॥

पारे का शोधन । प्रथम स्वेदन ॥

जहांतक मिलसके वहांतक भूसी रहित अनेक प्रकारोंके धान्योंको लेकर मृत्तिका के पात्र में जल से भिगोवे फिर खटाई आजाने पर भँगरा गोरखमुण्डी विष्णुक्रान्ता पुनर्नवा मछैछी नागफनी

सहदेई सतावर त्रिफला नीले फूल की विष्णुक्रान्ता और चीता इन सब पदार्थोंको जहां तक मिल सकें जड़ समेत कूटकर उसी पात्र में छोड़े इसको धान्याम्ल कहते हैं और जो धान्याम्ल न मिलें तो बहुत खट्टे आनाल को काम में लावे यही धान्याम्ल पारे के स्वेदनआदि सब कार्यों में व्यवहार किया जाता है ॥ सोंठि मिर्च पीपल सेंधानोन राई हल्दी हड बहेड़ा आंवला अदरक बरियारा गुलसकरी चौराई पुनर्नवा मेढ़ासिंगी चीता और नौसादर यह सम्पूर्ण बस्तु सम भाग लेकर इकट्ठे अथवा अलग अलग धान्याम्ल में पीसे इसी कल्क से वस्त्र के ऊपर एक अंगुल मोटा लेप करे और उस में पारा रख के बांध कर तीन दिन तक किसी पात्र में खटाई भरकर दोला यंत्र में पाक करे इस प्रकार से पारे का स्वेदन होता है ऊपर कहीहुई औषधियों में मेढ़ासिंगी के अभाव में काकड़ासिंगी लेनीचाहिये (दूसराप्रकार) मूली चीता सेंधानोन सोंठि मिर्च पीपल अदरक और राई यह सम्पूर्ण औषध प्रत्येक पारे के सोलहवें हिस्से लेकर जहां कोई ठीक ठीक परिमाण नहीं कहा हुआ हो वहां सम प्रमाण लेना चाहिये फिर किसी कपड़े में यह सब औषध और पारे को बांधकर कांजी में छोड़े और एक दिन दोलायंत्र में पाक करे स्वेदन से पारा तीव्र और मर्दन से निर्बल होता है ॥ ८१ ॥

अथमर्दनम् ॥

इष्टिकाचूर्णचूर्णाभ्यामादौमर्द्योरसस्ततः । दध्नागुड़ेनासिन्धूत्थराजिकागृहधूमकैः ॥ अन्यच्च । कुमारिकाचित्रकरक्तसर्षपैःकृतैः कषायैर्वृहतीविमिश्रितैः । फलत्रिकेणापिविमर्दितोरसोदिनत्रयंसर्वमलैर्विमुच्यते ॥ ८२ ॥

मर्दनकी विधि ॥

सुरखी और चूनेसे पारे को मलकर दही गुड़ सेंधानोन राई और घरके धुंयें से मर्दनकरे अथवा घीगुआर चीता लाल सरसों भटकटैया और त्रिफला के काढ़े से तीन दिन तक मर्दन किया हुआ पारा सम्पूर्ण मलों से अलग हो जाता है ॥ ८२ ॥

अथमूर्च्छनम् ॥

त्र्यूषणंत्रिफलाबन्ध्याकन्दैःक्षुद्राद्वयान्वितैः ॥ चित्रकोर्णानिशाक्षारकन्यार्ककनकद्रवैः । सूतंकृतेनयूषेणवारान्सप्ताभिमर्दयेत् । इत्थंसंमूर्च्छितःसूतस्त्यजत्सप्तापिकञ्चुकान् । बन्ध्याकन्दःवांझखेखसाकन्दःक्षुद्राद्वयंछोटीकटाईबड़ीकटाई । उर्णा । उर्ण मेषका । निशाहरिद्राक्षारः यवक्षारःकन्याकुमारिकाअर्कपत्ररसः । कनकधत्तूरपत्ररसः ॥ ८३ ॥

पारे का मूर्च्छन ॥

सोंठ पीपल मिर्च हड़ बहेड़ा आंवला बांझखेखसा दोनों भटकटैया चीता ऊन हल्दी जवाखार घीगुआर आक के पत्तों का और धतूरे के पत्तोंका रस इन सब के काढ़े में सातबार पारे को मर्दनकरे इस रीति से मूर्च्छित हुआ पारा सात केंचुलों को छोड़ता है ॥ ८३ ॥

अथोर्द्ध्वपातनम् ॥

मयूरग्रीवताप्याभ्यान्नष्टपिष्टीकृतस्यचायन्त्रेविद्याधरेकुर्याद्रसेन्द्रस्योर्द्ध्वपातनम् ॥ ताप्यम्सुवर्णमाखी । नष्टपिष्टीकृतस्य ॥ कुमारिकाद्रवयोगेनतावन्मर्दनं कर्त्तव्यंयावत्पारदः पृथक्नदृश्यतइत्यर्थः । विद्याधरयन्त्रेऽमरुयन्त्रे ॥ ८४ ॥

पारे का ऊर्द्ध्वपातन ॥

तूतिया सोनामक्खी और घीगुआर के रस से पारेको इतना रगड़े कि वह अलग नहीं दिखलाई पड़े फिर विद्याधर यंत्र में पारे को उड़ावे ॥ ८४ ॥

अथाधः पातनम् ॥

त्रिफलाशिग्रुशिखिभिर्लवणानुरिसंयुतैः। नष्टपिष्टैरसंकृत्वालेपयेदूर्द्ध्वभाजनम् ॥ तत्तोदीप्तैरधःपातमुपलैस्तस्यकारयेत् । यन्त्रेभूधरसंज्ञेतुततःसूतोविशुध्यति ॥ स्वेदनादिक्रियाभिस्तुशोधितोऽसौयदाभवेत् । तदाकार्याणिकुरुतेप्रयोज्यःसर्वकर्मसु ॥ ८५ ॥

पारे का नीचे गिराना ॥

हड़ बहेड़ा आंवला सहँजना चीता सेंधानोन और राई इन बस्तुओं से पारे को खूब रगड़ कर ऊपर के पात्रमें लेप करदे और भूधर यंत्र में कण्डों की आंच देकर नीचे गिरावे इस रीति से भी पारा शुद्ध होता है स्वेदन आदिक क्रियाओंसे शुद्धपारा सम्पूर्ण कार्योंके लिये योग्य होता है ॥ ८५ ॥

अथ मुख्यदोषहरःशोधनविधिः ॥

गृहकन्याहरतिमलन्त्रिफलाग्निश्चित्रकोविषंहन्ति । तस्मादेभिर्मिश्रैवारानसंमूर्च्छयेत्सप्त ॥ ८६ ॥ मुख्य दोष की नाश करनेवाली शोधन की विधि ॥

पारे के मल को घीगुआर अग्नि दोष को त्रिफला और विष दोष को चीता नाशकरता है इसलिये इन सम्पूर्ण बस्तुओं से पारेको सात बार मूर्च्छित करना चाहिये ॥ ८६ ॥

अथ सर्वदोषहरःसंक्षिप्तशोधनविधिः ॥

कुमारिकाचित्रकरक्तसर्षपैःकृतःकषायैर्वृहतीविमिश्रितैः । फलत्रिकेणापिविमर्दितोरसोदिनत्रयंसर्वमलैर्विमुच्यते ॥ ८७ ॥

सर्व दोष नाशक संक्षिप्त शोधन की विधि ॥

घीगुआर चीता लाल सरसों भटकटैया और त्रिफला इनके क्वाथ से तीन दिन तक मर्दन करने से पारे के सम्पूर्ण मल छूट जाते हैं ॥ ८७ ॥

कुमार्य्याचनिशाचूर्णैर्दिनंसूतंविमर्दयेत्। एवंकदर्थितःसूतोषण्डोभवतिनिश्चितम् ॥ बह्वौषधीकषायेणस्वेदितःसबलीभवेत् । सर्पाक्षीचिञ्चिकावन्ध्याभृङ्गाब्दैः स्वेदितोबली ततःसपावकद्रावैःस्विन्नःस्यादतिदीप्तिमान् । सर्पाक्षी । नाराफणीचिञ्चिकाअम्बिलीवन्ध्याबांभ्रखेखसाभृङ्गःभृंगराजः । अब्दोभुस्तापावकःचित्रकम् ॥ ८८ ॥

घीगुआर और हल्दी के चूर्ण से एकदिन मर्दन किया गया पारा निस्सन्देह नपुंसक होजाता है फिर बहुत औषधियों के क्वाथ से स्वेदन किया गया बलवान् होजाता है नागफली इमली बांझ खेखसा भांगरा और नागरमोथा इनऔषधियों के द्वारा स्वेदन करने से पारा बलीहोता है और चीतेके रस से स्वेदन किया हुआ पारा अत्यन्त दीप्तिमान् होता है ॥ ८८ ॥

अथरसस्यमारणविधिः ॥

धूमसारंरसंतोरीगन्धकंनवसादरम्। यामैकंमर्दयेदम्लैर्भागंकृत्वासमंसमम् ॥ काचकूप्यांविनिक्षिप्यताञ्चमृद्वस्त्रमुद्रया । विलिप्यपरितोवक्त्रेमुद्रान्दत्वाविशोषयेत् ॥ अधः

सच्छिद्रपिठरीमध्येकूपींनिवेशयेत् । पिठरींबालुकापूरैभृत्वाचाकूपिकागलम् ॥ निवेश्यचुल्यांतदधोवह्निंकुर्य्याच्छनैःशनैः । तस्मादप्यधिकंकिञ्चित्पावकंज्वालयेत्क्रमात्॥ एवंद्वादशभिर्यामैर्म्रियतेरसउत्तमः । स्फोटयेत्स्वाङ्गशीतंतमूर्द्धगंगन्धकंत्यजेत् ॥ अधस्थञ्च मृतंसूतंगृह्णीयात्तन्तुमात्राथा ॥ यथोचितानुपानेनसर्वकर्मसुयोजयेत् ॥ ८९ ॥

पारे की मारण विधि ॥

धुआं पारा गन्धक और नौसादर इनसब वस्तुओं को समभाग लेकर एकपहर खटाई में घोटेफिर इनऔषधियोंको शीशी में रखकर कपड़ौटी करे और धूपमें सुखावे फिर किसी हाँड़ी के बीच में छेद करके उसमें शीशी रक्खे और उस हाँड़ी में शीशी के गलेतक बालू भरदे फिरइस हाँड़ी को चूल्हेके ऊपर चढ़ाकर नीचे मन्दी२ अग्नि जलावे और धीरे २ अग्नि तेजकरता जाय इसप्रकार बारहपहर में पारा भस्म होता है फिर शीतल होजाने पर शीशी फोड़ कर ऊपर की गन्धक को छोड़ करनीचे स्थित हुई पारेकी भस्म को लेले और इसे यथायोग्यअनुपानके साथ सबकार्योंमें व्यवहारकरे ॥ ८९॥

अथान्यप्रकारः ॥

अपामार्गस्यबीजानांमूषायुग्मंप्रकल्पयेत् । तत्संपुटेक्षिपेत्सूतंमलयूदुग्धमिश्रितम्॥ (मलयूकाष्ठोदुम्बरिका) द्रोणपुष्पीप्रसूनानिविड़ंगमरिमेदकः । एतच्चूर्णमधश्चोर्द्ध्वं दत्त्वामुद्रांप्रदीयते ॥ तद्गोलंस्थापयेत्सम्यक्मृन्मूषासंपुटेपचेत् । एवमेवपुटेनैव सूत कम्भस्मजायते ॥ तत्प्रयोज्यंयथास्थानेयथामात्रंयथाविधि ॥ ९० ॥

अथान्यप्रकार ॥

लटजीरेकेबीजों से दोघड़िया बनावे उन के संपुट में कठिया गूलर के दूध से घुटेहुए पारेको रक्खे फिर गूमाके फूल बायबिड़ंग और दुर्गन्धित खैरके चूर्णको घड़ियोंके ऊपर और नीचे लपेटकर और बंदकरके माटी की घड़ियाओं में रक्खे और पुटपाक करे इसप्रकार पुट देने से पारा भस्म होताहै योग्यस्थान में मात्रा के अनुसार बिधि पूर्व्वक इस का व्यवहार करना चाहिये ॥९०॥

अथान्यप्रकारः ॥

काष्ठोदुम्बरिकादुग्धैरसंकिञ्चिद्विमर्दयेत् । तदुग्धघृष्टंहिंगोश्चमूषायुग्मंप्रकल्पयेत् ॥ क्षिप्त्वातत्संपुटेसूतंतत्रमुद्रांप्रदापयेत् । धृत्वातद्गोलकं प्राज्ञोमृन्मूषासंपुटेऽधिके॥९१ ॥

अथान्यप्रकार ॥

कठियागूलर के दूध में पारे को कुछ घोटकर कठियागूलर के दूध से हींग को पीस कर बनाई हुई घड़ियाओं में रक्खे और उस संपुटको बन्दकरदे और इस गोले को मट्टी की घड़ियाओं में रखकर गज पुट में पाककरे इस रीति से पारा भस्म होताहै ॥ ९१ ॥

अन्यप्रकार ॥

नागवल्लीरसैर्घृष्टःकर्कोटीकंदगर्भितः।मृन्मूषासंपुटेपक्वःसूतोयात्येवभस्मताम्९२ ॥

अन्यप्रकार ॥

पान के रसमें घुटे हुए पारेको ककड़ी की जड़के भीतर भर के मट्टीकी घड़ियाओं केसंपुट में पाक करने से पारा भस्म होताहै ॥ ९२ ॥

अथ कर्पूररसस्यविधिः ॥

तत्रपारदस्यसंक्षिप्तं शोधनंकर्त्तव्यं। शुद्धसूतसमंकुर्यात्प्रत्येकंगौरेकंसुधीः। इष्टिकां खटिकांतद्वत्स्फटिकां सिन्धुजन्मच ॥ वल्मीकंक्षारलवणंभाण्डरञ्जकमृत्तिकाम्। सर्वा एयेतानिसञ्चूर्ण्यवाससाचापिशोधयेत् ॥ खटिकाखरी। स्फटिकाफटकरी।सिन्धुजन्म। सैन्धवम्। वल्मीकम्ववडरक्षारलवणम्। खारीनोनभाण्डरञ्जकमृत्तिका। काविसा। एभिश्चूर्णैर्युतंसूतं यावद्यामंविमर्दयेत्। तच्चूर्णसहितंसूतंस्थालीमध्येपरिक्षिपेत् ॥ तस्या स्थाल्यामुखेस्थालीमपरांधारयेत्समाम्। सवस्त्रकुटितमृदामुद्रयेदनयोर्मुखम् ॥ संशोष्य मुद्रयेद्भूयो भूयःसंशोष्यमुद्रयेत्। सम्यग्विशोष्यमुद्रांतांस्थालींचुल्ल्यांविधारयेत् ॥ अग्निंनिरन्तरंदद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम्। अङ्गारोपरितद्यन्त्ररक्षेद्यत्नादहर्निशम् ॥ शनै रुद्घाटयद्यन्त्रमूर्ध्वस्थालीगतंरसम्। कर्पूरवत्सुविमलंगृह्णीयाद्गुणवत्तरम् ॥ तदेव कुसुमचन्दनकस्तूरीकुङ्कुमैर्युतम्। खादन्नरतिफिरंगव्याधिंसोपद्रवंसपदि ॥ विन्दति बह्वग्दीप्तिंपुष्टिंवीर्यबलंविपुलम्। रमयतिरमणीशतंरसकर्पूरस्यसेवकःसततम् ॥ इति कर्पूररसः ॥ ९३ ॥ कपूर रस की विधि ॥

पारेको संक्षेप से शुद्धकरके गेरू ईंट खड़िया फिटकड़ी सेंधानोन वामी की मिट्टी खारी नोन खपरा यह प्रत्येक औषध पारेके समभाग लेकर चूर्णकर के छानले फिर इन चूर्णोंके साथ एकपहर पारे को रगड़कर इन चूर्णों समेत पारे को किसी बटले आदि में रखकर उसके ऊपर दूसरा बटला रक्खे और वस्त्र समेत कूटी हुई मिट्टी से उन दोनोंके मुखको बन्दकरके सुखाले इस प्रकारसे बारम्बार कपड़ौटी करे फिर सूख जाने पर उसको चूल्हे पर चढ़ावे और चार दिनतक बराबर आगबालता रहै और इस पात्रके अंगारों पर रक्खे हुये की यत्न पूर्वक रक्षाकरे फिर शीतल होजानेपर धीरे से यन्त्र को खोलकर ऊपरके बटलेमें स्थित कपूरके समान निर्मल अत्यन्त गुणकारी रसको ले ले लोंग चन्दन कस्तूरी और केशर के साथ इसका सेवन करने से शीघ्रही उपद्रव सहित फिरंग रोग नष्टहोता है और कपूर रसका सेवन करने वाला पुरुष अग्निकी दीप्ति शरीर की पुष्टता तथा बलवीर्य की वृद्धिको और सौ स्त्रियों के साथ रमणकी शक्तिको प्राप्त होताहै ॥ ९३ ॥

अथ सिन्दूररसः ॥

शुद्धसूतस्यगृह्णीयाद्भिषग्भागचतुष्टयम्।शुद्धगन्धस्यभागैकंतावत्कृत्रिमगन्धकम् ॥ अथवापारदस्यार्द्धंशुद्धगन्धकमेवहि। तयोःकज्जलिकांकुर्य्यादिनमेकंविमर्दयेत् ॥ मृत्ति कांवाससासार्द्धंकुट्टयेदतियत्नतः। तयावारत्रयंसम्यक्काचकूपींप्रलेपयेत् ॥ मृत्तिकांशोषयित्वातुकूप्यांकज्जलिकांक्षिपेत्।तांकूपींबालुकायन्त्रेस्थापयित्वारसंपचेत् ॥ अग्निंनिरन्तरं दद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम्।गृह्णीयादूर्ध्वसंलग्नंसिन्दूरसदृशंरसम्॥इतिसिन्दूररसः९४॥

सिंदूर रस ॥

चारभाग शोधाहुआ पारा एकभाग शुद्ध गन्धक और एकभाग कृत्रिम गन्धक अथवा पारे की आधी शुद्ध गन्धक मिलाकर एक दिन पारे और गन्धक की कजली करे फिर अच्छे प्रकार कूटीहुई

मिट्टीसे शीशी पर तीनबार कपड़ौटी करे और सूख जाने पर शीशी में कजली भरकर शीशी को बालुकायन्त्रमें चढ़ावे और चारदिनतक निरन्तर आगदेतारहै फिर शीतल होजानेपर शीशीके ऊपर लगेहुए सिन्दूरसमान रसको पोंछकरलेले ॥ ९४ ॥

एवंमारितस्यमूर्च्छितस्यपारदस्यगुणाः ॥

पारदःकृमिकुष्ठघ्नोजयदोदृष्टिकृत्सरः । मृत्युहृच्चमहावीर्य्योयोगवाहीज्वरापहः ॥ स्मृत्योजोरूपदोवृष्योवृद्धिकृद्धातुवर्द्धनः । षण्डत्वनाशनःशूरःखेचरःसिद्धिदःपरः ॥ पारदः सकलरोगहास्मृतषड्रसोनिखिलयोगवाहकः । पञ्चभूतमयएषकीर्तितस्तेनतद्गुणगणैर्विराजते । रसामृतेयस्यरोगस्ययोयोगस्तेनैवसहयोजितः । रसेन्द्रोहन्तितंरोगंनरकुञ्जरवाजिनाम् ॥ ९५ ॥ इसप्रकार मारेहुए और मूर्छित पारेके गुण ॥

पारा कृमि और कुष्ठनाशक जयदायक दृष्टिकारी दस्तावर मृत्युनाशक अत्यन्त वीर्यवाला योगवाही वृद्धावस्था नाशक स्मृति तथा ओजवर्द्धक रूपको उत्तम करनेवाला कामियोंकोहित धातुवर्द्धक नपुंसकतानाशक शूरताकारी और आकाश गमनमें शक्ति तथा सिद्धिदेनेवालाहोताहै पारा संपूर्ण रोगोंका नाशक छः रसों से युक्त सबका योगवाही और पंचभूतात्माहोने से पांचों भूतोंके गुणों से युक्त होताहै रसामृतमेंकहाहै कि मनुष्य घोड़ा और हाथी इनके जिन २ रोगोंका जौन २ सायोगहै पारा उनयोगोंके साथ संपूर्ण रोगोंको नाश करताहै ॥ ९५ ॥

अथोपरसानां शोधनविधिः । तत्रहिंगुलस्य शोधनविधिः ॥

मेषीक्षीरेणदरदमम्लवर्गेश्चभावितम् । सप्तवारान्प्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चितम् ९६ ॥

उपरसोंका शोधन । सिंदरफका शोधन ॥

भेड़ीका दूध और अम्लवर्गकेद्वारा सातबार भावनादियाहुआ सिंदरफ निस्सन्देहशुद्धहोताहै ॥९६॥

एवंशोधितस्य हिंगुलस्यगुणाः ॥

तिक्तंकषायंकटुहिंगुलंस्यान्नेत्रामयघ्नंकफपित्तहारि । हल्लासकण्डुज्वरकामलांश्चप्लीहामवातौचगरंनिहन्ति ॥ ९७ ॥ सोधेहुए सिंदरफके गुण ॥

सिंदरफ तिक्त कषैला कटु और नेत्ररोग कफ मतली खुजली ज्वर कामला प्लीहा आमवात तथा गरदोष नाशकहोताहै ॥ ९७ ॥ अथ हिंगुलाद्रसाकर्षण विधिः ॥

निम्बूरसैर्निम्बपत्ररसैर्वायाममात्रकम् । घृष्ट्वादरदमूर्ध्वन्तुपातयेत्सूतयुक्तिवत् ॥ तत्रोर्ध्वपिठरीलग्नंगृह्णीद्रसमुत्तमम् । शुद्धमेवहितंसूतंसर्वकर्मसुयोजयेत् ॥ ९८ ॥

सिंदरफसे पारा निकालनेकी विधि ॥

निंबू अथवा नींबके पत्तों के रससे सिंदरफको एक पहर घोटकर कहीहुई विधिसे पारे के समान ऊर्ध्व पातन करे और ऊपरके पात्रमें लगेहुये पारेको लेले यहपारा शुद्धहितकारी और संपूर्णकार्यों में व्यवहार करने के योग्य होताहै ॥ ९८ ॥

अथ गन्धकस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

अशुद्धोगन्धकःकुर्यात्कुष्ठंपित्तरुजांभ्रमम् । हन्तिवीर्यंबलंरूपंतस्माच्छुद्धःप्रयुज्यते ॥

अशुद्ध गन्धकके दोष ॥

अशुद्ध गन्धक कुष्ठ पित्तरोग तथा भ्रमकारक और वीर्य बल तथा रूपनाशक होता है इस्से शुद्ध गन्धक व्यवहार में लावे ॥ ९९ ॥

अथ शोधनविधिः ॥

लोहपात्रेविनिःक्षिप्यघृतमग्नौप्रतापयेत् । तत्तेघृतेतत्समानांक्षिपेद्गन्धकजंरजः ॥ विद्रुतंगन्धकंदृष्ट्वातनुवस्त्रेविनिःक्षिपेत् । यथावस्त्राद्विनिःस्रुत्यदुग्धमध्येऽखिलंपतेत्॥एवंसगन्धकःशुद्धोसर्वकर्मोचितोभवेत् ॥ १०० ॥

गन्धक शुद्धकरने की विधि ॥

लोहेके पात्र में घीको गरम करके उसमें उसीके समान गन्धक का चूरा छोडे फिर गन्धक को टिघला हुआ जानकर किसी पतले कपडे से दूधमें छानले इसप्रकार से शुद्धहुआ गन्धक सम्पूर्ण कार्यों के योग्य होता है ॥ १०० ॥

एवंशुद्धस्यगन्धकस्यगुणाः ॥

गन्धकःकटुकस्तिक्तोवीर्य्योष्णस्तुवरः सरः । पित्तलः कटुकः पाकेकण्डूवीसर्पजन्तुजित् ॥ हन्तिकुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनम् ॥ १०१ ॥

शुद्धगन्धकके गुण ॥

गन्धक कटु तिक्त वीर्य में उष्ण कषैली दस्तावर पित्तवर्द्धक पाक में कटु और खुजलीवीसर्प कृमि कुष्ठ क्षय प्लीहा कफ तथा वात नाशक होताहै ॥ १०१ ॥

अथाभ्रकस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

पीड़ांविधत्तेविविधान्नराणांकुष्ठंक्षयंपाण्डुगदञ्चकुर्य्यात् । हृत्पार्श्वपीड़ाञ्चकरोत्यसह्यामशुद्धमभ्रंगुरुवह्निहत्स्यात् ॥ १०२ ॥

अशुद्ध अभ्रकके दोष ॥

अशुद्ध अभ्रक भारी अग्निनाशक और मनुष्योंको अनेक प्रकारकी पीडा कुष्ठ क्षय पांडु हृदयकी पीड़ा और पसलीकी अत्यन्त पीड़ाको करताहै ॥ १०२ ॥

अथाभ्रकस्यशोधन विधिमाह ॥

कृष्णाभ्रकंधमेद्दुग्धौततःक्षीरेविनिःक्षिपेत्।भिन्नपत्रंतुतत्कृत्वातप्तंडुलीयाम्लयोर्द्रवैः ॥ भावयेदष्टयामंतदेवमभ्रंविशुद्ध्यति ॥ १०३ ॥

अभ्रकका शोधन ॥

काले अभ्रकको आगमें तपाकर दूधमें बुझावे फिर पत्रोंको अलग करके चौलाई सागकेरस और खट्टे रसमें आठपहर भावनादे इसप्रकार अभ्रक शुद्ध होताहै ॥ १०३ ॥

अथ तस्यमारणम् ॥

कृत्वाधान्याभ्रकंतच्चशोषयित्वाथमर्दयेत् । अर्कक्षीरैर्दिनंखल्वेचक्राकारंचकारयेत् ॥ वेष्टयेदर्कपत्रैश्चसम्यग्गजपुटेपचेत् । पुनर्मर्द्यपुनःपाच्यंसप्तवारानपुनःपुनः ॥ ततोवट

जटाक्वाथैस्तद्वद्देयंपुटत्रयम् । म्रियतेनात्रसंदेहःप्रयोज्यंसर्वकर्मसु ॥ तुल्यंघृतंमृताभ्रेण लोहपात्रेविपाचयेत् । घृतेजीर्णेतदभ्रन्तुसर्वयोगेषुयोजयेत् ॥ १०४ ॥

अभ्रक मारनेकी विधि ॥

धान्याभ्रक बनायकर सुखाले और आकके दूधसे एकदिन खरलकरके टिकिया बनाले फिर आकके पत्तोंमें लपेटकर गजपुटमें पकावे इसीप्रकार सातवार घोट २ कर गजपुटमें पाककरे फिर बरगदकी जटाओंके क्काथसे घोट २ कंर तीनवार पुटपाककरे इसप्रकारसे निस्संदेह अभ्रक भस्म होजाताहै अभ्रककी भस्मकेसम भाग घी मिलाकर लोहेके पात्रमें पाककरे घीके जलजानेपर उस अभ्रकको सब कार्योंमें व्यवहारकरे ॥ १०४ ॥

अथ धान्याभ्रकस्यविधिः ॥

पादांशशालिसंयुक्तमभ्रंबध्वाथकम्बले । त्रिरात्रंस्थापयेन्नीरेततःक्लिन्नंमर्दयेत्करैः ॥ कम्बलाद्गलितंसूक्ष्मंबालुकारहितञ्चयत् ॥तद्धान्याभ्रमितिप्रोक्तमभ्रमारणसिद्धये १०५ ॥

धान्याभ्रककी विधि ॥

अभ्रकमें चौथाई शालिधान्य मिलाकर कंबलमें बांधे फिर तीनादिनतक पानीमें भिजोकर गीला होजानेपर हाथोंसे उसकोमलै फिर बालूके समान जो अभ्रक उसकम्बलसे छने उसको धान्याभ्रक कहतेहैं इससे अभ्रकका मारना सिद्धहोताहै ॥ १०५ ॥

एवंमारितस्याभ्रकस्यगुणाः ॥

अभ्रंकषायंमधुरंसुशीतमायुष्करन्धातुविवर्द्धनञ्च । हन्यात्त्रिदोषंव्रणमेहकुष्ठंप्लीहोदरं ग्रन्थिविषकृमींश्च ॥ रोगान्हान्तिदृढ़यातिवपुर्वीर्य्यंवृद्धिंविधत्तेतारुण्याढ्यंरमयतिशतं योषितांनित्यमेव ॥ दीर्घायुष्कान्जनयतिसुतान्सिंहतुल्यप्रभावान् । मृत्योर्भीतिंहरति सुतरांसेव्यमानंमृताभ्रम् ॥ १०६ ॥

अभ्रककी भस्मके गुण ॥

अभ्रक कषैला मधुर शीतल आयुकारी धातुबर्द्धक और त्रिदोष घाव प्रमेह कुष्ठ प्लीहा उदर ग्रन्थि विष तथा कृमिनाशकहोताहै अभ्रककी भस्मके सेवनसे रोगोंकानाश शरीरकी पुष्टता तरुण सौस्त्रीके भोगनेकी शक्ति सिंहकेतुल्य पराक्रमवाले दीर्घायु पुत्रोंके उत्पन्नकरनेकी सामर्थ्य और मृत्युके भय का नाशहोताहै ॥ १०६ ॥ अथ तालकस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

अशुद्धंतालमायुहृत्कफमारुतमेहकृत्तापस्फोटाङ्गसङ्कोचंकुरुतेतेनशोधयेत् १०७॥

अशुद्ध हरतालके दोष ॥

अशु द्ध हरताल आयुनाशक और कफ वात प्रमेह ताप विस्फोटक तथा अंग संकोचकारीहोताहै इसलिये इसको शुद्धकरना चाहिये ॥ १०७ ॥

अथ तालस्यशोधनमाह ॥

तालकंकणशःकृत्वातच्चूर्णंकाञ्जिकेपचेत् । दोलायंत्रेणयामैकंततःकूष्माण्डजद्रवैः ॥ तिलतैलेपचेद्यामंयामञ्चत्रिफलाजले । एवंयंत्रेचतुर्यामंपक्वंशुद्ध्यतितालकम् ॥ १०८ ॥

हरतालका शोधन ॥

हरतालको चूर्णकरके दोलायन्त्रकेद्वारा कांजी कुम्हढेकारस तिलकातेल और त्रिफलाके क्वाथमें पहर २ भर पाककरे इसप्रकार चारपहर पाककरनेसे हरताल शुद्धहोताहै ॥ १०८ ॥

अथ तालस्यमारणविधिः ॥

सदलंतालकंशुद्धंपौनर्नवरसेनतु । खल्वेविमर्दयेदेकंदिनंपश्चाद्विशोषयेत् ॥ ततः पुनर्नवाक्षारैःस्थाल्यामर्द्धप्रपूरयेत् । तत्रतद्गोलकंधृत्वापुनस्तेनैवपूरयेत् ॥ आकण्ठंपिटरंतस्यपिधानंधारयेन्मुखे । स्थालीचुल्यांसमारोप्यक्रमाद्वह्निंविवर्द्धयेत्॥दिनान्यन्तरशून्यानिपञ्चवह्निंप्रदापयेत् । एवंतन्म्रियतेतालंमात्रातस्यैकरक्तिका ॥ अनुपानान्यनेकानियथायोग्यंप्रयोजयेत् ॥ १०९ ॥

हरतालकी मारण विधि ॥

शुद्ध तवकिया हरतालको पुनर्नवाके रसमें एक दिन खरलकरके सुखावे फिर किसी बटलेमें आधीदूरतक पुनर्नवाके खारको भरके उसमें उसहरतालके गोलेकोरक्खे और उसके ऊपर पुनर्नवाका खार ऊपरतक (गलेतक) भरदे फिर सकोरे आदिसे बटलेके मुखको बन्दकरके चूल्हेके ऊपरचढाकर अग्निबलाकर क्रम २ से बढाताजाय इसप्रकार निरन्तर पाककरनेसे हरतालकी भस्महोतीहै इसकी मात्रा एकरत्तीकी होतीहै और अनुपान यथा योग्य विचारके अनेक प्रकारसे व्यवहारकरे ॥ १०९ ॥

एवंशोधितस्यमारितस्यतालकस्यगुणाः ॥

हरितालंकटुस्निग्धंकषायोष्णंहरेद्विषम् । कण्डूकुष्ठास्रदोषास्रकफपित्तकचव्रणान् ॥ अन्यच्चतालकंहरतेरोगान्कुष्ठमृत्युज्वरापहम् । शोधितंकुरुतेकान्तिवीर्य्यवृद्धिंतथायुषम् ॥ ११० ॥

हरतालकी भस्मके गुण ॥

हरताल कटु स्निग्ध कषैली उष्ण और विष खुजली कुष्ठ मुखरोग रक्तदोष कफ पित्त तथाकेशोंके घावका नाशकहोता है औरभी कहागयाहै कि शुद्ध हरताल कुष्ठ आदि रोग मृत्यु तथा वृद्धावस्था नाशक और कान्ति वीर्यकी वृद्धि और आयुकारक होताहै ॥ ११० ॥

अथ मनःशिलायाअशुद्धायादोषमाह ॥

तालकस्यैवभेदोऽस्तिमनोगुप्तेस्तदन्तरम् । तालकंत्वतिपीतंस्याद्भवेद्रक्तामनःशिलाः ॥ मनःशिलामन्दबलंकरोतिजन्तुंधुवंशोधनमन्तरेण । मलस्यबन्धंकिलमूत्ररोधंसशर्करंकृच्छ्रगदञ्चकुर्यात् ॥ १११ ॥

अशुद्ध मैनशिल के दोष ॥

मैनशिल हरतालका भेदमात्रहै विशेषता यहहै कि हरताल पीला और मैनशिल लालहोताहै अशुद्ध मैनशिल बलकी घटाने वाली कृमिकारक मल मूत्र की रोधक और शर्करा सहित मूत्रकृच्छ्र कारी होतीहै ॥ १११ ॥

अथतच्छोधनविधिः ॥

पचेत्त्र्यहमजामूत्रे दोलायन्त्रेमनःशिलाम् । भावयेत्तत्सप्तधापित्तै रजायाःसाविशुद्ध्यति ॥ ११२ ॥

मैनशिल का शोधन ॥

मैनशिल को तीनदिन तक बकरे के मूत्र में दोलायन्त्रसे पकाकर बकरे के पित्तेसे सातबार भावनादे इसरीतिसे मैनशिल शुद्धहोतीहै ॥ ११२ ॥

एवंशोधितायामनःशिलायागुणानाह ॥

मनःशिलागुरुर्वर्ण्यासरोष्णालेखनीकटुः । तिक्तास्निग्धाविषश्वासकासभूतविषा स्रनुत् ॥ ११३ ॥

शुद्ध मैनशिल के गुण ॥

शुद्ध मैनशिल भारी वर्ण को हित दस्तावर उष्ण लेखन कटुतिक्त स्निग्ध और विष श्वास खांसी भूतावेश कफ तथा रक्त दोष नाशक होती है ॥ ११३ ॥

अथ खर्परस्तुत्थभेदस्तस्यशोधनविधिः ॥

नरमूत्रेचगोमूत्रेसप्ताहंरसकम्पचेत्।दोलायंत्रेणशुद्धःस्यात्ततःकार्य्येषुयोजयेत्॥ ११४ ॥

. तूतियाका भेद खपरियाका शोधन ॥

नरमूत्र और गोमूत्र में सातबार दोलायंत्रके द्वारा खपरियाको पाककरे इस प्रकारसे शुद्धहुई खपरिया सब कार्योंके योग्य होती है ॥ ११४ ॥

अथ तस्यगुणाः ॥

खर्परंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु । लेखनंभेदनंशीतंचक्षुष्यंकफपित्तहृत् ॥ विषाश्म कुष्ठकण्डूनांनाशनंपरमंमतम् ॥ ११५ ॥

खपरियाके गुण ॥

खपरिया कटु खारी कषैली छर्दिकारक हलकी लेखन भेदक शीतल नेत्रोंको हित और कफ पित्त विष पथरी कुष्ट तथा खुजली नाशक होती है ॥ ११५ ॥

अथ सर्वोपरसानांसाधारणशोधन विधिः ॥

सूर्य्यावर्त्तोवज्रकंदःकदलीदेवदालिका। शिग्रुःकोशातकीवन्धाकाकमाचीचवालकम्॥ एषामेकरसेनैवत्रिक्षारैर्लवणैःसह । भावयेदम्लवर्गैश्चदिनमेकंप्रयत्नतः ॥ ततःपचेच्च तद्वावैर्दोलायन्त्रेदिनंसुधीः । एवंशुद्ध्यन्तिनेसर्वेप्रोक्ताउपरसाहिये ॥ विशेषश्च । कंकुष्ठं गैरिकंशङ्खःकासीसंटङ्कणंतथा । नीलाञ्जनंशुक्तिभेदाःक्षुल्लकाःसवणटकाः ॥ जम्बीरवारिणास्विन्नाःक्षालिताःकोष्णवारिणा ॥ शुद्धिमायान्त्यमीयोज्याभिषग्भिर्योगसिद्धये । एवंशोधितानामुपरसानांपृथग्गुणागुणग्रन्थेद्रष्टव्याः ॥ ११६ ॥

सम्पूर्ण उपरसोंकी साधारण शोधन विधि ॥

सूर्यावर्त्त वज्रकन्द केला देवदाली सहँजना तुरई बांझखिखसा काकमाची और सुगन्धबाला इन में से किसी एकका रस जवाखार सज्जी सुहागा सेंधानोन और अम्लवर्गके साथ एक दिन भावना देकर इसी रसके साथ एकदिन दोलायंत्रमें पाककरे इसप्रकार सम्पूर्ण उपरस शुद्धहोते हैं मुर्दासिंग मेरू शंख हीराकसीस सुहागा लीलासुरमा सीपीकेभेद घोंघे और कौड़ी यह सम्पूर्ण उपरस जंभीरी नींबूके रसके साथ पाककरके कुछ गरम जलसे धोनेसे शुद्ध होतेहैं इस प्रकार शुद्ध कियेगये उपरसों के अलग २ गुण गुण ग्रन्थमें देखने चाहिये ॥ ११६ ॥

अथ रत्नानांशोधनमारणविधिः । तत्राशुद्धस्यवज्रस्यदोषमाह ॥
अशुद्धंकुरुतेवज्रंकुष्ठंपार्श्वव्यथांतथा।पाण्डुतापंगुरुत्वञ्चतस्मात्संशोध्यमारयेत्११७॥

रत्नोंके शोधन और मारणकी विधि । अशुद्ध हीरेके दोष ॥

अशुद्धहीरा कुष्ठ पसलियोंमें पीड़ा पांडु और लूलेपनको करता है इससे हीरेको शुद्धकरके भस्म करना चाहिये॥ ११७॥ अथ वज्रस्यशोधनविधिः ॥

कुलत्थकोद्रवक्काथेदोलायन्त्रेविपाचयेत् । व्याघ्रीकन्दगतंवज्रंत्रिदिनंताद्विशुद्ध्यति॥ व्याघ्रीकण्टकारिका । अन्यःशोधनविधिः । गृहीत्वाह्निशुभेवज्रंव्याघ्रीकन्दोदरेक्षिपेत् ॥ माहिषीविष्ठयालिप्ताकारीषाग्नौविपाचयेत् ॥ त्रियामायांचतुर्थामंयामिन्यन्तेऽश्वमूत्रके । सेचयेत्पाचयेदेवंसप्तरात्रेणशुद्ध्यति ॥ ११८ ॥

हीरा शुद्ध करनेकी विधि ॥

हीरेको भटकटैयाकी जड़ में भरकर कुलथी और कोदोंके काढ़ेके साथ तीन दिनतक दोलायंत्र में पाककरे तो हीरा शुद्धहोवे दूसरी विधि शुभ दिनमें हीरालेकर भटकटैयाकी जडमें रक्खे और उस में भैंसका गोबर लपेटकर रातभर कंडोंकी आंचमें पकावे और प्रातःकाल घोड़ेके मूत्रमें बुझावे इस प्रकार सात रात्रितक पाककरने और बुझाने से हीरा शुद्ध होताहै ॥११८॥

अथ वज्रस्यमारणविधिः ॥

हिंगुसैन्धवसंयुक्तेक्षिपेत्क्काथेकुलत्थजे । तप्ततप्तंपुनर्वज्रम्भवेद्भस्मात्रिसप्तधा (अन्य मारण प्रकारः) मेषशृंगभुजंगास्थिकूर्मपृष्ठाम्लवेतसम् ॥ शशदन्तंसमम्पिष्ट्वावज्री क्षीरेणगोलकम् । कृत्वातन्मध्यगंवज्रंम्रियतेध्मातमेवहि ॥ ११९ ॥

हीरा मारनेकी विधि ॥

हीरेको तपाकर हींग और सेंधोनोनके साथ कुलथीके काढ़ेमें इक्कीसबार बुझानेसे हीरा मरजाता है (दूसरी विधि) मेढ़ेकेसींग सर्पकी हड्डी कछुयेकी पीठ अमलवेत और खरगोशके दांत इन सब को सम भाग लेकर थूहरके दूधमें पीसकर गोलाबनावै इस गोलेके बीचमें हीरा रखकर पाककरने से शीघ्रही भस्म होताहै ॥ ११९ ॥ मारितस्यवज्रस्यगुणाः ॥

आयुःपुष्टिंबलंवीर्यंवर्णंसौख्यंकरोतिच । सेवितंसर्वरोगघ्नंमृतंवज्रंनसंशयः ॥ १२० ॥

हीरेकी भस्मके गुण ॥

हीरेकी भस्म आयु पुष्टता बल वीर्य वर्ण तथा सुखकारी और सम्पूर्ण रोगनाशक होती है॥१२० ॥

अथ शेषरत्नानांशोधनमारण विधिः ॥

वज्रवत्सर्वरत्नानिशोधयेन्मारयेत्तथा । शुद्धानांमारितानाञ्चतेषांशृणुगुणानपि ॥ मण योवीर्यतःशीतामधुरास्तुवरारसात् । चक्षुष्यालेखनाश्चापिसारकाविषहारकाः ॥ धारणा त्तेतुमंगल्याग्रहदृष्टिहराअपि । उपरत्नानांशोधनमारणविधिश्चिन्त्यः॥ १२१ ॥

शेष रत्नोंके शोधन मारणकी विधि ॥

हीरेकेसमान सम्पूर्ण रत्नोंका शोधन और मारणहोताहै इनकेगुण रत्न वीर्यमें शीतल मधुर कषैले नेत्रों

काहित लेखन दस्तावर और विषनाशक होतेहैं यहधारणकरने से यह दृष्टिनाशक और मंगलकारी होतेहैं॥१२१॥अथविषाणांशोधनाविधिः। तत्रवत्सनाभस्य स्वरूप निरूपणम्॥

सिन्दुवारसदृक्पत्रोवत्सनाभ्याकृतिस्तथा।यत्पार्श्वेनन्तरोर्वृद्धिर्वत्सनाभःसभाषितः १२२

बिषोंकी शोधनबिधि। बत्सनाभ का स्वरूप बर्णन॥

जिसवृक्षके पत्ते निर्गुण्डीके पत्तों के समान जिसकी आकृति बछड़ेकी नाभिके समान और जिस के निकटके वृक्षोंकी वृद्धि नहो उसको वत्सनाभ कहतेहैं॥ १२२॥

विषस्यशोधन विधिः॥

गोमूत्रेत्रिदिनंस्थाप्यंविषंतेनविशुद्ध्यति।रक्तसर्षपतैलाक्तेतथाधार्य्यञ्चवासासि॥ ये गुणागरलेप्रोक्तास्तेस्युर्हीनाविशोधनात्। तस्माद्विषंप्रयोगेतुशोधयित्वाप्रयोजयेत् १२३

बिषका शोधन॥

बिषको तीन दिनतक गोमूत्रमें भिजोकर लाल सर सों के तेलसे भीगे हुये कपड़े में तीन दिन तक रक्खे बिष में जो दोष कहे गयेहैं वह शुद्ध करने से हीनहोजाते हैं इस बिषको शोध कर काम में लाना चाहिये॥ १२३॥ अथ विषस्यगुणाः॥

विषंप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच। आग्नेयंवातकफहृत्योगवाहिमोहावहम्॥ व्यवायिसकलकायगुणव्यापनपूर्व्वकपाकगमनशीलं। विकाशिओजःशोषणपूर्व्वकसन्धिबन्धशिथलीकरणशीलम्। आग्नेयम्अधिकाग्न्यंशं॥ योगवाहिसंगिगुणग्राहकम् मोहावहंतमोगुणप्राधान्येनबुद्धिविध्वंसकम्॥ तदेवयुक्तियुक्तन्तुप्राणदायिरसायनम्। योगवाहिपरंवातश्लेष्माजित्सन्निपातहृत्॥ १२४॥

बिषके गुण॥

बिष प्राणनाशक संपूर्ण शरीर में अपने गुणके फैल जाने पर पाकहोने वाला ओज को सुखाकर संधियों के बन्धन को शिथिल करने वाला अधिक अग्नि के गुणवाला संगीके गुण का ग्राहक कफ बात नाशक और तमो गुणकी प्रधानतासे बुद्धिका नाशक होताहै परन्तु युक्तिपूर्वक व्यवहार करनेसे प्राण दायक रसायन योग वाही और बात कफतथा सन्निपातका अत्यन्त नाशक होताहै॥१२४॥

अथोपविषाणां निरूपणम्॥

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलांगलीकरवीरकः। गुञ्जाहिफेनोधत्तूरःसप्तोपविषजातयः॥एतेषां शोधनंचिन्त्यंगुणास्तत्रतत्रद्रष्टव्याः॥ १२५॥

उप विषोंका बर्णन॥

आकका दूध थूहर का दूध करिहारी कनेर घोंघची अफीम और धतूरा यहसात उपबिषहैं इनका शोधन बिचार लेनाचाहिये और इनका गुण वहाँदेखना चाहिये जहाँ इनका बर्णन होचुकाहै॥ १२५॥

अथ द्रव्याणांगुणवतामवधिः॥

गुणहीनंभवेद्वर्षादूर्द्ध्वंतद्रूपमौषधम्। मासत्रयाथाचूर्णंलभतेहीनवीर्य्यताम्॥ हीनत्वंगुटिकालेहौलभतेवत्सरंयदि। हीनास्युर्घृततैलाद्याश्चतुर्मासाधिकास्तथा॥ घृत

तैलाद्याइतियोगविशेषणम् । चतुर्मासाधिकाःवत्सरादुपरिचत्वारोमासाअधिकायेषुते । घृततैलयोर्विशेषमाह । तन्त्रान्तरे । घृतमब्दात्परंपक्वंहीनवीर्य्यत्वमाप्नुयात् । तैलंपक्वम पक्वञ्चिरस्थायिगुणाधिकम् ॥ तदपिषोडशमासाभ्यन्तरिणंपक्वंतैलंगुणाधिकंबोद्धव्यम् औषध्योलघुपाकाःस्युर्निवीर्य्योवत्सरात्परम् । औषध्योधान्यादयःलघुपाकाःशीघ्रपाकाः निर्वीर्य्याःस्युःपुराणाःस्युर्गुणैर्युक्ताआसवाधातवोरसाः॥ १२६॥

द्रव्योंके गुणोंकी अवधि॥

एकवर्ष के उपरांत तद्रूप औषध गुण रहित होजाती है चूर्ण की हुई औषध दोमहीने के उपरांत हीन वीर्य होजाती है गुटिका तथा अवलेह एकवर्षमें हीन वीर्य होजाते हैं और घृत तथा तेल आदिक एकवर्ष चार महीने के पीछे हीनवीर्य होजाते हैं तन्त्रान्तर में घृत और तेलके विषय में विशेषता कही गई है कि पक्काघी एकवर्ष के ऊपर हीनबीर्य होजाताहै परन्तु तेल कच्चाहो चाहे पक्काहो जितना पुराना होगा उतनाही अधिक गुणकारी होगा इसपरभी सोलह महीनोंके भीतर पक्का तेल अधिक गुणकारी होता है शीघ्र परिपाक होने वाले धान्यादिक एकवर्ष के उपरांत हीन बीर्य होजातेहैं और आसव धातु तथारस यह पुरानेही अधिक गुणकारी होते हैं ॥ १२६ ॥

अथ स्नेहपानविधिः॥

स्नेहश्चतुर्विधःप्रोक्तोघृततैलंवसातथा । मज्जाचतंपिवेन्मर्त्यःकिञ्चिदभ्युदितेरवौ ॥ स्थावरोजङ्गमश्चैवद्वियोनिःस्नेहउच्यते । तिलतैलंस्थावरेषुजङ्गमेषुघृतंवरम् ॥ द्वाभ्यां त्रिभिश्चतुर्भिर्वायमकस्त्रिवृत्तोमहान् । अस्यायमर्थः । द्वाभ्यांस्नेहाभ्यांघृततैलाभ्यांय मकाख्यःस्नेहःस्यात् । त्रि[redacted]स्नेहैःघृततैलवसारूपैस्त्रिवृत्तारव्यःस्यात् । चतुर्भिर्घृततै लवसामज्जाभिर्महान्महास्नेहःस्यादित्यर्थः (पिवेत्त्र्यहंचतुरहंपञ्चाहंषड्हानिचेतियदु क्तम्) मृदुकोष्ठस्त्रिरात्रेणस्निग्धस्नेहोपसेवया । मध्यकोष्ठश्चतुर्भिश्चदिवसैःस्निह्यतिध्रु वम् ॥ पञ्चभिर्वाथषड्भिर्वादिनैःक्रूरोविशुद्ध्यति । सप्तरात्रात्परंस्नेहःसात्मीभवतिसेवि तः ॥ मृदुमध्यक्रूरकोष्ठानांसर्वेषांसप्तरात्रात्परंसात्मीभवति । वातानुलोम्यवह्निदीप्तिको ष्ठशुद्धिमृदास्निग्धाङ्गतास्वरवचनाङ्गलाघवधातुपुष्टिद्विजदार्ढ्यं निर्जरताबलवर्णकारीभव ति॥ नतुभक्तद्वयेवातानुलोम्यादीन्करोति । दोषकालवयोवह्निबलान्यालोक्ययोजयेत् । हीनाञ्चमध्यमांज्येष्ठांमात्रांस्नेहस्यबुद्धिमान् ॥ अमात्रयातथाऽकालेमिथ्याहारविहार तः। स्नेहःकरोतिशोथार्शस्तन्द्रानिद्राविसंज्ञिताः ॥ देयादीप्ताग्नयेमात्रास्नेहस्यैकपलोन्मि ता। मध्यमायात्रिकर्षास्याज्जघन्यायद्विकार्षिकी ॥ मध्यमायमध्यमाग्नयेजघन्यायहीनाग्न ये अथवास्नेहमात्राःस्युस्तिस्रोन्याःसर्वसम्मताः । अहोरात्रेणमहतीजीर्यत्यल्पितुमध्य मा ॥ जीर्य्यत्यल्पादिनार्द्धेनसाविज्ञेयासुखावहा (अयमर्थः)याहोरात्रेणजीर्यतिसामात्रा महती। एवंमध्यमाकनिष्ठाचज्ञेया । अल्पास्याद्दीपनीवृष्यास्वल्पदोषेप्रपूजिता । मध्यमा स्नेहनीज्ञेयावृंहणीभ्रमहारिणी ॥ ज्येष्ठाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशिनी ॥ १२७ ॥

स्नेह पानकीविधि ॥

स्नेह चार प्रकार का होताहै घी तेल चरबी और मज्जा कुछ सूर्य उदय होने पर स्नेह पानकरना चाहिये स्थावर तथा जंगम कारणों के भेदसे स्नेह दो प्रकारका होताहै उन में से स्थावर में तिल कातेल और जंगम में घृत सबसे श्रेष्ठ होताहै घी और तेल मिलकर जो स्नेह बनता है उसकोयमक घी तेल और चरबी मिलकर जो स्नेह बनताहै उसको त्रिवृत और घी तेल चरबी और मज्जा इन चारोंके मिलने से जो स्नेह बनताहै उसको महास्नेह कहते हैं कोमलकोष्ठवाली तीन दिन मध्यम कोष्ठवाला चारदिन और कठिन कोष्ठवाला पांच अथवा छःदिन स्नेहपानकरे क्योंकि कहाहुआहै कि कोमल कोष्ठवाला तीनदिन स्नेह पानकरनेसे स्निग्ध मध्यम कोष्ठ वाला चारदिन स्नेह पान करने से स्निग्ध और क्रूर कोष्ठ वाला पांच अथवा छः दिन स्नेह पान करने से शुद्धहोताहै कोमल मध्यम और क्रूर कोष्ठ वाले सबहीको सात दिनके उपरान्त स्नेह सात्म्य (स्वभावकेअनुकूल) होजाता है और स्नेह के सेवनसे वातकी अनुलोमता (नीचेका जाना) अग्नि दीप्ति कोष्ठ शुद्धि शरीर की कोमलता तथा स्निग्धता स्वर वचन तथाशरीर का हलकापन वृद्धावस्था का नाश और बल वर्ण की उत्तमता होती है इस्से भोजनमें अरुचि और शरीरमें ग्लानि आदिक नहीं होती दोष काल अवस्था बल और अग्निके बलको विचारकर हीन मध्य अथवा बड़ी मात्रा से स्नेह को काममें लाना चाहिये मात्रा के विना अकाल में अथवा नियम रहित आहार करने से स्नेहपान करने वालेको सूजन बवासीर तन्द्रा निद्राऔर संज्ञारहित होना यह सबरोग उत्पन्न होते हैं और दीप्ताग्निको चार तोलेकी मात्रा मध्यम अग्निवाले को तीन तोलेकी और मन्द अग्निवालेको दो तोले स्नेह की मात्रा देनी चाहिये स्नेह पीने की अन्यभी तीन मात्रा सर्व संमतहैं जितना स्नेह एक रात दिनमें पचे वह बड़ी मात्रा एक दिनमें जितना पचे वह मध्यम मात्रा और आधे दिनमें जितना पचे वह हीन मात्रा कह लातीहै हीनमात्रा दीपन वीर्य वर्द्धक [redacted]ोड़ेदोष में हितकारी होती है मध्यम मात्रा स्निग्ध करने वाली धातुवर्द्धक और भ्रम नाशक होती है और बड़ी मात्रा कुष्ठ विष उन्माद ग्रह दोष मृगी नाशक होतीहै ॥ १२७ ॥

सुश्रुतःपुनरेवाह । यामात्राप्रथमेयामेगतेजीर्य्यतिवासरे । सामात्रादीपयत्यग्निमल्पदोषेचपूजिता ॥ यामात्रावासरस्यार्द्धेव्यतीतेपरिजीर्य्यति । सावृष्यावृंहणीचस्यान्मध्यदोषेप्रपूजिता ॥ यामात्राचरमेयामेस्थितेऽह्नःपरिजीर्य्यति । सामात्रास्नेहनीज्ञेयाबहुदोषेषुपूजिता ॥ केवलंपैत्तिकेसार्पिर्वातिकेलवणान्वितम् । देयंबहुकफेवह्निव्योषक्षारसमन्वितम् ॥ रूक्षक्षतविषार्त्तानांवातपित्तविकारिणाम् । हीनमेधास्मृतीनाञ्चसर्पिःपानंप्रशस्यते ॥ कृमिकोष्ठानिलाविष्ठाप्रबद्धकफमेदसः । पिबेयुस्तैलसात्म्यास्तुतैलंदार्ढ्यार्थिनस्तुये ॥ व्यायामाकर्षिताःशुष्करेतोरक्तामहारुजाः । क्रूराशयाःक्रूरकोष्ठाःसर्वतःसर्वस्मात्स्नेहात् । शीतकालेदिवास्नेहमुष्णकालेपिबेन्निशि । वातपित्ताधिकेरात्रौवातश्लेष्माधिकेदिवा ॥ नस्याभ्यञ्जनगण्डूषमूर्द्धकर्णाक्षितर्पणे॥ तैलंघृतंवायुञ्जीतदृष्ट्वादोषबलाबलम्॥घृतेकोष्णजलंपेयंतैलेयूषःप्रशस्यतेावसामज्ञोपिबेन्मण्डमनुपानंसुखावहम् १२८॥

फिर सुश्रुत ने कहाहै कि जोमात्रा दिन के एकपहर व्यतीत होने पर परिपाक होतीहै वह दीपन

और थोड़ें दोषमें हितहै जोमात्रा आधादिन व्यतीत होनेपरपरिपाक होतीहै वह वीर्यतथा धातुवर्द्ध क और मध्य दोषमें हित है और जोमात्रा दिन के चौथे पहर में परिपाक होतीहै वह स्निग्ध करने वाली और बहुत दोषमें हित है पित्तरोगमें केवलघी वातज रोगमें सेंधानोन युक्तघी और बहुतकफ में चीता त्रिकटु तथा जवाखार युक्तघी पानकराना चाहिये रूखे क्षत तथा विषसे व्याकुल बात पित्त के रोगसे ग्रसित और हीन हुई मेधा तथा स्मृति वाले पुरुषों को घी पीना श्रेष्ठहै कृमि रोगी क्रूर कोष्ठवाले कफ तथा मेदकी वृद्धि से युक्त सदैव तैल सेवन करनेवाले पुष्टता चाहनेवाले व्यायामसे दुर्बल क्षीण वीर्य तथा रुधिर वाले और महारोग से ग्रासित पुरुषोंको तेल पीना उचित है शीतल काल में दिनको उष्णकाल में तथा बात पित्तके कोप में रातको और कफ बात के कोप में दिन को स्नेह पान करना चाहिये नासलेने में शरीरके लगानेमें कुल्ला करने में शिर पर लगानेमें और कानतथा नेत्रोंके भरने में तेल अथवा घीका व्यवहार दोषके बलाबलको देखकर करना चाहिये घी का कुछ उष्णजल तेलका यूष और चरबी तथा मज्जाका माड़ अनोपान करना चाहिये ॥ १२८ ॥

स्नेहद्विषःशिशून्वृद्धान्सुकुमारान्कृशानपि । तृष्णालुकानुष्णकालेसहभक्तेनपाययेत् ॥ सर्पिष्मतीबहुतिलायवागूस्वल्पतण्डुला । सुखोष्णासेव्यमानातुसद्यःस्नेहनकारिणी ॥ शर्कराचूर्णसंयुक्तेदोहनस्थेघृतेतुगाम् । दुग्ध्वाक्षीरंपिवेद्रूक्षःसद्यःस्नेहनमुत्तमम् ॥ मिथ्याचाराद्बहुत्वाच्चयस्यस्नेहोनजीर्य्यति । विष्टम्भावापिजीर्य्येतवारिणोष्णेनवामयेत् ॥ स्नेहस्याजीर्णशङ्कायांपिवेदुष्णोदकंनरः । तदोद्गारोभवेच्छुद्धोभक्तेप्रातेरुचिस्तथा । स्नेहेनपैत्तिकस्याग्निर्यदातीक्ष्णतरीकृतः । तदास्योदीर्य्यतेतृष्णांविषमान्तस्यपाययेत्॥ शीतलंपायसंतेनतृष्णातस्यप्रशाम्यति ॥ १२९ ॥

स्नेह से द्वेष करने वाले बाल वृद्ध सुकुमार कृश और तृषा से व्याकुल पुरुषोंको उष्णकाल में भात के साथ स्नेह पान कराना चाहिये अधिक तिलयुक्त और थोड़ेचावलयुक्त यवागूको घीके साथ कुछ उष्ण पान करने से बहुत शीघ्र स्नेहन होताहै दुहनेके पात्रमें शक्कर और घी छोड़कर गौको दुहै है उसके पीने से रूखा पुरुष शीघ्रही स्निग्ध होजाता है नियम रहित आचार से अथवा अधिकता से जो स्नेह न पचे अथवा देरमें पचेतो उष्णजल पीकर बमनकरना चाहिये स्नेहके अजीर्णहोने के सन्देह में उष्णजल पान करना चाहिये इस्से डकारकी शुद्धता और अन्न में रुचिहोती है जोस्नेह से पित्त प्रकृति वाले पुरुषकी अग्नि तीक्ष्ण होकर अत्यन्ततृषाको उत्पन्नकरे तो शीतलजल पिलाकर बमन कराने से तृषा निवृत्तहोतीहै ॥ १२९ ॥

अजीर्णीवर्जयेत्स्नेहमुदरीतरुणज्वरी ॥ दुर्बलोऽरोचकीस्थूलोमूर्च्छितोमेहपीडितः दत्तवस्तिर्विरक्तश्चवान्तस्तृष्णाश्रमान्वितः॥ अकालप्रसवानारीदुर्दिनेचविवर्जयेत् । स्वेद्यःसंशोध्यमद्यस्त्रीव्यायामासक्तचित्तकाः ॥ वृद्धबालकृशारूक्षाःक्षीणास्त्राःक्षीणरेतसः । वातार्त्तास्तिमिरार्त्तायेतेषांस्नेहनमुत्तमम् ॥ वातानुलोम्यदीप्ताऽग्निर्वर्चःस्निग्धमसंहतम् । मृदुस्निग्धांगताग्लानिःस्नेहद्वेषोऽथलाघवम् ॥ विमलेन्द्रियतासम्यक्स्निग्धेरूक्षेविपर्य्ययः । भक्तद्वेषोमुखस्रावोगुदेदाहःप्रवाहिका ॥ तन्द्रातीसारषण्डत्वंभृशंस्निग्धस्यलक्षणम् । रूक्षस्यस्नेहनंस्नेहैरतिस्निग्धस्यरूक्षणम् ॥ १३० ॥

अजीर्ण उदर नवीन ज्वर दुर्बलता अरुचि स्थूलता मूर्च्छा प्रमेह तृषा तथाश्रम से युक्त वमन किया हुआ विरेचनकियाहुआ जिसको वस्ति दीगई हो ऐसा पुरुष और अकालमें प्रसूताहुई स्त्री स्नेह पान न करे और दुर्दिनमें भी स्नेह पान न करे स्वेदन तथा संशोधन करने के योग्य मतवाले स्त्रियोंमें आसक्त व्यायाम करनेवाले वृद्ध बालक कृश रूखे क्षीणवीर्य तथा रुधिरवाले वातसे व्याकुल और तिमिर रोगवाले पुरुषों को स्नेहपान विशेष उपकारी होता अच्छे प्रकारसे स्नेहपान कियेहुए पुरुषकी वायुकी शुद्धता अग्नि की दीप्ति कोष्ठकी शुद्धता शरीर की कोमलता तथा स्निग्धता ग्लानि स्नेहसे द्वेष हलकापन और इन्द्रियों की निर्मलता होती है और रूखे पुरुष के इससे विपरीत लक्षण होतेहैं अधिक स्नेहपान करनेसे भोजनमें अरुचि मुखका बहना गुदा में दाह प्रवाहिका तन्द्रा अतीसार और पीलापन होताहै रूखेको स्निग्ध करना और बहुत स्निग्धको रूखा करना चाहिये ॥ १३० ॥

श्यामाकचणकाद्यैश्चतक्रपिण्याकशक्तुभिः। दीप्ताग्निःशुद्धकोष्ठश्चपुष्टधातुर्दृढेन्द्रियः निर्जरोबलवर्णाढ्यःस्नेहसेवीभवेन्नरः॥ स्नेहेष्यायामसंशीतवेगाघातप्रजागरान्॥ दिवा स्वप्नमभिष्यन्दिरूक्षान्नञ्चविवर्जयेत् ॥ १३१ ॥

सामा चने मट्ठा खल अथवा सत्तू आदिकोंके साथस्नेहपान करने से अग्नि की दीप्ति कोष्ठकी शुद्धता धातुओंकी पुष्टता इन्द्रियों की दृढता वृद्धावस्थाकानाश बलकी अधिकता और वर्णकी उत्तम ताहोतीहै स्नेहपान करके व्यायाम शीत वेगों का रोकना रात्रि में जागरण दिनकासोना और अभिष्यन्दी तथा रूखा अन्न त्याग करना चाहिये ॥ १३१ ॥

अथ पञ्चकर्माणि ॥

प्रथमंवमनंपश्चाद्विरेकश्चानुवासनम्।एतानिपञ्चकर्माणिनिरूहोनावनंतथा १३२॥

पंचकर्म्म ॥

प्रथम बमन फिर विरेचन फिर अनुवासन फिर निरूहवस्ति और सब के पीछे नाशलेना यह पांचकर्म हैं ॥ १३२ ॥

अथ वमनविधिः ॥

शरत्कालेवसन्तेचप्रावृट्कालेचदेहिनाम् । वमनंरेचनञ्चैवकारयेत्कुशलोभिषक् ॥ बलवन्तकफव्याप्तंहल्लासादिनिपीड़ितम् ॥ तथावमनसात्म्यञ्चधीरचित्तञ्चवामयेत् ॥ विषदोषेस्तन्यरोगेमन्देऽग्नौश्लीपदेऽर्बुदे ॥ हृद्रोगेकुष्ठवीसर्पेमेहाजीर्णभ्रमेषुच ॥ विदारिका पचीकासश्वासपीनसवृद्धिषु ॥ अपस्मारेज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारिषु ॥ नासतालौष्ठ पाकेषुकर्णस्रावेऽधिजिह्वके ॥ गलशुण्ड्यामतीसारेपित्तश्लेष्मगदेतथा ॥ मेदोगदेऽरुचौचैववमनंकारयेद्भिषक् ॥ स्तन्यरोगेदुष्टदुग्धजनितेबालस्यरोगे ॥ १३३ ॥

बमन की विधि ॥

चतुर वैद्य मनुष्योंको शरद् बसन्त और प्रावृट् ऋतु में वमन तथा विरेचन करावें बलवान् कफसे व्याप्त मतली आदिरोगों से व्याकुल व मन में अभ्यास रखने वाले और धीर चित्तवाले पुरुषों को बमन कराना चाहिये विषदोष दुग्धरोग मन्दाग्नि श्लीपद अर्बुद हृदय के रोग कुष्ठ वीसर्प प्रमेह अजीर्ण भ्रम विदारिका अपची खांसी श्वास पीनस वृद्धि मृगी ज्वर उन्माद रक्तातीसार नासिका

पकना तालु और ओष्ठका पकना कानका बहना अधिजिह्वक गलशुंडी अतीसार कफ तथा पित्तके रोग मेदरोग और अरुचि में बमन कराना श्रेष्ठहै ॥ १३३ ॥

नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः ॥ नातिवृद्धीगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः॥मदार्तोबालकोरूक्षःक्षुधितश्चनिरूहितः ॥ उदावर्त्योर्ध्वरक्तीचदुश्छर्द्यःकेवलानिली ॥ पाण्डुरोगीकृमीव्याप्तःपठनात्स्वरघातवान् ॥ एतेऽप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेविषपीडिताः। कफव्याप्ताश्चतेवाम्यामधुकक्काथपानतः॥ ऊर्ध्वरक्तीयस्यनासाक्षिकर्णास्यमार्गैरक्तेप्रवर्त्ततेसः । भुक्तरूक्षकर्कशद्रव्यार्द्रश्छार्द्यःमधुकस्थानेमधुकेतिद्वितीयःपाठः ॥ १३४ ॥

तिमिर गुल्म (बायगोला)तथा उदररोगवाले कृश अत्यन्त वृद्ध गर्भिणी स्त्री स्थूल क्षतसे व्याकुल मदसे पीडित बालक रूखे क्षुधायुक्त निरूहवस्ति युक्त उदावर्त्त तथा ऊर्ध्व रक्तवाले केवलवात रोगी रूखी अथवा कठोर वस्तु भोजन करनेवाले पांडुरोगी कृमियुक्त वातके द्वारा स्वरभंगवाले इन पुरुषोंको वमन न कराना चाहिये और इन्ही लोगोंसेयुक्त भी अजीर्ण तथा विषसे पीडित और कफसे व्याप्त होय तो मौहेके काढ़ेसे वमन कराना चाहिये ॥ १३४ ॥

सुकुमारंकृशम्बालंवृद्धंभीरुञ्चवामयेत् । पाययित्वायवागूंवाक्षीरतक्रदधीनिच ॥ असात्म्यैःश्लेष्मलैर्भोज्यैर्दोषानुत्क्लेश्यदेहिनाम्।स्निग्धस्विन्नायवमनंदत्तंसम्यक्प्रवर्त्ततेसु॥ वमनेषुचसर्वेषुसैन्धवंमधुवाहितम् । वीभत्संवमनंद्याद्विपरीतंविरेचनम् ॥ वीभत्संअरुच्यंविपरीतम्रुच्यम् ॥ १३५ ॥

सुकुमार कृश बालक वृद्ध और भयभीत पुरुष को यवागू दूध मट्ठा अथवा दही पिलाकर वमन करानी चाहिये स्निग्ध और स्वेदन युक्त पुरुष को असात्म्य और कफकारी भोजनों से दोषोंको उखाड़कर वमन कराने से अच्छे प्रकार दोषनिकलजातेहैं संपूर्ण वमन की औषधियों में सेंधानोन और सहत मिलाना हितकारीहै वमन कराने वाली औषध अरुचिकारी और विरेचनकारी औषधरुचि युक्त देनी चाहिये ॥ १३५ ॥

क्काथ्यद्रव्यस्यकुड़वंस्रपायित्वाजलाढ़के । अर्द्धभागावशिष्टञ्चवमनेष्ववचारयेत् ॥ क्काथपानेनवप्रस्थाज्येष्ठामात्राप्रकीर्त्तिता । मध्यमाषण्मिताप्रोक्तात्रिप्रस्थाचकनीयसी ॥ वमनेचविरेकेचतथाशोणितमोक्षणे । अर्द्धत्रयोदशपलंप्रस्थमाहुर्मनीषिणः ॥ अर्द्धत्रयोदशपलंसार्द्धषट्कम् । कल्कचूर्णावलेहानांत्रिपलंमात्रयोत्तमम् । मध्यमंद्विपलंविद्यात्कनीयस्तुपलंभवेत् ॥ वमनेचाष्टवेगास्युःपित्तान्ताउत्तमास्तुते । षड्वेगामध्यमावेगाचत्वारस्त्वपरेमताः ॥ कफंकटुकतीक्ष्णोष्णैःपित्तंस्वादुहिमैर्जयेत् । सस्वादुलवणाम्लोष्णैःसंसृष्टंवायुनाकफम् ॥ कृष्णांकट्फलसिन्धुंचकफेकोष्णजलैःपिवेत् ।पटोलवासानिम्बश्चपित्तेशीतजलैःपिवेत् ॥ कट्फलंमयनफलम् ।सश्लेष्मवातपीड़ायांसक्षीरंमदनंपिवेत् । अजीर्णकोष्णपानीयंसिन्धुंपीत्वावमेत्सुधीः ॥ मदनं(मयनफलम्)वमनंपाययित्वातुजानुमात्रासनेस्थितम् ।कण्ठमेरण्डनालेनस्पृशन्तंवामयेद्भिषक् ॥प्रसेकोहृद्ग्रहःकोठःकण्डूदुश्छर्द्दितेभवेत् । [illegible]लेवान्तेभवेत्तृष्णाहिक्कोद्गारोविसंज्ञता । ।जिह्वानिःसरणंचाक्ष्णोर्व्यावृ

त्तिहनुसंहतिः।रक्तछर्दिःष्ठीवनञ्चकण्ठपीड़ाचजायते॥हनुसंहतिःहन्वोरमिलनम् १३६ ॥

क्वाथ की औषध को एककुडवमात्र लेकर आढ्कभर जलमें औटावे जवआधाबाकीरहे तबउसेकाम मेंलावे वमन के क्वाथ की बड़ीमात्रा ९ प्रस्थ मध्यममात्रा ६ प्रस्थ औरछोटीमात्रा ३ प्रस्थकी होतीहै वमन विरेचन और फस्त लेनेमेंसाढ़ेछः पलका एक प्रस्थ लियाजाताहै कल्क चूर्ण और अवलेह की बड़ीमात्रा ३ पलकी मध्यममात्रा२ पलकी और छोटीमात्रा एकपलकी होतीहै वमनमें आठवार वेग होनाउत्तमहै इनकेअन्तमें पित्तगिरताहै छःवारवेगहोनामध्यम और चारवारवेंगहोना हीन गिना जाता हैवमनकेद्वारा कफको कटु तीक्ष्ण तथा उष्ण वस्तुओंसे पित्तको मधुर तथाशीतल वस्तुओंसे औरवात युक्तकफको मधुर लवण खट्टी तथा उष्ण वस्तुओंसे नाशकरे कफमें पीपल मैनफल तथा सेंधेनोनको उष्ण जलसेपान करके पित्तमें परवल वांसा तथा नींबको शीतल जलसे पान करके कफयुक्त वातमें मैनफल को दूध के साथपान करके और अजीर्ण में सेंधेनोन युक्त गरम जलको पीकर वमनकरे वमन की औषधिको पिला के उकड़ू बैठाकर और गलेको रेड़ीकी नालसे स्पर्श कराकर वमनकरावे वमन के बिगड़ जानेसे लारकाबहना हृदय के रोग कोढ़ और खुजली होजाती है अत्यन्त वमनकरने से तृषा हिचकी डकार अज्ञानता जिह्वाकानिकालना नेत्रों का उलटनापलटना जावड़ोंका न मिलना वमन में रुधिरका गिरना थूकना और कंठमें पीड़ा यह लक्षण होतेहैं ॥ १३६ ॥

वमनस्यातियोगेतुमृदुःकुर्य्याद्विरेचनम् । वमनेनप्रविष्टायांजिह्वायांकवलःग्रहः ॥ स्निग्धाम्ललवणैर्युक्तैर्घृतक्षीररसैर्हितैः । (रसैर्मांसरसैः)फलान्यम्लानिखादेयुस्तस्यचान्येऽग्रतोनराः ॥ निःसृतान्तुतिलद्राक्षाकल्कलिप्तांप्रवेशयेत् । (निःसृतांजिह्वां)व्यावृत्तेऽक्षिणीघृताभ्यक्तेपीडनञ्चशनैःशनैः । हनुमोक्षेस्मृतःस्वेदोनस्यञ्चश्लेष्मवातहृत् ॥ रक्तपित्तविधानेनरक्तष्ठीवमुपाचरेत् ॥ १३७ ॥

वमनकी अधिकतामें हलका विरेचन देनाचाहिये और वमनकेद्वारा जिह्वा के भीतर प्रविष्टहोजाने पर स्निग्ध खट्टे लवणयुक्त हृदयको हित घी दूध और मांस के रस के द्वारा ग्रासबनाकर मुख में रक्खे और दूसरे पुरुष उसके सन्मुख खट्टे फलों कोखायं जो बमन के वेग से जिह्वाबाहर निकल आईहो तो तिल और मुनक्काओं को पीसकर जिह्वा में लेपकर के भीतर को प्रविष्ट करे जोवमनसे नेत्रों में बाधा पहुंचे तो घी लगाकर धीरे २ दबावे जो वमन से दोनोंजावड़े परस्पर नामिलतेहों तो कफ वात नाशकस्वेद औ नासका प्रयोग करना चाहिये और वमनसे जो मुख के द्वारा रुधिर निकलताहो तो रक्त पित्त की विधि से शान्त करना चाहिये ॥ १३७ ॥

धात्रीरसाञ्जनोशीरीलाजाचन्दनवारिभिः ॥ मन्थंकृत्वापाययेच्चसघृतंक्षौद्रशर्करम् । शाम्यन्त्यनेनतृष्णाद्यारोगश्छर्द्दिसमुद्भवाः ॥ हृत्कण्ठशिरसांशुद्धिर्दीप्ताग्नित्वञ्चलाघवम् । कफपित्तविनाशश्चसम्यग्वान्तस्यलक्षणम् ॥ ततोऽपराह्णेदीप्ताग्निंमुद्गषष्ठिकशालिभिः ।हृद्यैश्चजाङ्गलरसैःकृत्वायूषञ्चभोजयेत् ॥ तन्द्रानिद्रास्यदौर्गन्ध्यकण्डूश्चग्रहणींविषम् । सुवान्तस्यनपीड़ायेभवन्त्येतेकदाचन ॥ अजीर्णंशीतपानीयंव्यायामंमैथुनंतथा । स्नेहाभ्यङ्गञ्चरोषञ्चदिनमेकंसुधीस्त्यजेत् ॥ (इतिवमनाधिकारः) १३८ ॥

आमला रसौत खस खील चन्दन और सुगन्धबाला इनको मथकर घी [illegible] और शक्कर मिला

के पीने से वमन से उत्पन्न होनेवाले तृषा आदिक सम्पूर्ण उपद्रव शान्तहोते हैं अच्छे प्रकारसे वमनहोनेपर हृदय कंठ और शिरकी शुद्धता अग्निकी दीप्ति हलकापन और कफ पित्तका नाश होता है फिर अच्छी तरहसे वमन होजाने पर तीसरे पहर दीप्ताग्नि पुरुषको मूंग साठी और चावलोंके साथ जंगली जीवोंके मांसका मनोहर जूसबनाकर पिलाना चाहिये तन्द्रा निद्रा मुखकी दुर्गन्धि खुजली ग्रहणी और विष यह सब अच्छी रीतिसे बमन करने वाले को पीड़ानहीं देते हैं वमनके उपरान्त एक दिन अजीर्ण कारी वस्तु शीतल जल व्यायाम मैथुन तैलादि लगाना और क्रोध का त्यागकरे इति वमनाधिकारः १३८ ॥ अथ विरेचनविधिः ॥

स्निग्धस्विन्नायवान्तायदद्यात्सम्यग्विरेचनम्। अवान्तस्यत्वधःस्रस्तोगृहणींछादये कफः ॥ मंदाग्निंगौरवंकुर्य्याज्जनयेद्वाप्रवाहिकाम् । अथवापाचनैरांमबलांसपरिपाचयेत् ॥ ऋतौवसन्तेशरदिदेहशुद्धौविरेचयेत् । अन्यदात्ययिकेकार्य्येशोधनंशीलयेद् बुधः ॥ आत्ययिके प्राणसङ्कटे । पित्तेविरेचनंयुञ्ज्यादामोद्भूतेगदेतथा । उदरेचतथाध्मानेकोष्ठशुद्धौविशेषतः ॥ दोषाःकदाचित्कुप्यन्तिजित्वालङ्घनपाचनैः । शोधनैःशोधिता येतुनतेषांपुनरुद्भवः ॥ बालोवृद्धोभृशंस्निग्धःक्षतक्षीणोभयान्वितः। श्रान्तस्तृषार्त्तःस्थूल श्चगर्भिणीचनवज्वरी ॥ नवप्रसूतानारीचमंदाग्निश्चमदात्ययी । शल्यार्दितश्चरूक्षश्च नविरेच्याविजानता ॥ १३९ ॥ विरेचनकी विधि ॥

स्नेहन स्वेद और वमनके उपरान्त विरेचन देना चाहिये विना वमन कराये विरेचन देने से कफ नीचे जाकर ग्रहणी को आच्छादित करके मन्दाग्नि शरीर का भारी पन अथवा प्रवाहिका को उत्पन्न करताहै अथवा पाचन औषधों से कच्चे कफ के परिपाक होने पर विरेचन दे वसन्त और शरद ऋतुमें देहकी शुद्धता के लिये विरेचन दे और प्राणोंके संकट आजाने पर अन्य ऋतुओं में भी विरेचन देना चाहिये पित्तमें आमसे उत्पन्न हुए रोग में उदर तथा आध्मान रोग में और कोष्ठकी शुद्धता के लिये विरेचन देना चाहिये लंघन और पाचन के द्वारा शान्त हुए दोष चाहे फिर कुपित होजांय परन्तु वमन आदिके द्वारा निकाले हुए दोष फिर नहीं उत्पन्न होतेहैं बालक वृद्ध अत्यन्त स्निग्ध क्षतसे क्षीण भय भीत श्रान्त कृशित स्थूल गर्भिणी स्त्री नवीन ज्वर वाला नवीन प्रसूतास्त्री मन्दाग्नि वाला मदात्यय से युक्त शस्त्रसे पीड़ित और रूखा इन सबको कदापि बिरेचन न देना चाहिये ॥ १३९ ॥

जीर्णज्वरीगरव्याप्तोवातरोगीभगन्दरी । अर्शःपाण्डूदरग्रन्थिहृद्रोगारुचिपीड़िताः। योनिरोगप्रमेहार्त्तोगुल्मप्लीहव्रणार्दितः । विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविसूचीकुष्ठसंयुताः ॥ कर्ण नासाशिरोवक्त्रगुदमेढ्रामयान्विताःप्लीहशोथाक्षिरोगार्त्ताःकृमिक्षारानिलार्दिताः ॥ शूलिनो मूत्रघातार्त्तोविरेकाहानरामताःबहुपित्तोमृदुःप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः ॥ बहुवातक्रूरको ष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते । मृद्वीमात्रामृदौकोष्ठेमध्यकोष्ठेचमध्यमाः ॥ क्रूरेतीक्ष्णामताद्रव्यैर्मृदुमध्यमतीक्ष्णकैः । मृदुर्द्राक्षापयश्चेक्षुतैलैरपिविरिच्यते ॥ मध्यमस्त्रिवृतातिक्तारास्नजट्शै विरिच्यते । क्रूरस्त्रायमाणसाहेमक्षीरीदन्तीफलादिभिः॥चक्षुतैलमूरुएरण्डतैलम्। राजवृक्षः ।

धनवहेरा। हेमक्षीरी। चोकदन्तीफलम्।वृहदन्तीफलम्। जयपालेतिप्रसिद्धम् ॥ १४० ॥

जीर्णज्वर गरदोष वातरोग भगन्दर बवासीर पांडु उदर ग्रन्थि हृदय के रोग अरुचि योनिरोग प्रमेह गुल्म प्लीहा व्रण विद्रधि छर्दि विस्फोटक विशूचिका कुष्ठ कान तथा नासिकाके रोग शिर मुख गुदा तथा लिङ्ग के रोग प्लीहा की सूजन नेत्ररोग कृमि क्षार तथा वातकी पीड़ा शूल और मूत्राघात इनसंपूर्ण रोगोंमें विरेचन देना उचितहै अधिक पित्तवाले का कोष्ठ कोमल और अधिक कफवाले का मध्यम और अधिक वातवाले कोष्ठ क्रूर (कठिनता से विरेचन देनेके योग्य) होताहै कोमल कोष्ठ में कोमल दस्तावर औषधों की हलकी मात्रामध्यम कोष्ठ में मध्यम दस्तावर औषधियों की मध्यम मात्रा और क्रूर कोष्ठमें तीक्ष्ण दस्तावर औषधियों की बड़ीमात्रा देनी चाहिये दाख रेड़ीकातेल और दूधके द्वारा कोमल कोष्ठका विरेचन होताहै निसोथ कुटकी और अमलतास के द्वारा मध्यम कोष्ठ का विरेचन होताहै और आकका दूध चोक और जमालगोटाके द्वारा क्रूर कोष्ठ का विरेचन होताहै॥१४०॥

मात्रोत्तमाविरेकस्यत्रिंशद्वेगैःफलान्तकः। वेगैर्विंशतिभिर्मध्याहीनोक्तादशवेगिका ॥ द्विपलंश्रेष्ठमाख्यातंमध्यमंचपलंभवेत्। पलार्द्धञ्चकषायाणांकल्कीयस्तुविरेचनम् ॥ कल्क मोदकचूर्णानांकर्षमध्वाज्यलेहतः। कर्षद्वयंपलंवापिवयोरोगाद्यपेक्षया ॥ पित्तोत्तरेत्रिवृच्चूर्णंद्राक्षाक्काथादिभिःपिबेत्। त्रिफलाक्काथगोमूत्रैःपिबेद्श्लेष्मकफार्दितः ॥ त्रिवृत्सैन्धवशुण्ठीनांचूर्णंमम्लैःपिबेन्नरः। वातार्दितोविरेकायजाङ्गलानांरसेनवा ॥ एरण्डतैलंत्रिफलाक्काथेनद्विगुणेनवा। युक्तंपीतंपयोभिर्वानाचिरेणाविरिच्यते ॥ शीघ्रमेवविरिच्यतइत्यर्थः। त्रिवृताकोटजंबीजंपिप्पलीविश्वभेषजम्। समृद्वीकारसंक्षौद्रंवर्षाकालेविरेचनम् ॥ त्रिवृद्दुरालभामुस्तशर्करोदीच्यचन्दनम्। द्राक्षाम्बुनासयष्ट्याह्वशीतलञ्चघनात्यये॥उदीच्यम्बालाघनात्ययेशरदि। पिप्पलीनागरंसिन्धुंश्यामांत्रिवृतयासह ॥ लिह्यात्क्षौद्रेणशिशिरेवसन्तेचविरेचनम्। श्यामाकृष्णासाण्ड॥त्रिवृताशर्करातुल्याग्रीष्मकालेविरेचनम्१४१॥

विरेचन की जिस मात्रा से तीस दस्तआवें वह उत्तम है इसके अन्तमें कफगिरताहै मध्यम मात्रा मेंबीस दस्त और हीनमात्रा में दश दस्त आते हैं और दस्तावर औषधियों के क्काथकी पूरी मात्रा दोपल मध्यम मात्रा एकपल और हीनमात्रा आधे पलकी होती है कल्क मोदक और चूर्ण एकतोलेघी और सहत के साथ दोकर्ष अथवा एकपल रोगी की अवस्था और रोग आदि को विचार कर देनी चाहिये पित्त के कोपमें मुनक्का आदिके काढ़े के साथ निसोथका चूर्ण कफके कोपमें त्रिफला के क्काथ तथा गोमूत्र के साथ त्रिकुटा का चूर्ण और बात के कोप में खटाई अथवा जंगली जीवोंके मांस के रस के साथ निसोथ सेंधानोन तथा सोंठके चूर्ण को अथवा द्विगुण त्रिफला के क्काथ तथा दूधके साथ रेड़ीकेतेल को पिये इनसे शीघ्रही विरेचन होता है वर्षा कालमें निसोथ इन्द्रजौ पीपल और सोंठ को मुनक्का के काढ़ेके साथ सहत मिलाकर विरेचन के लिये पिये शरदऋतु में विरेचन के लिये निसोथ जवासा नागरमोथा शक्कर सुगन्धवाला लालचन्दन और मुलहठी को मुनक्काके काढ़ेके साथ पानकरे हेमन्तऋतु में विरेचन के लिये निसोथ चीता पाढ़र जीरा सरल वच और चोक यह सब गरमजलके साथ चूर्ण करके पिये शिशिर तथा बसन्तऋतु में पीपल सोंठ सेंधानोन काला निसोथ और सफ़ेद निसोथ इनसबके चूर्णको सहतके साथ चाटे और

ग्रीष्मऋतुमें विरेचन के लिये निसोथका चूर्ण और शक्कर समभाग मिलाकर सेवनकरे ॥ १४१ ॥

अभयामरिचंशुण्ठीविड्ङ्गामलकानिच । पिप्पलीपिप्पलामूलंत्वक्पत्रंमुस्तमेवच ॥ एतानिसमभागानिदन्तीतुत्रिगुणाभवेत्।त्रिवृताष्टगुणाज्ञेयाषड्गुणाचात्रशर्करा॥ मधुना मोदकान्कृत्वाकर्षमात्रान्प्रमाणतः । एकैकंभक्षयेत्प्रातःशीतञ्चानुपिवेज्जलम् ॥ तावद्विरिच्यतेजन्तुर्यावदुष्णंनसेवते । पानाहारविहारेषुभवेन्नियन्त्रणःसदा ॥ विषमज्वरमन्दाग्निपाण्डुकासभगन्दरान् । पृष्ठपार्श्वोरुजघनजङ्घोदररुजंजयेत् ॥ स्नेहाभ्यङ्गञ्चरोषञ्चदिनमेकंसुधीस्त्यजेत् । सततंशीलनादेवपलितानिप्रणाशयेत् । अभयामोदकाह्येते रसायनवराःस्मृताः ॥ इतिअभयादिमोदकः ॥ १४२ ॥

हड मिर्च सोंठ वायविड़ंग आंवला पीपल पीपरामूल दालचीनी तेजपात नागरमोथा यह संपूर्ण समभाग इनका तिगुना जमालगोटा अठगुनानिसोथ और छःगुनी शक्कर मिलाकर सहत के साथ दो २ तोलेके मोदकबनावै प्रातः कालउठकर शीतल जलके अनुपानसे एक२मोदक रोजखाय जब तक गरम जल न पियेगा तबतक दस्त आते रहेंगे इन मोदकोंके सेवनमें पान आहार और विहारकी कोई रोक नहीं है बिषमज्वर मन्दाग्नि पांडु खांसी भगन्दर कुष्ठ गुल्म बवासीर गलगण्ड उदर भ्रम पीठ तथा पसलियोंकी पीड़ा जंघा पिंडली नितंब तथा उदरकीपीड़ा इनसब रोगोंका इसके सेवन से नाश होताहै इनको खाकर एकदिन तेलमर्दन और क्रोध न करे इनके सदैव सेवन करनेसे श्वेत बाल काले होजातेहैं यह अभयादि मोदक रसायनोंमें श्रेष्ठ कहे गये हैं इति अभयादि मोदकः॥१४२॥

पीत्वाविरेचनंशीतजलैःसंसिच्यचक्षुषी । सुगन्धिकिञ्चिदाघ्रायताम्बूलंशीलयेद्बुधः॥निर्वातस्थोनवेगांश्चधारयेन्नशयीतच । शीताम्बुनस्पृशेत्काऽपिकोष्णनीरंपिवेन्मुहुः॥ वलासौषधपित्तानिवायुर्वान्तेयथाव्रजेत्॥रेकान्तथामलंपित्तंभेषजंचकफोव्रजेत् ॥१४३ ॥

विरेचन औषधको पीकर शीतल जलसे नेत्रोंको सींचे और कोई सुगन्धित बस्तु सूंघकर तांबूल खाके वातरहित स्थान में बैठे और वेगोंका धारण शयनतथा शीतल जलका स्पर्श न करे बारंबार गरम जल पिये जैसे बात बमनके अंतमें कफ पित्त और औषधियों से मिलजातीहै इसी प्रकार विरेचनके अन्तमें मल पित्त और औषधियों के साथ कफ मिल जाता है ॥ १४३ ॥

दुर्विरक्तस्यनाभेस्तुस्तब्धताकुक्षिशूलरुक्। पुरीषवातसङ्गश्चकण्डूमण्डलगौरवम् ॥ विदाहोऽरुचिराध्मानंभ्रमश्छार्दिश्चजायते । तंपुनःपाचनैःस्नेहैःपक्वास्निग्धन्तुरेचयेत् ॥ तेनास्योपद्रवायान्तिदीप्ताग्निर्लघुताभवेत् । विरेकस्यातियोगेनमूर्च्छाभ्रंशोगुदस्यच ॥ शूलंकफातियोगःस्यान्मांसधावनसन्निभम् । मेदोनिभञ्जलाभासंरक्तञ्चापिविरिच्यते ॥ तस्यशीताम्बुभिःसिक्ताशरीरंतण्डुलाम्बुभिः । मधुमिश्रैस्तथाशीतैःकारयेद्वमनंमृदु ॥ सहकारत्वचःकल्कोदध्नासौवीरकेनवा । पिष्ट्वानाभिप्रलेपेनहन्त्यतीसारमुल्वणम् ॥ सौवीरंतुयवैरामैःपक्वैर्वानिस्तुषीःकृतैः । सौवीरंसन्धानम् । अजाक्षीरंरसञ्चापिवैष्किरंहारिणंतथा ॥ शालिभिःषष्टिकैस्तुल्यैर्मसूरैर्वापिभोजयेत् । वर्तिकालावविकरकपिञ्जलकतित्तिराः॥ चकोरक्रकराद्याश्चविष्किराःसमुदाहृताः । कपिञ्जलइतिख्यातोलोकेकपिश

तित्तिराः ॥ ककरः । कण्टइतिलोकेहारिणस्ताम्रवर्णःस्यान्मृगःशीतैःसंग्राहिभिर्द्रव्यैः कुर्यात्संग्रहणंभिषक् १४४ ॥

जिसको अच्छे प्रकार से बिरेचन नहीं होते हैं उसके नाभि का जकड़ना कोख में पीड़ा मल तथा बायुका न निकलना खुजली चकत्ते भारीपन बिदाह अरुचि आध्मान भ्रम और छर्दि होतीहै ऐसी दशा में स्निग्ध तथा पाचक औषधियों से दोषों को परिपाककरके फिर बिरेचन देना चाहिये इसरीति से उपद्रवों का नाश अग्नि की दीप्ति और हलकापन होताहै विरेचनकी अधिकतामें मूर्च्छा गुदभ्रंश कफ का बहुत निकलना शूल औरमांसके धोवन मेद जल अथवारुधिरके समान दस्त होता है ऐसी दशामें रोगीके शरीरमें शीतल जल सींचकर चावलों के शीतल जल में सहत मिलाकर पान कराके कुछ बमन करावे अथवा दही (सौ बीर कच्चे अथवा पके भूसी सहित यवोंको संधान करके जो बस्तु बनतीहै उसे सौवीर कहतेहैं) के साथ आम की छाल को पीसकर नाभि पर लेप करे इस्से बहुत बढ़ा हुआ भी अतीसार शान्त होताहै और बकरी का दूध विष्किर (बटेर लवा कपिशवर्ण तीतर चकोर औरकराट आदिक बिष्किर कहलातेहैं) पक्षी अथवालालमृगके मांसकारस चावल साठी और मसूरके साथ पानकरावे और शीतल तथा ग्राही वस्तुओंसे दस्तोंकोरोके १४४ ॥

लाघवेमनसस्तुष्टावनुलोमङ्गतेऽनिले । सुविरिक्तंनरंज्ञात्वापाचनंपाययेन्निशि॥इन्द्रियाणांबलंबुद्धेःप्रसादोवह्निदीप्तिता । धातुस्थैर्य्यंवयस्थैर्य्यम्भवेद्विरेचनसेवनात् ॥ प्रतापसेवांशीताम्बुस्नेहाभ्यंगमजीर्णताम् । व्यायामंमैथुनञ्चैवनसेवेतविरेचितः ॥ शालिषष्ठिकंमुद्गाद्यैर्यवागूम्भोजयेत्कृताम् । जङ्गालविष्किराणांवारसैःशाल्योदनंहितम्॥ हरिणैणकुरङ्गर्ष्यवातायुमृगमात्रका ॥ राजीवःपृषतश्चैवजङ्गालाःशरभादयः१४५ ॥

शरीर का हलकापन मनकी प्रसन्नता और बायु का नीचे जाना इनबातों से अच्छी रीति का विरेचन हुआ जान के रात्रि के समय पाचन औषधियों का पान करावे विरेचन के सेवन से इन्द्रियों में बल बुद्धि की प्रसन्नता अग्निकी दीप्ति और धातु तथा अवस्था की स्थिरता होती है और विरेचन बस्तुका सेवन करनेवाला अत्यन्त बायु शीतल जल तैलमर्दन अजीर्णकारी बस्तुओंका भोजन व्यायाम तथा मैथुन का त्याग करदे विरेचन के उपरान्त चावल साठी और मूंग की यवागू (अथवाजंघाल हरिण एण कुरंग ऋष्य वातायु राजीव वृषत और शरभादिक जंघाल कहलाते हैं) और विष्किर जीवों के मांस के रस के साथ भात खिलावे ॥ १४५ ॥

अथस्नेहवस्तिविधिः ॥

वस्तिर्द्विधानुवासास्योनिरूहश्चततःपरम् । यःस्नेहोदीयतेसःस्यादनुवासननामकः॥ कषायक्षीरतैलैर्योनिरूहःसनिगद्यते । वस्तिभिर्दीयतेयस्मात्तस्माद्वस्तिरितिस्मृतः ॥ वस्तिभिःमृगादीनांमूत्राशयैः तत्रानुवासनाख्योहिवास्तिर्यःसोऽत्रकथ्यते ।अनुवासनभेदश्चमात्रावस्तिरुदीरितः॥ पलद्वयन्तस्यमात्रातस्मादर्द्धापिवाभवेत् । अनुवासस्तुरूक्षः स्यात्तीक्ष्णाग्निःकेवलानिली १४६ ॥

अथस्नेहवस्तिविधि ॥

वस्ति दो प्रकार की होतीहै एक अनुवासन दूसरी निरूह केवल स्नेहके द्वारा जो वस्ति दीजाती

है वह अनुवासन और क्वाथ दूध तथा तेल के द्वारा जो वस्ति दीजातीहै उसको निरूह कहतेहैं वस्ति (मृगादिकों के मूत्राशय) द्वारा इसका व्यवहार कियाजाताहै इसलिये इसको वस्ति क्रिया कहतेहैं इनमें से प्रथम अनुबासन को कहतेहैं मात्रा वस्ति अनुबासन वस्ति का भेद कहीगईहै इसकी मात्रा दो अथवा एक पलकी होतीहै रूखे दीप्ताग्नि वाले और केवल बात की प्रबलता वाले पुरुषों को अनुबासन हितहै ॥ १४६ ॥

नानुवास्यस्तुकुष्ठीस्यान्मेह्यीस्थूलस्तथोदरी । नास्थाप्यानानुवास्याश्चजीर्णोन्मादतृ डर्दिताः ॥ शोथमूर्च्छारुचि[illegible]श्वासकासक्षयातुराः ॥ १४७ ॥

कुष्ठ प्रमेह स्थूलता और उदर रोग वालों को अनुबासन हितकारी नहींहै अजीर्ण उन्माद तृषा सूजन मूर्च्छा अरुचि भय श्वास खांसी तथा क्षयसे व्याकुल पुरुषों को अनुवासन और आस्थापन दोनों निषिद्ध हैं ॥ १४७ ॥

नेत्रंकार्य्यंसुवर्णादिधातुभिर्वृक्षवेणुभिः ॥ नलैर्दन्तैर्विषाणाग्रैर्मणिभिर्वाविधीयते।नेत्रंना ड़ीतथाचोक्तंविश्वप्रकाशे । नेत्रंमन्थगुणेवस्त्रेतरुमूलेविलोचने । नेत्रबन्धेचनाड्याञ्च नेत्रोनेतरिभेद्यव ॥ एकवर्षात्तुषड्वर्षाद्यावन्मानंषडंगुलम् । ततोद्वादशकंयावन्मानंस्या दष्टसम्मितम् ॥ ततःपरंद्वादशभिरंगुलैर्नेत्रदीर्घता । मुखच्छिद्रंकलायाभंच्छिद्रंकोलास्थि सन्निभम् ॥ यथासङ्ख्यंभवेन्नेत्रंश्लक्ष्णंगोपुच्छसन्निभम् । गोपुच्छसन्निभंमूलेस्थूलंतस्मा त्क्रमात्कृशम् ॥ मुखच्छिद्रादिप्रमाणंनेत्रंक्रमेणषड्वर्षायद्वादशवर्षायतदूर्द्ध्ववर्षायज्ञेयम् आतुरांगुष्ठमानेनमूलेस्थूलंविधीयते । कनिष्ठिकापरीणाहमग्रेचगुटिकामुखम् ॥ परिणा होऽत्रस्थौल्यम् । तन्मूलेकर्णिकेद्वेचकार्येभागाच्चतुर्थकात् । कर्णिकागवादिकर्णवत् । यो जयेत्तत्रवस्तिञ्चबन्धद्वयविधानतः । मृगाजशूकरगवांमहिषस्यापिवाभवेत् ॥ वस्तिरिति शेषः । मूत्रकोशस्यवस्तिस्तुतदलाभेतुचर्मणः । कषायरक्तःसमृदुर्वस्तिःस्निग्धोदृढ़ोहि तः ॥ व्रणवस्तेस्तुनेत्रंस्यात्श्लक्ष्णमष्टांगुलोन्मितम् । मुद्गच्छिद्रंगृध्रपक्षनलिकापरिणाहि च ॥ शरीरोपचयंवर्णंबलमारोग्यमायुषः । कुरुतेपरिवृद्धिश्चवस्तिःसम्यगुपासितः ॥ दिवार्शीतेचसन्तेचस्नेहवस्तिःप्रदीयते । ग्रीष्मवर्षाशरत्कालेरात्रौस्यादनुवासनम् ॥ न चातिस्निग्धमशनंभोजयित्वानुवासयेत्।मदंमूर्च्छाञ्चजनयेद्द्विधास्नेहःप्रयोजितः ॥द्वि धाभोजनेवस्तौच । रूक्षंभुक्तवतोत्यन्तंबलंवर्णञ्चहापयेत् । युक्तस्नेहमतोजन्तुंभोजयि त्वानुवासयेत् ॥ युक्तस्नेहंयथोचितस्नेहंभोज्यंभोजयित्वेत्यर्थः ॥ १४८ ॥

सुवर्णादि धातु वृक्ष बांस नलदांत सींगोंके अग्रभाग अथवा मणियोंके द्वारा नेत्र (नल) बना-वे नेत्र शब्दका नल अर्थ बिश्वप्रकाश कोश में लिखा है मथानी की रस्सी वस्त्र वृक्षोंकी जड़आंख आंखोंकीपट्टी नली और नायक यहनेत्र शब्दके अर्थहैं एकवर्षसे छः वर्षकी अवस्थाके बालकको छः अंगुल छः वर्षसे बारहवर्षतक के बालकको आठ अंगुल और बारहवर्ष के उपरांत चाहे जितनीअव-स्थाहो बारह अंगुलकी लंबीनली होनीचाहिये नलीका छेद क्रमसे मूंग मटर और बेरकी गुटली के बराबर करना चाहिये यह चिकनीऔर गौकीपूंछ के समान मूलमें स्थूल और नीचेकी ओर क्रमक्रम

से पतलीहोती है नलीकामूल रोगी के अंगूठेके समान मोटा अग्रभाग कनिष्ठा उंगली के समान मोटा और मुख बहुत चिकना तथा गोलीके समान गोलबनाना चाहिये और नलीके मूल के चतुर्थ भाग में दोगौके से कान बनाने चाहिये उनमें वस्तिको दोबन्धनोंसे बांधे मृग बकरा शूअर बैलअथवा भैंसेकी मूत्राशय वस्ति में श्रेष्ठहोती है परन्तु इनके अभाव में चमडेकीवस्ति बनवानी चाहिये सबप्रकार की वस्ति कषायवर्ण से रंगीहुई कोमल स्निग्ध और मजबूत होनी चाहिये घाव में देने की वस्तिकी नली कोमल तथा आठउंगलकी लंबी साफहोनी चाहिये उसके मुखका छिद्र मूंगकेसमान और मुटाई गिद्ध के परके समान होनी चाहिये अच्छेप्रकार से वस्ति क्रिया होजाने पर शरीर की पुष्टता वर्णकी उत्तमता बल आरोग्य और आयुकी वृद्धिहोती है शीततथा वसन्त ऋतु में दिन को और ग्रीष्म वर्षा तथा शरद ऋतु में रात्रि को स्नेह वस्ति लेनी चाहिये अत्यन्त स्निग्ध भोजन कराय के स्नेह वस्ति नहीं देनी चाहिये क्योंकि एकसमय में भोजन और वस्ति दोनों से सेवना किया हुआ स्नेह मद और मूर्च्छा को उत्पन्नकरता है और अत्यन्त रूखी वस्तु खिलाकरकेभी स्नेह वस्ति देनेसे बल और वर्णका नाशहोता है इसी कारण से यथायोग्य स्निग्ध भोजन करायकर स्नेह वस्ति देनी चाहिये ॥ १४८ ॥

हीनमात्रावुभौवस्तीनातिकार्य्यकरौस्मृतौ। अतिमात्रौतथानाहक्लमातीसारकारकौ॥ उभौवस्तीअनुवासनानिरूहाख्यौ । उत्तमास्यात्पलैःषड्भिर्मध्यमास्यात्पलैस्त्रिभिः। पलाद्यर्द्धेनहीनास्यादुक्तमात्रानुवासने । शताह्वासैन्धवाभ्याञ्चदेयंस्नेहेचचूर्णकम् । तन्मात्रोत्तममध्यान्त्याषट्चतुर्द्वयमाषकैः॥ १४९ ॥

हीन मात्रा से व्यवहार की गई दोनों वस्ति अच्छे प्रकार से कार्यको नहीं सिद्धकरसक्ती हैं और मात्रा की अधिकता से आनाह ग्लानि तथा अतीसारको उत्पन्न करती हैं स्नेह वस्तिकी उत्तममात्राछः पल मध्यम मात्रा तीनपल और हीन मात्रा डेढ़ पलकी होती है जिस स्नेह से वस्ति देनी हो उसमें सौंफ और सेंधानोनके चूर्ण को मिलावै इसचूर्ण की उत्तममात्रा छः मासेकी मध्यममात्रा चारमासे की और हीन मात्रा दोमासेकी होती है ॥ १४९ ॥

विरेचनात्सप्तरात्रेगतेजातबलायच । भुक्तान्नायानुवास्यायवस्तिर्देयोऽनुवासनः॥ अथानुवास्यंस्वभ्यक्तमुष्णाम्बुस्वेदितंशनैः । भोजयित्वायथाशास्त्रंकृतङ्क्रमणंततः॥ उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंयोजयेत्स्नेहवस्तिना॥ उष्णाम्बुस्वेदितम्। उष्णाम्बुनास्नपितं १५० ।

विरेचनके पीछे सात रात्रि व्यतीत होजाने पर और बलहोजाने पर भोजन करायके स्नेहवस्ति देनीचाहिये जिसको वस्ति देनीहोय उसे शरीर में तेल मल के उष्णजल से स्नानकरावे फिर विधिके अनुसार भोजन कराकर कुछ टहलावे फिर वायु मूत्र और मल के त्यागहोजाने पर स्नेहवस्ति देवे ॥ १५० ॥

सुप्तस्यवामपार्श्वेनवामजङ्घाप्रसारिणः । कुञ्चितापरजङ्घस्यनेत्रंस्निग्धेगुदेन्यसेत् ॥ बद्धंवस्तिमुखंसूत्रैर्वामहस्तेनधारयेत् । पीड़येद्दक्षिणेनैवमध्यवेगेनधीरधीः॥ जृम्भाकासक्षवादीश्चंवस्तिकालेनकारयेत् । त्रिंशन्मात्रामितःकालःप्रोक्तोवस्तेस्तुपीड़ने ॥ ततःप्रणिहितेस्नेहेउत्तानोवाकूशतंभवेत् । स्वजानुनःकरावर्त्तंकुर्य्याच्छोटिकयापुनः ॥ एषा

मात्राभवेदेकासर्वत्रैवेषनिश्चयः । निमिषोन्मेषणंपुंसामंगुल्याछोटिकाथवा ॥ गुर्व्वक्षरो च्चारणंवास्यान्मात्रेयंस्मृताबुधैः । प्रसारितैःसर्व्वगात्रैर्यथावीर्य्यंप्रसर्पति ॥ यथावीर्य्यं स्नेहादि । ताड़येत्तलयोरेनन्त्रींस्त्रीन्वारान्नशनैःशनैः । स्फिजोश्चैवतथाश्रोणीशय्याञ्चैवोत्क्षिपेत्ततः ॥ स्फिजोश्चैनंस्वपाणिभ्यांपूर्ववत्ताड़येद्बुधः। शय्याञ्चपदतस्तस्यत्रीन् वारान्नुत्क्षिपेत्ततः ॥ जातेविधानेतुततःकुर्य्यान्निद्रांयथासुखम् । सानिलःसपुरीषश्चस्नेहः प्रत्येतियस्यतु ॥ उपद्रवंविनाशीघ्रंससम्यगनुवासितः । उपद्रवस्थानेतुषचौषावितिसुश्रुतेपाठः ॥ १५१ ॥

वस्ति देनेके समय रोगीको बाईं करवट से सुलाकर बाईं जांघको फैलवावे और दक्षिण जांघको सुकड़वावे फिर गुदा में तेललगाकर बैद्य बायेंहाथसे सूत्रोंसे बंधेहुये वस्ति के मुखको पकड़ेरहे और दाहिने हाथसे धीरे २ नलीको भीतर डाले वस्तिदबाने का समयतीसमात्रा(अपने घुटनेके चारों तरफ चुटकी बजाकर हाथ घुमाने में जितना समय लगता है उसको एकमात्रा कहते हैं अथवा नेत्रोंका एक बार खोलना मूंदना जितने समयमें हो पुरुषों के चुटकी बजाने में जो समय हो अथवा एक गुरु अक्षर के बोलनें में जितना समयहो उसको मात्रा कहतेहैं) का कहागया है और वस्तिदेनेके समय जंभाई खांसी तथा छींकको त्यागदे इस प्रकारसे स्नेह भीतर प्रबिष्ट होजानेपर सौवाक्य के उच्चारण करने में जितनी देर लगतीहै उतनीदेर तक चित्त पड़ारहै संपूर्ण अंगोंके फैलाने से स्नेह आदिक अपने वीर्यके अनुसार फैलजातेहैं रोगीके नितंब और दोनों हाथोंको तीन २ बारफैलवावे फिर हाथ पैरके तलुए और कमर में हाथसे ताडन करे और पगां तनकी ओरसे शय्याको तीन बार ऊंचे को उचकावे फिर एड़ियों में हाथसे थपकी लगावे इस प्रकार संपूर्ण विधानके होजानेपर रोगीको सुखपूर्वक निद्रा करावे जिसके उपद्रवोंके विना वायु और मल सहित स्नेह फिर निकल आवे उसका अनुवास न अच्छे प्रकारसे हुआ जानों ॥ १५१ ॥

जीर्णान्नमथसावाह्यस्नेहेप्रत्यागतेपुनः । लघ्वन्नंभोजयेत्कामंदीप्ताग्निस्तुनरोयदि ॥ अनुवासितायदातव्यमितरेऽह्निसुखोदकम् । धान्यशुण्ठीकषायंवास्नेहव्यापत्तिनाशनम् ॥ सुखोदकमुष्णोदकव्यापत्तिर्व्याधिः । अनेनविधिनाषड्वासप्तवाष्टौनवापिवा । विधेयावस्तयस्तेषामन्तेचैवनिरूहणम् ॥ १५२ ॥

स्नेह के निकलजाने पर जो क्षुधा लगे तो सायंकाल के समय खूब गलाहुआ अथवा कोई हलका अन्न भोजन करावे दूसरे दिन उष्ण जल अथवा धनियां और सोंठ का काढ़ा पिलावे इससे स्नेह की संपूर्ण व्याधि नष्टहोजातीहैं इस प्रकारसे छः सात आठ अथवा नौवार स्नेह वस्ति देकर निरूह वस्ति दे ॥ १५२ ॥

दत्तस्तुप्रथमोवस्तिःस्नेहयेद्वस्तिवक्षणौ । सम्यग्दत्तोद्वितीयस्तुनूर्ध्वस्थमनिलंजयेत् ॥ बलंवर्णञ्चजनयेत्तृतीयस्तुप्रयोजितः । चतुर्थपञ्चमौदत्तौस्नेहयेतांरसासृजी ॥ षष्ठोमांसंस्नेहयतिसप्तमोमेदएवच । अष्टमोनवमश्चापिमज्जानञ्चयथाक्रमम् ॥ यथाक्रममितिवचनादष्टमोऽस्थिस्नेहयेत् । एवंशुक्रगतान्दोषान्द्विगुणःसाधुसाधयेत् ॥ (अ

ष्टादशादधिकवस्तिः)अष्टादशाष्टदशकान्वस्तीनांयोनिषेवते। सकुञ्जरबलोऽश्वस्यजव तुल्योऽमरप्रभः ॥ रूक्षायबहुवातायस्नेहवस्तिंदिनेदिने । दद्याद्वैद्यस्तथान्येषामग्न्या बाधभयात्त्र्यहात् ॥ स्नेहोऽल्पमात्रोरूक्षाणांदीर्घकालमनत्ययः । अनत्ययः । अबाधः । तथानिरूहःस्निग्धानामल्पमात्रःप्रशस्यते । अथवायस्यतत्कालंस्नेहोनिर्यातिकेवलः ॥ तस्याप्यल्पतरोदेयोनहिस्निग्धेऽवतिष्ठते । अवतिष्ठतेदत्तःस्नेहइतिशेषः । अशुद्धस्य मलोन्मिश्रःस्नेहोनैतियदापुनः । तदाङ्गसदनाध्मानेशूलंश्वासश्चजायते ॥ पक्वाशयेगुरुत्वञ्चतत्रदद्यान्निरूहणम् । तीक्ष्णंतीक्ष्णौषधैर्युक्तंफलवर्तिमथापिवा ॥ यथानुलोमनोवायुर्मलःस्नेहश्चजायते। तथाविरेचनंदद्यात्तीक्ष्णंनस्यञ्चशस्यते ॥ १५३ ॥

पहली वस्ति देने से मूत्राशय और बंक्षण स्निग्ध होतेहैं दूसरी वस्ति से मस्तक की वायुशान्त होतीहै तीसरी वस्ति से बल तथा वर्ण की उत्तमता होतीहै चौथी तथा पांचवीं वस्ति से रस तथा रक्त छठी वस्तिसे मांस सातवीं वस्ति से मेद आठवीं से हड्डी और नवीं वस्ति से मज्जा स्निग्धहोतीहै अठारहदिन तक वस्ति लेने से वीर्य्यके संपूर्ण दोष नष्ट होतेहैं और छत्तीस दिनतक वस्तिलेने से हाथी के समान बल घोड़े के समान वेग और देवताओं के समान कांति होतीहै रूखापन और बायु की अधिकता होने पर प्रातिदिन स्नेहवस्तिदे परन्तु अन्यस्थानों में मन्दाग्निके भय से तीन दिनका अन्तर देकर स्नेहवस्तिदे रूखे पुरुषों को थोड़ीमात्रा से बहुत दिनतक स्नेह देनेंमें दोषनहीं इसी प्रकार स्निग्ध पुरुषोंको थोड़ीमात्रासे निरूह वस्ति देना श्रेष्ठहै जिसके वस्तिदेनेसे तत्क्षण केवलस्नेह निकल आवे उसको फिर बहुत थोड़ीमात्रा देनी चाहिये बमन विरेचनादिकों के द्वारा शरीर को विना शुद्धकिये स्नेहवस्ति देनेसे जो स्नेह मलके साथमिलकर बाहरन निकले तो शरीरकी शिथिलता आध्मान शूल श्वास और पक्वाशयमें भारीपन मालूम होताहै उससमय निरूह वस्ति अथवा तीक्ष्ण औषध सहित तीक्ष्ण फलवर्ति (इसका आगे वर्णन होगा) का प्रयोग करे बायु मल और स्नेह के नीचे जाने के लिये विरेचन और तीक्ष्ण नासदे ॥ १५३ ॥

यस्यनोपद्रवंकुर्य्यात्स्नेहवर्त्तिरनिःसृतः।सर्व्वोऽल्पोव्यावृतोरौक्ष्यादुपेक्ष्यःसविजानता॥ अनायातन्त्वहोरात्रेस्नेहंसंशोधनैर्हरेत्।स्नेहवस्तावनायातेनान्यःस्नेहोविधीयते॥१५४॥

जिसके स्नेह वस्ति निकलनेसे कोई उपद्रव नहो वहारूखेपनका कारणसमझकर कोई यत्न न करे एक रात्रि और दिन तक जो स्नेह न निकले तो शोधक औषधियोंके द्वारा स्नेह को निकाले स्नेह वस्तिके न निकल ने पर दूसरे वार स्नेह देना अनुचित है ॥ १५४ ॥

गुडूच्येरण्डपूतीकभार्गीवृषकरौहिषम् । शतावरीसहचरंकाकनासांपलोन्मिताम् ॥ यवमाषातसीकोलकुलत्थान्प्रसृतोन्मितान् । चतुर्द्रोणेऽम्भसःपक्त्वाद्रोणशेषेणतेनच ॥ पचेत्तैलाढ़कंसर्वैर्जीवनीयैःपलोन्मितैः । अनुवासनमेतद्धिसर्ववातविकारनुत् ॥ पूतीकःकरञ्जः । रौहिषंईषत्सुगंधतृणविशेषः । काकनासाकौआठोढ़ी । प्रसृतम् । पलद्वयम् । षोढ़ासप्तव्यापदस्तुजायतेवस्तिकर्म्मणः । दूषितान्समुदायेनतांश्चिकित्स्यातुसुश्रुतान् ॥ समुदायेनसमुचितनेत्रादिसामग्र्या ॥ १५५ ॥

गिलोय रेड़ी करंजुआ भारंगी वांसा आगि यासतावर भिंटी और काक जंघा यह संपूर्ण एक २ पल जौ उर्द अलसी बेर और कुलथी यह सब दो २ पल इन सबको चारू द्रोण पानी में औटा कर एक द्रोण बाकी बचने पर उस पानी को छानले और उस पानी से एक आढ़क तेल जीवनीय गण का एक २ पल औषधियोंका कल्क मिलाकर पकावे इस तेलके द्वारा अनुवासन करने से सब वात रोगों का नाश होता है अयोग्य नली आदि के द्वारा वस्ति क्रिया करने से छहत्तर रोग उत्पन्न होते हैं सुश्रुत के मतसे इन रोगोंकी चिकित्सा करे ॥ १५५ ॥

पानाहारविहाराश्च परिहाराश्चकृत्स्नशः । स्नेहपानसमाःकार्य्या नात्रकार्य्याविचारणा ॥ १५६ ॥

वस्ति क्रिया में पान आहार विहार और संपूर्ण त्याग करने के योग्य वस्तु स्नेहपान के समान जाननी चाहिये ॥ १५६ ॥ अथ निरूहवस्ति विधिः ॥

निरूहवस्तिबहुधाभिद्यतेकारणान्तरैः । तैरेवतस्यनामानिधृतानिमुनिपुङ्गवैः ॥ कारणान्तरैः । समवायिकारणभेदैः । निरूहस्यापरन्नामप्रोक्तमास्थापनंबुधैः । स्वस्थानेस्थापनाद्दोषधातूनांस्थापनंमतम् ॥ निरूहस्यप्रमाणंतुप्रस्थपादोत्तरंपरम् । मध्यमंप्रस्थमुद्दिष्टंहीनन्तुचकुड़वास्त्रयः ॥ परंश्रेष्ठम् ॥ १५७ ॥

निरूहवस्ति की विधि ॥

निरूहवस्ति बहुधा कारणों के भेदसे अनेक प्रकारकी होतीहै और उन्हीं कारणों के अनुसार उसके नाम होते हैं दोष और धातु ओंको अपने २ स्थानमें स्थापित करने से निरूह वस्तिका दूसरा नाम आस्थापन है निरूहवस्तिकी श्रेष्ठमात्रा सवाप्रस्थ मध्यममात्रा एकप्रस्थ और हीनमात्रा तीन कुडवकी होती है ॥ १५७ ॥

अतिस्निग्धोऽक्लिष्टदोषःक्षतःक्षीणःकृशस्तथा । अक्लिष्टदोषः । अदत्तोत्क्लेशनइतियावत्क्षतोरस्कःउरःक्षतवान् । आध्मानछर्दिहिक्कार्शःकासश्वासप्रपीड़ितः ॥ गुदशोफातिसारार्त्तोविसूचीकुष्ठसंयुतः ॥ गर्भिणीमधुमेहीचनास्थाप्यश्चजलोदरी ॥ १५८ ॥

अत्यन्त स्निग्ध ऊपर को गये दोष वाला छातीमें घाववाला कृश औरउदर आध्मान छर्दि हिचकी बवासीर खांसी श्वास गुदा के रोग सूजन अतीसार विशूचिका कुष्ठ मधुप्रमेह तथा जलन्धर रोगसे ग्रसित पुरुष और गर्भिणी स्त्रीको आस्थापन न दे ॥ १५८ ॥

वातव्याधावुदावर्त्तेवातासृग्विषमज्वरे ॥ मूर्च्छातृष्णोदरानाहमूत्रकृच्छ्राश्मरीषुच । वृद्ध्यासृगुदरमंदाग्निप्रमेहेषुनिरूहणम् ॥ शूलेऽम्लपित्तेहृद्रोगेयोजयेद्विधिवद्बुधः । उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंस्निग्धंस्विन्नमभोजनम् ॥ मध्याह्नेगृहमध्येचयथायोग्यंनिरूहयेत् ॥ स्निग्धमस्वभ्यक्तम् । उष्णाम्बुस्नापितम् । स्नेहवस्तिविधानेनबुधःकुर्य्यान्निरूहणम् । जातेनिरूहेचततोभवेदुत्कटकासनः ॥ तिष्ठन्मुहूर्तमात्रन्तुनिरूहागमनेच्छया । अत्रमुहूर्त्तमात्रशब्देनैतदपिबोधितम्निरूहप्रत्यागमनकालोमुहूर्त्तमात्र ॥ अनायातंमुहूर्त्ततुनिरूहंशोधनैर्हरेत् । निरूहैरेवमतिमान्क्षारमूत्राम्लसैन्धवैः ॥ १५९ ॥

वातव्याधि उदावर्ति वातरक्त विषम ज्वर मूर्च्छा तृषा उदर आनाह मूत्र कृच्छ्र पथरी वृद्धि प्रदर मन्दाग्नि प्रमेह शूल अम्लपित्त और हृदय के रोगों में विधिपूर्व्वक वस्ति देनी चाहिये वायु मल और मूत्र का त्याग करके और तेल लगाकर के गरम जल से स्नान करे फिर विना भोजन किये घरमें बैठालकर मध्याह्नकेसमय यथा योग्य निरूह वस्तिदेवे स्नेह वस्तिकेसमान निरूहवस्ति देनी चाहिये निरूह वस्तिके होजानेपर उसके निकलनेके लिये एकमुहूर्त्त भर उकडू बैठे जो मुहूर्त्त भर में बाहर न निकले तो शोधन औषधियों से अथवा क्षार मूत्र खटाई और सेंधा नोन के द्वारा फिर निरूह वस्तिदेकर उस को निकाले १५९ ॥

यस्यक्रमेणगच्छन्तिविट्पित्तकफवायवः । लाघवंचोपजायेतसुनिरूहंतमादिशेत् । यस्यस्याद्वस्तिबङ्गाल्पवेगोहीनमलानिलः ॥ मूर्च्छार्त्तिजाड्यारुचिमान्दुर्निरूहंतमादिशेत् । विविक्ततामनस्तुष्टिःस्निग्धताव्याधिनिग्रहः ॥ आस्थापनेस्नेहवस्त्योःसम्यग्दानेतुलक्षणम् ॥ विविक्तता । दत्तौषधनिःसरणम्अनेनविधिनायुञ्ज्यान्निरूहंवस्तिदानवित् ॥ द्वितीयंवातृतीयंवाचतुर्थंवायथोचितम् ॥ १६० ॥

कफ पित्त वात और मल इनके निकलजानेसे शरीरमें हलकापन मालूमदे तो अच्छेप्रकारसे हुई निरूह वस्ति जानना जिसके वस्ति के वेगकी अल्पता से वायु तथा मल कमनिकले मूत्र रुकजाय और जड़ता तथा अरुचि उत्पन्न हो उसकी निरूहवस्ति बिगड़ी हुई जानना चाहिये औषधियों का अच्छी रीति से निकल जाना मनकी प्रसन्नता स्निग्धता और रोग की शान्ति यह स्नेह और निरूहवस्ति के अच्छे प्रकार से होजाने के लक्षण हैं इसप्रकारसे दो तीन अथवा चार बार यथा योग्य विचार कर निरूहवस्ति लेनी चाहिये ॥ १६० ॥

सस्नेहएकःपवनेपित्तेद्वौपयसासह ॥ कषायकटुमूत्राद्याकफेतूष्णास्त्रयोहिताः ॥ पित्तश्लेष्मानिलाविष्टंक्षीरयूषरसैःक्रमात् । निरूहंभोजयित्वाचततस्तमनुवासयेत् ॥ सुकुमारस्यवृद्धस्यबालस्यचमृदुर्हितः । वस्तिस्तीक्ष्णःप्रयुक्तस्तुतेषांहन्याद्बलायुषी॥ दद्यादुत्क्लेशनंपूर्व्वमध्यंदोषहरन्ततः ॥ पश्चाच्छंशमनीयञ्चदद्याद्वस्तिंविचक्षणः ॥ १६१॥

वायु रोगमें स्नेह सहित एकबार पित्तरोग में दुग्ध सहित दोबार और कफजरोगोंमें उष्ण कषैले तथा कटु मूत्रादिकों के साथ तीनबार वस्ति देनी चाहिये निरूह वस्ति देनेके उपरान्त पितवाले को दूध कफवाले को जूष और वातवाले को मांस का रस खिलाकर अनुवासन वस्ति देनी चाहिये सुकुमार वृद्धऔर बालकको कोमलवस्ति हितहै क्योंकि इनको तीक्ष्णवस्ति देनेसे बल और आयुकी हानिहोती है पहले उत्क्लेशनवस्ति मध्यमें दोषहरवस्ति और पीछे संशमनीयवस्ति लेनीचाहिये१६१॥

एरण्डबीजंमधुकंपिप्पलीसैन्धवंवचा । हवुषाफलकल्कश्ववस्तिरुत्क्लेशनःस्मृतः ॥ इत्युत्क्लेशनवस्तिःशताङ्कामधुकंविल्वंकौटजंफलमेवच ॥ सकाञ्जिकःसगोमूत्रोवस्तिर्दोषहरःस्मृतः । इतिदोषहरवस्तिः ॥ प्रियग्डुर्मधुकंमुस्तातथैवचरसाञ्जनम् । सक्षीरःशस्यतेवस्तिर्दोषाणांशमनःस्मृतः ॥ इतिशमनवस्तिः ॥ १६२ ॥

रेड़ी के बीज मुलहठी पीपल सेंधानोन बच और हाऊबेर इनके कल्कसे जोवस्ति दीजाती है उस को उत्क्लेशन कहते हैं सतावर मुलहटी बेल और इन्द्र जौ इनसब को कांजी और गोमूत्र के साथ

जो वस्ति दीजाती है उसको दोपहर कहते हैं मालकंगनी मुलहठी नागरमोथा और रसौत इनसब को दूध के साथ मिलाकर जो वस्ति दीजाती है उसको शमन वस्ति कहते हैं ॥ १६२ ॥

त्रिफलाक्काथगोमूत्रक्षौद्रक्षारसमायुताः॥ऊषकादिप्रतीवापैवस्तयोःलेखनाःस्मृताः। ऊषकादिप्रतीवापाः । ऊषकादिगणविशेषेणचूर्णप्रक्षेपाः ॥ इतिलेखनवस्तयः ॥ १६३

त्रिफलाकाकाढा गोमूत्र सहत और जवाखारके साथ ऊषकादि गणका चूर्ण मिलाकर जो वस्ति दीजाती है उसको लेखनवस्ति कहतेहैं इति लेखनवस्ति ॥ १६३ ॥

बृंहणद्रव्यनिष्क्काथैः कल्कैर्मधुरकैर्युताः ॥ सर्पिर्मांसरसोपेतावस्तयोबृंहणाःस्मृताः ॥ इतिबृंहणवस्तयः ॥ १६४ ॥

बृंहण [धातुपोषक] औषधियों के क्वाथ और जीवनीय गणके कल्कके साथ घी और मांसकारस मिलाकर जो वास्त दीजातीहै उसको बृंहणवस्ति कहते हैं इतिबृंहणवस्ति ॥ १६४ ॥

बदर्य्यैरावतीशेलुशाल्मली पुष्पजांकुराः ॥ ऐरावती । नारङ्गी । शेलुः । बहुआर । क्षीरसिद्धाःक्षौद्रयुक्तानाम्नापिच्छिलसंज्ञिताः । अजोरभ्रेणरुधिरैर्युक्तादेयाविचक्षणैः ॥ अजइछागः । उरभ्रोमेषः॥एणःकृष्णमृगः । मात्रापिच्छिलवस्तीनांपलैर्द्वादशभिर्मता ॥ इतिपिच्छिलवस्तयः ॥ १६५ ॥

बेर नारंगी बहुआर सेमर के फूलके अंकुर इन संपूर्ण वस्तुओं को दूधके साथ परिपाक करके सहत और रुधिरके साथजो वस्तु दीजातीहै उसको पिच्छिल वस्ति कहतेहैं बकरा मेढा और काले मृगकारुधिर वस्तियोंमें युक्त करना चाहिये पिच्छिल वस्तिकी मात्रा बारह पलकी होती है इति पिच्छिलवस्ति ॥ १६५ ॥

दत्त्वादौसैन्धवस्याक्षमधुनःप्रसृतिद्वयम् । विनिर्म्मथ्यततोदद्यात्स्नेहस्यप्रसृतित्रयम् ॥ एकीभूतेततःस्नेहेकल्कस्यप्रसृतिंक्षिपेत् । संमूर्च्छितेकषायन्तुचतुःप्रसृतिसम्मितम् ॥ गृहणीयाच्चतदावायमन्तेद्विप्रसृतोन्मितम् । क्षिप्त्वाविमथ्यदद्याच्चनिरूहंकुशलोभिषक् ॥एवंप्रकल्पितोवस्तिर्द्वादशप्रसृतिर्भवेत्।वातेचतुष्पलंक्षौद्रंदद्यात्स्नेहस्यषट्पलम्॥ पित्तेचतुष्पलंक्षौद्रंस्नेहंदद्यात्पलत्रयम्।कफेतुषट्पलंक्षौद्रंक्षिपेत्स्नेहंचतुष्पलम् १६६ ॥

पहले एकतोला सेंधानोन सोलह तोले सहत एकमें मिलाकर चौबीस तोलेवी आठतोलेकल्क की औषधि बत्तीसतोले क्वाथ और सोलह तोले उसमें छोड़ने की औषधि यह संपूर्ण बस्तु एकमें मिलाकर मथले फिरइसीसे निरूह वस्ति लेनी चाहिये इसकाप्रमाण चौबीस पलका है बातरोगमें सोलह तोले सहत और चौबीस तोले स्नेह पित्तरोगमें सोलह तोलेसहत और बारहतोले स्नेह और कफके रोगोंमें चौबीस तोलेसहत और सोलह तोले स्नेहके द्वारा निरूह वस्ति देनी चाहिये इति निरूहमात्रा ॥ १६६ ॥

एरण्डक्काथतुल्यांशंमधुतैलंपलाष्टकम् । शतपुष्पापलार्द्धेनसैन्धवार्द्धेनसंयुतम् ॥ मधुतैलकसंज्ञोऽयंवस्तिर्दारुविलोडितः । मेदोगुल्मकृमिप्लीहमलोदावर्तनाशनः ॥ बलवर्णकरश्चैववृष्योदीपनबृंहणः । मधुतैलकवस्तिः ॥ १६७ ॥

रेड़ी का क्वाथ बत्तीसतोले सहत और तेलमिला हुआ बत्तीस तोले सौंफ दो तोले और सेंधानोन दोतोले इनसब वस्तुओं को मिलाकर किसी काष्ट के टुकड़े से खूबचलावे इसरीति से जो वस्तिदीजाती है उसको मधुतैलक कहते हैं इससे मेद गुल्म कृमि प्लीहा मल तथा उदावर्त्त का नाश बल तथा वर्णकी वृद्धि अग्नि की दीप्ति और वीर्य तथा धातुओं की पुष्टता होती है इति मधुतैलक वस्ति १६७॥

क्षौद्राज्यक्षीरंतैलानांप्रसृतंप्रसृतंभवेत्। हवुषासैन्धवाक्षांशोवस्तिःस्याद्यापनःपरः॥
इतिपाचनसारकःयापनवस्तिः॥ १६८॥

सहत घी और दूध आठ २ तोले और हाऊ वेर तथा सेंधानोन एक २ तोले इनसम्पूर्णवस्तुओंसे जो वस्ति दीजाती है उसको यापन कहते हैं इति यापन वस्ति॥ १६८॥

एरण्डमूलनिष्क्काथोमधुतैलंससैन्धवम्। एषयुक्तरथोवस्तिःसवचापिप्पलीफलः॥
इतियुक्तरथोवस्तिः॥ १६९॥

रेड़ीका क्वाथ सहत तेल सेंधानोन वच और पीपल इनसबको मिलाकर जो वस्ति दीजाती है उसको युक्तरथकहते हैं इति युक्तरथ वस्ति॥ १६९॥

पञ्चमूलस्यनिष्काथैस्तैलंमागधिकामधुससैन्धवःसयाष्ट्यङ्गःसिद्धवस्तिरितिस्मृतः॥
इतिसिद्धवस्तिः॥ १७०॥

पंचमूल का काढ़ा तेल पीपल सहत सेंधानोन और मुलहठी इनसबकी वस्ति को सिद्धवस्ति कहते हैं इति सिद्धवस्ति॥ १७०॥

स्नानमुष्णोदकैःकुर्य्याद्दिवास्वप्नमजीर्णताम्।वर्जयेदपरंसर्वमाचरेत्स्नेहवस्तिवत्१७१॥

निरूह वस्ति के उपरान्त उष्ण जल से स्नानकरे दिनमें न सोवे अजीर्णकारी वस्तु न खाय और संपूर्ण कार्य स्नेह वस्ति के समान करे॥ १७१॥

अथोत्तरवस्तिविधिः॥

अतःपरम्प्रवक्ष्यामिवास्तिमुत्तरसंज्ञितम्। निरुहादुत्तरोयस्मात्तस्मादुत्तरसंज्ञकः॥
द्वादशाङ्गुलकंनेत्रंमध्येचकृतकर्णिकम्। मालतीपुष्पवृन्ताभञ्छिद्रंसर्षपनिर्गमम्॥पञ्च
विंशतिवर्षाणामधोमात्राद्विकार्षिकी।तदूर्ध्वम्पलमात्राचस्नेहस्योक्ताभिषग्वरैः॥१७२॥

उत्तर वस्ति की विधि॥

निरूह वस्ति के उपरान्त यहदीजाती है इसी से इसको उत्तरवस्ति कहतेहैं इसकी विधि अब कहतेहैं उत्तर वस्ति की नली बारह अंगुल की लंबी होती है उसके बीचमें गौ के कानके समान एक कर्णिका होतीहै यह चमेली के फूल की डंडी के समान बनीहुई होती है और इसके अग्र भाग में सरसों निकलने के लायक एक छिद्र होताहै पच्चीस बर्ष से कम अवस्थावाले को दो तोले की मात्रा और इससे अधिक अवस्था वाले को आठ तोले स्नेह की मात्रा श्रेष्ठ है॥ १७२॥

अथस्थापनशुद्धस्यतृप्तस्यस्नानभोजनैः। स्थितस्यजानुमात्रेचविष्टेस्निग्धशलाकया॥
स्निग्धयामेढ्रमार्गेतुततोनेत्रन्नियोजयेत्। शनैःशनैर्घृताभ्यक्तंमेढ्रमन्ध्राङ्गुलानिषट्॥
ततोऽवपीड़येद्वस्तिंशनैर्नेत्रंविनिर्हरेत्॥ततःप्रत्यागतेस्नेहेस्नेहवस्तिक्रमोहितः॥१७३॥

रोगीको आस्थापनसे शुद्धकरके स्नान भोजनकराके घुटनोंके बलखड़ा करे फिर स्नेहयुक्त शलाका

के द्वारा अच्छे प्रकारसे देखकर स्नेहयुक्तनली को धीरे २ लिंगमें प्रवेशकरे छः अंगुल तक प्रवेश करके वस्ति को दबावे फिर धीरे २ नलीको निकालले फिर स्नेह के बाहर निकल आनेपर स्नेह वस्ति के समान विधिकरे ॥ १७३ ॥

स्त्रीणांकनिष्ठिकास्थूलन्नेत्रंकुर्य्याद्दशांगुलम् । मुद्गप्रवेशयोज्यञ्चयोन्यन्तश्चतुरंगुलम् ॥ द्व्यंगुलंमूत्रमार्गेचसूक्ष्मनेत्रंवियोजयेत् । मूत्रकृच्छ्रविकारेषुबालानांत्वेकमंगुलम् ॥ शनैर्निष्कम्पमाधेयंसूक्ष्मंनेत्रंविचक्षणैः। मालतीपुष्पवृन्ताभन्नेत्रमित्युदितंपुनः । सूक्ष्मशब्दाभिधानेबालानांततोऽपिनेत्रस्यसूक्ष्मताबोधनार्थं । योनिमार्गेषुनारीणांस्नेह मात्राद्विपालिकी ॥ मूत्रमार्गेपलोन्मानंबालानांचद्विकार्षिकी । उत्तानायैस्त्रियैदद्यादूर्द्ध जान्वैविचक्षणः । अप्रत्यागच्छतिभिषग्वस्तावुत्तरसंज्ञिते ॥ भूयोवस्तिविदध्याच्चसंयुक्तं शोधनैर्गुणैः । फलवर्त्तिंविदध्याद्वायोनिमार्गेदृढ़ाम्भिषक् ॥ सूत्रोविनिर्मितांस्निग्धांशोधन द्रव्यसंयुताम् । दह्यमानेतथावस्तौदद्याद्वास्तिंविशारदः ॥ क्षीरवृक्षकषायेणपयसाशीतले नवा । दह्यमानेवस्तौ । यस्मिन्स्थानेवस्तिर्दत्तस्तस्मिन्दह्यमाने ॥ १७४ ॥

स्त्रियोंके लिये दश अंगुल लंबी और कनिष्ठिकाके समान मोटी नली बनानी चाहिये और उसका छेद एक मूंग जाने के समान होना चाहिये योनि के भीतर चार अंगुल और जिस छिद्र से मूत्र निकलता है उस में दो अंगुल नली छोड़नी चाहिये लड़कियों के मूत्रकृच्छ्र रोग में एक अंगुल प्रमाण की पतली नली धीरे२ इस प्रकार से छोडनी चाहिये कि वह किसी प्रकार से हिल ने न पावे नली की आकृति चमेली के फूल की डंडी के समान होनी चाहिये स्त्रियोंके योनि मार्ग में आठ तोले की स्नेह मात्रा मूत्र मार्ग में चारतोले की मात्रा और लड कियों के लिये दो तोले की मात्रा होनी चाहिये स्त्री को चित्त सुलाकर और दोनों घुटने उठा कर वस्ति देनी चाहिये जो उत्तर वस्ति फिर बाहर न निकल आवे तो संशोधक औषध मिलाकर फिर वस्ति दे अथवा योनि मार्ग में सूत्रसे बनी हुई स्निग्ध शोधन औषधि युक्त दृढ फल वर्ति रक्खे जो वस्ति लेनेसे वस्ति के स्थान में दाह उत्पन्न हो तो क्षीर वृक्षों के काढ़ेसे अथवा शीतल जल से वस्ति दे ॥ १७४ ॥

वस्तिशुक्ररुजः पुसांस्त्रीणामार्त्तवजारुजः।हन्यादुत्तरवस्तिस्तुनोचितोमेहनात्क्वचित् ॥ सम्यग्दत्तस्यलिङ्गानिव्यापदःक्रममेवच।वस्तेरुत्तरसंज्ञस्यसमानःस्नेहवस्तिना॥१७५॥

वस्ति देनेसे पुरुषोंके वीर्य दोष और स्त्रियों के रज दोष नष्ट होते हैं परन्तु प्रमेह वालों को उत्तर वस्ति कभी नहीं देनी चाहिये उत्तर वस्ति के अच्छे प्रकार देने के तथा उसके बिगडने के चिह्न और क्रम संपूर्ण स्नेह वस्ति के समान होते हैं ॥ १७५ ॥

अथ फलवर्तिविधिः ॥

घृताभ्यक्तेगुदेक्षिप्त्वाश्लक्ष्णास्वांगुष्टसन्निभा । मलप्रवर्तिनीवर्त्तिःफलवर्त्तिश्चसा स्मृता ॥ १७६ ॥

फलवर्तिकी विधि ॥

गुदा में घृतलगाकर रोगी के अंगूठेके बराबर आकारवाली चिकनी और मलको निकालने वाली जोबत्ती रक्खी जाती है उसको फलवर्ति कहते हैं ॥ १७६ ॥

अथ नस्यग्रहणविधिः ॥

नस्यंतत्कथ्यतेधीरैर्नासाग्राह्यंयदौषधम् । नावनंनस्यकर्मेतिनस्यनामद्वयंमतम् ॥ न स्यकर्मनासिकायांकर्मचिकित्सायेनतत्नस्यकर्म । नस्यभेदोद्विधाप्रोक्तोरेचनंस्नेहनंत था । रेचनंकर्षणंप्रोक्तंस्नेहनंबृंहणंमतम् ॥ कफपित्तानिलध्वंसीपूर्वमध्यापराह्णके । दिन स्यगृह्यतेनस्यंरात्रावप्युत्कटेगदे ॥ दिनस्य । त्रिधाविभक्तस्य । पूर्वभागादौ ॥ १७७ ॥

नासलेने की विधि ॥

नासिका के द्वारा जो औषध ग्रहण की जाती है उसको नस्य नावन और नस्य कहते हैं नस्य दोप्रकार की होती है रेचन और स्नेहन इनमेंसे रेचन घटाने वाली और स्नेहन बढ़ाने वालीहोती है कफ पित्त तथा वायु के नास करने के लिये क्रमसे पूर्वाह्न मध्याह्न और पराह्न में नास लेनी चाहिये और बड़ी कठिन व्याधि में रात्रिकेसमय भी नासलीजाती है ॥ १७७ ॥

नस्यन्त्यजेद्भोजनान्तेदुर्दिनेचोपतापितः । तथानवप्रतिश्यायीगर्भिणीज्वरदूषितः ॥ अजीर्णीदत्तवस्तिश्चपीतस्नेहोदकासवः । क्रुद्धःशोकाभिभूतश्चतृष्णार्त्तोवृद्धबालकौ ॥ वेगावरोधीश्रान्तश्चस्नातुकामश्चवर्ज्जयेत् । नस्यमितिशेषः ॥ १७८ ॥

भोजन के अन्त में मेघोंसे छाये हुये दिनमें तर्पण क्रिया में नयेजुकाममें गर्भ में ज्वरमें अजीर्ण में वस्ति क्रिया के उपरांत स्नेह जल अथवा मदिरा पीकर क्रोधमें शोक में तृषा में वृद्धतामें लड़क पन में वेगोंके रोकने में थकावट में और स्नान करने के समय नस्य का त्याग करे ॥ १७८ ॥

अष्टवर्षस्यबालस्यनस्यकर्मसमाचरेत् । अशीतिवर्षादूर्ध्वञ्चनावनंनैवदीयते॥१७९॥

अथवैरेचनंनस्यंग्राह्यंतैलेसुतीक्ष्णकैः । तीक्ष्णैर्भेषजसिद्धैर्वास्नेहैःक्वाथैःरसैस्तथा ॥ नासिकारन्ध्रयोरष्टौषट्चत्वारश्चबिन्दवः । प्रत्येकंरेचनंयोग्यंमुख्यमध्याल्पमात्रया ॥ न स्यकर्माणिदातव्यंशाणैकंतीक्ष्णमौषधम् । हिङ्गुस्याद्यवमात्रन्तुमौषकंसैन्धवंमतम् ॥ क्षी रञ्चैवाष्टशाणंस्यात्पानीयञ्चत्रिकार्षिकम्।कार्षिकंमधुरद्रव्यंनस्यकर्म्मणियोजयेत् १८०

आठवर्ष कीअवस्था के भीतर और अस्सी वर्ष के उपरांत नासन लेनी चाहिये ॥ १७९ ॥ रेचन नस्य लेने में अत्यन्त तीक्ष्ण तैल अथवा तीक्ष्ण औषधियों से बनेहुये स्नेह क्वाथ और रसके द्वारा नास लेनी चाहिये नासिका के छिद्रों में उत्तम मध्यम और हीनमात्रा के अनुसार क्रम से आठ बिन्दु छः बिन्दु और चार बिन्दु विरेचन हुलास लेनी चाहिये नस्य कर्म में तीक्ष्ण औषध एक शाण तीन मासे हींग एक जौ सेंधानोन छः रत्ती दूध दो तोले पानी तीन तोले और मधुर पदार्थ एक तोलेभर ग्रहण करना चाहिये ॥ १८० ॥

अवपीडःप्रधमनंद्वौभेदावपरौस्मृतौ । शिरोविरेचनस्यार्थंतौतुदेयौयथायथम् ॥ क ल्कीकृतादौषधाद्यःपीड़ितोनिःसृतोरसः । सोऽवपीड़ःसमुद्दिष्टस्तीक्ष्णद्रव्यसमुद्भवः ॥ ष ड़ंगुलाद्विवक्त्रायानाड़ीचूर्णन्तयाधमेत् । तीक्ष्णंकोलमितंवक्त्रवातैःप्रधमनंहितम् ॥ ऊर्ध्व जत्रुगतेरोगेकफजेस्वरसक्षये । अरोचकेप्रतिश्यायेशिरःशूलेचपीनसे ॥ शोफापस्मारकु ष्ठेषुनस्यंवैरेचनंहितम् । भीरुस्त्रीकृशबालानांनस्यंस्नेहेनशस्यते ॥ गलरोगेसन्निपाते

निद्रायांविषमज्वरे । मनोविकारेकृमिषुपूज्यतेचावपीडनम्॥ अत्यंतोत्कटदोषेषुविसंज्ञेषु चदीयते ।चूर्णंप्रधमनंधीरैस्तद्वितीक्ष्णतरंयतः (नस्यंवैरेचनंयथा) नस्यंस्याद्गुड़शुण्ठी भ्यांपिप्पलीसैन्धवेनवा । जलपिष्टेनकर्णाक्षिनासामूर्द्धभवागदाः ॥ मन्याहनुगलोद्भूता नश्यन्तिभुजपृष्ठजाः ॥ १८१ ॥

नस्यके और भी दो भेदहैं अवपीड़ और प्रधमन यह दोनों शिर के विरेचनके लिये देनीचाहिये तीक्ष्ण औषधियों को कूटकर उनका रस निकालकर जो नास लीजाती है उसको अवपीड कहते हैं छः अंगुल की लंबी दोनों ओर मुखवाली भीतरसे पोली नली में छः मासे तीक्ष्ण औषधियोंकाचूर्ण भरकर फूंकने से नासिका के छिद्र में चूर्ण के प्रवेश कराने को प्रधमन कहते हैं गले की हँसली के ऊपर के रोगों में कफ जनित स्वरभंग में अरुचि प्रतिश्याय (जुकाम) शिरकी पीड़ा पीनस सूजन मृगी और कुष्ठमें रेचन नास हितकारी है भयभीत स्त्री कृश और बालकों को स्नेहननास हितकारी है गले के रोग सन्निपात निद्रा विषमज्वर मनके बिकार और कृमि रोगों में अवपीड़ नास श्रेष्ठ है अत्यन्त प्रबल दोषों में और संज्ञारहितहोने में बुद्धिमान् लोग प्रधमन नासदेतेहैं क्योंकि यहअत्यन्त तीक्ष्ण है गुड़ और सोंठ समभाग मिलाकर अथवा पीपल और सेंधा नोंन यह दोनों समभाग जल में पीस कर इनके द्वारा नासलेने से नासिका गलेके पीछे की नस मस्तक जावड़े गला और कान तथा नेत्र के ऊपरके रोग नष्टहोतेहैं और हाथ तथा पीठके रोगभी नाशको प्राप्तहोतेहैं ॥ १८१ ॥

मधूकसारकृष्णाभ्यांवचामरिचसैन्धवैः ॥ नस्यंकोष्णाम्भसापिष्टंदद्यात्संज्ञाप्रबोध नम्। अपस्मारेतथोन्मादेसन्निपातेऽपतन्त्रके ॥ सैन्धवंश्वेतमरिचंसर्षपाकुष्ठमेवच । वस्तमूत्रेणसंपिष्टंनस्यन्तन्द्रानिवारणम् (श्वेतमरिचंसहिजनकाबीजं) रोहितस्यचपित्ते नभावितंमरिचंवचा । कट्फलंचेतितच्चूर्णंदेयंप्रधमनंबुधैः ॥ १८२ ॥

महुवे का गाभा पीपल बच मिर्च और सेंधानोंन इनसम्पूर्ण औषधियों को समभाग लेकर गरम जलसे पीसले फिर इसकी नास लेनेसे जड़ता दूर होकर संज्ञा आजातीहै मिरगी उन्माद सन्निपात औ अपतन्त्रक रोग मेंभी ये नासलेनी चाहिये सेंधानोंन सहंजनके बीज सरसों और कूट इनसबको बकरे के मूत्रमें पीसकर नासलेने से तन्द्रा का नाश होताहै रोहू मछलीके पित्तसे भिर्च बच और कायफल के चूर्णको भावना देकर इस्केद्वारा प्रधमन नासलेनेसे तन्द्राका नाशहोताहै१८२॥

अथबृंहणनस्यस्यकल्पनाकथ्यतेऽधुना । मर्शश्चप्रतिमर्शश्चद्वौभेदौस्नेहनेमतौ ॥ मर्शस्यतर्पणीमात्रामुख्याशाणैःस्मृताऽष्टभिः। मध्यमातुचतुःशाणैर्हीनाशाणमितामता ॥ एकैकस्मिंस्तुमात्रेयंदेयानासापुटेबुधैः । मर्शस्यद्वित्रिवेलंवावीक्ष्यदोषबलाबलम् ॥ एकांतरंद्व्यन्तरंवानस्यंदद्याद्विचक्षणः (एकांतरंएकंदिनमन्तरंनस्यशून्ययत्रतदेकान्तरम्) त्र्यहंपञ्चाहमथवासप्ताहंवासुयन्त्रितः । अथवात्र्यहम्। त्रीएयहानियावत । प्रतिदिनं एवंपञ्चाहंसप्ताहञ्च । सुयन्त्रितः । सावधानः । यथाऽच्छिद्रंनभवति । मर्मशिरोविरेके चव्यापदोविविधाःस्मृताः ॥ दोषोत्क्लेशात्क्षयाच्चैवविज्ञेयास्तायथाक्रमम् ॥ दोषोत्क्लेश निमित्तासुयुञ्ज्याद्वमनशोधनम् (वमनरूपं शोधनम्) अथक्षयनिमित्तासु यथास्वंबृंह णंहितम् ॥ १८३ ॥

अब बृंहण नस्य का विधान कहा जाता है। इसके मर्श औ प्रतिमर्श दोभेद हैं मर्शकी उत्तममात्रा दो तोलेकी मध्यम मात्रा एकतोले की और हीनमात्रा तीनमाशे की होती है नासिका के एक २ छिद्र में इतनी २ मात्रा देनी चाहिये दोषके बलाबल को देखकर दिनमें दोबार तीनबार अथवा एक दिनका या दो दिनका अन्तर दे कर तीनदिन पांचदिन अथवा सातदिन तक मर्श नस्यका ग्रहण करै मर्श औ विरेचन नस्यके प्रयोगसे क्रम पूर्व्वक दोषोंकीवृद्धि और क्षयके द्वारा अनेक उपद्रव होसक्ते हैं इसलिये दोषोंकी वृद्धिसे भये उपद्रवों में वमन रूप शोधन और क्षयसे भयेउपद्रवोंमें क्षयके अनुसार बृंहणक्रिया करनी चाहिये ॥ १८३ ॥

शिरोनासाक्षिरोगेषुसूर्य्यावर्त्तार्द्धभेदके ॥ दंतरोगेऽबलेहीनेमन्यावाङ्मंशसेगदे। मुखशोषेकर्णनादेवातपित्तगदेतथा ॥ अकालपलितेचैवकेशश्मश्रुप्रपातने। पूज्यतेबृंहणंनस्यंस्नेहैर्वामधुरद्रवैः ॥ १८४ ॥

शिरनासिका तथा नेत्र के रोगों में सूर्य्यावर्त्तमें अर्द्धाव भेदकमें दन्तरोग बलकी क्षीणता गलेके पीछे की नसके रोग भुजाओं के रोग कन्धेके रोग मुखका सूखना तथा कानमें शब्द उठने में और बात पित्त रोग में स्नेह अथवा मधुर पतली बस्तुओंसे बृंहणनस्य देना चाहिये और विनासमय के बालोंका पकना और बालोंका अथवा दाढ़ीका गिरना इन रोगोंमें भी नस्य देनी चाहिये ॥ १८४ ॥

बृंहणंनस्यंयथा ॥

सशर्करपयःपिष्टंभृष्टमाज्येनकुंकुमम्। नस्यप्रयोगन्नीहन्याद्वातरक्तभवारुजः ॥ भ्रूशङ्खाक्षिशिरःकर्णसूर्य्यावर्त्तार्द्धभेदकान्। नस्यंस्यादणुतैलेनतथानारायणेनवा ॥ माषादिनावासार्पिर्भिस्तद्वेषजसाधितैः (अणुतैलमुक्तंसुश्रुतेनतद्यथा) तिलपरिपीड़नोपकरणकाष्ठान्याहृत्यैरनल्पकालंतिलाः परिपीड़ितास्तान्यणूनिखण्डशः कल्पयित्वाउलूखलेसंकुट्यः कटाहेपानीयेनाप्लाव्यक्काथयेत्ततस्तैलं निःसरतितत्तैलंहस्तेनजलान्निःसार्य्य वातघ्नौषधकल्केनपचेत्। तदणुतैलमितितद्वातरोगहरम् ॥ तैलकफेस्याद्वातेचकेवलेपवनेतथा। दद्यान्नस्यंसदापित्तेसर्पिर्मज्जानमेवच ॥ १८५ ॥

बृंहणनस्य ॥

केसरको घीमें भूनकर शक्कर और दूधके साथ पीसलेय इसके नस्य लेने से वात रक्त जनित रोग सूर्य्यावर्त अर्द्धाव भेदक और भौंह शिर की हड्डी नेत्र शिर और कानके रोग नष्टहोते हैं अणु तैल नारायण तैल अथवा उर्द आदि यथा योग्य औषधियोंसे बनाये भये घीके द्वारानस्य लेनेको बृंहणनस्य कहते हैं (अणुतैल की सुश्रुत में कहीहुई विधि) जिनकाष्ठों से तिल पेरेजातेहों उनको लाकर छोटे २ टुकड़े करके ओखलीमें कूटे फिर कढ़ाईमें पानीकेसाथ औटानेसे काठमें लगाहुआ तेल निकलता है इसतेलको ठंढेहोनेपर हाथकेद्वारा जल से निकालकर बातनाशक औषधियों के कल्ककेसाथ पाककरे इसको अणुतैल कहतेहैं यह बातनाशकहोताहै कफ बात जनितरोगोंमें तेलकी नास केवल बातरोगोंमें चरबीकीनास और पित्तकेरोगोंमें घी तथामज्जाकी नासलेनीचाहिये १८५ ॥

माषात्मगुप्तरास्नाभिर्बलारूवुकरौहिषैः। कृतोऽश्वगंधयाक्काथोहिंगुसैंधवसंयुतः ॥ कोष्णोनस्यप्रयोगेणपक्षाघातंसकम्पनम्।जयेदर्दितवातञ्चमन्यास्तम्भापबाहुकौ १८६

उड़द किवांच रासना बरियारा रेड़ी गन्धतृण और असगन्ध इनसंपूर्ण वस्तुओंका काढ़ाकरके हींग और सेंधानोंन मिलावे फिर कुछ उष्णता बाकी रहनेपर इसकी नासले इससे पक्षाघात कम्प अर्दित बात गलेकेपीछेकी नसका जकड़ना और अपबाहुकरोगका नाशहोताहै ॥ १८६ ॥

प्रतिमर्शस्यमात्रातुद्वित्रिबिन्दुमितामता। प्रत्येकशोनासिकायास्नेहनेऽतिविनिश्चितम्। स्नेहग्रंथिद्वयंयावन्निमग्नाचोद्धृतातातः ॥ तर्ज्जनीयंस्त्रवेद्बिन्दुसामात्राबिन्दुसंज्ञिता। एवंविधैर्बिंदुसंज्ञैरष्टाभिःशाणउच्यते॥ सदेयोमर्शनस्येषुप्रतिमर्शोद्विबिंदुकः १८७॥

प्रतिमर्शकी मात्रा नासिकाके दोनों छिद्रों में दो अथवा तीन बिन्दु देनी चाहिये तर्जनी उंगली को दोवोरुएतक स्नेह में डुबोकर निकालने से जो बूंद टपकतीहै उसीकी यहां बिंदुसंज्ञाहै इन आठ बिंदुओंका एक शाण होताहै यही एक शाण मर्शनस्यकी मात्रा है और प्रतिमर्शनस्य की मात्रा दो बिंदुकी होती है ॥ १८७ ॥

समयाःप्रतिमर्शस्यबुधैःप्रोक्ताश्चतुर्दश । प्रभातेदन्तकाष्ठान्तेगृहान्निर्गमनेतथा ॥ व्यायामाध्वव्यवायान्तेविण्मूत्रान्तेऽञ्जनेकृते।कवलान्तेभोजनान्तेदिवास्वप्नोत्थितेतथा॥ वमनान्तेतथासायंप्रतिमर्शःप्रयुज्यते । ईषदुच्छिङ्कनात्स्नेहोयथावक्त्रंप्रपद्यते ॥ नस्ये निषिक्तन्तंविन्द्यात्प्रतिमर्शःप्रमाणतः । (मात्रायुक्तम्) उच्छिष्टन्नपिवेच्चैतन्निष्ठीवेन्मुख मागतम् (उच्छिष्टम् । नस्यावशिष्टं) क्षीणेतृष्णास्यशोषार्त्तेबालेवृद्धेचपूज्यते । प्रति मर्शान्नजायन्तेरोगाश्चैवोर्द्धजत्रुजाः ॥ बलीपलितनाशश्चबलमिन्द्रियजंभवेत् १८८ ॥

पंडितलोगों ने प्रतिमर्श नस्य के चौदह समय कहे हैं प्रातःकाल दन्तधावन के पीछे घरसे बाहर निकलने के समय व्यायामके पीछे मार्ग पर्य्यटनके पीछे मैथुनके उपरांत मलमूत्र का त्यागकरके अंजन लगाकर कवलके उपरान्त भोजन करके दिनमें सोकर बमनके उपरान्त और सायंकाल में जितना स्नेह सूंघकरछींकलेने से मुखमें आजाय वही प्रतिमर्शका प्रमाणहै जो स्नेह नासिकासेमुख में आजाय उसको थूकदे पिये नहीं क्षीणता तृषा तथा मुखके सूखनेसे व्याकुल बालक और वृद्धको प्रतिमर्श उत्तम होता है और इस्से हँसलीके ऊपरके रोग झुर्री बालोंका पकना इन रोगोंका नाश होताहै और इन्द्रियों में बल होताहै ॥ १८८ ॥

विभीतंनिम्बगम्भारीशिवाशेलुश्चकाकिनी।एकैकतैलनस्येनपलितंनश्यतिध्रुवम् १८९

बहेड़ा नींब गंभारी हड़ बहुआर और कौआटोंटी इन में से किसी का तेल बनाकर नास लेनेसे बालोंका पकना नष्ट होताहै ॥ १८९ ॥

अथनस्यविधिंवक्ष्येनस्यग्रहणहेतवे। देशेवातरजोमुक्तेकृतदन्तनिघर्षणम्॥ विशुद्धं धूमपानेनखिन्नभालगलंतथा । उत्तानशायिनंकिञ्चित्प्रलम्बशिरसंनरम् ॥ आस्तीर्णह स्तपादञ्चवस्त्राच्छादितलोचनम् । समुन्नामितनासाग्रंवैद्योनस्तेनयोजयेत् ॥ कोष्णेना च्छिन्नधारेणहेमतारादिशुक्तिभिः । शुक्त्यावायंत्रयुक्त्यावाश्लोतैर्वानस्यमाचरेत् (श्लो तैर्वस्त्रैस्तदुपलक्षितैस्तूलैरपि) नस्येष्वासिच्यमानेषुशिरोनैवप्रकम्पयेत् । नकुप्येन्नप्र भाषेतनोच्छिङ्केन्नहसेत्तथा ॥ एतैर्हिविहितःस्नेहोनैवान्तःसम्प्रपद्यते । ततःकासप्रति

श्यायशिरोऽक्षिगदसम्भवः॥ शृंगाटकमभिव्याप्यस्थापयेन्नगिलेद्द्रवम्। पञ्चसप्तदशैवा स्यमात्रास्नेहस्यधारणे॥ उपविश्याथनिष्ठीवेन्नासावक्त्रागतंद्रवम्। वामदक्षिणपार्श्वा भ्यांनिष्ठीवेत्संमुखन्नहि॥ नीतेनस्येमनस्तापंरजःक्रोधञ्चसन्त्यजेत्। शयीतनिद्रान्त्यक्त्वा चप्रोत्तानोवाक्शतन्नरः॥ तथाशिरोविरेकान्तेधूमोवाकवलोहिता। नस्येक्षीण्युपदिष्टा निलक्षणानिप्रयोगतः॥ १९० ॥

नासलेने की बिधि ॥

बायु और धूलसे रहित स्थान में दन्तधावन और धूम्रपान कराकर मस्तकपर पसीना आजाने पर चित्त सुलाकर हाथ पैर फैलावे और शिरको कुछ लंबा रक्खे फिर किसी वस्त्र से नेत्रमूंदकर नासिका के अग्र भागको कुछ उठाकर नासदेवे सुवर्ण और चाँदी आदि से बनी हुई सीपी अथवा साधारण सीपी या बस्त्र अथवा रुईके द्वारा कुछ उष्ण नासकी औषधिकी धार लगातार छोड़े और यन्त्रके द्वाराभी नास दीजातीहै नासलेनेके उपरान्त शिरका कंपाना क्रोध बोलना छींकना और हंसी का त्यागकरे क्योंकि शिरके कंपाने आदिसे छोड़ाहुआ स्नेह भीतर नहीं आता और खांसी जुकाम शिरके रोग तथा नेत्रके रोग उत्पन्न होते हैं शृंगाटक पर्य्यन्त स्नेहके पहुंचजाने पर इसको निगले नहीं पांच सात अथवा दशमात्रा तक स्नेहको धारण करे नासिका केद्वारा मुखमें आये हुये गिले पदार्थको बैठकर बाईं अथवा दाहिनी ओरको थूंकदे परन्तु सन्मुख न थूंके नस्यको त्यागकरके मन-का ताप रजोगुण के कार्य्य और क्रोधको त्याग करदे और सौवाक्य के उच्चारण में जितना समय लगताहै उतनी देरतक चित्त लेटेपरन्तु सोवेनहीं शिरके विरेचनके उपरान्त धूम अथवा कवलका ग्रहण करना हितहै शास्त्रज्ञ पंडितों ने प्रयोगके अनुसार शुद्धिहीन और अतियोग यह तीन लक्षण नस्य के कहेहैं॥ १९० ॥

शुद्धहीनातियोगाहिविज्ञेयाशास्त्रचिन्तकैः। लाघवंमलसंशुद्धिःस्रोतसांव्याधिसंक्ष यः॥ विनेन्द्रियप्रसादश्चशिरसःशुद्धिलक्षणम्। कण्डूप्रदेहोगुरुतास्रोतसांकफसंस्रवः॥ मूर्द्धिहीनविशुद्धेस्तुलक्षणंपरिकीर्तितम् (हीनविशुद्धेर्हीननस्येनविशुद्धेः) मस्तुलुङ्गाग मोवातवृद्धिरिन्द्रियविभ्रमः॥ शून्यताशिरसश्चापिमूर्ध्निगाढंविरेचिते॥मस्तुलुङ्गम्।मस्त कान्तःस्नेहःइन्द्रियविभ्रमः। इन्द्रियाणामन्यथाविषयग्रहणः। हीनातिशुद्धेशिरसिकफ वातघ्नमाचरेत्॥ तत्रहीनेननस्येनशुद्धेवातघ्नमाचरेत्।सम्यक्विशुद्धेशिरसिसर्पिर्नस्येन दीयते॥ कफप्रसेकःशिरसोगुरुतेन्द्रियविभ्रमः॥ लक्षणन्तदतिस्निग्धेतत्ररूक्षंप्रदाप येत्॥ भोजयेच्चानभिष्यन्दिनस्येवातिकमादिशेत्॥ वातिकम्।वातलमुपदिशेत्। इति पञ्चकर्माणि॥ १९१ ॥

इन में से हलकापन स्रोतोंके मलकी शुद्धता रोगकानाश और मन तथा इन्द्रियों की प्रसन्नता यह शिरके शुद्ध होनेके लक्षणहैं खुजली भारीपन स्रोतों में कफका बहना और ग्लानि यह शिरके अच्छे प्रकार न शुद्धहोनेके लक्षणहैं मस्तक के भीतरसे स्नेहका निकलना बायुकी वृद्धि इन्द्रियोंका भ्रम और मस्तक की शून्यता यह शिरके अधिक विरेचन होनेसे अति योग लक्षण कहलाताहै हीन शुद्धि में कफनाशक और अति योग में वातनाशक क्रिया करनी चाहिये हीननस्यसे शुद्धता होनेपर

वातघ्न क्रिया करे शिरके अच्छेप्रकार शुद्ध होजानेपर नाशमें घी छोडे शिरके अत्यन्त चिकनेहोजाने पर कफका बहना मस्तकका भारीपन और इन्द्रियोंका भ्रम होताहैऐसी अवस्थामें रुक्षक्रियाकरनी चाहिये और अभिष्यन्द रहितभोजन तथाबादी औषधियोंकेद्वारा नासलेनीचाहिये इतिपंचकम्॥१९१॥

अथधूमपानविधिः ॥

धूमस्तुषड्विधःप्रोक्तःशमनोबृंहणस्तथा ॥ रेचनःकासहाचैववामनोव्रणधूमनः ॥ शमनस्यतुपर्य्यायोमध्यःप्रायोगिकस्तथा॥बृंहणस्यचपर्य्यायोस्नेहनोमृदुरेवच। रेचनस्यापिपर्य्यायोशोधनस्तीक्ष्णएवच ॥ १९२ ॥ धूमपान विधि ॥

धूमपान छः प्रकार का है शमन बृंहण रेचन का सघ्न बामन और व्रणधूपन शमनधूम को मध्य तथा प्रायोगिकभी कहतेहैं बृंहण को स्नेहनतथा मृदु कहतेहैं और रेचन धूमको शोधन तथा तीक्ष्ण भी कहतेहैं ॥ १९२ ॥

अधूमार्हाश्चखल्वेतेश्रांतोभीतश्चदुःखितः । दत्तवस्तिविरिक्तश्चरात्रौजागरितस्तथा ॥ पिपासितश्चदाहार्त्तस्तालुशोषीतथोदरी । शिरोऽभितापीतिमिरीच्छर्द्यार्ध्मानप्रपीड़ितः ॥ क्षतोरस्कःप्रमेहार्त्तःपाण्डुरोगीचगर्भिणी । रूक्षःक्षीणोऽभ्यवहृतक्षीरक्षौद्रघृतासवः ॥ भुक्तान्नदधिमत्स्यश्चबालोवृद्धःकृशस्तथा । अकालेचातिपीतश्चधूमःकुर्य्यादुपद्रवान् ॥ तत्रेष्टंसर्पिषःपानंनावनांजनतर्पणम् । सर्पिरिक्षुरसंद्राक्षांपयोवाशर्कराम्बु वा ॥ मधुराम्लैरसैर्वापिवमनायप्रदापयेत् ॥ १९३ ॥

थकाहुआ भीत दुःखी वस्ति अथवा जिसको बिरेचन दियागयाहो रात्रिमें जागाहुआ तृषित दाहयुक्त और तालूका सूखना उदर शिरकेरोग तिमिर छर्दि आध्मान उरक्षत प्रमेह तथा पांडुरोग से युक्त गर्भिणी स्त्री रुक्षतायुक्त क्षीण दूध सहत अथवा आसवपान कियेहुए अन्न दही अथवा मछली खायेहुए बालक वृद्ध और कृश इनसबको धूमपान अयोग्यहै और समयके बिना भी धूमपान करनेसे उपद्रव उत्पन्न होतेहैं उपद्रवों के उत्पन्न होनेपर घृतपान नस्य अंजन तथा संतर्पणक्रिया करनीचाहिये और घी ईखकारस दाख दूध शर्व्वत अथवा मधुर अम्लरस के द्वारा बमनकरे ॥ १९३ ॥

धूमस्तुद्वादशात्वर्षात्गृह्यतेशीतकातनच । कासश्वासप्रतिश्यायान्मन्याहनुशिरोरुजः ॥ वातश्लेष्मविकारांश्चहन्याद्धूमःसुयोजितः । धूमोपयोगात्पुरुषप्रसन्नेन्द्रियवाङ्मनः ॥ दृढ़केशद्विजश्मश्रुःसुगन्धिवदनोभवेत् ॥ १९४ ॥

बारह वर्ष की अवस्थासे लेकर अस्सीवर्ष तक धूमपान कराना चाहिये अच्छे प्रकार धूमपान करनेसे खांसी श्वास जुक़ाम गलेकेपीछे की नसतथा जावडे के रोग शिरकी पीडा और बातकफके रोगशान्तहोतेहैं और इन्द्री वाक्तथा मनकी प्रसन्नता केश दांततथा दाढ़ीकी दृढता और मुखमें सुगन्ध होजाती है ॥ १९४ ॥

धूमनाड़ीभवेत्तत्रत्रिखण्डाचत्रिपर्व्विका । कनिष्ठिकापरीणाहाराजमाषागमान्तरा ॥ (राजमाषागमःममस्तानाड़ी) धूमनाड़ीभवेद्दीर्घाशमनेरोगिणोऽङ्गुलैः । चत्वारिंशन्मितैस्तद्वद्द्वात्रिंशद्भिर्मृदौमता ॥ (मृदौबृंहणे) तीक्ष्णेचतुर्विन्शतिभिःकासघ्नेषोड़

शोन्मितैः । तीक्ष्णेरेचने) दशांगुलैर्वामनीयेतथास्याद्व्रणनाड़िका (तथादशांगुलमिना) कलायमण्डलस्थूलाकुलत्थागमरंध्रिका ॥ १९५ ॥

धूमपीने की नली तीनखंड तथा तीनपोरवाली बनानी चाहिये इसकी मुटाई कनिष्ठा उंगली के समान और छेदबडेउर्द के जाने के लायक होना चाहिये नलीकी लम्बाई शमन धूममें रोगीके चालीस अंगुल बृंहणधूममें बत्तीस अंगुल रेचन धूममें चौबीस अंगुल कासघ्न धूममें सोलह अंगुल और वामनधूममेंदशअंगुल की होनी चाहिये व्रणधूपन धूममें दशअंगुलकी लम्बाईमटर के समान मुटाई और कुलथी के जाने भरेका छेद होना चाहिये ॥ १९५ ॥

अथेषिकांप्रलिम्पेच्चसुश्लक्ष्णांद्वादशांगुलाम् । (इषिकाम्शरकाण्डम्) धूमद्रव्येन कल्केनलेपश्चाष्टाङ्गुलःस्मृतः।कल्कंकर्षमितंलिप्त्वाच्छायाशुष्कंचकारयेत् ॥ इषिका प्रपनीयाथस्नेहाक्तांवर्त्तिमादरात् । अंगारैर्दीपितांकृत्वाघृत्वानेत्रस्यरंध्रके ॥ वदनेनपिवेद्धूमंवदनेनैवसंत्यजेत् । नासिकाभ्यांततःपीत्वामुखेनैवविमेत्सुधीः ॥ १९६ ॥ *

बारह अंगुल के लम्बे एक सरकंडेपर एकतोला धूमपान की औषधियों के कल्क से आठ अंगुल तक चारोंओर लेप करके छाया में सुखावे फिर सूखजाने पर सरकंडे को धीरे धीरे निकालकर उस पोली बत्ती में तेल लगाकर और अंगारे से जलाकर नलीके छेदपर रक्खे पहले मुख से धूमपीकर मुखही से निकाले फिर नाकसे धुआं पीकर मुखमें से निकाले ॥ १९६ ॥

शरावसंपुटेक्षिप्त्वाकल्कमंगारदीपिताम् । छिद्रेनेत्रंनिवेश्याथव्रणंतेनैवधूपयेत् ॥ एलादिकल्कंशमनेस्निग्धंसर्ज्जरसंमृदौ । रेचनेतीक्ष्णकल्कंचश्वासघ्नेक्षुद्रकोषणम् ॥ वमनेस्नायुचर्माद्यंदद्याद्धूमस्यपानकम् । व्रणेनिम्बवचाद्यंचधूपनंसंप्रशस्यते ॥ १९७ ॥

किसी सकोरे में औषधियों का कल्क धरके अंगारोंपर रक्खे और उसे एकछिद्र युक्त सकोरेसे बंद करदे फिर उसी सकोरेके छेदमें नली लगाकर घावमें धूप देवे शमनधूममें इलायची आदि औषधियों का कल्क बृंहण में चिकना राल का रस रेचन में तीक्ष्ण औषधियों का कल्क का सघ्न में भटकटैया तथा मिर्च और वामन में स्नायु चर्मादिक पीने के लिये ग्रहण करने चाहिये और व्रणमें नींब तथा वच आदिके कल्क से धुआं देना श्रेष्ठ है ॥ १९७ ॥

अन्येऽपिधूमागेहेषुकर्त्तव्यारोगशांतये । (सयथा) मयूरपिच्छंनिम्बस्यपत्राणिवृहतीफलम्॥मरिचंहिंगुमांसीचबीजंकार्पाससम्भवम् । छागरोमाहिनिर्मोकोविष्ठाबैडालिकी तथा ॥ (अहिनिर्मोकःसर्पकंचुकः) गजदंतश्चतच्चूर्णंकिंचिद्घृताविमिश्रितम् । गेहेषुधूपनंदत्तंसर्वान्बालग्रहान्हरेत् ॥ पिशाचान्राक्षसान्हत्वासर्व्वज्वरहरंभवेत् । (इत्यपराजितोधूमः) ॥ १९८ ॥

रोगों के नाशके लिये घरमें औरभी धूमकाम में लाने चाहिये जैसे मोर की पूंछ नींवकेपत्ते भटकटैया का फल मिर्च हींग जटामांसी बिनौला बकरे के रोयें साँप की केंचली बिल्ली की विष्ठा और हाथीदांत इनसबका चूर्ण करके कुछ घी मिलाय घर में धूपदेने से संपूर्ण बालग्रह पिशाच तथा राक्षसोंकानाश होकर संपूर्ण ज्वरों का नाश होताहै इति अपराजित धूप ॥ १९८ ॥

मनस्तापंरजःक्रोधोधूमपानेनिवारयेत्।नेत्राणिधातुजान्याहुर्नलंवंशादिजान्यपि॥१९९॥

धूमपानकरके मनकाताप रजोगुणके काम और क्रोधको त्यागदेवे धूमपानकीनली धातुकी अथवा बांसआदि की बनावे॥१९९॥ अथ गण्डूषकवलप्रतिसारणविधिः॥

तत्रगण्डूषकवलप्रतिसारणानांभेदकानिलक्षणान्याह। तत्रगण्डूषः। स्नेहक्षीरकषायादिद्रवैःसम्पूर्णमाननम्॥ आपूर्य्यस्थीयतेतावद्विधिर्गण्डूषधारणे। कफपूर्णास्यतायावच्छेदोदोषस्यवाभवेत्॥नेत्रघ्राणस्रुतिर्य्यावत्तावद्गण्डूषधारणम्। गण्डूषान्सुस्थितःकुर्य्यात्स्विन्नभालगलादिकः॥ मनुष्यास्त्रीस्तथापञ्चसप्तवादोषनाशनात्। गलादिकइत्यादिशब्देनगण्डकपोलौगृह्येतेसुश्रुतोक्तत्वात्॥चतुर्विधःस्याद्गण्डूषःस्नेहनःशमनस्तथा॥ शोधनोरोपणश्चैवकवलश्चापितादृशः। स्निग्धोष्णैःस्नैहिकोवातेस्वादुशीतैःप्रसादनः॥ पित्तेकटवम्ललवणैरुष्णैःसंशोधनङ्कफे। कषायतिक्तमधुरैःकटूष्णोरोपणोव्रणे। दद्याद्द्रवेषुचूर्णञ्चगण्डूषेकोलमात्रकम्। कर्षप्रमाणःकल्कश्चकवलेदीयतेबुधैः॥ धार्य्यन्तेपञ्चमाद्यर्षाद्गण्डूषाःकवलादयः। व्याधेरपचयस्तुष्टिर्वैशद्यंवक्त्रलाघवम्॥ इंद्रियाणांप्रसादश्चगण्डूषेविधृतेभवेत्। हरेदास्यस्यवैरस्यंशोषपाकंव्रणंतृषान्॥ दन्तचालञ्चगण्डूषोवैशद्यंतुकरोतिहि॥ २००॥

गंडूष (कुल्वा) कवल (ग्रास) और प्रतिसारण (मंजन) की विधि गंडूषकवल और प्रतिसारणकेअलग २ लक्षण॥

गंडूष स्नेह दूध अथवा क्वाथ आदिक पतले पदार्थों को मुख में भरके रखने को गंडूष धारण कहतेहैं जबतक मुख में कफ भराहै अथवा दोषों का नाश होवे और नेत्र तथा नासिकासे जल टपकनेलगे तबतक गंडूष धारणकरे स्वस्थ होकर जबतक माथे और गले आदिमें स्वेद न आजावे तबतक कुल्ले करता रहै एक दो तीन पांच अथवा सात बार दोषके नाशहोनेके लिये कुल्ले करे गंडूष (गरारा) चार प्रकार का है स्नेहन शमन शोधन और रोपण और इसी प्रकारसे ग्रासके भी यही चारप्रकार होतेहैं बात रोगमें स्निग्ध तथा उष्ण औषधियोंके द्वारा स्नेहन गंडूष पित्तकी अधिकतामें मधुर तथा शीतल औषधियों के द्वारा शमन गंडूष कफकी अधिकता में कटु अम्ल तथा लवण रसयुक्त उष्ण औषधियों के द्वारा शोधन गंडूष और घाव में कषैली तिक्त मधुर कटु तथा उष्ण औषधियों के द्वारा रोपण गंडूष को काम में लाना चाहिये गंडूष के लिये पतली बस्तुओं में औषधियों का चूर्ण छः मासे और ग्रासके लिये एक तोला कल्क देना चाहिये पांच वर्ष की अवस्था के उपरांत गंडूष और ग्रास आदिको धारण करना चाहिये गंडूष धारण करनेसे रोग का नाश संतुष्टता प्रसन्नता मुखमें हलकापन तथा इन्द्रियों की चैतन्यता होती है और मुख की विरसता सूखना पकना घाव तृषा तथा दांतों का हिलना नष्टहोताहै और मुख निर्मल होजाताहै॥ २००॥

अथकवलः॥

वातपित्तकफघ्नस्यद्रव्यस्यकवलंमुखे। अर्द्धनिःक्षिप्यसंचर्व्यनिष्ठीवेत्कवलोविधिः॥ कवलःकुरुतेकाङ्क्षम्भक्ष्येषुहरतेकफम्। तृष्णांशोषञ्चवैरस्यंदन्तचालञ्चनाशयेत्२०१

ग्रास की बिधि ॥

बात पित्त और कफनाशक बस्तुओं के ग्राससे आधा मुखभर के चबाकर थूक देनेको ग्रास बिधि कहतेहैं ग्रासधारण करनेसे भोजन में रुचि और कफ तृषा मुखका सूखना बिरसता तथा दांतोंका हिलना नष्ट होताहै ॥ २०१ ॥

अथप्रतिसारणम् ॥

दन्तजिह्वामुखानांयच्चूर्णकल्कावलेहकैः । शनैर्घर्षणमंगुल्यातदुक्तंप्रतिसारणम् ॥ वैरस्यंमुखदौर्गन्ध्यंमुखशोकंतथातृषाम् । अरुचिन्दन्तपीड़ाञ्चनिहन्तिप्रतिसारणम् ॥ हीने जाड्यकफोत्क्लेशावरसज्ञानमेवच । अतियोगान्मुखेपाकःशोषस्तृष्णावमिःक्लमः॥ २०२॥

प्रतिसारण की बिधि ॥

चूर्ण कल्क अथवा अवलेहको उंगलियों में लगाकर दांत जिह्वा और मुखके धीरे२ रगड़ने को प्रतिसारण कहतेहैं प्रतिसारण से मुखकी बिरसता तथा दुर्गन्धि मुखकासूखना तृषा अरुचि और दांतों की पीड़ा का नाशहोताहै परन्तु प्रतिसारण के अच्छेप्रकारसे न होने में मुखकी जड़ता कफकी वृद्धि और रसों के ग्रहण करने में असामर्थ्य होती है प्रतिसारणकी अधिकता में मुखका पकना सूखना तृषा छर्दि और ग्लानि होतीहै ॥ २०२ ॥

अथस्वेदविधिः ॥

स्वेदश्चतुर्विधःप्रोक्तस्तापोष्मस्वेदसंज्ञितः ॥ उपनाहोद्रवःस्वेदःसर्ववातार्त्तिहारिणः तापस्वेदउष्मस्वेदश्चताभ्यांसंज्ञितः । उपनाहःस्वेदः । स्वेदौतापोष्मजौप्रायःश्लेष्मघ्नौ समुदीरितौ । उपनाहस्तुवातघ्नःपित्तसङ्घेद्रवोहितः ॥ द्रवोहिद्रवस्वेदः । महाबलेमहाव्याधौशीतेस्वेदोमहान्स्मृतः। दुर्बलेदुर्बलस्वेदोमध्यमेमध्यमोमतः ॥ वलासेरूक्षणःस्वेदोरूक्षस्निग्धःकफानिले । रूक्षणःरूक्षयतीतिरूक्षणःनन्द्यादित्वाल्लुप्रत्ययः ॥ २०३ ॥

स्वेद की बिधि ॥

स्वेद चारप्रकारकाहोताहै तापसस्वेद उष्ण स्वेद उपनाह स्वेद और द्रवस्वेद यहचारों प्रकार के स्वेद बातनाशक होते हैं तापस स्वेद तथा उष्ण स्वेद यह दोनों कफनाशक उपनाह स्वेद बातनाशक और द्रवस्वेद पित्त नाशक होताहै बलवान् अथवा बडेरोग से युक्त अथवा शीतकाल में महास्वेद दुर्बल में स्वल्पस्वेद और मध्यम अवस्थावाले को मध्यम स्वेदहितहै कफ में रूखा स्वेद कफबातमें रूखा और चिकनास्वेद देना चाहिये ॥ २०३ ॥

कफमेदोवृतेवातेकोष्णंगेहंरवेःकरान् । नियुद्धंमार्गगमनंगुरुप्रावरणंध्रुवम् ॥ चिन्ताव्यायामभारांश्चसेवेतामयमुक्तये । येषांनस्यंप्रदातव्यंवस्तिश्चापिहिदेहिनाम् ॥ शोधनीयाश्चयेकेचित्पूर्वंस्वेद्याश्चतेमताः । स्वेद्याऊर्द्ध्वन्त्रयोऽपीहभगन्दर्य्यर्शसस्तथा॥अश्मर्य्याचातुरोजन्तुःशमयेच्छस्त्रकर्मणः । शस्त्रकर्मणःऊर्द्ध्वंपश्चाच्चेतिसुश्रुते।पश्चात्स्वेद्याहतेशल्येमूढगर्भंगदेतथा । कालेप्रजाताऽकालेवापश्चात्स्वेद्यानितम्बिनी ॥ २०४ ॥

कफ तथा मेदकेद्वारा बायुके रुकजानेपर उष्णघरमें रहना धूप युद्ध मार्ग गमन भारी बस्त्रोंका ओढ़ना चिन्ता व्यायाम और बोझालेचलना इन सबबातोंका सेवनकरे जिनको नस्य तथा वस्तिदेनी होय अथवा विरेचन आदिकेद्वारा शुद्धकरनाहो उनको प्रथम स्वेद कराना चाहिये भगन्दर बवासीर

और पथरी इन रोगोंमें शस्त्रकर्मकेपीछे स्वेद करानाचाहिये मूढगर्भरोग (बायुसे गर्भका टेढ़ाहोजाना) में शस्त्रके निकाललेनेपर और समयमें अथवा बेसमयमें प्रसवहोने के उपरान्त स्वेददेनाचाहिये२०४

सर्वान्स्वेदान्निवातेचजीर्णेन्तेवाविचारयेत् । स्वेदाद्धातुस्थितादोषाःस्नेहक्लिन्नस्य देहिनः ॥ द्रवत्वंप्राप्यकोष्ठांतर्गत्वायांतिविरेकताम् । स्नेहाभ्यक्तशरीरस्यशीतैराच्छाद्यचक्षुषी ॥ स्वेद्यमानशरीरस्यहृदयंशीतलैःस्पृशेत् (शीतैरार्द्रवस्त्रादिभिः) २०५ ॥

संपूर्ण स्वेद भोजनके परिपाकहोजानेपर बायु रहित स्थानमें निकालने चाहिये स्नेह धारणकिये हुए पुरुषको स्वेद देनेसे धातुओंमें स्थित संपूर्ण दोष पिघलकर कोष्ठके भीतर जातेहैं और दस्त के द्वारा निकलजातेहैं शरीरमें तेलआदिक लगायेहुए मनुष्यके नेत्रोंको शीतल वस्त्रसेढके फिर पसीना निकालकर इसके हृदयको शीतल बस्तुसे स्पर्शकरे ॥ २०५ ॥

अजीर्णेदुर्बलीमेहीक्षतःक्षीणःपिपासितः । अतीसारीरक्तपित्तीपाण्डुरोगीतथोदरी ॥ मेदस्वीगर्भिणीचैवनहिस्वेद्याविजानता । (स्वेदादेषांयांतिदेहोविनाशंनिसाध्यत्वंयाति चैषांविकाराः) एतान्यपिमृदुस्वेदैःस्वेदसाध्यानुपाचरेत् । मृदुस्वेदंप्रयुञ्जीततथाह्यन्मुष्कदृष्टिषु ॥ २०६ ॥

अजीर्ण दुर्बलता प्रमेह घावसे क्षीणता तथा तृषासेयुक्त और गर्भिणी स्त्रीको स्वेद नहीं देनाचाहिये और अतीसार रक्त पित्त पांडु उदर तथा मेदसे युक्त कोभी स्वेद दिवाना हितकारी नहीं है क्योंकि इनको स्वेद देने से रोगियों के शरीर नष्ट होजाते हैं अथवा रोग असाध्य होजाते हैं और इनको जो स्वेदहीसे साध्यसमझे तो थोड़ा स्वेददेहृदय अंडकोश और नेत्रोंमेंभी कोमल स्वेद देनाचाहिये२०६॥

अतिस्वेदात्सन्धिपीड़ादाहस्तृष्णाक्लमोभ्रमः । पित्तासृक्पिडिकाकोपस्तत्रशीतैरुपाचरेत् ॥ २०७ ॥

अधिक स्वेददेनेसे सन्धियों में पीडा दाह तृषा ग्लानि भ्रम रक्त पित्तऔर पिडिका (फुंसी) उत्पन्न होतीहैं इनउपद्रवोंमें शीत इलाज करना चाहिये ॥ २०७ ॥

तत्रतापस्वेदमाह ॥

तेषुतापाभिधःस्वेदोबालुकावस्त्रपाणिभिः।प्रतप्तैरम्लासिक्तैश्चकायेऽलक्तकवेष्टिते २०८ ॥

तापस्वेद की विधि ॥

शरीर में लत्ते लपेटकर बालूवस्त्र अथवा हाथों को खटाई में भिगोकर और गरम करके जो स्वेद दिया जाताहै उसको ताप स्वेद कहते हैं ॥ २०८ ॥

उष्मस्वेदमाह ॥

अथवावातनिर्नाशिद्रव्यक्काथरसादिभिः । उष्णैर्घटंपूरयित्वापार्श्वेच्छिद्रंविधायच ॥ विमुड्यास्यंत्रिखण्डांचधातुजांकाष्ठजामुत । षड्गोलास्यांगोपुच्छांनाडींयुंज्याद्दृढहस्तकाम् ॥ सुखोपविष्टंस्वभ्यक्तंगुरुप्रावरणावृतम् । हस्तिशुण्डिकयानाड्यास्वेदयेद्धातरोगिणाम् ॥ त्रिखण्डामितिस्वेदमौकर्यार्थमूषड्गुलास्यामिति । मूलेषड्गुलंविशालमुखंगोपुच्छमिवक्रमकृशम् । तेनाग्रगोपुच्छाग्रपरिमाणेनकृशामूनाड़ीम्अन्तःसरन्ध्रांदृढ

हस्तिकामहस्तद्वयपरिमाणाम् ॥ हस्तिशुण्डिकयेतिहस्तिशुण्डेवक्रमशःकृत्वान्नाड्याइयं संज्ञा ॥ २०९ ॥

उष्ण स्वेद ॥

किसी घटमें बात नाशक औषधियों का उष्ण क्वाथ अथवा रसादिक भरके उसका मुख बन्द करे और उसके किसी ओर एकछिद्र करके तीन खंडवाली धातु अथवा काष्ठ से बनीहुई भीतरसे पोली मूल में छः अंगुल के मुखवाली दो हाथ की लंबी और गौ की पूंछके समान गावदुम बनीहुईनली लगावेबातरोगीकोतेल आदि लगाकर और भारी बस्त्र उढ़ाकर सुख पूर्वक बैठावे फिरहस्तिशुंडिक (हाथी की शूंड के समान होने से हस्तिशुंडक कहाती है) नामनली से स्वेद देवे ॥ २०९ ॥

पुरुषाययाममात्रांवाभूमिंसंमार्ज्यखादिरैः॥काष्ठैर्दग्ध्वातथाभुक्ष्यक्षीरधान्याम्लवारिभिः॥ वातघ्नपत्रैराच्छाद्यशयानंस्वेदयेन्नरम् । एवंमाषादिभिःस्विन्नैःशयानंस्वेदमाचरेत् २१०

जितना बड़ारोगी हो उतनी पृथ्वी को सफाकरके उसपर कत्थे की लकड़ी को जलाकर पीछे दूध औरकांजी छिड़ककर वातनाशक पत्ते बिछावे फिर उनपर रोगीको सुलाकर उर्द आदिकोंके द्वारा स्वेद देवे ॥ २१० ॥

उपनाहस्वेदः ॥

तथोपनाहस्वेदञ्चकुर्य्याद्वातहरौषधैः । प्रदह्यदेहंवार्त्तक्षीरमांसरसादिभिः ॥ अम्ल पिष्टैःसलवणैःसुखोष्णैःस्नेहसंयुतैः । उतग्राम्यानूपमांसैर्जीवनीयगणेनच ॥ दधिसौवीर कक्षीरैर्वीरतरवादिनातथा । कुलत्थमाषगोधूमैरतसीतिलसर्षपैः ॥ शतपुष्पादेवदारुशे फालीस्थूलजीरकैः॥ऐरण्डमूलजीरैश्चरास्नामूलकशिग्रुभिः। मिसिकृष्णाकुठेरैश्चलवणै रम्लसंयुतैः ॥ प्रसारण्यश्वगन्धाभ्यांबलाभिर्दशमूलकैः । गुडूच्यावानरीबीजैर्यथालाभ समाहृतैः ॥ क्षुण्णैःस्विन्नैश्चवस्त्रेणबद्धैःसंस्वेदयेन्नरम् । महाशाल्वणसंज्ञोऽयंयोगःसर्वानि लार्त्तिहृत् ॥ अस्यायमर्थः । उपनाहस्वेदञ्चकुर्य्यात्केनप्रकारेणेत्याकांक्षायांतत्प्रकारमा ह । वातहरौषधैःकथम्भूतैः । अम्लपिष्टैः । अम्लेनकाञ्जिकतक्रादिनापिष्टैःसलवणैः । स्ने हसंयुतैः । क्षीरमांसरसन्वितैः । सुखोष्णैः ।वार्त्तंदेहंप्रदह्यप्रलिप्यस्वेदयेदित्यर्थः । अथ वाम्लेनसंपिष्टैःकोष्णैःसूक्ष्मपुटस्थितैः । भेषजैःस्वेदयेत्किंवास्विन्नैःकोष्णैःपटास्थितैः २११

उपनाह स्वेद ॥

कांजी से बातनाशक औषधियों को पीसकर लवण तेल आदिक दूध तथा मांसके रसादिकोंको मिलावे फिर कुछ गरमकरके बातरोगी के शरीर में लेपकरके उपनाह स्वेद देवे अथवा ग्रामीण तथा अनूपदेश के जीवों के मांसकारस जीवनीयगण दही सौवीर दूध औरबीरतरु आदिगण के द्वारा स्वेद देना चाहिये कुलथी उर्द गेहूं अलसी तिल सरसों सौंफ देवदारु शेफालिका कालीजीरी रेंड़ी कीजड़ जीरा रासना मूली सहँजन सौंफ पीपल सफेद तुलसी सेंधानोन कांजी गन्धप्रसारणी असगन्ध बरियारा दशमूल गिलोय और किवांच के बीज इनसंपूर्ण औषधियों में से जितनी मिलसकें उनकोलेकर कूटकर उबाले फिर किसी बस्त्रमें बांधकर स्वेददेवे यह महा शाल्वण नाम स्वेद संपूर्ण वात रोगों का नाशक है ऊपर कही हुई औषधियों को कांजी आदिसे पीसकर कुछ उष्ण करके अथवा उबालकर कुछउष्णता रहनेपर बस्त्र में बाँध के स्वेद देवे ॥ २११ ॥

द्रवस्वेदमाह ॥

द्रवस्वेदस्तुवातघ्नोद्रव्यक्काथेनपूरिते । कटाहेकोष्ठकेवापिसूपविष्टेवगाहयेत् ॥ सौवर्णे राजतंवापितास्रंलोहञ्चदारुजम् । कोष्ठकन्तत्रकुर्वीतोच्छ्रायेषड्विंशदंगुलम् ॥ आयामेवातदेवस्याच्चतुष्कोणन्तुचिक्कणम् (पक्षान्तरमाह । नाभेःषड्गुलंयावन्मग्नंक्काथस्य धारया ॥ कोष्णयाःस्कन्धयोःसिक्तस्तिष्ठेत्तास्नग्धतनुर्नरः ॥ अयमर्थः) प्रथमतोवातघ्न द्रव्यक्काथेनकण्ठपूरिते कोष्ठकेकटाहेवासूपविष्टस्तिष्ठेत् ॥ अथवानाभेःषड्गुलमूर्द्धंयाव त्क्काथेमग्नउपविष्टः । पश्चात्क्काथस्यधारयास्कन्धयोःसिच्यमानस्तिष्ठेत् ॥ यावत्कोष्ठकं परिपूर्णंभवतीत्यर्थः । क्काथपक्षेप्रथतःस्नेहाभ्यक्ततनुरुपविशेत् ॥ मुहूर्त्तैकंसमारभ्ययाव त्स्यात्तच्चतुष्टयम् । तावत्तदवगाहेतयावदारोग्यनिश्चयः ॥ एवंतैलेनदुग्धेनसर्पिषास्वेद येन्नरम् । एकांतरोद्व्यन्तरोवायुक्तःस्नेहोऽवगाहने ॥ एतावताक्काथोदुग्धञ्चनित्यमेवयुज्य तेस्नेहस्तुदिनमेकन्द्वेवादिनेगमयित्वायुक्तः । अग्निमान्द्यशङ्क्येतिभावः ॥ शिरामुखै र्लोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् । शरीरेबलमाधत्तेयुक्तःस्नेहोऽवगाहने ॥ जलसिक्तस्यवर्द्ध न्तेयथामूलेऽकुरादयः । तथैवधातुवृद्धिर्हिस्नेहासिक्तस्यजायते ॥ नातः परतरःकश्चि दुपायोवातनाशनः । शीतशूलव्युपरमेस्तम्भगौरवनिग्रहे ॥ दीप्तेऽग्नौमार्द्दवेजातस्वेद नाद्विरतिर्मताः ॥ २१२ ॥ द्रव स्वेद ॥

बातनाशक औषधियोंकेकाढ़े से किसी कढ़ाव अथवा हौजको भरके उसमें रोगीको बैठालकर स्नान करावेसुवर्ण चाँदी तांबा लोहा अथवा काष्ठकेद्वारा चौकोना चिकना हौदबनावे यहउंचाई तथा चौड़ाई मेंछब्बीस अंगुलका होना चाहिये(दूसरा प्रकार)रोगी शरीरमें तेलमर्द्दन करके नाभिके छःअंगुलऊपर तकके धडको डुबोकर कढ़ाव अथवा हौज़में बैठे और उसकड़ाह अथवा हौज़ में बातनाशक औषधियों का क्काथभरदे फिर रोगीके कन्धेपर धीरे २ कुछ गरम क्काथकी धारा तबतक छोड़तारहै जबतक वह कड़ाह अथवा हौज़ ऊपरतक भरनजाय चारमुहूर्त्त तक अथवा जबतक रोगके नाशका निश्चय न हो-जाय तबतक उसीमें बैठारहै इसप्रकार तैल दूध अथवा घृतके द्वारा स्वेददेवे परन्तु तैलादिक स्नेहके द्वारा एक अथवा दो दिनका बीच देकर स्वेददेवे क्योंकि स्नेहके द्वारा नित्य स्वेदके देने से मन्दाग्नि होनेका संदेह होताहै अवगाहनके द्वारा स्नेह देनेसे रोमकूप सिराओं के मुख और धमनियों के द्वारा संपूर्ण शरीरमें स्नेह प्रविष्ट होकर शरीरकी तृप्ति और बलको बढ़ाताहै जैसे जड़ में जलके सींचने से अंकुरादि उत्पन्न होतेहैं उसी प्रकार स्नेह के द्वारा सिंचेहुए शरीरकी धातुबढ़तीहैं इस्से बढ़कर और कोई बातके नाशकरने का उपाय नहीं है शीतलता शूल स्तब्धता तथा भारी पनके निवृत्त हो जानेपर और अग्निकी दीप्तितथा शरीरमें कोमलता उत्पन्न होनेपर स्वेदको नहीं देनाचाहिये २१२॥

अथ मूर्द्धतैलविधिः ॥

अभ्यङ्गःपरिषेकश्चपिचुर्वस्तिरितिक्रमात् । मूर्द्धतैलञ्चतुर्द्धास्याद्बलवत्तद्यथोत्तरम्॥ अभ्यंगःतैलेनशिरसोमर्द्दनम्। परिषेकः । शिरसिधारापातनंपिचुः । तैलाक्तंतूल । फाहा इतिलोकेवस्तिर्वक्ष्यमाणः ॥ त्रयोऽभ्यंगादयःपूर्वैप्रसिद्धाःसर्व्वतःस्मृताः । शिरोवास्त

विधिश्चात्रप्रोच्यतेसुज्ञसम्मतः ॥ शिरोवस्तिश्चर्म्मणःस्याद्द्विमुखोद्वादशांगुलः । शिरः प्रमाणस्तंबध्वामस्तकेमाषपिष्टकैः ॥ सन्धिरोधंविधायाशुस्नेहैःकोष्णैःप्रपूरयेत् । तावद्धार्य्यस्तुयावत्स्यान्नासाकर्णमुखश्रुतिः॥वेदनोपशमोवापिमात्राणांवासहस्रकम् । स्वजानुना करावर्त्तंकुर्य्याच्छोटिकयायुतम् ॥ एषामात्राभवेदेकासर्व्वत्रैवेषनिश्चयः । विनाभोजनमे वात्रशिरोवस्तिःप्रशस्यते ॥ प्रयोज्यस्तुशिरोवस्तिःपञ्चसप्तदिनानिवा । विमोच्यशिर सोवस्तिंगृह्णीयाच्चसमन्ततः ॥ ऊर्ध्वकायन्ततःकोष्णेनीरेस्नानंसमाचरेत् । अनेनदुर्ज्जया रोगावातजायान्तिसंक्षयम् ॥ शिरःकम्पादयस्तेनसर्व्वकालेषुयुज्यते । पञ्चसप्तदिनानि वेत्युक्तासर्व्वकालेष्वितिशिरःकम्पादिरोगानुवृत्तौज्ञेयम् ॥ २१३॥

मस्तकमेंतेलडालने की विधि ॥

अभ्यंग [शिरमें तेलमलना] परिषेक [मस्तकमें तेलकीधार छोड़ना] पिचु [तेलसे डूबीहुई रुईको शिरमें रखना] और वस्ति [वस्तिकी रीतिआगे लिखेंगे] यह चारप्रकार शिरमें तेलडालने केहैं यह क्रमसे एकसे एक बलकारी हैं प्रथम तीन अभ्यंगादिक प्रसिद्ध हैं । अब शिरकी वस्तिका बिधान कहा जाताहै । मस्तकके प्रमाणके अनुसार दो मुखवाली बारह अंगुलकी चमड़ेकी वस्ति बनवा कर मस्तक में बांधे और उसकी संधियों को उड़दकी पिट्ठी से बंदकरदे फिर कुछ गरम तेलादिकसे भरके जबतब नाककान और मुख न बहनेलगे या रोगकी शान्ति न होजाय तबतक अथवा एकहज़ार मात्रा पर्य्यन्त उसको धारणकरे[घुटने के ऊपर चुटकी बजाकर हाथघुमाने में जितना समय लगताहै उसको मात्रा कहतेहैं] भोजन विनाकियेही शिरोवस्ति दीजाती है यह पांच अथवा सातदिन तक देनी चाहिये वस्तिको खोलकर उसतेल आदिको सब ओरसे ग्रहणकरे फिर उष्ण जलमें स्नानकरे इसके द्वारा दुर्जय बातजरोग और शिरका कंपना आदिक नाशहोते हैं इस्से सब समयोंमें इसका ग्रहण करना चाहिये ॥ २१३ ॥

अथ कर्णविधिः ॥

स्वेदयेत्कर्णदेशन्तुकिञ्चिन्नुःपार्श्वशायिनः । मूत्रैःस्नेहैःरसैरुष्णैःश्रोत्ररन्ध्रंप्रपूरयेत्॥ कर्णञ्चपूरितंरक्षेच्छतपञ्चशतानिवा । सहस्रंवापिमात्राणांश्रोत्रकण्ठशिरोगुदे ॥ मूत्रा द्यैःपूरणंकर्णेभोजनात्प्राक्प्रशस्यते । तैलाद्यैःपूरणंकर्णेभास्करेऽस्तमुपागते ॥ २१४ ॥

कानमेंतेल आदिछोड़नेकी विधि ॥

मनुष्यको कुछ करवट युक्त सुलाकर कानमें स्वेददे पीछे कुछ गरम २ मूत्र स्नेह तथा मांसके रससे कानको भरदेवे कानकण्ठ अथवा शिरके रोगमें पांचसात अथवा हज़ार मात्रा पर्य्यन्त कानको स्नेहादिसे भरारखना चाहिये जो कान में मूत्रादिक भरने हों तो भोजनसे पहले और तेलादिक भरने होयँ तो सूर्य्यास्तके उपरान्त भरने चाहिये ॥ २१४ ॥

(तद्यथा) कर्णेशूलाकुलेकोष्णंवस्तमूत्रंससैन्धवम् । निःक्षिपेत्तेनशाम्यन्तिशूलपाकादिकारुजः ॥ शृंगवेरञ्चमधुकंसैन्धवंतैलमेवच । कटूष्णंकर्णयोर्देयमेतत्स्याद्वेदनापहम्॥पीतार्कपत्रमाज्येनलिप्तोवह्नौप्रतापयेत् ।तद्रसःश्रवणेक्षिप्तःकर्णशूलहरःपरः २१५

कानकी पीड़ामें कुछ गरम २ बकरे का मूत्र सेंधानिमक मिलाकर डालनेसे कानकी पीड़ा और

कानका पकना आदिक नष्टहोताहै अदरक मुलहठी सेंधानोन और तेल यहसब कुछ गरम २ कान में छोड़नेसे कानकी पीडा नष्ट होती है पीलेआकके पत्तों में घी चुपड़कर आगमें तपाकर रसनिकाले फिर यह रसकानमें छोड़नेसे कानकी पीड़ा नष्ट होतीहै ॥ २१५ ॥

अथ लेपविधिः ॥

आलेपस्यतुनामानिलेपोलेपनलिप्तकौ । दोषघ्नोविषहावर्ण्यःसचलेपस्त्रिधामतः ॥ त्रिप्रमाणश्चतुर्भागस्त्रिभागार्द्धांगुलोन्नतः । आर्द्रोव्याधिहरःसस्याच्छुष्कोदूषयतिच्छविम् ॥ (चतुर्भागत्रिभागार्द्धांगुलोन्नतः) २१६ ॥

लेपकी विधि ॥

आलेप लेप लेपन और लिप्तक यहलेप के नामहैं दोषघ्न विषहा और वर्ण्य इनभेदोंसे लेपतीन प्रकार का होताहै लेपकी मुटाई के तीनप्रमाणहैं चौथाई अंगुल तिहाई अंगुल और आधाअंगुल गीलालेप रोगनाशक और सूखालेप कान्ति नाशक होताहै ॥ २१६ ॥

दोषघ्नोलेपोयथा ॥

शोथघ्नदारुसिद्धार्थशुण्ठीशोभाञ्जनत्वचाम् । आरनालेनपिष्टानांप्रलेपःसर्व्वशोथहा (शोथघ्नीपुनर्नवा) शिरीषमधुयष्टीचतगरंरक्तचन्दनम् । एलामांसीनिशायुग्मंकुष्ठंबालकमेवच ॥ इतिसंचूर्ण्यलेपोऽयंपञ्चमांशघृतस्नुतः। जलेनक्रियतेसुज्ञैर्दशांगइतिसंज्ञितः वीसर्पञ्चविषस्फोटान्शोथदुष्टव्रणान्जयेत् २१७ ॥

दोषघ्न लेप ॥

पुनर्नवा देवदारु सरसों सोंठऔर सहँजन की छाल इनसबको आरनालसे पीसकर लेपकरने से सब प्रकार की सूजनों का नाश होताहै सिरस की छाल मुलहठी तगर लालचन्दन इलायची जटामांसी हल्दी दारुहल्दी कूट और सुगन्धवाला इनसब के चूर्णको पंचमांश घी में मिलाकर जल के साथ लेपकरने से वीसर्प विषस्फोट सूजन और दुष्टव्रणोंका नाश होताहै ॥ २१७ ॥

विषहालेपो यथा ॥

अजादुग्धतिलैर्लेपोनवनीतेनसंयुतः । शोथमारुष्करंहन्तिलेपोवाकृष्णमार्त्तिकः ॥ (नवनीतेनार्द्रिकेण) ॥ २१८ ॥ विषनाशक लेप ॥

बकरी के दूधमें तिल मिलाकर भैंसके मक्खन के साथ लेप करनेसे भिलावे से होनेवाली सूजन नष्ट होतीहै अथवा कालीमिट्टी के लेपसे भी उसका नाश होताहै ॥ २१८ ॥

वर्ण्यलेपोयथा ॥

रक्तचन्दनमञ्जिष्ठालोध्रकुष्ठप्रियङ्गवः।बटांकुरामसूराश्चव्यङ्घ्नामुखकान्तिदाः ॥ २१९॥

वर्ण्यलेप ॥

लालचन्दन मजीठ लोध कूट मालकांगनी बड़के अंकुर और मसूर इनसबवस्तुओं के लेपकरनेसे व्यंग रोगका नाश और मुखकी कान्ति होतीहै ॥ २१९ ॥

अथलेपविधिश्चैवप्रोच्यतेसुज्ञसम्मतः । आलेपश्चप्रदेहश्चद्वौभेदौतस्यभाषितौ ॥

चर्मार्द्रंमाहिषंयद्वत्प्रोच्यतेसंमितस्तयोः । शीतस्तनुर्विशोषीचप्रलेपःपित्तहन्मतः ॥ आ
द्रोघनस्तथोष्णःस्यात्प्रदेहःश्लेष्मवातहा । नरात्रौलेपनंकुर्य्याच्छुष्यमाणंनधारयेत् ॥
शुष्यमाणमुपेक्षेतप्रदेहंपीड़नम्प्रति । तमसापिहितोह्यूष्मालोमकूपमुखेस्थितः ॥ विना
लेपेननिर्यातिरात्रौनलेपयेदतः । तमसारात्र्यन्धकारेण । रात्रावपिप्रलेपादिर्व्रणेदेयोविच
क्षणैः । अपाकिन्यतिगम्भीरेरक्तश्लेष्मसमुद्भवे ॥ लेपोयथा । मधुकंचन्दनंमूर्वानलमू
लञ्चपर्पटम् । उशीरंबालकंपद्मंप्रलेपःपित्तशोथहृत् ॥ प्रदेहोयथा । बीजपूरजटाहिंस्रादेव
दारुमहौषधम् । रास्नाऽरणिःप्रदेहोऽयंवातशोथविनाशनः ॥ अरणिरग्निमन्थः । कृष्णा
पुराणपिण्याकशिग्रुत्वक्सिक्ताशिवा । गोमूत्रपिष्टःकोष्णोऽयंप्रदेहःश्लेष्मशोथहा २२० ॥

अबलेपकी विधि कहीजातीहै ॥

प्रलेप और प्रदेह यह लेप के दोभेद हैं यह भैंसे के गीले चमड़े की मुटाई के समान प्रमाण में होनी चाहिये शीतल और सुखाने वाला पतला लेप प्रलेप कहलाता है इस्से पित्तकानाश होता है गीले गाढे और उष्ण लेपको प्रदेह कहते हैं इस्से कफवात का नाश होताहै रात्रि के समय लेप नहीं लगाना चाहिये और सूख जानेपर छुड़ा डालना चाहिये परन्तु घाव आदि से पीव निकालने के लिये सूखा लेप भी लगारहनेदे अन्धकार के द्वारा ढकी हुई रोमकूपों में स्थित ऊष्मा रात्रिके समय निकलतीहै इसलिये रात्रिकेसमय लेप न करनाचाहिये परन्तु नहींपकेहुए बहुत गंभीर और रक्तकफसे उत्पन्नहुए घावमें रात्रिमें भी लेपलगाना चाहिये प्रलेपकी विधि मुलहठी लाल चन्दन मरोरफली चीतेकीजड़ पित्तपापड़ा खससुगन्धवाला और कमल इनके लेपकरनेसे पित्तजनित सूजन का नाशहोता है प्रदेह बिजौरा नींबूकीजड़ जटामांसी देवदारु सोंठ रासना और अरणी काष्ठ इनका लेपवातजनित सूजन का नाशकरता है पीपल पुरानीतिलकीखली सहँजने की छाल बालू और हड़ इनसबको गोमूत्रमे पीसगरम २ लेपकरने से कफजानित सूजन नष्टहोतीहै २२० ॥

अथ शोणितस्रावणविधिः ॥

शोणितंस्रावयेज्जन्तोरामयंप्रसमीक्ष्यच । प्रस्थंप्रस्थार्द्धमथवाप्रस्थार्द्धार्द्धमथापिवा ॥ शर
त्कालेस्वभावेनशोणितंस्रावयेन्नरः । त्वग्दोषग्रन्थिशोथाद्यानश्यन्तिरुधिरोद्भवाः । व्यभ्रे
वर्षासुविद्युत्सुशीतेग्रीष्मेशरद्यपि । मध्याह्नेशीतकालेचरुधिरंस्रावयेद्बुधः ॥ २२१ ॥

रक्तस्रावण [फस्त] की विधि ॥

प्राणी के रोगको देखकर एकप्रस्थ आधे प्रस्थ अथवा चौथाई प्रस्थ रुधिर निकलवावे शरदऋतुमें स्वभावही से रुधिर निकलवाना चाहिये इस्सेरुधिर जनितत्वचाके दोष ग्रंथि औरसूजनआदिकनष्ट होतेहैं वर्षा शीत ग्रीषम और शरदऋतुमें मेघरहित मध्याह्नकालमें रुधिर निकलवानाचाहिये २२१॥

मधुरंवर्णतोरक्तमशीतोष्णंतथागुरु । शोणितंस्निग्धविस्रञ्चविदग्धंपित्तकृद्भवेत् ॥ वि
स्रताद्रवतारागश्चलनंविलयस्तथा । भूम्यादिपञ्चभूतानामेतेरक्तेगुणाःस्मृताः ॥ २२२ ॥

मधुररक्तवर्ण अनुष्ण शीत भारी स्निग्ध आमकीसी गान्धसे युक्त और विदाही रुधिरपित्तकारक होताहै रुधिर में आमकीसी दुर्गन्धि पतलापन रक्तता चलना और लीन होजाना यह पृथ्वी आदि पांचों महाभतों के गुणहैं ॥ २२२ ॥

रक्तेदुष्टेभवेच्छोथोरक्तमण्डलमेवच । व्यथादाहश्चपाकश्चकण्डूश्चपिडिकोद्गमः ॥ वृद्धेरक्ताङ्गनेत्रत्वंशिराणांपूर्णतातथा । गात्रगौरवंनिद्रामेहोदाहश्चजायते॥क्षीणेऽस्रे मधुराकांक्षामूर्च्छात्वचिरूक्षता । शैथिल्यञ्चशिराणांस्याद्वातादुन्मार्गगामिता ॥ वातात्रूक्षक्षैण्यजनितात् ॥ २२३ ॥

रुधिर दूषित होने से सूजन रुधिरके चकत्ते व्यथा दाह पकना खुजली और फुन्सी उत्पन्न होती हैं रुधिर अधिक होनेसे शरीर तथा नेत्रोंमें रक्तता शिराओं की पूर्णता शरीरका भारीपन अधिक निद्रा मद और दाह उत्पन्न होताहै रुधिर क्षीणहोनेपर मधुर वस्तुकी इच्छा मूर्च्छा त्वचामें रूखापन तथा शिराओंकी शिथिलता होतीहै और रूखेपन वा क्षीणतासे उत्पन्नहुई वायु ऊपरको जाती है॥२२३॥

अरुणंफेनिलंरूक्षंपरुषंतनुशीघ्रगम् । आसूचीनिस्तोदिरक्तस्याद्घातदूषितम् ॥ पित्तेनपीतंहरितंनीलंश्यावञ्चविस्रकम् । अस्वादूष्णंमाक्षिकाणांपिपीलिकामनिष्टकम् ॥ शीतलंबहुलंस्निग्धङ्गैरिकोदकसन्निभम् । मांसपेशीप्रभंस्कन्दिमन्दगंकफदूषितम् ॥ द्विदोषदुष्टंसंसृष्टंत्रिदुष्टंपूतिगन्धकम् । सर्वलक्षणसंयुक्तंकाञ्जिकाभञ्चजायते ॥ विषदुष्टंभवेत्श्यावंनासिकोन्मार्गगंतथा । विस्रंकाञ्जिकसंकाशंसर्वकुष्ठकरंतथा ॥ इन्द्रगोपप्रभंज्ञेयंप्रकृतिस्थमसंहतम् ॥ २२४ ॥

वायुसे दूषित रुधिर लाल फेनायुक्त रूखा कर्कश पतला शीघ्रगामी विशद और शरीर में सुई चुभोने के समान पीड़ा देताहै पित्त से दूषित रुधिर पीत हरा नीला श्याम आमकी दुर्गन्धिवाला मधुरता रहित उष्ण और मक्खी तथा चींटियों को अप्रिय होताहै और कफ से दूषित रुधिर शीतल बहुत चिकना गेरू मिलेहुये जल के समान वर्णवाला मांसपेशी के समान कान्तिवाला पिच्छिल और धीरेचलने वाला होताहै दो दोषोंसे दूषित रुधिर दो दोषों के लक्षणवाला और तीन दोषोंसे दूषित रुधिर आम के समान गन्धियुक्त कांजी के समान आभा वालातथा त्रिदोषों के संपूर्णलक्षणों से युक्त होताहै विष दूषित रुधिर श्याम वर्ण आमकी गन्धि वाला कांजी के समान आभायुक्त नाक के द्वारा ऊपर से निकलनेवाला और सबप्रकारोंके कुष्ठों का उत्पन्न करने वाला होताहै निर्दोष रुधिर बीरबहूटी के समान बर्ण वाला और पतलाहोताहै ॥२२४॥

शोथेदाहेऽङ्गपाकेचरक्तवर्णोऽसृजःस्रुतौ । वातरक्तेतथाकुष्ठेसपीड़ेदुर्जयेऽनिले ॥ पाण्डुरोगेश्लीपदेचविषदुष्टेचशोणिते । ग्रन्थ्यर्बुदापचीक्षुद्ररोगाधिमन्थकाभिधे ॥ विदारीस्तनरोगेषुगात्राणांसादगौरवे । रक्ताभिष्यन्दतन्द्रायांपूतिघ्राणास्यदेहिके ॥ यकृत्प्लीहविसर्पेषुविद्रधौपिडिकोद्गमे । कर्णौष्ठघ्राणवक्त्राणांपाकेदाहेशिरोरुजि ॥ उपदंशेरक्तपित्तेरक्तस्रावेप्रशस्यते । दोषेष्वेषुप्रक्षणैर्वाजलौकालाबुकादिभिः ॥ अथवापिशिरामोक्षैःकारयेद्रक्तपातनम् ॥ २२५ ॥

सूजन और दाह शरीर का पकना शरीरका रक्तवर्णहोना रुधिर काबहनाबात रक्त कुष्ठ अत्यन्त पीड़ा दायक दुर्जयबात पांडु श्लीपद रुधिर का विषसे दूषित होना ग्रन्थि अर्बुद अपची छिद्ररोग अधिमन्थ विदारी दूधके रोग शरीर का टूटना तथाभारीपन रक्ताभिष्यन्द तंद्रा नासिकाकी दुर्गन्धि

मुखकादाह यकृत् प्लीहा वीसर्प विद्रधि फुन्सी कान ओठ नासिका तथा मुखकापकना दाह शिरके रोग उपदंश और रक्तपित्त इनसम्पूर्ण रोगोंमें रुधिर निकलवाना श्रेष्ठहै ऊपर कहेहुए रोगोंमें सींगी जोंक तोंबी के द्वारा अथवा फस्त लेकर रुधिर निकलवाना चाहिये ॥ २२५ ॥

नकुर्वीतशिरामोक्षंकृशस्यातिव्यवायिनः । क्लीवस्यभीरोर्गर्भिण्याःसूतायाःपाण्डुरोगिणः ॥ पञ्चकर्म्मविशुद्धस्यपीतस्नेहस्यचार्शसाम् । सर्वाङ्गशोथयुक्तानामुदरिश्वासकासिनाम् ॥ छर्द्यतीसारकुष्ठानामतिस्विन्नतरोरपि । ऊनषोड़शवर्षस्यगतसप्ततिकस्यच ॥ आघातात्स्रुतरक्तस्यशिरामोक्षोनशस्यते । तथाचस्रुतरक्तस्यरक्तपित्तादिनागतरक्तस्य एषांचात्ययिकेरोगेजलौकाभिर्विनिर्हरेत् । तथाचविषजुष्टानांशिरामोक्षोनशस्यते ॥ गोशृङ्गेनजलौकाभिरलाबूभिरपित्रिधा । वातपित्तकफैर्दुष्टंशोणितंस्रावयेद्बुधः ॥ द्विदोषाभ्यान्तुदुष्टंयत्रिदोषैरपिदूषितम् । दूषितंस्रावयेद्युक्त्याशिरामोक्षैःपदैस्तथा ॥ २२६ ॥

कृश अत्यन्त मैथुन करनेवाला नपुंसक भयभीत गर्भिणी शीघ्रप्रसूतास्त्री पांडुरोगी पंचकर्म शुद्ध स्नेहपान कियेहुए बवासीर रोगवाला सबअंगोंमें सूजन वाला और उदर श्वास खांसी छर्दि अतीसार तथाकुष्ठरोग से व्याकुल इनसबको फस्तलेना हितकारी नहीं है अत्यन्त स्वेददियागया सोल हबर्ष कीउमर से कम सत्तरबर्ष की अवस्था से ऊपर और जिस के रक्त पित्तादिरोगोंसे रुधिर निकल गयाहो इनसबको भी फस्त लेना हितकारी नहीं है परन्तु यह सम्पूर्ण रोग मिलेभुले होंतो जोंक लगवाकर रुधिर निकालना चाहिये और जो विषसेयुक्त होयँतो फस्त लेनाउपकारी है वातपित्त तथाकफके द्वारा रुधिर के दूषित होनेपर क्रमसे सिंगी जोकतथा तोंबी के द्वारा रुधिर निकलवाना चाहिये दोदोष अथवा तीनदोषोंसे रुधिरनदूषित होनेपर युक्ति पूर्वक फस्तसे अथवा पद से रुधिर निकलवाना चाहिये ॥ २२६ ॥

गृह्णातिशोणितंशृङ्गदशांगुलमितम्बलात् । जलौकाहस्तमात्रंतुतुम्बीतुद्वादशांगुलम् ॥ पदमंगुलमात्रस्यशिरासर्वाङ्गशोधिनी ॥ २२७ ॥

सींगीसे दशअंगुल तक का जोंकों से हाथ भरका तोंबी से बारह अंगुलतकका पद से एक अंगुल तक का और फस्त लेनेसे संपूर्ण शरीर भरेका रुधिर शुद्ध होताहै ॥ २२७ ॥

शीतेनिरन्नेमूर्च्छार्त्तिनिद्राभीतिमदश्रमैः ॥ युक्तेनाश्रावयेद्रक्तंतथाविण्मूत्रसङ्गिनाम् ॥ शोणितेचाप्रवृत्तेतुकुष्ठत्रिकटुसैन्धवैः ॥ मर्दयेत्व्रणवक्त्रंतेनरक्तंप्रवर्त्तते ॥ तस्मान्नशीतेनात्युष्णेनास्विन्नेनातितापिते ॥ पीत्वायवागूंतृप्तस्यस्रावयेच्छोणितंबुधः ॥ अतिस्विन्नस्योष्णकालेतथैवातिशिराव्यधात् ॥ अतिप्रवर्त्ततेरक्तंतत्रकुर्य्यात्प्रतिक्रियाम् ॥ अतिप्रवृत्तेरक्तेतुलोध्रसर्ज्जरसाञ्जनैः ॥यवगोधूमचूर्णैश्चयवधन्वनगैरिकैः ॥ सर्पनिर्म्मोकिकाचूर्णैवामतःस्थापितंनरः ॥ मुखव्रणस्यबद्ध्वाचशीतैश्चोपचरेद्व्रणम् ॥ विध्येदूर्ध्वशिरान्तावद्दहेत्क्षारेणवह्निना ॥२२८ ॥

शीत उपवास निद्रा भय मद श्रम और मल मूत्र के वेग में रुधिर नहीं निकलवाना चाहिये जो फस्त देने से रुधिर निकले तो कूट त्रिकटु और सेंधानोन मिलाकर घाव के ऊपर रगड़ने से रुधिर

निकलताहै शीतकाल अत्यन्त उष्ण ऋतु स्वेदक्रिया और संतर्पणक्रिया में रुधिर नहीं निकलवाना चाहिये बुद्धिमान्वैद्य यवागू को पिलाकर तृप्तहुए मनुष्य का रुधिर निकलवावे अत्यन्त स्वेदयुक्त मनुष्यका उष्णकाल में अथवा बड़ीसिराके छिदजाने से जो बहुत रुधिर निकले तो उसका यत्न करे बहुत रुधिर के बहने पर लोध राल रसौत जौ तथागेहुंओंकाआटा धवई जवासा गेरू सर्पकी काँचलीका चूर्ण अथवा रेशमी कपड़े की भस्म के द्वारा घाव के मुखको बाँधकर शीतल इलाजकरे और ऊपर की नस को छेदकर क्षार अथवा अग्नि से घाव के मुख को जलावे ॥ २२८ ॥

व्रणंकषायंसन्धत्तेरक्तंस्कन्दयतेहिमः । व्रणास्यंभोजयेत्क्षारोदाहःसङ्कोचयेच्छिराः ॥ रक्तेदुष्टेऽवशिष्टेऽपिव्याधिर्नैवप्रकुप्यति। अतोरक्षेत्सावशेषंरक्तेनातिस्रुतिर्हिता॥ आन्ध्यमाक्षेपकंतृष्णान्तिमिरंशिरसोरुजः ।पक्षाघातंश्वासकासौहिक्कादाहौचपाण्डुताम्॥ कुरुतेऽतिस्रुतंरक्तंमरणंवाकरोतिच । देहस्योत्पत्तिरसृजोदेहस्तेनैवधार्य्यते ॥ रक्तंजीवस्यचाधारस्तस्माद्रक्षेदसृग्बुधः । शीतोपचारैःकुपितेस्रुतरक्तस्यमारुते ॥ कोष्णेनसर्पिषाशोथं सव्यथंपरिषेचयेत् । क्षीणस्यैणशशोरभ्रहरिणच्छागमांसजः॥रसःसमुचितेःपानेक्षीरंषष्टिकयाहितम् । पीड़ाशान्तिर्लघुत्वंचव्याध्युपद्रवसंक्षयः ॥ मनःस्वास्थ्यम्भवेच्चिह्नंसम्यक् निःसारितेऽसृजि। व्यायाममैथुनंक्रोधशीतस्नानप्रवातकान् ॥ एकाशनंदिवानिद्राक्षारा म्लकटुभोजनम् । शोकंवादमजीर्णञ्चत्यजेदाबलदर्शनात् ॥ २२९ ॥

कषाय घाव को जोड़ताहै शीत क्रिया रुधिर को गाढ़ा करती है क्षार घाव के मुखको जोड़ताहै और जलाने से सिरा सिकुड़जातीहै जो दूषितरुधिर कुछ बाकीभी रहजाय तो रोग कुपित नहींहोता इसलिये कुछ रुधिर बचालेना चाहिये क्योंकि रुधिर का बहुत निकलना अच्छा नहीं होता बहुत रुधिर निकलवानेसे अन्धता आक्षेप तिमिरि तृषा शिरकोपीड़ा पक्षाघात श्वास खांसी हिचकी दाह पांडुरोग और मृत्युभी होती है रुधिर से शरीर की उत्पत्ति तथा स्थिति होतीहै और रुधिरही जीव का आधारहै इसलिये यत्नपूर्वक रुधिर की रक्षा करना चाहिये रुधिर निकलवानेवालेकी वायु जो शीतल क्रियाओं से कुपित होजाय तो कुछ उष्ण घी से पीड़ायुक्त घाव की सूजन को सींचे रुधिर निकलनेसे क्षीण होनेवाले पुरुषको एण खरगोश भेड़ हिरन अथवा बकरे के मांसका रस पिलावे या सांठी के चावलों की खीर पिलावे पीड़ा की शांति शरीरका हलकापन रोगके उपद्रवोंका नाश और मनकी प्रसन्नता यह अच्छेप्रकारसे रुधिर निकलने के लक्षणहैं रुधिर निकलवाके जबतक बल न आजाय तबतक व्यायाम मैथुन क्रोध शीतक्रिया स्नान अधिक वायु एकबार भोजन दिनको सोना खार खटाई,तथा कटु वस्तुका खाना शोक बकबाद और अजीर्णकारी वस्तुओंका भोजन इन सबको त्याग करे ॥ २२९ ॥

अथ प्रसादन कर्म्माणि ॥

सेकआश्च्योतनंपिण्डीविडालस्तर्पणंतथा ॥ पुटपाकेऽञ्जनञ्चेतिकृत्वानेत्रमुपाचरेत्२३०

नेत्रप्रसादन कर्म ॥

सेक आश्च्योतन पिंडी विडाल तर्पण पुटपाक और अंजन इनसब उपायों से नेत्रोंका इलाजकरना चाहिये ॥ २३० ॥

अथ कल्पोविधिः। तत्रसेकविधिः॥

सेकस्तुसूक्ष्मधाराभिःसर्वस्मिन्नयनेहितः। मीलिताक्षस्यमर्त्यस्यप्रदेयश्चतुरंगुलात्॥ ससस्नेहोभवेत्वातेपित्तेरक्तेचरोपणः। लेखनस्तुकफेकार्य्यस्तस्यमात्राभिधीयते॥ षड्भिर्वाचांशतैःस्नेहेचतुर्भिश्चैवरोपणे। तैस्त्रिभिर्लेखनेकार्य्यःसेकोनेत्रप्रसादने॥ निमेषोन्मेषणंपुंसामंगुल्याच्छोटिकाथवा। गुर्वक्षरोच्चारणंवावाङ्मात्रेयंस्मृताबुधैः॥ सेकस्तुदिवसोकार्योरात्रौचात्यन्तिकेगदे। एरण्डस्यदलैःपिष्टैःपक्वमाज्यंपयोहितम्॥ सुखोष्णंनेत्रयोरन्तःसिक्तंवातार्त्तिनाशनम्॥ २३१॥

सेककी विधि॥

नेत्रको मीचेहुए पुरुषके नेत्रपर चार अंगुल की दूरीसेसूक्ष्म धाराके द्वारा सींचना हितकारीहोताहै बातरोगमें स्नेहन(चिकनाई)पित्त अथवा रुधिरके रोगमें रोपण और कफकेरोगोंमें लेखन(रुक्षकारक) सेक हितकारीहै स्नेहनसेकका काल ६०० मात्रा रोपण सेकका ४०० मात्रा और लेखन सेकका काल ३०० मात्राका होताहै नेत्रोंका खोलना मूंदना चुटकी बजाना अथवा एक गुरुअक्षरका उच्चारण करना इनमें जितना समय लगताहै उसको एक वाङ्मात्रा कहतेहैं सेकक्रिया दिन में करनी चाहिये परन्तु अत्यन्त कठिन पीड़ा होनेपर रात्रिको भी करे रेंड़के पत्ते जड़ तथा छालके द्वारा बकरी के दूधको पकाकर कुछ गरम२ नेत्रोंके भीतर सेकदेनेसे बातके सबरोग दूरहोते हैं॥ २३१॥

अथाश्च्योतनविधिः॥

क्वाथक्षौद्रासवस्नेहविन्दुनायत्तुपातनम्॥ द्व्यंगुलोन्मीलितेनेत्रेप्रोक्तमाश्च्योतनंहितत्। विन्दवोऽष्टौलेखनेषुरोपणेदशविन्दवः॥ स्नेहेतेद्वादशप्रोक्ताःशीतलेकोष्णरूपिणः॥ उष्णेतुशीतरूपाःस्युःसर्वत्रैवैषनिश्चयः। वातेतिक्तंतथास्निग्धंपित्तेमधुरशीतलम्॥ कफेतिक्तोष्णरूक्षंचक्रमादाश्च्योतनंहितम्। आश्च्योतनानांसर्वेषांमात्रास्याद्वाक्शतोन्मिता॥ ततःपरंलोचनानाम्भेषजानामयोगतः। आश्च्योतनंनकर्त्तव्यंनिशायांकेनचित्क्वचित्॥ (तद्यथा) विल्वादिपञ्चमूलेनवृहत्येरण्डशिग्रुभिः। क्वाथआश्चोतनेकोष्णोवाताभिष्पन्दनाशनः २३२॥

आश्च्योतनकीविधि॥

खुलेहुए नेत्रोंमें क्वाथ सहत आसव तथा स्नेहकी बूंदोंका दोअंगुलकी दूरीसे टपकाना आश्च्योतन कहाताहै लेखनमें आठ बूंद रोपणमें दश बूंद और स्नेहनमें बारह बूंद छोड़नी चाहिये शीतसे हुए नेत्ररोगमें कुछ उष्ण और उष्णतासे हुए नेत्ररोगमें शीतल आश्च्योतन हितकारीहै बात रोगमें तिक्त और स्निग्ध पित्तरोगमें मधुर और शीतल तथा कफरोगमें तिक्त उष्ण और सूखा आश्च्योतन हितकारीहै सम्पूर्ण आश्च्योतन धारण करनेका समय एकसौ मात्राहै इससे अधिक न धारण करना चाहिये क्योंकि इसके उपरान्त नेत्रोंमें औषधिका योग नहीं होता और रात्रिके समय कभी आश्च्योतन न करना चाहिये बेल आदिक पञ्चमूल भटकटैया रेंड़ी और सहँजना इनसब के कुछ उष्ण क्वाथके द्वारा आश्च्योतन करनेसे बातका अभिष्पन्द नष्टहोताहै॥ २३२॥

अथ पिण्डीविधिः ॥

युक्तभेषजकल्कस्यपिण्डीकवलमात्रया । वस्त्रखण्डेनसंबध्यानेत्रेऽभिष्पन्दनाशिनी ॥ स्निग्धोष्णापिण्डिकावातेपित्तेसाशीतलामता । रूक्षोष्णाश्लेष्मणिप्रोक्ताविधिरुक्तोवुधैरयम् ॥ (सा-यथा) धात्रीविरचितापित्तेशिग्रुपत्रकृताकफे २३३ ॥

पिंडी (पोटली) की विधि ॥

यथायोग्य औषधियोंके कल्कसे एक ग्रासके समान बनाईहुई पिंड़ियाको वस्त्रमें बाँधकर नेत्रोंमें लगानेको पिंडी विधि कहतेहैं इस्से नेत्रोंका अभिष्पन्द नष्टहोताहै बात रोगमें स्निग्ध तथा उष्ण पिंडी पित्तरोगमें शीतल पिंडी और कफरोगमें रूखी तथा उष्ण पिंडी कही गईहै रेंड़ीकी जड़ तथा छालकी पिंडी बातरोग नाशक होतीहै आंवलेकी पिंडी पित्तरोग नाशक और सहँजनेके पत्तोंकी पिंडी कफ रोग नाशक होती है ॥ २३३ ॥

अथ विडालकविधिः ॥

विडालकोबहिर्लेपोनेत्रपक्ष्मविवर्जितः । तस्यमात्रापरिज्ञेयामुखालेपविधानवत् ॥ यष्टीगैरिकसिन्धूत्थदार्वीताक्ष्यैःसमांशकैः । जलपिष्टैर्बहिर्लेपःसर्वनेत्रामयापहः २३४ ॥

विडालक की विधि ॥

पलकों को छोड़कर नेत्रोंके ऊपर लेपकरने को विड़ालक कहतेहैं विड़ालककी मात्रा मुखके लेपके समान होतीहै मुलहठी गेरू सेंधानोन दारुहल्दी और रसौत यह संपूर्ण समभाग लेकर जलसे पीस नेत्रोंके ऊपर लेपकरने से नेत्रोंके सबरोग दूर होतेहैं ॥ २३४ ॥

अथ तर्पणविधिः ॥

वातातपरजोहीनैवेश्मन्युत्तानशायिनः । अभितोमाषचूर्णेनक्लिन्नेनपरिपिण्डितौ ॥ समौदृढौचसम्बोधौकर्त्तव्यौनेत्रकोशयोः । पूरयेत्घृतमण्डेनविलीनेनसुखोदकैः ॥ सर्पिषाशतधौतेनक्षीरजेनघृतेनवा । निमग्नान्यक्षिपक्ष्माणियावत्स्युस्तावदेवहि ॥ पूरयेन्मीलितेनेत्रेततउन्मीलयेच्छनैः । भिषग्भिरेषाविख्यातस्तर्पणस्योदितोविधिः ॥ यद्रूक्षश्चपरिष्पन्दिनेत्रंकुटिलमाविलम् । शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम् ॥ तिमिरार्जुनशुक्राद्यैरभिष्पन्दाधिमन्थकैः । शुष्काक्षिपाकशोथाभ्यांयुतंवातविपर्य्ययैः ॥ दत्तेनतर्पयेत्सम्यङ्नेत्ररोगविशारदः । तर्पणंधारयेद्वर्त्मरोगेवातांशतंबुधैः ॥ स्वस्थेकफेसन्धिरोगेवांचांपञ्चशतानिच । षट्शतानिकफेकृष्णारोगेसप्तशतानिहि ॥ दृष्टिरोगेशतान्यष्टावधिमन्थेसहस्रकम् । सहस्रंवातरोगेषुधार्यमेवहितर्पणम् ॥ पूर्णेचापाङ्गमार्गेणस्रावयित्वाक्षिशोधयेत् । स्विन्नेनयवपिष्टेनस्नेहवीर्येरितंततः ॥ यथास्वन्धूमपानेनकफमस्यविरेचयेत् । एकाहंवाऽप्यहंवापिपञ्चाहंतर्पणञ्चरेत् ॥ तर्पणेतृप्तिलिङ्गानिनेत्रस्यैतानिलक्षयेत् । सुखंस्वप्नावबोधत्वंवैशद्यंनेत्रपाटनम् ॥ निर्वृत्तिर्व्याधिशान्तिश्चक्रियालाघवमेवच । निर्वृत्तिःसुखंक्रियालाघवम् । नेत्रस्यक्रियायांनिमेषोन्मेषादौ

लघुता । गुर्वीविलमतिस्निग्धमश्रुकण्डूपदेहवत् ॥ घर्षतोदयुतंनेत्रमतितर्पितमादिशेत् ॥ आस्रावशोफपीड़ाथमुपदेहसमाकुलम् । रूक्षमस्रावमरुणंनेत्रंस्याद्धीनतर्पितम् ॥ अनयोर्दोषबाहुल्यात्प्रयतेतचिकित्सिते ॥ रूक्षस्निग्धोपचाराभ्यामेतयोःस्यात्प्रतिक्रिया ॥ (अनयोःअतितर्पितहीनतर्पितयोः) दुर्दिनात्यूष्णशीतेषुचिन्तायांसंभ्रमेषुच । अशान्तोपद्रवेचाक्षितर्पणंनप्रशस्यते २३५ ॥

तर्पणकी विधि ॥

वायु धूप और धूलरहित स्थानमें रोगीको चित्तलिटाकर उर्दकी पिट्ठीसे दोनों नेत्रोंमें कटोरीके समान मज़बूत घेराबनावे और नेत्र बन्दकराकर उसमें टिघलाहुआ घी मांड़ गरमजल सौबेरका धोया हुआ अथवा दूधसे निकालाहुआ घी जबतक पलकें न डूबजायँ तबतक भरे फिर धीरे २ रोगीसे नेत्र खुलवावे यह वैद्यलोगोंने तर्पणकी विधि वर्णनकी है रूखापन सूखना कुटिलता मैलापन पलकोंका गिरना सिराओंका उत्पात कठिनतासे खुलना तिमिर अर्जुन शुक्र अभिष्यन्द अधिमंथपाक सूजन और बात विपर्यय इनदोषों वाले नेत्रोंमें तर्पणबिधि उत्तमकही है वर्त्मरोगमें एकसौ मात्रातक कफकी स्वस्थता तथा सन्धिरोगमें पांचसौमात्रा कफरोगमें छःसौमात्रा कृष्ण रोगमें सातसौमात्रा दृष्टिरोगमें आठसौमात्रा और अधिमन्थ तथा वातरोगमें हज़ार मात्रातक [illegible]णका धारणकरनाचाहिये यह पंडितों का मतहै फिर नेत्रके कोनेसे उसभरेहुए पदार्थको निकालकर जौके आटेसे स्नेहवीर्य (नेत्रोंमें तेल आदि लगानेसे जो क्लेशहो) कानाश और नेत्रोंका शोधनकरे फिर यथायोग्य धूमपान कराकर कफ निकलवावे एकदिन तीनदिन अथवा पांच दिनतक तर्पणकरे अच्छे प्रकारसे तर्पण होजानेके यह लक्षण हैं कि सुखपूर्वक निद्रा नेत्रोंकी निर्मलता सामर्थ्यसुख खोलने मूंदने में शीघ्रता और रोगकी शान्ति बहुत तर्पण होनेसे भारीपन मैलापन बहुत चिकनापन आंसुओंका बहना खुजली रगड़नेसे पीड़ा और उपदेह (नेत्रोंका लिपाहुआ सा होना) होताहै तर्पणके अच्छे प्रकारसे नहोनेपर आंसुओंका बहना सूजन पीड़ा ललाई रूखापन मैलापन और उपदेह होताहै तर्पणकी अधिकता और हीनतामें दोषोंकी अधिकता होनेमें चिकित्साकरे रूखे और स्निग्ध उपचारोंसे इनकी चिकित्सा होतीहै मेघसे छायेहुये दिनमें अत्यन्त उष्ण तथा शीतकालमें चिन्तामें भ्रममें और उपद्रवोंके शान्त न होनेमें नेत्रोंका तर्पण न करना चाहिये ॥ २३५ ॥

अथ पुटपाकविधिः ॥

द्वेविल्वेस्निग्धमांसस्यपरद्रव्यपलंमतम् । द्रवस्यकुड़वोन्मानंसर्वमेकत्रपेषयेत् ॥ तदेकत्रसमालोड्यपत्रैःसुपरिवेष्टितम् । पुटपाकविधानेनतत्पश्चात्तद्रसंबुधैः । तर्पणोक्तेन विधिनायथावदवधारयेत् ॥ दृष्टिमध्येनिषेक्तव्यःस्यान्नित्यमुत्तानशायिनः । स्नेहनोलेखनश्चैवरोपणश्चेतिसत्रिधा ॥ हितःस्निग्धोऽतिरूक्षस्यस्निग्धस्यसतुलेखनः । दृष्टेर्बलार्थःइतरःपित्तासृग्व्रणवातनुत् ॥ (इतरोरोपणः) स्नेहमांसवसामज्जामेदःस्यादोषवैःकृतः । स्नेहनःपुटपाकःस्याद्धार्योऽयंवाक्शतंनरः ॥ जांगलानांयकृन्मांसैर्लेखनद्रव्यसंयुतैः । कृष्णलोहरजस्ताम्रशंखविद्रुमसिन्धुजैः ॥ समुद्रफेनकासीससंस्रोतोऽञ्जदाधमिस्तुभिः । लेखनोवाक्शतंतस्यपरंधारणमिष्यते ॥ स्तन्यजांगलमध्वाज्यतिक्तद्रव्यविपा

चितम्। लेखनात्त्रिगुणोधार्यःपुटपाकस्तुरोपणः ॥ (तिक्तकद्रव्याण्याह) निम्बामृतावृषपटोलानिदिग्धिकाभिःस्यात्पंचतिक्तकइतिप्रथितोगणोऽयम् ॥ आचरेत्तर्पणोक्तांतुक्रियांव्यापत्तिदर्शने । व्यापत्तिदर्शनेमिथ्याकृतपुटपाकजनितव्याधिदर्शने ॥ तेजांस्यनिलमाकाशमादर्शम्भास्वराणिच । नेक्षेततर्पितेनेत्रेयश्चवापुटपाकवान् ॥ २३६ ॥

पुटपाककी विधि ॥

स्निग्ध मांसके दोपल अन्यओषधी एकपल औरपतली वस्तु आठपल इनसबको एकसाथ पीसकर एकमेंमिलायकर पुटपाककी विधिसे पत्तोंमें लपेटकर पाककरे फिर रोगीको चित्त लिटाकर पुटपाक में कही हुई विधि के अनुसार इन औषधियोंका रस नेत्रमें छोडे स्नेहन रोपण और लेखन भेद से पुटपाक तीनप्रकारका है अत्यन्त रूखे को स्नेहन स्निग्धको लेखन और दृष्टि में बल उत्पन्न करने केलिये रक्तपित्त घाव तथा वातके शान्त करने के लिये रोपण पुटपाक हितकारी है स्नेह मांस चरवी मज्जा मेद और मधुर औषधियों के द्वारा स्नेहन पुटपाक होता है यह दोसौ वाक्य उच्चारण पर्य्यन्त नेत्रों में धारण करना चाहिये जांगलपशुओं की यकृत तथा मांस लेखन औषध काले लोहकाचूर्ण तांबा शंख मूंगा सेंधानोन समुद्र फेन कसीस सुरमा और दहीका तोड़ इनसब वस्तुओं से लेखन पुटपाक होताहै यहएकसौ वाक्य उच्चारण पर्य्यन्त धारण करनाचाहिये दूध जंगली पशुओंकी मज्जा तथा घी और तिक्त द्रव्य (नींब गिलोय बांसा परवल और भटकटैया यहसब मिलकर पंचतिक्तक कहाते हैं) केद्वारा रोपण पुटपाक होताहै यहतीन सौ वाक्य उच्चारण पर्य्यन्त धारण करना चाहिये पुटपाक के बिगड़ जानेसे रोगोंके उत्पन्न होनेपर तर्पण में कहीहुई क्रिया के द्वारा चिकित्सा करे तर्पण अथवा पुटपाक के उपरान्त तेजयुक्त पदार्थ बायु आकाश दर्पण और चमकीली वस्तुओं को नदेखे ॥ २३६ ॥

अथाञ्जनविधिः ॥

अथसंपक्कदोषस्यप्राप्तमञ्जनमाचरेत्। अंजनंक्रियतेयेनतद्द्रव्यंचांजनंमतम्(तद्यथा) रसोवटीस्तथाचूर्णमितित्रिविधमंजनम्।यथापूर्वंबलंतेषुस्नेहमाहुर्मनीषिणः ॥ २३७ ॥

अंजनकी विधि ॥

दोषोंके परिपाक होजाने पर यथा योग्य अंजनकरे जिन वस्तुओंका नेत्रमें अंजन लगाया जाता है उनको अंजन कहते हैं अंजन तीन प्रकार का है गोली रस और चूर्ण यहक्रम से उत्तरोत्तर अधिक बलतथा स्नेह से युक्त होते हैं ॥ २३७ ॥

तत्प्रत्येकंत्रिधाप्रोक्तंलेखनंरोपणंतथा॥स्नेहनंचेतिलिङ्गानितेषांविस्तरतःशृणु ॥ लेखनंक्षारतीक्ष्णाम्लरसैरंजनमुच्यते । नेत्रवर्त्मशिराजालश्रोत्रशृंगाटकस्थितम् ॥ मुखनासाक्षिभिर्दोषमुत्क्लिश्यस्रावयेच्चतत् । कषायंतिक्तकंचापिसस्नेहंरोपणंमतम् ॥ स्नेहस्यशैत्यात्वर्ण्यंस्यातदृष्टेश्चबलवर्द्धनम्। मधुरंस्नेहमण्डंतदंजनंस्यात्प्रसादनम् ॥ दृष्टिदोषप्रसादार्थंस्नेहनार्थञ्चतद्धितम् । ऐरण्डमात्रावर्त्तिस्तुलेखनीस्यात्प्रमाणतः ॥ सार्द्धहरेणुकमितारोपणीवार्त्तिरिष्यते । क्रियतेस्नेहनीवर्त्तिर्द्विहरेणुकमात्रया ॥ रसांजनस्यमात्रातुपिष्टावर्त्तिमितामता ॥ २३८ ॥

यहलेखन रोपण और स्नेहन भेदसे तीन२ प्रकार के हैं क्षार तीक्ष्ण तथा खट्टी वस्तुओं से जो अंजन बनताहै उसको लेखन कहतेहैं लेखन अंजन लगाने से नेत्रवर्त्म शिरा कान और शृंगाटक में स्थित दोष मुख नासिका तथा नेत्रों के द्वारा उखड़कर निकल जाता है कषैली तिक्त वस्तु और स्नेह के द्वारा जो अंजन बनता है उसको रोपण कहते हैं रोपण अंजन स्नेहकी शीतलता से वर्ण का उत्तम करने वाला और नेत्रों के बलकाबढ़ाने वाला होताहै मधुर वस्तु और स्नेह के द्वारा जो अंजन बनता है वह स्नेहन कहाताहै दृष्टिके दोषोंकीशान्ति और स्नेहन के लिये यह श्रेष्ठ होताहै अंजन लगानेके लिये लेखनीवर्त्ति (सलाई) हरेणु (गगनधूल) के समान रोपणी वर्ति (सलाई) डेढ़ हरेणु के समान परिमाणवाली और स्नेहनी वर्ति दोहरेणुके समान परिमाणवाली होती है और रसांजन की मात्रा पिष्ट वर्ति के समान होती है ॥ २३८ ॥

चूर्णान्तुलेखनंवैद्यैर्द्विशलाकंप्रदीयते । रोपणंत्रिशलाकंस्याच्चतस्रःस्नेहनांजने ॥ (च तस्रःशलाकाःस्नेहनांजनेचूर्णे) मुखेयामुकुलाकाराकलायपरिमण्डला । अष्टांगुलाशलाकास्यादश्मजाधातुजाथवा ॥ (कलायपरिमण्डलाअग्रेकलायवद्वर्त्तुला)ताम्रलोहाश्मसंजाताशलाकालेखनेमता । सुवर्णरजतोद्भूतास्नेहनेसमुदाहृता ॥ अंगुलीचमृदुत्वेन रोपणेसंप्रयुज्यते । कृष्णभागावधिंलिम्प्यादपांगंयावदंजनम् ॥ हेमंतेशिशिरेचैवमध्याह्नेऽञ्जनमिष्यतेपूर्वाह्णेवापराह्णेवाग्रीष्मेशरदिचेष्यते । वर्षास्वनभ्रेनात्युष्णेवसंतेतुसदैवहि ॥ अथवासर्वदाप्रातःसायंवाञ्जनमाचरेत् । नातिशीतोष्णवाताभ्रेवेलायांतत्प्रयुज्यते ॥ श्रान्तोऽथरुदितेभीतेपीतमद्येनवज्वरे । अजीर्णेवेगघातेचनांजनंसंप्रयुज्यते ॥ रागोपदेहौतिमिरंशूलंसंरम्भमेवच । निद्राक्षयंचकुरुतेनिषिद्धयुक्तमंजनम् ॥ २३९ ॥

लेखन अंजन का चूर्ण दोशलाका निरूपण का तीनशलाका और स्नेहनका चारशलाका प्रयोग करना चाहिये शलाका मुखमें फूलकी कली के समान अग्रभागमें मटर के समान गोल आठ उंगल की लम्बी पत्थर अथवा धातुकीहोनी चाहिये लेखनमें ताम्र लोह अथवा पत्थर की शलाका स्नेहन में चाँदी अथवा सुवर्ण की शलाका और रोपणमें कोमलताके कारण शलाकाके स्थानमें उंगली का व्यवहार करना चाहिये नेत्रके कृष्ण भागसे लेकर कोरतक अंजन लगाना चाहिये हेमन्त तथा शिशिरऋतुमें मध्याह्न के समय ग्रीष्म तथा शरदऋतुमें पूर्वाह्ण अथवा पराह्णमें वर्षामें मेघ रहित अथवा अत्यन्त उष्णतासे रहित समय में और वसन्त ऋतुमें सदैव अंजन लगाना उचितहै अथवा सम्पूर्ण ऋतुओं में प्रातःकाल और सायंकाल में अंजन लगाना चाहिये अत्यन्त शीत उष्ण वायु और मेघों से राहित समय में अंजन लगाना चाहिये थकाहुआ रोदन कियाहुआ भययुक्त मद्यपिये हुआ नवीन ज्वरवाला अजीर्णवाला और मल मूत्र आदिवेगों का धारण करने वाला इनसबको अंजन लगाना हितकारी नहीं है निषिद्ध अवस्था में अंजन लगानेसे ललाई नेत्रलियेहुए से मालूम होना तिमिर शूल घबराहट और निद्राका नाश होताह ॥ २३९ ॥

अथ वटालेखनीयथा ॥

शङ्खनाभिविभीतस्यमज्जापथ्यामनःशिलाः । पिप्पलीमरिचंकुष्ठंवचाचेतिसमांशकम् ॥ छागक्षीरेणसंपिष्यवर्त्तिंकुर्याद्यवोन्मिताम् । एरण्डमात्रांसंपिष्यजलैःकुर्याद्यथा

ञ्जनम् ॥ तिमिरंमांसवृद्धिंचकाचंपटलमर्बुदम् । राज्यन्धंवार्षिकंपुष्पंवर्त्तिश्चन्द्रोदया हरेत् ॥ (इतिचन्द्रोदयावर्त्तिलेखनी) २४० ॥

लेखनी बत्ती ॥

शंख की नाभि बहेड़ेकी मींगी हड़ मैनशिल पीपल मिर्च कूट और बच यह सम्पूर्ण समभाग बकरी के दूधमें जोंके समान बत्ती बनावे फिर इसको हरेणु के परिमाण जल में पीसकर अंजन लगावे यहचन्द्रादेय नामबत्ती तिमिर मांसवृद्धि काच पटल अर्बुद रतौंधी और कालेतिलकी फुल्लीको नष्ट करतीहै ॥ २४० ॥

अथ रोपणीवर्त्तिः ॥

अशीतिस्तिलपुष्पाणिषष्टिःपिप्पलितण्डुलाः । जातीपुष्पाणिपंचाशन्मरिचानितु षोड़शः ॥ सूक्ष्मपिष्टाम्बुनावर्त्तिःकृताकुसुमकाभिधा । तिमिरार्जुनशक्राणांनाशिनीमां सवृद्धिनुत्॥एतस्याअंजनेप्रोक्तामात्रासार्द्धहरेणुका।(इतिकुसुमिकारोपणीवर्टी) २४१ ॥

रोपणी बत्ती ॥

तिल के फूल अस्सी पीपल के दानेसाठ चमेली के फूल पचास और मिर्च सोलह इनको जल से खूब पीसकर बत्ती बनावे इसको कुसुमिका कहतेहैं इसके अंजन लगानेसे तिमिर अर्जुन शुक्र और मांसवृद्धि का नाश होताहै इसकी मात्रा आधे हरेणुकी होतीहै ॥ २४१ ॥

अथ स्नेहनीवर्त्तिः ॥

धात्र्यक्षपथ्याबीजानिएकद्वित्रिगुणानिच । पिष्ट्वावर्त्तिञ्जलैःकुर्य्यादंजनंद्विहरेणुक म् ॥ नेत्रस्रावंहरत्याशुवातरक्तरुजन्तथा ॥ २४२ ॥

स्नेहनी बत्ती ॥

आमले के बीज एकभाग बहेडे के बीज दो भाग और हडके बीज तीन भाग इनसबको पानी में पीसकर बतीबनावे इसकी मात्रा दो हरेणु होतीहै इसके द्वारा आंसुओं का बहना और बात रक्त की पीड़ा का नाशहोताहै ।। २४२ ॥

अथ रसक्रियालेखनी ॥

तुत्थमाक्षिकसिन्धूत्थासिताशंखमनःशिलाः । गैरिकंसिन्धुफेनंचमरिचंचेतिचूर्णयेत् । संयोज्यमधुनाकुर्य्यादञ्जनार्थंरसक्रियाम्।वर्त्मरोगार्मतिमिरंकाचशुक्रहरींपराम् ॥२४३॥

लेखनीरस क्रिया ॥

तूतिया सोना मक्खी सेंधानोन चीनी शंख मैनसिल गेरू समुद्रफेन और मिर्च इनसबकाचूर्ण करके सहतके साथ अंजन लगावे इस्से वर्त्मरोग अर्म्म तिमिर काच और शुक्ररोगका नाशहोताहै२४३॥

अथ रोपणोरसक्रिया ॥

रसाञ्जनंसर्जरसोजातीपुष्पंमनःशिलाः । समुद्रफेणोलवणंगैरिकंमरिचन्तथा ॥ एत त्समांशंमधुनापिष्टंप्रक्लिन्नवर्त्मने । अञ्जनंक्लेदकण्डूघ्नंपक्ष्मणाञ्चप्ररोहणम् ॥ २४४ ॥

रोपणी रसक्रिया ॥

रसौत राल चमेलीकेफूल मैनसिल समुद्रफेन सेंधानोन गेरू और मिर्च इनसबको समभाग सहत में पीसकर अंजन लगानेसे क्लिन्नवर्त्म क्लेद तथा खुजली का नाशहोताहै और पलकें उगती हैं ॥ २४४॥

अथ स्नेहनीरसक्रिया ॥

कतकस्यफलंघृष्ट्वामधुनानेत्रमञ्जयेत्। ईषत्कर्पूरसाहितंस्मृतन्नेत्रप्रसादनम्॥ २४५ ॥

स्नेहनीरस क्रिया ॥

निर्मली को सहत के साथ पीसकर कुछ कपूर मिलाकर अंजन लगानेसे नेत्र निर्मल होते हैं ॥ २४५ ॥

अथ चूर्णीतल्लेखनंयथा ॥

दक्षाण्डत्वच्छिलाकाचशङ्खचन्दनसैन्धवैः । अञ्जनंहरतेनित्यंसर्वानक्षिगदान्बलात्॥(दक्षःकुक्कुटःतथाचनिघण्टुः)कृकवाकुस्तथादक्षःकालज्ञोऽथाशिखण्डिकइति॥२४६॥

लेखन चूर्ण ॥

मुर्गे के अंडेके छिलके मैनसिल कचनोन शंख लालचन्दन और सेंधानोन इनको समभाग चूर्ण कर अंजन लगाने से नेत्रके सम्पूर्ण रोग नष्ट होते हैं ॥ २४६ ॥

अथ रोपणचूर्णम् ॥

शिलायांरसकंपिष्ट्वासम्यगाप्लाव्यवारिणा । गृह्णीयात्तज्जलंसर्वन्त्यजेच्चूर्णमधोगतम् ॥ शुष्कंतच्चजलंसर्वंपर्पटीसन्निभंभवेत्। विचूर्ण्यभावयेत्सम्यक्त्रिवेलंत्रिफलारसैः । कर्पूरस्यरजस्तत्रदशमांशेननिःक्षिपेत्। अञ्जयेन्नयनन्तेनसर्वदोषप्रशान्तये ॥ समस्त नेत्ररोगघ्नंचूर्णमेतन्नसंशयः ॥ २४७ ॥ रोपणचूर्ण ॥

खपरियाको शिलपर पीसकर पानीमें घोले फिर थोड़ीदेर रक्खकर ऊपरके पानीकोलेले और नीचेके बैठेचूरेको फेंकदे पीछे उस जलको सुखाकर जो पपड़ीसी जमें उसको पीसकर तीनबार त्रिफलाके रसमें भावनादे और उसमें दशमांश कपूर मिलाकर अंजनलगावे इस्से निस्संदेह नेत्रके संपूर्ण रोग नष्ट होते हैं ॥ २४७ ॥ अथ स्नेहनंचूर्णम् ॥

अग्नितप्तंहिसौवीरंनिषिञ्चेत्त्रिफलारसैः । सप्तवेलंतथास्तन्यैःस्त्रीणांसिक्तंविचूर्णितम् ॥ (सौवीरंश्वेतमञ्जनम्) अञ्जयेत्तेननयनेप्रत्यहंचक्षुषोर्हितम् । सर्वानक्षिविकारांस्तुहन्यादेतन्नसंशयः ॥ २४८ ॥ स्नेहन चूर्ण ॥

सफेद सुरमाको आगमेंतपा २ कर सातवार त्रिफलेके रसमें और सातबार स्त्रीके दूधमें बुझावे फिर पीसकर निरन्तर अञ्जन लगानेसे निस्सन्देह सम्पूर्ण नेत्रके रोग नष्ट होतेहैं ॥ २४८ ॥

अथ प्रत्यञ्जनविधिः ॥

गतदोषमपेताश्रुप्रपश्येत्सम्यगम्भसि । प्रक्षाल्याक्षियथादोषंकार्य्यंप्रत्यञ्जनन्ततः ॥ तथानिर्वातदोषेक्षिधावनंसम्प्रयोजयेत् । प्रत्यञ्जनेकृतेदद्याच्चूर्णंतीक्ष्णप्रसादनम्॥ (तद्यथा) शुद्धनागेन्द्रतुल्यन्तुशुद्धंसूतंविनिक्षिपेत् । कृष्णाञ्जनंतयोस्तुल्यंसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥ दशमांसेनकर्पूरंतस्मिंश्चूर्णेविनिःक्षिपेत्। एतत्प्रत्यञ्जनंनेत्रेगदाजिन्नयनामृतम्॥ (कृष्णाञ्जनंश्रोतोऽञ्जनम् तथाचमदनपालः) श्रोतोऽञ्जनन्तुतद्विद्यादञ्जनाभंयदञ्जनम्॥ (नयनामृतंप्रत्यञ्जनम्) ॥ २४९ ॥

प्रत्यंजनकी विधि ॥

दोषतथा अश्रुरहित अच्छे प्रकार खुलेहुए नेत्रोंको जल से अच्छीरीति पर धोकर दोष के अनुसार प्रत्यंजन क्रियाकरे परन्तु दोषोंकी शान्तिहुए बिना नेत्रोंको न धोवे ऐसी अवस्थामें तीक्ष्ण चूर्णके द्वारा प्रत्यंजन क्रियाकरे शुद्धसीसेको टिपलाकर समभाग शुद्धपारा मिलावे और इनदोनों के समान काला सुरमा मिलाकर पीसले फिर दशमांश कपूर मिलाकर अंजन लगावे इस प्रत्यंजन से नेत्रोंके संपूर्ण रोग नष्ट होतेहैं यह नेत्रोंके लिये अमृत समान है यह नयनामृत प्रत्यंजन है॥ २४९॥

अथ दृष्टिप्रसादनीशलाका ॥

त्रिफलाभृङ्गशुण्ठीनांरसैस्तद्वच्चसर्पिषा । गोमूत्रमध्वजाक्षीरैः सिक्तोनागःप्रतापितः तच्छलाकांहरत्येवसर्वान्नेत्रभवान्गदान् । (इतिभेषजानांविधानानि) ॥ २५० ॥

दृष्टि प्रसादिनी शलाका ॥

सीसेको आगमें तपा२कर क्रमसे त्रिफलेकारस भंगरेकारस सोंठकारस घी गोमूत्र सहत और बकरी के दूधमें बुझावे फिर इस सीसेकी सलाई बनवावे यह सलाई संपूर्ण नेत्रोंके रोगोंको दूर करती है इति औषधियों के बनाने की बिधि ॥ २५० ॥

अथ भेषजभक्षणसमयः ॥

भैषज्यमभ्यवहरेत्प्रभातेप्रायशोबुधः । कषायांस्तुविशेषेणतत्रभेदस्तुदर्शितः ॥ ज्ञेयः पञ्चविधःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम् । किञ्चित्सूर्य्योदयेजातेतथादिवसभोजने ॥ सायन्तनेभोजनेचमुहुश्चापितथानिशि ॥ २५१ ॥

औषधखाने के समय लिखते हैं ॥

बहुधा औषध खाना प्रातःकालही उचित है और क्वाथ तो बिशेष करके प्रातःकालही सेवनकरनाचाहिये मनुष्यों के औषध खाने के पांच समय कहेगये हैं कुछ सूर्य के उदय होने पर दिनके भोजन के समय सायंकाल के भोजन के समय बारम्बार और रात्रि में ॥ २५१ ॥

तत्रप्रथमकालः ॥

प्रायःपित्तकफोद्रेकेविरेकवमनार्थयोः । लेखनार्थंचभैषज्यंप्रभातेऽनन्नमाहरेत्॥ २५२ ॥

पहलासमय ॥

बहुधा पित्त तथा कफकी वृद्धि में और बिरेचन बमन तथा लेखन के निमित्त प्रातःकाल बिना भोजन किये औषध खाना चाहिये ॥ २५२ ॥

अथद्वितीयकालः ॥

भैषज्यंविगुणेपानेभोजनाग्रेप्रशस्यते । अरुचौचित्रभोज्यैश्चमिश्रंरुचिरमाहरेत् ॥ समानवातेविगुणेमन्देऽग्नावतिदीपनम् । दद्याद्भोजनमध्येचभैषज्यंकुशलोभिषक् ॥ व्यानकोपेतुभैषज्यंभोजनान्तेसमाहरेत् । हिक्काक्षेपककम्पेषुपूर्वमन्तेचभोजनात्॥२५३॥

दूसरा समय ॥

अपान वायुके कुपित होने पर भोजन के पहले औषध खाना चाहिये अरुचि में अनेक प्रकारके सुन्दर भोजनों में मिलाकर औषध खानाचाहिये समान वायुके कोप तथा मन्दाग्नि में भोजन के

मध्य अत्यन्त दीपन औषध देनी चाहिये व्यानवायु के कोपहोने पर भोजन के अन्तमें औषध देनी चाहिये और हिचकी आक्षेप तथा कंपहोने पर भोजन के पहले और पीछे औषध देनोचाहिये २५३ ॥

अथ तृतीयकालः ॥

उदानेकुपितेवातेस्वरभंगादिकारिणि । ग्रासेग्रासांतरेदेयंभैषज्यंसांध्यभोजने ॥ प्राणेप्रदुष्टेसांधस्यभुक्तस्यांतेप्रदीयते।औषधंप्रायशोधीरैःकालोऽयंस्यात्तृतीयकः२५४॥

तीसरा समय ॥

स्वर भंग आदिक रोगोंके उत्पन्न करने वाले उदान बायु के कुपित होनेपर सायंकाल के भोजन में हरएक ग्रासके बीचमें औषध देनीचाहिये और प्राण बायुके कुपित होने पर सात्म्य (हितकारी) भोजन के अन्त में औषध देनीचाहिये ॥ २५४ ॥

अथ चतुर्थकालः ॥

मुहुर्मुहुश्चतृट्छर्दिहिक्काश्वासगरेषुच। सान्नंचभेषजंदद्यादितिकालश्चतुर्थकः२५५॥

चौथा समय ॥

तृषा छर्दि हिचकी श्वास रोग और दोष के उत्पन्न होने पर अन्नके साथबारम्बार औषध देवे यह चौथा कालहै ॥ २५५ ॥ अथ पञ्चमकालः ॥

ऊर्ध्वजत्रुविकारेषुलेखनेबृंहणेतथा । पाचनेशमनेदेयमनन्नंभेषजंनिशि ॥ (इति पञ्चमकालः) २५६ ॥ पांचवां समय ॥

हंसली के ऊपर के रोगोंमें लेखन क्रिया में बृंहण में पाचनमें और शमनमें रात्रिके समय बिना भोजन कराये औषध देनी चाहिये ॥ २५६ ॥

निरन्नस्यभेषजस्यगुणमाह ॥

वीर्य्याधिकंभवतिभेषजमन्नहीनं हन्यात्तदामयमसंशयमाशुचैव ॥ तद्बालवृद्ध युवतीमृदुभिश्चपीतं ग्लानिंपरान्नयतिचाशुबलक्षयञ्च ॥ २५७ ॥

बिना भोजन किये औषध खाने के गुण ॥

बिनाभोजन किये खाई हुई औषध अधिक वीर्यवाली होतीहै इसीसे शीघ्र रोगोंका नाश करतीहै परन्त बालक वृद्ध युवती और कोमल शरीर वालोंको बिना भोजन किये औषध सेवन करनेसे अत्यन्त ग्लानि और बलकानाश होताहै ॥ २५७ ॥

सान्नस्यभेषजस्यगुणमाह ॥

शीघ्रंविपाकमुपयातिबलंनहिंस्यादन्नावृतन्नचमुहुर्वदनान्निरेति ॥ एतद्धितंस्थविरबालकृशाङ्गनाभ्यः प्राग्भोजनाद्यदशितंकिलतच्चतद्वत् ॥ (अन्नावृतवत्भेषजमितिशेषः) २५८ ॥

अन्नके साथ खाईहुई औषध के गुण ॥

भोजनके साथ सेवनकीहुई औषध शीघ्र परिपाक को प्राप्त होतीहै बलको नाश नहीं करती और बारंबार मुखसे बाहर नहीं निकलती यहवृद्ध बालक कृश और स्त्रियोंको हितकारीहै भोजन से पहले खाईहुई औषधि के भी यही गुणहैं ॥ २५८ ॥

औषधशेषेभुक्तंभोजनशेषेयदौषधंपीतम् । नकरोतिगदोपशमंप्रकोपयत्यन्यरोगां श्च ॥ (पीतमित्युपलक्षणंलीढादिकंच) अनुलोमोऽनिलःस्वास्थ्यंक्षुत्तृष्णासुमनस्कताः । लघुत्वमिन्द्रियोद्गारशुद्धिर्जीर्णौषधाकृतिः ॥ क्लमोदाहोऽङ्गसदनंभ्रममूर्च्छाशिरोरुजः । अरतिर्बलहानिश्चसावशेषौषधाकृतिः ॥ २५९ ॥

खाईहुई औषधि के बिनापरिपाक हुए भोजन करनेसे और भोजन के बिना परिपाक हुए औषधि खाने से रोगशान्ति नहीं होतीहै किन्तु अन्यरोगों की वृद्धि होतीहै वायुकी अनुलोमता (नीचेजाना) स्वस्थता क्षुधा तृषा मनकी प्रसन्नता इन्द्रियोंका हलकापन और डकार की शुद्धता यह औषधि के परिपाक होने के लक्षणहैं और औषधिके परिपाक न होनेपर ग्लानि दाह अंगोंमें शिथिलता भ्रांति मूर्च्छा शिर में पीड़ा बेचैनी और बलका नाश होताहै ॥ २५९ ॥

अथ भेषजलक्षणविधिमाहचरकः ॥

देवान्गुरूंस्तथाविप्रान्पूजयित्वाप्रणम्यच । आशिषश्चसमादायश्रद्धयाभेषजंभजेत् ॥ रसायनामिवर्षीणांदेवानाममृतंयथा । सुधेवोत्तमनागानांभैषज्यमिदमस्तुते ॥ ब्रह्मदक्षाश्विरुद्रेन्द्रभूचन्द्रार्कानिलानलाःदेवाश्चसौषधिग्रामाभूमिदेवाश्चपांतुवः२६०॥

चरकमें कहीहुई औषध खानेकी विधि ॥

देवता गुरू और ब्राह्मणों को पूजन तथा प्रणाम करके और उनके आशीर्बादोंको लेकर औषध का सेवनकरे जैसे ऋषियोंको रसायन देवताओंको अमृत और सर्पोंको सुधा उपकारी होतीहै उसी प्रकार यह तुमको हितकारी हो ब्रह्मा दक्ष अश्विनीकुमार रुद्र इन्द्र पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य्य वायु अग्नि ऋषि सम्पूर्ण औषधि और ग्राम तथा पृथ्वीके देवता तुम्हारी रक्षाकरें यह आशीर्बादके बचनहैं२६०॥

औषधंहेमरजतमृद्भाजनपरिस्थितम् । पिवेदाप्तजनस्याग्रेप्रसन्नवदनेक्षणः॥विश्रान्तस्तूपविश्यायथपीत्वापात्रमधोमुखम्। निःक्षिप्याचम्यसलिलंताम्बूलाद्युपयोजयेत्२६१॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचिते भावप्रकाशेपञ्चमंप्रकरणं चिकित्सायांसप्ताङ्गानिसम्पूर्णानि ॥ ५ ॥

श्रम रहित बैठकर और नेत्र मुखको प्रसन्नकरके अपने हितकारी पुरुषोंके आगे सोने चांदी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें औषध पीकर पात्रको औंधादे फिर जलसे मुखको धोकर ताम्बूलादिकखाय २६१ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितभावप्रकाशस्यभाषानुवादे पञ्चमप्रकरणचिकित्साकेसातोंअंगसम्पूर्ण ॥

अथ चिकित्सार्थंरोगिणःपरीक्षातत्रवाग्भटः ॥

दर्शनस्पर्शनप्रश्नैस्तंपरीक्षेतरोगिणम् । आयुरादिदृशःस्पर्शाच्छीतादिप्रश्नतःपरम्॥

आयुरादिआदिशब्दात्साध्यत्वासाध्यत्वादिदृशादर्शनेनअत्रसम्बन्धादिभ्यश्चभावेक्विप् ।

स्पर्शनशीतादिशीतोष्णमृदुकठिनत्वादिनाड़ीपरीक्षणंवा । प्रश्नतःउदरलाघवगौरव तृषाऽतृषावुभुक्षाऽबुभुक्षाबलाबलादि ॥ मिथ्याद्दष्टाविकाराहिदुराख्याताःस्तथैवचातथादुष्परिपृष्टाश्चमोहयेयुश्चिकित्सकान् ॥ (तत्रदर्शनंनेत्रजिह्वामूत्रादीनांकर्त्तव्यम्)॥१ ॥

चिकित्साकेलिये रोगीकी परीक्षा ॥

बाग्भटने कहाहै कि दर्शन स्पर्श और प्रश्नके द्वारा रोगीकी परीक्षा करनी चाहिये दर्शनके द्वारा आयु साध्यता तथा असाध्यता आदि स्पर्शके द्वारा शीतलता उष्णता कोमलता तथा कठोरता आदिक अथवा नाड़ी और प्रश्नकेद्वारा उदरका हलकापन भारीपन तृषा तृषाका न होना क्षुधा क्षुधाका न होना तथा बलाबल आदिकी परीक्षा करनीचाहिये अच्छेप्रकारसे बिना देखे विचारपूर्वक बिना कहे और भलीभांति बिना पूंछे वैद्यको अच्छेप्रकारसे रोगका ज्ञान नहीं होताहै नेत्रजिह्वा और मूत्र आदि की परीक्षा दर्शनसे करनी चाहिये ॥ १ ॥ तत्रनेत्रपरीक्षायथा ॥

नेत्रंस्यात्पवनाद्रूक्षंधूम्रवर्णंतथारुणम् ॥ कोणंगतंप्रविष्टंचतथास्तब्धविलोकनम् ॥ हरिद्राखण्डवर्णंवारक्तंवाहरितंतथा ॥ दीपद्वेषिसदाहञ्चनेत्रंस्यात्पित्तकोपतः ॥ चक्षुर्बलासबाहुल्यात्स्निग्धंस्यात्सलिलप्लुतम् ॥ तथाधवलवर्णञ्चज्योतिर्हीनंबलान्वितम् ॥ नेत्रंद्विदोषबाहुल्यात्स्याद्दोषद्वयलक्षणम् ॥ त्रिदोषलिंगसङ्कुलतन्मारयातिरोगिणम् ॥ त्रिदोषदूषितंनेत्रमन्तर्मग्नंभृशंभवेत् । त्रिलिंगंसलिलस्रावित्रान्तेनोन्मीलयत्यपि ॥ २ ॥

नेत्र परीक्षा ॥

बायु के कोपमें नेत्र रूखे धूमले तथा रक्तवर्ण भीतर को घुसेहुए और स्तब्ध दृष्टि वाले होते हैं पित्तके कोपमें नेत्र हल्दीके समान वर्णवाले रक्त अथवा हरे दाहयुक्त और दीपकको न देखसकने वाले होते हैं कफके कोपमें नेत्र स्निग्ध (चिकने) आंशूभरे श्वेतवर्ण तेजरहित और बलयुक्त रहते हैं दो दोषों की अधिकता में दो दोषों के लक्षण मालूम होतेहैं और त्रिदोष के कोप में नेत्र भीतर को बहुत घुसेहुए सदैव आंशूबहते हुए कोरोंमें खुलेहुए और तीनों दोषोंके लक्षणोंसे युक्त होते हैं त्रिदोष के सम्पूर्ण लक्षण होनेपर रोगी मरजाते हैं ॥ २ ॥

अथ जिह्वापरीक्षा ॥

शाकपत्रप्रभारूक्षास्फुटनारसनानिलात् । रक्ताश्यावाभवेत्पित्तात्श्लिष्टार्द्राधवलाकफात् ॥परिदग्धाखरस्पर्शाकृष्णादोषत्रयेऽधिके।सैवदोषद्वयाधिक्येदोषद्वितयलक्षणम् ॥३॥

जिह्वा परीक्षा ॥

बायुके कोपमें जिह्वा सागके पत्तोंके समान कांतिवाली रूखी तथा कटीहुई होतीहै पित्तके कोपसे रक्तवर्ण अथवा धूसर वर्णवाली होतीहै कफके कोपसे लिपीहुई गीली और श्वेतवर्ण होतीहै दो दोषोंकी अधिकतामें दो दोषोंके लक्षण होतेहैं और त्रिदोषके कोपमें जिह्वा जली हुई सीगऊ की जिह्वाके समान कठोर स्पर्शवाली और कृष्ण वर्ण होती है ॥ ३ ॥

अथमूत्रपरीक्षा ॥

वातेनपाण्डुरंमूत्रंरक्तंनीलञ्चपित्ततः । रक्तमेवभवेद्रक्ताद्धवलंफेनिलंकफात् ॥ (अथ शरीरस्यशैत्योष्णत्वादिज्ञानार्थंस्पर्शनंकार्य्यम्) ॥ ४ ॥

मूत्रपरीक्षा ॥

बायुसे पांडु बर्ण पित्तसे रक्त अथवा नीलबर्ण रुधिरसे रक्तबर्ण और कफसे श्वेत तथा फेनेसे युक्त मूत्र होताहै शरीरकी शीतलता और उष्णता आदिक जाननेकेलिये स्पर्श करना चाहिये ॥ ४ ॥

तत्रनाड़ीपरीक्षामाह ॥

पुंसोदक्षिणहस्तस्यस्त्रियोवामकरस्यतु । अंगुष्ठमूलगांनाड़ींपरीक्षेतभिषग्वरः ॥ अंगुलीभिस्तुतिसृभिर्नाड़ीमवहितःस्पृशेत् । तच्चेष्टयासुखंदुःखंजानीयात्कुशलोऽखिलम् ॥ सद्यःस्नातस्यसुप्तस्यक्षुत्तृष्णातपशीलिनः । व्यायामश्रान्तदेहस्यसम्यक्नाड़ीनबुध्यते ॥ वातेधिकेभवेनाड़ीप्रव्यक्तातर्जनीतले । पित्तेव्यक्तामध्यमायांतृतीयांगुलिकाकफे ॥ तर्जनीमध्यमामध्येवातपित्ताधिकेस्फुटा । अनामिकायांतर्जन्यांव्यक्तावातकफेभवेत् ॥ मध्यमानामिकामध्येस्फुटापित्तकफेऽधिके । अंगुलित्रितयेऽपिस्यात्प्रव्यक्तासान्निपाततः ॥ वाताद्वक्रगतिन्धत्तेपित्तादुत्प्लुत्यगामिनी । कफान्मन्दगतिर्ज्ञेयासन्निपातादतिद्रुता ॥ वक्रमुत्प्लुत्यचलतिधमनीवातपित्ततः । बहेद्वक्रञ्चमन्दञ्चवातश्लेष्माधिकंत्वतः । उत्प्लुत्यमन्दञ्चलतिनाड़ीपित्तकफेऽधिके ॥ कामात्क्रोधाद्वेगवहाक्षीणाचिन्ताभयप्लुता ॥ स्थित्वास्थित्वाचलेद्यासाहान्तिस्थानच्युतातथा । अतिक्षीणाचशीताचप्राणान्हन्तिनसंशयः ॥ ज्वरकोपेनधमनीसोष्णावेगवतीभवेत् । मन्दाग्नेःक्षीणधातोश्चसैवंमन्दतरामता ॥ चपलाक्षुधितस्यस्यात्तृप्तस्यभवतिस्थिरा । सुखिनोस्थिराज्ञेयातथाबलवतीमता ॥ ५ ॥

नाड़ी परीक्षा ॥

पण्डित वैद्य पुरुषके दाहिनेहाथकी और स्त्रीके बायेंहाथकी अंगूठेके मूलमें स्थित नाड़ीकी परीक्षा करे सावधान होकर तीन उंगलियोंसे नाड़ीको स्पर्श करे और उसकी चेष्टासे सम्पूर्ण सुख तथा दुःखको जानले शीघ्र स्नान कियेहुएकी सोयेहुएकी भूखेकी प्यासेकी धूपसे संतप्तकी और व्यायाम के द्वारा थकेहुए की नाड़ी अच्छेप्रकारसे नहीं मालूम होतीहै वायुकी अधिकता में तर्जनी के नीचे पित्तकी अधिकता में मध्यमा के नीचे और कफकी अधिकता में तीसरी अनामिका उंगलीके नीचे नाड़ी अधिक फड़कतीहुई मालूम होती है बात पित्तकी अधिकता में तर्जनी तथा मध्यमाके बीचमें कफ बातकी अधिकतामें अनामिका और तर्जनीके नीचे और पित्त कफकी अधिकतामें मध्यमा तथा अनामिकाके बीच में नाड़ीका फड़कना अधिक मालूम देताहै सन्निपातमें तीनों उंगलियोंके नीचे सम मालूम होतीहै बायुकी अधिकतामें वक्रगतिवाली पित्तकी अधिकतामें उछल२कर चलनेवाली कफकी अधिकतामें मन्दगतिवाली और सन्निपात में बहुत शीघ्र चलनेवाली होतीहै बात पित्तकी अधिकतामें टेढ़ी और उछल २ कर चलनेवाली बात कफकी अधिकतामें टेढ़ी और धीरे २ चलनेवाली तथा कफ पित्तकी अधिकतामें धीरे२ उछल २ कर नाड़ी चलनेवाली होतीहै कामसे अथवा क्रोधसे बेगवती और चिन्ता अथवा भयसे नाड़ीक्षीण होतीहै जो नाड़ी ठहर २ कर चले अपनेस्थानसे हटजाय अत्यन्त क्षीण होय अथवा अत्यन्त शीतल होय वह नाड़ी निस्सन्देह प्राणोंको नाशकरतीहै ज्वरके कोपमें नाड़ी उष्ण और बेगवती होतीहै मन्दाग्नि और क्षीण धातुवालेकी नाड़ी अत्यंत

मन्द होती है भूखेकी नाड़ी चंचल तृप्तकी नाड़ी स्थिर और सुखी पुरुषकी नाड़ी स्थिर और बलवती होतीहै ॥ ५ ॥ अथ येनयेनरोगाणांज्ञानंस्यात्तत्तदाह ॥

हेतुस्तदनुसंप्राप्तिंपूर्वरूपञ्चलक्षणम् । तथैवोपशयःपञ्चरोगविज्ञानहेतवः ॥ ६ ॥

जिनके द्वारारोगका ज्ञान होताहै उनका बर्णन ॥

हेतु संप्राप्ति पूर्वरूप लक्षण और उपशय यह पांचरोगोंके जाननेके कारणहैं ॥ ६ ॥

तत्रहेतोर्लक्षणमाह ॥

यत्तुनस्याद्विनायेनतस्यतद्धेतुरुच्यते । शास्त्रेसंव्यवहारायतत्पर्यायान्प्रचक्ष्महे ॥ निदानंकारणंहेतुर्निमित्तंचनिबन्धनम् । मूलमायतनंतत्रप्रत्ययोऽपिनिगद्यते ॥ (तत्र हेतुर्व्याधीनांज्ञानायहेतुर्यथा) वर्षारूक्षश्रमहिमानशनानि मैथुनशोकचिन्ताभयादयो वातप्रकोपहेतवोवातजान्व्याधीन्बोधयन्ति । शरत्कट्वम्लोष्णतीक्ष्णक्रोधतृषाक्षुधाभिघातातपादयः ॥ पित्तप्रकोपहेतुःपित्तजान्व्याधीन्बोधयन्ति । वसन्तमधुरस्निग्धशीतादयःकफप्रकोपहेतवःकफजान्व्याधीन्बोधयन्ति ॥ ७ ॥

हेतुका लक्षण ॥

जिसके बिना जो कार्य्य न होसके उसे हेतु कहतेहैं निदान कारण हेतु निमित्त निबन्धन मूल आयतन यह उसके नाम चिकित्सा शास्त्रमें व्यवहारके निमित्त कहेगयेहैं उसमें हेतुरोगोंके जानने के लिये कहागयाहै जैसे बर्षाकाल रुक्षता परिश्रम शीत उपवास मैथुन शोक चिन्ता और भय आदिक बायुके कोप होनेके हेतुहैं यह बातजरोगोंको उत्पन्न करतेहैं शरद्ऋतु कटु तथा खट्टी बस्तु उष्ण तथा तिक्ष्ण बस्तु क्रोध तृषा क्षुधा चोट और धूप आदिक पित्तके कोपके कारणहैं इनके द्वारा पित्तके रोग उत्पन्न होतेहैं बसन्तऋतु मधुर तथा स्निग्धबस्तु और शीतादिक कफके कोपके हेतु हैं इनसबकेद्वारा कफकेरोग उत्पन्न होते हैं ॥ ७ ॥

अथ संप्राप्तिर्लक्षणमाह ॥

यथादुष्टेनदोषेणयथाचानुविसर्पता । उत्पत्तिर्यामयस्यासौसंप्राप्तिर्जातिरागतिः ॥ यथादुष्टेनदोषेणयथाकारणभेदेनदोषेणयथाचानुविसर्पिता । अनेकधादोषाणांविसर्पता मूर्द्धाधस्तिर्यगादिगतिभेदेन । तथाचविसर्पता । आमयस्ययाउत्पत्तिः । असौसंप्राप्तिः । शास्त्रव्यवहारायसंप्राप्तेः पर्य्यायानाहजातिरागतिरिति ॥ ८ ॥

संप्राप्तिका लक्षण ॥

कारणके अनुसार दोषको प्राप्तहुए दोष ऊपर नीचे और तिरछे फैलकर जैसे रोगोंको उत्पन्नकरतेहैं उसको संप्राप्ति कहते हैं जाति और आगति यह उसके नामहैं ॥ ८ ॥

संप्राप्तेरौपाधिकभेदानाह ॥

संख्याविकल्पप्राधान्यबलकालविशेषतः । साभिद्यतेयथात्रैववक्ष्यन्तेऽष्टौज्वराइति ॥ संख्यादिरूपविरोधास्तेभ्यःसासंप्राप्तिर्भिद्यतेभेदवतीक्रियतइत्यर्थः । तत्रसंख्यांविवृणोति । यथाज्वरोऽष्टधाअतीसारःषड्विधइत्यादि ॥ ९ ॥

संप्राप्तिके उपाधिसे हुए भेद ॥

संख्या विकल्प प्राधान्य बल और काल इन विशेषोंसे संप्राप्तिके भेद होतेहैं संख्याकी विशेषता जैसे आगेकहेंगे कि आठप्रकारकेज्वर और छःप्रकारके अतीसार इत्यादि ॥ ९ ॥

विकल्पंविवृणोति ॥

दोषाणांसमवेतानांविकल्पोंऽशांशकल्पना । समवेतानांसमुदितानांदोषाणांअंशांशि कल्पनाहीनमध्याधिकभेदैर्भागकल्पनाविकल्पः (प्राधान्यंविवृणोति) स्वातन्त्र्यपारतं त्राभ्यांव्याधेःप्राधान्यमादिशेत् ।व्याधेःस्वातन्त्र्येणप्राधान्यंपारतन्त्रेणऽप्राधान्यंचवदेदि त्यर्थः।यथास्वतन्त्रस्यज्वरस्यप्राधान्यंज्वराधीनानांश्वासादीनामप्राधान्यम् (बलंविवृणो ति)हेत्वादिकात्स्न्यावयवैर्बलाबलविशेषम् । अत्रापिव्याधेरित्यनुवर्ततेहेत्वादेःहेतुपूर्वरूप रूपाणाम् । कात्स्न्येनसाकल्येनअवयवैःएकदेशेनव्याधेरबलाबलयोर्विशेषणम्।विशेषबो धः (कालंविवृणोतिः)नक्तंदिनर्तुभुक्तांशैर्व्याधिकालोयथामलम् ॥ नक्तमत्राव्ययंरात्रि वाचकम् । एतेनैतदुक्तंयस्मिन्नक्तादिरंशोयस्यदोषस्यप्रकोपउक्तोऽस्तिसोंऽशस्तस्यदोष जस्यव्याधेःकालइत्यर्थः । नक्तादेरंशेषुवातादेप्रकोपेउक्तोवाग्भटेन । तेव्यापिनोऽपिह न्नाभ्योरधोमध्योर्द्ध्वसंश्रयाः ।वयोऽहोरात्रिभुक्तानामन्तमध्यादिगाःक्रमादिति ॥वातपि त्तकफाः (ऋतुषुवातादिकोयथा) वर्षासुशिशिरेवायुःपित्तंशरदिउष्णके ॥ वसन्तेतुक फःकुप्येदेषाप्रकृतिरार्त्तवी १० ॥

बिकल्प परस्पर मिलेहुए बातादिक दोषों की अंशांश कल्पना अर्थात् बातादि दोषों में प्राप्त रूक्षता आदिका हीन मध्य और अधिक भेदोंके बिभागके निश्चयको विकल्प कहते हैं(इसरोगमें बातादि दोषों में से किसके कितने अंश हैं यह निश्चय करना) प्राधान्य स्वतन्त्रता और परतन्त्रतासे व्याधि की प्रधानता और अप्रधानताको क्रमसे जानना चाहिये जैसे स्वतन्त्र ज्वर की प्रधानता और उसके आधीन श्वासादिकों की अप्रधानता बल हेतु पूर्वरूप और रूप इनसंपूर्ण लक्षणों के होनेसे रोग का बलऔर इनमें से किसी २ के होनेसे अबल जानना चाहिये काल रात्रि दिन ऋतु और भोजन का समय इनमेंसे जोंनसा अंश जिस दोषकेकोप का कहागया है वही अंश उसीदोष से उत्पन्न हुए रोगका काल कहाजाता है रात्रि आदिकों के किस अंशमें किसदोषका कोप होताहै यह बाग्भट्टने कहाहै कि बातपित्त और कफ यह सम्पूर्ण शरीर में रहने वालेहोकर भी क्रमसे हृदय और नाभिके नीचे बीचमें और ऊपर रहतेहैं अवस्था दिन रात्रि और भोजन इनके अन्त मध्य और आदेमें क्रम से बातपित्त और कफका कोप होता है किस ऋतुमें किस दोषका कोप होताहै यह कहतेहैं जैसे कि वर्षा तथा शिशिर में बातका शरद् तथा ग्रीष्म में पित्तका और बसन्तमें कफका कोप होताहै ॥ १० ॥

(संप्राप्तिर्व्याधीनांज्ञानायहेतुर्यथा) मिथ्याहारविहारकुपितावाताद्यामाशयगमनर सदूषणकोष्ठाग्निबहिर्निस्सरणरूपंज्वरोत्पत्तिप्रकारम्बोधयति । तथाव्याधीनांसंख्यादो षांशकल्पनाप्राधान्यबलकालांश्चबोधयति । तेषुज्ञातेषुचिकित्साविशेषश्चस्यात् ११ ॥

संप्राप्ति रोगोंके जाननेका कारणहै ॥ जैसे नियम रहित आहार बिहारके द्वारा कुपित हुएबाता-

दिक दोष आमाशय में जानेसे रसको दूषित करने से और जठराग्निको बाहर निकलने से ज्वर की उत्पत्ति के प्रकार को प्रकट करते हैं इसीप्रकार रोगों की संख्या दोषों की अंशांश कल्पना प्राधान्य बल और काल यह प्रकट होते हैं और इन सम्पूर्णके ज्ञातहोनेपर बिशेषतासे चिकित्सा होतीहै ॥११॥

अथ पूर्वरूपस्य लक्षणमाह ॥

पूर्वरूपन्तुतद्येन विद्याद्भावीनमामयम् । सामान्यञ्चविशिष्टञ्च द्विविधंतदुदाहृतम् ॥ सामान्यंतत्रदोषाणां विशेषैरनधिष्ठितम् । विशिष्टमीषद्व्यक्तंस्याद्विशेषैश्चसमन्वितम् ॥ दोषाणांविशेषाः जृम्भातिशयनेत्रदाहाग्निमान्द्यादयः । तत्रपूर्वरूपंव्याधीनांज्ञानायहेतुर्यथा । श्रमादयोभाविनंज्वरंबोधयन्ति । अथचअतएवश्रमादयोऽतिशायितजृम्भायुक्ता भाविनंवातज्वरंनेत्रदाहयुक्ताः पित्तज्वरंवह्निमान्द्ययुक्ता भाविनंकफज्वरंबोधयन्ति॥१२॥

पूर्व रूपका लक्षण ॥

जिसके द्वारा होने वाला रोग निश्चितहोताहै उसको पूर्वरूप कहते हैं पूर्वरूप दो प्रकारका है सामान्य और बिशेष उनमेंसे दोषोंके जम्भाई बहुत नेत्रों का जलना और मन्दाग्नि आदि बिशेषोंसे जो युक्त नहो उसको सामान्य कहतेहैं और दोषोंके बिशेषों से युक्त कुछ प्रकट लक्षण वाले पूर्वरूप को बिशिष्ट कहते हैं पूर्वरूप रोगों के ज्ञानका कारण है जैसे श्रम आदिक से होने वाला ज्वर मालूम पडताहै और इसी श्रमआदिके साथ अत्यन्त जम्भाई आती हों तो होनेवाला बातज्वर जो नेत्रमें अत्यन्त दाहहो तो होने वाला पित्त ज्वर और जो मन्दाग्नि हो तो होने वाला कफ ज्वर मालूम होता है ॥ १२ ॥ अथलक्षणस्यलक्षणमाह ॥

पूर्वरूपंविशिष्टंयद्व्यक्तंतल्लक्षणंस्मृतम् । संस्थानंलिङ्गचिह्नञ्चव्यञ्जनंरूपमाकृतिः ॥ विशिष्टंपूर्वरूपम् । ईषद्व्यक्तंरूपम् । तदेवसम्यग्व्यक्तंलक्षणंस्मृतंतस्यशास्त्रे व्यवहारायपर्यायानाहसंस्थानमित्यादि लक्षणंव्याधेर्ज्ञानायहेतुर्यथा । स्वेदावरोधःसन्तापःसर्वागग्रहणन्तथा।युगपद्यत्ररोगेतुसज्वरःपरिकीर्त्तितः॥युगपदेतल्लक्षणंज्वरंबोधयति॥१३॥

लक्षण का लक्षण ॥

बिशिष्ट पूर्वरूप जो अच्छे प्रकार से प्रकट हो तो उसको लक्षण कहते हैं संस्थान लिंग चिह्न व्यंजन रूप और आकृति यह लक्षण के नाम हैं लक्षण रोगों के जानने का कारण है जैसे कि स्वेद का मालूम होना संताप और सब शरीर में पीडा यह संपूर्ण लक्षण जिसरोग में होयँ उसको ज्वर कहते हैं ॥ १३ ॥ अथोपशयस्यलक्षणमाह ॥

औषधान्नविहाराणामुपयोगंसुखावहम्।नृणामुपशमंविद्यात्सहिसात्म्यमितिस्मृतः॥१४॥

उपशय का लक्षण ॥

सुखदायक औषध अन्न और बिहारके सेवन को उपशय कहतेहैं और इसको सात्म्यभी कहतेहैं॥१४॥

तत्रवातस्योपशममाह ॥

मधुरलवणसाम्लस्निग्धनस्योष्णनिद्रा गुरुरविकरवस्तिस्वेदसम्मर्दनानि । दधिजलदाशेषाभ्यङ्गसन्तर्पणानि प्रकुपितपवमानंशान्तमेतानिकुर्युः ॥ १५ ॥

वायु का उपशय ॥

मधुर अम्ल लवण तथा स्निग्ध वस्तु नासलेना उष्ण वस्तु निद्रा भारीवस्तु धूप वस्ति क्रिया स्वेद मर्दन दही तेलकालगाना संतर्पण और वर्षाका अन्त यह सम्पूर्ण कुपित वायुको शान्त करतेहैं १५॥

अथ पित्तस्योपशममाह ॥

तिक्तस्वादुकषायशीतपवनच्छायानिशाव्यञ्जन ज्योत्स्नाभूगृहयन्त्रवारिदजलंस्त्रीगात्रसंस्पर्शनम् । सर्पिःक्षीरविरेकसेकरुधिरस्रावप्रदेहादिकं पानाहारविहारभेषजमिदं पित्तप्रशान्तिन्नयेत् १६ ॥

पित्तका उपशय ॥

तिक्त मधुर कषैली तथा शीतलवस्तु वायु छाया रात्रि पंखा चांदनी तहखाना फव्वारे का जल कमल स्त्रियों के अंगका स्पर्श घी दूध विरेचनसेक रुधिर निकलवाना और लेप आदिक इन सम्पूर्ण पान आहार बिहार और औषधों के द्वारा पित्त शान्त होता है ॥ १६ ॥

अथ कफस्योपशममाह ॥

रूक्षाक्षारकषायतिक्तकटुकव्यायामनिष्ठीवनं धूमान्युष्णशिरोविरेकवमनस्वेदोपवासादिकम् । स्त्रीसेवाध्वनियुद्धजागरजलक्रीड़ाङ्गनासेवनं पानाहारविहारभेषजमिदंश्लेष्माणमुग्रंहरेत् ॥ जलक्रीड़ाकफंकथंहरति । तदाह । जलक्रीड़ाजनितशैत्येनावरुद्धोष्मापङ्कलिप्ताभितः पाकाग्निरिवोग्रोभूत्वाकफंशोषयतीतिसमाधिः ॥ उपशमोव्याधेर्ज्ञानायहेतुर्यतउक्तंचरकेण । गूढ़लिंगंसंकीर्णलक्षणंचव्याधिमुपशमानुपशमाभ्यांपरीक्षेदिति। तथाचसुश्रुते । अभ्यङ्गस्वेदनस्नेहैर्विकारोवातिकस्तुयः । नशाम्येत्तत्रविज्ञेयोरक्तमत्रास्तिदूषितम् १७ ॥

कफका उपशय ॥

रुक्ष क्षार कषैली तिक्त तथा कटुवस्तु व्यायाम थूकना धूम उष्णवस्तु नासलेना बमन स्वेद उपवास तृषा वायु मार्गचलना युद्ध जागना जलक्रीड़ा और मैथुन इनसबपान आहार बिहार और औषधके सेवनसे बहुत बढ़ाहुआभी कफ शान्त होताहै जलक्रीडा किसप्रकारसे कफको शान्तकरती है इसका उत्तर कहतेहैं कि जलक्रीड़ा से उत्पन्न हुये शीतके द्वारा रुकीहुई ऊष्मा सबओर पंकके लेप से रुककर बहुत प्रचंड होनेवाली पाककी अग्निके समान उग्र होकर कफको सुखातीहै उपशय रोगके ज्ञानका कारणहै क्योंकि यह चरकने कहाहै कि छिपे हुये लक्षणवाले और मिलेहुये लक्षण वाले रोगोंकी उपशय और अनुपशय से रक्षाकरे और सुश्रुतने भी कहा है किजो तैलादि लगाना स्वेद और स्नेहके द्वारा वातजनित रोग शान्त न होय तो रुधिरको दूषित जाननाचाहिये ॥ १७ ॥

सर्वेषामेवरोगाणांनिदानंकुपितामलाः । तत्प्रकोपस्यतुप्रोक्तंविविधाहितसेवनम् ॥ सर्वेषांरोगाणांनिदानंसंनिकृष्टंकारणम् । कुपितास्वहेतुदुष्टामलाःवातपित्तकफाएवेत्यन्वयः (तथाचवाग्भटः) दोषाएवहिसर्वेषांरोगाणामेककारणमिति । नन्वागन्तुजव्याधिषु व्यभिचारःस्यात् । तन्न । तत्राप्युत्पत्त्यनंतरंदोषप्रकोपस्यावश्यम्भावित्वात् । उत्पन्नद्रव्येषुगुणयोगस्येव (उक्तंचचरके) आगन्तुर्हियथापूर्वोजायते । पश्चान्निजैर्दोषैरनुबध्य

तइति । तत्प्रकोपस्यतु । दोषप्रकोपस्यतु । निदानम् । विविधानिनानाविधानि । यान्य हितान्यसात्म्यान्याहारविहारादीनि । तेषांसेवनम् १८ ॥

अपने कारणों से दोषयुक्त बात पित्त और कफ यही तीनों संपूर्ण रोगोंके समीपी कारण हैं और अनेक प्रकारके अहितकारी आहार बिहार आदिकोंका सेवन दोषोंके कोपका कारणहै और ऐसाही वाग्भटने कहाहै कि बात पित्त और कफ यही संपूर्णरोगोंके मुख्य कारणहैं अब यह शंका होतीहै कि कि आगन्तुक रोगोंमें बातादिक दोष कारण नहीं होते हैं इसका उत्तर यहहै कि जैसे कोई वस्तु जब उत्पन्न होलेतीहै तब उसमें गुणोंका संयोग होता है उसप्रिकार आगन्तुक रोगोंके उत्पन्न होतेही दोषोंका कोप होताहै और चरकनेभी कहाहै कि पहले आगन्तुक रोग उत्पन्नहोताहै फिर अपने दोषों से युक्त होजाताहै ॥ १८ ॥

यथावायोः प्रकोपस्यनिदानानि ॥

नीवारास्त्रिपुटःसतीनचणकःश्यामाकमुद्गाढ़की निष्पावश्चमकुष्ठंकश्चवरटामङ्गल्य कःकोद्रवः ॥ यद्द्रव्यंकटुकंसतिक्ततुवरंशीतञ्चरूक्षंलघु स्वल्पाशोविषमाशनंनिरशनं भुक्तेह्यजीर्णेऽशनम् ॥ भुक्तंजीर्णतरंपरिश्रमभरोगर्त्तादिकोष्णंघनं बाहुभ्यान्तरण न्तनोःप्रतपनंमार्गेऽतियानम्पदा ॥ दण्डादिप्रहतिस्तथोच्चपतनंधातुक्षयोजागरः मा र्गस्यावरणंव्यवायभृशतावातादिवेगाहतिः ॥ अत्यर्थंवमनंविरेचनमतिस्रावोऽधिकश्चा सृजो रोगान्मांसविहीनतातिमदनश्चिन्ताचशोकोभयम् ॥ वर्षाशैशिशिरोदिनस्यरज नेर्भागौत्तृतीयौघनाः प्राग्वातस्तुहिनंशरीरमरुतौदुष्टेरमीहेतवः ॥ नीवारःप्रसाधि काः । तीनीइतिलोके । त्रिपुटःखेसारीइतिलोके । सतीनःवर्त्तुलकलापःनिष्पावः । कोल शिम्बीसदृशफला । राजशिम्बिस्तस्याबीजमन्नंभवति । वरटिबराटिका । कुसुम्भबीजम् । बररेइतिलोके । मङ्गल्यकोमसूरः । विषमाशनम् । बहुस्तोकमकालेवाभुक्तंतद्विषमाशनम् । अतियानम् । पादाभ्यामतिचलनम् । तरोःप्रपतनम् । तरोरित्युपलक्षणम् । जागरःरात्रौ । वातादिवेगाहतिः । आदिशब्देनविण्मूत्राश्रुछिक्कोद्गारछर्दिशुक्रक्षुत्तृषोच्छ्वासनिद्राःसंगृह्य न्ते । दिनस्यत्रिधाविभक्तस्य । एवंरजनेश्च । यस्यपुनरुक्तिस्तेनतेनवातस्यातिदुष्टि र्बोद्धव्या ॥ १९ ॥ बायुके कोपके निदान ॥

तिन्नीके चावल खिसारी मटर चने सामा मूंग अरहड़ सेम मोठ कुसुमके बीज मसूर कोदों कटु तिक्त कषाय शीतल रूखी तथाहलकी बस्तु स्वल्प भोजन बिषमाशन [अधिक थोड़ावा बिनासमय के भोजन] उपवास भोजनके पचेबिना फिरभोजन करना भोजनका अच्छेप्रकार से पचजाना परिश्रम भार उष्णगर्त्त मेघ भुजाओंसे तैरना वृक्षादि गिरना बहुतपैदल चलना दांत आदिकी चोट उच्चस्थानसे गिरना धातुक्षय रात्रिमें जागना मार्गका रुकना अत्यन्त मैथुन बात मल मूत्र आंशू हिचकी डकार छर्दि वीर्य क्षुधा तृषा ऐंड़ाई तथा निद्राके वेगकारोकना अत्यन्त बमन अत्यन्त विरेचन बहुत रुधिर निकलवाना रोगसे मांसका घटना अत्यन्त काम चिन्ता शोक भय वर्षा शिशिरऋतु दिन तथा रात्रिका पिछला तिहाई भाग मेघ पूर्वकी बायु और हिम इनसबकेद्वारा शरीरकी बायु

कुपित होतीहै इनमेंसे जो २ बातें दोबार कहीगई हैं उनसे वायु अत्यन्त कुपित होता है यहजानना चाहिये ॥१६॥

अथ पित्तस्यप्रकोपकारणानि यथा ॥

कट्वम्लोष्णविदाहितीक्ष्णलवणक्रोधोपवासातपस्त्रीसम्भोगतृषाक्षुधाभिहननव्यायामध्यादिभिः । भुक्तेजीर्य्यतिभोजनेचशरदिग्रीष्मेतथाप्राणिनांमध्याह्नेचतथार्द्धरात्रसमयेपित्तप्रकोपोभवेत् ॥ (विदाहिलक्षणम्) विदाहिद्रव्यमुद्गारमम्लंकुर्य्यात्तथातृषाम्। हृदिदाहञ्चजनयेत्पाकंगच्छतितच्चिरात् ॥ (अन्यच्च) माषैस्तिलैःकुलत्थैश्चमत्स्यैर्मेषामिषेणच। गव्येणदधितक्रेणनृणांपित्तंप्रकुप्यति ॥ २० ॥

पित्तके कोपहोने के कारण ॥

कटु अम्ल लवण उष्ण विदाही (जो बस्तु खट्टी डकारलावे तृषा तथा हृदयमें दाह करे और बहुत देरमें पचे उसे विदाही कहते हैं) तथा तीक्ष्णवस्तु क्रोध उपवास धूप स्त्री प्रसंग तृषा तथा क्षुधाका रोकना व्यायाम मद्य भोजनके पचनेका समय शरद तथा ग्रीष्मऋतु मध्याह्न और अर्द्ध रात्रि यह सब पित्तके कोपके कारणहैं औरभी कहाहै कि उर्द तिल कुलथी मछली मेढेकामांस और गौका दही तथा मट्ठा इन सबसे पित्त कुपित होताहै ॥ २० ॥

अथ श्लेष्मप्रकोपकारणानि यथा ॥

गुरुपटुमधुराम्लस्निग्धमाषैस्तिलैश्च द्रवदधिदिननिद्राशीतसर्पिःप्रपूरैः ॥ प्रथमदिवसभागेरात्रिभागेऽपिचाद्ये भवतिहिकफकोपोभुक्तमात्रेवसन्ते ॥ प्रथमदिवसभागे त्रिधाविभक्तस्यदिवसस्यप्रथमभागे । एवंरात्रेश्चाद्यभागे ॥ ननुसर्व्वेषांरोगाणांनिदानं दोषाएवकिमन्यदप्यस्तीतिसंशयेचरकआह। निदानार्थकरोरोगोरोगस्याप्युपलक्ष्यते ॥ इतिरोगस्यनिदानार्थकरःनिदानस्यरोगोऽपिउपलक्ष्यतेदृश्यते। अत्रदृष्टान्तमाह ॥ तद्यथाज्वरसन्तापाद्रक्तपित्तमुदीर्य्यते। रक्तपित्ताज्वरस्ताभ्यांश्वासश्चाप्युपजायते॥ प्लीहाभिवृद्ध्याजठरंजठराच्छोफएवच। अर्शोभ्योजाठरंदुःखंगुल्मश्चाप्युपजायते ॥ प्रतिश्यायादथोत्कासःकासात्संजायतेक्षयः। अन्येत्वाहुर्मधुकोशे। रोगस्यरोगश्चेन्निदानंतथानिदानमित्येवोच्येत। तद्धिहायनिदानार्थकरइतिवचनमेतद्बोधयति। रोगस्यरोगोनिदानार्थकरः। निदानकार्य्यकरणेसहायः। निदानन्तुरक्तपित्तादीनकतिचिद्रोगान्प्रतिज्वरादिरेवहेतुरितिसिद्धान्तः। अतएवाग्रेस्पष्टमेवचरकः। कश्चिद्धिरोगोरोगस्यहेतुर्भूत्वेति। प्रथमस्यरोगस्यज्वरादेर्योदुष्टोदोषोहेतुः सएवपश्चाद्धिनोरक्तपित्तादेरपिरोगस्यहेतुः। सर्वेषामेवरोगाणांनिदानंकुपितामलाः ॥ इतिनियमात्तत्रयदारक्तपित्तादेरुपद्रवलक्षणयोगेनरोगत्वाविघातःस्यात्ततः सर्वेषामितिवचनंसामान्यम् । निदानार्थकरइतिविशेषवचनात् ॥ २१ ॥

कफ के कोपके कारण ॥

भारी लवण मधुर खट्टी तथा स्निग्धवस्तु उर्द तिल पतलीबस्तु दही दिनमेंसोना शीत परिश्रमादि का न करना दिन तथा रात्रिकी पहली तिहाई बसंत ऋतु और भोजन का अन्त यह सब कफके

कोप के कारण हैं केवल दोषही सम्पूर्ण रोगों के कारण हैं अथवा कोई औरभी इस सन्देहके दूरकरने को चरक ने कहा है कि एक रोग दूसरे रोगका निदान कार्य में सहायक होताहै जैसे ज्वरके संताप से रक्त पित्त उत्पन्न होताहै रक्तपित्त से ज्वर होता है और इनदोनोंसे राजयक्ष्मा रोगहोताहै प्लीहाके बहुत बढ़नेसे उदर और उदरसे सूजन उत्पन्न होतीहै बवासीरसे दुखदाई उदररोग और गुल्म उत्पन्नहोताहै जुक़ामसे खांसी और खांसी से क्षयरोग उत्पन्नहोताहै और लोगों ने मधुकोश में कहाहै कि जो रोगका रोगही निदानहैं तो पिछले बाक्यमें ऐसा न कहकर निदानार्थकर यह बचन कहागया है उससे यह प्रकट होता है कि एक रोग दूसरे रोगका निदान कार्य्यमें सहायकहोताहै परन्तु रक्तपित्त आदिक कुछ रोगों के ज्वरादिक ही कारण हैं यह सिद्धान्त है इसी से चरक ने कहाहै कि कोई रोग किसी रोग का कारणहोकर इत्यादि पहले ज्वर आदिक रोगका जो दोष युक्त दोष कारणहोताहै वही पीछे होनेवाले रक्त पित्त आदिकोंकाभी कारणहोताहै क्योंकि संपूर्ण रोगों के निदानकोपयुक्त दोषही होतेहैं यह नियमहै तबजो यहकहो किरक्त पित्त आदि कों में उपद्रवकालक्षण मिलेगा इस निमित्त उनको रोगन कहसकेंगे तो संपूर्ण इस बचनको सामान्य माननाचाहिये क्योंकि निदानार्थ कर यह विशेष वचनहै ॥ २१ ॥ रोगस्यहेतोरोगस्यवैचित्र्यमाह ॥

कश्चिद्धिरोगोरोगस्यहेतुर्भूत्वाप्रशाम्यति । यथाज्वरोरक्तपित्तमुत्पाद्यस्वयंप्रशाम्यतिननुयोदोषोद्रेकेणज्वरोरक्तपित्तमुत्पादितवांस्तस्मिन्सतिसतुज्वरःकथंशाम्यति । तत्रव्याधिस्वभावएवकारणमितिनदोषः । नप्रशाम्यतिचाप्यन्योहेत्वर्थंकुरुतेऽपिच । अन्योहेत्वर्थमपिकुरुतेस्वयञ्चनप्रशाम्यतियथाप्रतिश्यायः कासंकरोतिस्वयञ्चनप्रशाम्यति । तथार्शोजठरगुल्मौकरोतिस्वयञ्चननिवर्त्ततइति । (अथदोषधातुमलानांक्षीणानाञ्चचिकित्सामाहसुश्रुतः) अत्यन्तकुत्सितावेतौसदास्थूलकृशौनरौ । श्रेष्ठोमध्यशरीरस्तुस्थूलः क्षीणोनपूजितः ॥ कर्षयेद्वृंहयेच्चापिसदास्थूलकृशौनरौ । रक्षणञ्चापिमध्यस्यकुर्व्वीत कुशलोभिषक् ॥ (अन्यच्च) क्षपयेद्वृंहयेच्चापिदोषधातुमलान्भिषक् । नरोरोगान्वितोयावद्रोगेणरहितोभवेत् ॥ क्षपयेदतिप्रवृद्धान्दोषधातुमलांस्तत्रक्षैण्यहेतुभिरौषधान्नविहारैर्ह्रासयित्वासमीकुर्य्यात् । वृंहयेत् । क्षीणान्दोषादींस्तत्तद्वृद्धिहेतुभिरौषधान्नविहारैर्वर्द्धयित्वासमीकुर्य्यात् ॥ २२ ॥

रोगका रोगही कारणहै इसमें बिचित्रता कहते हैं ॥

कोई रोग किसीरोगको उत्पन्न करके शान्तहोजाता है जैसे ज्वर रक्त पित्तको उत्पन्न करके आप शान्तहोजाताहै अब यह सन्देह होताहै कि जिसदोषसे ज्वर रक्तपित्तको उत्पन्न करता है उस दोष के वर्त्तमानरहनेपर ज्वर किसप्रकार शान्तहोसक्ता है इसका उत्तर यह है कि रोगका स्वभावही इसका कारणहै कोईरोग अन्यरोगोंको उत्पन्न करतेहैं और आपनहीं शान्तहोते जैसे जुकाम खांसीको उत्पन्न करके आप नहीं शान्तहोता और बवासीर उदर तथा गुल्मरोगको उत्पन्नकरके आप नहीं शान्तहोती बढ़े हुए तथा क्षीणहुए दोष धातु और मलों की चिकित्सा सुश्रुतने कही है कि स्थूल और कृश यह दोनों प्रकार के मनुष्य अत्यन्त निन्दितहैं मध्यम शरीरवाला सबसे श्रेष्ठहै इस्से चतुरवैद्य स्थूलको कृश और कृशकोस्थूल करे और मध्य शरीरवालेकी रक्षाकरे रोगी के बढ़ेहुए दोष धातु और मलको

क्षीणकरने वाली औषधि अन्न और बिहारसे क्षीणकरकेसमकरे और क्षीणहुए दोष धातुतथामलको वृद्धिकरनेवाली औषधि अन्न और विहार से बढ़ाकर समकरे ॥ २२ ॥

अस्वस्थोयेनविधिनास्वस्थोभवतिमानवः । तमेवकारयेद्वैद्योयतःस्वास्थ्यंसदेप्सितं २३

जिसप्रकारसे बेचैन पुरुष सुचित्तहोजाय वही रीति वैद्यको करनीचाहिये क्योंकि सुचित्तताही को लोगसदैव चाहते हैं ॥ २३ ॥

स्वस्थस्यलक्षणमाह ॥

समदोषःसमाग्निश्चसमधातुमलक्रियाः । प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाःस्वस्थइत्यभिधीयते ॥ समक्रियः । शरीरानुरूपकर्मा । आत्माशरीरं । तन्त्रान्तरेऽपि । विण्मूत्राखिलदोषधातु समताकांक्षान्नपानेरुचिर्भुक्तंजीर्य्यतिदुष्टयेपरिणतिःस्वप्नावबोधैःसुखम् ॥ गृह्णीतोविष यान्यथास्वमुचितानुवृत्तिंमनोवृत्तितः स्वस्थस्याभिहितंचतुर्दशविधंजन्तोरिदंलक्षण म् ॥ रुचिःशरीरकान्तिःनन्वहर्निशंभुक्तवत्सुदोषाणांवृद्धेःकथंसमदोषता ।उच्यते । अ होरात्रप्रथमभागादिषुतत्तद्दोषवृद्धेःस्वस्थवृत्तोक्तविधि भिरुपशमात्समदोषतेतिनदोषः (किञ्च) यत्समत्वंहिदोषाणांभिषग्भिरवधार्य्यते । नततस्वास्थ्यंविनावक्तुंशक्यमन्येनहे तुना ॥ तेनसमदोषस्वस्थयोर्लक्षणमन्योन्यापेक्षयास्वस्थःसमदोषःस्वस्थःस्वस्थेभ्योहि तंचतत्दोषधातुमलानां स्वप्रमाणस्थितानां साम्यानुवृत्तिहेतुर्यद्व्यापच्चस्वस्थानुवृत्ति ङ्करोति । ऋतुचर्य्याध्यायेसेव्यत्वेनोक्तम् । तथामात्राशीलयेत्तृतीयेऽध्यायेरक्तशालिः षष्ठिकयवगोधूमजाङ्गलमांसजीवन्तीशाकादिमोदकक्षीरादि ॥ तथायदोजस्करंरसायनं वाजीकरणंसर्व्वदाशीलनीयत्वेननिर्द्दिष्टम् ॥ २४ ॥

स्वस्थ का लक्षण ॥

जिसके दोष अग्नि और धातु समहोंय शरीरके अनुरूप कार्य्यकरनेमें सामर्थ्य होय और शरीर इन्द्री तथामन प्रसन्न हो उसको स्वस्थ कहतेहैं और ग्रन्थान्तर में भी कहाहै कि मल मूत्र संपूर्ण दोषतथा धातुओं की समता अन्न तथा पान में रुचि शरीर में कांति भोजन का परिपाक होना तथा परिपक्व होकर पुष्टताकारी होना सुखपूर्व्वक निद्राआना यथायोग्य विषयों का ग्रहण करना और मनकी वृत्तिका ठीक होना यह १४ स्वस्थ के लक्षण हैं अब यह सन्देह होता है कि रात्रि दिन ऋतु और भोजन के अनुसार दोषोंकी वृद्धि होती है तो दोषों की समता कैसेहोसक्ती है इसका उत्तर यहहै कि रात्रि दिन के प्रथम आदिक भागों में दोषों की वृद्धिहोती है परन्तु स्वस्थके लिये कहीहुई बिधियों के द्वारा उसके शान्तहोजानेसे दोषों की समता होजातीहै इस से कोई दोष नहीं है किन्तु बैद्य लोग जिसको दोषों की समता कहते हैं वह स्वस्थता के विना और किसी हेतु से होनहीं सक्ती इससे दोषों की समता और स्वस्थता यह दोनों एकलक्षण वाले हैं तो स्वस्थको सम दोषऔर सम दोष को स्वस्थ कहसक्तेहैं जो बस्तु अपने प्रमाण में स्थितदोष धातुतथा मलकी समता करने वाली और स्वस्थता को बनाये रखने वाली होती है वह स्वस्थ लोगों कों हितकारी है ऋतुचर्य्या अध्याय में सेवन करने के योग्य जो बस्तु कही गई हैं मात्रा शीलयेत् इत्यादिक तृतीयाध्याय में लाल धान्य सांठी जौ गेहूं जंगलीपशुओं का मांस जीवन्ती आदि का शाक मोदक तथा दुग्धादिक जो कहे गये

हैं और ओज करने वाले रसायन तथा बाजीकरण यह संपूर्ण स्वस्थचित्तके लिये हितकारी हैं इनका सेवन करना चाहिये ॥ २४ ॥

अथ दोष धातु मलानांवृद्धेर्निदानान्याह ॥

तत्तद्वृद्धिकराहारविहारातिनिषेवणात्।दोषधातुमलानांहिवृद्धिरुक्ताभिषग्वरैः॥ २५ ॥

दोष धातु और मल की वृद्धि के निदान ॥

दोष धातु और मलको बढ़ाने वाले आहार विहारोंके अधिक सेवनसे इनकी वृद्धिहोतीहै ॥ २५ ॥

अतिवृद्धानां तेषांलक्षणान्याह ॥

वातेवृद्धेभवेत्काश्र्यंपारुष्यंचोष्णकामिता।गाढंमलंबलञ्चाल्पंगात्रस्फूर्तिर्विनिद्रता ॥ विण्मूत्रनेत्रगात्राणांपीतत्वंक्षीणमिन्द्रियम् । शीतेच्छातापमूर्च्छाःस्युःपित्तेवृद्धेऽल्पमूत्रता ॥ विड़ादिशौक्ल्यंशीतत्वंगौरवञ्चातिनिद्रता ॥ सन्धिशैथिल्यमुत्क्लेदोमुखसेकःकफेऽधिके ॥ रसेवृद्धेऽन्नविद्वेषोजायतेगात्रगौरवम् । लालाप्रसेकश्छर्द्दिश्चमूर्च्छासादोभ्रमःकफः ॥ प्रवृद्धंरुधिरंकुर्य्याद्गात्रमारक्तवर्णकम् । लोचनञ्चतथारक्तंशिराःपूरयतेऽपिच ॥ (अन्यच्च)रक्तन्तुकुरुतेवृद्धंविसर्पप्लीहविद्रधीन् । कुष्ठंवातास्रकंगुल्मशिरापूर्णत्वकामले ॥ गात्राणांगौरवंनिद्रामदोदाहश्चजायते ॥ व्यङ्गाग्निसादसंमोहरक्तत्वङ्नेत्रमूत्रताः ॥ गुदमेढ्रास्यपाकार्शःपिड़कामशकास्तथा ॥ इंद्रलुप्तांगमर्दास्रग्दरास्तापंकरांघ्रिषु । शमयेद्रक्तवृद्ध्युत्थान्रक्तस्रुतिविरेचनैः ॥ २६ ॥

बहुत बढ़ेहुए दोष धातु और मल के लक्षण ॥

बायु के बढ़ने पर कृशता चर्म में कठोरता उष्ण वस्तु में अभिलाषा मलका गाढ़ापन थोड़ाबल शरीर का फड़कना और निद्रा की हानि यह सब बातें होताहैं पित्त बढ़ने पर मल मूत्र नेत्र तथा शरीरकी पीतता इन्द्रियों की क्षीणता शीतकीइच्छा संताप मूर्च्छा और मूत्रकी अल्पता यहसब लक्षण होतेहैं कफ बढ़ने पर मल आदि की श्वेतता शीत भारीपन बहुत निद्रा संधियोंकी शिथिलतामतली और मुख से कफ गिरना यह लक्षण होतेहैं रस बढ़ने पर अन्न में अरुचि शरीर में भारीपनलार बहना छर्दि मूर्च्छा शिथिलता भ्रम और कफ की अधिकता यह लक्षण होतेहैं रुधिर बढ़नेपर शरीर तथा नेत्रों की रक्तता और सिराओं की रुधिर से पूर्णताहोती है और भी कहाहै कि रुधिर बढ़नेपर वीसर्प प्लीहा बिद्रधि कुष्ठवात रक्त गुल्म सिराओं का भरना कामला शरीर का भारीपन निद्रा मद दाह व्यंग मंदाग्नि मूर्च्छा त्वचा नेत्र तथा मूत्रकी रक्तता गुदा लिंग तथा मुख का पकना बवासीर फुंसी मस्से इन्द्रलुप्त शरीर का टूटना प्रदर और हाथ पैरों में संताप यह लक्षण होते हैं रुधिर के बढ़ने से उत्पन्न हुये रोगों को रुधिर के निकलवाने और विरेचन से शुद्धकरे ॥ २६ ॥

मांसवृद्धन्तुगण्डौष्ठस्फिगुपस्थोरुबाहुषु।जङ्घयोःकुरुतेवृद्धिंतथागात्रस्यगौरवम् ॥ उदरेपार्श्वयोर्वृद्धिंकासश्वासादयस्तथा । दौर्गन्ध्यंस्निग्धतागात्रेमेदोवृद्धौभवेदिति॥ (अन्यच्च)प्रवृद्धंकुरुतेमेदःश्रममल्पेऽपिचेष्टिते । तृट्स्वेदगलगण्डौष्ठंरोगमेहादिजन्मच ॥ श्वासंस्फिग्जठरश्रीवास्तनानांलम्बनंतथा । वृद्धान्यस्थीनिकुर्व्वन्तिअस्थीन्यन्यानिचा

स्थिषु॥आचरन्तितथादन्तान्विकटान्महतस्तथा। मज्जावृद्धसमस्तांगनेत्रगौरवमाचरेत्॥शुक्राश्मरीशुक्रवृद्धौशुक्रस्यातिप्रवर्त्तनम्। मलप्रवृद्धावाटोपोजायतेजठरेव्यथा॥मूत्रे मुहुर्मुहुर्मूत्रमाध्मानंवस्तिवेदना। स्वेदेवृद्धेतुदौर्गन्ध्यंत्वचिकण्डूश्चजायते॥ आर्तवातिप्रवृत्तिःस्याद्दौर्गन्ध्यञ्चार्त्तवेभवेत्। अंगमर्दश्चजायेतलिंगस्यादार्त्तवेऽधिके॥ स्तनयोरतिपीनत्वंक्षीरस्रावोमुहुर्मुहुः। तोदश्चतत्रभवतिस्तन्याधिक्यस्यलक्षणम्॥ उदरादिप्रवृद्धिस्तुवृद्धेगर्भेऽभिजायते। स्वेदश्चगर्भवत्याःस्यात्प्रसवेव्यसनंमहत्॥ २७॥

मांस बढ़नेपर कपोल ओष्ठ कूला लिंग जंघा भुजा और पिंडली की वृद्धि तथा शरीर में भारीपन होता है मेदबढ़नेपर उदर तथा पसलियोंमें वृद्धि खांसी श्वास आदिक रोग और शरीर में दुर्गन्धि तथा स्निग्धता होती है और भी कहागयाहै कि मेदबढ़नेपर थोड़ेसे काममें भी परिश्रम तृषा स्वेद गलगंड ओष्ठ रोग श्वास प्रमेहादिकरोग और कूला उदर ग्रीवा तथा दोनों स्तनों की वृद्धि यह सब लक्षण होते हैं हड्डियोंके बढ़नेपर हड्डीपरहड्डी निकलती हैं और दांत बिकट तथा बड़े होजाते हैं मज्जाबढ़नेपर सम्पूर्ण शरीर और नेत्रों में भारीपन होता है बीर्य बढ़नेपर वीर्य्य की पथरी उत्पन्न होती है और बीर्य अधिक गिरता है मलकी वृद्धिहोनेपर उदर में गड़गड़ाहट और पीड़ा होती है मूत्र बढ़ने पर बारम्बार मूत्रका बेग आध्मान और मूत्राशय में पीड़ा होती है स्वेद बढ़नेपर शरीरमें दुर्गन्धि और त्वचा में खुजली होती है आर्त्तव के बढ़नेपर आर्त्तव का बहुत गिरना आर्त्तव में दुर्गन्धि और शरीर में पीड़ा होती है दुग्धबढ़नेपर दूध का बारम्बार बहना और स्तनों में बहुत सुटाई तथा पीड़ा होती है गर्भ के बढ़नेपर उदर की बहुत वृद्धि स्वेद और प्रसव कालमें अत्यन्त दुःख होताहै२७॥

अथातिवृद्धानां दोषाणां मलानांह्रासनमाह॥

तत्तद्ह्रासकराहारविहारपरिषेवणात्। दोषधातुमलानांहिह्रासोनिगदितोनृणाम्॥ पूर्वःपूर्वोऽतिवृद्धत्वाद्वर्द्धयेद्धिपरःपरम्। तस्मादतिप्रवृद्धानांधातूनांह्रसनंहितम्॥ २८॥

बहुत बढ़ेहुए दोष तथा मलोंके घटानेका उपाय॥

दोष धातु और मलके घटानेवाले आहार विहारके सेवनसे इनकी क्षीणता होतीहै पहली २ धातुके बढ़नेसे पिछली २ धातुकी भी वृद्धि होती है इस्से बहुत बढ़ी हुई धातुओं का घटाना हितकारी है॥ २८॥ अथ दोषधातुमलानां क्षयस्यनिदानान्याह॥

असात्म्यान्नसदाक्रोधशोकचिन्ताभयश्रमैः। अतिव्यवायानशनात्यर्थसंशोधनैरपि॥ वेगानांधारणाच्चापिसाहसादभिघाततः। दोषाणामथधातूनांमलानाञ्चभवेत्क्षयः॥२९॥

दोषधातु और मलोंके क्षयके निदान॥

विरुद्ध अन्न सदैव क्रोध शोक चिन्ता भय श्रम अत्यन्त मैथुन लंघन वमन आदिकी अधिकता मलमूत्रादि वेगोंकाधारण सहसाकर्म और चोट इन कारणोंसे दोषधातु और मलका क्षयहोताहै२९॥

तेषांक्षीणानां लक्षणान्याह॥

वातक्षयेऽल्पचेष्टत्वंमन्दवाक्त्वंविसंज्ञता। पित्तक्षयेऽधिकश्लेष्मावह्निमान्द्यंप्रभाक्षयः॥ सन्धयःशिथिलामूर्च्छारौक्ष्यन्दाहःकफक्षये। हृत्पीड़ाकण्ठशोषौत्वक्शून्यातृट्

रसक्षये ॥ शिराःशैथिल्यमाम्लेच्छात्वक्पारुष्यंक्षयेऽसृजः । गण्डौष्ठकन्धरास्कन्धवक्षो जठरसन्धिषु ॥ उपस्थशोथपिण्डीषुशुष्कतागात्ररूक्षता । तोदोधमन्यःशिथिलाभवेयु र्मांससंक्षये ॥ प्लीहाभिवृद्धिःसन्धीनांशून्यतातनुरूक्षता । प्रार्थनास्निग्धमांसस्यलिंग स्यान्मेदशःक्षये ॥ अस्थिशूलन्तनौरौक्ष्यंनखदन्तत्रुटिस्तथा । अस्थिक्षयेलिंगमेतद्वैद्यैः सर्व्वैरुदाहृतम् ॥ शुक्राल्पत्वंपर्वभेदस्तोदःशून्यत्वमस्थिनि । लिंगान्येतानिजायन्तेनरा णांमज्जसंक्षये ॥ शुक्रक्षयेरतेशक्तिर्व्यथाशेफसिमुष्कयोः । चिरेणशुक्रसेकःस्यात्सेके रक्ताल्पशुक्रता ॥ ३० ॥

दोषादिकोंकी क्षीणताके लक्षण ॥

बायुके क्षय होनेपर चेष्टाकी अल्पता वाक्यकी मन्दता और संज्ञाका न होना यह लक्षण होतेहैं पित्तके क्षयहोनेपर कफकी वृद्धि शरीरमें कान्तिका न होना और मन्दाग्नि होतीहै कफके क्षयहोनेपर सन्धियोंकी शिथिलता मूर्च्छा रूखापन और दाह होताहै रसके क्षय होनेपर हृदयमें पीड़ा गलेकासू खनात्वचाकी शून्यता और तृषा होतीहै रुधिरके क्षय होनेपर सिराओंकी शिथिलता शीतल तथाखट्टी बस्तुओं में इच्छा और त्वचामें रूक्षता होती है मांसके क्षयहोनेपर कपोल ओष्ठ ग्रीवा कन्धे छाती उदर संधि लिंग नितंब तथा पिंडलियों मेंसूखापन रूक्षता पीड़ा और नाड़ियोंमें शिथिलता होतीहै मेदके क्षय होनेसे प्लीहाकी वृद्धि संधियोंकी शून्यता शरीरमें रूक्षता और स्निग्ध बस्तु तथा मांसमें अभिलाष होतीहै हड्डियों के क्षय होनेपर हड्डियोंमें पीड़ा शरीर में रूक्षता और नख तथा दांतोंकी हानि होती है मज्जाके क्षयहोनेपर वीर्यकी अल्पता पोरुओं में पीड़ा शरीरमें सुइयांसी चुभना और हड्डियोंमें शून्यता होतीहै वीर्य्यके क्षयहोनेपर मैथुन करने की शक्तिका न होना लिंग तथा अंडकोशोंमें पीड़ा और बहुत देरमें थोड़ा वीर्य रुधिर समेत गिरना यह लक्षण होते हैं ॥ ३० ॥

अथौजःक्षयस्यनिदानमाह ॥

ओजःसंक्षीयतेकोपाच्चिन्ताशोकश्रमादिभिः।रूक्षतीक्ष्णोष्णकटुकैःकर्षणैरपरैरपि ३१

ओजके क्षयका निदान ॥

क्रोध चिंता शोक तथा श्रमादिकों से और रूखी तीक्ष्ण उष्ण कटु तथा अन्य कृशताकारक बस्तुओं से ओजका क्षय होताहै ॥ ३१ ॥

अथ क्षीणौजसोलक्षणमाह ॥

विभेतिदुर्बलोऽभीक्ष्णञ्चिन्तयेद्व्यस्थितेन्द्रियः।अभ्युत्थायोन्मनारूक्षःक्षामःस्यादोजसः क्षये ॥पुरीषस्यक्षयेपाश्वेर्हृदयेचव्यथाभवेत्।सशब्दस्यानिलस्योर्द्ध्वगमनंकुक्षिसंवृतिः॥ (उदरसङ्कोचः) मूत्रक्षयेऽल्पमूत्रत्वंवस्तौतोदश्चजायते। स्वेदनाशेत्वचोरौक्ष्यञ्चक्षुषोर पिरूक्षता॥स्तब्धाश्चरोमकूपाःस्युर्लिंगस्वेदक्षयेभवेत्।आर्तवस्यस्वकालेचाभावस्तस्या ल्पताथवा ॥ जायतेवेदनायोनौलिङ्गंस्यादार्त्तवक्षये॥अभावःस्वल्पतावास्यात्स्वप्नस्यभव तस्तथा ॥ म्लानौपयोधरावेतल्लक्षणंस्तन्यसंक्षये ॥ अनुन्नतोभवेत्कुक्षिगर्भस्यास्पन्दन न्तथा ॥ इतिगर्भक्षयेप्राज्ञैर्लक्षणंसमुदाहृतम् ॥ ३२ ॥

ओजके क्षयका लक्षण ॥

ओजके क्षयहोनेसे भय दुर्बलता निरन्तर चिंताकरना इन्द्रियोंमें पीड़ा बुरीछाया मनमें विकलता और शरीरमें रूखापन तथा कृशताहोती है मलके क्षयहोनेपर पसली तथा हृदयमें पीड़ा होती है और शब्द सहित बायु ऊपर जातीहै और उदरमें संकोच होता है मूत्रके क्षय होनेपर मूत्रकी अल्पता और मूत्राशय में पीड़ा होती है स्वेदके नाशहोनेपर स्वेदका नाश त्वचा तथा नेत्रोंकी रूक्षता और रोम कूप जकड़जातेहैं आर्त्तवके क्षयहोनेपर समयके अनुसार आर्तवका न निकलना अथवा स्वल्प निकलना और योनि में पीड़ा यह लक्षण होते हैं दुग्धके क्षयहोनेपर दूधकी स्वल्पता अथवा अभाव और स्तनों में संकोच होताहै गर्भके क्षयहोनेपर उदरकाउन्नत न होना और गर्भका नफड़कना यह लक्षणहोते हैं ॥ ३२ ॥ अथक्षक्षीणानांधातुदोषमलानांबर्द्धनमाह ॥

तत्तत्संबर्द्धनाहारविहारातिनिषेवणात् ॥ तत्तत्प्राप्यनरःशीघ्रंतत्तत्क्षयमपोहति ॥ ओजस्तुबर्द्धतेनृणांसुस्निग्धैःस्वादुभिस्तथा ॥ वृष्यैरन्यैर्विशेषातुक्षीरमांसरसादिभिः ॥ (अन्यच्च)दोषधातुमलक्षीणोबलक्षीणेऽपिमानवः । तत्तत्संबर्द्धनंयत्तदन्नपानंप्रकांक्षते ॥ यद्यदाहारजातन्तुक्षीणःप्रार्थयतेनरः ॥ तस्यतस्यसलाभेनतत्तत्क्षयमपोहति ॥ ३३ ॥

क्षीण हुये धातु दोष तथा मलोंके बढ़ानेका उपाय ॥

दोषादिकों में से जो कोई क्षीणहुआहो उसके बढ़ानेवाले आहारबिहारोंके अत्यन्त सेवनसे क्षीणताका नाशहोताहै स्निग्ध मधुर तथा वृष्य (कामियोंकाहित) बस्तु और दूध तथा मांसके रसादिकों के सेवनसे ओजकी वृद्धि होती है औरभी कहागया है कि दोष धातु मल और बल इनमें से जो कोई क्षीण होताहै उसी के बढ़ानेवाली बस्तु पर रोगी की इच्छाहोती है इससे क्षीण पुरुष जिस २ पदार्थ की अभिलाषाकरे उसी २ बस्तुके सेवनसे क्षीणताका नाशहोता है ॥ ३३ ॥

तत्रकेनक्षीणःकिंकांक्षतीत्याकांक्षायामाह ॥

कषायकटुतिक्तानिरूक्षशीतलघूनिच॥यवमुद्गप्रियंगूश्चवातक्षीणोऽभिकांक्षति॥३४॥

किसकी क्षीणतामें किसपदार्थकी अभिलाषा होती है उसको कहते हैं ॥

वायुकी क्षीणताहोने पर कषैली कटु तिक्त रूखी शीतल तथा हलकी बस्तु यव मूंग और काकुनमें अभिलाष होताहै ॥ ३४ ॥

पित्तक्षीणःकिंकांक्षतीत्याकांक्षायामाह ॥

तिलमाषकुलत्थादिपिष्टान्नविकृतिन्तथा । यस्तुशुक्ताम्लतक्राणिकाञ्चिकञ्चतथा दधि ॥ कटवम्ललवणोष्णानितीक्ष्णंक्रोधंविदाहिच । समयंदेशमुष्णञ्चपित्तक्षीणोऽभिकांक्षति ॥ ३५ ॥

पित्त क्षीणमें कौनसी बस्तुओंका अभिलाष होताहै उसको कहते हैं ॥

तिल उर्द कुलथी पीठीकी बनीहुई बस्तु दहीका तोड़ सिरका खट्टा मट्ठा काँजी दही कटु अम्ल लवण तथा उष्ण बस्तुतीक्ष्ण तथा बिदाही बस्तु क्रोध और उष्ण काल तथादेश इनसंपूर्ण बस्तुओंकी इच्छा पित्तक्षीण मनुष्य करताहै ॥ ३५ ॥

मधुरंस्निग्धशीतानिलवणाम्लगुरूणिंच।दधिक्षीरंदिवास्वप्नंकफक्षीणोऽभिकांक्षति३६ ॥

जिस पुरुष का कफक्षीण होगयाहो वह मधुर स्निग्ध शीतल लवण अम्ल तथा भारीवस्तु दही दूध और दिनमें सोनेकी इच्छाकरताहै ॥ ३६ ॥

रसक्षीणोनरःकांक्षत्यम्भोऽतिशिशिरंमुहुः ।रात्रिनिद्रांहिमंचन्द्रंभोक्तुञ्चमधुरंरसम् ॥ इक्षुमांसरसंमन्थंमधुसर्पिंगुड़ोदकम् । द्राक्षादाड़िमशुक्तानिसस्नेहलवणानिच ॥ रक्त सिद्धानिमांसानिरक्तक्षीणोऽभिकांक्षति । अन्नानिदधिसिद्धानिषाड़वांश्चबहूनपि ॥ स्थू लक्रव्यादमांसानिमांसक्षीणोऽभिकांक्षति । षाड़वामधुराम्लादिरससंयोगपाचिताःगुड़ा वप्रभृतयः ॥ मेदःसिद्धानिमांसानिग्राम्यानूपोदकानिच । साक्षाराणिविशेषेणमेदःक्षीणो ऽभिकांक्षति ॥ अस्थिक्षीणस्तथामांसंमज्जास्थिस्नेहसंयुतम् । स्वाद्वम्लसंयुतंद्रव्यंम ज्जाक्षीणोऽभिकांक्षति ॥ शिखिनःकुक्कुटस्याण्डंहंससारसयोस्तथा ॥ ग्राम्यानूपौदका नाञ्चशुक्रक्षीणोऽभिकांक्षति ॥ यवान्नंयवकान्नञ्चशाकानिविविधानिच । मसूरमाषयू षञ्चमलक्षीणोऽभिकांक्षति ॥ पेयमिक्षुरसंक्षीरंसगुड़म्बदरोदकम् । मूत्रक्षीणोऽभिलषति त्रपुसैर्वारुकाणिच ॥ अभ्यंगोद्वर्त्तनेमद्यंनिवातशयनासने । गुरुप्रावरणंचैवस्वेदक्षीणो ऽभिकांक्षति॥कटूम्ललवणोष्णानिविदाहीनिगुरूणिच । फलशाकानिपानानिस्त्रीकांक्ष त्यार्त्तवक्षये ॥ सुराशाल्यान्नमांसानिगोक्षीरंशर्करांतथा । आसवंदधिहृद्यानिस्तन्यक्षी णोऽभिवाञ्छति ॥ मृगाजाविवहौरोणांगर्भान्वाञ्छतिसंस्कृतान् । वसाशूल्यप्रकारादीन् भोक्तुंगर्भपरिक्षये ॥ ३७ ॥

रस क्षीण मनुष्य बारंबार शीतल जल रात्रि में निद्रा हिम चाँदनी मधुररस ईष मांसरस मन्थ सहत घी और गुड़ का शर्बत इन बस्तुओं की अभिलाषा करताहै रक्त क्षीण मनुष्य दाख अनार मक्खन स्नेहयुक्त लवण और रुधिर में पका हुआ मांस इन बस्तुओं की अभिलाषा करताहै मांस क्षीण पुरुष दही के साथ बनेहुए अन्न षाडव (मधुर तथा खट्टे आदि रसोंको मिलाकर जो बस्तु परिपाक की जातीहै उसको षाड़व कहतेहैं) और स्थूल तथा मांसखाने वाले पशुओं के मांस की इच्छा करताहै मेद क्षीण पुरुष मेदके साथ परिपाकहुए ग्रामीण तथा जल के जीवोंके मांस क्षारस हित चाहना करताहै अस्थिक्षीण पुरुष मज्जा अस्थि तथा स्नेहयुक्त मांस की इच्छा करताहै मज्जा क्षीण पुरुष मधुर तथा खट्टी बस्तुओं की अभिलाषा करताहै बीर्य्य क्षीण पुरुष मोर मुर्ग्गा हंस तथा सारस के अंडे और ग्राम अनूप देश तथा जल के जीवों के मांस की अभिलाषा करताहै मल क्षीण पुरुष जौ छोटेजौ अनेक प्रकार के शाक और मसूर तथा उर्द की दालका यूष इनबस्तुओं की अभिलाषा करताहै मूत्र क्षीण मनुष्य ईखकारस दूध गुड़ युक्त बेरकापन्ना खीरा और ककडी इन बस्तुओं की अभिलाषा करताहै स्वेद क्षीण मनुष्य तेलमर्दन उबटना मद्य बातरहित स्थानमें शयन करना तथा बैठना और भारी ओढ़ना इन वस्तुओं की इच्छा करताहै आर्त्त व क्षीण स्त्री कटु अम्ल लवण उष्ण बिदाही तथा भारीबस्तु फलशाक और जलकी अभिलाषा करती है दुग्धक्षीणस्त्री मद्य चावल मांस गौकादूध शर्करा आसव दही और हृदय के हितकारी वस्तु ओंको चाहतीहै गर्भक्षीणस्त्री मृगी बकरी भेड़तथा शूकरी के पकाये हुए गर्भ चरबी और शल्य (कवाब) आदिक अनेक प्रकार की वस्तुओंके भोजन करनेकी इच्छा करतीहै ॥ ३७ ॥

अथ बललक्षणमाहसुश्रुतमते ॥

रसादिशुक्रपर्य्यन्तंपुष्टधातुनिमित्तकम् । चेष्टासुपाटवंयत्तुबलंतदभिधीयते ॥ ३८ ॥

सुश्रुतमें कहाहुआ बलका लक्षण ॥

रसकोआदि लेकर बीर्य पर्यन्त धातुओंकी पुष्टता के कारण जो कार्य में सामर्थ्य होती है उसको बलकहते हैं ॥ ३८ ॥ अथ बलस्यक्षयनिदानमाह ॥

अभिघाताद्भयात्क्रोधाच्चिंतयाचपरिश्रमात् । धातूनांसंक्षयाच्छोकाद्बलंसंक्षीयते नृणाम् ॥ ३९ ॥

बलक्षयका निदान ॥

चोट भयक्रोध चिन्ता परिश्रम धातुक्षय और शोक इनकारणोंसे मनुष्योंका बलक्षीण होताहै ३९॥

अथबलक्षयस्यलक्षणम् ॥

गौरवंस्तब्धतागात्रेमुखम्लानिर्विवर्णता ॥तन्द्रानिद्रावातशोथोबलव्यापत्तिलक्षणं ४०

बलक्षयकालक्षण ॥

शरीर में भारीपन तथा स्तब्धता मुखमें म्लानता वर्णका बिगड़ना तंद्रा निद्राकी अधिकता और बात की सूजन यह बलक्षय के लक्षणहैं ॥ ४० ॥

अथबलवृद्धिनिदानमाह ॥

दोषसाम्यकरंयत्तुवह्निसाम्यकरञ्चयत् ॥ धातुपुष्टिकरंद्रव्यंबलन्तदभिवर्द्धयेत्॥४१ ॥

बलवृद्धि का निदान ॥

जिन बस्तुओं के द्वारा दोषतथा अग्निकी समता और धातुओंकी पुष्टता होती है उन्हीं के द्वारा बलकी वृद्धि होतीहै ॥ ४१ ॥ अथबलाबललक्षणमाह ॥

कृशोऽपिबलवान्कश्चित्स्थूलोऽप्यल्पबलीयतः ॥ तस्माच्चेष्टापटुत्वेनबलवन्तंविदुर्बुधाः ॥४२ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचिते
भावप्रकाशेषष्ठप्रकरणंसम्पूर्णम् ॥

बलाबलका लक्षण ॥

कोई कृशहोकर भी बलवान् और कोई स्थूल होकर भी थोड़े बलवाला होता है इस्से कार्य्य में सामर्थ्य देखकर बलाबलका निश्चय करना चाहिये ॥ ४२ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितभावप्रकाशस्यभाषानुवादेषष्ठःप्रकरणंसम्पूर्णम् ॥

इतिप्रथमखण्डः समाप्तः ॥

शारीर, गर्भावक्रांति शारीर, गर्भव्याकरण शारीर, शरीर संख्या व्याकरण शारीर, प्रत्येक कर्म निर्देश शारीर, सिरावर्णन विभक्ति शारीर, सिराव्यधि विधि शारीर, धमनी व्याकरण शारीर, गर्भिणी व्याकरण शारीर का वर्णन, द्विव्रणीय, सद्योव्रण, भग्नरोग, वात व्याधि महावात-व्याधि, बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, महाकुष्ठ, प्रमेह, मधुप्रमेह, पेटरोग, मूढ गर्भ, विद्रधि, विसर्प, नाडी, स्तनरोग, ग्रन्थि, अपची, अर्बुद, गलगंडरोग, वृद्धि, उपदंश, फीलपांव, छोटे २ रोग, शूकरोग, मुखरोग, शोफरोग और नपुंसकता इनसब रोगोंकी उत्तमोत्तम चिकित्सा वर्णितहै और वमन और जुलाब किनरोगोंमें योग्यहै तिसका वर्णन, स्थावर और जंगम विषकी चिकित्सा, नेत्र, कर्ण, नासा, और शिरोरोगकी चिकित्सा, रेवतीग्रह पूतनाग्रह इत्यादि ग्रहों की चिकित्सा, ज्वर, अतीसार, राजरोग, वायुगोला, हृदयके रोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, मूर्च्छा और सम्पूर्ण मदों की चिकित्सा, प्यास, वमन, हिचकी, दमा, खांसी स्वरभेद, कृमिरोग, उदावर्त्त, हैजा, अरुचि, मूत्रदोष, मृगी रोग और उन्माद इत्यादि रोगोंकी चिकित्सा उत्तमोत्तम काढ़े चूर्ण गोली तेल और घी इत्यादिके द्वारा वर्णन की गई है जिसको जिलारोहतक मौजे बेरी ग्राम निवासि पण्डित रविदत्तवैद्यने मुंशी नवलाकिशोर (सी, आई, ई) के खर्चसे प्रत्यक्षरका भाषा में उल्था कियाहै और उन्नाम प्रदेशान्तर्गत तारगांव निवासि पण्डित रामविहारी सुकुल ने कठिन शब्दों का कोष और अकारादि सूचीपत्र और साधारण सूचीपत्र रचना कर विभूषित कियाहै यह पुस्तक अवश्य प्रत्येक मनुष्यके देखने के योग्यहै इससे सम्पूर्ण चिकित्साका कामहोसक्ता है ॥

निघण्टरत्नाकर भाषा

जिसमें सम्पूर्ण ज्वर, सम्पूर्ण अतीसार, संग्रहणी बवासीर, अजीर्ण, हैजा, अलस बिलम्बिका कृमिरोग, पांडुकामला, हलीमक, रक्तपित्त, राजरोग, शोथरोग, खांसीरोग, हिचकीरोग, श्वासरोग-स्वरभेद रोग, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृषा रोग, मूर्च्छा, मोह, भ्रम, तन्द्रा,निद्रा, संन्यास, मदात्ययरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतादिक के उन्मादका, तंत्रमंत्र डाकिनी साकिनी निवारणोपायप्रत्यक्ष हाजरायतयंत्र, मिरगी रोग, सम्पूर्ण बातव्याधि, अल्पकेशीकी चिकित्सा, ऊरुस्तम्भरोग, आमवात पित्तव्याधि, कफव्यधि, वातरक्तरोग, शूल रोग, उदावर्त्त, आनाह रोग, गुल्मरोग, यकृत्प्लीहरोग, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्ररोग, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटकेरोग, दुर्बलता, सूजन, अंडवृद्धि, बदरोग, गलगंड, फीलपांव, विद्रधि, घाव, अग्निदग्ध, भग्नरोग, नसूर, भगंदर, आतशक, शूकरोग, कुष्ठ, अम्लपित्त, विस्फोटक अर्थात् शीतला, फिरंगरोग, छोटे २ रोग, शिर, नेत्र, कान और मुंहके रोग,स्थावर जंगम विषरोग, स्त्रियोंके प्रदर आदि सब रोग, बालकों के रोग और नपुंसकताकी उत्तमोत्तम काढ़े, चूर्ण, गोली, रस, तेल और घी इत्यादि के द्वारा वर्णन कीगई है इसका भी ज़िला रोहतक मौज़े बेरी ग्राम निवासि पण्डित रविदत्त वैद्यने मुंशी नवलकिशोर (सी. आई, ई) के खर्च से अक्षर २ का भाषामें उल्था कियाहै यह पुस्तक भी अवश्य देखने योग्यहै क्योंकि इसी एक पुस्तकसे चिकित्सा का पूरा २ काम निकल सक्ताहै ॥

शार्ङ्गधरसंहिता भाषा टीका सहित ॥

जिसमें सुश्रुत चरक आदि वैद्यकीय सबग्रंथोंके मतसे ज्वर, अतीसार, संग्रहणी, बवासीर, अजीर्ण हैजा, कृमिरोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, राजरोग खांसी, हिचकी, दमा, स्वरभेद, अरुचि, बमन, प्यास मूर्च्छा, दाहरोग, उन्मादरोग, मृगीरोग, वातव्याधि, शूलरोग, गुल्मरोग, हृदयकेरोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटके रोग, सूजन, अंडवृद्धि, बदरोग, फीलपांव, गलगंड, व्रणरोग, अग्निदग्ध,

नासूर, भग्नरोग, भगंदर, आतशक, शूकरोग, कुष्ठरोग, शीतला, क्षुद्ररोग, शिर, नेत्र, कान, नाक और मुंहरोग सम्पूर्ण विषरोग स्त्रियों और बालकोंके सब रोग और धातुपुष्ट और नपुंसकताकी अत्युत्तम चिकित्सा काढे, चूर्ण, गोली, रस, तेल. घी इत्यादि के द्वारा वर्णित है इसके मूल श्लोकों को शार्ङ्गधरजी महाराज और भाषा टीका को जयपालजीने अत्यन्त परिश्रम से रचना कियाहै यह पुस्तक भी अवश्य दर्शनीयहै ॥

भैषज्यरत्नावली भाषाटीका सहित ॥

जिसमें ज्वर चिकित्सा, ज्वरातीसार चिकित्सा, पित्तही और यकृत् की चिकित्सा, पांडुरोग चिकित्सा, शोथरोग चिकित्सा, पेटके रोगों की चिकित्सा, क्लोम रोगकी चिकित्सा, मेद रोग की चिकित्सा, आमाशयरोग चिकित्सा, छर्दिरोग चिकित्सा, दाह चिकित्सा, तृषारोग चिकित्सा, रक्तपित्त चिकित्सा, अग्निमन्दकी चिकित्सा, अरुचि चिकित्सा, संग्रहणी चिकित्सा, अतीसार चिकित्सा, कृमिरोग चिकित्सा, अम्लपित्तरोग चिकित्सा, शूलरोग चिकित्सा, गुल्मरोग चिकित्सा, उदावर्तरोग चिकित्सा, आनाहरोग चिकित्सा, अंत्ररोग चिकित्सा, राजयक्ष्मा चिकित्सा, खांसीरोगकी चिकित्सा, हिचकी और श्वासरोग चिकित्सा, स्वरभेद चिकित्सा, हृद्रोग चिकित्सा, वातव्याधि चिकित्सा, आमवात चिकित्सा, मूत्रकृच्छ्ररोग चिकित्सा, मूत्राघातरोग चिकित्सा, पथरीरोग चिकित्सा, आतशक रोग चिकित्सा, शूकरोग चिकित्सा, प्रमेह चिकित्सा, बहुमूत्ररोग चिकित्सा, औपसर्गिक मेहरोग चिकित्सा, शुक्रमेह चिकित्सा, प्रमेह पिडिका चिकित्सा, ध्वजभंग चिकित्सा, वृद्धिरोग चिकित्सा, फीलपांवकी चिकित्सा, गलगंड रोगादि चिकित्सा, शीतपित्त उर्दद और कोढरोगों की चिकित्सा, मसूरिकारोग चिकित्सा, वातरक्त चिकित्सा, कुष्ठरोग चिकित्सा, बवासीर की चिकित्सा, भगंदर चिकित्सा, विद्रधि चिकित्सा, ऊरुस्तंभ चिकित्सा, भग्नरोग चिकित्सा, व्रणशोथ शारीरव्रण चिकित्सा, सद्योव्रण चिकित्सा, नसूरकी चिकित्सा, शिररोग चिकित्सा, अपस्मार चिकित्सा, उन्मादरोग चिकित्सा, अपस्माररोग चिकित्सा, मदात्ययरोग चिकित्सा, नेत्ररोग, कानरोग और मुखरोग चिकित्सा, क्षुद्ररोग चिकित्सा, स्त्रीरोग चिकित्सा, बालरोग चिकित्सा, विषरोग चिकित्सा, वीर्यस्तम्भन विधि रसायन अधिकार, वाजीकरणाधिकार, और परिशिष्ट पर्य्यन्त विषयों के काढे, चूर्ण, रस, लेप, तेल घी, यन्त्र, मन्त्र और तंत्रादिकों से औषधें वर्णित हैं जिसमें कोई रोग ऐसा नहीं जिसकी परिपूर्ण औषध इसग्रन्थ से न होसके यह ग्रन्थ बहुतही उत्तम है इसअकेलेही ग्रन्थ से परिपूर्ण वैद्य होसकताहै जिसे मुन्शीजीने रोहतक प्रदेशांतर्गत बेरीनिवासि पण्डित रविदत्तजीसे तर्जुमा कराके उसी तर्जुमेको संस्कृतसे श्लोक २ के टीकेको जिला उन्नाव मौजे तारगांव निवासी पण्डित रामबिहारी सुकुल से शुद्धकराया है यह पुस्तक अवश्य देखनेके लायक़ है ॥

अमृतसागर जलीक़लम ॥

जिसको श्रीमन्महाराजाधिराज सवाई प्रतापसिंहजी वीरेश वैकुण्ठवासीने वैद्यकके चरक सुश्रुत वाग्भट्ट आदि अनेक प्रमाणिक ग्रन्थोंसे सार २ बातें निकाल कर रचा जिसमें सम्पूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति, लक्षण, यत्न, और यंत्र, मंत्र, तंत्र, धातुमारण, शोधन, गोली, अवलेह जो आज़माई हुई हैं और जिनका सामयिक रोगोंमें प्रचार है लिखीहैं परन्तु संसारके उपकारके निमित्त छापेखाने के मालिकने औरभी विशेष बातें जो उचित और उपयोगिकथीं संयुक्तकराई कि सोनाऔर सुगन्ध दोनोंहों और (यथानाम तथागुणः) यह दृष्टान्तभी प्रत्यक्ष फल दिखावे यह पुस्तक इस छापेखाने में असंख्यही छपकर बिकचुकी है और ग्राहकोंकी मांगें बराबर चलीआती हैं इसपर रजिस्टरी भी होगई है ॥